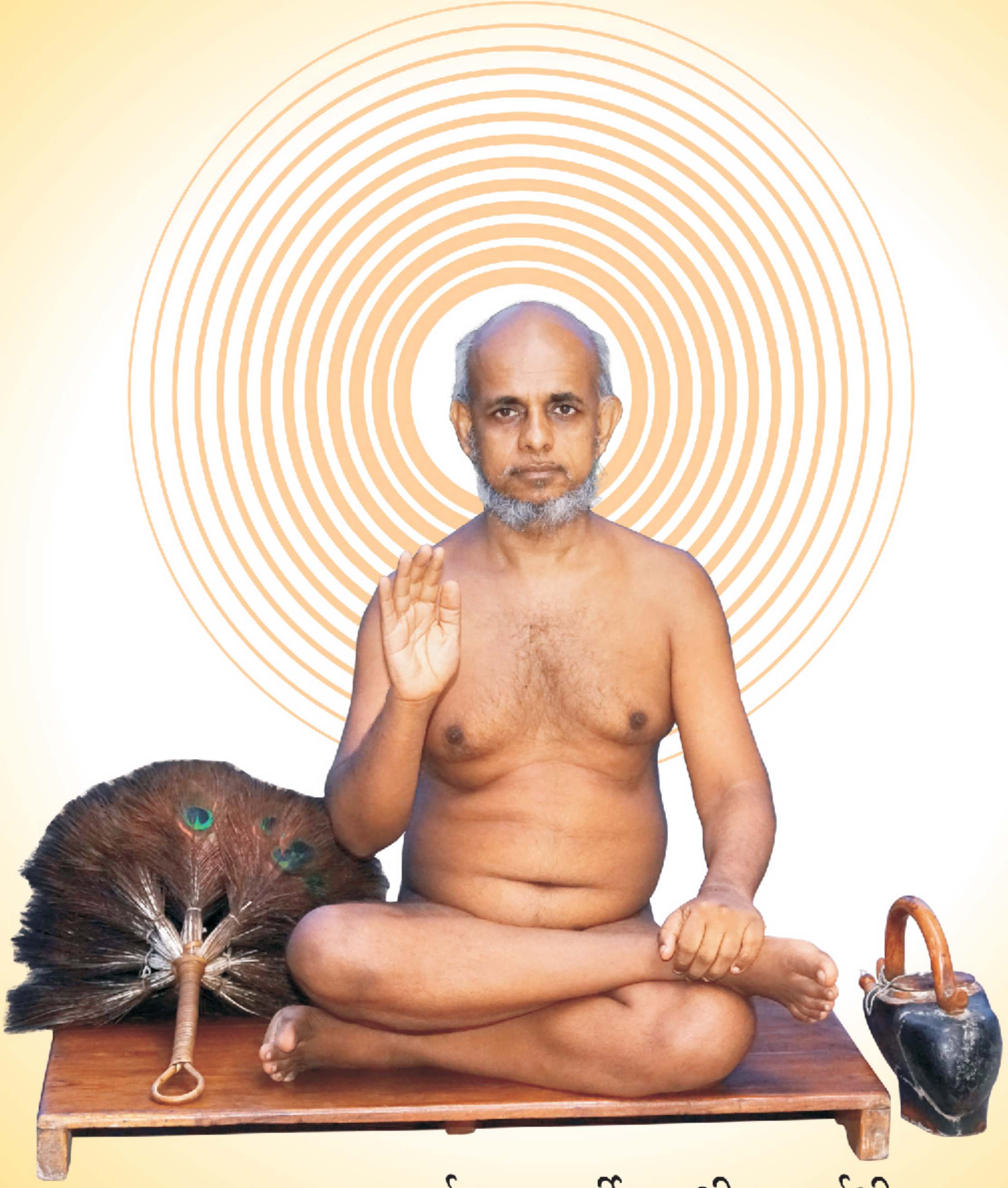

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

महापुराण

भाग 5

ग्रन्थकर्त्ता
महाकवि पुष्पदन्त जी

अनुवादक
श्री देवेन्द्रकुमार जैन

सम्पादक
श्री पी. एल. वैद्य

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया
लोदी रोड, नई दिल्ली–110003

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

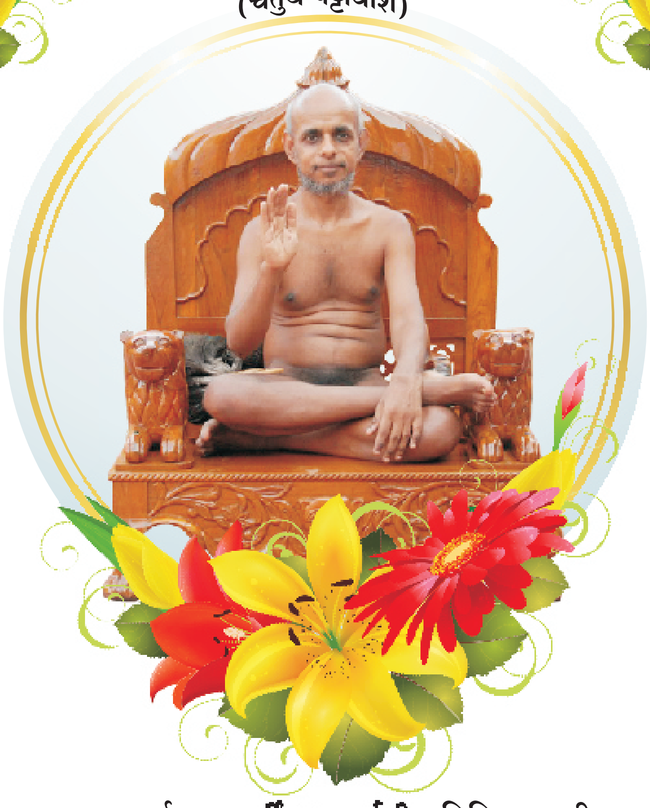

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला : अपभ्रंश ग्रन्थांक-29

महाकइपुप्फयंतविरयउ

महापुराणु

[महाकवि पुष्पदन्त-विरचित महापुराण]

पाँचवाँ भाग

तीर्थंकर नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और वर्धमान महावीर-चरित

(सन्धि 81 से अन्तिम सन्धि 102 तक)

मूल-सम्पादन

डॉ. पी.एल वैद्य

हिन्दी-अनुवाद

डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रथम संस्करण : 1999 □ मूल्य : 120.00 रुपये

विषयानुक्रम

सन्धि		पृष्ठ
81	नेमिजिन को तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध	1
82	वसुदेव का जन्म एवं अन्धकवृष्णि का निर्वाण-गमन	20
83	समुद्रविजय और वसुदेव की भेंट तथा बलदेव का जन्म	37
84	वासुदेव श्रीकृष्ण का जन्म	60
85	कृष्ण का बालक्रीडा-वर्णन	78
86	कंस और चाणूर का वध	107
87	नेमिकुमार का जन्म	118
88	जरासंध-वध	136
89	बलदेव और कृष्ण के पूर्वभवों का वर्णन	163
90	कृष्ण और महादेवी के पूर्वभवों का वर्णन	186
91	रुक्मणि और कामदेव का संयोग	208
92	तीर्थंकर नेमिनाथ का निर्वाण-गमन	231
93	मरुभूति और करीन्द्र जन्मावतार	252
94	पार्श्वनाथ का निर्वाण-गमन	266
95	वर्धमान महावीर का बोधिलाभ	290
96	महावीर का निष्क्रमण (दीक्षा-धारण) वर्णन	305
97	वर्धमान महावीर को केवलज्ञान की उत्पत्ति	318
98	चन्दना के पूर्वभवों का वर्णन	325
99	जीवन्धर स्वामी के पूर्वभवों का वर्णन	348
100	जम्बूस्वामी का दीक्षा-वर्णन	374
101	प्रीतिंकर आख्यान	386
102	वीर जिनेन्द्र का निर्वाण-गमन	405

□

महाकइपुप्फयंतविरयउ महापुराणु

एक्कासीतिमो संधि

[1]पणविवि गुरुपयइं[2] भव्वहं तमोहतिमिरंधहं।
कहमि णेमिचरिउं भंडणु मुरारिजरसंधहं[3] ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

धीरं[4] अविहियसामयं सीहं हयसरसामयं।
दूसियसोत्तियसामयं विद्धंसियहिंसामयं।
रक्खियसयलरसामयं अक्खियधम्मरसामयं।
चंडतिदंडुवसामयं अलिणीलंजणसामयं।
जणियदुक्खवीसामयं अदविणजीवासामयं[5]।
णासियतिव्वतिसामयं वेरीणं पि सुसामयं।
बलविहुवियविवाहयं पसमियसेलविवाहयं।
[6]दूरुम्मुक्कविवाहयं णिच्चं चेय विवाहयं।
[7]कयणिवपुत्तिविसूरणं[8] पयणयसुरणरसूरयं[9]।

इक्यासीवीं सन्धि

गुरुचरणों में प्रणाम कर उन भव्यजनों के लिए, जो अज्ञानसमूह के अन्धकार में हैं, मैं नेमिचरित तथा श्रीकृष्ण और जरासन्ध के युद्ध का वर्णन करता हूँ।

(1)

जो धीर हैं, जिन्होंने लक्ष्मी का मद नहीं किया है, जिन्होंने कामरूपी हाथी को नष्ट कर दिया है, जिन्होंने ब्राह्मणों के सामवेद को दूषित (दोषपूर्ण) कहा है, जिन्होंने हिंसामतों को ध्वस्त किया है, जिन्होंने समूची पृथ्वीरूपी मृग की रक्षा की है; धर्मरूपी रसामृत का आख्यान किया है, जो प्रचण्ड त्रिदण्ड (मन-वचन-काय) का उपशम करनेवाले हैं, जो नीले अंजन के समान श्याम हैं, जो दुःखों को विश्राम दे चुके हैं, जो धनहीनों को जीवन की आशा देनेवाले हैं (अथवा द्रव्य की आशा रखनेवाले नहीं हैं), जिन्होंने तीव्र तृष्णा रोग को नष्ट कर दिया है, जो शत्रुओं से भी प्रियवचन कहनेवाले हैं, जिन्होंने अपनी शक्ति से, विष्णु (कृष्ण) के द्वारा रचाया गया विवाह अस्वीकार कर दिया है, जिन्होंने पर्वतों के पक्षियों और व्याधों को शान्त कर दिया है, नित्य विशेष बाधा देनेवाले विवाह को दूर से त्याग दिया है; जिन्होंने राजकन्या (राजुल) को विरहपीड़ा

---

(1) 1. S पणमवि। 2. S °पइयं। 3. ABP °जरसिंधहं। 4. ABP धीरं। 5. S जीवासा°। 6. S दूरविमुक्क°। 7. AS °नृय°। 8. AS °विसूरयं; T विसूरणं। 9. APS °सुरयण°; T सुरणर°।

[10]हरिकुलणहयलसूरयं इंदियरिउरणसूरयं।
णीणं सिवपुरवासरं[11] तिहारयणीवासरं।
तवसंदणणेमीसयं णमिऊणं णेमीसयं।
घत्ता—भारहु भणमि हउं पर किं पि णत्थि सुकइत्तणु।
मज्झि वियक्खणहं किह मुक्खु [12]लहमि गुणकित्तणु ॥1॥

(2)

णउ मुणमि विसेसणु णउ विसेसु णउ छंदु गणु वि देसिलेसु।
अहिकरणु करणु णउ सरपमाणु णायण्णिउ आगमु णउ पुराणु।
कत्तारु[1] कम्मु णउ लिंगजुत्ति परियाणमि[2] णउ एक्क वि विहत्ति।
दिगु दंदु कम्मधारउ समासु तप्पुरिसु[3] बहूवीहि य पयासु।
अव्वइभाउ[4] वि णउ [5]भावि लग्गु णउ जोइउ सुकइहिं तणउ मग्गु।
णउ मइ वि सुवंतु तिडंतु[6] दिट्ठु णउ अत्थि अत्थु णउ सद्दु मिट्ठु।
भरहहु केरइ मंदिरि णिविट्ठु[7] जणि[8] णउ लज्जमि एमेव[9] धिट्ठु।
हउं कव्वपिसल्लउ कव्वकारि जायउ बहुसुयणहं हिययहारि।[10]
खलसंदहु[11] पुणु परदोसवसणु [12]ण णिवारमि विरसइं भसउ भसणु।

दी है। सुर, नर और नाग जिनके चरणों में नत हैं, जो हरिवंशरूपी आकाश के लिए सूर्य हैं, जो इन्द्रियरूपी शत्रु के लिए युद्धशूर हैं, जो मनुष्यों के लिए शिवपुर का वास देनेवाले हैं, जो तृष्णारूपी रात के लिए सूर्य हैं, जो तपरूपी चक्र के आरे हैं, ऐसे नेमीश्वर को नमस्कार कर—

घत्ता—मैं भारत (कौरव-पाण्डव-युद्ध) का वर्णन करता हूँ। मेरे पास कुछ भी कवित्व नहीं है। विचक्षणों (बुद्धिमानों) के बीच में मैं मूर्ख किस प्रकार गुणकीर्तन (यश) पा सकता हूँ !

(2)

न मैं विशेषण जानता हूँ और न विशेष्य। न छन्द जानता हूँ और न मात्राएँ, न गण (धातुओं के भ्वादिगण) और न देशी शब्दों को लेशमात्र जानता हूँ। अधिकरण, करण (कारक) और न स्वरों का प्रमाण मुझे मालूम है। न तो मैंने आगम सुना है और न पुराण; कर्ता, कर्म और लिंग को भी मैं नहीं जानता हूँ। एक भी विभक्ति; द्विगु, द्वन्द्व, कर्मधारय, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और अव्ययीभाव समास में भी मेरा चित्त नहीं लगता; मैंने सुकवियों के मार्ग को भी नहीं देखा। न मैंने सुबन्त-तिङन्तपद देखे; न मेरे पास अर्थ है और न मीठा शब्द। मन्त्री भरत के भवन में रहता हुआ मैं ऐसा ही एक ढीठ हूँ जो लोगों से लज्जित नहीं होता। काव्य-निर्माता और काव्य में निपुण, मैं बहुत से सुजनों के हृदय का प्यारा हो गया हूँ। परन्तु फिर भी, मैं दूसरे के दोष

---

10. S हरिउल°। 11. S °पुरिं°। 12. S लहमि।

(2) 1. S कत्तार। 2. S परियाणवि एक्क वि ण वि। 3. A तप्पुरिसु वि बहुव्रीहि विहियपयासु। 4. B अव्वइभवि वि। 5. ABP भाउ। 6. A तिडंतु; P तिडंतु। 7. AP पइट्ठु। 8. A जणि णउ जणि लज्जमि एव धिट्ठु। 9. A एव; P एमेय। 10. B हियइ। 11. Als. °संडहु against Mss.; but gloss in S दुर्जनसमूहान। 12. B णउ वारमि।

हउं करमि कव्वु[13] सो करउ णिंद[14] फलु जाणिहिंति [15]दोहं मि मुणिंद[16]।
घत्ता—सरसु सकोमलउं[17] खलगलकंदलि पउ देप्पिणु।
हिंडेसइ विमल महु कित्ति तिजगु लंघेप्पिणु ॥2॥

(3)

चिंतिज्जइ काइं खलावराहु बीहंतु वि किं ससि मुयइ राहु।
झुडु पसियउ महु जिणवीरणाहु लइ करमि कव्वु सुहजणणु साहु।
भो सुयण भव्ववरपुंडरीय भो णिसुणि भरह गुरुयणविणीय।
[1]णंदणवणमहुधारारसिल्लि[2] [3]महमहियविविहपप्फुल्लफुल्लि[4]।
गुमुगुमुगुमंतहिंडियदुरेहि इह[5] जंबूदीवि पच्छिमविदेहि।
सीयाणइउत्तरतडणिवेसि[6] जणसंकुलि गंधिलणामदेसि।
गयणग्गलग्गहिमधवलहम्मि[7] पायारगोउरारावरम्मि।
सीहउरि णराहिउ[8] अरुहदासु[9] वच्छत्थलि णिवसइ लच्छि जासु।
वाईसरि मुहि जसु [10]दसदिसासु [11]पाणिट्ठ देवि जिणदत्त[12] तासु।
दोहिं मि जणेहिं णरणायवंदु एक्कहिं दिणि अहिसिंचिउ जिणिंदु।
णिसि सुंदरि कुलिसु व [13]मज्झि खाम जिणयत्त पसुत्ती पुत्तकाम।

ग्रहण करने की प्रकृतिवाले दुर्जन-समूह का निवारण नहीं करता। भले ही कुत्ते भौंकें, मैं काव्य की रचना करता हूँ। निन्दक भले ही निन्दा करे। मुनीन्द्र ही दोनों का फल जानेंगे।

घत्ता—मेरी विमल कीर्ति अपने सरस और कोमल चरण दुर्जन के गले और सिर पर रखकर, त्रिलोक का अतिक्रमण करती हुई, विचरण करती हुई घूमेगी।

(3)

दुष्टों के अपराधों की चिन्ता करने से क्या ? क्या काँपते हुए चन्द्रमा को राहु छोड़ देता है ? मुझ पर जिनवीरनाथ शीघ्र प्रसन्न हों। मैं सुखजनक (पुण्यजनक) काव्य की रचना करता हूँ। हे भव्यरूपी उत्तम कमल, गुरुजन-विनीत हे सज्जन भरत ! सुनो, जहाँ मधुधारा से रसमय और महकते हुए फूल खिले हुए हैं तथा गुनगुनाते हुए भ्रमर भ्रमण कर रहे हैं, ऐसे जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह में सीतोदा नदी के उत्तर तट पर स्थित, जनसंकुल सुगन्धिल नाम का देश है। उसमें सिंहपुर नामक नगर है; जिसमें अपने अग्रभाग से आकाश को छूनेवाले हिमधवल प्रासाद हैं, जो गोपुरों, परकोटों और उद्यानों से सुन्दर हैं। उसमें अरहदास नामक राजा निवास करता है। उसके हृदय में लक्ष्मी और मुख में सरस्वती तथा दसों दिशाओं में यश निवास करता है। जिनदत्ता उसकी प्राणप्रिया पत्नी है। एक दिन उन दोनों ने मनुष्यों और नागों के द्वारा वन्दनीय जिनेन्द्रदेव का अभिषेक किया। मध्यभाग में वज्र की तरह दुबली-पतली (कृशोदरी) जिनदत्ता, पुत्र की कामना लेकर रात में सोयी।

---

13. AP गंथु। 14. B णिंदु। 15. APS दोहिं मि। 16. B मुणिंदु। 17. APS सुकोमलउं।

(3) 1. BP °वणि। 2. P °रसेल्लि। 3. B °महिए। 4. B °पफुल्ल°। 5. B इय। 6. A सीयोयहि; P सीओयहि। 7. P °धयलि। 8. S णराहिवु। 9. S अरहदासु। 10. B दश°। 11. B प्राणिट्ठ। 12. B जिणयत्त। 13. B मज्झखाम।

घत्ता—सिविणइ दिट्ठु हरि करि चंदु सूरु सिरि गोवइ।
ताइ कहिउं पियहो[14] सो णिम्मलु[15] णियमणि भावइ ॥3॥

(4)

होसइ सुउ हरिणा रिउअजेउ करिणा गरुयउ गुरुसोक्खहेउ।
ससिणा सूहउ णिरु[1] सोम्मभाउ[2] सूरेण महाजसु तिव्वतेउ[3]।
सिरिदंसणि सुंदरु सिरिणिकेउ कइवयदिणेहिं साणंदु देउ।
थिउ गब्भि ताहि [4]मिगलोयणाहि णवमासहिं[5] कसणाणणथणाहि[6]।
उप्पण्णउ णवजोव्वणि वलग्गु देवहुं मि मणोहरु णाइं सग्गु।
कमणीयहं[7] कंतहं [8]जणिउ राउ अरिसिरचूडामणिदिण्णपाउ।
णहदसदिसिवहणिग्गयपयाउ[9] जायउ दियहहिं रायाहिराउ।
णिसुणेवि धम्मु [10]उववणणिवासि ताएण विमलवाहणहु पासि।
कुलसंपय देवि सणंदणासु जिणदिक्ख लेवि कउ मोहणासु।
पुत्तें गहियाइं अणुव्वयाइं पयडीकयसुरणरसंपयाइं।
आवेप्पिणु[11] केसरिपुरि पइट्ठु कालेण पराइउ एक्कु इट्ठु।

घत्ता—स्वप्न में उसने देखा—सिंह, हाथी, चन्द्र, सूर्य, लक्ष्मी और वृषभ। उसने यह बात अपने प्रिय से कही। वह भी अपने मन में विचार करने लगा।

(4)

उसने कहा—"सिंह देखने से शत्रु के लिए अजेय पुत्र होगा, हाथी देखने से महान् और सुख का कारण होगा, चन्द्रमा देखने से अत्यन्त सुभग और सौम्य स्वभाव का होगा। सूर्य देखने से महायशस्वी और तीव्र तेजवाला होगा, लक्ष्मी देखने से सुन्दर और लक्ष्मी का घर होगा।" कुछ दिनों के बाद कोई देव आनन्दपूर्वक उस मृगनयनी देवी के गर्भ में स्थित हो गया। श्याम मुख और स्तनोंवाली उस देवी से नौवें माह में उत्पन्न वह शीघ्र नवयौवन को प्राप्त हो गया। उसकी रचना देवों से भी सुन्दर थी। उसने सुन्दर स्त्रियों में राग-चेतना उत्पन्न कर दी। शत्रुओं के सिरों के चूड़ामणियों पर पैर रखनेवाला और आकाश तथा दसों दिशाओं में अपने प्रताप का प्रसार करनेवाला वह कुछ ही दिनों में राजाधिराज हो गया। अपने उपवन के निवास-घर में मुनि विमलवाहन के पास धर्म सुनकर, पिता ने अपने पुत्र को कुलसम्पत्ति देकर और जिनदीक्षा ग्रहण कर मोहनाश किया। पुत्र ने भी देवों और मनुष्यों की सम्पत्ति को उत्पन्न करनेवाले अणुव्रत ग्रहण कर लिये। वह आकर सिंहपुर रहने लगा। कुछ समय बाद एक इष्ट (मित्र) उसके पास आया।

---

14. B पियह। 15. S णिम्मलु (नृमलो राजा)।

(4) 1. P सिरिसोम्म°। 2. B सोमभाउ। 3. B दित्ततेउ; Als. Proposes to read दिव्वकाउ without Ms. authority. 4. A मृग°। 5. BP °मासेहिं; 6. A कालाणणथणाहे; Als. reads in S कसणाणणप्पणाहे, but the Ms. gives कसणाणप्पणाहे where प is wrongly copied for थ or ग। 7. P कमणीयहिं। 8. S जणियराउ। 9. A तह दस°; S णहदशदिशि°। 10. B उववणि। 11. B आएप्पिणु।

घत्ता—तेण [12]पयंपियउं गउ विमलणाहु णिव्वाणाहु।
जिह सो तिह अवरु तुह जणणु वि सासयठाणाहु ॥4॥

(5)

जं सुणिउ[1] ताउ संपत्तु[2] मोक्खु तं जायउं अवराइयहु दुक्खु।
[illegible] ण्हाइ ण परिहइ परिहणाइं णउ लावइ अंगि विलेवणाइं।
णउ कुसुमइं विसमियसडयणाइं[3] णउ आहरणइं णियकुलहणाइं[4]।
घवघवघवंतपयणेउराइं णालोयइ[5] पहु अंतेउराइं।
णउ[6] भुंजइ उवणिउ दिव्वु भोउ ण सुहाइ तासु एक्कु वि विणोउ।
चिंतइ णियमणि हयदुण्णयाइं जइ तायविमलवाहणपयाइं।
[7]पेच्छेसमि[8] भुंजमि पुणु धरित्ति णं तो [9]यसणंगहं महुं णिवित्ति।
इय जाम ण लेइ णरिंदु गासु गय दियह पुण्णु[10] अट्ठोववासु।
तहिं अवसरि इंदहु चिंत जाय मुहकुहरहु णिग्गय महुर वाय।
जज्जाहि धणय बहुगुणणिहाउ मा मरउ अपुण्णइ कालि राउ।
सिरिअरुहदासरिसिणा सणाहु दक्खालहि जिणवरु विमल[11] ताहु।
घत्ता—सयमहपेसणिण ता समवसरणु किउ जक्खें।
दाविउ परमजिणु वंदिज्जमाणु[12] सहसक्खें ॥5॥

घत्ता—उसने कहा कि मुनि विमलनाथ निर्वाण चले गये हैं; जिस प्रकार वह, उसी प्रकार तुम्हारे पिता ने भी शाश्वत स्थान (मोक्ष) प्राप्त किया है।

(5)

जब उसने सुना कि पिता मोक्ष को प्राप्त हुए, तो इससे अपराजित को बहुत दुःख हुआ। वह न नहाता, न वस्त्र पहिनता, और न शरीर में अंगलेपन करता, और श्रान्त हैं भ्रमर जिनमें ऐसे कुसुमों को भी धारण नहीं करता। न आभरण, न निज कुलधन, और न रुनझुन करते हुए नुपूरोंवाले अन्तःपुरों को वह राजा देखता। वह अपने मन में दुर्नयों का नाश करनेवाले पिता के श्रीचरणों का ध्यान करता (और कहता)—"जब मैं उनको देख लूँगा तभी धरती का भोग करूँगा, नहीं तो भोजन और काम से मेरी निवृत्ति।" इस प्रकार जब राजा को भोजन ग्रहण नहीं करते हुए आठ दिन बीत गये और उसके आठ उपवास हो गये, तो इन्द्र के मन में चिन्ता हुई और उसके मुख-कुहर से मधुर वाणी निकली—"हे धनद (कुबेर), तुम जाओ, अनेक गुणों का समूह वह राजा अपूर्ण समय में मृत्यु को प्राप्त न हो। श्री अरहदास ऋषि के साथ जिनवर विमलवाहन को तुम उसके लिए दिखा दो।"

घत्ता—तब इन्द्र के आदेश से यक्ष ने समवसरण की रचना की, और इन्द्र के द्वारा वन्दनीय परमजिन को दिखाया।

---

12. S पयंपिउं।

(5) 1. A णिसुउ। 2. AS संपत्त। 3. A वियसियसडयणाइं। 4. A °कुलहराइं। 5. B णालोयइ। 6. A उउ भुंजइ। 7. B पिच्छेसमि; P पिक्खेसमि। 8. ABPS add तो after पेच्छेसमि and omit पुणु। 9. AP असणंगहं। 10. A पत्तु; P पण्णु। 11. ABPS विमलवाहु। 12. A वंदिव्वमाणु।

(6)

पिउपायदिण्णदढसाइएण वंदिउ भत्तिइ अवराइएण।
आहारु लइउ[1] आवेवि गेहु गरुयहं वड्ढइ गुणवंति णेहु।
पुणु छुडु छुडु संपत्तइ वसंति णंदीसरि अण्णहिं वासरंति।
वंदेप्पिणु जिणचेईहराइं[2] अक्खंतु संतु धम्मक्खराइं।
[3]सुविसुद्धसीलजलहरियकंद[4] ता ढुक्क बेण्णि णहयलि[5] मुणिंद।
वंदिवि वंदारयवंदणिज्ज [6]मण्णिय महिणाहें मण्णणिज्ज।
तेहिं मि पउत्तु भो धम्मविद्धि केवलदंसणगुण होउ सिद्धि।
पुणु [7]सच्चतच्चसवणावसाणि पहु पभणइ अण्णहिं कहिं मि ठाणि।
मइं दिट्ठा तुम्हइं काइं करमि एवहिं सुमरंतु वि णाहिं सरमि।
पसरइ मणु मेरउं रमइ दिट्ठि भणु जइ जाणहि तो जणहि तुट्ठि।
रिसि परमावहिपसरणपवीणु ता चवइ जेट्ठु णिट्ठाइ खीणु।
भो नृव[8] चिरु ससहरकिरणकंति अम्हइं पइं दिट्ठा णत्थि भंति।

घत्ता—पभणइ परममुणि [9]नृव पुक्खरदीवि पसिद्धइ।
पच्छिमसुरगिरिहि[10] पच्छिमविदेहि[11] धणरिद्धइ ॥6॥

---

(6)

अपने पितृश्री के चरणों का आलिंगन करनेवाले अपराजित ने भक्तिपूर्वक वन्दना की। घर आकर उसने आहार ग्रहण किया। बड़े लोगों का गुणवान् के प्रति स्नेह बढ़ जाता है। फिर शीघ्र ही वसन्त ऋतु के आने पर, दूसरे दिन नन्दीश्वर में जिनचैत्यगृहों की वन्दना कर जब वह धर्माक्षरों की व्याख्या कर रहा था, तब पवित्रतम शीलवाले तथा सजल मेघों के समान (गम्भीर) दो चारण मुनि आकाशमार्ग से वहाँ पहुँचे। देवों द्वारा वन्दनीय और माननीय उनका महीनाथ ने खूब सत्कार किया। उन्होंने भी कहा—"अरे, तुम्हारी धर्मवृद्धि हो और तुम्हें केवलज्ञान से युक्त सिद्धि प्राप्त हो। सच्चे तत्त्वों को सुनने के अनन्तर राजा कहता है—"किसी दूसरे स्थान पर मैंने आप लोगों को देखा है। क्या करूँ ? इस समय याद करने पर भी मैं याद नहीं कर पा रहा हूँ। मेरा मन फैल रहा है, दृष्टि रम रही है, यदि आप जानते हैं तो मुझे सन्तुष्टि दीजिए।" तब महा-अवधिज्ञान के प्रसार में प्रवीण और साधना से क्षीण (देहवाले) बड़े मुनि बोले—"चन्द्रमा की किरणों की तरह कान्तिवाले हे सुन्दर नृप ! सुनो, हम लोगों को तुमने देखा है, इसमें भ्रान्ति नहीं है।"

घत्ता—परममुनि कहते हैं—"हे राजन्, प्रसिद्ध पुष्कर द्वीप में मेरु के पश्चिम विदेह में धन से समृद्ध

---

(6) 1. B लयउ। 2. B जिणचेइय°। 3. S सुविशुद्ध°। 4. AP जलभरिय°। 5. AP णहयरमुणिंद; B णहयलमुणिंद। 6. S मंडिय महिणाहहं मडणिज्ज। 7. A सततच्चयणावसाणे; P सच्चतच्चसयणावसाणे। 8. ABP णिव। 9. ABP णिव। 10. B पच्छिम°। 11. B °विदेह°।

(7)

गंधिलजणवइ खगमहिहरिंदि[1] उत्तरसेढिहि धवलहररंदि।
सूरप्पहपुरि[2] पहसियमुहिंदु सूरप्पहु णामें णहयरिंदु।
पियकारिणि धारिणि तासु घरिणि वम्महधरणीरुहजम्मधरणि[3]।
जाया कालें सुकयाणुरूय[4] भाभारवंत भूतिलयभूय[5]।
ताहि[6] णंदण णं धम्मत्थकाम चिंतामणचवलगइ त्ति णाम।
ते तिण्णि सहोयर मुक्कपाव णं दंसणणाणचरित्तभाव।
तहिं अवरु अरिंदमणयरि राउ णामेण अरिंजउ जयसहाउ।
तहु पणइणि णामें अजियसेण कीलंतहं दोह[7] मि रइरसेण[8]।
घत्ता—पीईमइ[9] तणय[10] हूई[11] सा किं मइं वण्णिज्जइ।
जाइ सरूवएण[12] उव्वसि[13] रइ रंभ हसिज्जइ ॥7॥

(8)

परियंचिवि सुरगिरिवरु तिवार[1] जो लेइ माल [2]मणिकिरणफार[3]।
णीसेस[4] वि णियपयमूलि[5] घित्त विज्जाहर[6] मेरु भमंत जित्त।
मणगइचवलगइणामालएहिं आवेप्पिणु धारिणिबालएहिं।

---

(7)

विजयार्ध पर्वत की उत्तर श्रेणी के गन्धिल जनपद में धवलगृहों से सुन्दर सूर्यप्रभपुर नगर में सूर्यप्रभ नाम का राजा था जो अपने मुख की कान्ति से चन्द्रमा का उपहास करता था। प्रिय करनेवाली धारिणी नाम की उसकी पत्नी थी जो कामरूपी कल्पवृक्ष की जन्मभूमि थी। समय आने पर, उसके पुण्य के अनुरूप आभा के भार से युक्त ऐश्वर्य की लता के बाहुवाले (तीन) पुत्र उत्पन्न हुए। वे तीनों धर्म, अर्थ और काम थे। चिन्तागति, मनोगति और चपलगति उनके नाम थे। वे तीनों ही भाई मुक्तपाप थे मानो दर्शन, ज्ञान और चारित्र्यभाव हों। वहीं अरिंदमपुर नगरी में जयस्वभाववाला अरिंजय नाम का राजा था। उसकी अजितसेना नाम की प्रणयिनी थी। रतिरस के अधीन क्रीड़ा करते हुए उन दोनों के—

घत्ता—प्रीतिमती नाम की कन्या हुई। उसका मैं क्या वर्णन करूँ ? अपने स्वरूप से वह उर्वशी, रति और रम्भा का उपहास करती थी।

(8)

वह श्रेष्ठ सुमेरु पर्वत की तीन बार प्रदक्षिणा कर मणिकिरणों से विस्फारित माला लेती थी। सुमेरु पर्वत की परिक्रमा देते हुए समस्त विद्याधरों को उसने जीत लिया था और अपने चरणों के नीचे डाल लिया था।

---

(7) 1. P °हरिंदि। 2. P पुरे। 3. B °धरिणी°। 4. AP °रूय। 5. AP °भूय। 6. S तहो। 7. B दोहिं। 8. AP रइवसेण। 9. B पिइमइ; P पीइमइ। 10. ABP तणया। 11. S भुई; Als. हुइ against Mss. 12. A सुरूवएण। 13. A उव्वसि।

(8) 1. B तिवारु। 2. A मणिरयणि; P मणिरयण°। 3. B फारु। 4. A णीसेसैवि। 5. A °मूल°। 6. A विज्जाहर।

अक्खिय णियभायहु[7] एह वत्त　ता[8] तेण वि कय[9] तहं विजयजत्त।
दिट्ठी कुमारि णहयर[10] जिणंति　अमरायलपासहिं[11] परिभमंति।
चिंतागइ भासइ सोक्खखाणि　हलि वेयवंति कलहंसवाणि।
लइ मुयहि माल [12]विम्हियमणाउ[13]　सुरसिहरिहि तिण्णि पयाहिणाउ।
विरएप्पिणु तुहुं पावहि ण जाम　हउं पंकयच्छि धुवु[14] धरमि ताम।
तं वयणु लाइ पडिवण्णु तेंव　थिय गयणंगणि जोयंत[15] देव।
[16]केसरिकिसोरखयकंदरासु　लहुं देवि तिभामरि मंदरासु।
सूरप्पहतणएं[17] धरिय माल　[18]गइवेएं णिज्जिय खयरबाल।
घत्ता—उत्तउं सुंदरिइ पइं मुइवि ण को वि महारउ।
दिट्ठु अदिट्ठु तुहुं चिंतागइ कंतु महारउ ॥8॥

(9)

ता भणिउं तेण मारुयजवेहिं　अहिलसिय कण्ण[1] तुहुं बंधवेहिं।
पइं जित्ता[2] ए इह धावमाण　थिय कायर असहियकुसुमबाण।
जो रुच्चइ सो महुं अणुउ कंतु　करि एवहिं [3]एहु जि तुज्झ मंतु।
मणसियसरजालणिरुद्धियाइ　तं णिसुणिवि बोल्लिउं मुद्धियाइ।

धारिणीबाला से उत्पन्न मनोगति और चपलगति नाम के पुत्रों ने यह बात अपने भाई से कही। तब उसने भी वहाँ के लिए 'विजययात्रा' की। सुमेरु पर्वत के चारों ओर परिक्रमा देते हुए विद्याधरों को जीतते हुए उसने कन्या को देखा। चिन्तागति बोला—"हे सुख-खान तथा कलहंस के समान मधुर बोलनेवाली वेगशीले ! लो माला छोड़ो, जब तक तुम उसे नहीं पाती तब तक मन को विस्मय में डालनेवाली सुमेरु पर्वत की तीन प्रदक्षिणाएँ कर मैं उसे धारण करता हूँ।" उसने यह वचन, इसी रूप में स्वीकार कर लिया। देवता देखते हुए आकाश में स्थित हो गये। सिंहशावकों से क्षतविक्षत गुफाओंवाले मन्दराचल की शीघ्र तीन प्रदक्षिणा देकर सूर्यप्रभ के पुत्र ने माला ग्रहण कर ली। उसने अपने गतिवेग से विद्याधर कन्या को जीत लिया।

घत्ता—सुन्दरी ने कहा—"तुम्हें छोड़कर और कोई हमारा नहीं है। चिन्तागति ! तुम दृष्ट-अदृष्ट मेरे पति हो।"

(9)

तब उसने कहा—"हे कन्ये ! पवन के समान वेगवाले मेरे भाइयों के द्वारा तुम चाही गयी हो। इस प्रकार दौड़ते हुए ये दोनों तुम्हारे द्वारा जीते गये कामबाण को नहीं सह सकने के कारण कायर हो गये हैं। जो तुम्हें अच्छा लगे, मेरे उस छोटे भाई से तुम विवाह कर लो। इस समय मेरा तुम्हारे लिए यही परामर्श

---

7. B °भायहि। 8. AP तो। 9. AP तहिं किय। 10. P णहयरे। 11. P °पासेहिं। 12. BP विंभिय°। 13. P °मणाओ। 14. ABP धुउ। 15. AP जोयंति। 16. B °किसोर; S केशरिकिशोर°। 17. A सुप्पहतणएं। 18. B गयवेएं।

(9) 1. P कण्णे। 2. A पइं जित्ताइं जि इह पलवमाण; B जित्ता ए धावंतमाण; P जित्ता ए इह धावंतमाण; T पलावमाण धावन्ती। 3. B तुज्झु जि एहु।

मणणयणहुं वल्लहु जइ वि रम्मु   बलिमड्डु[4] ण किज्जइ तो वि पेम्मु[5]।
हो[6] हो णियणिलयहु चित्त जाहि   मा दुल्लहसंगि अणंगि थाहि।
इय चिंतिवि मेल्लिवि[7] मोहभंति   पणविवि णिवित्ति[8] णामेण खंति।
झाइउ जिणु केवलणाणचक्खु   परिपालिउ संजमु ताइ तिक्खु।

घत्ता—दीणहं दुत्थियहं सज्जणविओयजरभग्गहं[9]।
णीवइ[10] दुक्खसिहि [11]जिणवरपयपंकयलग्गहं ॥9॥

(10)

अवलोइवि [1]कण्णहि तणिय वित्ति   चिंतागइणा [2]कय [3]घरणिवित्ति।
सहुं भायरेहिं दमवरसमीवि   तवचरणु[4] लइउ गुणमणिपईवि।
संणासें मरिवि [5]सिरीवियप्पि   जाया तिण्णि वि [6]माहिंदकप्पि।
तहिं दीहकालु णियणियविमाणु   भुंजेप्पिणु सत्तसमुद्दमाणु।
इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि   पुक्खलवइदेसि[7] सवंतमेहि।
खयरायलि उत्तरदिसिणियंबि   मंदारमंजरीरेणुतंबि।
पुरि [8]णहवल्लहि पहु गयणचंदु   पिय गयणसुंदरी[9] मुक्कतंदु।
अमियगइ पुत्तु हउं ताहि जाउ   इहु अमियतेउ [10]लहुयरउ भाउ।

है।" तब कामदेव के तीरों के जाल से निरुद्ध वह मुग्धा यह सुनकर बोली—'यद्यपि प्रिय मन और नेत्रों के लिए रम्य (सुन्दर) है, तब भी बलात् प्रेम नहीं करना चाहिए। हे मेरे मन ! तू अपने घर में जा, दुर्लभ संगवाले अनंग में मत फँस।' यह सोचकर और मोहभ्रान्ति छोड़कर, निवृत्ति नाम की साध्वी को प्रणाम कर उसने केवलज्ञानरूपी नेत्रवाले जिन का ध्यान किया और तीव्रतम संयम का परिपालन किया।

घत्ता—दीन दुःस्थित सज्जन के वियोग-ज्वर से भग्न लोगों के दुःख की ज्वाला जिनवर के चरण-कमलों की सेवा करने से शान्त हो जाती है।

(10)

कन्या का आचरण देखकर चिन्तागति भी घर से निवृत्त हो गया, और गुणरूपी मणियों के प्रदीप रूप दमवर नामक मुनि के पास अपने भाइयों के साथ तपश्चरण ग्रहण कर लिया। संन्यासपूर्वक मरण कर वे तीनों श्री से विरचित माहेन्द्र स्वर्ग में उत्पन्न हुए। वहाँ लम्बे समय तक सात सागर प्रमाण अपने-अपने विमान में सुख भोगकर—इस जम्बूद्वीप के उत्तर विदेह में पुष्कलावती देश है जहाँ निरन्तर मेघ बरसते रहते हैं, वहाँ विजयार्ध पर्वत के उत्तर श्रेणी-तट पर जो मन्दार मंजरी की धूलि से लाल है, ऐसे नभवल्लभ नगर में राजा गगनचन्द है; आलस्य से रहित, उसकी गगनसुन्दरी नाम की पत्नी है। मैं उससे उत्पन्न अमितगति

---

4. B वलिमद्दु; P वलिमंड; S वलिमद्द। 5. P पेंमु। 6. B हो हो णियणिलयहं; P हो हीउ णियत्तहे; S हो हो णियणिलयहे। 7. B मल्लिवि। 8. S णिवित्त। 9. S °वियोय°। 10. BPS Als. णावइ। 11. P °पयपंकए; S om. प in पयपंकए।

(10) 1. B कण्णहु; P कण्णहो। 2. A किय। 3. B घरि। 4. P तउचरणु। 5. B सीरी°। 6. BP माहिंद°। 7. A पुक्खलइदेसि। 8. K णववल्लहि। 9. A मयणसुंदरी। 10. S लहुअयरु।

बेण्णि वि तुरीयसग्गावइण्ण जाणसि [11]जं जित्ती आसि कण्ण।
तुह विरहणडिय अंसुय मुयंति जाणसि जं ण समिच्छिय रुयंति।
जाणसि जं ताइ वउल्लु चारु [12]जाणसि जं किउ[13] चारित्तभारु।
अम्हइं [14]तीहिं मि ववसियमणेहिं[15] दमवरसयासि[16] पोसियगुणेहिं।

घत्ता—छुडु छुडु जोइयउं[17] लइ जइ वि सुट्ठु दूरिल्लइं[18] ॥
[19]धुवु जाइंभरइं[20] णयणइं मुणंति णेहिल्लइं[21] ॥10॥

(11)

अम्हइं ते भायर तुज्झु राय अण्णेत्तहि[1] कम्मवसेण जाय।
अरहंतु सयंपहणामधेउ पुच्छियउ [2]पुंडरीकिणिहि देउ।
णियजम्मणु तुह [3]जम्में समेउ आहासइ णासियमयरकेउ।
सीहउरि [4]राउ दूसियविवक्खु चिंतागइ हुउ[5] [6]अवराइयक्खु।
सो तुम्हह बंधउ[7] णिव्वियारु जं णिसुणिवि केवलिवयणसारु[8]।
अम्हहं[9] हूई दंसणसमीह आया तुहुं दिट्ठउ पुरिससीह।
पत्तिय[10] फुडु जंपिउं जिणवरासु अण्णु[11] वि तुह जीविउं एक्कु मासु।
इय कहिवि साहु गय बे वि गयणि णरणाहें छंडिय[12] तत्ति मयणि।

नाम का पुत्र हूँ, यह अमिततेज छोटा भाई है। ये दोनों ही स्वर्ग से अवतीर्ण हुए हैं। तुम जानते हो कि जो कन्या जीती गयी थी, वह तुम्हारे विरह में प्रवंचित, आँसू बहाती हुई, रोती हुई, जो तुम्हारे द्वारा नहीं चाही गयी थी, जानते हो उसने सुन्दर व्रत किया था, और जानते हो कि चारित्रभार-गुणों का पोषण करनेवाले हम तीनों ने भी निश्चितमन से मुनि दमवर के पास (व्रत) ग्रहण किया था।

घत्ता—जल्दी-जल्दी, उन्होंने एक-दूसरे को देखा; यद्यपि वे काफी दूर थे, निश्चय से स्नेही नेत्रों को जातिस्मरण हो जाता है।

(11)

हे राजन् ! हम तुम्हारे वे ही भाई हैं। कर्म के वश से दूसरी जगह उत्पन्न हुए हैं। हे देव ! हमने पुण्डरीकिणी नगर में स्वयम्प्रभ नामवाले अरहन्त से तुम्हारे जन्म के साथ अपने पूर्वजन्म पूछे थे। कामदेव का नाश करनेवाले श्री अरहन्त ने बताया था कि शत्रुपक्ष को दूषित करनेवाला चिन्तागति सिंहपुर में अपराजित नाम का राजा हुआ है, वही तुम्हारा निर्विकार भाई है। केवलज्ञानी के वचनों के सार को सुनकर हम लोगों को तुम्हें देखने की इच्छा हुई, आकर हमने तुम्हें देख लिया। विश्वास करो, जिनवर का कथन स्पष्ट है। अब तुम्हारा जीवन एक माह का रह गया है।" यह कहकर, वे दोनों साधु आकाशमार्ग से चले गये। राजा अपराजित ने कामदेव

11. AP जें। 12. P जाणसं। 13. S णिउ। 14. B तिण्णि वि; P तिहिं मि। 15. A ववसियसणेहिं। 16. B दमवरयपासि। 17. B जोयउं। 18. A दुरिल्लउं; Als. दूरिल्लइं against Mss. to accord with the end of the next line. 19. AP धुउ; B धुउ। 20. AP जाइसरइं; S जाइभरइं। 21. APS णेहिल्लउं; but BK णिहिल्लइं and gloss in K स्निग्धानि।

(11) 1. A अण्णण्णहे। 2. S पुंडरिकिणिहे। 3. BK जम्मि। 4. B राय। 5. P हुउ। 6. S अवराइअक्खु। 7. S बंधवु। 8. AB वयणु। 9. BS अम्हइं। 10. A पत्तिउ; B पत्तिउ। 11. AP अम्हाणं तुहु। 12. AB छड्डिय; S छड्डिय।

अहिसिंचिवि जिणपडिमाउ तेण भावें पुज्जिवि अवराइएण।
बहुदीणाणाहहं[13] दाणु देवि घरपुत्तकलत्तइं परिहरेवि।
इंदियकसायमिच्छत्तदमणु किउ मासमेत्तु पाओयगमणु[14]।
मुउ उप्पण्णउ अच्चुयविमाणि बावीसजलहिजीवियपमाणि।
घत्ता—तेत्थहु[15] ओयरिवि[16] इह भरहखेत्ति विक्खायउ[17]।
कुरुजंगलविसए पुणु हत्थिणायपुरि जायउ ॥11॥

(12)

सिरिचंदें सिरिमइयहि तणूउ णिरुवमतणु [1]कुरुकुलनृवविणूउ।
गुणवच्छलु[2] णामें सुप्पइट्ठु प्रिउ[3] णंदादेविहि [4]प्राणइट्ठु।
[5]तहु रज्जु देवि हुउ सो महीसु सिरिचंदु सुमंदिरगुरुहि सीसु।
णीसंगु णिरंबरु वणि पइट्ठु जहिं सिरि अणुहुंजइ सुप्पइट्ठु।
तहिं जसहरु रिसि चरियइ पवण्णु राएं पय धोइवि[6] दिण्णु अण्णु।
तहिं तासु भवणपंगणगयाइं[7] अच्छरियइं पंच समुग्गयाइं।
कालें जंतें पिहुसोणियाहिं कीलंतु समउं रायाणियाहिं।
पत्थिउ अवलोयइ[8] दिसउ[9] जाम णिवडंति[10] णिहालिय उक्क ताम।
चिंतइ णरवइ णिवडिय जलंति गय उक्क खयहु जिह पउ[11] करंति।

में अपनी तृप्ति छोड़ दी। उसने जिनप्रतिमा का अभिषेक कर, भाव से उसकी पूजा कर, बहुत से दीन अनाथों को दान देकर, घर, पुत्र और कलत्र का परित्याग कर, इन्द्रिय-कषाय और मिथ्यात्व का दमन करनेवाला एक माह का कायोत्सर्ग किया। मरकर वह अच्युत विमान में उत्पन्न हुआ। वहाँ बाईस सागर प्रमाण जीवन बिताकर—

घत्ता—वहाँ से अवतीर्ण होकर इस भरतक्षेत्र के कुरुजांगल देश के हस्तिनापुर नगर में विख्यात हुआ।

(12)

श्रीचन्द्र से श्रीमती का पुत्र अनुपम शरीर, कुरुकुल के राजा के द्वारा संस्तुत, गुणवत्सल सुप्रतिष्ठ नाम का था। नन्दादेवी का प्रिय और प्राणों का इष्ट। वह राजा श्रीचन्द्र उसे राज्य देकर सुमन्दिर गुरु का शिष्य होकर अनासंग और दिगम्बर रूप में वन में चला गया। सुप्रतिष्ठ श्री का भोग करने लगा। वहाँ यशोधर मुनि चर्या के लिए आये। राजा ने चरण धोकर आहार-दान दिया। वहाँ उसके आँगन में पाँच आश्चर्य उत्पन्न हुए। समय बीतने पर स्थूलकटि वाली स्त्रियों के साथ रमण करते हुए जब वह दिशा की ओर देखता है, तभी एक तारे को गिरता हुआ देखता है। प्रज्वलित होकर गिरती हुई उल्का को देखकर राजा सोचता है—जिस

13. S °णाहहं। 14. AP पाओवगमणु। 15. B तित्थहो। 16. S उयरेवि। 17. P विक्खायओ।

(12) 1. P कुवलयणिवविणूओ। 2. AB गुणि वच्छलु। 3. A पुयणंदा° B प्रियु; P पिय; Als. प्रियणंदा°। 4. AP पाणइट्ठु। 5. B सो हुउ; P हुओ; S रज्जे but gloss सुप्रतिष्ठस्य। 6. B धोविवि। 7. AP पंगणे कयाइं। 8. B अवलोवइ। 9. A दिसिउ। 10. A णिवडंत। 11. AP पउरकंति।

तिह जीव विविहकिंकरसयाइं जगि कासु वि होंति ण सासयाइं।
इय [12]चविवि सुदिट्ठिहि तणुरुहासु सइं बद्धु पट्टु पहसियमुहासु।
णिज्झाइयसिवपुरमंदिरासु पणवेप्पिणु पाय सुमंदिरासु।
घत्ता—दिहिपरियरसहिउं[13] णीसेसभूयमित्तत्तणु ॥
गिरिकंदरभवणु पडिवण्णउं तेण रिसित्तणु ॥12॥

(13)

सुपइट्ठें दुद्धरु चिण्णु चरिउं मणु[1] सत्तुमित्ति सरिसउं जि धरिउं।
परवाइमयाइं[2] परिक्खियाइं एयारह अंगइं सिक्खियाइं।
विडवेसइं केसइं लुंचियाइं गयगण्णइं[3] पुण्णइं संचियाइं[4]।
रउ[5] विहुणिवि णिहणिवि जिणिवि कामु अविरुद्धउं बद्धउं अरुहणामु।
अ सि आ उ सा इं अक्खर सरेवि गयपासें संणासें मरेवि।
अहमिंदु अणुत्तरि हुउ[6] जयंति [7]हिमहंससुहारुहकिरणकंति।
तेत्तीसमहण्णवणियमियाउ तेत्तियहिं[8] जि पक्खहिं ससइ देउ।
तेत्तियहिं[9] जि [10]सूरिपयासएहिं[11] वोलीणहिं वरिससहासएहिं[12]।
भुंजइ मणेण सुहुमाइं जाइं मणगेज्झइं किर पोग्गलइं ताइं।

प्रकार लूका (उल्का) क्षय के स्थान को प्राप्त हुई, उसी प्रकार उसे भी क्षय को प्राप्त होना है। सैकड़ों तरह के अनुचर सदैव नहीं रहते। यह कहकर उसने स्वयं प्रहसित-मुख अपने सुदृष्टि नाम के पुत्र को पट्ट बाँध दिया और मोक्ष का ध्यान करनेवाले सुमन्दिर गुरु को प्रणाम कर,

घत्ता—उसने ऋषित्व स्वीकार कर लिया—जो धैर्य के परिग्रह से युक्त है, जिसमें समस्त प्राणियों के प्रति मित्रता का भाव होता है और गिरिगुफाएँ ही जिसके घर होती हैं।

(13)

सुप्रतिष्ठ ने ऐसा कठोर तप किया कि मन में शत्रु और मित्र को समान रूप से समझा। परवादी के मतों का उन्होंने परीक्षण किया। ग्यारह अंगों को सीखा। विडरूप में दिखनेवाले केशों को उखाड़ा और अगणित पुण्यों का संचय किया। पाप को नष्ट कर, काम को जीतकर और नष्ट कर अविरुद्ध अरहन्त नाम की प्रकृति का बन्ध किया। 'अ सि आ उ सा' आदि अक्षरों का स्मरण कर पापरहित संन्यास से मरकर, हिम, हंस और चन्द्रमा की किरणों के समान कान्तिवाले अनुत्तर विमान में उत्पन्न हुआ। तेतीस सागर प्रमाण आयु से नियमित, देव तेतीस पक्षों में साँस लेता, आचार्यों द्वारा प्रसारित उतने ही (33) हजार वर्षों में मन से

12. A सरेवि; P भरेवि। 13. D °परियण°; K °परियण° but corrects it to परियर°।

(13) 1. P मणि सत्तु मित्तु सरिसउं। 2. P °वाइयमयाइं। 3. A गयसण्णइं। 4. B संचियामिं। 5. AP रवं विहिणेवि णिहिणेवि। 6. P हुओ। 7. B हिमरासिसुहारयकिरण°। 8. D तेत्तीयहिं पक्खहिं; 9. B तेत्तीयहिं सूरि°; 10. A सूर°। 11. P °पयासिएहिं। 12. S °सहाएहिं।

णाणें परियाणइ लोयणाडि करमेत्तदेहु [13]मणहरकिरीडि।
णिवसइ विमाणि पप्फुल्लवत्तु सो होही [14]जहिं तं भणमि गोत्तु।
घत्ता—गोत्तमु भणइ सुणि मगहाहिव लद्धपसंसहु।
रिसहणाहकयहु पच्छिमसंतइ[15] हरिवंसहु ॥13॥

(14)

इह दीवि भरहि वरवच्छदेसि[1] कोसंबीपुरवरि जणणिवासि।
मघवंतु राउ पिसुणयणताबि तहु वीयसोय णामेण देवि।
रहु णामें णंदणु सुमुहु[2] सेट्ठि कालिंगदेसि कमलाहदिट्ठि।
दंतउरहु हौंतउ[3] वीरदत्तु वणि वणमालासहुं पोम्मवत्तु[4]।
वाहहुं भइयइ[5] णावइ कुरंगु आयउ अणाहु कयसत्थसंगु[6]।
कोसंबि पइट्ठउ [7]सुमुहभवणि ठिउ जालगवक्खविसंतपवणि।
सव्वइं वित्तइं[8] रइरसरयाइं अण्णहिं दिणि [9]वणकीलहि गयाइं।
वणमाल बाल सुमुहेण दिट्ठ [10]लायण्णवंत रमणीवरिट्ठ।
अहिलसिय सुसिय[11] तहु देहवेल्लि मणि लग्गी भीसणमयणभल्लि।

ग्राह्य पुद्गलों को ग्रहण करता है। ज्ञान से लोकनाड़ी को जानता है, एक हाथ प्रमाण शरीरवाला, और सुन्दर मुकुटवाला प्रफुल्ल-मुख वह विमान में निवास करता है। वह जहाँ जन्म लेगा, उसके कुल को कहता हूँ।

घत्ता—गौतम मुनि कहते हैं—हे मगधराज, ऋषभनाथ द्वारा निर्मित प्रशंसा-प्राप्त हरिवंश की अन्तिम परम्परा सुनो। (ऋषभ जिन इक्ष्वाकुवंश के थे। कुरुवंश का प्रमुख सोमप्रभ था। उग्रवंश का कश्यप या मघवा, हरिवंश का प्रमुख हरिश्चन्द या हरिकान्त था तथा नाथवंश में अकम्पन या श्रीधर राजा)।

(14)

इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के श्रेष्ठ वत्स देश में जननिवास से परिपूर्ण कौशाम्बी नगर वर में दुष्टों को सन्ताप देनेवाला मघवन्त नाम का राजा था। उसकी वीतशोका नाम की देवी (पत्नी) और रघु नाम का पुत्र था। वहीं सुमुख नाम का सेठ था। कलिंग देश से कमलों के समान नेत्रवाला कमलमुखी वीरदत्त वणिक् अपनी पत्नी वनमाला के साथ, दन्तपुर होता हुआ, व्याधों के भय से हरिण की भाँति, अनाथ होकर सार्थवाह के साथ आया। कौशाम्बी में प्रवेश कर, जालीदार झरोखों से जहाँ पवन प्रवाहित होता है ऐसे सुमुख सेठ के भवन में वह रहने लगा। रति-रस में रत नगर के सभी प्रसिद्ध लोग दूसरे दिन वनक्रीडा करने के लिए गये। सेठ सुमुख ने लावण्यवती श्रेष्ठ रमणी वनमाला को देखा। वह उसे चाहने लगा। उसकी देहलता सूख✓

---

13. APS मणहरुं। 14. B जह। 15. P पत्थिवसंतए।

(14) 1. S °वच्छदेसे। 2. S सुमुह। 3. B हुंतउ। 4. AP पेंमवत्तु; S पेमवत्तु; K पोम्मवत्तु but adds a p: पेम्म इति पाठे स्नेहवान्। 5. B भइए। 6. B °सत्यु। 7. D सुमुहु। 8. A वि ताइं; P वित्ताइ। 9. AP वणकीलागयाइं। 10. AP लायण्णवण्ण। 11. S सुसीय।

[12]दूसीलें परजायारएण[13] वणिवइणा णिरु मायारएण।
बारहवरिसावहिं[14] दिण्णु वित्तु [15]वाणिज्जहि पेसिउ वीरदत्तु[16]।

घत्ता—गउ सो इयरु तहिं[17] आलिंगणु देंतु ण थक्कइ।
परहरवासियहु धणु धणिय ण कासु वि चुक्कइ ॥14॥

(15)

डज्झउ परदेसु परावयासु परवसु[1] जीविउं परदिण्णु[2] गासु।
भूभंगभिउडिदरिसियभएण रज्जेण वि किं किर परकएण।
सभुयज्जिएण[3] सुहुं वणहलेण णउ परदिण्णें मेइणियलेण[4]।
वर गिरिकुहरु वि मण्णमि[5] सलग्घु णउ परधवलहरु पहामहग्घु।
कीलंति ताइं णारीणराइं उरयलथणयलविणिहियकराइं।
बहुकालहिं[6] आएं[7] मयपमत्तु वणिणा वणिवइ वणमालरत्तु।
जाणिउ तावें अंतंतझीणु[8] अपसिद्धउ[9] णिद्धणु बलविहीणु।
बलवंतें रुद्धउ काइं करइ अणुदिणु चिंतंतु जि णवर मरइ।
खलसंगें लग्गी तासु सिक्ख पोट्ठिलु[10] मुणि पणविवि लइय दिक्ख।
चिंतिवि[11] किं महिलइ किं धणेण मुउ अणसणेण णियमियमणेण।
संपुण्णकाउ सोहम्मि देउ चित्तंगउ णामें जाम जाउ।

गयी। उसके मन में मानो काम की भयंकर भाले की नोंक लग गयी। कुशील और परस्त्री के लम्पट अत्यन्त मायावी सेठ ने धन दिया और वीरदत्त को बारह वर्ष के लिए वाणिज्य के लिए भेज दिया।

घत्ता—वह चला गया। दूसरा (सेठ) वहाँ आलिंगन देते हुए नहीं थकता था। दूसरे के घर में रखा हुआ किसी का भी धन और धन्या (स्त्री) बचती नहीं है।

(15)

परदेश, परनिवास परवश जीवन और दूसरे के द्वारा दिये गये भोजन को आग लगे। भ्रूभंगोंवाली भृकुटियों से जिसमें भय दिखाया जाता है, ऐसे दूसरे के राज्य से क्या ? अपने बाहुओं से अर्जित वनफल में सुख है। दूसरे के द्वारा दिये गये धरणीतल में सुख नहीं है। मैं गिरिगुफा को श्रेष्ठ और श्लाघनीय मानता हूँ, लेकिन प्रभा से महनीय दूसरे का धवलगृह अच्छा नहीं। उरतल और स्तनतल पर हाथ रखते हुए वे दोनों स्त्री-पुरुष (सुमुख और वनमाला) क्रीडा करने लगे। बहुत समय के बाद आये हुए वणिक् वीरदत्त ने जान लिया कि मद से प्रमत्त सेठ वनमाला में अनुरक्त है। सन्ताप से अत्यन्त क्षीण अप्रसिद्ध निर्धन बलविहीन वह, बलवान् से अवरुद्ध होने पर क्या करे; प्रतिदिन विचार करता हुआ केवल मर रहा था। उसे एक दुष्ट की सीख लग गयी और उसने प्रोष्ठिल मुनि को प्रणाम कर दीक्षा ले ली। यह सोचते हुए कि स्त्री और धन से क्या ? अनशन और मन के संयम के साथ वह मर गया। वह सौधर्म स्वर्ग में सम्पूर्णकाय चित्रांग नाम का देव उत्पन्न हुआ।

12. B दूसेलें; S दूशीलें। 13. B °रयेण। 14. S °वरसावहिं। 15. B वाणिज्जहो। 16. B वीरयत्तु। 17. B तहिं।

(15) 1. S परवस। 2. BP °दिण्णगासु। 3. B °भुयज्जिएहिं। 4. S मेयणियलेण। 5. A मण्णमि। 6. AB कालें; P कालहं। 7. B आयएं। 8. A ता तावें अंतु खीणु; P अंतंतु खीणु; S अंतंतु झीणु। 9. B अपसिद्धिउ। 10. B पुट्ठिलु; S पोट्ठिल। 11. P चिंतए।

घत्ता—सावयवय धरिवि ता कालें कयमयणिग्गहु।
रघु मघवंतसुउ सुरु हुउ तेत्थु[12] जि सूरप्पहु ॥15॥

(16)

वणमालइ सुमुहें णिरु णिरीहु   भुंजाविउ मुणिवरु धम्मसीहु।
आयण्णिउ धम्मु जिणिंदसिट्ठु[1]   अप्पाणु[2] वि धूलिसमाणु[3] दिट्ठु।
चिंतवइ सेट्ठि दुक्कियविरत्तु   हा हित्तउं किं मइं परकलत्तु।
असहायहु आयहु विहलियासु   हा किं [4]मइं विरइउ गेहणासु।
सुयरइ[5] गेहिणि हउं कयकुकज्ज[6]   [7]भत्तारदोहकारिणि[8] अलज्ज[9]।
हा किं ण गइय हउं खंडखंडु   हा पडउ मज्झु सिरि वज्जदंडु।
इय णिंदंतइं असणीहयाइं   कालेण ताइं बिण्णि वि [10]मुयाइं।
इह[11] भरहखेत्ति हरिवरिसविसइ   भोयउरि [12]भोइभडभुत्तविसइ।
णरणाहु पहंजणु[13] सइ मिकंड[14]   तहु घरिणि णिरूविय [15]कामकंड।
हुउ सुमुहु पुत्तु तहि सीहकेउ   सालयपुरि[16] णरवइ वज्जचाउ[17]।
सुहदेवि[18] सुहप्पायण[19] गुणाल   वणमाल ताहिं सुय विज्जुमाल[20]।
हूई परिणाविउ सीहचिंधु   जम्मंतरसंचियणेहबंधु[21]।

घत्ता—उसी समय, श्रावक व्रत धारण कर, अपने मन का निग्रह कर, राजा मघवन्त का पुत्र रघु उसी स्वर्ग में सूरप्रभ नामक देव हुआ।

(16)

वनमाला और सेठ सुमुख ने (एक दिन) अत्यन्त निरीह धर्मसिंह मुनिवर को आहार दिया और उन जिनवर के द्वारा कथित धर्म को सुनकर, उसने अपने को धूल के समान देखा। खोटे काम से विरक्त सेठ सोचता है—हा ! मैंने दूसरे की स्त्री का अपहरण क्यों किया ? विह्वल और असहाय आये हुए इसका (वीरदत्त का) घर बर्बाद क्यों किया ? गृहिणी (वनमाला) सोचती है—मैंने कुकर्म किया है। मैं अपने पति से द्रोह करनेवाली और निर्लज्ज हूँ। हा ! मेरे टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गये ? हा ! मेरे सिर पर वज्रदण्ड पड़े। इस प्रकार अपनी निन्दा करते हुए उसी समय वे दोनों बिजली गिरने से मर गये। इस भरतक्षेत्र के हरिवर्ष देश में, भोगी और सुभटों के द्वारा भुक्त (विषयभोग के समान) भोगपुर नगर में प्रभंजन नाम का राजा था, और उसकी सती मृकण्ड नाम की स्त्री कामबाण कही जाती थी। सुमुख उससे सिंहकेतु नाम का पुत्र हुआ। सालयपुर (वस्त्वालय— उत्तरपुराण) का राजा वज्रचाप था। उसकी पत्नी शुभदेवी सुख देनेवाली और गुणवती थी। वनमाला वहाँ विद्युन्माला नाम की कन्या हुई। वह जन्मान्तर के संचित स्नेहबन्धवाले सिंहकेतु (पूर्वभव का सुमुख सेठ) से विवाही गयी।

---

12. B तित्थु।

(16) 1. B जिणंद°। 2. AP अप्पाणउं धूलि°। 3. B °सुमाणु। 4. A मइं किह; P मइं किं। 5. BP सुअरइ। 6. B °कुकज्जु। 7. B °दोहि°। 8. S कारिणी। 9. B अलज्जु। 10. S मयाइं। 11. B इय। 12. A भोइसंपत्तविसए। 13. B पहुंजणु। 14. BS मिकंडु। 15. BS कामकंडु। 16. A सायलपुरे। 17. AB वज्जवेउ। 18. AP महएवि। 19. A सुहप्पा पणगुणाल। 20. BS विज्जमाल। 21. S °संचिउ।

घत्ता—पुरु घरु परिहरिवि रइणिब्भराइ एक्कहिं दिणि।
कयकेसग्गहइं कीलंति जाम णंदणवणि ॥16॥

(17)

कुंडलकिरीडचिंचइयगत्त[1] सूरप्पह चित्तंगय सुमित्त।
ता बे वि देव तं[2] तेत्थु[3] आय दंपइ पेक्खिवि मणि चिंत जाय।
चित्तंगएण परियाणियाइं कहिं जारइं विहिणा आणियाइं।
संतावयरइं संभावियाइं एवहिं कहिं जंति अघाइयाइं।
वणमाल एह कुच्छिय कुसील[4] इहु सुमुहु सेट्ठि जें मुक्क वील।
उच्चाइवि बेण्णि वि घिवमि[5] तेत्थु णउ खाणु पाणु णउ ण्हाणु[6] जेत्थु।
इय चिंतिवि भुयबलतोलियाइं देवेण ताइं संचालियाइं।
किर णिप्फलजलगिरिगहणि घिवइ तावियरु[7] अमरु करुणेण चवइ।
को एत्थु वइरि को एत्थु बंधु मुइ मुइ सुंदर वइराणुबंधु[8]।
दोसेसु खंति इच्छाणिवित्ति गुणवंति[9] भत्ति णिग्गुणि[10] विरत्ति।
कारुण्णु सव्वभूएसु जासु किं भण्णइ अण्णु समाणु तासु।
तं णिसुणिवि उवसमसंगएण भवियव्वु मुणिवि चित्तंगएण।
चंपापुरि चंपयचूयगुज्झि[11] घित्ताइं[12] बे वि उज्जाणमज्झि।

घत्ता—एक दिन, रति से परिपूर्ण होकर वे दोनों नगर-गृह छोड़कर जब नन्दनवन में एक-दूसरे के केश पकड़ते हुए क्रीड़ा कर रहे थे,

(17)

तब कुण्डलों और मुकटों से शोभितशरीर सूर्यप्रभ और चित्रांगद मित्र, दोनों देव वहाँ आये। दम्पती को देखकर उनके मन में चिन्ता हुई। चित्रांगद ने जान लिया कि विधाता इन धूर्तों को कहाँ ले आया। यह खोटी और कुशील वनमाला है। सन्ताप करनेवाले एक-दूसरे पर आसक्त ये दोनों बिना आघात के कहाँ जाते हैं ? यह सुमुख सेठ है, जिसने लज्जा का परित्याग कर दिया। दोनों को उठाकर वहाँ फेंकता हूँ जहाँ खाना-पीना और नहाना नहीं है। यह सोचकर उसने अपने बाहुबल को तोला और उन दानों को संचालित कर दिया (फेंक दिया)। वह उन्हें जल और फलों से रहित गिरिगुहा में फेंकता है, कि तब तक दूसरा देव (सूर्यप्रभ) उससे करुणा के साथ कहता है, "यहाँ कौन बैरी है और कौन भाई है ? हे सुन्दर, तुम बैर के अनुबन्ध को छोड़ो। जिसकी दोषों में क्षमा, इच्छाओं में निवृत्ति, गुणवानों में भक्ति और निर्गुण में विरक्ति और सर्वप्राणियों के प्रति करुणा भाव है उसके समान दूसरा और कौन है ?" यह सुनकर चित्रांगद देव ने शान्त होकर और भवितव्य सोचकर उन दोनों को चम्पा और आम्र-वृक्षों से गुह्य चम्पापुर के उद्यान में फेंक दिया।

(17) 1. ABPS °चिंचइय°। 2. S तं। 3. B तित्थु। 4. S कुशील। 5. A घिवेवि; S घित्तमि। 6. S ण्हाण। 7. AP तां इयरु। 8. S वइराणुबंधु। 9. S गुणवंत°। 10. S णिग्गुण°। 11. B °चूयगब्भि। 12. B घित्ता बे वि जि।

घत्ता—गय सुरवर गयणि तहिं पुरवरि अमरसमाणउ।
चंदकित्ति विजइ हुडु छुडु जि जाम मुउ राणउ ॥17॥

(18)

तहु तहिं संताणि ण पुत्तु अत्थि　　अहिवासिउ [1]मंतिहिं भद्दहत्थि।
जलभरिउ कलसु [2]करि दिण्णु तासु　　कंकेल्लिपत्तसंछाइयासु[3]।
करडयलगलियमयसलिलबिंदु　　चलरुणुरुणंतमिलियालिवृंदु[4]।
उत्तुंगु[5] णाइ जंगमु[6] गिरिंदु　　सहुं परियणेण चल्लिउ करिंदु।
दिव्वेण [7]दइवसंचोइएण　　मुक्कंकुसेण उद्धाइएण।
उववणि पइसिवि सिरिसोक्खहेउ　　अहिसिंचिउ करिणा सीहकेउ।
परिवारें मिलिवि णिबद्धु पट्टु　　मा को वि करउ भुयबलमरट्टु।
परिणवइ कम्मु सव्वायरेण　　चिरभवसंचिउ[8] किं किर परेण।
णउ दिज्जइ संपय दिणयरेण　　गोविंदें बंभें तिणयणेण।
दुग्गाइ ण [9]जक्खें रेवईइ　　विणडिज्जइ[10] जणु मिच्छारईइ।
जय जीव[11] देव पभणंतएहिं　　पुच्छिउ पुणु राउ महंतएहिं।
को तुहुं भणु सच्चउं जणणु जणणि　　आगमणु काइं का जम्मधरणि।

घत्ता—देवश्रेष्ठ आकाश में चले गये। उस चम्पापुर नगरवर में देव के समान विजयी राजा चन्द्रकीर्ति राजा अचानक मर गया।

(18)

वहाँ उसकी परम्परा में कोई पुत्र नहीं था। मन्त्रियों ने भद्रहाथी को सजाया और जिसका मुख अशोक वृक्ष के पत्तों से ढका हुआ है ऐसा कलश उसकी सूँड में दे दिया। जिसकी सूँड से मदजल की बूँदें गिर रही हैं, जिस पर चंचल गुनगुनाता हुआ भ्रमर-समूह उड़ रहा है, ऐसा पहाड़ के समान ऊँचा हाथी परिजनों के साथ चला। दिव्य दैव से प्रेरित, अंकुश से रहित दौड़ते हुए हाथी ने उपवन में प्रवेश कर श्री और सुख के हेतु सिंहकेतु का अभिषेक किया। परिवार ने मिलकर उसे पट्ट बाँध दिया। किसी को अपने बाहुबल का घमण्ड नहीं करना चाहिए। चिरसंचित कर्म समस्त रूप से परिणत होता है; दूसरे से क्या ? सम्पत्ति न तो दिनकर के द्वारा दी जाती है और न गोविन्द, ब्रह्म और शिव के द्वारा अथवा दुर्गा, यक्षी और नर्मदा के द्वारा। लोग मिथ्या-रति के द्वारा नचाये जाते हैं। ''हे देव, जय, जिओ''—यह कहते हुए मन्त्रियों ने राजा से पूछा—''सच बताओ, तुम कौन हो, कौन तुम्हारे माता-पिता हैं ? यहाँ क्यों आये ? तुम्हारी जन्मभूमि क्या है ?''

(18) 1. B मंतहिं°। 2. A करदिण्णु। 3. S °संछाइयासु। 4. S °मिलियालवृंदु; BP °विंदु। 5. ABPS उत्तुंगु। 6. B जंगम। 7. B दइय°। 8. B °सिंचिउ; K °सिंचिय। 9. B जक्खि। 10. B णिवडिज्जइ। 11. S जीय।

घत्ता—जणवइ[12] हरिवरिसि पहु कहइ[13] सयलमणरंजणु[14]।
भोयपुराहिवइ[15] मेरउ पिय[16] राउ पहंजणु ॥18॥

(19)

मुहसोहाणिज्जियकमलसंडु[1] तहु गेहिणि महु मायरि मिकंड[2]।
हउं सीहकेउ केण वि ण जित्तु आणेप्पिणु केण वि एत्थु घित्तु[3]।
तं सुणिवि मिकंडइ[4] जणिउ जेण मंतिहिं [5]मक्कंडु जि भणिउ तेण।
तं[6] पवरसिंधुरारूढदेहु वहुवरु पइट्ठु पुरि बद्धणेहु।
बहुकिंकरेहिं सेविज्जमाणु[7] धयछत्तावलिहिं पिहिज्जमाणु।
चलचामरेहिं विज्जिज्जमाणु थिउ दीहु कालु सिरि भुंजमाणु।
तडिमालापियकंतासहाइ कालें कवलिइ मक्कंडराइ।
संताणि तासु जाया अणिंद हरिगिरि हिमगिरि वसुगिरि णरिंद।
जणसंबोहणउवणियसिवेहिं अवर वि बहु गणिय गणाहिवेहिं।
पुणु देसि कुसत्थइ[8] हुउ अदीणु सउरीपुरि राणउ सूरसेणु।
कुलि[9] तासु वि जायउ सूरवीरु धारिणिसुकंतमाणियसरीरु।

घत्ता—समस्त मनों का रंजन करनेवाला राजा कहता है—हरिवर्ष जनपद में भोगपुर के राजा प्रभंजन मेरे पिता हैं।

(19)

मुख-सौन्दर्य से कमल-समूह को जीतनवाली, उनकी गृहिणी मृकण्डु मेरी माँ है। यह सुनकर कि इसे मृकण्डु ने उत्पन्न किया है, मन्त्रियों ने इस कारण उसका नाम मार्कण्डेय रख दिया। तब प्रवर गजवर पर आरूढ़ देहवाले, परस्पर बद्धस्नेह, वधू-वर ने नगर में प्रवेश किया। अनेक सेवकों से सेवा किये जाते हुए और ध्वज-छत्रों से आच्छादित, चंचल चमरों से हवा किये जाते हुए वे दोनों बहुत समय तक लक्ष्मी का भोग करते रहे। विद्युन्माला पत्नी है सहायक जिसकी, ऐसे मार्कण्डेय राजा के काल-कवलित होने पर, उसकी सन्तान-परम्परा में क्रमशः अनिन्द्य हरिगिरि, हिमगिरि और वसुगिरि राजा हुए। लोगों को सम्बोधन के द्वारा शिव (मोक्ष) ले जानेवाले गणधरों ने (उस परम्परा में) और भी राजा गिनाये हैं। फिर कुशस्थ देश के शौरीपुर में समर्थ (अदीन) राजा शूरसेन हुआ। उसके भी कुल में शूरवीर वीर राजा हुआ, जिसका शरीर कान्ता और धारिणी के द्वारा मान्य था,

12. S जणवय। 13. B कहंति। 14. PS सयलजणरंजणु। 15. A भोयपुराहिवइ। 16. APS पिउ।

(19) 1. BP °संडु। 2. BP मिकंड। 3. B गेहु। 4. B मिकंडुए। 5. S मक्कंड। 6. AB ता पवरसंधुरा°। 7. S पहाविज्जमाणु। 8. A कुसित्थए। 9. AP पुरे हासु

घत्ता—[10]भरहपसिद्धपहु थिरथोरबाहुदुज्जयबल[11]।
जाया ताहिं सुय वरपुप्फयंततेउज्जल[12] ॥19॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमिजिणतित्थयरत्तणिबंधणं[13]
णाम एक्कासीतिमो परिच्छेउ समत्तो ॥81॥

घत्ता—और जो भारत का प्रसिद्ध राजा था। उसके स्थिर और स्थूल बाहुओं से अजेय बलवाले तथा श्रेष्ठ नक्षत्रों के समान तेजवाले पुत्र उत्पन्न हुए।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणों और अलंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस महाकाव्य का नेमिजिन-तीर्थंकर-बन्ध
नामक इक्यासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

10. B भरहि। 11. S °बाहु°। 12. P °पुष्पदंत°। 13. A °तित्थयरत्तणामबंधणं; B °तित्थयरत्तणामणिबंधणं।

दुयासीतिमो संधि

सइहि णीलधम्मेल्लउ [1]अंधकविट्ठि [2]पहिल्लहि।
णंदणु गयवयणिज्जउ णरवइविट्ठि[3] दुइज्जहि[4] ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

थणजुयलघुलियचलहारमणि जेट्ठहु सुभद्द णामें रमणि।
गुणि सुयणसिरोमणि परिगणिउ सुउ ताइ समुद्दविजउ जणिउ।
बीयउ णं पुण्णपुंजरइउ[5] अक्खोहु तिमियसायरु[6] तइउ।
हिमवंतु विजउ अचलु वि तणउ धारणु पूरणु अहिणंदणउ।
लहुयउ[7] वसुएउ विसालमइ[8] उप्पण्ण कोंति पुणु हंसगइ।
पुणु मद्दि कुंयरि[9] कुवलयणयण[10] मुणिहिं मि उक्कोइयमणमयण[11]।
णियगोत्तमणोरहगाराहु सिवएवि कंत पहिलाराहु।
बीयहु [12]सुमही सरमहुरसर[13] तइयस्स सयंपह कमलकर।
तुरियहु सुसीम[14] पंचमहु पिय प्रियवाय[15] णाम पच्चक्खसुय[16]।
अवरहु वि पहावइ णित्तमहु कालिंगी पणइणि सत्तमहु।
अट्ठमयहु सुप्पह सुहचरिय[17] णवमहु गुणसामिणि[18] संभरिय।

बयासीवीं सन्धि

पहली सती (धारिणी) से नीले केशवाला अन्धकवृष्णि उत्पन्न हुआ और दूसरी से निन्दारहित नरपतिवृष्णि।

(1)

जेठे अर्थात् अन्धकवृष्णि की पत्नी स्तनयुगल पर आन्दोलित चंचल हारमणियोंवाली सुभद्रा थी। उससे गुणों में शिरोमणि गिना गया समुद्रविजय नामक पुत्र हुआ। दूसरा मानो पुण्यपुंज से शोभित अक्षोभ्य, तीसरा स्तिमित-सागर, हिमवन्तविजय और अचलपुत्र, तथा धारणपूरण और अभिचन्द्र पुत्र हुए। सबसे छोटा विशालमति वसुदेव था। फिर हंसगामिनी कुन्ती उत्पन्न हुई। फिर कमलनयनी कुमारी माद्री हुई जो मुनियों के लिए भी कामोत्कण्ठा उत्पन्न करनेवाली थी। अपने कुल के मनोरथों को पूरा करनेवाले पहले (समुद्रविजय) की पत्नी शिवादेवी थी। दूसरे की काम के समान मधुरस्वरवाली धृति, तीसरे की कमल के समान हाथवाली स्वयंप्रभा, चौथे की सुनीता, पाँचवें की प्रिया कामदेव की माला के समान, प्रियावाक् (नामवाली), एक और (छठे) की निष्पाप प्रभावती थी। सातवें की प्रणयिनी कलिंगी थी। आठवें की पत्नी शुभचरित सुप्रभा थी। नौवें की गुणस्वामिनी याद की जाती थी।

(1) 1. B अंधयविट्ठि। 2. AP पहिल्लउ। 3. S णरवर°। 4. ABP दुइज्जउ। 5. ABPS पुण्णपुंजु। 6. A तिमिरसायरु। 7. B लहुओ। 8. B विसाल°। 9. AP कुमरि; BS कुंवरि। 10. B °णयणा। 11. B °मयणा। 12. S सुअमही। 13. B सरु महुर°। 14. A सुसीय। 15. PS पियवाय। 16. ABP सिय। 17. B सुहयरिय। 18. A गुणभामिणि।

घत्ता—णरवइविट्ठिहि गेहिणि विमलसीलजलवाहिणि ॥
जणि भल्लारी भावइ पोमवयण[19] पोमावइ ॥1॥

(2)

तहि उग्गसेणु परसेणहरु सुउ जायउ करिकरदीहकरु।
पुणु देवसेणु महसेणु हुउ साहसणिवासु णरवंदथुउ[1]।
एयहु[2] लहुई सस[3] सोम्ममुहि गंधारि णाम तूसवियसुहि।
विण्णाणसमत्ति पयावइहि[4] किं वण्णमि सुय पोमावइहि[5]।
कुरुजंगलि हत्थिणायणयरि तहिं [6]हत्थिराउ [7]छुहधोयघरि।
तहु देवि सुवक्कि [8]सुकोंतलिय सिद्धा इव वरवण्णुज्जलिय[9]।
हूयउ पारासरु [10]ताहि सुउ [11]रूवें णं सुरवरु सग्गचुउ।
मच्छउलरायसुय[12] सच्चवइ तहु दिण्णी सुंदरि सुद्ध[13] सइ।
[14]उप्पण्णु वासु [15]तहि अलियकइ[16] तहु भज्ज सुभद्द पसण्णमइ।
घत्ता—ताहि तेण उप्पण्णउ सुउ धयरट्ठु अदुण्णउ ॥
लक्खणलक्खियकायउ पंडु विउरु पुणु जायउ ॥2॥

(3)

ते तिण्णि वि भायर मणहरहु बहुकालें[1] गय [2]सउरीपुरहु।

घत्ता—नरपतिवृष्णि की विमलशीलरूपी जल की नदी और कमलमुखी पद्मावती लोगों को भली लगती थी।

(2)

उससे, हाथी की सूँड के समान लम्बे हाथवाला और शत्रुसेना का नाश करनेवाला उग्रसेन उत्पन्न हुआ। फिर देवसेन और महासेन हुए, साहस के घर और नरसमूह द्वारा संस्तुत। इनकी छोटी बहिन चन्द्रमुखी गान्धारी, सुधीजनों को सन्तुष्ट करनेवाली थी। वह विधाता की रचनाविज्ञान की परिसमाप्ति थी। पद्मावती की उस कन्या का मैं क्या वर्णन करूँ ? कुरुजांगल के चूने से पुते घरोंवाले हस्तिनापुर में हस्तिराज था। उसकी सुन्दर केशवाली सुवल्की नाम की देवी थी जो मातृकाओं के समान श्रेष्ठ और रंग में उजली थी। उससे पाराशर पैदा हुआ जो मानो स्वर्ग से च्युत सुरवर हो। मत्स्यकुल की शुद्ध और सती राजपुत्री से पाराशर का विवाह हुआ। उससे झूठा कवि व्यास उत्पन्न हुआ। प्रसन्नमति सुभद्रा उसकी पत्नी थी।

घत्ता—उससे उसके न्यायप्रिय धृतराष्ट्र पुत्र हुआ। फिर लक्षणों से लक्षित शरीर विदुर और पाण्डु उत्पन्न हुए।

(3)

बहुत समय के बाद वे तीनों भाई सुन्दर शौरीपुर नगर गये। वहाँ पर कुमार पाण्डु ने त्रिजग द्वारा संस्तुत

---

19. P पउमवयण।

(2) 1. AP णरविंद°। 2. P एयहं। 3. B ससि। 4. B °वइहो। 5. B °वइहो। 6. A हत्थु राउ। 7. S दुहधोय°। 8. B सकोंतलिया। 9. S पर°; B °वण्णुज्जलिया। 10. B तासु। 11. S रूएं। 12. B अहजण्हुराय°। 13. A सुद्धमइ। 14. B उप्पण्ण। 15. B तहो। 16. A ललियगइ।

(3) 1. ABP °कालहिं। 2. A सवरीपुरहो।

तहिं पंडुकुमारें तिजगथुय   अवलोइय [3]अंधकविट्ठिसुय।
सउहयलि [4]रमंती सहिहिं [5]सहुं   चिंतइ सुंदरि[6] जइ होइ महुं।
ता[7] लद्धउं मइं णरजम्मफलु   कोंतिइ जोयंतु थिरच्छिदलु।
परु वंचिवि तंबोलेण हउ   सो सूहउ पुलइयदेहु गउ।
एक्कु वि खणु कण्ण ण वीसरइ   रिसि सिद्धि व हियवइ संभरइ।
[8]आणंदपणच्चियबरहिणहु[9]   अण्णहिं दिणि गउ णंदणवणहु।
तहिं दिट्ठिय[10] पंडुं[11] पुंडरिय   पीयलियहरियमणियरफुरिय[12]।
विज्जाहरवरकरपरिगलिय   तरुणेण लइय अंगुत्थलिय।
पडिआयउ तं जोयइ[13] खयरु   किं जोयहि इय पुच्छइ[14] इयरु।
अक्खिउ खगेण रयणहिं जडिउं   इह मेरउं अंगुलीउं पडिउं।
चिंतिवि किं किज्जइ परवसुणा   तं दंसिउं तासु वाससिसुणा।

घत्ता—विहसिवि[15] वासहु पुत्तें [16]णिवकुमारिहियचित्तें।
णेहिं खयरु णियच्छिउ तहु सामत्थु पपुच्छिउ ॥3॥

(4)

[1]भो भणु भणु [2]मुद्दहि तणउ गुणु   तं णिसुणिवि[3] खेयरु[4] भणइ[5] पुणु।

सौधतल पर अन्धकवृष्णि की पुत्री को सहेलियों के साथ खेलते हुए देखा। वह सोचता है कि यदि यह सुन्दरी मेरी हो जाय, तो मैंने अपने मनुष्य-जन्म का फल पा लिया। स्थिरपलक देखते हुए उसे कुन्ती ने छकाने के लिए पान से आहत किया। वह सुभग एकदम रोमांचित हो गया। एक क्षण के लिए भी वह उस कन्या को नहीं भूलता, ऋद्धि और सिद्धि की तरह वह उसे अपने मन में याद करता रहा। दूसरे दिन वह, आनन्द से जिसमें मयूर नृत्य कर रहे हैं, ऐसे नन्दनवन में गया। वहाँ पाण्डु ने पीले और हरे मणियों से चमकती हुई सफेद, किसी विद्याधर के हाथ से गिरी हुई अँगूठी देखी। उस तरुण ने उसे ले लिया। विद्याधर उसे खोजता हुआ वहाँ आया। दूसरा (पाण्डु) उससे पूछता है—"तुम यहाँ क्या देख रहे हो ?" विद्याधर ने कहा—"रत्नों से जड़ी हुई मेरी अँगूठी यहाँ गिर गयी है।" यह सोचकर कि दूसरे के धन से क्या, व्यास-पुत्र ने वह अँगूठी उसे बता दी।

घत्ता—राजकुमारी के द्वारा हर लिया गया है चित्त जिसका ऐसे व्यासपुत्र ने हँसते हुए स्नेह से विद्याधर की ओर देखा और उसका सामर्थ्य पूछा—

(4)

"हो हो, अँगूठी के गुण बताओ।" यह सुनकर विद्याधर फिर से कहता है कि इससे (अँगूठी से) तत्काल

---

3. B अंधय°। 4. PS रमंति। 5. S सउ। 6. A सुंदरु; B सुंदर। 7. APS तो। 8. B °पणच्चिउ। 9. A °बरिहिणहो। 10. APS दिट्ठी। 11. A पंडुर-पंडुरिय; B पंडु पुंडरिय; P पंडुं पंडुरिय। 12. AB मणि विप्फुरिय। 13. B जोयउ। 14. B पुच्छिइ। 15. B वियसेवि। 16. A णृवकुमारि°।

(4) 1. AP भो भो भणु। 2. B मुद्दय। 3. AP सुणेवि। 4. AP खगेसरु। 5. APS कहइ।

इच्छियउं [6]रूउ खणि संभवइ वइरि वि पयपंकयाइं णवइ।
अद्दंसणु होइ ण भंति क वि ता भासइ कुरुकुलगयणरवि।
भो[7] णहयर एह दिव्व सुमह अच्छउ महु करि कइवय दियह।
को णासइ सज्जणजंपियउं तहु मुद्दारयणु समप्पियउं।
गउ णहयरु एहु[8] वि आइयउ अद्दंसणु णेय[9] विवेइयउ।
सयणालइ सुत्ती कोंति जहिं सहस त्ति पइट्ठउ तरुणु तहिं।
परिमट्ठउं[10] हत्थें थणजुयलु वियसाविउं[11] धुत्तें मुहकमलु।
कण्णाइ वियाणिउ[12] पुरिसकरु चिंतइ जइ आयउ पंडु[13] वरु।
तो देमि[14] तासु आलिंगणउं अण्णहु ण[15] वि अप्पमि अप्पणउं।
भवणंति कवाडु गाढु पिहिउं गुज्झहरइ अप्पउं णउ रहिउ।
सरलंगुलिभूसणु घल्लियउं [16]जुवएं पयडंगें बोल्लियउं।
दे देहि देवि महुं सुरयसुहुं उल्हावहि[17] विरहहुयासदुहुं।
मज्जायाणिबंधणु अइक्कमिउं ता [18]दोहिं मि तेहिं तेत्थु रमिउ।

घत्ता—ता वम्महसमरूवउ[19] ताहि गब्भि संभूयउ।
णवमासहिं उप्पण्णउ कउ सयणहिं पच्छण्णउ ॥4॥

मनचाहा रूप उत्पन्न किया जा सकता है, शत्रु चरणकमलों में प्रणाम करता है और अदर्शन होता है, इसमें जरा भी भ्रान्ति नहीं है। तब कुरुकुलरूपी आकाश का सूर्य पाण्डु कहता है—"हे विद्याधर, दिव्य और महनीय यह अँगूठी कुछ दिनों के लिए मेरे हाथ में रहे।" सज्जन के द्वारा कहे हुए को कौन टाल सकता है ? उसने उसके लिए मुद्रारत्न सौंप दिया। विद्याधर चला गया और यह (पाण्डु भी) चला आया। अदर्शन होने के कारण उसे जाना नहीं जा सका। कुन्ती जहाँ शयनकक्ष में सो रही थी, वह युवक तुरन्त वहाँ प्रविष्ट हुआ। हाथ से उसने स्तनतल को छुआ, और धूर्त ने उसका मुखकमल खिला दिया। कन्या ने जान लिया कि यह पुरुष का हाथ है। वह सोचती है कि यदि यह पाण्डु आया है तो आलिंगन दूँगी, किसी दूसरे के लिए स्वयं को अर्पित नहीं करूँगी। घर के भीतर से उसने किवाड़ मजबूती से लगा दिया। गुप्तघर में वह अपने को नहीं रख (छिपा) सका। अपनी सरल अँगुली से उसने अँगूठी उतार दी और युवक प्रकट रूप में बोला—"हे देवी मुझे सुरति-सुख दो और विरह की ज्वाला के दुःख को दूर करो।" दोनों ने मर्यादा के बन्धन का अतिक्रमण कर वहाँ रमण किया।

घत्ता—उसके गर्भ रह गया। नौ माह में कामदेव के समान उसे पुत्र हुआ। स्वजनों ने उसे छिपा दिया।

---

6. S रूवु। 7. AP हो। 8. A एयहिं। 9. A णेव; B णेइ। 10. S परिमट्ठउं। 11. S विहसाविउं। 12. AS वि जाणिउ। 13. S पंडरु। 14. S देमि। 15. APS णउ। 16. B जुअए। 17. P ओल्हावहि। 18. S दोहं। 19. PS °रूपउ।

(5)

कुंडलजुयलउं कंचणकवउ 'पत्तें सहुं बालउ दिव्ववउ[2]।
णिविडहि मंजूसहि घल्लियउ कालिंदिपवाहि पमेल्लियउ।
चंपापुरि [3]पावसावरहिउ आइच्चें राएं[4] संगहिउ।
सुत्तउ अवलोइउ कण्णकरु कण्णु जि हक्कारिउ सो कुंयरु[5]।
सुउ पडिवण्णउ संमाणियहिं तें[6] दिण्णउ राहहि राणियहि।
णं पोरिसपिंडउ णिम्मविउ णं एक्कहिं साहसोहु थविउ।
णं चायदुमंकुरु[7] णीसरिउ [8]धरणिइ विहलुद्धरणु व धरिउ।
वड्ढइ सुंदरु वड्ढियफुरणु णावइ बीयउ दससयकिरणु।
एत्तहि णरणाहें सिरु धुणिवि धुत्तत्तणु जामायहु मुणिवि।
[9]सो कोंति मद्दि बेण्णि वि [10]जणिउ परिणाविउ पंडु पीणथणिउ[11]।
दइयहु आलिंगणु देंतियइ कोंतीइ तीइ कीलंतियइ।
सुउ जणिउ जुहिट्ठिलु भीमु णरु णग्गोहरोहपारोहकरु।
मद्दीइ णउलु सयणुद्धरणु[12] अण्णु वि सहएवु दीणसरणु।
घत्ता—तिहुवणि[13] लद्धपइट्ठहु णरवइविट्ठें इट्ठहु।
दिण्णी पालियरट्ठहु गंधारि वि धयरट्ठहु ॥5॥

(5)

कुण्डलयुगल, स्वर्णकवच और पत्र के साथ दिव्यशरीर बालक को मजबूत मंजूषा में रख दिया और उसे यमुना के प्रवाह में छोड़ दिया। चम्पापुर में पाप के आशय से रहित उसे, राजा आदित्य ने संगृहीत कर लिया। कान पर हाथ रखकर सोते हुए देखकर उस कुमार को 'कर्ण' कहकर पुकारा गया। उसके द्वारा दिये गये उस शिशु को सम्माननीया रानी राधा ने पुत्रवत् अंगीकार कर लिया। वह मानो जैसे पौरुष-पिण्ड के रूप में निर्मित हुआ हो, मानो साहससमूह को एक जगह रख दिया गया हो, मानो त्याग का अंकुर निकल आया हो, मानो धरती ने विह्वलों के उद्धार को धारण कर लिया हो। बढ़ रही है चमक जिसकी, ऐसा वह बढ़ने लगा मानो दूसरा सूर्य हो। यहाँ पर राजा (अन्धकवृष्णि) ने दामाद की धूर्तता देखकर और अपना माथा पीटकर, सघन स्तनोंवाली कुन्ती और माद्री की उससे शादी कर दी। अपने दयित (पति) को आलिंगन देते और क्रीड़ा करते हुए उस कुन्ती ने युधिष्ठिर को तथा वटवृक्ष के समान स्थूलबाहु भीम को उत्पन्न किया। माद्री ने स्वजनों का उद्धार करनेवाला नकुल और दोनों की शरण सहदेव को उत्पन्न किया।

घत्ता—नरपतिवृष्णि ने भी त्रिभुवन में प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले, राष्ट्र के पालनकर्ता धृतराष्ट्र को गांधारी परणा दी।

(5) 1. B पत्तिहिं। 2. A दिव्ववउ। 3. Als. पावासव° against Mss. 4. S एएं। 5. AP कुमरु। 6. B तं। 7. APS °दुमंकुरु। 8. A धरणिविहलु°। 9. A सा। 10. A जणीउ। 11. B पीणत्थणीउ। 12. S कुलउद्धरणु; K records a p : कुल°। 13. A तिहुयण°; B तिहुयण°; P तिहुयणि।

(6)

हुउ ताहि गब्भि कुलभूसणउ दुज्जोहणु पुणु दूसासणउ।
पुणु दुद्दरिसणु दुम्मरिसणउ [1]पुणु अण्णु अण्णु हूयउ तणउ।
सउ पुत्तहं एव ताइ जणिउं जिणभासिउं सेणिय मइं गणिउं।
अण्णहिं दिणि सूरवीरु सिरिहि णिव्विण्णु[2] गंधमायणगिरिहि।
गउ वंदिउ [3]सुप्पइट्ठइअरुहु[4] सुयजमलहु महियलु देवि पिहु[5]।
अप्पणु[6] णीसंगु णिरंबरउ जायउ मुणि कयमणसंवरउ।
णिसिदिवसपक्खमासेण[7] हय बारह संवच्छर जाम गय।
ता सुप्पइट्ठरिसिदिहि हरइ उवसग्गु सुदंसणु सुरु करइ।
तं दुहुं दूसहु साहु[8] सहिउं आऊरिउं झाणु रोसरहिउ[9]।
उप्पण्णउं केवलु विमलु[10] किह जाणिउं तेल्लोक्कु झड त्ति जिह।
[11]जायउं चउविहु[12] देवागमणु तहिं अंधयविट्ठिहि[13] [14]णमिउ जिणु।
पुच्छिउ परमेसरु परमपरु णाणाविहजम्मणमरणहरु।
उवसग्गहु कारणु काइं किर ता जिणमुहाउ णीसरिय गिर।

घत्ता—जंबूदीवइ[15] भारहि देसि[16] कलिंगि सुहावहि।
आवणभवणणिरंतरि दिण्णकामि कंचीपुरि ॥6॥

(6)

उसके गर्भ से कुलभूषण दुर्योधन और दुःशासन उत्पन्न हुए, फिर दुदर्शन दुर्मर्षण, और फिर दूसरे पुत्र उत्पन्न हुए। इस प्रकार उसने सौ पुत्रों को जन्म दिया। "हे श्रेणिक ! जिनदेव द्वारा कथित इस तथ्य को मैं जानता हूँ। दूसरे दिन शूरवीर (अन्धकवृष्णि के पिता) से विरक्त होकर गन्धमादनगिरि पर गया। वहाँ सुप्रतिष्ठ अर्हत् की वन्दना की। अपने दोनों पुत्रों को भूमि प्रदान कर स्वयं अनासंग तथा निःसंग हो कर वह दिगम्बर मुनि हो गया। रात-दिन पक्ष और माह से आहत, जब बारह वर्ष बीत गये, तब सुदर्शनदेव उपसर्ग करता है और सुप्रतिष्ठ मुनि के धैर्य का हरण करता है। मुनि ने उस घोर दुःख को सहन कर लिया और क्रोधविहीन ध्यान आरम्भ किया। शीघ्र उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया और उन्होंने तीनों लोकों को जान लिया। चार प्रकार के देवों का आगमन हुआ। वहाँ अन्धकवृष्णि ने जिन को नमस्कार किया। नाना प्रकार के जन्म-मरण का हरण करनेवाले परम परमेश्वर से उसने पूछा कि उपसर्ग का क्या कारण है ? तब जिनमुख से यह वाणी निकली—

घत्ता—जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के सुखावह कलिंग देश में बाजारों और भवनों से भरी हुई और कामनाओं को पूरा करनेवाली कांचीपुरी नगरी है।

(6) 1. P दुम्मुहु पुणु अण्णु हूयउ। 2. B णिव्विण्ण; S णिविण्ण। 3. BP सुप्पइट्ठु; S सुप्पतिट्ठु। 4. S अरिहु। 5. AB पहु। 6. B अप्पुणु। 7. APS °मासेहिं। 8. A साहुहुं सहिउं। 9. P रोसहरिउं। 10. S विमालु। 11. B आयउ। 12. ADP चउविहदेवा°; S चउविहु। 13. AP अंधकविट्ठि; S °विट्ठें। 14. PS णमिउ। 15. S जंबूदीवे। 16. S देस°।

(7)

तहिं दिणयरदत्त सुदत्त वणि किं वण्णमि धणयसमाणधणि।
लंकाइहिं दीविहिं संचरिवि[1] अण्णण्ण[2] [3]पसंडिभंडु भरिवि।
लोहिट्ठ ण सुक्कहु देंति पणु[4] भइयइ महिमज्झि णिवंति धणु।
तरु णिहणंतहिं रसवणियरहिँ[5] तं दिट्ठउं णियउं[6] जाम परहिं।
ता जुज्झिवि ते तिट्ठाइ हय अवरोप्परु भंतिइ[7] हणिवि मय।
णारय हूया[8] पुणु मेस वणि पंचत्तु पत्त पुणु भिडिवि[9] रणि।
गंगायडि गोउलि पुणु वसह [10]जुज्झेप्पिणु पुणु संपत्तवह।
संमेयमहीहरि पुणु पमय तण्हाइ सिलायलि[11] सलिलरय।
अब्भिड़ दसणणहजज्जरिउ मुउ एक्कु एक्कु तहिं उव्वरिउ।
ईसीसि जाम णीससइ कइ संपत्ता ता तहिं बेण्णि जइ।
चारण जियमण तेलोक्कगुरु ते णामें सुरगुरु देवगुरु।
कहियाइं तेहिं दुक्खियहरइं करुणेण पंच परमक्खरइं।
घत्ता—सिवगइकामिणिकंतहु धम्मु सुणिवि [12]अरहंतहु।
मुउ वाणरु व्रउ[12] लेप्पिणु जिणवरु सरणु भणेप्पिणु ॥7॥

(7)

उसमें दिनकरदत्त और सुदत्त नाम के वणिक् हैं। क्या वर्णन करूँ ? वे कुबेर के समान धनिक हैं। लंका आदि द्वीपों में भ्रमण कर और दूसरे-दूसरे स्वर्णभाण्ड भरकर भी वे इतने लोभी थे कि पुण्य में एक पैसा भी नहीं देते थे, मारे डर के उन्होंने धरती में धन गाड़ दिया था। वृक्ष नष्ट करते समय मदिरा बनानेवाले दूसरे लोगों ने जब वह धन देखा, तो वे उसे ले गये। तब तृष्णा से आहत वे दोनों (सेठ) आपस में युद्ध कर और भ्रान्ति से एक-दूसरे को मारकर मर गये। पहिले नारकीय हुए, फिर वन में मेष हुए और युद्ध में लड़कर मर गये। फिर गंगातट पर, फिर गोकुल में बैल हुए। आपस में लड़कर वे फिर वध को प्राप्त हुए। फिर सम्मेदशिखर पहाड़ पर बन्दर हुए। वहाँ भी प्यास के कारण चट्टान से रिसते जल में रत होकर भिड़ गये, दाँतों और नखों से जर्जर होकर उनमें से एक मर गया, और एक वहाँ बच गया बन्दर जब थोड़ी-थोड़ी साँस ले रहा था, तभी दो महामुनि वहाँ आये; चारण मन को जीतनेवाले और त्रिलोकगुरु। उनके नाम देवगुरु और सुरगुरु थे। उन्होंने उससे दुःखों का अपहरण करनेवाले पाँच परमाक्षर (पंच णमोकार मन्त्र) कहे।

घत्ता—शिवगति रूपी कामिनी के पति अरहन्त का धर्म सुनकर वानर व्रत लेकर और जिनवर की शरण ग्रहण कर मर गया।

(7) 1. P संवरेवि। 2. ABPS अण्णण्णु। 3. B पसंडे। 4. A पुणु। 5. B वणियरेहिं; P वणिवरेहिं। 6. A णिय उज्जाम परहिं; P णियउ ज्जाम परहिं। 7. A संतिए। 8. AP पुणु हूया। 9. S भिडवि। 10. A जुज्झेण जि पुणु वि पवण्ण वह; B जुज्झेण जि पुणु वि पयण्णवहि। 11. S सिलायल°। 12. S अरिहंतहो। 13. AP वउ।

(8)

सोहम्मसग्गि सोहग्गजुउ चित्तंगउ णामें अमरु हुउ।
कालें जंतें एत्थु जि भरहि देसम्मि सुरम्मइ सुहणिवहि।
पोयणपुरि सुत्थियपत्थिवहु[1] तिक्खासिपरज्जियपरणिवहु।
सिसु जायउ गब्भि सुलक्खणहि सुपइट्ठु णामु सुवियक्खणहि।
पाउसि गउ कत्थइ कालगिरि[2] तहिं दिट्ठा बेण्णि भिडंत हरि।
हा मइं मि आसि इय जुज्झियउं कइदंसणि णियभवु बुज्झियउ।
आसंघिउ सूरि सुधम्मु सइं इय एहउं जिणतवु चिण्णु मइं।
इयरु वि संसारइ संसरिवि पुणु[3] आयउ बहुदुक्खइं सहिवि।
सिंधूतीरइ घणवणगुहिलि[4] णवकुसुमरेणुपरिमलबहलि[5]।
तावसिहि विसालहि हरगणहु तवसिहि सिसु हूउ मृगायणहु[6]।
पंचग्गितावतवधंसणउ[7] हुउ जोइसदेउ सुदंसणउ।
हउं सूरदत्तु चिरु वाणियउ इहु सो सुदत्तु मइं जाणियउ।
उवसग्गु करइ णियकम्मवसु ण मुणइ परमागमणाणरसु।
संसारि ण को मोहेण जिउ तं सुणिवि सुदंसणु धम्मि थिउ।
घत्ता—तं णिसुणिवि[8] पणवेप्पिणु सिरि करजुयलु थवेप्पिणु।
[9]अंधकविट्ठिं जिणवरु पुच्छिउ णिययभवंतरु[10] ॥8॥

(8)

वह सौधर्म स्वर्ग में सौभाग्य से युक्त चित्रांगद नाम का देव हुआ। समय बीतने पर इसी भरतक्षेत्र के सुरम्य देश के सुख से परिपूर्ण पोदनपुर नगर में; अपनी पैनी तलवार से शत्रुसमूह को पराजित करनेवाले राजा सुस्थित की पत्नी विलक्षण सुलक्षणा से सुप्रतिष्ठ नाम का पुत्र हुआ। वर्षाकाल में वह किसी क्रीडापर्वत पर गया हुआ था। वहाँ उसने दो वानरों को युद्ध करते हुए देखा। हाय, मैंने भी यहाँ युद्ध किया था; कपि के दर्शन से उसे पूर्वजन्म का स्मरण हो आया। (तब) मैं सुधर्मा मुनि की शरण में पहुँचा और मैंने यह जिनधर्म स्वीकार कर लिया। दूसरा (मेरा भाई सुदत्त) संसार में भ्रमण कर और अनेक दुःख सहनकर, सघन वन में गह्वर तथा नवकुसुम रेणु की परिमल से प्रचुर सिन्धुतट पर शिवगण के तपस्वी मृगायण की पत्नी विशाला तपस्विनी से पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ। पंचाग्नितप के ताप से ध्वस्त होकर सुदर्शन नाम का (मैं) ज्योतिषी देव हुआ। मैं प्राचीन सूरदत्त वणिक् हूँ और यह वही सुदत्त है, मैंने जान लिया है। अपने कर्म के वशीभूत होकर वह उपसर्ग करता है। वह परमागम के ज्ञानरस को कुछ नहीं समझता। संसार में मोह से कौन नहीं जीता जाता।'' यह सुनकर सुदर्शन धर्म में स्थित हो गया।

घत्ता—यह सुनकर और सिर पर कर-युगल रख कर, प्रणाम कर अन्धकवृष्णि ने मुनिवर से अपने जन्मांतर पूछे।

(8) 1. B सुत्थिउ। 2. B कालिगिरि। 3. APS बहुयारउ उप्पज्जिवि मरिवि; but K adds a p : बहुयारउ उप्पज्जिवि मरिवि इति ताडपत्रे in second hand. 4. B °गुहलि। 5. S °बहुले। 6. B मिगयणहो; P मिगायणहो। 7. AP °तावतणुधंसणउ। 8. B तं णिसुणेप्पिणु सिरि। 9. AP °विट्ठिहि। 10. B णियइ।

(9)

जिणु कहइ एत्थु [1]भारहवरिसि कोसलपुरि पउरजणियहरिसि।
णरवइ अणंतवीरिउ वसइ जसु जासु चंदजोण्ह वि हसइ।
तेत्थु जि सुरिंददत्तउ[2] वणिउ गुणवंतु संतु भल्लउ भणिउ।
अरहंतदेवपविरइयमह अणवरउ देइ दीणार दह।
अट्ठमिहि वीस चालीस पुणु अमवासहि[3] मणकवडेण विणु।
अट्ठउणउं पव्वि पव्वि मुयइ[4] दविणें जिणु पुज्जइ मलु धुयइ[5]।
तें जंतें सायरपारपरु[6] घरि अच्छिउ पुच्छिउ[7] विप्पु[8] वरु।
भो रुद्ददत्त[9] सुइ करहि मणु लइ बारहसंवच्छरहं[10] धणु।
पुज्जिज्जसु जिणवरु एण तुहुं हउं एमि जाम जाएवि सुहुं।
इय भासिवि णिग्गउ सेट्ठि किह बंभणमणभवणहु धम्मु जिह।

घत्ता—विरइयकित्तिमवेसइ खद्धउं जूवइ[11] वेसइ।
वड्ढियजोव्वणदप्पें देवदव्वु खलविप्पें ॥9॥

(10)

पुणु पट्टणि रयणिहिं संचरइ परधण्णु[1] सुवण्णइं अवहरइ।
अवलोइउ सेणें[2] तलवरिण कुसुमालु धरिउ णिट्ठुरकरिण।

(9)

जिन कहते हैं—इस भारतवर्ष के पौरजनों के लिए हर्षदायक कोशलपुर में राजा अनन्तवीर्य निवास करता था। उसका यश चन्द्रमा की चाँदनी का उपहास करता था। वहीं सुरेन्द्रदत्त वणिक् गुणी और बहुत भला कहा जाता था। अरहन्तदेव की पूजा करने के अनन्तर वह प्रतिदिन दस दीनार देता था—अष्टमी को बीस और फिर अमावस्या को चालीस, बिना किसी कपट के। पर्व-पर्व पर आठ गुना अधिक देता था। इस प्रकार धन से जिन की पूजा (शुद्ध भावों से) करता और मल (कर्ममल) को धोता। समुद्रपार जाते हुए उसने (अपने मित्र) ब्राह्मण को घर में रखते हुए कहा—"हे रुद्रदत्त, तुम अपने मन को निर्लोभ रखना, यह बारह वर्ष का धन लो, इससे तुम तब तक जिनवर की पूजा करना, जब तक जाकर मैं सुख से लौट नहीं आता।" यह कहकर सेठ जैसे ही घर से निकला, वैसे ही ब्राह्मण के मनरूपी घर से धर्म निकल गया।

घत्ता—उस दुष्ट ब्राह्मण ने यौवन का घमण्ड बढ़ने पर सारा देव-द्रव्य बनावटी रूप बनानेवाली वेश्या और जुए में उड़ा दिया।

(10)

वह रात में नगर में घूमता और दूसरे के धन तथा स्वर्ण की चोरी करता। सेन नाम के कोतवाल ने

(9) 1. P भरह°। 2. B सुरिंदयत्तउ; PS सुरेंददत्तउ। 3. A मावासहै। 4. B मुवइ। 5. B धुवइ। 6. S °पार परु। 7. AP पत्थिउ। 8. ABP विप्पवरु; S विपरु। 9. B रुद्दयत्त। 10. B संवच्छरहिं। 11. APS जूएं।
(10) 1. S °धण्ण। 2. A सेण्णें।

पुणरवि मुक्कउ[3] बंभणु भणिवि जइ पइसहि[4] तो पुरि सिरु लुणिवि।
तं णिसुणिवि णीरसु वज्जरिउं कुसुमालहु हियवउं थरहरिउं।
गउ भिल्लपल्लि कालउ सबरु तें सेविउ चावतिकंडधरु[5]।
आसाइयतरुणाणाहलहिं अण्णहिं दिणि आविवि णाहलहिं।
तप्पुरवरगोमंडलु[6] गहिउं धाविउ[7] पुरवरु सेणियसहिउं[8]।
सो सोत्तियसबरु[9] णिवाइयउ णरयावणि मरिवि पराइयउ।
पुणु[10] जलि झसु पुणु पुणु पुणु[11] उरउ पुणु वग्घु[12] जाउ मारणणिरउ।
पुणु पक्खिराउ[13] पुणु कूरमइ पुणु सीहु विरालु[14] रणेक्करइ[15]।
पुणु भमिउ सत्तणरयंतरहिं णाणाजोणिहिं तसथावरहिं।
पुणु एत्थु खेत्ति कुरुजंगलइ करिवरपुरि परिहाजलवलइ।

घत्ता—लोयहु मग्गपउंजउ[16] जहिं णरणाहु धणंजउ।
कविलु[17] सुणामें सोत्तिउ तहिं दइवें णिव्वत्तिउ ॥10॥

(11)

तहु घणथणसिहरणिसुंभणिहि जायउ[1] अणुराहहि बंभणिहि।
सो गोत्तमु णामें णीसिरिउ[2] [3]पब्भट्ठजणिट्ठपुण्णकिरिउ[4]।

उसे देख लिया और अपने कठोर हाथ से उस चोर को पकड़ लिया। परन्तु ब्राह्मण समझकर उसे छोड़ दिया—(और कहा) "यदि फिर से शहर में प्रवेश किया तो सिर काट लूँगा।" उस नीरस कथन को सुनकर चोर का हृदय थर-थर काँप उठा। वह भीलों के गाँव में चला गया। उसने धनुष-बाणधारी कालक भील की सेवा की। नाना प्रकार के वृक्ष-फलों का आस्वादन करनेवाले भीलों ने, दूसरे दिन आकर इस नगर के गौमण्डल को ग्रहण कर लिया। सेन कोलवाल के साथ नगर का नगर उसके पीछे दौड़ा। वह ब्राह्मण भील मारा गया। और मरकर नरकभूमि में पहुँचा। फिर जल में मछली, फिर साँप और फिर मारने में निपुण बाघ बन गया। फिर पक्षीराज (गरुड़), और फिर क्रूरबुद्धि, भयंकर युद्ध की एकमात्र बुद्धि रखनेवाला सिंह। फिर सातों नरकों और त्रस-स्थावर आदि नाना योनियों में घूमता रहा। फिर इस करुजांगल क्षेत्र के परिखा-जल से घिरे हुए हस्तिनापुर में;

घत्ता—दैवयोग से कपिलायन नाम का ब्राह्मण हुआ जहाँ धनंजय नामक मार्गदर्शक राजा था।

(11)

झुक गये हैं अग्रभाग जिसके, ऐसे सघन स्तनोंवाली उसकी अनुराधा ब्राह्मणी से वह गौतम नाम से (पुत्र) उत्पन्न हुआ। वह अत्यन्त दरिद्र था। लोगों के लिए पुण्यक्रियाओं से भ्रष्ट उसका समूचा कुल नष्ट हो गया।

---

3. P पमुक्कु। 4. A पइसहि पुरि तो। 5. APS °तिकंडकरु। 6. BP °पुरवरु। 7. BP धाइउ। 8. B सेण्णें; P सेणिय°; S सेणय°। 9. B सोत्तिउ। 10. AP पुणु जलणिहि झसु पुणरवि उरउ। 11. B हुउ; S omits पुणु। 12. AT वग्घु हरिणमारण°; BP वग्घु जीवमारण°; S वग्घु जीउ मारण°। 13. B पंखिराउ। 14. APS विरालु। 15. AP रणेक्कमइ। 16. PS मग्गु। 17. A कविसलु णामें।

(11) 1. AP हुउ सुउ अणु°। 2. B णीसिपरिउ; PS णीसरिउ; K णीसियरिउ but strikes off P य; Als णीसिरिउ on the strength of गुणभद्र who has निःश्रीकः। 3. B पब्भट्ठ। 4. B °पुण्णकिरिउ।

णीसेसु वि पलयहु गयउं कुलु थिउ देहमेत्तु पाविट्ठु खलु।
मलपडलविलित्तु[5] भुत्तविहुरु[6] जूयासहाससंकुलचिहुरु[7]।
मसिकसणवण्णु [8]जरचीरधरु आहिंडइ घरि घरि देहिसरु।
जणणिंदिउ खप्परखंडकरु महिवालु व चल्लइ दंडधरु।
पुरडिंभहिं हम्मइ आरडइ भुक्खाइ भमियलोयणु[9] पडइ।
दुग्गउ[10] दूहउ[11] दुग्गंधतणु रसवसलोहियपवहंतवणु।
तें पुरि पइसंतु सुद्धचरिउ दिट्ठउ समुद्दसेणायरिउ[12]।
तहु मग्गेण जि सो चलियउ जाणिवि सुहकम्में पेल्लियउ।

घत्ता—पयडियपासुलियालउ[13] दुद्दंसणु वियरालउ।
वणिवरणारिहिं[14] दिट्ठउ णं दुक्कालु पइट्ठउ ॥11॥

(12)

पडिगाहिउ[1] रिसि वइसवणघरि आहारु दिण्णु सुविसुद्धु करि।
मुणिचट्टु [2]भणिवि हक्कारियउ रंकु वि तेत्थु जि वइसारियउ।
भोयणु आकंठु तेण गसिउं णियचित्ति रिसित्तु जि अहिलसिउं।
गउ गुरुपंथेण जि गुरुभवणु सो भासइ पेट्टालग्गहणु।

वह दुष्ट पापी देहमात्र रह गया। मल-समूह से लिपटा, भोगों से रहित, सैकड़ों जुँओं से युक्त संकुल केशवाला, स्याही के समान कृष्णवर्ण, जीर्ण वस्त्र पहिने हुए, और 'दो' यह शब्द कहता हुआ वह घर-घर घूमने लगा। लोगों के द्वारा निन्दित, खप्पर का टुकड़ा तथा दण्ड हाथ में लिये हुए राजा की तरह चला। नगर के बच्चों के द्वारा वह मारा जाता, तब चिल्लाता। भूख के कारण आँखें घुमाते हुए वह गिर पड़ता। उसके दुर्गत-दुर्भग और दुर्गन्धित शरीर के घावों से रस पीप और खून बहने लगा। नगर में प्रवेश करते हुए उसने विशुद्धचरित समुद्रसेन आचार्य को देखा। वह शुभ कर्मों से प्रेरित यह जानकर, उसी रास्ते से चला।

घत्ता—उसकी पसलियों की हड्डियाँ निकल रही थीं। अत्यन्त विकराल और दुदर्शनीय उसे वणिक्वरों की स्त्रियों ने इस प्रकार देखा मानो दुष्काल ही प्रवेश कर रहा हो।

(12)

वैश्रवण के घर में मुनिवर को पड़गाहा गया और उनके विशुद्ध हाथों में आहार दिया गया। उसे भी मुनि का शिष्य कहकर बुलाया गया और उस गरीब को भी वहीं बैठाया गया। उसने गले तक खूब भोजन किया और अपने मन में मुनि बनने की इच्छा प्रकट की। वह महामुनि के रास्ते उनके भवन पर पहुँचा। उसका पेट दाढ़ी से लग रहा था। वह कहता है—"मैं दिन-रात तुम्हारी सेवा में रहूँगा। जिस प्रकार आप

---

5. B °वलित्तु। 6. BP भुत्तु विहुरु। 7. D °संकुलियसिरु। 8. S जरजीर°। 9. P °भोयणु; S °लोयण। 10. PS दोग्गउ। 11. S दूहवु। 12. PS °सेणाहरिउ। 13. B पयडिय°। 14. B वणे।

(12) 1. PS पडिलाहिउ। 2. D भणिणउ।

तुह[3] पेसणेण अहणिसु गममि तुहुं जिह तिह हउं णग्गउ भममि।
गुरुणा तहु कम्मु णिरिक्खियउं दिण्णउं वउं सत्थु वि सिक्खियउं।
कालें जंतें समभावि थिउ हुउ सो सिरिगोत्तमु[4] लोयपिउ।
मज्झिमगेवज्जहि तासु गुरु उवरिल्लविमाणइ जाउ सुरु।
सो तहिं[5] मरेवि अहमिंदु हुउ अट्ठावीसहिं सायरहिं चुउ।
इह[6] जायउ अंधकविट्ठि तुहुं दिउ रुद्ददत्तु अणुहविवि दुहुं।

घत्ता—अणुहुंजियबहुकम्मइं आयण्णिवि णियजम्मइं।
पुणु तणुरुहहं भवावलि पुच्छिउ राएं केवलि ॥12॥

(13)

जणसवणसुहुं[1] जणइ ता जिणवरो भणइ।
इह भरहवरिसम्मि[2] वरमलयदेसम्मि।
भद्दिलपुरे राउ मेहरहु विक्खाउ।
णीरुयसरीरस्स[3] रायाणिया तस्स।
णं अच्छरा का वि भद्दा [4]महादेवि।
पायडियगुरुविणउ दढसंदणो[5] तणउ।
अरविंददलणेत्तु वणिवरु वि धणयत्तु।
णंदयस[6] तहु घरिणि णयणेहिं जियहरिणि।

हैं, उसी प्रकार मैं भी नग्न दीक्षा लेकर घूमूँगा।" गुरु ने उसके आचरण को देखा और उसे व्रत दिये तथा शास्त्र भी सिखाया। समय बीतने पर वह समता भाव में स्थित हो गया और इस प्रकार गौतम मुनि खूब लोकप्रिय हुआ। उसके गुरु समुद्रसेन मध्यम ग्रैवेयक के ऊपर के विमान में देव रूप में उत्पन्न हुए। वह भी (गौतम भी) वहाँ जाकर अहमेन्द्र हुआ और अठारह सागर (आयु) के बाद च्युत होकर, यह तू अन्धकवृष्णि उत्पन्न हुआ। हे रुद्रदत्त ! तू इस प्रकार के दुःखों को भोग कर—

घत्ता—इस प्रकार अनेक (तरह के) कर्मों का अनुभव करनेवाले अपने पूर्वजन्मों को सुनकर राजा ने केवली से अपने पुत्रों के जन्मान्तर पूछे।

(13)

तब जिनवर लोगों के कानों को सुख देने वाले ऐसे वचन कहते हैं—इस भारत के श्रेष्ठ मलय देश के भद्रिलपुर का राजा मेघरथ बहुत विख्यात था। आरोग्यसम्पन्न उस राजा की भद्रा नाम की रानी थी, जैसे कोई अप्सरा हो। उसका महान् विनय प्रकट करनेवाला दृढ़रथ नाम का पुत्र था। वहीं अरविन्ददल के समान नेत्रवाला वणिग्वर धनदत्त भी रहता था। उसकी पत्नी नन्दयशा अपने नेत्रों से हरिणी को जीतनेवाली थी।

---

3. P तुह। 4. AP रिसि गोत्तमु। 5. APS तहिं जि मरेवि। 6. P इयं।

(13) 1. AP जं सवण°। 2. S °वरसम्मि। 3. P णिरुयमसरीरस्स। 4. AP महाएवि। 5. AS दढदंसणो। 6. APS णंदजस।

धणदेउ धणपालु अण्णेक्कु दिणपालु[7]।
सुउ देवपालंकु जिणधम्मि णीसंकु।
पुणु अरुहदत्तो वि सिसु अरुहदासो वि।
दिणयत्तु[8] पियमित्तु संपुण्णससिवत्तु[9]।
धम्मरुइजुत्तेहिं वणि[10] णवहिं पुत्तेहिं।
णं णवपयत्थेहिं पसरंतगंथेहिं।
परमागमो सहइ रूढिं परं वहइ।
पियदंसणा पुत्ति जेट्ठा वि [11]गुणजुत्ति।
घत्ता—णाणातरुसंताणहु गउ महिवइ उज्जाणहु।
सेट्ठि वि पुत्तकलत्तहिं सहुं कयभत्तिपयत्तहिं ॥13॥

(14)

तहिं वंदिवि मुणि मंदिरथविरु[1] णिसुणेवि अहिंसाधम्मु चिरु।
दढरहहु समप्पिवि धरणियलु हियउल्लउं [2]सुट्ठु करिवि विमलु।
मेहरहें संजमु पालियउ अरि मित्तु वि सरिसु णिहालियउ।
वणि जायउ रिसि सहुं णंदणहिं मणि[3] मण्णिय समतिणकंचणहिं[4]।
मयकामकोहविद्धंसणहि खंतियहि समीवि सुणंदणहि।
णंदयस[5] सुणिव्वेएं लइय पियदंसण[6] जेट्ठ वि पावइय।

धनदेव, धनपाल, एक और दिनपाल, और देवपाल नाम के पुत्र थे जो जैनधर्म में अत्यन्त निःशंक थे। फिर अरुहदत्त और अरुहदास। दिनदत्त और पूर्णशशि के समान मुखवाला प्रियमित्र और धर्म रुचि। अपने इन पुत्रों के साथ वह सेठ ऐसा मालूम होता था, मानो प्रसरित ग्रन्थ (धन और शास्त्र) वाले नौ पदार्थों से सहित परमागम रूढ़ि को प्राप्त है। उसकी दो गुणवती पुत्रियाँ थीं—प्रियदर्शना और सुज्येष्ठा।

घत्ता—(एक दिन) राजा नाना वृक्षों की पंक्तियों से युक्त उद्यान में गया। सेठ भी भक्ति के लिए प्रयत्न करनेवाले पुत्रों के साथ वहाँ गया।

(14)

वहाँ मन्दिर स्वरूप मुनि की वन्दना कर और बहुत समय तक अहिंसा धर्म सुनकर, दृढ़रथ (पुत्र) को धरतीतल (राज्य) सौंपकर तथा अपने हृदय को पवित्र बनाकर मेघरथ राजा ने संयम का पालन किया। उसने शत्रु और मित्र को समान समझा। सेठ भी तृण और स्वर्ण को मन में समान माननेवाले अपने पुत्रों के साथ मुनि हो गया। नन्दयशा बहुत ही निर्वेद (खेद) को प्राप्त हुई। प्रियदर्शना और ज्येष्ठा ने भी प्रव्रज्या ग्रहण

---

7. B जिणपालु। 8. B जिणयत्तु। 9. B °ससिवत्तु। 10. S यणि वणहिं। 11. PS गुणगुत्ति।

(14) 1. P °थविरु। 2. AP करेवि सुठ्ठु विमलु। 3. ADS मणमण्णिय°। 4. ADP °तण°; S °तिणु। 5. A णंदयसि। 6. B पियदंसणि।

[7]कंकेल्लिकयलिकंकोलिघणि[8] सुपियंगुसंडि[9] मृगचंडवणि[10]।
गुरु मंदिरथविरु[11] समेहरहु धणयत्तु[12] वि णासियमोहगहु।
गय तिण्णि वि सासयसिवपयहु मुक्का जरमरणरोयभयहु[13]।
ते सिद्धा सिद्धसिलायलइ धणदेवाइ वि तेत्थु जि णिलइ।

घत्ता—थिय अणसणि[14] विणयायर महिणिहिततणु भायर।
सहुं जणणिइ[15] सहुं बहिणिहिं जोइयजिणगुणकुहिणिहिं[16] ॥14॥

(15)

णियदेहसमुब्भवणेहवस संणासणि[1] चिंतइ णंदजस।
जइ अत्थि किं पि फलु रिसिहिं तवि ए तणुरुह तो आगामिभवि।
एयउ धीयउ महुं होंतु तिह विच्छोउ ण पुणरवि होइ जिह।
कइवयदियहहिं सव्वइं[2] मयइं तेरहमउ सग्गु[3] णवर गयइं।
सायंकरि सुरहरि अच्छियइं सुरवरकोडीहिं[4] [5]समिच्छियइं।
तहिं वीससमुद्दइं भुत्तु सुहुं णिवडंतहुं ओहुल्लियउं[6] मुहुं।
हूई[7] णंदयस सुहद्द[8] तुह गेहिणि परियाणहि चंदमुह।
धणदेवपमुह जे पीणभुय इह ते समुद्दविजयाइं सुय।

कर ली। अशोक, कदली (केला) और कंकोल वृक्षों से सघन एवं पशुओं से प्रचण्ड प्रियंगुखण्ड वन में मेघरथ के साथ गुरु, मन्दिर-स्थविर और सेठ धनदत्त तीनों मोहरूपी ग्रह का नाश कर, शाश्वत शिवपद के लिए चले गये तथा जरामरणरूपी रोग के भय से वे होकर और सिद्धशिला में सिद्ध हो गये। धनदेव वगैरह उसी के घर में स्थित थे।

घत्ता—अपनी माँ, और जिनवर के गुणों के मार्ग को खोजती हुई दोनों बहिनों के साथ, धरती पर अपने शरीर को समर्पित करनेवाले, विनय के समूह वे भाई अनशन में स्थित हो गये।

(15)

अपने शरीर से उत्पन्न पुत्रों के स्नेह के कारण संन्यासिनी नन्दयशा सोचती है—'यदि ऋषियों के इस तप का कुछ भी फल है, तो आगामी जन्म में ये फिर पुत्र हों और ये कन्याएँ भी इसी प्रकार हों कि जिससे उनका फिर से वियोग न हो।' कुछ ही दिनों में सब मृत्यु को प्राप्त हो गये और तेरहवें स्वर्ग में उत्पन्न हुए। वहाँ शान्तकर विमान में करोड़ों देवों द्वारा चाहे गये बाईस सागर (समय प्रमाण) तक सुख भोग करने के बाद, च्युत होते समय, उनका मुख म्लान हो गया। नन्दयशा तुम्हारी सुभद्रा हुई, उसे तुम अपनी चन्द्रमुखी गृहिणी समझो। और जो स्थूलभुज धनदेव प्रमुख पुत्र थे, वे ये समुद्रविजय आदि पुत्र हैं।

7. B किंकिल्लि°। 8. A °कक्कोल°; P °कंकोल्ल°; S °कक्कोलि°। 9. B °खंडि। 10. AP मिगचंड°; B °चंदु। 11. BP मंदिरु। 12. APS धणदत्तु; B धणयत्त। 13. B °भयहो। 14. B अणसणेण। 15. P जणणिहे। 16. APS °कुहिणिहिं।

(15) 1. A अण्णाणि णियच्छइ णंद°; P अण्णाणिणि पलवइ णंद°। 2. A भव्वइं। 3. S सग्ग। 4. PS °कोडिहिं। 5. P सम्मच्छियइं। 6. P ओहल्लियउं। 7. S हुइ। 8. P सुभद्द।

घत्ता—पियदंसण सहुं जेट्ठइ किस [7]हूई तवणिट्ठइ ॥
पुत्ति कोंति सा जाणहि अवर मद्दि अहिणाणहि ॥15॥

(16)

पहु पुच्छइ वसुदेवायरणु जिणु अक्खइ णाणि जित्तकरणु।
बहुगोहणसेवियणिविडयड्डु[1] कुरुदेसि पलासगाउं[2] पयड्डु।
तहिं सोमसम्मु[3] णामेण दिउ हुउ णंदि तासु सुउ पाणपिउ।
तें देवसम्मु णियमाउलउ सेविउ विवाहकरणाउलउ।
सत्त[4] वि धीयउ दिण्णउ परहं धणकणगुणवंतहं दियवरहं।
णंदिं[5] दिट्ठउ णच्चंतु णड्डु भडसंकडि णिवडिय विबलु बड्डु[6]।
अण्णाणिउ वसु [7]हवंतु हिरिहि जणपहसणि[8] गउ लज्जिवि गिरिहि।
गुरुसिहरारूढउ तसियमणु आवेवि[9] जाइ णउ घिवइ तणु।
तलि आसीणा अच्चंतगुणि तहिं संखणाम णिण्णाम मुणि।
परछायामग्गु णियच्छियउ दुमसेणु[10] तेहिं आउच्छियउ।
गुरु अक्खहि[11] कायछाय[12] णरहु कहु तणिय एह आइय धरहु।
घत्ता—ता णियणाणु पयासइ ताहं भडारउ भासइ।
होंतउ सच्चउं दीसइ जो तुम्हहं पिउ होसइ ॥16॥

घत्ता—ज्येष्ठा के साथ जो प्रियदर्शना तप की निष्ठा में अत्यन्त दुबली-पतली हो गयी थी, उसे पुत्री कुन्ती जानो और दूसरी को माद्री पहिचानो।

(16)

तब राजा वसुदेव का पूर्व चरित पूछता है। इन्द्रियों के विजेता केवलीजिन कहते हैं—कुरुक्षेत्र में बहुत-से गोधन की सेवा में अत्यन्त चतुर पलास नाम का प्रसिद्ध गाँव था। उसमें सोमशर्मा नाम का ब्राह्मण था। उसका नन्दी नाम का प्राणप्रिय पुत्र था। विवाह करने के लिए आकुल उसने अपने मामा देवशर्मा की बहुत सेवा की। परन्तु मामा ने अपनी सातों कन्याएँ धन-अन्न और गुणों से युक्त दूसरे श्रेष्ठ ब्राह्मणों को दे दीं। नन्दी ने (विवाह में) नट को नृत्य करते हुए देखा। वह बटुक योद्धाओं की उस भीड़ में दुर्बल होकर गिर पड़ा। वह अज्ञानी लज्जा के वशीभूत होकर लोगों के उपहास से घबराकर जंगल में चला गया। त्रस्तमन वह पर्वत की एक बड़ी चोटी पर चढ़ गया, उस पर आता और जाता, परन्तु अपना शरीर नहीं गिराता (पर्वत से नहीं कूदता)। नीचे तलभाग पर अत्यन्त गुणवान् निर्नाम और शंख नाम के मुनि बैठे हुए थे। उन्होंने दूसरे का छायामार्ग देखा और उन्होंने गुरु द्रुमसेन से पूछा—गुरु जी बताइए यह किस मनुष्य के शरीर की छाया पहाड़ से धरती पर आ रही है ?'

घत्ता—तब उनसे आदरणीय गुरु अपना ज्ञान प्रकाशित करते हुए कहते हैं, जो होनहार है वह सच है, वह तुम्हारा पिता होगा।

(16) 1. A सेवियणिवियडवड्डु; B °णिवडवडो; P °णिवडवडे। 2. B °गाम। 3. S सोम्मसम्मु। 4. B सत्त वि जि धीउ। 5. P णंदें; S णंदि। 6. A बलु। 7. P भवंतु। 8. B °पहसिणि; P °पहसणें। 9. PS आवेइ। 10. B °सेणु जि तहिं। 11. B अक्खइ। 12. S कायच्छाह°।

(17)

तइयम्मि जम्मि आलद्धदिहि[1] वसुएउ णामें राणउ होहिहि।
जो तुम्हहं[2] जणणु सीरिहरिहिं भुयबलतोलियपडिबलकरिहिं।
तहु तणुछाहुल्लिय ओयरिय[3] ता बे वि तहिं जि रिसि संचरिय।
जहिं सो अप्पाणउं किर घिवइ अणुकंपइ संखु साहु चवइ।
उव्वेइउ[4] दीसहि[5] काइं णिरु किं चिंतहिं णिसुणहि किं बहिरु।
तं णिसुणिवि[6] पणइणिदुक्खियउ पडिलवइ कुकम्मुवलक्खियउ[7]।
महुं मामहु धूयउ[8] जेत्तियउ लोयहं परिणिज्जउ[9] तेत्तियउ।
हउं दूहवु[10] णिद्धणु बलरहिउ किं जीवमि परणिंदइ गहिउ।
णिद्दइवु[11] णिरुज्जमु किं करमि इह णिवडिवि वर तणु संघरमि[12]।

घत्ता—मुणि पभणइ किं चिंतहि अप्पउं महिहरि घत्तहि[13]।
भो जिणवरतवु किज्जइ दुरिउं दिसाबलि दिज्जइ ॥17॥

(18)

लब्भइ सयलु वि हियइच्छियउं पर तं मुणिवरहिं दुगुंछियउं।
मग्गिज्जइ णिक्कलु परमसुहं जहिं[1] कहिं मि ण दीसइ देहदुहं।

---

(17)

तीसरे जन्म में, भाग्य को पानेवाला वसुदेव नाम का राजा होगा जो अपनी भुजाओं से शत्रुगजों को तोलनेवाला तुम दोनों बलभद्र और नारायण का पिता होगा। जहाँ से उसकी छाया आ रही थी, वे दोनों महामुनि उस स्थान के लिए चल दिये। जहाँ वह अपने को गिराना चाहता था, वहाँ करुणा से द्रवित होकर शंख मुनि बोले—"तुम अत्यन्त उद्विग्न दिखाई क्यों देते हो ? क्या सोच रहे हो, सुनो, क्या बहरे हो !" यह सुनकर प्रणयिनी के दुःख से दुःखी और कुकर्मों से उपलक्षित वह कहता है—"मेरे मामा की जितनी कन्याएँ थीं, उनसे दूसरों ने विवाह कर लिया। मैं निर्धन, बलरहित और असुन्दर हूँ, दूसरों की निन्दा से गृहीत क्या जिऊँ ? बिना दैव और उद्यम के क्या करूँगा इसलिए यहाँ से गिरकर, अच्छा है अपने शरीर को नष्ट कर लूँ।"

घत्ता—मुनि कहते हैं—तुम क्या सोचते रहते हो और स्वयं को पहाड़ से ढकेलते हो ? अरे, जिनवर का तप करना चाहिए जिससे पापों की दिशाबलि दे सको।

(18)

यद्यपि इससे सब कुछ पाया जा सकता है, परन्तु मुनिवरों द्वारा इसकी भी निन्दा की जाती है। केवल निष्फल परम सुख माँगना चाहिए, जिसमें कहीं भी देह-दुःख दिखाई नहीं देता। यह सुनकर उसने भी काम

---

(17) 1. S आलद्धि। 2. S तुम्हहुं। 3. S उयरिय। 4. A उव्वेयउ। 5. A दीसइ; S दीसहे। 6. B णिसुणइ। 7. B कुकम्मवलक्खियउ। 8. B धूयउ। 9. B वडिवण्णउ; P पडिवण्णउ। 10. B दीहवु; P दूहउ। 11. B णिज्जउ; P णिद्दइउ। 12. S संधरमि। 13. B धित्तहिं; P घेतहि।
(18) 1. S जें।

तं णिसुणिवि तेण वि तवचरणु किउं कामकसायरायहरणु।
उप्पण्णु सुक्कि णिरसियविसउ सोलहसायरबद्धाउसउ।
कालें जंतें तेत्थहु पडिउ णररूवें णं वम्महु घडिउ।
णं तरुणिणयणमणरमणघरु णं गहु[2] कयदुम्महविरहज्जरु[3]।
णं कामबाणु णं पेम्मरसु णं पुरिसरूविं थिउ मयणजसु।
वसुएवु एहु सूहवु सुहडु सुउ तुह जायउ हयहत्थिहडु[4]।
तो[5] अंधकविट्ठिं वंसधउ णियवइ[6] णिहियउ समुद्दविजउ।
सुपइट्ठु[7] भडारउ गुरु भणिवि मोहंधिवमूलइं णिल्लुणिवि।
उवसग्ग परीसह बहु सहिवि तवु करिवि घोरु दुरियइं महिवि।

घत्ता—भरहरायदिहिगारउ अंधकविट्ठि भडारउ।
गउ मोक्खहु मुक्किंदिउ [8]पुप्फयंतसुरवंदिउ ॥18॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वसुएवउप्पत्ती[9] अंधकविट्ठि-णिव्वाणगमणं णाम [10]दुयासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥82॥

और कषायों का अपहरण करनेवाला तपश्चरण किया। विषयों का परित्याग करनेवाला वह सोलह सागर की आयु बाँधकर शुक्र स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। समय बीतने पर वहाँ से च्युत होकर मनुष्यरूप में उत्पन्न हुआ। मानो कामदेव ने उसका निर्माण किया हो, मानो तरुणियों के नेत्रों और मन के लिए रमण करने का घर हो, मानो दुर्मद विरहज्वर करनेवाला शनि हो, मानो कामदेव हो, मानो प्रेमरस हो, मानो पुरुष के रूप में कामदेव का यश हो। यह सुभग और सुभट तथा गजघटाओं को आहत करनेवाला तुम्हारा पुत्र हुआ है। तब अन्धकवृष्णि ने अपने कुल के ध्वज समुद्रविजय को अपने पद पर स्थापित कर दिया। आदरणीय सुप्रतिष्ठ को अपना गुरु मानकर, मोहरूपी वृक्ष की जड़ें काटकर बहुत से उपसर्ग और परीषह सहन कर, तपकर, घोर पापों को नष्ट कर;

घत्ता—भरतक्षेत्र के राजाओं को सन्तोष देनेवाले, आदरणीय नक्षत्रों और देवों द्वारा वन्दनीय मुक्तेन्द्रिय अन्धकवृष्णि मोक्ष चले गये।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का वसुदेव-उत्पत्ति एवं अन्धकवृष्णि-निर्वाण-गमन नाम का बयासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

2. A णारिहु। 3. AP कयदुम्महु। 4. A °हत्थिघडु। 5. A ता। 6. ABP णियपइ। 7. B सुपइट्ठ। 8. B पुप्फयंतु; K पुष्फयंत; S पुप्फयंत। 9. AB समुद्दविजयाईउप्पत्ती। 10. AS दुयासीतिमो; P दुयासीमो।

तेयासीतिमो संधि

सहुं भायरहिं समिद्धु णायाणाय णिहालइ।
पहु समुद्दविजयंकु महिमंडलु परिपालइ ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

एक्कहिं दिणि आरूढउ[1] करिवरि णावइ ससहरु उइउ[2] महीहरि।
असहसणयणु[3] णाइ[4] कुलिसाउहु अकुसुमसरु णं सइं कुसुमाउहु।
णं अखारु सलवणु रयणायरु अकवडणिलउ णाइ[4] दामोयरु।
अमलदेहु णावइ उग्गउ[5] इणु जगसंखोहकारि णावइ जिणु।
[6]चामरछत्तचिंधसिरिसोहिउ[7] विविहाहरणविसेसपसाहिउ[8]।
सो वसुएउ[9] कुमारु पुरंतरि हिंडइ हट्टमग्गि घरि चच्चरि।
सो ण पुरिसु जें दिट्ठि ण ढोइय सा ण दिट्ठि जा तहु ण[10] पराइय।
मणुउ देउ सो कासु ण भावइ संचरंतु तरुणीयणु तावइ।
घत्ता—का वि कुमारु णियंति रोमि रोमि पुलइज्जइ।
अलहंती तहु चित्तु पुणरवि तिलु तिलु खिज्जइ ॥1॥

तेरासीवीं सन्धि

अपने भाइयों से समृद्ध समुद्रविजय न्याय-अन्याय को देखता है और इस प्रकार वह पृथ्वीमण्डल का पालन करता है।

(1)

एक दिन श्रेष्ठ हाथी पर आसीन वह ऐसा लग रहा था जैसे उदगिरि पर चन्द्रमा हो, जैसे हजार नेत्रों के बिना इन्द्र हो, जो मानो बिना पुष्पबाणों के कामदेव हो, जो मानो क्षाररहित सुन्दर समुद्र हो, जो मानो कपटरूपी घर के बिना दामोदर हो, जो स्वच्छ देहवाला उगा हुआ सूर्य हो, जो मानो विश्व को स्पन्दित करनेवाला जिनवर हो। चामरों, छत्र और चिह्नों की शोभा से शोभित और विशेष आभरणों से प्रसाधित वह वसुदेव कुमार नगर और बाजारमार्गों, घर और चौराहों में घूमता फिरता है। ऐसा एक भी पुरुष नहीं है जो अपनी दृष्टि का उपहार उसे नहीं देता। ऐसी एक भी दृष्टि नहीं है जो उस तक नहीं पहुँचती। वह मनुष्य-देव किसे अच्छा नहीं लगता जो संचरण करता हुआ युवतीजनों को संतप्त कर देता है।

घत्ता—कोई कुमार को देखकर रोम-रोम से पुलकित हो उठती है और उसकी समागम प्राप्ति न हो सकने के कारण वह मन में तिल-तिल दुःखी हो उठती है।

---

(1) 1. S आरूढ। 2. APS उययमहीं°। 3. A सहसणयणु णावइ। 4. B णामि। 5. B उग्गओ। 6. AP °चिंधु। 7. S सिर°। 8. S विविहाहरण°। 9. S वसुदेव। 10. S omits ण।

(2)

पासेइज्जइ का वि णियंबिणि[1] थिप्पइ णं अहिणवकालंबिणि[2]।
का वि तरुणि हरिसंसुय मेल्लइ काहि वि वम्महु वम्मइं सल्लइ।
सूहवगुणकुसुमहिं मणु वासिउं काहि वि मुहुं णीसासें सोसिउं।
णेहवसेण पडिउं चेलंचलु काहि वि पायडु थक्कु थणत्थलु।
काहि वि केसभारु चुउ[3] बंधणु काहि वि कडियलल्हसिउं [4]पयंधणु।
खलियक्खरइं का वि दर जंपइ पियविओयजरवेएं कंपइ।
चिक्कवंति[5] क[6] वि चरणहिं गुप्पइ कवि पुरंधि णियदइयहु कुप्पइ।
मयणुम्म[illegible] [illegible]मज्जा[illegible] काहि वि हियउं णिरंकुसु जायउं।
[7]लोहलज्जकुल[8]भयरसमुक्कउं[9] [10]वरदेवरससुरयसुहिचुक्कउं[11]।
काहि वि वउ पेम्मेण किलिण्णउं बिउणावेढु[12] णियंबहु दिण्णउं।
घत्ता—क वि ईसालुयकंत दप्पणि तरुणु [13]पलोइवि ॥
विरहहुयासें दड्ढ मुय अप्पाणउं सोइवि ॥2॥

(3)

[1]तग्गयमण क वि मुहआलोयणि[2] वीसरेवि सिसु सुण्णणिहेलणि।

---

(2)

कोई सुन्दरी पसीना-पसीना हो उठती है, मानो अभिनव मेघमाला स्थापित कर दी गई हो। कोई तरुणी हर्ष के आँसू छोड़ने लगती है; किसी के मर्मों को कामदेव पीड़ित करने लगता है, किसी का प्रिय के गुणरूपी कुसुमों से सुवासित मन निश्वासों से सूख गया है। किसी का वस्त्रांचल स्नेह के कारण खिसक गया है और किसी का स्तनस्थल स्पष्ट रूप से प्रकट हो गया है। किसी का केशभार और बन्धन च्युत हो गया। किसी की साड़ी कमर से खिसक गयी थी। कोई लड़खड़ाते अक्षरों में कुछ भी कहती है और प्रिय वियोग के ज्वर में काँपती है। पैरों से चलती हुई कोई घबरा जाती है। कोई स्त्री अपने पति पर क्रुद्ध हो उठती है। किसी का हृदय कामदेव से उन्मत्त और मर्यादा से रहित, एकदम निरंकुश हो गया है एवं लोक-लज्जा और कुल के भयरस से मुक्त, पति देवर ससुर और सुधी जन से चूक गया। किसी का शरीर प्रेम से आर्द्र हो उठा। उसने अपने नितम्बों को दुगुना आवेष्टित कर लिया।

घत्ता—कोई अपने ईर्ष्या करनेवाले तरुण पति को दर्पण में देखकर अपने को सुखाकर, विरहज्वाला में जलकर मर गयी।

(3)

कोइ स्त्री कुमार में लीन होकर, उसका मुख देखने के लिए सूने घर में बच्चे को भूलकर और कमर

---

(2) 1. S णियंबणि। 2. S °कालिंबिणि। 3. AP चुय°। 4. P पयंधणु; ST पइंधणु। 5. A विक्कमंति; P चिक्कमंति। 6. P चरणहिं क वि। 7. ABP लोयलज्ज°। 8. B °रसभय°। 9. S °रसु। 10. P सुसुरय°। 11. A °सुहिचुक्कउं। 12. A वउणावेढु। 13. S पलोयवि।

(3) 1. P उग्गयणगयण का वि मुहयालोयणि। 2. A सुहयालोयणि।

कडियलि घरमज्जारु लएप्पिणु धाइय जणवइ हासु जणेप्पिणु।
काहि वि कंडंतिहि[3] ण उदूहलि णिवडिउ[4] मुसलघाउ धरणीयलि।
काइ वि चट्टुयहत्थइ[5] जोइउ रंककरंकइ[6] पिंडु ण ढोइउ।
चित्तु[7] लिहंति का वि तं झायइ पत्तछेइ तं चेय णिरूवइ[8]।
जा[9] तहिं णच्चइ सा तहिं णच्चइ जा गायइ सा तं सरि सुच्चइ[10]।
जा बोल्लइ सा तहु गुण वण्णइ णियभत्तारु ण काइं वि मण्णइ।
विहरंतिहिं इच्छिज्जइ मेलणु भुंजंतिहिं पुणु तहु कह सालणु।
णिसि सोवंतिहिं सिविणइ दीसइ इय वसुएउ[11] जांव पुरि विलसइ।
णरणाहहु कयसाहुद्धारें ता पय गय सयल वि कूवारें।
देव देव भणु किं किर किज्जइ विणु घरिणिहिं धरु केंव धरिज्जइ।
मयणुम्मत्तउ पुरणारीयणु वसुएवहु[12] उप्परि ढोइयमणु।
णिसुणि भडारा दुक्करु जीवइ जाउ जाउ पय कहिं मि पयावइ।
घत्ता—ता पउरहं राएण पउरु पसाउ करेप्पिणु।
पत्थिउ रायकुमारु णेहें [13]हक्कारेप्पिणु ॥3॥

पर घर के मार्जार को लेकर लोगों में हँसी उत्पन्न करती हुई दौड़ी। धान्य कूटती हुई किसी का मूसल ऊखल के बजाय धरती पर गिर पड़ा। किसी ने करछुली हाथ में लिये हुए, उसे (कुमार को) देखा। उसने दरिद्र भिखारी के पात्र (खप्पर) में भोजन नहीं दिया। कोई चित्र लिखती हुई उसी का ध्यान करती है और पत्रच्छेद में उसी का निरूपण करती है। जो उस नगर में नृत्य करती है, वह उसी के सामने नृत्य करती है। जो गाती है, वह (अपने) स्वर में उसी की सूचना देती है। जो बोलती है, वह उसी के गुण का वर्णन करती है और अपने पति को कुछ भी नहीं मानती। विहार करती हुई उनके द्वारा वही (कुमार) चाहा जाता है, और भोजन करते हुई उनके लिए उसकी कथा ही व्यंजन है। रात्रि में सोती हुई उनके द्वारा वह स्वप्न में देखा जाता है। इस प्रकार जब कुमार वसुदेव नगर में विलसित हो रहा था, तब समस्त प्रजाजन हाथों में वृक्ष की शाखाएँ उठाकर करुण विलाप के साथ राजा के पास गये और बोले—"हे देव ! देव !! बताइए, क्या किया जाए, बिना गृहिणियों के घरों को कैसे रखा जाए ? पुरनारीजन काम से उन्मद होकर वसुदेव के लिए अपना मन अर्पित कर चुका है। हे आदरणीय ! सुनिए, अब जीना मुश्किल है। हे प्रजापति ! अब प्रजा जाए तो कहाँ जाए?

घत्ता—तब राजा ने पौरजनों पर प्रचुर प्रसाद करते हुए राजकुमार को बुलाकर प्रार्थना की।

---

3. BS कंडंतहि। 4. B णिवडिय। 5. B चट्टुउ। 6. B रंकहं करए। 7. P चिन्हु। 8. A णिरूयइ। 9. P जहिं तहिं। 10. A गायइ। 11. S वसुएवु। 12. BP वसुदेवहु। 13. S कयकारेप्पिणु।

(4)

दिणयरु दहइ[1] धूलि तणु मइलइ दुट्ठदिट्ठि ललियंगइं जालइ।
किं अप्पाणउं अप्पुणु[2] दंडहि बंधव तुहुं[3] किं बाहिरि हिंडहि।
करि वणकील विउलणंदणवणि[4] झिंदुयकील करहि[5] घरप्रंगणि[6]।
मणिगणबद्धणिद्धधरणीयलि रमणीकील[7] करहि सत्तमयलि।
सलिलकील करि कुवलयवाविहि तं णिसुणेवि वयणु कुलसामिहि।
जुवराएं पडिवण्णु णिरुत्तउं गयकइवयदियहेहिं[8] अजुत्तउं।
पुणु णिउणमइसहाएं[9] वुत्तउं पहुणा णियलणु[10] तुज्झु णिउत्तउं।
पुरयणणारीयणु[11] तुह रत्तउ जोइवि[12] विहलंघलु[13] णिवडंतउ।
णायरलोएं तुहुं बंधाविउ णरवइवयणु[14] णिरोहणु पाविउ।
तासु वयणु सं तेण [15]परिक्खिउं णियमंदिरणिग्गमणु जोक्खिउं।
घत्ता—ता पडिहारणरेहिं एहउं तासु समीरिउं।
घरणिग्गमणु हिएण तुम्हहं राएं वारिउं ॥4॥

(5)

तओ सो सुहद्दासुओ वूढमाणो[1] ण केणावि दिट्ठो विणिग्गच्छमाणो[2]।
घराओ पुराओ गओ कालिकाले अचक्खुप्पएसे[3] तमालालिणीले।

(4)

तुम्हें सूर्य जलाता है, धूल से शरीर मैला होता है, खराब दृष्टियाँ सुन्दर अंगों को जलाती हैं, तुम अपने को अपने से क्यों दण्डित करते हो ? तुम विशाल नन्दनवन में वनक्रीडा क्यों करते हो ? अपने घर के आँगन में गेंद खेला करो, मणिसमूह से रचित चिकनी धरतीवाले सातवें तलधर पर स्त्री-क्रीडा किया करो, कुवलय बापिकाओं में जलक्रीडा करो। यह सुनकर कुमार ने कुलस्वामी के वचन को निश्चित रूप से मान लिया। कुछ दिन बीतने पर निपुणमति नामक सहायक मन्त्री ने यह अयुक्त बात कही—"राजा ने तुम्हें बन्धन में डाल दिया है। पुरजनों का नारीजन तुममें अनुरक्त है, तुम्हें देखकर विकल होकर गिर पड़ता है। इसलिए नगर के लोगों ने तुम्हें बँधवाया है। राजा के रोकनेवाले वचन तुम्हें मिले।" निपुणमति के इन वचनों की कुमार ने परीक्षा की और उसने राजमन्दिर (राजभवन) से निकलकर देखा।

घत्ता—तब द्वारपालों ने उससे इस प्रकार कहा कि हितकारी राजा ने तुम्हारा घर (भवन) से निकलना मना कर दिया है।

(5)

इस पर, उस सुभद्रा-पुत्र वसुदेव को अहंकार उत्पन्न हो गया। और घर से बाहर जाते हुए उसे किसी ने भी नहीं देखा। रात्रि के समय, जबकि तमाल और भ्रमरों के समान नीले प्रदेश में कुछ भी दिखाई नहीं

(4) 1. APS डहइ। 2. APS अप्पणु। 3. AP किं तुहुं। 4. S विउले। 5. B करिहि। 6. ABP °पंगणे। 7. S रमणीयकील। 8. S om. दिय°। 9. P णिगुणमइ°। 10. K णियलु। 11. AP पुरवरणारी°। 12. S जोयवि। 13. S विहलंघलणु वडंतउ। 14. B वयण। 15. AP णिरिक्खिउं।
(5) 1. B वुड्ढ°; S वोढ°। 2. BS विणिग्गच्छ°। 3. S अचक्खुपएसे।

वसावीसढं देहिदेहावसाणं पविट्ठो असाणं ससाणं[4] मसाणं।
कुमारेण तं तेण दिट्ठं रउद्दं ललंतंतमालं[5] सिवामुक्कसद्दं।
महासूलभिण्णंगकंदंतचोरं वियंभंतमज्जारघोसेण घोरं।
विहंडंतवीरेसहुंकारफारं[6] पलिप्पंतसत्तच्चिधूमंधयारं।
[7]णहुड्डीणभूलीणकीलाउलूयं[8] समुद्धंतणग्गुग्गवेयालरूयं[9]।
[10]णरंकालवीणासमालत्तगेयं[11] दिसाडाइणीदुग्गखज्जंतपेयं।
[12]कुलुब्भूयसिद्धंतमग्गावयारं दिजीडोंबिचंडालिपेयाहियारं[13]।
घणं णिग्घिणं भासियद्दइयवायं[14] सया जोइणीचक्ककीलाणुरायं।

घत्ता—अकुलकुलहं[15] संजोए कुलसरीरु[16] उवलक्खियउं[17]।
इय जहिं सीसहं[18] तच्चु कउलायरिएं[19] [20]अक्खियउं ॥5॥

(6)

जोइउ तहिं वम्महसोहालें डज्झंतउं मडउल्लउं बालें।
तहु उप्परि आहरणइं घित्तइं[1] रयणकिरणविप्फुरियविचित्तइं[2]।
लिहिवि मरणवत्ताइ विसुद्धउं हरिगलकंदलि[3] पत्तु णिबद्धउं।

देता था, वह घर के बाहर चला गया और वसा से बीभत्स, शरीरधारियों के शरीरों का अन्त करनेवाले, शब्दशून्य और कुत्तों से भरे हुए मरघट में पहुँचा। उस कुमार ने मरघट देखा, जिसमें आँतों की मालाएँ झूल रही थीं, सियारनों के शब्द गूँज रहे थे, महाशूलों से विदीर्ण-शरीर चोर चिल्ला रहे थे, फैलते हुए विलावों से जो भयंकर था। नष्ट होते हुए वीरेश मन्त्रसाधकों से जो भयानक था, प्रज्वलित अग्नियों के धुएँ से जो अन्धकारमय था, जिसमें आकाश में उड़ते हुए और धरती में लीन उल्लू दिखाई दे रहे थे, जिसमें नग्न और उग्र वैताल रूप दिखाई दे रहे थे, मनुष्यों की हड्डियों की वीणाओं से गीत प्रारम्भ किये जा रहे थे, जहाँ दिशारूपी डाइनों के दुर्गों में प्रेत खाये जा रहे थे, जिसमें कौलिक के द्वारा कथित सिद्धान्त मार्ग की अवतारणा हो रही थी, जिस (मार्ग) में ब्राह्मणियों, डोबनियों और चण्डालिनियों को मद्य का अधिकार है तथा सघन और निर्दय द्वैतवाद का जिसमें कथन किया जा रहा था।

घत्ता—अकुल (अप्, तेज और वायु के संयोग से उत्पन्न चैतन्य शरीर) और कुल (पृथ्वी आदि द्रव्य) के संयोग से शरीर विश्लेषित किया जाता है। इस प्रकार जहाँ कौलाचार्यों के द्वारा शिष्यों के लिए तत्त्वों का व्याख्यान किया जा रहा है।

(6)

वहाँ कामदेव की तरह सुकुमार उस बालक (कुमार) ने एक शव को जलते हुए देखा। उसके ऊपर उसने रत्नकिरणों से चमकते और विचित्र आभूषण रख दिये और अपनी मरणवार्ता लिखकर, विशुद्ध पत्र घोड़े के

4. S omits ससाणं। 5. B °मालं°। 6. S विहिडंत°। 7. A °ड्डीणचुलीण। 8. B °उलूवं; S °उलीयं। 9. A °रूवं। 10. ABP णिकंकाल°। 11. B °गीयं। 12. B कुलुज्झूय°; Als. कुलुज्झाय° on the strength of gloss in B : कुलाचार्यप्रणीतसिद्धान्तमार्गावतारम्। 13. A दिजिप्पाविचंडालपीयाहियारं। 14. A भासियं दइयवायं। 15. A अकुलु। 16. P कुलु। 17. APS °लक्खिउं। 18. AP सीसहिं। 19. P कउलाइरिएं; S कउलाइरियहिं। 20. A रक्खिउ; PS अक्खिउ।

(6) 1. B घेत्तइं। 2. PS °विप्फुरण°।

सुललिउ सूहउ सयणाणंदिरु[4] गउ अप्पणु सो[5] कत्थइ सुंदरु।
उग्गउ सूरु कुमारु ण दीसइ हा कहिं गउ कहिं गउ पहु भासइ।
कणयकोंतपट्टिसकंपणकर राएं दसदिसु पेसिय किंकर।
पुरि घरि घरि अवलोइउ उववणि[6] अवरहिं दिट्ठउ हयवरु पिउवणि।
पल्लाणियउ पट्टचमरंकिउ तं अवलोइवि भडयणु संकिउ।
लेहु लएप्पिणु णाहहु घल्लिउ तेण वि सो झड त्ति उव्वेल्लिउ।
रायहु बाहाउण्णइं णयणइं दिट्ठइं[7] एयइं लिहियइं वयणइं।
णंदउ पय चिरु विप्पियगारी णंदउ सुहुं[8] सिवएवि भडारी।
णंदउ परियणु णंदउ णरवइ गउ वसुएवसामि सुरवरगइ[9]।
घत्ता—ता पिउवणि[10] जाइवि सयणहिं जियविच्छोइउं[11]।
दड्ढु[12] सभूसणु पेउ हाहाकारिवि जोइउं[13] ॥6॥

(7)

ते[1] णव बंधव सहुं परिवारें सोउ करंति दुक्खवित्थारें।
सा सिवएवि रुयइ[2] परमेसरि हा देवर परभडगयकेसरि।
हा किं जीविउं तिणु[3] परिगणियउं कोमलवउ[4] हुयवहि[5] किं हुणियउं।

गले में बाँध दिया। और सुललित, सुभग, स्वजनों को आनन्दित करनेवाला वह सुन्दर स्वयं कहीं चला गया। सबेरा हुआ, परन्तु कुमार दिखाई नहीं दिया। राजा कहता है—"वह कहाँ गया, कहाँ गया वह ?" राजा ने स्वर्णभाले, पटा (तलवार के आकार का शस्त्र) और कटारी हाथ में लिये हुए अनुचर दसों दिशाओं में भेजे। उन्होंने नगर में घर-घर में और उद्यान में खोजा। दूसरों ने मरघट में अश्ववर को देखा—काठी से सजा हुआ और पट्टचमर से अंकित। उसे देखकर योद्धागण आशंकित हो उठे। लेख लेकर उन्होंने राजा को दिया। उस पत्र से राजा भी शीघ्र उद्वेलित हो उठा। राजा की आँखें आँसुओं से गीली हो गयीं। उसने लिखे हुए ये वचन पढ़े—"मेरा बुरा चाहनेवाली प्रजा चिरकाल तक आनन्द से रहे, आदरणीय शिवादेवी सुख से रहें, परिजन प्रसन्न रहें, राजा प्रसन्न रहें, स्वामी वसुदेव देवलोक के लिए चला गया है।"

घत्ता—तब मरघट में जाकर, स्वजनों ने जीवरहित अलंकारों से रहित जला हुआ प्रेत हाहाकार करते हुए देखा।

(7)

अपने परिवार के साथ वे नौ भाई दुःख के बढ़ने से शोक करते हैं। वह परमेश्वरी शिवादेवी रोती है—शत्रुभट रूपी गज के लिए सिंह के समान हे देवर ! तुमने अपने जीवन को तृण के समान क्यों समझा ? हाय !

3. B "कडल" । 4. AB णयणाणंदिरु । 5. AP कत्थइ सो । 6. P वणे वणे । 7. APS एयइं दिट्ठइं । 8. S सहुं । 9. S सुरवइगइ । 10. P पिउवणु । 11. S विच्छोइयउ । 12. P दिट्ठु; S दड्ढु । 13. B जायउ; S जोइयउ ।

(7) 1. A तेण वि बंधव । 2. B रुवइ । 3. AS तणु । 4. PS कोमलंगु । 5. B हुववहे ।

हा पयाइ किं किउं पेसुण्णउं हा किं पुरि परिभमहुं ण दिण्णउं।
हा कुलधवलु केंव[6] विद्धंसिउ हा[7] जयसिरिविलासु किं णिरसिउ।
हा पइं विणु सोहइ ण घरंगणु चंदाविवज्जिउं णं गयणंगणु।
हा पइं विणु दुक्खें पुरु[8] रुण्णउं हा पइं विणु माणिणिमणु सुण्णउं।
हा पइं विणु को हारु थणंतरि को कीलइ सरहंसु[9] व सरवरि।
पइं विणु को जणदिट्ठिउ पीणइ कंदुयकील देव को जाणइ।
हा पइं विणु को एवहिं सूहउ पइं [10]आपेक्खिवि मयणु वि दूहउ।
हा पइं विणु णियगोत्तससंकहु को भुयबलु समुद्दविजयंकहु।
हा पइं विणु [11]सुण्णउं हियउल्लउं को रक्खइ मेरउं कडउल्लउं।
छाररासि हूयउ पविलोयउ एंव बंधुवग्गें सो सोइउ[12]।
पंजलीहिं मीणावलिमाणिउं [13]ण्हाइवि सव्वहिं दिण्णउं पाणिउं।

घत्ता—वरिससएण कुमारु मिलइ तुज्झु गुणसोहिउ।
णेमित्तियहिं णरिंदु एंव भणिवि संबोहिउ ॥7॥

(8)

एत्तहि सुंदरु विहरंतउ विजयणयउ सहसा संपत्तउ।
दिट्ठउं णंदणु[1] वणु तहिं केहउं महुं भावइ रामायणु जेहउं।

प्रजा ने इतनी दुष्टता क्यों की ? हाय ! उसे नगरी में क्यों नहीं घूमने दिया ? हे कुलश्रेष्ठ तुम कैसे नष्ट हो गये ? हाय ! जयश्री के विलास को क्यों निरस्त किया गया ? हाय, तुम्हारे बिना घर का आँगन शोभित नहीं होता, जैसे चन्द्रमा से शून्य आकाश। हाय, तुम्हारे बिना नगर दुःख से परिपूर्ण है। हाय, तुम्हारे बिना, माननियों का मन शून्य है। हाय, तुम्हारे बिना स्तनों के बीच कौन-सा हार है ? तुम्हारे बिना कौन सरहंस के समान सरोवर में क्रीडा करेगा ? तुम्हारे बिना कौन जनदृष्टि को प्रसन्न करेगा ? हे देव, कन्दुक-क्रीडा कौन जानता है ? हाय, तुम्हारे बिना इस समय कौन सुभग है ? तुम्हारी तुलना में कामदेव भी असुन्दर है। हाय, तुम्हारे बिना अपने गोत्र के चन्द्र समुद्रविजय का बाहुबल क्या है ? तुम्हारे बिना हृदय शून्य है। अब कौन मेरे कटिसूत्र को बचाएगा। सबने उसे धूलि का ढेर हुआ देखा, और इस प्रकार बन्धुवर्ग ने उसके लिए शोक किया। सबने स्नान कर अपनी अंजलियों से मीनावलि के द्वारा मान्य पानी उसे दिया।

घत्ता—तब नैमित्तिकों ने राजा को यह कहकर सम्बोधित किया कि गुणों से शोभित तुम्हारा कुमार सौ वर्ष में मिल जाएगा।

(8)

इधर, वह सुन्दर कुमार धरती पर विचरण करता हुआ शीघ्र विजयनगर पहुँचा। उसने वहाँ नन्दन वन

6. B केम; P केण। 7. P हा हा सिरि°। 8. B पर। 9. A कलहंसु। 10. S आपेक्खिवि। 11. P हियउल्लउं सुल्लउं; S हियउल्लउं भुल्लउं। 12. A सो सोयउ; S संसोइउ। 13. S ण्हायवि।

(8) 1. ABS णंदण°।

जहिं चरंति भीयर रयणीयर चउदिसु उच्छलंति लक्खणसर।
सीयविरहि संकमइ णहंतरु घोलिरपुच्छु[2] सरामउ वाणरु।
णीलकंठु णच्चइ रोमंचिउ अज्जुणु जहिं दोणें[3] संसिंचिउ।
णउलें सो ज्जि[4] णिरारिउं सेविउ भायरु किं णउ[5] कासु वि भायउ[6]।
इय सोहइ उववणु णं भारहु वेल्लीसंछण्णउं[7] रविभारहु।
जहिं पाणिउं णीयत्तणि णिवडइ जडहु [8]अणंगइं को किर पयडइ।
तहिं असोयतलि तो[9] आसीणउ सूहउ दीहरपंथें रीणउ।
णं वणु[10] लयदलहत्थहिं विज्जइ पयलियमहुथेंभहिं णं रंजइ।
चलजलसीयरेहिं णं सिंचइ णिवडिकुसुमोहें णं अंचइ।
साहाबाहहिं णं आलिंगइ परिमलेण णं हियवइ लग्गइ।
पहियपुण्णसामत्थें णव णव [12]सुक्कसुरुक्खहिं णिग्गय पल्लव।
पणविवि पालियपउरपियालें [13]रायहु वज्जरियउं वणवालें।

घत्ता—जो जोइसियहिं वुत्तु जरतरुवरकयछायउ[14]।
सो पुत्तिहि वरइत्तु णं अणंगु सइं आयउ[15] ॥8॥

किस प्रकार देखा ? जिस प्रकार रामायण मुझे अच्छी लगती है। जहाँ भयंकर रजनीचर (उल्लू और राक्षस) विचरण करते हैं, चारों दिशाओं में लक्खणसर (सारस और लक्ष्मण के तीर) उछलते हैं। जहाँ वानर (बन्दर और सुग्रीव आदि) सीयविरह (शीत के अभाव, सीता के विरह में) में आकाश में उछलते हैं और अपनी पूँछ हिलाते हुए; सरामउ (वानरी और राम सहित) हैं। जिसमें नीलकण्ठ (शिखण्डी और द्रौपदी का भाई) नृत्य करता है। अर्जुन (इस नाम का वृक्ष और अर्जुन), द्रोण (घट और द्रोणाचार्य) से सींचा गया (जल से सींचा गया, तीरों से सींचा गया), जो नकुल (वृक्षविशेष, पाण्डवों का भाई) से अत्यन्त सेवित है। अपना भाई किसे अच्छा नहीं लगता ? वह उपवन इस प्रकार शोभित है मानो भारत हो (महाभारत हो), जहाँ रवि का प्रकाश लताओं से आच्छादित है, जहाँ पानी नीचे की ओर प्रवाहित है। जड (मूर्ख और जल) के लिए कौन (स्त्री) अपने अंग प्रकट करती है ? वहाँ वह अत्यन्त सुन्दर, लम्बे रास्ते से थका हुआ अशोक वृक्ष के नीचे बैठ गया। मानो वह उपवन अपने लतादल के हाथों से पंखा करता है, झरते हुए मकरन्द बिन्दुओं से रंजित करता है, चंचल जलकणों से सिंचित करता है, शाखा रूपी बाहों से मानो आलिंगन करता है। परिमल के द्वारा मानो हृदय से लगता है। उस पथिक के पुण्य सामर्थ्य से, सूखे हुए सुन्दर वृक्षों से नये-नये पत्ते निकल आये। चिरोंजी के प्रचुर वृक्षों का पालन करनेवाले वनपाल ने राजा से प्रणाम करते हुए कहा—

घत्ता—जैसा कि ज्योतिषियों ने कहा था, जीर्ण वृक्षों में हरी-भरी छाया करनेवाला स्वयं कामदेव पुत्री के लिए वर बनकर आया है।

2. A °पुंछु। 3. A दोणि°। 4. P ज्जु। 5. AP ण वि। 6. APS भाविउ। 7. B विल्लिहिं। 8. P अण्णगइं। 9. P सोयासीणउ। 10. A वणलय°। 11. BK °महुथेंभहिं but gloss in K मकरन्दश्चोतैः। 12. AP सुक्खहं रुक्खहं; S सुक्खसुरुक्खहं। 13. B रायहं। 14. B तरुवरु। 15. B आइउ।

(9)

तं णिसुणिवि आयउ सइं राणउ पुरि पइसारिउ रायजुवाणउ।
हरियवंसवण्णेय रवण्णी सामाएवि तासु तें दिण्णी।
कामुउ कंतहि अंगि विलग्गउ थिउ कइवयदियहइं[1] पुणु णिग्गउ।
सिरिवसुएवसामि संतुट्ठउ देवदारुवणु[2] णवर पइट्ठउ।
जहिं लवंगचंदणसुरहियजलु[3] दिसिग[illegible]कोइलकुलकलयलु[4]।
जहिं बहुदुमदलवारियरवियर रुहुचुहंति[5] णाणाविह णहयर।
णवमायंदगोंदि[6] गंजोल्लिय जहिं कइ कइकरेहिं उप्पेल्लिय।
जहिं हरिकररुहदारियमयगल रुहिरवारिवाहाउलजलथल।
दसदिसिवहणिहिसमुत्ताहल गिरिकंदरि वसंति जहिं णाहल।
ओसहिदीव[7]तेयदावियपह जहिं तमालतमअविलक्खिय[8] रह।
जहिं सबरहिं[9] संचिज्जइ[10] तरुहलु हरिणिहिं चिज्जइ कोमलकंदलु।

घत्ता—तहिं कमलायरु दिट्ठु णवकमलहिं संछण्णउ[11]।
धरणिविलासिणियाइ[12] जिणहु अग्घु णं दिण्णउ ॥9॥

(9)

यह सुनकर राजा स्वयं आया और उसने उस राजयुवा को नगर में प्रवेश कराया और हरे बाँस के वर्ण की तरह सुन्दर श्यामा देवी उसने उसे दे दी। कान्ता से मिलाप कर वह कुछ दिन वहाँ रहा और फिर बाहर निकल गया। श्री वसुदेव स्वामी सन्तुष्ट होकर देवदारु के वन में प्रविष्ट हुए—जहाँ लौंग और चन्दन से सुरभित जल था, दिशाओं में कोयलों की कलकल ध्वनि हो रही थी, जहाँ रविकिरणों को आच्छादित करनेवाले द्रुमदल थे और नाना प्रकार के पक्षी शब्द कर रहे थे, जहाँ नव आम्रवृक्षों के समूह पर आनन्द को प्राप्त वानर दूसरे वानरों द्वारा ठेले जा रहे थे, जहाँ सिंहों के नखों से मदगल हाथी विदारित थे और स्थल तथा जल रुधिर रूपी जल से व्याप्त था, दसों दिशाओं में मोती बिखरे हुए थे, जहाँ गुफाओं में भील रहते थे, जहाँ औषधिरूपी दीपों के तेज से पथ आलोकित थे, जहाँ गलियाँ तमाल वृक्षों के अन्धकार से दिखाई नहीं देती थीं, जहाँ भीलनियाँ वृक्षों के फल इकट्ठा कर रही थीं और हरिणियों के द्वारा कोमल अंकुर खाये जा रहे थे।

घत्ता—वहाँ उसने कमलों से ढका हुआ एक सरोवर देखा, मानो धरती रूपी विलासिनी ने जिनेन्द्र भगवान के लिए अर्घ्य दिया हो।

(9) 1. °दियहेहिं; P °दियहिं। 2. A °वणि; P °वणे। 3. S °जल। 4. S °कलयल। 5. A रुहचुअंति; B रुहवुहंति। 6. A °गुंद°; B °गोदि; Als. °गोंदि। 7. P °दिव्व°। 8. B °तमविलक्खिय। 9. A सवरिहिं। 10. BK संचिज्जय। 11. B छण्णउ। 12. A °विलासिणिए।

(10)

सीयलसगाहगयथाहसलिलालि   [1]कंजरसलालसचलालिकुलकालि ।
मत्तजलहत्थिकरभीयझसमालि   [2]वारिपेरंतसोहंतणवणालि ।
मंदमयरंदलवपिंजरियवरकूलि[3]   तीरवणमहिसढुक्कंतसद्दूलि ।
पंकपल्हत्थलोलंतवरकोलि[4]   कीरकारंडकलरावहलबोलि ।
कंकचलचंचुपरिउंबियबिसंसि   लच्छिणेउररवुड्डवियकलहंसि[5] ।
अक्करहदंसणपओसियरहंगि[6]   वायहयवेविरपघोलियतरंगि[7] ।
ण्हंतवियरंतविहसंतसुरसत्थि[8]   एंतजलमाणुसविसेसहयहत्थि[9] ।

घत्ता—करि [10]सरवरि कीलंतु तेण णिहालिउ मत्तउ ।
णावइ मेरुगिरिंदु खीरसमुद्दि णिहित्तउ ॥10॥

(11)

अंजणणीलु णाइ[1] अहिणवघणु   करतुसारसीयरतिम्मियवणु ।
दसणपहरणिद्दलियसिलायलु   पायणिवाओणवियइलायलु[2] ।

(10)

(उसने सरोवर देखा) जो शीतल, जलचरों और अथाह जल और भ्रमरों से सहित था, जो कमलों के रस की लालसा से चंचल भ्रमर-समूह से काला हो रहा था, जिसमें मतवाले गजों की सूँडों से मत्स्यकुल भयभीत था, जिसमें जलपर्यन्त नवमृणाल शोभित थे, जिसके किनारे नव मकरन्द कणों से पीले हो रहे थे, जिसके किनारों के वनों में सिंह भैंसों पर झपट रहे हैं, जहाँ कीचड़ में पड़े हुए सुअर लोटपोट रहे थे, जहाँ तोतों तथा हंसों के कलरव का कोलाहल हो रहा था, जहाँ हंसों की चंचल चोंचों से कमलिनी-खण्ड चूमे जा रहे थे, जहाँ लक्ष्मी के नूपुरों की आवाज से सुन्दर हंस उड़ रहे थे, जहाँ सूर्य का रथ देख लेने पर चकवा पक्षी सन्तुष्ट हो रहे थे, पवन से आहत काँपती हुई लहरें जिसमें आन्दोलित हो रही थीं, जिसमें देवसमूह नहाता, विचरता और हँसता हुआ था, जिसमें आते हुए जलमानुष, विशेष हय और गज दिखाई दे रहे थे, ऐसे—

घत्ता—उस सरोवर में उसने खेलते हुए हाथी को देखा, मानो क्षीरसमुद्र में सुमेरुपर्वत को फेंक दिया गया हो।

(11)

जो अंजन के समान नीला और अभिनव मेघ के समान था, सूँड के जलकणों से उसने वनभूमि आर्द्र कर दी थी, दाँतों के आघात से शिलातल को चूर-चूर कर दिया था, पैरों के निपात से जिसने भूमि को

(10) 1. AP कंजरयलालस° । 2. AP add पर before वारि । 3. BS omit लव । 4. AP वणकोले । 5. A °रउड्डीण । 6. S °पओसविय° । 7. ABPS °पघोलिर° । 8. A णिण्हंत° । 9. A °वेसे हयहत्थे । 10. B सरि ।

(11) 1. B णामि । 2. A °णिवाएं णमिय°; BP °णिवायएं णयिय°; S °णिवाउणविय° ।

कण्णाणिलचालियधरणीरुहु[3] गज्जणरवपूरियदसदिसिमुहु[4]।
मयजलमिलियघुलियमहुलिहचलु उग्गसरीरगंधगयगयउलु।
गुरुकुंभयलपिहियपिहुणहयलु णियबलतुलियदिसामयगलबलु[5]।
तं अवलोइवि वीरु ण संकिउ [6]बहिबहिसद्दें कुंजरु कोक्किउ।
जा पाहाणु ण पावइ मुक्कउ ता करिणा सो गहिउ गुरुक्कउ।
करकलियउ[7] वियलियगयदेहहु उवरि भमइ तडिदंडु व मेहहु।
वंसारुहणउं करइ सुपुत्तु व खणि करणहिं संमोहइ धुत्तु व।
खणि ससि जेंव हत्थु आसंघइ खणि विउलइं कुंभयलइं लंघइ।
खणि चउचरणंतरिहिं विणिग्गइ खणि हक्कारइ धारइ वग्गइ।
दंतणिसिक्किय मुहुं ण वियाणइ कालें अप्पाणउं संदाणइ।
जित्तउ वारणु जुवयणरिंदें[8] णं मयरद्धउ परमजिणिंदें।
घत्ता—गयवरखंधारूढु दिट्ठउ खेयरपुरिसें।
अंधकविट्ठिहि पुत्तु उच्चाएवि[9] सहरिसें[10] ॥11॥

झुका दिया था, कानों की हवा से जिसने धरती के वृक्षों को हिला दिया था, गर्जना के शब्दों से दसों दिशाओं को आपूरित कर दिया था, जो मदजल से मिश्रित भ्रमण करते हुए भ्रमरों से चंचल था, जिसके शरीर की उग्रगन्ध से गजकुल भाग गया था, जिसने विशाल गण्डस्थल से विशाल आकाश को आच्छादित कर लिया था, अपनी शक्ति से जिसने दिग्गजों के बल को तोल लिया है, ऐसे उस महागज को देखकर वह वीर बिल्कुल भी शंकित नहीं हुआ। 'बहि बहि' शब्द कहकर उस हाथी को बुलाया। जब तक वह मुक्त पाषाण नहीं छोड़ पाता, तब तक उस हाथी ने उन्हें पकड़ लिया। सूँड़ से गृहीत विगलित गजदेह पर वह ऐसे मालूम हो रहे थे, जैसे मेघों के ऊपर विद्युत्दण्ड घूम रहा हो। वह (वसुदेव) सुपुत्र की तरह वंशारोहण (पीठ के बाँस पर आरोहण, वंश की उन्नति) करता है, एक क्षण में आवर्तन-विवर्तन-प्रवेशन आदि करणों से धूर्त के समान सम्मोहित करता है। एक क्षण में चन्द्रमा के समान हस्त (हस्त नक्षत्र, सूँड का अग्रभाग) पर आश्रित होता है, क्षण में विशाल कुम्भतल का उल्लंघन करता है, एक क्षण में चारों पैरों के नीचे से निकल जाता है, एक क्षण में हुंकारता है, आक्रमण करता है और क्रुद्ध होता है। वह दाँतों में से निकलकर मुख को नहीं जान पाता। दूसरे क्षण में वह (हाथी) अपने को बन्धन में डाल लेता है। उस युवा नरेन्द्र ने गज को जीत लिया, मानो कामदेव को जिनेन्द्र ने जीत लिया हो।

घत्ता—एक विद्याधर पुरुष ने उसे हाथी की पीठ पर बैठा हुआ देखा। वह अन्धकवृष्णि के पुत्र को हर्षपूर्वक ले उड़ा।

3. B °रुह। 4. AP °दिसिवहु। 5. P गलवसु। 6. S वहे वहे। 7. A करकयलिउ; S करकलिउ। 8. S °णरेंदें। 9. H उच्चाइवि। 10. A सह हरिसें।

(12)

णहयललग्गरयणमयगोउरु णिउ वेयड्ढहु [1]बारावइपुरु।
कुलबलवंतहु [2]दइवसहायहु दरिसिउ असणिवेयखगरायहु[3]।
एंव ससामिसालु विण्णवियउ विंझगइंदु एण विद्दवियउ।
इहु[4] सो चिरु जो णाणिहिं जाणिउ इहु[5] तुह दुहियावरु मइं आणिउ।
तं णिसुणेवि असणिवेयंकें अवलोइयसुहिवयणससंकें।
पवणवेयदेवीतणुसंभव सामरि णामें सुय वीणारव।
दिण्णी तासु सुहद्दातणयहु पोढ्हु[6] पउणियपणयपसायहु।
गयबहुदियहहिं पेम्मपसत्तउ[7] सो सुहउ जामच्छइ सुत्तउ।
तावंगारयखयरें[8] जोइउ सुहि[9] सुत्तु जि भुयपंजरि ढोइउ।
भूमियरहु पब्भट्ठविवेयहु मामें णियसुय दिण्णी एयहु।
एम भणंतें णिउ णियइच्छइ सामरि सुंदरि धाइय पच्छइ।

घत्ता—असिवसुणंदयहत्थ[10] णियणाहहु कुढि लग्गी।
पडिवक्खहु अब्भिट्ट समरसएहिं अभग्गी ॥12॥

(12)

वह उसे आकाशतल को स्पर्श कर रहे रत्नमय गोपुरोंवाले, विजयार्ध की द्वारावती नगरी में ले गया। उसने कुल-बल में बलवान् दैव है सहायक जिसका, ऐसे अशनिवेग विद्याधर को उसे दिखाया और निवेदन किया, "ये मेरे स्वामिश्रेष्ठ हैं। इन्होंने विन्ध्याचल को विदीर्ण कर दिया है। यह वही प्राचीन पुरुष हैं जो ज्ञानियों द्वारा जाना गया है और जिसे मैं तुम्हारी कन्या का वर बनाने के लिए लाया हूँ।" यह सुनकर सुधीजन का मुखचन्द देखते हुए अशनिवेग विद्याधर राजा ने पवनवेगा देवी के शरीर से उत्पन्न वीणा के समान स्वरवाली उस युवती शाल्मली कन्या को, जो दिन दूनी रात चौगुनी प्रणय का प्रसाद प्रकाशित करनेवाली थी, सुभद्रापुत्र को दे दी। बहुत दिन बीतने के बाद, प्रेम में आसक्त जब वह सुन्दर सोया हुआ था तो अंगारक विद्याधर ने उसे देखा। सोते हुए उस सुधीजन को वह अपने बाहुपंजर में ढोकर 'विवेकभ्रष्ट इस भूमिचर को ससुर ने अपनी कन्या दी है', यह विचार करते हुए वह अपनी इच्छा से उसे ले गया। शाल्मली सुन्दरी उसके पीछे दौड़ी।

घत्ता—वसुनन्दक तलवार को अपने हाथ में लेकर वह अपने स्वामी के पीछे लग गयी। सैकड़ों युद्धों में अभग्न वह शत्रुपक्ष से भिड़ गयी।

(12) 1. AP दारावइ°। 2. B दइय°। 3. AP °खयरायहो। 4. B एहु जि चिरु जो; S एहु सो चिरु। 5. B एहउ दुहिया°। 6. AP पणइणिमणहरपयणियपणयहो; B पोढहु पउणियपणइपसायइ; S पोढहु पउणियपणइणिपणयहो; Als. पोढहु पयणियपणयपसायहु against his Mss. on the strength of gloss प्रजनित। 7. S °पमत्तउ। 8. A तामंगारय°; P ता अंगारय°। 9. ABPS सुहु। 10. P °हत्थु।

(13)

असिजलसलिलझलक्कयसित्तें[1] अंगारएण सुकसणियगत्तें[2]।
सोहद्देउ झड त्ति विमुक्कउ पहरणकरु[3] सइं संजुइ ढुक्कउ।
घरिणिइ[4] पइ णिवडंतु णियच्छिउ पण्णलहुयविज्जाइ [5]पडिच्छिउ।
तहिं पहरंतिहि वइरि पलाणउ सुंदरु गयणहु मयणसमाणउ।
तरुकुसुमोहदिसोहपसाहिरि णिवडिउ चंपापुरवरबाहिरि।
कीलमाण वणि मणिकंकणकर पुच्छिय तेण तेत्थु णायरणर।
ते [6]भणंति मुद्धत्तें णडियउ किं गयणंगणाउ तुहुं पडियउ।
वासुपुज्जजिणजम्मणरिद्धी[7] ण मुणहि चंपापुरि[8] सुपसिद्धी।
तं णिसुणिवि तें णयरि[9] पलोइय[10] सहमंडवबहुविउसविराइय[11]।
[12]चारुदत्तवणिवरवइतणुरुह[13] जहिं जहिं जोइज्जइ तहिं तहिं सुह[14]।
जहिं गंधव्वदत्त[15] सइं संठिय महुरवाय णावइ कलयंठिय।

घत्ता—जहिं वइसवइसुयाइ रमणकामु[16] संपत्तउ।
खेयरमहियरवंदु[17] वीणावज्जें जित्तउ ॥13॥

---

(13)

तलवार के जल की लहरों के समान सिक्तशरीर और अत्यन्त कृष्ण शरीर अंगारक ने सुभद्रा के उस पुत्र (वसुदेव) को तत्काल छोड़ दिया। गृहिणी (शाल्मली) ने पति को गिरते हुए देखा, तो (तत्काल) उसने उसे पर्णलघु विद्या प्रदान कर दी। उसके प्रहार करने पर दुश्मन भाग गया। कामदेव के समान सुन्दर वह, वृक्ष कुसुमों के समूह से शोभित दिशाओंवाले चम्पापुर नगर के बाहर गिरा। उसने वहाँ पर मणियों के कंगन हाथ में पहिने हुए और वन में क्रीड़ा करते हुए नागरिकों से पूछा। वे कहते हैं—"मुग्धता से प्रतारित तुम आकाशमार्ग से गिर पड़े हो। वासुपूज्य जिनवर के जन्म से समृद्ध इस प्रसिद्ध चम्पापुरी को तुम नहीं जानते क्या ?" यह सुनकर उसने नगरी का अवलोकन किया जो सभामण्डप और प्रचुर विद्वानों से शोभित थी। वहाँ चारुदत्त श्रेष्ठिवर की कन्या जहाँ-जहाँ देखी जाती, वहाँ-वहाँ (सर्वांग) सुन्दर थी। वहाँ पर गन्धर्वदत्ता स्वयं बैठी हुई थी और कोयल के समान मधुर वाणीवाली थी।

घत्ता—जहाँ उस वैश्यपति की कन्या के द्वारा कामभाव-प्राप्त विद्याधर राजाओं का समूह वीणावादन में जीत लिया गया था।

---

(13) 1. A °झुलुक्कय°; BPS °झलक्कए। 2. A सुकसिणिय°। 3. B पहरणकक्कसि संजुए। 4. P धरिणिए। 5. B पडिच्छउ। 6. B भणंत। 7. KS वासुपुज्ज°। 8. B चंपाउरि। 9. ABP णयरु। 10. A पलोयउ; P पलोइउ। 11. AP विराइउ। 12. B चारुदत्तु; P चारुदत्तु। 13. BP °तणुरुहु। 14. BP सुहु। 15. B गंधव्वयत्त सइ। 16. B रमणु। 17. A °विंदु; P °वेंदु।

(14)

गंपि कुमारु[1] वि तहिं जि णिविट्ठउ कण्णइ[2] [3]अणिमिसणयणइ[4] दिट्ठउ।
कम्महबाणु व हियइ पइट्ठउ विहसिवि पहिउ पहासइ तुट्ठउ।
हउं[5] मि किं पि दावमि तंतीसरु जइ वि ण चल्लइ सरठाणइं[6] करु।
ता तहु ढोइयाउ सुइलीणउ[7] पंच सत्त णव दह[8] बहु वीणउ।
ता वसुएउ[9] भणइ किं किज्जइ वल्लइदंडु[10] ण एहउ जुज्जइ।
एही तंति ण एम णिबज्झइ[11] वासुइ एहउ एत्थु विरुज्झइ।
सिरिहलु एव एउं किं थवियउं सत्थु ण केण वि मणि चिंतवियउं[12]।
लक्खणरहियउ जडमणहारिउ मेल्लिवि वीणउ णाइं[13] कुमारिउ।
अक्खइ सो तहिं तहि अक्खाणउं आलावणिकइ[14] चारु चिराणउं।

घत्ता—हत्थिणायपुरि राउ णिज्जियारि घणसंदणु।
तहु पउमावइ[15] देवि विट्ठु णाम पिउ[16] णंदणु ॥14॥

(15)

अवरु पउमरहु सुउ लहुयारउ जणणु णविवि अरहंतु भडारउ।
रिसि होएप्पिणु [1]मृगसंपुण्णहु[2] सहुं जेट्ठें सुएण गउ रण्णहु।

---

(14)

कुमार भी जाकर वहाँ बैठ गया। कन्या ने अपलक नेत्रों से उसे देखा। कामदेव का तीर उसके हृदय में चुभ गया। कुमार सन्तुष्ट होकर हँसते हुए कहता है—"मैं भी कुछ तन्त्रीस्वर का प्रदर्शन करना चाहता हूँ; यद्यपि स्वर-स्थानों पर मेरा हाथ नहीं चलता। तब कानों में लीन होनेवाली पाँच, सात, नौ और दस बहुत-सी वीणाएँ उसके सामने उपस्थित की गयीं। परन्तु वसुदेव कहता है, "क्या किया जाए ? यह वीणा उपयुक्त नहीं है। यह वीणा इस प्रकार निबद्ध नहीं की जाती, यह वासुकी (डोर) भी यहाँ पर विरुद्ध है। यह तुम्बक भी इस प्रकार क्यों रखा गया ? किसी ने भी (इसकी रचना में) शास्त्र का विचार नहीं किया। इस प्रकार लक्षणों से रहित मूर्खों का मन हरनेवाली उस सुन्दर वीणा को, कुमारी के समान छोड़कर वह कुमार वहाँ पर वीणा के लिए एक पुराना आख्यान कहता है।

घत्ता—हस्तिनागपुर में शत्रुओं को जीतनेवाला मेघरथ नाम का राजा था। उसकी पद्मावती देवी और विष्णु नाम का पुत्र था।

(15)

एक और उसका पद्मरथ नाम का छोटा पुत्र था। पिता आदरणीय अरहन्त को नमस्कार कर और मुनि होकर अपने बड़े पुत्र के साथ, पशुओं से व्याप्त वन में चला गया। पिता को अवधिज्ञान उत्पन्न हो गया

---

(14) 1. B कुमार। 2. AP कंतइ। 3. PS अगनिल°। 4. S °णयणहिं। 5. BP हउं मि; S हउ वि। 6. A सरठाणहु। 7. A सरलीणउ। 8. A दहमुहवीणउ। 9. S वसुएवु। 10. AP वीणादंडु। 11. A णिबज्झइ। 12. P चित्तवियउ। 13. A तासु कुमारिउ। 14. A °कउ। 15. S पोमावइ। 16. A पियणंदणु।

(15) 1. ABP मिग°। 2. APS °परिपुण्णहो; B °संपुण्णहो।

ओहिणाणु[3] तायहु उप्पण्णउं दिट्ठउं जगु बहुभावभिइण्णउं[4]।
एत्तहि गयउरि पयपोमाइउ करइ रज्जु पउमरहु[5] महाइउ।
ता सो पच्चंतेहिं णिरुद्धउ तहु बलि णाम मंति [6]पविबुद्धउ।
तेण गुरु वि ओहामिउ[7] सक्कहु बुद्धिइ माणु मलिउ [8]परचक्कहु।
संतूसिवि[9] रोमंचियकाएं मग्गि मग्गि वरु बोल्लिउ राएं।
मंतिं तुमइ तुट्ठि करेज्जसु कहिं मि कालि महुं मग्गिउं देज्जसु।
कालें जंतें मारणकामें आयउ सूरि [10]अकंपण णामें।
सहुं रिसिसंघें जिणवरमग्गें [11]पुरबाहिरि थिउ [12]काओसग्गें।

घत्ता—बलिणा मुणिवरु दिट्ठु सुयरिउं अवमाणेप्पिणु।
इह एएं हउं आसि चित्तु[13] विवाइ जिणेप्पिणु ॥15॥

(16)

अवयारहु अवयारु रइज्जइ उवयारहु उवयारु जि[1] किज्जइ।
खलहु खलत्तणु सुहिहि सुहित्तणु[2] जो ण करइ सो णियमिवि णियमणु।
तावसरूवें[3] णिवसउ णिज्जणि हउं पुणु [4]अज्जु [5]खवमि किं दुज्जणि।
एंव भणेप्पिणु [6]गउ सो तेत्तहिं अच्छइ णिवइ णिहेलणि जेत्तहिं।

और उसने नानाभेदों से भिन्न संसार को देख लिया। गजपुर (हस्तिनापुर) में प्रजा के द्वारा प्रशंसित वह महाऋद्धियाला पद्मरथ राज्य करने लगा। शत्रुओं के द्वारा उसे घेर लिया गया। उसका बलि नाम का अत्यन्त प्रबुद्ध मन्त्री था। उसने इन्द्र के भी गुरु अर्थात् बृहस्पति को तिरस्कृत कर दिया था। उसने अपनी बुद्धि से शत्रु का मान-मर्दन कर दिया। इससे सन्तुष्ट होकर रोमांचित शरीरवाले राजा ने कहा—'वर माँग लो, वर माँग लो।' तब मन्त्री ने कहा—अभी सन्तुष्टि करना, किसी समय जब मैं माँगूँ तब देना। समय बीतने पर कामदेव को पराजित करनेवाले अकम्पन नाम के आचार्य अपने मुनिसंघ के साथ आये। जिनवर के मार्ग से आकर वे नगर के बाहर कायोत्सर्ग से स्थित हो गये।

घत्ता—मन्त्री बलि ने मुनिवर को देखा। उसने पिछले अपमान की याद की कि इसने यहाँ विवाद में जीतकर मुझे छोड़ दिया था।

(16)

'अपकारी के साथ अपकार करना चाहिए और उपकारी के साथ उपकार किया जाए। दुष्ट के साथ दुष्टता और सज्जन के साथ जो सज्जनता नहीं करता, वह अपने मन को नियमन कर तपस्वी होकर निर्जन वन में रहे। आज मैं दुर्जन को क्यों क्षमा करूँ ?' यह सोचकर, वह वहाँ गया जहाँ राजा अपने राजप्रासाद

3. A अवहिणाणु। 4. A भावहिं भिण्णउं; Als भावविहिण्णउं। 5. S परमरहु। 6. S पविद्धउ। 7. P ओहामिय। 8. S परचक्कहो। 9. P संतोसिवि। 10. APS अकंपणु। 11. B पुरि। 12. P कायोसग्गें। 13. B चेत्तु।

(16) 1. AP वि। 2. P सुहत्तणु। 3. S °रूएं। 4. S उज्जमु खवमि ण दुज्जणु। 5. B खमिमि अज्जु। 6. S सो गउ।

भणिउ णवंतें पइं पडिवण्णउं [7]आसि कालि जं पइं वरु दिण्णउ।
जं तं देहि अज्जु मइं मग्गिउं जइ जाणहि पत्थिव ओलग्गिउं।
ता राएण वुत्तु ण वियप्पमि जं तुहुं इच्छहि तं जि समप्पमि।
पडिभासइ बंभणु असमत्तणु सत्त दिणाइं देहि रायत्तणु[8]।
दिण्णउं पत्थिवेण तें लइयउं रोसें सव्वु अंगु पच्छइयउं[9]।
साहुसंघु पाविट्ठें रुद्धउ [10]मृगवहु महु चउदिसु पारद्धउ।
सोत्तिएहिं सोमंबु[11] रसिज्जइ सामवेय[12] सुइसुमहुरु[13] गिज्जइ।
भक्खिवि जंगलु अट्ठुवियड्डइं उप्परि रिसिहिं णिहित्तइं हड्डइं।

घत्ता—भोज्जसुरायसमूहु जं केण वि ण वि छित्तउ[14]।
तं सवणहं सीसग्गि जणउच्छिट्ठउं घित्तउं ॥16॥

(17)

सोत्तइं पूरियाइं सुहवारें[1] बहलयरेण धूमपब्भारें।
अणुदिणु [2]पयडियभीसणवसणहं तो वि धीर रूसंति ण पिसुणहं।
तहिं अवसरि दुक्कियपरिचत्ता[3] जणण[4] तणय ते जहिं[5] तवतत्ता।
णिसि णिवसंति महीहरकंदरि भीरुभयंकरि सुयकेसरिसरि।

में था। नमस्कार करते हुए वह बोला—"जो तुम्हारे द्वारा स्वीकृत और दिया हुआ वर है वह आज मुझे दो, मैं माँगता हूँ; हे राजन् ! यदि यह जानते हो कि मैंने सेवा की थी।" तब राजा बोला, "मैं कोई विचार नहीं करता, जो तुम चाहते हो वह मैं तुम्हें सौंपता हूँ।" तब वह मिथ्यादृष्टि ब्राह्मण कहता है—"सात दिन के लिए मुझे राज्य दे दो।" राजा ने राज्य दे दिया। उसने राज्य ले लिया। क्रोध से उसका (विप्र का) सारा शरीर आच्छादित हो गया। उस दुष्ट ने साधुसंघ को अवरुद्ध कर दिया और उसने चारों दिशाओं में पशुवधवाला यज्ञ प्रारम्भ करवा दिया। ब्राह्मणों के द्वारा सोमजल पिया जाये, और श्रुतिमधुर सामवेद गाया जाये, और माँस खाकर टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियाँ मुनियों के ऊपर फेंक दी गयीं।

घत्ता—जिस भोजन और सुरा समूह को किसी ने भी नहीं छुआ, लोगों की वह जूठन मुनियों के सिरों पर फेंक दी गयी।

(17)

कष्टप्रद प्रचुरतर धूम के समूह से उनके कान भर गये। प्रतिदिन भयंकरतम कष्ट पहुँचानेवाले उन दुष्टों पर वे धीर मुनि क्रुद्ध नहीं हुए। उस अवसर पर पापों से मुक्त वे दोनों पिता-पुत्र जहाँ तप कर रहे थे और एक रात, जिसमें सिंह की दहाड़ सुनायी दे रही थी, ऐसी भयंकर पहाड़ी गुफा में निवास करते हुए

7. A adds after 5 b तुट्ठिदाणु आणंदपवण्णउं; S reads for 5 b तुट्ठिदाणु आणंदपउण्णउं। 8. B रायत्तणु। 9. ABPS पच्छइयउं। 10. AP मिगवहु। 11. A सोमंधु। 12. APS सामवेउ। 13. A सुइमहुरउ; B सुइमहुरें। 14. Als. विछित्तउ।

(17) 1. A सुहवारिं। 2. B पीडिय°। 3. B दुक्किय°। 4. P जणय। 5. A जिनहिं तवतत्ता; S जहिं ते।

तेहिं बिहिं मि तहिं णहि पयहंतउं सवणरिक्खु दिट्ठउं कंपंतउं।
तं तेवड्डु चोज्जु जोएप्पिणु भणइ विट्ठु पणिवाउ करेप्पिणु।
किं णक्खत्तु भडारा कंपइ तं णिसुणेवि जणणमुणि[6] जंपइ।
गयउरि बलिणा मुणि उवसग्गें संताविय पावें भयभग्गें[7]।
सज्जणघट्टणु सव्वहु[8] भारिउं तेण रिक्खु थरहरइ णिरारिउं।
पुच्छइ पुणु वि सीसु खमवंतहं णासइ केंव उवद्दउ संतहं।

घत्ता—घणरहरिसिणा उत्तु तुम्ह विउव्वणरिद्धिइ।
णासइ रिसिउवसग्गु भवसंसारु व सिद्धिइ ॥17॥

(18)

[1]खलजणवयअच्चब्भुवभूवें[2] छिद्दहिं[3] जाइवि वावणरूवें[4]।
णिलयणिवासु[5] णिरग्गलु मग्गहि पच्छइ पुणु गयणंगणि लग्गहि।
तं णिसुणेप्पिणु लहु णिग्गउ मुणि रिय पढंतु कियओंकारज्झुणि[6]।
भिसियकमंडलु[7] सियछत्तियधरु दब्भदंडमणिवलयंकियकरु।
मिट्ठवाणि उववीयविहूसणु देसिउ कासायंबरणिवसणु।
सो णवणरणाहेण णियच्छिउ भणु भणु तुह[8] किं दिज्जउ[9] पुच्छिउ।

उन दोनों ने आकाश में श्रवण नक्षत्र को जाते हुए और काँपते हुए देखा। वह उतना बड़ा आश्चर्य देखकर, विष्णु (पुत्र) प्रणाम करके पूछते हैं—"हे आदरणीय नक्षत्र क्यों काँप रहा है ?" यह सुनकार पिता मुनि से कहते हैं कि हस्तिनागपुर में पापी और भय से त्रस्त बलि ने उपसर्ग के द्वारा मुनि को सताया है। सज्जन को सताना सबसे बड़ा पाप है, इसीलिए वह नक्षत्र अत्यन्त थर-थर काँप रहा है।" तब शिष्य फिर क्षमावान् सन्त से पूछता है कि यह उपद्रव किस प्रकार शान्त हो सकता है ?

घत्ता—मुनि बोले—"तुम अपनी विक्रिया ऋद्धि से मुनि का उपसर्ग उसी प्रकार नष्ट कर दो, जिस प्रकार सिद्धि से भव-संसार नष्ट हो जाता है।

(18)

तब छल से, दुष्टजनों को आश्चर्य में डालनेवाला वामनरूप बनाकर तुम प्रतिबन्ध रहित रहने का घर माँगो, बाद में फिर तुम आकाश के आँगन से जा लगना।" यह सुनकर मुनि विष्णु तत्काल वहाँ से निकले—ऋचाएँ पढ़ते, ओंकार ध्वनि करते हुए, आसन और कमण्डलु लिये हुए, सफेद छतरी लगाये हुए, दूब और जपमाला से हाथ को अलंकृत कर, मीठी वाणी बोलते हुए, यज्ञोपवीत से विभूषित, गेरुए रंग का वस्त्र पहिने हुए, उपदेशक के रूप में। उसे राजा ने देखा और पूछा—"बताओ तुम्हें क्या दूँ ? क्या घोड़ा, क्या हाथी,

---

6. AP जण्णु मुणि। 7. A हयभग्गें। 8. B सव्वउ।

(18) 1. A खलु। 2. P अच्चब्भुयभूयं। 3. B छिंदहि। 4. BS वामण°। 5. AP °णिवेसु। 6. A ओंकारयज्झुणि। 7. P सिसिय°। 8. B किं तुह। 9. P दिज्जइ।

किं हय गय रह किं जंपाणइं किं धयछत्तइं दव्वणिहाणइं।
कवडविप्पु भासइ महिसामिहि णिव कम तिण्णि देहि[10] महु भूमिहि।
तं णिसुणिवि बलिणा सिरु धुणियउं हा हे दियवर किं पइं भणियउं।
वाय तुहारी दहवें भग्गी लइ धरित्ति [11]मढथिंतिहि जोग्गी।

घत्ता—ता विट्ठुहि वड्ढंतु लग्गउं अंगु णहंतरि ॥
णिहियउ मंदरि[12] पाउ एक्कु बीउ मणुउत्तरि[13] ॥18॥

(19)

तइयउ कमु उक्खित्तु[1] जि अच्छइ कहिं दिज्जउ तहिं[2] थत्ति ण पेच्छइ।
सो विज्जाहरतियसहिं अंचिउ पियवयणेहिं कह व आउंचिउ।
ताव तेत्थु घोसावइवीणइ देवहिं दिण्णइ मलपरिहीणइ।
गरुयारउ णियभाइ[3] सहोयरु तोसिउ पोमरहें जोईसरु।
मारहुं आढत्तउ दियकिंकरु विण्हुकुमारु अभयंकरु।
अच्छउ जियउ वराउ म मारहि रोसु म हियउल्लइ वित्थारहि।
रोसें चंडालत्तणु किज्जइ रोसें [4]णरयविवरि पइसिज्जइ।
एण[5] जि कारणेण हयदुम्मइ कयदोसहं मि खमंति महामइ[6]।

क्या पालकी, क्या ध्वजछत्र, क्या द्रव्य-कोष ?" तब कपटी ब्राह्मण कहता है—"हे पृथ्वीस्वामी नृप, मुझे तीन पैर धरती दीजिए।" यह सुनकर राजा बलि ने अपना माथा ठोका कि हे द्विजवर ! तुमने यह क्या कहा ? तुम्हारी वाणी को दैव ने नष्ट कर दिया है, इतनी धरती तो लो जिसमें एक मठ बन सके।

घत्ता--तब विष्णु का बढ़ता हुआ शरीर आकाश से जा लगा, एक पैर उसने राजा के घर पर रखा और दूसरा मानुपोत्तर पर्वत पर।

(19)

तीसरा पैर उठा हुआ रह गया, कहाँ रखा जाय, कोई स्थान दिखाई नहीं देता था। तब विद्याधरों और देवों ने उसकी पूजा की, और प्रियवचनों से किसी प्रकार संकुचित कराया। देवों ने उस अवसर पर मल से रहित घोषावती वीणा दी। पद्मरथ ने अपने सगे बड़े भाई योगीश्वर को सन्तुष्ट किया। उसने द्विज-अनुचर (मन्त्री) को मारना शुरू किया, परन्तु अभयंकर विष्णुकुमार उसे क्षमा कर देते हैं कि वह जीवित रहे। उस बेचारे को मत मारो। अपने हृदय में क्रोध धारण मत करो। क्रोध से चाण्डालत्व होता है, क्रोध से नरक विवर में प्रवेश किया जाता है। इसी कारण से दुर्गति को नष्ट करनेवाले महामति दोष करनेवालों को भी क्षमा कर देते हैं।

---

10. A देहु महु। 11. A मढलत्तिहि; S मढथत्तिहि। 12. A मंदिरि। 13. B मणउत्तरि।

(19) 1. BK उक्खेत्तु। 2. BP Als. तहो थत्ति। 3. S °भायसहो°। 4. APS रोसें सत्तममहि पाविज्जइ। 5. A एण वि। 6. AP महाजइ।

घत्ता—एम भणेप्पिणु जेट्ठु[7] गउ गिरिकुहरणिवासहु।
मुणिवरसंघु असेसु मुक्कउ दुक्खकिलेसहु ॥19॥

(20)

अज्ज वि वीण तेत्थु सा अच्छइ जइ महु आणिवि को[1] वि पयच्छइ।
तो गंधव्वदत्त किं वायइ महुं अग्गइ पर वयणु णिवावइ।
वणिणा तं[2] णिसुणिवि विहसंतें[3] पेसिय णियपाइक्क तुरंतें।
गय गयउरु वल्लइ[4] पणवेप्पिणु [5]मग्गिय तव्वंसिय मणु लेप्पिणु।
वियलियदुम्मयपंकविलेवहु[6] आणिवि[7] ढोइय करि वसुएवहु।
सा[8] कुमारकरताडिय वज्जइ[9] सुइभेयहिं बावीसहिं छज्जइ[10]।
सत्तहिं वरसरेहिं तिहिं[11] गामहिं अट्ठारहजाइहिं सुहधामहिं।
अंसहं[12] सउ [13]चालीसेक्कोत्तरु गीइउ[14] पंच वि पयडइ सुंदरु।
तीस वि गामराय रइआसउ[15] चालीस वि भासउ छ विहासउ[16]।
एक्कवीस मुच्छणउ[17] समाणइ एक्कूणइं[18] पण्णासइं ताणइं।
घत्ता—तहु वायंतहु एंव वीणा[19] सुइसरजोग्गउ।
णं वम्महसरु तिक्खु मुद्धहि हियवइ लग्गउ ॥20॥

घत्ता—यह कहकर बड़े भाई (विष्णु) पहाड़ी गुफा के निवास में चले गये। समस्त मुनिसंघ दुःख-कष्ट से मुक्त हो गया।

(20)

परन्तु वह वीणा आज भी वहाँ है, यदि कोई उसे लाकर मुझे दे दे, तो गन्धर्वदत्ता क्या बजाती है, मेरे आगे उसका मुख मैला हो जाएगा। यह सुनकर सेठ ने हँसते हुए, अपने अनुचर शीघ्र भेजे। हस्तिनापुर जाकर, राजा को प्रणाम कर, उसके कुटुम्ब के लोगों का मन लेकर वीणा माँगी। और लाकर, दुर्मद की कीचड़ को धोनेवाले वसुदेव के हाथ में वह दे दी। कुमार के हाथों से प्रताड़ित होकर वीणा बजती है, और बाईस ही स्वरभेदों से सज्जित हो उठती है। श्रेष्ठ स्वरों, तीन ग्रामों, शुभधाम अठारह जातियों, एक सौ इकतालीस अंशों, पाँच गीतों, पाँच प्रकृतियों, रति के आश्रय तीस ग्रामराग, चालीस भाषाएँ, छह विभाषाएँ, इक्कीस मूर्च्छनाएँ और उनचास समान तानें।

घत्ता—इस प्रकार उसके श्रुतियों और स्वरों के योग्य, वीणा बजाने पर, कामदेव का तीर उस मुग्धा के हृदय में जा लगा।

---

7. AP जिट्ठु।

(20) 1. S का वि। 2. B तं सुणिवि वियसंतें। 3. A पहसंतें। 4. A वीणा पण°। 5. A मग्गिय तक्खणि वीण लएप्पिणु; S मणुणेप्पिणु; Als. तव्वंसियमणुणेप्पिणु (तव्वंसिय+मृ+अणुणेप्पिणु)। 6. P °दुम्मइ°। 7. A आणिय। 8. S सो। 9. AP छज्जइ। 10. AP वज्जइ। 11. AP तिहिं गामहिं; S बहुगामहिं। 12. S अंसहिं। 13. A चालीसेकुत्तरु; B चालीसिक्कुत्तरु; S चालीसेक्कोत्तरु। 14. A गीउ पंचविहु। 15. S रइयासव। 16. S विहासव। 17. P मुच्छणाइं। 18. A एक्कूणइ पण्णास जि; B एक्कूण वि पण्णासइं। 19. AP als. वीणासरु सुइ°।

(21)

णयणइं णाहहु उप्परि घुलियइं अट्ठंगइं वेवंतइं वलियइं[1]।
तंतीरवतोसियगिव्वाणहु घित्त सयंवरमाल जुवाणहु।
संथुउ तरुणु सुरिंदें ससुरें विहिउ विवाहमहुच्छउ[2] ससुरें।
पुणरवि सो विज्जाहरदिण्णहं सत्तसयइं परिणेप्पिणु कण्णहं।
मणहरलक्खणचच्चियगत्तउ कालें रिट्ठणयरु[3] संपत्तउ।
राउ हिरण्णवम्मु तहिं सुम्मइ जासु रज्जि णउ कासु वि दुम्मइ।
तासु कंत णामें पोमावइ परहुयसद्द बालपाउलगइ[4]।
रोहिणि पुत्ति जुत्ति णं मयणहु किं वण्णमि भल्लारी भुयणहु[5]।
ताहि सयंवरि मिलिय णरेसर तेयवंत णावइ ससिणेसर।
ते [6]जरसंधपमुह अवलोइय कण्णइ माल ण कासु वि ढोइय।
तहिं मि तेण वणगयपडिमल्लें जिणिवि[7] कण्ण सकलाकोसल्लें।
माल पडिच्छिय [8]उट्ठिउ कलयलु संणद्धउं सयलु वि पत्थिवबलु।
जरसिंधहु[9] आणइ[10] कयविग्गह धाइय जादव[11] कउरव मागह।
तेहिं हिरण्णवम्मु संभासिउ पइं गउरविउ काइं किर देसिउ।
मालइमाल ण कइगलि बज्झइ जाव ण अज्ज वि राउ विरुज्झइ।

(21)

उसके नेत्र स्वामी के ऊपर व्याप्त हो गये। उसके आठों अंग काँपते हुए मुड़ गये। अपने वीणा-स्वर से देवों को सन्तुष्ट करनेवाले युवक के ऊपर उसने स्वयंवर माला डाल दी। इन्द्र ने देवों के साथ उसकी प्रशंसा की। ससुर ने विवाह का महोत्सव किया। फिर भी, उसने विद्याधरों के द्वारा दी गयीं सात सौ कन्याओं के साथ विवाह किया और सुन्दर लक्षणों से अलंकृत शरीरवाला वह कुछ समय के बाद रिष्टनगर पहुँचा। वहाँ अच्छी बुद्धिवाला राजा हिरण्यवर्मा था। उसके राज्य में कोई भी दुर्गति में नहीं था। उसकी पत्नी का नाम पद्मावती था। वह कोयल के समान बोलीवाली और हंस के समान चालवाली थी। उसकी रोहिणी नाम की पुत्री थी, जो मानो कामदेव की युक्ति थी। भुवन में श्रेष्ठ उसका क्या वर्णन करूँ ? उसके स्वयंवर में सूर्य-चन्द्र के समान तेजवाले अनेक राजा सम्मिलित हुए। उसने जरासन्ध प्रमुख राजाओं को देखा; परन्तु उसने किसी को स्वयंवरमाला नहीं डाली। वहाँ पर उस वनगज के प्रतिमल्ल वसुदेव ने अपने कला-कौशल से कन्या को जीतकर माला स्वीकार कर ली। तब समस्त राजसेना समृद्ध हो उठी। जरासन्ध की आज्ञा से युद्ध करनेवाले समस्त कौरव, मागध और यादव दौड़े। उन्होंने हिरण्यवर्मा से कहा—"तुमने इस राहगीर को इतना गौरव क्यों दिया ? मालतीमाला बन्दर के गले में नहीं बाँधी जाती, इसलिए जब तक कोई दूसरा राजा क्रुद्ध नहीं होता,

(21) 1. AP चलियइं। 2. P °महोच्छउ। 3. A °णयरि। 4. A °पडलगइ। 5. A भुयणहो; S सुयणहो। 6. B जरसंध°; K जरसंधु° S जरसिंधु°। 7. S जिणवि। 8. S उट्ठिय। 9. B जरसंधहो; S जरसिंधहो। 10. A आणय। 11. APS जायव।

घत्ता—ता पेसहि लहु[12] धूय मा संधहि धणुगुणि सरु ॥
वढ[13] जरसंधिं विरुद्धें ध्रुवु पावहि वइवसपुरु ॥21॥

(22)

तं णिसुणेप्पिणु[1] सो पडिजंपइ भडबोक्कहं वर वीरु[2] ण कंपइ।
जो महुं पुत्तिहि चित्तहु रुच्चइ सो सूहउ[3] किं देसिउ वुच्चइ।
पहु तुम्हहं वि धिट्ठ परयारिय अज्ज ण जाह[4] समरि अवियारिय।
ता तहिं[5] लग्गइं रोहिणिलुद्धइं[6] महिवइसेण्णइं सहसा कुद्धइं।
थिय जोयंति[7] देव गयणंगणि अण्णहु अण्णु भिडिउ[8] समरंगणि[9]।
कंचणविरइइ रहवरि चडियउ णववरु णियभाइहिं अब्भिडियउ।
विंधंतें[10] सहस त्ति परिक्खिउ तेण समुद्दविजउ ओलक्खिउ।
जे सर घल्लइ ते सो छिंदइ अप्पुणु[11] तासु ण उरयलु भिंदइ।
बंधउ जगि ण होइ णिव्वच्छलु सुइरु णिहालवि जउवइभुयबलु[12]।
दिव्वपत्तिपत्तेहिं विहूसिउ णियणामंकु बाणु पुणु पेसिउ।
पडिउ पयंतरि सउरीणाहें उच्चाइउ अरिमयउलवाहें[14]।
अक्खराइं वाइयइं सुसत्तें [15]वियलियबाहजलोल्लियणेत्तें[16]।

घत्ता—तब तक शीघ्र ही कन्या भेज दो, और धनुष की डोरी पर तीर मत चढ़ाओ। हे मूर्ख ! जरासन्ध के क्रुद्ध होने पर तुम निश्चय से यमपुर प्राप्त करोगे।"

(22)

यह सुनकर वह कहता है—"योद्धा रूपी बकरों से श्रेष्ठवीर नहीं डरते। जो मेरी पुत्री के मन को अच्छा लगा वही सुन्दर, तुम उसे देशी क्यों कहते हो ? तुम लोग और तुम्हारा राजा भी परदारिक (दूसरे की स्त्री का लालची) है जो आज भी युद्ध में अविचारशील है।" तब वहीं पर रोहिणी की लोभी राजा की सेनाएँ पीछे लग गयीं और क्रुद्ध हो उठीं। देव आकाश के आँगन में स्थित होकर देखने लगे। समरांगण में वे एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ने लगे। नया वर भी स्वर्णनिर्मित श्रेष्ठ रथ पर चढ़कर अपने भाइयों से भिड़ गया। तीर से भेदते हुए उसने शीघ्र परीक्षा कर ली। उसने समुद्रविजय को पहचान लिया। वह जो तीर छोड़ता, उन्हें वह काट देता, और स्वयं उसके वक्षःस्थल का भेदन नहीं करता। विश्व में भाई वत्सलता से रहित नहीं हो सकता। बहुत समय यदुपति के भुजबल को देखकर, उसने फिर दिव्य पंक्ति पत्रों से विभूषित तथा अपने नाम से अंकित बाण भेजा। पैरों के बीच में पड़े हुए उस पत्र को शत्रु रूपी मृगकुल के शिकारी शौरीनाथ समुद्रविजय ने उठाया, सत्त्व और साहस के साथ, आँखों से हर्षाश्रु बहाते हुए, उसके अक्षर पढ़े—लोगों के अनुरोध पर

12. BS तहो धूय। 13. BK वड्ढ।

(22) 1. PS णिसुणेवि सो वि। 2. A धरवीरु; BPS वरवीरु। 3. S सूहवु। 4. P जाहु। 5. P तहो। 6. S रोहिणि°; K रोहिणि° in second hand. 7. B जोयंत; S जोयंत। 8. AP लग्गु। 9. S समरंगणि। 10. B विद्धंतें; P विंधंतें। 11. APS अप्पणु। 12. B जोवइभुय°; P जोयइ। 13. B Als. दिव्वपक्खि°; P दिव्वपंति°। 14. B °मियउल°। 15. B °वाहजोल्लिय°। 16. A °पत्तें।

जगउवरोहें पइं घरि धरियउ जो चिरु विहिवसेण णीसरियउ।

घत्ता—संवच्छरसइ पुण्णि आउ एउ[17] समरंगणु ॥

हउं वसुएवकुमारु देव देहि आलिंगणु ॥22॥

(23)

जइ वि [1]सुवंसु गुणेण विराइउ कोडीसरु णियमुट्ठिहि माइउ।

आवइकाले[2] जइ[3] वि ण भज्जइ जइ वि सुहडसंघट्टणि गज्जइ।

भायरु पेक्खिवि पिसुणु व वंकउं तो वि तेण बाणासणु मुक्कउं।

णरवइ रहवराउ उत्तिण्णउ कुंअरु[4] वि संमुहु लहु अवइण्णउ।

एक्कमेक्क आलिंगिउ बाहहिं पसरियकरहिं णाइं[5] करिणाहहिं।

भाय[6] महंतु णविउ वसुएवें जंपिउ पहुणा महुरालावें।

हउं पइं भायर संगरि णिज्जिउ बंधु भणंतु ससूअहु[7] लज्जिउ।

अण्णहु चावसिक्ख [8]कहु एही पइं अब्भसिय धुरंधर जेही।

पइं हरिवंसु बप्प उद्दीविउ तुहुं महु धम्मफलें[9] मेलाविउ।

अज्ज[10] मज्झ परिपुण्ण मणोरह गय णियपुरवरु दस वि दसारह।

खेयरमहियरणारिहिं माणिउ थिउ वसुएवु[11] रायसंमाणिउ।

तुमने जिसे घर में रखा, वह बहुत पहले, भाग्य के वश से निकल गया।

घत्ता—सौ वर्ष पूरे होने पर, इस समरांगण में आया हुआ मैं वसुकुमार हूँ। हे देव ! आलिंगन दीजिए।

(23)

यद्यपि उसका धनुष सुवंश (अच्छे बाँस, अच्छे वंश) का था, और गुण से (डोरी, गुण) से शोभित था, फिर भी वह मुट्ठी में समा गया। यद्यपि वह आपत्तिकाल में नष्ट नहीं होता, तथापि सुभटों की लड़ाई में गरजता है, फिर भी भाई को देखकर वह दुष्ट की तरह टेढ़ा होता है, तब भी उसने (समुद्रविजय ने) धनुष छोड़ दिया। राजा श्रेष्ठ रथ से उतर पड़ा। कुमार भी शीघ्र आकर सामने उपस्थित हुआ। बाँहों से एक-दूसरे को आलिंगन किया, मानो सूँड फैलाए हुए महागजवर हों। वसुदेव ने अपने बड़े भाई को नमस्कार किया। मधुर आलाप में राजा ने उससे कहा—"हे भाई ! युद्ध में मैं तुम्हारे द्वारा जीत लिया गया। तुम्हें अपने सारथि के निकट (सम्मुख) भाई कहते हुए लज्जित हूँ। तुमने धनुर्विद्या का जैसा धुरन्धर अभ्यास किया है, वैसी धनुर्विद्या दूसरे की कहाँ है ? हे सुभट ! तुमने हरिवंश को उजागर किया है, धर्म के फल से ही तुम्हारा मुझसे मेल हुआ है। आज मेरे मनोरथ पूर्ण हुए। समुद्रविजय आदि दसों भाई अपने पुरवर चले गये। विद्याधरों और मनुष्यों की नारियों के द्वारा मान्य और राजा के द्वारा सम्मानित वसुदेव स्थित हो गया। शंख

---

17. P एव।

(23) 1. B सुवंस। 2. APS °कालए। 3. S जं पि। 4. P कुमरु; S कुंवरु। 5. B णामिं। 6. APS भाइ। 7. A सभूयहं। 8. B कहिं; P कहं। 9. AP पुण्णफलें। 10. BP अज्जु मज्झु। 11. B वसुएवराउ।

संतु णामें रिसि जो सो ससिमुहु महसुक्कामरु रोहिणितणुरुहु।

घत्ता—भरहखेत्तनृवपुज्जु[12] णवमु सीरि उप्पण्णउ।
पुप्फदंततेयाउ तेण तेउ पडिवण्णउं ॥23॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे खेयरभूगोयरकुमारीलंभो[13] समुद्दविजय-वसुएवसंगमो[14] णाम तेयासीतिमो[15] परिच्छेउ समत्तो ॥83॥

नाम का जो महाऋषि था, वह महाशुक्र स्वर्ग का चन्द्रमुख देव होकर रोहिणी का पुत्र हुआ।

घत्ता—फिर भरतक्षेत्र के राजाओं में पूज्य नौवें बलभद्र के रूप में उत्पन्न हुआ। उसने नक्षत्रों के तेज से भी अधिक तेज स्वीकार किया।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणों और अलंकारों से सहित महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का तेरासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

12. A P °खेत्ति णिव° । 13. S खयर° । 14. A °वसुदेवसंगमो बलदेवउप्पत्ती । 15. P तेयासीमो; S तीयासीतिमो ।

चउरासीतिमो संधि

[1]गयेंणिंदें भणिउं रिसिंदें सोत्तसुहाइं जणेरी।
सुणि सेणिय जिह जिणजाणिय तिह कह कंसहु[2] केरी॥ ध्रुवकं॥

(1)

धावंतमहंततरंगरंगि[3] गंगागंधावइसरिपसंगि।[4]
[5]पप्फुलियफुल्लवेइल्लवेल्लि[6] कउसिय णामें तावसहं पल्लि।
तहिं तवसि[7] विसिट्ठु बसिट्ठु णामु पंचग्गि सहइ णिट्ठवियकामु।
मुणि भद्दवीरगुणवीरसण्ण अण्णहिं दिणि आया समियसण्ण।
बोल्लाविउ तावसु तेहिं एव अण्णाणें अप्पउ खवहि केंव।
[8]तवहुयवहजालउ[9] वित्थरंति किमिकीडय महिणीडय मरंति।
विणु जीवदयाइ ण अत्थि धम्मु धम्में विणु कहिं किर सुकिउ कम्मु।
विणु सुकिकएण कहिं सग्गगमणु किं करहि णिरत्थउं देहदमणु।
पडिबुद्धु तेण वयणेण सो वि णिग्गंथु जाउ जिणदिक्ख लेवि।
मुणिवरचरियइं तिव्वइं चरंतु आइउ महुरहि[10] महि परिभमंतु।

चौरासीवीं सन्धि

अनिन्द्य मुनीन्द्र गौतम गणधर ने कहा—हे राजा श्रेणिक ! जिस प्रकार जिन भगवान के द्वारा ज्ञात है उस प्रकार तुम कानों को सुख देनेवाली कंस की कथा सुनो।

(1)

दौड़ती हुई बड़ी-बड़ी लहरों की क्रीड़ा से युक्त गंगा और गन्धावती नदियों के संगम के किनारे खिले हुए फूलोंवाले वृक्ष और लताओं से युक्त, तपस्वियों का कौशिक नाम का गाँव था। उसमें विशिष्ट वशिष्ठ तपस्वी रहता था। काम को जिसने नष्ट कर दिया है, ऐसा वह पंचाग्नि तप तपता था। दूसरे दिन इन्द्रिय चेतना को शान्त करनेवाले भद्रवीर और गुणवीर नाम के दो मुनि वहाँ आये। उन्होंने तापस से इस प्रकार कहा—अज्ञान से अपने को क्यों नष्ट करते हो ? आग की ज्वालाएँ फैलती हैं तो धरती के घोंसलों में कृमि और कीड़े मरते हैं। जीव-दया के बिना धर्म नहीं होता और धर्म के बिना पुण्य कर्म कैसे हो सकता है और पुण्य कर्म के बिना स्वर्ग-गमन कैसे ? इसलिए तुम व्यर्थ देह का दमन क्यों करते हो ? इस वचन से उस तपस्वी का विवेक जाग्रत हो गया और जैन-दीक्षा लेकर वह दिगम्बर मुनि हो गया। मुनिवर के तीव्र

---

(1) 1. S गयणेंदें। 2. B कंसह। 3. AP °तरंगभंगि। 4. AB °सरिसुसंगे; P °सरिससंगे। 5. B पप्फुल्लफु°। 6. AB °वल्लि। 7. A तवसिट्ठु वसिट्ठु; B वसिट्ठु विसिट्ठु। 8. A °णवहुय°। 9. AP जाला; B जालई। 10. B महुरह।

उववासु करइ सो मासु मासु देहंति[11] ण दीसइ रुहिरु मासु।
गिरिवरि [12]चरंतु अच्चंतणिट्ठु रिसि उग्गसेणराएण दिट्ठु।
तें भत्तिइ बोल्लिउ णिरु णिरीहु लब्भइ कहिं एहउ सवणसीहु।
घत्ता—ओसारिउ णयरु णिवारिउ मा परु करउ पलोयणु।
सविवेयहु साहुहु एयहु हउं जि करेसमि भोयणु ॥1॥

(2)

जोयंतहु भिक्खुहि पिंडमग्गु[1] [2]पहिलारइ मासि हुयासु लग्गु।
मयगिल्लगंडु[3] हिंडियदुरेहु बीयइ कुंजरु णं कालमेहु।
भिंदइ दंतहिं [4]णिवभिच्चदेहु तइयइ आइउ[5] णरणाहलेहु।
पहु भंतउ कज्जपरंपराइ हियउल्लउं ण गयउं णिहयराइ।
तहु तिण्णि मास गय एम जाम केण वि पुरसेण पउत्तु[6] ताम।
परु वारइ सइं णाहारु देइ एहउ वि केम भण्णइ विवेइ।
भुंजाविउ भुक्खइ दुक्खु तिक्खु हा हा राएं मारियउ भिक्खु।
तं णिसुणिवि[7] रोसहुयासणेण पज्जलिउ तवसि [8]दुम्मिउ मणेण।

चरित्र का आचरण करता हुआ, धरती पर भ्रमण करता हुआ वह मथुरा नगरी में आया। वह माह-माह के उपवास करता, उसके शरीर में मांस और रक्त दिखाई नहीं देता था। अत्यन्त निष्ठावान राजा उग्रसेन ने उन मुनि को पर्वत पर विचरण करते हुए देखा। उसने भक्तिभाव से कहा कि ऐसे अत्यन्त निरीह श्रमण-श्रेष्ठ को कहाँ पाया जा सकता है ?

घत्ता—उस राजा ने आहार देने के लिए द्वाराप्रेक्षण करने के लिए नगरवासियों को मना कर दिया और यह भी कहा कि विवेकशील इन मुनि को मैं ही भोजन कराऊँगा।

(2)

मुनि के आहार के मार्ग को देखते हुए पहले महीने में राजमन्दिर में आग लग गयी। दूसरे महीने में, जिस पर भौंरे गूँज रहे हैं ऐसा मद से गीले कपोल वाला हाथी, जो मानो कालमेघ के समान था, राजा के अनुचर के शरीर को दाँतों से फाड़ डालता है। तीसरे महीने में एक राजा का पत्र आ गया। इस प्रकार कार्य की परम्परा के कारण (कार्यभार के कारण) वह भूल गया और मुनि में राग होते हुए भी (मुनि में श्रद्धा होते हुए भी) उसका मन उनकी ओर नहीं गया। इस प्रकार जब उनके तीन माह बीत गये, तो किसी एक आदमी ने कहा कि ऐसे राजा को विवेकवाला किस प्रकार कहा जा सकता है जो न तो स्वयं आहार देता है और फिर दूसरे को भी मना कर देता है। इस प्रकार उसने भूख के तीव्र दुःख का अनुभव इस मुनि को कराया है तथा (कहा कि) अफसोस है कि उसने इन्हें मार डाला। यह सुनकर क्रोध की ज्वाला

11. A देहेण ण दीसइ। 12. AP तवंतु।
(2) 1. B पिंडु। 2. S पहिलाए। 3. BP Als. °गंड°। 4. BP णिव°। 5. PS आयउ। 6. S पवुत्तु। 7. S णिसुणवि। 8. B दूमिय; P दूमिउ।

मंजीररावराहियपयाउ तवसिद्धउ आयउ देवयाउ।
सत्त वि भणंति भो भो[9] वसिट्ठ दूरुज्झियदूसहदुट्ठतिट्ठ।
किं उग्गसेणकुलपलयकालु पायडहुं णिविडदुक्कियकरालु[10]।
किं महुर जलणजालालिजलिय[11] दक्खालहुं[12] तुह महिवलयघुलिय।
ता चवइ दियंबरु भिण्णगुज्झु जम्मंतरि पेसणु करहु मज्झु।
कडिसुत्तयघोलिरकिंकिणीउ तं इच्छिवि गयीयउ जक्खिणीउ।
इयरु वि महिमंडलि झत्ति पडिउ पुणु रोसणियाणवसेण णडिउ।

घत्ता—मुणि दुम्मइ णियमणि तम्मइ उग्गसेणु अइसंधमि।
कुलमद्दणु[13] एयहु णंदणु होइवि एहु जि बंधमि ॥2॥

(3)

मुउ सो पोमावइगब्भि थक्कु णं णियतायहु[1] जि अक्कालचक्कु।
पियहिययमाससद्धालुयाइ झिज्जंतियाइ सुललियभुयाइ।
णउ अक्खिउं भत्तारहु सईइ बुड्ढेहिं मुणिउं णिउणइ मईइ।
कारिमउ विणिम्मिउ उग्गसेणु [2]फाडिउ णं सीहिणिए करेणु।
भक्खिउं णियरमणहु देहमासु उप्पण्णउ पुत्तु सगोत्तणासु।

में वह तपस्वी जल उठे और मन से अत्यन्त खिन्न हो उठे। तब नूपुरों की ध्वनि से शोभित पैरोंवाली सात तपसिद्ध देवियाँ आयीं और वे सातों बोलीं—"दुष्ट तृष्णा को दूर से छोड़नेवाले हे वशिष्ठ मुनि ! क्या हम लोग सघन दुष्कृतों से भयंकर उग्रसेन के कुल के लिए प्रलय की रात का काल उत्पन्न करें या आग की ज्वाला में जलती हुई धरतीतल में मटियामेट कर दिखाऊँ ? तब जिसका अन्तरंग परिणाम नष्ट हो चुका है, ऐसे दिगम्बर मुनि बोले कि तुम जन्मान्तर में मेरी आज्ञा मानना। तब कटिसूत्र की हिलती हुई किंकणियोंवाली वे यक्षणियाँ चली गयीं। वह मुनि की शीघ्र क्रोधरूपी ज्वाला के वश से प्रवंचित होकर धरती-मण्डल पर गिर पड़ा।

घत्ता—दुर्मति वह मुनि अपने मन में खेद करते हैं कि मैं इस उग्रसेन को वंचित करूँगा। मैं इसका कुल नाशक पुत्र होकर इसी को बन्धन में डालूँगा।

(3)

वह मरकर पद्मावती के गर्भ में स्थित हो गया मानो अपने पिता के लिए ही अकाल चक्र हो। अपने पिता के प्रिय हृदय के मांस खाने की इच्छा रखनेवाली दिन-दिन क्षीण होती हुई सुन्दर बाहुवाली उस सती ने अपने पति से यह बात नहीं कही। लेकिन वृद्ध मन्त्रियों ने अपनी बुद्धि से यह जान लिया। उन्होंने एक कृत्रिम उग्रसेन बनाया। उसे उसने इस प्रकार फाड़ा जैसे सिंहनी हाथी को फाड़ दे। उसने इस प्रकार अपने

9. S हो हो। 10. A णिवड्डुक्खय°। 11. ABP °जालोलि°। 12. S दक्खालहं। 13. A कुलमंद्दणु।
(3) 1. A °तायहु जियकालचक्कु; B °तायहो जि अकाल°; S °तायहो अक्काल°। 2. B सो फाडिउ णं सीहिणिए; S फालिउ।

अवलोइउ ताएं कूरदिट्ठि　　णिहणेक्ककामु उग्गिण्णमुट्ठि।
कंसियमंजूसहि किउ अथाहि　　घल्लिउ कालिंदीजलपवाहि।
मंजोयरीइ[1] सोमालियाइ　　पालिउ कल्लालयबालियाइ।[2]
कंसियमंजूसहि जेण दिट्ठु　　तेण[3] जि सो कंसु भणेवि घुट्ठु।
कोसंबिपुरिहि[4] पत्तउ पमाणु　　णं कलिकयंतु णं जाउहाणु।
णिच्चु जि परडिंभइं ताडमाणु　　धाडिउ[5] ताएं जायउ जुवाणु।
गउ सउरीपुरु वसुएवसीसु[6]　　जायउ णाणापहरणविहीसु।
असिणा [7]जरसिंधें जिणिवि वसुह　　णिट्ठविय वइरि सुहि णिहिय ससुह[8]।
एक्कहिं दिणि अत्थाणंतरालि　　थिउ पभणइ सो गायणरवालि।
भइं बहुविहपरमंडलिय[9] जित्त　　[10]धरणि वि तिखंड साहिय विचित्त।
पर अज्जि वि णउ सिज्झइ सदप्पु　　[11]णउ पणवइ णउ महु देइ कप्पु।
पोयणपुरवइ सीहरहु राउ　　रणि दुज्जउ रिउजलवाहवाउ[12]।
घत्ता—जो जुज्झइ तहु बलु बुज्झइ धरिवि णिबंधिवि आणइ।
रइकुच्छर[13] णं अमरच्छर मेरी सुय सो माणइ ॥3॥

पति के देह का मांस खाया। उससे अपने कुल का ही नाश करनेवाला पुत्र हुआ। पिता ने देखा कि वह क्रूरदृष्टि, हिंसा की इच्छा रखनेवाला और खुली हुई मुट्ठियोंवाला है। उसे काँसे की मंजूषा में रखा और यमुना के अथाह जल में डाल दिया। कलाल बालिका सुकुमारी मंजोदरी ने उसे पाला, चूँकि वह काँसे की मंजूषा में देखा गया था, इसलिए घोषणापूर्वक उसे कंस कहकर पुकारा गया। कौसाम्बी नगरी में उसके होने का प्रमाण मालूम हो गया। मानो वह कलि-काल का यम हो या राक्षस। प्रतिदिन दूसरों के बच्चों को वह मारता-पीटता। पिता के द्वारा निष्कासित किया गया वह अब युवा हो गया। शौरीपुर में जाकर वह वसुदेव का शिष्य हो गया और नाना हथियारों से वह भयंकर हो उठा। जरासन्ध ने तलवार से धरती को जीतकर, शत्रुओं को नष्ट कर, अपने मित्रों को सुख में स्थापित कर दिया। एक दिन संगीत से गूँजते दरबार में बैठा हुआ वह बोला—"मैंने अनेक प्रकार के शत्रु जीते और तीन खण्डवाली यह विचित्र धरती भी जीत ली, लेकिन मैं आज भी एक गर्वीले राजा को नहीं जीत सका। वह न तो प्रणाम करता है और न मुझे कर देता है। पोदनपुर का स्वामी राजा सिंहरथ रण में अजेय है और शत्रुरूपी मेघ के लिए पवन के समान है।

घत्ता—जो उससे लड़ता है, उसके बल को समझता है और पकड़कर बाँधकर लाता है, वह कामकुतूहल उत्पन्न करनेवाले देहवाली अप्सरा के समान मेरी लड़की को माने।

1. B मंदोयरीए। 2. B कल्लालिए। 3. AP तेण वि। 4. AP कोसंबिणयरे। 5. S धाडियउ। 6. AP वसुदेव°। 7. P जरसेंधें; S जरसंधें। 8. A समुह। 9. S मंडलिय। 10. S धरणी तिखंड। 11. AP णय पणवइ। 12. S °वाउ। 13. APS °कोच्छर।

(4)

अण्णु[1] वि हियइच्छिउ[2] देमि देसु लहु करउ को वि एत्तउ किलेसु।
इय भणिवि णियंकविहूसियाइं आलिहियइं पत्तइं पेसियाइं।
सयलहं मंडलियहं पत्थिवेण गय किंकरवर दसदिसि जवेण।
एक्केण एक्कु तं घित्तु तेत्थु अच्छइ वसुएउ[3] कुमारु जेत्थु।
जोइउं वाइउं तं वइरिजूरु[4] देवाविउं लहुं संगामतूरु[5]।
पक्खरिय तुरय करि कवयसोह मच्छरफुरंत[6] आरूढ जोह।
णीसरिउ सणि व कयदेसदिट्ठि अंधयकविट्ठिसुउ[7] वइरिविट्ठि[8]।
सहुं कंसें रोहिणिदेविणाहु[9] णं ससिमंडलहु विरुद्धु राहु।
परमंडलु विद्धंसंतु जाइ पहि उप्पहि बलु कत्थ वि ण माइ।
घत्ता—[10]चलकेसरकररुहभासुरहरिकड्ढिइ[11] रहि चडियउ।
जयलंपडु कुइउ[12] महाभडु वसुएवहु [13]अब्भिडियउ ॥4॥

(5)

[1]सउहद्देएं संगामि वुत्त हरिमुत्तसित्त हय [2]रहि णिउत्त।
आवाहिउ[3] सो धयधुव्वमाणु दलवट्टिउ रिउ[4] जंपाणु जाणु।

---

(4)

और भी मनचाहा देश मैं दूँगा, कोई भी शीघ्र इतना कष्ट करे—यह कहकर अपने अक्षरों से विभूषित लिखे गये पत्र, उस राजा ने सब माण्डलिक राजाओं को प्रेषित किये। श्रेष्ठ अनुचर सब दिशाओं में वेग से गये। एक अनुचर ने वह पत्र वहाँ डाला जहाँ कुमार वसुदेव थे। शत्रुओं को सतानेवाले उसने देखा और बाँधा और शीघ्र ही युद्ध का नगाड़ा बजवा दिया। घोड़ों को पाखर (लोहे की झूल) पहना दिये गये। शोभायमान कवच पहने हुए, मत्सर से तमतमाते हुए योद्धा उन पर आरूढ़ हो गये। उस देश की ओर दृष्टि बनाकर अन्धकवृष्णि के कनिष्ठ भाई का पुत्र वह शत्रुओं के लिए पापवती के समान निकला। रोहिणी देवी के स्वामी क्रुद्ध वसुदेव कंस के साथ ऐसे मालूम होते थे मानो राहु चन्द्र-मण्डल के विरुद्ध हो गया हो। शत्रुमण्डल का नाश करती हुई कंस की सेना जाती है, और मार्ग-कुमार्ग कुछ भी नहीं देखती है।

घत्ता—चंचल अयाल और नखों से भास्वर सिंहों के द्वारा खींचे गये रथ पर बैठा हुआ तथा जय के लिए चंचल महाभद्र (सिंहरथ) कुमार वसुदेव से भिड़ गया।

(5)

संग्राम में सुभद्रा के पुत्र ने सिंहों के मूत्र से लिपटे घोड़ों से रथ बाँध लिये और उड़ते हुए ध्वज से

---

(4) 1. P अण्णु वि 2. P हियइंछिउ; S हियइच्छिउ। 3. APS वसुएव°। 4. वेरिजूरु। 5. PS Als. संगामतूरु। 6. B Als. मच्छरपूरिय। 7. AP अंधकविट्ठिसुउ। 8. B वइरविट्ठि। 9. S रोहिणि°। 10. P °भासुरु। 11. B °कड्ढिय°। 12. P कुविउ। 13. AP रणे भिडियउ।

(5) 1. AP सउहद्दें जहु संगामधुत्तु; S सउहद्दें णं संगामे। 2. A रहवरे णिउत्त। 3. B आवाहिवि। 4. S तहिं।

वसुएवकंस भूभंगभीस लग्गा [5]परबलि उज्झायसीस।
वरसुहडहं सीसइं णिल्लुणंति थिरु थाहि थाहि हणु हणु भणंति।
वंचंति [6]वलंति खलंति धंति पइसंति एंति पहरंति थंति।
अंतइं[7] लंबंतइं ललललंति रत्तइं पवहंतइं झलझलंति।
महि णिविडमाण[8] हय हिलिहिलंति सरसल्लिय गयवर गुलुगुलंति।
दट्ठोट्ठ रुट्ठ मारिवि मरंति जीविउं मुयंत णर हुंकरंति।
पललुद्धइं गिद्धइं णहि मिलंति भूयइं वेयालइं किलिकिलंति।
पहरणइं पडंतइं धगधगंति विच्छिण्णइं कवयइं[9] जिगिजिगंति।

घत्ता—पहरंतहु सामाकंतहु सीहरहेण णिवेइय।
सर दारुण मम्मवियारण कंचणपुंखविराइय ॥5॥

(6)

एयारह बारह पंचवीस पण्णास सट्ठि बावीस तीस।
तेण वि तहु तहिं मग्गण विमुक्क रह वाहिय खोणियखुत्तचक्क।[1]
ते वीर बे वि आसण्ण ढुक्क णं खयसागर मज्जायमुक्क।[2]
परिभडघंघलु भुयबलु कलंति अवरोप्परु किल[3] कोंतहिं हुलंति।

युक्त उस रथ को नष्ट कर दिया, शत्रु और जम्पान यान को चकनाचूर कर दिया। इस प्रकार भौंहों के भंग से भयंकर गुरु और शिष्य, वसुदेव और कंस शत्रुसेना से भिड़ गये। वे श्रेष्ठ योद्धाओं के सिर काट डालते हैं। ठहरो ! ठहरो ! मारो-मारो कहते हैं, चलते हैं, मुड़ते हैं, स्खलित होते हैं, नष्ट करते हैं, घुसते हैं, आते-जाते प्रहार करते हैं और ठहर जाते हैं, लम्बी-लम्बी पताकाएँ हिलती हैं, बहते हुए रथ झलमलाते हैं। धरती पर पड़े हुए घोड़े हिनहिनाते हैं और तीरों से बिंधे हाथी चिंघाड़ रहे हैं। कटे हुए होठोंवाले क्रुद्ध योद्धा मारकर मरते हैं और प्राण छोड़ते हुए हुँकार भरते हैं। मांस के लोभी गिद्ध आकाश में इकट्ठे हो रहे हैं। भूत और वैताल किलकारियाँ मार रहे हैं। धक्-धक् करते हुए हथियार गिरते हैं। कवच विछिन्न होकर जगमगा रहे हैं।

घत्ता—प्रहार करते हुए श्यामा के पति वसुदेव पर मर्म का छेदन करनेवाले और स्वर्णपंख से शोभित भयंकर तीर सिंहरथ ने छोड़े।

(6)

ग्यारह, बारह, पच्चीस, पचास, साठ, बाईस और तीस तीर और उसने (वसुदेव ने) भी उतने ही तीर छोड़े। जिसके चक्के धरती को खोद रहे हैं, ऐसे रथ को आगे बढ़ाया। वे दोनों वीर परस्पर निकट पहुँचे मानो मर्यादा से मुक्त प्रलय समुद्र हों। शत्रुसमूह अपना बाहुबल इकट्ठा करता है और एक-दूसरे को भालों

---

5. S वरबले। 6. BP Als. चलंति। 7. B गत्तइं लुंचंतइं। 8. APS णिवडमाण। 9. AP कयवयइं।
(6) 1. BS खोणीखुत्त°। 2. AP मज्जायचुक्क। 3. ABPS किर।

ता [4]सुहडसमुब्भड चप्परेवि रणि णियगुरुअंतरि पइसरेवि।
पवरंगोवंगयीं संवरेवि चवलाउहपरिवंचणु[5] करेवि।
उल्ललिवि धरिउ सीहरहु केम कंसें केसरिणा हत्थि जेम।
आवीलिवि बद्धउ बंधणेण जड़जोउ[6] व [7]जीयासाधणेण।
णिउ दाविउ अद्धमहीसरासु अहिमाणु भुवणि णिव्वूढु कासु।
तं पेक्खिवि[8] राएं वुत्तु एव वसुएव तुज्झु सम णेय देव।

घत्ता—साहिज्जइ केण धरिज्जइ एहु पयंडु महाबलु।
पहरुंदें जिह णहु चंदें तिह पइं मंडिउं णियकुलु[9] ॥6॥

(7)

को पावइ तेरी वीर छाय कालिंदिसेणसइदेहजाय[1]।
लइ लइ जीवंजस जसणिहाण मेरी सुय संतावियजुवाण।
ता रोहिणेयजणणेण वुत्तु परमेसर परजंपणु अजुत्तु।
हउं णउ गेण्हमि परपुरिसयारु एयहु कंसें किउ[2] बंधणारु।
रायाहिराय जयलच्छिगेह दिज्जउ कुमारि एयहु जि एह।
पहु पुच्छइ कुलु वज्जरइ कंसु णउ होइ महारउ सुद्ध वंसु।
कोसंबीपुरि कल्लालणारि मंजोयरि[3] णामें हिययहारि।

से छेदता है। तब सुभटों की भीड़ को चाँपकर, युद्ध में अपने गुरु के बीच प्रवेश कर, तथा उत्तम अंगोपांगों को ढँककर, चंचल हथियारों की प्रवंचना कर, उछलकर कंस ने सिंहरथ को उसी प्रकार धर पकड़ा, जैसे सिंह हाथी को पकड़ लेता है। उसे पीड़ित कर बन्धन में बाँध लिया जाता है। ले जाकर उसने उसे अर्ध-चक्रवर्ती जरासन्ध को दिखाया। इस संसार में किसी का भी अहंकार नहीं रहता। यह देखकर राजा जरासन्ध ने इस प्रकार कहा कि हे वसुदेव ! तुम्हारे समान देवता भी नहीं है।

घत्ता—किसके द्वारा यह प्रचंड महाबली लड़ा और पकड़ा जा सकता था। जिस प्रकार चन्द्रमा अपने प्रभापुंज से आकाश को आलोकित करता है, उसी प्रकार तुमने अपने कुल को शोभित किया है।

(7)

हे वीर ! तुम्हारी कान्ति कौन पा सकता है ? तुम कालिन्दीसेन रानी के शरीर से उत्पन्न युवकों को सतानेवाली मेरी इस जीवंजसा कन्या को जो यश की निधान है, स्वीकार करो। तब बलभद्र के पिता वसुदेव ने कहा- "हे देव ! अन्यथा कहना गलत है। दूसरे के पौरुष को मैं स्वीकार नहीं करूँगा। इसको पकड़नेवाला कंस है, इसलिए हे राजाधिराज और विजयलक्ष्मी के आश्रय आप वह कन्या उसे दें। तब राजा कंस से पूछता है और वह उत्तर देता है कि मेरा कुल पवित्र नहीं है। कौसाम्वी नगरी में, हृदय को सुन्दर लगनेवाली

4. A सुहडु समुब्भडु। 5. AB परवंचणु। 6. B जड़। 7. AP जम्मणिदंसणेण। 8. APS पेच्छिवि। 9. A णियकुलु।
(7) 1. P °सुय°। 2. PS कउ। 3. B मंजोयरि।

तहि तणुरुहु हउं अच्चंतचंडु परडिंभमुंडि घल्लंतु दंडु।
मुक्कउ णियप्राणदूण्णियाइ[4] मायइ[5] दुपुत्तणिव्विण्णियाइ।
[6]सूरीपुरि सेविउ चावसूरि अब्भसिउ[7] मइं वि धणुवेउ भूरि।
सहुं गुरुणा जाइवि धरिउ बीरु[8] अवलोयहि पासंकियसरीरु।
तं सुणिवि णरिंदें सीसु धुणिउ[9] एयहु कुलु एउं ण होइ भणिउं।
घत्ता—रणतत्तिउ[10] णिच्छउ खत्तिउ एहु ण परु[11] भाविज्जइ[12]।
कुलु सव्वहु णरहु अउव्वहु आयारेण मुणिज्जइ ॥7॥

(8)

इय पहुणा भणिवि किसोयरीहि पेसिउ दूयउ मंजोयरीहि।
तें जाइवि[1] महुआरिणि पवुत्त[2] पइं कोक्कइ पहु बहुबंधुजुत्त[3]।
किं भासियाइ बहुयइ[4] कहाइ अच्छइ तेरउ सुउ तहिं जि माइ।
सुयणामें कंपिय जणणि केव पवणंदोलिय वणवेल्लि जेव।
सा चिंतइ णउ संवरइ चित्तु किउं पुत्तें काइं मि दुच्चरित्तु।
हक्कारउ आयउ तेण मज्झु बज्झउ मारिज्जउ सो ज्जि वज्झु।
इय [5]चविवि चलिय भयथरहरंति मंजूस लेवि पहि संचरंति[6]।
दियहेहिं पराइय रायवासु दिट्ठउ णरवइ साहियदिसासु[7]।

मंजोदरी नाम की एक कलाल स्त्री है। मैं उसका अत्यन्त प्रचण्ड पुत्र हूँ। मैं दूसरों के बच्चों के सिर पर डण्डे मारता रहता था। अपने खोटे पुत्र से विरक्त तथा अपने प्राणों को पीड़ित करनेवाली उसे मैंने छोड़ दिया। मैंने शौरीपुर में आकर धनुषाचार्य (वसुदेव) की सेवा की और वहाँ धनुर्विद्या का खूब अभ्यास किया। गुरु के साथ जाकर मैंने इसे पकड़ा। बन्धन से चिह्नित शरीर इसे आप देखिए।" यह सुनकर राजा ने अपना माथा पीटा कि इसके द्वारा कहा गया यह कुल इसका नहीं है।

घत्ता—रण की चिन्ता से मुक्त यह निश्चय ही क्षत्रिय है, यह बात दूसरे में नहीं आ सकती। अज्ञात सभी व्यक्तियों का कुल उनके आचरण से जानना चाहिए।

(8)

यह कहकर राजा ने कृशोदरी (दूती) को मंजोदरी के पास भेजा। उसने जाकर उस कलारिन (कलवारिन) से कहा कि तुम्हें अनेक बन्धुओं से युक्त राजा ने बुलाया है। बहुत कथा कहने से क्या लाभ ? माँ, तुम्हारा पुत्र भी वहाँ है। पुत्र के नाम से माता उसी प्रकार काँप उठी, जिस प्रकार हवा से आन्दोलित होकर वन की लता काँप जाती है। वह सोचती है और वह अपने चित्त को रोक नहीं पाती है—पुत्र ने जरूर खोटा काम किया है। इसी कारण से मुझे यह बुलावा आया है। उसे मारा जाय, बाँधा जाय, वह बन्धन योग्य है। यह कहकर भय से थर-थर काँपती हुई वह मंजूषा लेकर रास्ते में चलती है। कुछ दिनों में वह राजभवन

4. AP °पाण° । 5. PS मयाए । 6. S सउरी° । 7. A अब्भासिउ । 8. BS Als. धीरु । 9. S धुणीउं । 10. A रणतंतिउ । 11. B पर । 12. AP चिंतिज्जइ ।
(8) 1. S जोएवि; K जोइवि in secon hand. 2. A पउत्तु; B पवुत्तु; P पउत्त । 3. AB °जुत्तु । 4. AP बहुलइ । 5. AP भणिवि । 6. A संचरंति ।
7. AKP °दसासु; but gloss in K साधितदिशामुखः ।

राएण भणिय[8] तउ[9] तणउ तणउ इहु कंसवीरु जगि [10]जणियपणउ।
ता सा भासइ भयभावखद्ध[11] कालिंदिहि मइं मंजूस लद्ध।
ओहच्छइ[12] एयहु तणिय माय हउं तुम्हहं सुद्धिणिमित्तु आय।
कलियारउ सइसवि सिसु हणंतु णीणिउ घराउ विप्पिउ चवंतु।
मेरउ ण होइ मुक्कउ गुणेहिं जोइय मंजूस वियक्खणेहिं।

घत्ता—तहिं अच्छिउं पत्तु णियच्छिउ[13] जयसिरिमाणिणिमाणिउ।
सुहदिट्ठिहि णरवइविट्ठिहि णत्तिउ लोएं जाणिउ ॥8॥

(9)

पवरुग्गसेणपोमावईहि[1] सुउ कंसु एहु सुमहासईहि।
इय वइयरु [2]जाणिवि तुट्ठु णाहु जीवंजस दिण्णी किउ[3] विवाहु।
ससुरेण भणिउं वरवीरवित्ति[4] जा रुच्चइ[5] सा मग्गहि [6]धरित्ति।
जामाएं वुत्तु णिरुत्तवाय महुं महुर देहि रायाहिराय।
महिमंडलसहिय महाभडासु सा[7] दिण्ण तेण राएण तासु।
सहुं सेण्णें उग्गयधरणिपंसु णियवंसहुयासणु चलिउ कंसु।
अविणीयजीयजीविउ[8] हरंतु दिवसेहिं[9] पत्तु मच्छरु वहंतु।

पहुँचती है। दिशामुखों को सिद्ध करनेवाले राजा को उसने देखा। राजा ने कहा कि जग को प्रणत करनेवाला यह वीर कंस क्या तुम्हारा बेटा है ? तब वह भयभाव से अभिभूत कहती है कि यमुना नदी में मुझे एक मंजूषा मिली थी। इसकी माता यह है। हम तुम्हारे पास सही वृत्तान्त कहने आये हैं। यह झगड़ालू बचपन में ही बच्चों को पीटता था। मैंने अप्रिय कहकर उसे घर से निकाल दिया। गुणों से रहित यह मेरा बेटा नहीं है। तब पण्डितों ने उस मंजूषा को देखा।

घत्ता—उसमें रखा हुआ पत्र देखा और लोगों ने जाना कि विजयलक्ष्मी और माननियों द्वारा मान्य यह शुभदृष्टि नरपतिवृष्णि का नाती है।

(9)

महान् उग्रसेन की अत्यन्त महासती पद्मावती का यह कंस नाम का पुत्र है। यह वृत्तान्त जानकर राजा सन्तुष्ट हुआ और अपनी कन्या जीवंजसा को दान में देकर शादी कर दी। ससुर ने कहा—श्रेष्ठ वीरवृत्ति से युक्त जो धरती तुम्हें लगे, वह माँगो। दामाद ने कहा—आप सत्य बोलनेवाले हैं। हे राजाधिराज ! मुझे मथुरा नगरी दे दो। राजा ने भी उस महाभट को धरणी-मण्डल सहित वह नगरी उसे दे दी। तब जिस धरती से धूल उठ रही है, ऐसा कंस अपने वंश के लिए हुताशन के समान सेना के साथ चला। अविनीत लोगों

---

8. P भणिउ। 9. A तुहु; B Als. कहो; Als. considers तउ to be a mistake in PS for कहु। 10. B जगजणिय°। 11. P भयखाय°। 12. A एह अच्छइ; P एहच्छइ। 13. B णियच्छिउं।

(9) 1. S °पउमावईहिं। 2. S जाणेवि। 3. S कउ। 4. A बहुवीरवित्ति; B वरु वीरवत्ति। 5. A रुच्चइ ता। 6. B धरत्ति। 7. AP ता। 8. B °जीव°। 9. ABPS दिवसेहिं।

वेढिय महुराउरि दुद्धरेहिं हत्थिहिं रहेहिं हरिकिंकरेहिं।
अट्टालय पाडिय[10] दलिउ कोट्टु [11]साडिउ पुररक्खणणरमरट्टु।
अक्खिउ [12]णरेहिं गंभीरभाव आयउ तुज्झुप्परि पुत्तु देव।
जो पइं कालिंदिहि घित्तु आसि एवहिं अवलोयहि णियभुयासि।
घत्ता—आयण्णिवि रिउ तणु मण्णिवि दाणु देंतु णं दिग्गउ।
संणज्झिवि हियइ विरुज्झिवि उग्गसेणु पहु णिग्गउ ॥9॥

(10)

संचोइयणाणावाहणाहं जायउ रणु दोहिं[1] मि साहणाहं।
करमुक्कसुलहलसव्वलाहं दढधरियाउंचियकुंतलाहं[2]।
[3]घोलंतअंतमालाचलाहं [4]पवहंतपहरसंभवजलाहं।
पडिदंतिदंतलुयमयगलाहं असिवरदारियकुंभत्थलाहं।
[5]आडियसरत्तमुत्ताहलाहं[6] दोखंडियकमकडियलगलाहं।
णिवडंतहं मुच्छाविंभलाहं[7] णारायणियरछाइयणहाहं।
[8]अइदूसहवणवेयणसहाहं भडभिउडिभंगभेसियगहाहं।
दरिसावियदेहवसावहाहं[9] णीसारियणियणरवइरिणाहं।

के जीवन को हरण करता हुआ तथा ईर्ष्या धारण करता हुआ कुछ दिनों में वह वहाँ पहुँचा। उसने दुद्धर हाथियों, रथों, अश्वों और किंकरों द्वारा मथुरा नगरी को घेर लिया। अट्टालिका गिरा दी गयीं, परकोटा बरबाद कर दिया गया। नगरी की रक्षा करनेवालों का मान चकनाचूर कर दिया। तब लोगों ने जाकर कहा—हे गम्भीरभाव देव (उग्रसेन) ! तुम्हारे ऊपर तुम्हारा बेटा चढ़ आया है जो तुम्हारे द्वारा यमुना में फेंक दिया गया था। इस समय वह हाथ में तलवार लिये है। उसे देखो।

घत्ता—यह सुनकर दुश्मनों को तिनके के बराबर समझकर जैसे मद-जल झरता हुआ हाथी हो, तैयार होकर और मन में क्रुद्ध होकर राजा उग्रसेन निकला।

(10)

दोनों सेनाओं में युद्ध होने लगा—ऐसी सेनाओं में कि जिनमें नाना वाहन चला दिये गये हैं। शूल-हल और सब्बल हाथ से छोड़े गये, मजबूती से पकड़े हुए कुन्तल खींचे जाने लगे। अँतड़ियों के चंचल जाल फैलने लगे और प्रहारों से उत्पन्न रक्त के जल (झरने) बहने लगे, मदमाते हाथी प्रतिवादी हाथियों के दाँतों से छिन्न होने लगे, श्रेष्ठ तलवारों से हाथियों के गण्डस्थल फाड़ डाले गये। रक्तरंजित मोती नष्ट किये जाने लगे। पैरों, कटितलों और गालों के दो टुकड़े हो गये। मूर्च्छा से विह्वल होकर सैनिक गिरने लगे। तीरों के समूह से आकाश छा गया। अत्यन्त असह्य घावों की वेदना को सैनिक सहन करने लगे। योद्धाओं की भौंहों

10. H थाडिय। 11. A साडिय पुरक्खणु णरमरट्टु; B Als. णिद्धाडिउ पुररक्खणमरट्टु; S साडिउ पुररक्खणमडमरट्टु। 12. A चरेहिं।

(10) 1. APS दोहं मि। 2. S read from here down to line 10 the text in a confused manner. 3. S लोलंत°; K लोलंत° in second hand. 4. D पवलंत°। 5. B Als. पाडिय°। 6. A °सरंत°। 7. S °भिंभलाहं। 8. S इय दूसह°। 9. AP °वसावयाहं।

अवलोइयकरधणुगुणकिणाहं।
ता उग्गसेणु [10]वाहियगयंदु धाइउ [11]सहुं गिरिणा णं मइंदु।
बोल्लाविउ रूसिवि तणउ तेण किं जाएं पइं णियकुलवहेण।
गब्भत्थें खद्धउं मज्झु मासु तुहुं महुं हूयउ णं [12]दुमि हुयासु।
घत्ता—विंधंतें समरि कुपुत्तें उग्गसेणु पच्चारिउ।
जो पेल्लइ पाणिइ घल्लइ सो महु वप्पु वि वइरिउ ॥10॥

(11)

बोल्लिज्जइ एवहिं काइं ताय [1]परिहच्छ पउर दे देहि घाय।
गज्जंतु महंतु गिरिंदतुंगु[2] ता चोइउ[3] मायंगहु मयंगु।
पहरणइं णिवारिय[4] पहरणेहिं पहरंतहिं सुयजणणेहिं तेहिं।
णहयलि हरिसाविउ अमरराउ उड्डिवि कंसें णियगयवराउ।
पडिगयकुंभत्थलि पाउ देवि पुरिमासणिल्लभडसीसु [5]लुणिवि।
असिघाउ देंतु करि धरिउ ताउ पंचाणणेण णं मृगु[6] वराउ।
आवीलिवि भुयवलएण रुद्धु पुणु दीहणायपासेण[7] बद्धु।
तेत्थु जि पोमावइ माय धरिय किं तुहुं मि जणणि खल कूरचरिय।

के भंग से ग्रह डर गये, वसा समूहों से लिपटे शरीर दिखाई देने लगे। सैनिकों के द्वारा अपने राजा का ऋण चुकाया जाने लगा। अपने कर और धनुष की डोरी के चिह्न देखे जाने लगे। तब उग्रसेन ने अपना हाथी आगे बढ़ाया, मानो पहाड़ के साथ सिंह दौड़ा हो। उसने क्रुद्ध होकर अपने पुत्र से कहा—"अपने ही कुल का वध करनेवाले तुम्हारे पैदा होने से क्या ? गर्भ में रहते हुए तुमने मेरा मांस खाया, तुम मेरे लिए वैसे ही पैदा हुए, जैसे पेड़ के लिए हुताशन।

घत्ता—युद्ध में वेधन करते हुए कपूत कंस ने उग्रसेन को ललकारा कि जिसने मुझे पीड़ित किया और पानी में फेंका, वह बाप होकर भी मेरा दुश्मन है।

(11)

हे पिता ! इस समय बोलने से क्या, शीघ्र तुम प्रचुर आघात दो। इस प्रकार उसने गरजते हुए पहाड़ की तरह ऊँचे महान् मातंग नाम के हाथी को प्रेरित किया। इस प्रकार एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए बाप-बेटे ने हथियारों से प्रतिकार किया। आकाश में इन्द्र पुलकित हो उठे। कंस ने अपने गजवर से उठकर दूसरे हाथी के गण्डस्थल पर पाँव देकर आगे बैठे योद्धा के सिर को काटकर तलवार का आघात देकर पिता को हाथ से पकड़ लिया। सिंह ने बेचारे हरिण को पकड़ लिया है। अपने बाहुबल से पीड़ित उसे आबद्ध कर लिया और तब लम्बे पाश में बाँध लिया। यहीं पर उसने माता पद्मावती को भी पकड़ लिया कि तुम भी

---

10. AP वाहेवि गयंदु। 11. AP णं सहुं गिरिणा मइंदु। 12. AP दुमु हुयासु।
(11) 1. P परिहत्थु; S परिहत्थ। 2. S गिरिंदु। 3. B चोयउ। 4. APS णिवारिवि। 5. AP सीसु लुणेवि। 6. BP मिगु; S मिग। 7. S °पासेण।

इय[8] भणिय बे वि ससिकंतकंति णिहिगइं णियमंदिरि [9]गोउरंति।
असिपंजरि पियरइं पावएण चिरभवसंचियमलभावएण।
थिउ अप्पुणु[10] पिउलच्छीविलासि लेहारउ पेसिउ गुरुहि पासि।
लेहें अक्खिउं जिह उग्गसेणु रणि धरिवि[11] णिबद्धउ णं करेणु।
पइं विणु रज्जेण वि काइं मज्झु जइ वयणु ण पेच्छमि कहिं[12] मि तुज्झु।
तो[13] महु णरभवजीविउं णिरत्थु आवेहि देव उब्भियउ[14] हत्थु।

घत्ता—तें वयणें रंजियसयणें संतोसिउ सामावइ।
गउ महुरहि वियलियविहुरहि सीसु[15] तासु मणि भावइ ॥11॥

(12)

लोएं गाइज्जइ धरिवि वेणु जो पित्तिउ णामें देवसेणु।
तहु तणिय धूय[1] तिहुवणि[2] पसिद्ध सामा वामा गुणगामणिद्ध।
रिसिहिं मि उक्कोइयकामबाण[3] देवइ णामें देवयसमाण।
सा णियसस गुरुदाहिण भणेवि महुराणाहें दिण्णी थुणेवि।
सुहुं भुंजमाण[4] णिसिवासरालु [5]अच्छंति जाव [6]परिगलइ कालु।
ता अण्णहिं दिणि जिणवयणबाइ अइमुत्तउ णामें कंसभाइ।

मेरी दुष्ट और क्रूरचरित्र माँ हो। यह कहकर चन्द्रमा की कान्ति के समान उन दोनों को अपने प्रासाद के भीतर गोपुर में बन्दी बना लिया। इस प्रकार पूर्वभाव के संचित पाप की भावना करनेवाले उस पापी ने अपने माता-पिता को बेड़ियों में डाल दिया और स्वयं पिता के लक्ष्मी-विलास में स्थित हो गया। उसने एक पत्र गुरुजी के पास भेजा। उस पत्र में यह कहा गया था कि किस प्रकार उग्रसेन को रण में पकड़कर हाथी के समान बाँध दिया गया है। आपके बिना मेरे राज्य करने से क्या ? यदि मैं आपका मुख नहीं देखता हूँ, तो मेरा मानव-जीवन व्यर्थ है। हे देव ! आइए यह मेरा हाथ उठा हुआ है।

घत्ता—स्वजनों को रंजित करनेवाले इन शब्दों से (गुरु) सन्तुष्ट हुए और वे संकटों को नष्ट करनेवाली मथुरा नगरी के लिए गये। उन्हें अपना शिष्य कंस बहुत अच्छा लगा।

(12)

लोगों के द्वारा वेणु पर यह गीत गाया गया कि जो कंस का देवसेन नाम का चाचा है, उसकी गुणसमूह से युक्त, सुन्दर और त्रिभुवन में प्रसिद्ध बेटी है जो ऋषियों के लिए भी काम के तीरों से उत्कण्ठित करनेवाली है। देवता के समान जिसका नाम देवकी है, उस अपनी बहन को गुरु-दक्षिणा कहकर मथुरा के स्वामी कंस ने स्तुतिपूर्वक वसुदेव को दे दी। वह भी दिन-रात सुख का भोग करते हुए रहने लगे। इस बीच समय बीतता गया तब एक दिन जिन-वचनों को माननेवाला कंस का भाई अतिमुक्तक पिता के बन्धन से विरक्त,

---

8. S इह भणिवि। 9. P मंदिर°। 10. APS अप्पणु। 11. S धरवि। 12. APS कह व। 13. B ता। 14. B ओडियउ; P ओड्डियउ। 15. B तासु सीसु।
(12) 1. B धीय। 2. B तिहुवण°। 3. B उक्कोयइ कामबाण; PS उक्कोइयकुसुमबाण। 4. BP भुंजमाणु। 5. A अच्छंतु। 6. AB परिगलिय°; S पडिगलइ।

पिउबंधणि चिरु पावइउ वीरु[7] णिप्पिहु आमेल्लिवि[8] णियसरीरु।
चरियइ पइट्ठु मुणि दिट्ठु ताइ मेहुणउ हसिउ जीवंजसाइ।
दक्खालिउ देवइपुप्फचीरु जइ जंपइ जायकसायहीरु।
जरसंध[9] कंस जस लंपडेण मारेवा[10] एएं कप्पडेण।
होसइ एउं जि तुह दुक्खहेउ मा जंपहि अणिबद्धउं अणेउ।
घत्ता—हयसोत्तउं मुणिवरवुत्तउं णिसुणिवि कुसुमविलित्तउं।
तं चीवरु सज्जणदिहिहरु मुद्धइ फाडिवि[11] घित्तउं।।12।।

(13)

रिसि भासइ पुणु उज्झियसमंसु कण्हें फाडेवउ[1] एम कंसु।
ता चेलु ताइ पाएहिं छुण्णु[2] पुणरवि[3] मुणिणा पडिवयणु दिण्णु।
तुह जणणु हणिवि रणि दढभुएण भुंजेवी महि[4] एयहि सुएण।
गउ जइवरु वासु विलासियासु[5] जीवंजस गय भत्तारपासु।
पुच्छिय पिएण किं मलिणवयण[6] किं दीसहि रोसारत्तणयण।
ता[7] सा पडिजंपइ पुण्णजुत्तु होसइ देवइयहि को वि पुत्तु।
णिहणेव्वउ तें तुहुं अवरु ताउ महिमंडलि होसइ सो ज्जि राउ।

निस्पृह होकर, अपने शरीर की आशा छोड़कर संन्यासी हो गया। वह मुनिचर्या में प्रवृत्त हुआ। कंस की पत्नी जीवंजसा ने देवर अतिमुक्तक का मजाक उड़ाया। उसने उसे देवकी का रजोवस्त्र दिखाया, जिससे क्रोध कषाय उत्पन्न हो गयी। मुनि ने कहा कि यश के लम्पट जरासन्ध और कंस इसी कपड़े के द्वारा मारे जाएँगे। यह तुम्हारे दुःख का कारण होगा। इसलिए तुम अज्ञेय (अज्ञात) और अनिबद्ध (असम्बद्ध) शब्दों को मत कहो।

घत्ता—कानों को आहत करनेवाले मुनिवर के वचन को सुनकर उस मूर्ख जीवंजसा ने रजोधर्म के खून से सने हुए तथा सज्जनों की दृष्टि का हरण करनेवाले उस वस्त्र को फाड़कर फेंक दिया।

(13)

उपशमभाव को छोड़ देनेवाले मुनि ने फिर कहा—इसी प्रकार कृष्ण के द्वारा कंस चीरा जाएगा। फिर उस वस्त्र को उसने पैरों से खण्डित कर दिया। तब मुनि ने फिर प्रत्युत्तर दिया कि इसका दृढ़ बाहुवाला पुत्र युद्ध में तुम्हारे पिता को मारकर धरती का भोग करेगा। यह कहकर मुनि चल दिये। बढ़ी हुई इच्छावाली जीवंजसा भी अपने पति के पास गयी। पति ने पूछा कि तुम्हारा मुख मैला क्यों है ? क्रोध से आँखें लाल क्यों दिखाई दे रही हैं ? तब वह प्रत्युत्तर देती है—देवकी का कोई पुण्य से युक्त पुत्र होगा। उसके द्वारा तुम और तुम्हारे पिता मारे जाएँगे और इस धरती-मण्डल का वही राजा होगा।

7. BPS धीरु। 8. APS आमेल्लिय°। 9. A जरसिंध°; P जरसेंध°। 10. A मारेव्वा। 11. S फालिवि।
(13) 1. PS फालेवउ। 2. P चुण्णु। 3. P पुणुरवि। 4. S भुंजेवि मही। 5. AP विणासिआसु। 6. P मलियवयण। 7. A सा पडिजंपइ तुह पुण्णजंतु।

ता चिंतइ कंसु णिसंसियाइं[8] अलियइं ण होंति रिसिभासियाइं।
णिहुउ[9] वि पवण्णउ कंसु[10] तेत्थु अच्छइ वसुएउ णरिंदु जेत्थु।

घत्ता—सो भासइ गुज्झु पयासइ [11]सगुरुहि खयभयजरियउ[12]।।
[13]हरिसिंदणु कयकडमद्दणु[14] जइयहुं मइं रणि धरियउ।।13।।

(14)

तइयहुं [1]महुं तूसिवि मणमणोज्जु[2] वरु दिण्णउ अवसरु तासु अज्जु।
जाएं केण वि जगरुंभएण हउं णिहणेव्वउ ससडिंभएण।
इय वायागुत्तिअगुत्तएण[3] भासिउं रिसिणा अइमुत्तएण[4]।
जइ वरु पडिवज्जहि सामिसाल[5] परबलदलवट्टणबाहुडाल[6]।
णाहीपएसविलुलंतणालु[7] जं जं होसइ देवइहि बालु।
तं तं हउं मारमि म करि रोसु[8] जइ मण्णहि णियवायाविसेसु।
ता सच्चवयणपालणपरेण तं पडिवण्णउं रोहिणिवरेण।
गउ गुरु पणवेप्पिणु घरहु सीसु माणिणिइ पबोल्लिउ माणिणीसु।
वरकंतहं सत्तसयाइं जासु दुक्कालु ण पुत्तहं तुज्झु तासु।
मइं जाणेव्वउं[9] वेयणवसाहि दुक्खेण तणय होहिंति जाहि।

तब कंस विचार करता है कि मुनि के द्वारा कहे गये वचन मनुष्यों द्वारा प्रशंसित होते हैं, वे झूठ नहीं होते। तब विनीत कंस वहाँ गया जहाँ वसुदेव राजा था।

घत्ता—अपने मरण के ज्वर से पीड़ित वह बोलता है और अपना रहस्य गुरु को बताता है कि जब मैंने युद्ध में खून-खच्चर करनेवाले सिंहरथ को पकड़ा था,

(14)

उस समय तुमने प्रसन्न होकर मुझे सुन्दर वर दिया था। आज उसका अवसर है। जग का रोधन करनेवाले अपनी बहन से उत्पन्न किसी पुत्र द्वारा मैं मारा जाऊँगा। यह बात वचनसंयम की रक्षा नहीं करनेवाले अतिमुक्तक ने कही है। इसलिए शत्रु-सेना को चकनाचूर करनेवाली बाहुरूपी शाखाओंवाले हे स्वामी ! यदि आप यह वर देना स्वीकार करें कि देवकी के जो-जो लड़का पैदा होगा, जिसकी नाभि में नाल हिल-डुल रहा है, उसको मैं मारूँगा। आप क्रोध नहीं करना। तब सत्य वचन का पालन करनेवाले वसुदेव ने यह बात स्वीकार कर ली। शिष्य गुरु को प्रणाम करके अपने घर गया। माननीय स्त्रियों के स्वामी वसुदेव से देवकी ने कहा कि तुम्हारे पास सात सौ सुन्दर स्त्रियाँ हैं; इसलिए तुम्हें पुत्रों का अकाल नहीं रहेगा, लेकिन जिसे कष्ट से सन्तान होती है ऐसी मैं, उस वेदना को जानती हूँ।

---

8. S णीससियाइं। 9. B णिमुउ जि; P णिहुयउं जि। 10. APS राउ। 11. A सुगुरुहे; B ससुरहिं। 12. A °भयजजरिउ; B °भयजरिउ। 13. S हरिदंसणु। 14. S °कडवंदणु।

(14) 1. P पइं। 2. P महो मणोज्जु। 3. A °अगुत्तिएण। 4. A °मुत्तिएण। 5. P सामिसालु। 6. S °दलवट्टण°। 7. P °पवेसे। 8. AP रोसु। 9. B जाणेव्वउ in ssecond hand.

घत्ता—सुय मारिवि दुज्जण धीरिवि णाह म हियवउं सल्लहि।
हो णेहें हो महु गेहें लेमि[10] दिक्ख[11] मोक्कल्लहि।।14।।

(15)

[1]परताडणु पाडणु[2] दुण्णिरिक्खु किह पेक्खमि[3] डिंभहं तणउं दुक्खु।
मइं मेल्लहि[4] सामिय मुयमि संगु जिणसिक्खइ भिक्खइ[5] खवमि अंगु।
वसुएउ भणइ हलि गुणमहंति गयी मज्झु तुहारी णिसुणि कंति।
जइ सिसु एयहु[6] मारहुं ण देमि तो हउं असच्चु जणमज्झि होमि।
हम्मंतउ बालं सलोयणेहि किह जोएसमि दुहभायणेहिं।
सलिलंजलि [7]रयरससुहहु देहुं तवचरणु[8] पहायहं[9] बे वि लेहुं।
दइवबसें दइयादइयएहिं अम्हइं दोहिं मि [10]पावइयएहिं।
[11]णउ पुत्तुप्पत्ति ण तासु भंसु मारेसइ पच्छइ काइं कंसु।
इय ताइं वियप्पिवि थियइं जांव बीयइ दिणि सो रिसि ढुक्कु तांव।
णियचित्ति[12] संख मुणि परिगणंतु बलएवजणणभवणंगणंतु।
[13]बहुवारहिं [14]मुक्क णमोत्थुवाय पडिगाहिउ जइवरु धोय पाय।
भुंजिवि भोयणु [15]तवपुण्णवंतु मुणिवरु णिसण्णु आसीस देंतु।

घत्ता—अपने बच्चों को मारकर और दुर्जन को सान्त्वना देकर हे स्वामी ! आपका हृदय पीड़ित नहीं होता हो, तो इस प्रेम से और इस घर से क्या ? मुझे छोड़ दो। मैं दीक्षा ले लूँगी।

(15)

दूसरे के द्वारा पीटा जाना और मारा जाना अत्यन्त दुर्निरीक्ष्य (कठिनाई से देखने योग्य) होता है। मैं कैसे अपने बच्चों का दुःख देख सकूँगी ? हे स्वामी ! मुझे छोड़िए। मैं तुम्हारा साथ छोड़ती हूँ। मैं जिन-दीक्षा और भिक्षा के द्वारा अपना शरीर गला दूँगी। तब वसुदेव ने कहा—गुणों से महान् हे कान्ते ! सुनो। जो तुम्हारी गति है वही मेरी। यदि इसे मैं पुत्र नहीं मारने दूँगा, तो लोगों के बीच झूठा कहा जाऊँगा और दुःख के भाजन अपने नेत्रों से मैं मरते हुए बच्चों को कैसे देखूँगा ? इसीलिए राज्य-सुख को जलांजलि देकर हम दोनों तपस्या ग्रहण कर लेंगे। भाग्य के वश से हम दोनों पति-पत्नी के दीक्षा ले लेने पर, न तो पुत्र की उत्पत्ति होगी और न नाश। तब बाद में कंस किसे मारेगा ? इस प्रकार सोचकर जब वे दोनों बैठे हुए थे, तो दूसरे दिन वे मुनि वहाँ पहुँचे। अपने मन में गृहों की संख्या को गिनते हुए बलदेव के पिता के भवन के आँगन में आते हुए उन्हें उन लोगों ने 'बारम्बार नमस्कार हो'—यह वचन कहा। मुनि को पड़गाहा तथा उनके पैर धोये, आहार लेने के पश्चात् पुण्यात्मा मुनिवर आशीर्वाद देकर बैठ गये।

10. A लेवि। 11. P दिक्ख।

(15) 1. A सिजताडणुं। 2. A मारणु; BP फाडणु। 3. B पिक्खमि; PS पेक्खेमि। 4. B मिल्लिहि। 5. AP दिक्खइ। 6. A एहो। 7. BPS रइरस°। 8. B तवयरणु। 9. B पहाएं; K पहावे but gloss प्रभाते। 10. B पव्वइयएहिं। 11. S ण उ। 12. A णियचित्तिसंख। 13. A बहुवरहिं वि। 14. P विमुक्क। 15. A णवपुण्णवंतु।

घत्ता—मुणि जंपिउ किं [16]पइं विप्पिउं पहरणसूरि[17] पघोसइ।
घरि जं सइ डिंभु जणेसइ तं जि कंसु [18]पहणेसइ ॥15॥

(16)

मइं तहु पडिवण्णउं एहु वयणु ता पडिजंपइ णिम्महियमयणु।
होहिंति ससहि जे [1]सत्त पुत्त ते ताहं मज्झि मलपडलचत्त।
अण्णत्त[2] लहेप्पिणु [3]वुड्ढिसोक्खु छह[4] चरमदेह जाहिंति मोक्खु।
सत्तमु सुउ होसइ वासुएउ [5]जरसंधहु कंसहु धूमकेउ।
जं एम भणिवि जिणपयदुरेहु गउ झत्ति दियंबरु मुक्कणेहु।
तं दो[6] वि ताइं संतोसियाइं णं कमलइं रवियरवियसियाइं।
कालें जंतें [7]कयगब्भछाय सिसुजमलइं तिण्णि पसूय माय।
इंदाणइ देवें णइगमेण भद्दिपुरवरि [8]सुहसंगमेण।
घत्ता—थिरचित्तहि जिणवरभत्तहि[9] वररयणत्तयरिद्धिहि[10]।
घणथणियहि [11]पुत्तत्थिणियहि दविणसमूहसमिद्धहि ॥16॥

(17)

[1]वणिवरसुयाहि ते दिण्ण तेण वेहाविउ णियजीवियवसेण[2]।

घत्ता—वसुदेव कहते हैं—हे मुनि ! आपने यह अप्रिय बात कैसे कही कि घर में यह सती जो बच्चे पैदा करेगी, कंस उनको निश्चित मारेगा।

(16)

मैंने उसे वचन दे दिया है। तब कामदेव को नष्ट करनेवाले मुनिवर कहते हैं—"बहिन के जो सात पुत्र होंगे, उनमें से मलपटल से रहित छह पुत्र दूसरी जगह बड़े होकर सुख प्राप्त करेंगे और छहों चरमशरीरी मोक्ष जाएँगे। सातवाँ पुत्र वासुदेव होगा जो जरासन्ध और कंस के लिए धूमकेतु होगा।"

जब इस प्रकार कहकर जिनचरणों के भ्रमर तथा मुक्तस्नेह (राग-द्वेष रहित) वह दिगम्बर मुनि शीघ्र चले गये, तब वे दोनों खूब सन्तुष्ट हुए; मानो सूर्य की किरणों से विकसित कमल हों। समय बीतने पर गर्भ की कान्ति से युक्त माता ने तीन युगल पुत्र पैदा किये। इन्द्र की आज्ञा से सुख के संगम नैगमदेव ने भद्रिय नगरवर में—

घत्ता—स्थिरचित्त जिनवर की भक्त, श्रेष्ठ रत्नत्रय से सम्पन्न, सघन स्तनोंवाली, पुत्र की कामना रखनेवाली और प्रचुर धनसमूह से सम्पन्न,

(17)

वणिक्वर की पुत्री को वे पुत्र दे दिये। और देव-विक्रिया से उत्पन्न मरे हुए बालकों को, अपने जीवन

---

16. P पइं किं। 17. B पहणेसूरि। 18. A णिहणेसइ।

(16) 1. AP पुत्त सत्त। 2. AP अण्णत्थ। 3. A वुड्ढिसोक्खु; P वुड्ढिसोक्खु; S वड्ढिसोक्खु। 4. A छच्चरमदेह। 5. BS जरसंधहो। 6. S बे वि। 7. A कयअंगछाय। 8. S सुहिसंगमेण। 9. A °भत्तिहे। 10. PS °रिद्धहे। 11. K पुत्तत्थणियहि।

(17) 1. P वणे। 2. B °विसेण।

बालइं सुरवेउव्वणकयाइं महुराहिउ जडु मारइ मयाइं।
अप्फालइ सिलहि ससंकु झत्ति ण वियाणइ अप्पाणहु भवित्ति।
अण्णहिं दिणि पंकयवयणियाइ णिसि देविइ मउलियणयणियाइ।
करिरत्तसित्तु[3] रुंजंतु घोरु दिट्ठउ सिविणइ केसरिकिसोरु।
महिहरसिहराइं समारुहंतु अवलोइउ गोवइ ढेक्करंतु[4]।
उययंतु[5] भाणु सियभाणु अवरु सरु फुल्लकमलु[6] परिभमियभमरु।
णियरमणहु अक्खिउं ताइ दिट्ठु तेण वि णिच्चयफलु ताहि सिट्ठु।
हलि णिसुणि सुअणफलु[7] ससहरासि हरि होसइ तेरइ गब्भवासि।
अइमुत्तमहारिसिवयणु ढुक्कु ता मेल्लिवि सग्गु महाइसुक्कु।
णिण्णामणामु[8] जो आसि कालि सो देउ आउ गयणंतरालि।
थिउ जणणिउयरि संपण्णकुसलु[9] सुहुं जणइ णाइं णवणलिणि भसलु।

घत्ता—सुच्छायइ[10] [11]बाहिरि आयइ जाणमि बेण्णि[12] वि कालिय।
किं खलमुह अवर वि उररुह पुरलोएण णिहालिय ॥17॥

(18)

किं [1]गब्भभावि पंडुरिउं वयणु णं णं जसेण धवलियउं भुवणु।

की आशा से प्रवंचित मूर्ख मथुराराज मारता है। शंकालु कंस शीघ्र उन्हें चट्टान पर पछाड़ता है। वह अपनी भवितव्यता नहीं जानता। एक दूसरे दिन कमलमुखी, अपनी आँखें बन्द किये हुए देवकी ने रात में स्वप्न में ऐसा एक सिंह का बच्चा देखा जो गजरक्त से रंजित और घोर गर्जना कर रहा था। पहाड़ के शिखर पर चढ़ता हुआ और आवाज करता हुआ वृषभ देखा। उगता हुआ सूर्य और चन्द्रमा देखा। खिले हुए कमलोंवाला सरोवर देखा, जिस पर भ्रमर मँडरा रहे हैं। उसने जो देखा था वह अपने पति से कहा। उसने भी उसे उनका निश्चित फल बताया—हले चन्द्रवदने ! स्वप्न फल सुनो। तुम्हारे गर्भवास से हरि का जन्म होगा। अतिमुक्तक महामुनि के वचन निकट आ पहुँचे हैं। तब महाशुक्र स्वर्ग को छोड़कर, जो पहले विनमि नाम का देव था, वह आकाश के अन्तराल में आया और सम्पूर्ण कुशल माँ के उदर में स्थित होकर इस प्रकार सुख देता है, मानो नवकमलिनी में भ्रमर बैठा हो।

घत्ता—पुत्र की बाहर आती हुई कान्ति से ऐसा मालूम होता था कि दोनों (कंस और जरासन्ध) काले हो गये हैं। नगर के लोगों ने दुष्टमुख उनको (कंस और जरासन्ध को) और उरोजों को काला देखा।

(18)

क्या गर्भावस्था में उसका मुख सफेद हो गया है ? नहीं, नहीं, यश से विश्व सफेद हो गया है। क्या

---

3. B °सित्त। 4. B ढिक्करंतु। 5. B उवंयंतु। 6. A पुप्फकमलु। 7. A सुवणु छणससि°; P सिविणफलु; S सुइणफलु। 8. S णिण्णामु णाम। 9. P Als. संपुण्ण°। 10. P सुयच्छायए। 11. B बाहिर। 12. S बेण्णि मि।

(18) 1. S गब्भभाव°।

किं [2]एयउ सइतिवलिउ गयाउ णं णं रिउजयलीहउ हयाउ।
सिसुअवयवेहिं किं भरिउं पेट्टु णं णं दुत्थियकुलधणविसट्टु[3]।
किं जायउ णिद्धु[4] मयच्छिकाउ णं णं हउं मण्णमि भूमिभाउ।
किं रोमराइ णीलत्तु पत्त[5] णं णं खलकित्ति सियत्तचत्त[6]।
सीयलु वि उण्हु किं जाउ देहु णं णं किर पुत्तपयाउ एहु।
किं माय समिच्छइ नृवपहुत्तु[7] णं णं [8]तत्तणुजायहु[9] चरित्तु।
किं मेइणिभक्खणि इच्छ करइ णं णं तें केसउ[10] धरणि हरइ।
किं ढुक्कउ [11]तहिं सत्तमउ मासु णं णं अरिवरगलकालपासु[12]।
किं उप्पण्णउ भद्दिउ विरोउ णं णं पडिभडकामिणिहिं सोउ।

घत्ता--दणुमद्दणु जणिउ जणद्दणु जणणिइ भरहद्धेसरु।
सपयावें[13] कंतिपहावें पुप्फदंतभाणिहिहरु ॥18॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे [14]वासुएवजम्मणं णाम [15]चउरासीमो परिच्छेउ समत्तो ॥84॥

इसके पेट की त्रिवलियाँ समाप्त हो गयीं हैं ? नहीं, नहीं, शत्रु की विजय रेखाएँ मिट गयी हैं। क्या शिशु के अवयवों से पेट उभर आया है ? नहीं, नहीं, दुःस्थितों के लिए कुलधन का पिण्ड है। क्या मृगनयनी का शरीर स्निग्ध हो गया है ? नहीं, नहीं, मैं मानता हूँ, यह भूमिभाग कान्तिमान हो गया है। क्या रोमराजि नीली हो गयी है ? नहीं, नहीं, दुष्ट की कीर्ति ने सफेदी छोड़ दी है। क्या शीतल देह उष्ण हो गयी है ? नहीं, नहीं, यह पुत्र का प्रताप है। क्या माता राजा के प्रभुत्व को चाहती है ? नहीं, नहीं, यह तो उससे उत्पन्न होनेवाले पुत्र का चरित्र है। क्या धरती (मिट्टी) खाने की इच्छा करती है ? नहीं, नहीं, उस केशव के द्वारा धरती का अपहरण किया जाता है। क्या उसका सातवाँ माह आ पहुँचा है ? नहीं, नहीं, शत्रुओं के लिए वह काल का पाश है। क्या यह निरोग भद्रिय (कृष्ण) उत्पन्न हुए हैं ? नहीं, नहीं, प्रतिभटों की स्त्रियों के लिए शोक उत्पन्न हुआ है।

घत्ता—राक्षसों का संहार करनेवाले अर्धचक्रवर्ती भरतेश्वर नारायण को माँ ने जन्म दिया जो अपने प्रताप और कान्ति के प्रभाव से नक्षत्रों की शोभानिधि को धारण करता है।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का वासुदेवजन्म नाम का चौरासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

2. B किं तासु उयरतिव° in second hand. 3. S °धणु। 4. S णिद्ध। 5. BP पत्तु। 6. BP सियत्तु चत्तु। 7. AB णिय°; P णिय°। 8. APS तं तणु°। 9. A °जायउ। 10. S केसवु। 11. A पत्ते। 12. AP °कालयासु। 13. AP ससहावें। 14. A कंसकण्हउप्पत्ती; S कंसकण्हुप्पत्ती। 15. S चउरासीतिमो।

पंचासीमो संधि

केसउ[1] कसणतणु वसुएवें हयणियवंसहु।
उच्चाइवि[2] लइउ सिरि कालदंडु णं कंसहु ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

दुवई—णं हरिवंसवंसणवजलहरु[3] णं रिउणयणतिमिरओ[4]।
जोइउ[5] दीवएण हरि मायइ णं जगकमलमिहिरओ ॥ छ ॥

कण्हु मासि सत्तमि संजायउ मारणकंखिरु कंसु ण [6]आयउ।
हउं जाणमि सो दइवें मोहिउ महिवइलक्खणलक्खपसाहिउ।
लइयउ [7]वासुएउ वसुएवें धरिउं वारिवारणु बलएवें।
णिसि संचलिय[8] छत्ततमणियरें ण वियाणिय णिरु कूरें इयरें।
अग्गइ दरिसियतिमिरविहंगिहिं वच्चइ वसहु फुरंतहिं सिंगहिं।
को वि पराइउ[9] अमरविसेसउ कालहि कालिहि मग्गपयासउ[10]।
देवयचोइइ[11] आवयकुंठइ[12] लग्गइ माहवचरणंगुट्ठइ।
जमलकवाडइं गाढविइण्णइं विहडियाइं णं वइरिहि पुण्णइं।
कुलिसायसवलयंकियपाएं बोल्लिउं सुमहुरु[13] महुराराएं।

पचासीवीं सन्धि

वसुदेव ने श्यामशरीर केशव को ऊँचा कर सिर पर इस प्रकार ले लिया, मानो अपने वंश का नाश करनेवाले कंस के लिए यमदण्ड हो।

(1)

मानो हरिवंशरूपी बांस के लिए नव जलधर हो, मानो शत्रु के लिए अन्धकार हो। माता ने दीपक के उजाले में हरि को देखा, मानो विश्व-कमल के लिए सूर्य हो। कृष्ण सातवें माह में उत्पन्न हो गये। लेकिन मारने की इच्छा रखनेवाला कंस नहीं आया। मैं जानता हूँ कि उसे दैव ने मोहित कर लिया। राजा के लाखों लक्षणों से प्रसाधित वासुदेव को वसुदेव ने ले लिया। बलराम ने ऊपर छत्र कर लिया। छत्र और तम के समूह के साथ वे रात्रि में चले। कोई दुष्ट इसे नहीं जान सका। आगे-आगे वृषभ अन्धकार के नाश को दिखाता हुआ और चमकते हुए सींगों के साथ चल रहा था। रात्रि के समय मार्ग प्रकाशन करनेवाला जैसे कोई देव विशेष आ गया हो, देवता से प्रेरित और आपत्तियों को नष्ट करनेवाले माधव के पैर का अँगूठा लगते ही मजबूती से लगे हुए दोनों किवाड़ इस प्रकार खुल गये, मानो शत्रु के पुण्य ही विघटित हो गये।

---

(1) 1. PS केसवु। 2. B उच्चाइय। 3. AP हरिवंसकंदणव°। 4. P °तमरओ। 5. B जोयउ। 6. S आइउ। 7. S वासुएवु। 8. S संचरिय। 9. AP पयाविउ। 10. A मग्गु पयासिउ; BP मग्गपयासिउ। 11. P चोइय। 12. A आययकुट्ठए; B आवयकुंठए। 13. A समहुरु।

छत्तालंकिउ को किर णिग्गइ[14] को णिसिसमइ दुवारहु लग्गइ[15]।
भासइ सीरि ससि व सुहदंसणु जो तुह [16]णिविडणियलविद्धंसणु।
जो जीवंजसवइवि[illegible]णु[17] [18]पोमवइकरमरिमेल्लावणु।
सो णिग्गउ तुह सोक्खजणेरउ उग्गसेण णृव[19] अच्छहि सेरउ।

घत्ता—एम्व भणंत गय ते हरिसें कहिं मि ण माइय।
णयरहु णीसरिवि जउणाणइ झत्ति पराइय ॥1॥

(2)

दुवई—ता कालिंदि तेहिं [1]अवलोइय मंथरवारिगामिणी।
णं सरिरूवु[2] धरिवि थिय महियलि घणतमजोणि जामिणी ॥ छ ॥

णारायणतणुपहपंती विव अंजणगिरिवरिंदकंती विव।
महिमयणाहिरइयरेहा इव [3]बहुतरंग [4]जरहयदेहा इव।
महिहरदंतिदाणरेहा[5] इव कंसरायजीवियमेरा इव।
वसुहणिलीणमेहमाला इव [6]साम समुत्ताहल बाला[7] इव।
णं सेवालवाल दक्खालइ फेणुप्परियणु णं तहि घोलइ।
गेरुयरत्तु[8] तोउ रत्तंबरु णं परिहइ चुयकुसुमहिं कब्बुरु[9]।

कुलिश, अंकुश और वलय से अंकित पैरोंवाले मथुराराज (उग्रसेन) ने मधुर स्वर में पूछा—"छत्र से शोभित वह कौन जा रहा है, कौन रात के समय दरवाजे से लग रहा है ?" चन्द्रमा के समान शुभदर्शन बलराम बोलते हैं—"जो तुम्हारी गाढ़ी शृंखलाओं को ध्वस्त करनेवाला है, जो जीवंजसा के पति का नाश करनेवाला, पद्मावती के हाथों की जंजीरों को तोड़नेवाला है और तुम्हारे लिए सुख उत्पन्न करनेवाला है, वह निकल रहा है। हे उग्रसेन ! तुम चुप रहो।"

घत्ता—ऐसा कहते हुए वे चले गये। हर्ष के मारे कहीं भी फूले नहीं समाये। नगर से निकलकर शीघ्र ही यमुना नदी पर पहुँचे।

(2)

मन्थर-मन्थर जल से बहनेवाली कालिन्दी नदी (यमुना) को उन्होंने इस प्रकार देखा, मानो सघन अन्धकार से उत्पन्न होनेवाली यामिनी ही नदी का रूप धारण कर धरणीतल पर स्थित हो। वह (यमुना) नारायण (कृष्ण) के शरीर की प्रभापंक्ति के समान, अंजनगिरिराज की कान्ति के समान, कस्तूरी के द्वारा रचित रेखा के समान, वृद्ध देह के समान अनेक तरंगोंवाली, पहाड़ी गजों की दानरेखा के समान, राजा कंस की जीवन-मर्यादा के समान, धरती में व्याप्त मेघमाला के समान, मोतियों सहित श्याम बाला के समान थी। मानो वह अपने शैवाल रूपी बाल दिखा रही है, मानो उस पर फेन का दुपट्टा डाल रही है। गेरु से मिला जल उसका रक्त

---

14. A णिग्गउ। 15. A लग्गउ। 16. B णिवडणियल°। 17. AP °विहारणु। 18. ABPS °करिमरि°। 19. AP णिव; B णिवु।

(2) 1. B पविलोइय। 2. P सरिरूउ। 3. AP read 4 b as 5 a. 4. A जलहरदेहा; P जलधरवेला; AP read 5 a as 4 b. 6. A सोम। 7. AB मग्ग इव। 8. AP रत्ततोय रत्तंबर। 9. AP कब्बुर; B कब्बुरु।

किंणरिथणसिहरइं णं दावइ विब्भमेहिं णं संसउ[10] भावइ।
फणिमणिकिरणहिं णं [11]उज्जोयइ कमलच्छिहिं णं कण्हु पलोयइ[12]।
भिसिणिपत्तथालेहिं सुणिम्मल [13]उच्चाइय णं जलकणतंदुल।
खलखलंति णं मंगलु घोसइ णं माहवहु पक्खु सा पोसइ[14]।
णउ कासु वि सामण्णहु अण्णहु अवसें तूसइ जवण [15]सवण्णहु।
बिहिं [16]भाइहिं थक्कउ तीरिणिजलु णं [17]धरणारिविहत्तउं कज्जलु।
घत्ता—दरिसिउं ताइ तलु[18] किं जाणहुं णाहहु रत्ती।
पेक्खिवि महुमहणु[19] मयणें णं [20]सरि वि विगुत्ती[21] ॥2॥

(3)

दुवई—णइ उत्तरिवि जांव थोवंतरु जंति समीहियासए।
दिट्ठउ णंदु तेहिं सो पुच्छिउ णिक्कुडिलं समासए ॥ छ ॥
महु कंतइ देवय ओलग्गिय धूय ण सुंदरु[1] पुत्तु जि मग्गिय।
देविइ दिण्णी सुय किं किज्जइ तहि केरी लइ ताहि जि दिज्जइ।
जइ सा तणुरुहु पडि महुं देसइ तो पणइणिहि आस पूरेसइ।
णं तो गंधधूवचरुफल्लइं[2] चारुभक्खरूवाइं[3] रसिल्लइं।

वस्त्र है, गिरे हुए फूलों से मानो वह चितकबरा वस्त्र पहिन रही है। मानो वह किन्नरियों के स्तनों को दिखा रही है, मानो जलावर्तों से अपना संशय प्रकट कर रही है। नागराज की मणिकिरणों से मानो आलोक कर रही है। कमलों की आँखों से मानो कृष्ण को देख रही है। मानो जिसने कमलपत्रों की थालियों के द्वारा निर्मल जलकणरूपी तन्दुल उठा लिये हैं। खल-खल करती हुई मानो वह मंगल की घोषणा कर रही है, मानो माधव के पक्ष का समर्थन कर रही है कि यमुना किसी दूसरे सामान्य मनुष्य से नहीं, अपितु अपने सवर्ण (समान वर्णवाले) मनुष्य से अवश्य संतुष्ट होगी। नदी का जल दो भागों में विभक्त होकर स्थित हो गया, मानो धरतीरूपी स्त्री का काजल दो भागों में विभक्त हो गया हो।

घत्ता—उसने मानो अपना तलभाग दिखा दिया है। हम जानते हैं कि वह अपने स्वामी में अनुरक्त है। मधुमथन (कृष्ण) को देखकर मानो काम के द्वारा नदी तिरस्कृत की गयी हो।

(3)

नदी उतरकर (पार कर), अपनी चाही हुई इच्छा के अनुसार जैसे ही वे थोड़ी दूर पर जाते हैं, उन्हें नन्द दिखाई दिये। उन्होंने निष्कपट भाव से थोड़े में उनसे पूछा। (नन्द कहते हैं)—मेरी पत्नी ने देवी की सेवा की थी, कन्या सुन्दर नहीं होती इसलिए उसने पुत्र माँगा था। परन्तु देवी ने पुत्री दी, उसका क्या किया जाय ? उसकी कन्या उसी को दी जाय। यदि वह फिर से मुझे पुत्र देगी, तो मेरी प्रियतमा की आशा पूरी

---

10. A भउहउ। 11. B उज्जोयइ। 12. B पलोवइ। 13 A उच्चायइ। 14. P गोसइ। 15. A समुण्णहो। 16. BS भायहिं। 17. A धरणारिहि हित्तउं; P धरणारिविहित्तउं। 18. A तणु। 19. A °महणु णं मयणेण व सरी तिव गुत्ती। 20. P णं व सरि वि। 21. B विगुत्ती।
(3) 1. A सुंदर। 2. BP °धूम°। 3. B °रूआइं।

देमि ताम जा देवि णिरिक्खमि ता हलहेइ भणइ सुणि अक्खमि।
लइ लइ लच्छिविलासरवण्णउ एहु पुत्तु तुह देविइ[4] दिण्णउ।
भंति[5] म करहि काइं मुहुं जोवहि मेरइ करि तेरी सुय ढोयहि।
ता हियउल्लइ णंदु वियप्पइ णरवेसेण भडारी जंपइ।
लेमि पुत्तु किं पउरपलावें परिपालमि सणेहसब्भावें।
एम [6]चवेप्पिणु अप्पिय बाली बलकरकमलि[7] कमलसोमाली।
लइउ विट्ठु साणंदें णंदें मेहु व आलिंगियउ गिरिंदें।
हुउ [8]सकयत्थउ गउ सो गोउलु जणय[9] तणय पडिआया राउलु।
घत्ता—सुय छणससिवयण देवइयहि पुरउ णिवेसिय।
केण वि किंकरिण णरणाहहु वत्त समासिय ॥3॥

(4)

दुवई—पुरणहहंस कंस परघरिणिविलंबिरहारहारिणा।
जाया पुत्ति देव गुरुघरिणिहि वइरिणि [1]मलयदारुणा ॥ छ ॥
तं णिसुणेप्पिणु णरवइ उट्ठिउ जाइवि ससहि णिहेलणि संठिउ।
तेण खलेण दुरियवसमिलियहि छुडु जायहि णं अंबयकलियहि।

होगी और नहीं तो गन्ध, धूप, नैवेद्य और पुष्प तथा सुन्दर रसीले खाद्यरूप देवी को दूँगा जब उसे देखूँगा। तब बलराम कहते हैं—"सुनो, मैं बताता हूँ। लो ! लो ! लक्ष्मीविलास रमणीय यह पुत्र। यह तुम्हें देवी ने दिया है। तुम भ्रान्ति मत करो। मुख क्या देखते हो, मेरे हाथ में तुम अपनी पुत्री दे दो।" इस पर नन्द अपने मन में विचार करते हैं कि यह मनुष्य के रूप में देवी ही बोल रही है। मैं पुत्र ग्रहण कर लेता हूँ। बहुत बकवास से क्या, स्नेह और सद्भाव से इसका परिपालन करूँगा। यह विचारकर उसने बालिका सौंप दी— कर-कमलोंवाली और कमल के समान सुकुमार। नन्द ने आनन्द से विष्णु (कृष्ण) को ले लिया, जैसे गिरीन्द्र ने मेघ का आलिंगन किया हो। वह कृतार्थ होकर गोकुल के लिए चला गया। वसुदेव और बलराम राजकुल में वापस आ गये।

घत्ता—उन्होंने पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुखवाली कन्या देवकी के सम्मुख रख दी। किसी अनुचर ने राजा से यह बात कह दी।

(4)

हे नगररूपी आकाश के सूर्य कंस ! पर-स्त्रियों के लटकते हुए हार को ग्रहण करनेवाले वसुदेव के द्वारा गुरुगृहिणी (देवकी) से शत्रुकन्या उत्पन्न हुई है। यह सुनकर राजा उठा और जाकर बहिन के घर में स्थित हो गया। उस दुष्ट ने पाप के वश से मिली हुई, शीघ्र उत्पन्न हुई, आम्रकलिका के समान कोमल और सरल

4. S दिव्वए। 5. A omits म and reads करेहि for करहि। 6. AP भणेप्पिणु। 7. PS वरकरकमलि। 8. Als. सुकयत्थउ against Mss. 9. AS जणण तणय।

(4) 1. A °मलयदारुणा; P °मलयदारुणी।

तलहत्थें सरलहि कोमलियहि चप्पिवि णासिय दिल्लिदिलियहि[2]।
रूवु[3] विणासिवि[4] सुट्ठु रउद्दें भूमिभवणि घल्लाविय खुद्दें।
सरसाहारगासपियवायइ तहिं मि धीय वड्ढारिय मायइ।
हूई णवजोव्वणसिंगारें भज्जइ णं टस[5] त्ति थणभारें।
सुव्वयखंति सधम्मु[6] समीरइ आउ जाहुं सुंदरि[7] तउ कीरइ।
णासाभंगें रूवु[8] विणट्ठउं [9]जाणिवि सा दप्पणयलि दिट्ठउं।
णिग्गय[10] गय वयधारिणि होइवि[11] थिय काणणि ससरीरु पमाइवि[12]।
धोयइं[13] धवलंबरइं णियत्थी जिणु झायंति पलंबियहत्थी।
कुसुमहिं मालिय [14]चउहिं मि पासहिं पुज्जिय णाहलसमरसहासहिं[15]।
घत्ता—गय ते णियभवणु [16]एक्कल्ली कण्ण णिरिक्खिय।
अरिहु सरंति मणि वणि भीमें वग्घें भक्खिय ॥14॥

(5)

दुवई—गय सा णियकएण सुरवरघर[1] अमलिणमणिपवित्तयं।
उव्वरियं[2] कहं[3] पि अलियल्लहि तीए करंगुलित्तयं ॥ छ ॥
तं पुज्जिउं णाहलकुलवालें[4] कुहियउं सडियउं जंतें कालें।

बालिका की नाक अपने हाथ से चपटी कर दी। उस भयंकर क्षुद्र ने उसका रूप बुरी तरह नष्ट कर उसे तलघर में डलवा दिया, परन्तु माता ने वहाँ भी सरस आहार के कौर और मीठी वाणी से उस कन्या को बड़ा कर लिया। नवयौवन की शोभावाले स्तनों से वह तिलभर भी भग्न नहीं हुई। आर्या सुव्रता उसे स्वधर्म की प्रेरणा देती है कि आओ चलें, हे सुन्दरी ! तप किया जाय। यह जानकर कि नाक के नष्ट हो जाने से उसका रूप चौपट हो गया है, बालिका ने दर्पण देखा। वह व्रतधारिणी होकर, निकलकर चली गयी। वन में कायोत्सर्ग से स्थित हो गयी। धुले हुए वस्त्रों को पहिने हुए हाथ ऊँचे किए हुए वह जिनदेव का ध्यान करने लगी। वह चारों ओर से फलों से लाद दी गयी और—भीलों तथा शबरों ने उसकी पूजा की।

घत्ता—वे लोग अपने-अपने घर चले गये। कन्या अकेली वहाँ असुरक्षित रह गयी। वन में अर्हन्त भगवान का स्मरण करती हुई उसे बाघ ने खा लिया।

(5)

अपने किए हुए पुण्य से, वह स्वर्ग गयी। परन्तु निर्मल मणि के समान पवित्र हाथ की तीन अँगुलियाँ किसी प्रकार बच गयीं। भील-कुलों के पालकों ने उनकी पूजा की। समय बीतने पर उक्त अँगुलियाँ सड़

---

2. P दिण्णेदिलियहो। 3. P रूउ। 4. S विणासवि। 5. B दसत्ति। 6. AP सुधम्मु। 7. A सुंदरु। 8. P रूउ। 9. S जाणवि। 10. B णिग्गय सायय°। 11. S होयवि। 12. S पमायवि। 13. A धोइयधवलंबर°। 14. B चउहं मि; S चउहुं मि। 15. BPS °सवर°। 16. B एकल्ली।

(5) 1. A °वरुममलिण°; B °घोर अमलिण°; P °यरु घरुममलिण°; S °घरममलिण°। 2. B उद्धरियं। 3. PS कहिं पि। 4. B कुलवालें; P कुलपालें।

अंगुलियाउ ताहि संकप्पिवि [5]लक्कडलोह[6]विरइउ[7] थप्पिवि।
गंधफुल्लचरुयहिँ[8] मणमोहें पुणु तिसूलु पुज्जिउ सवरोहें।
दुग्ग विंझवासिणि तहिं हूई मेसहं महिसहं णं जमदूई।
एत्तहि केसउ[9] माणियभोयहि णंदें [10]जाइवि दिण्णु जसोयहि।
णं मंगलणिहिकलसु मणोहरु सुहिकरकमलहं णं इंदिंदिरु।
णं थणघडहं तमालदलोहरु छज्जइ [11]माहउ माहउ जेहउ।
दामोयरु दुत्थियचिंतामणि[12] समरगहीरवीरचूडामणि।
अरिणरमहिहरिंदसोदामणि जणवसियरणकरणविज्जामणि।
पविउलभुवणंभोरुहदिणमणि[13] णियवि[14] पुत्तु हरिसिय गोसामिणि।
घिप्पइ[15] णाहु पसारियहत्थहिं णंदगोवगोवालिणिसत्थहिं।

घत्ता—गाइउ [16]कलरवहिं आलाविउ ललियालावहिं।
वड्ढइ महुमहणु[17] कइगंथु जेम रसभावहिं ॥5॥

(6)

दुवई—धूलीधूसरेण [1]वरमुक्कसरेण तिणा मुरारिणा।
कीलारसवसेण गोवालयगोवीहियहारिणा ॥ छ ॥

गयीं। शबर समूह ने लकड़ी और लोहे से निर्मित उसकी अंगुलियों को संकल्पित और स्थापित कर उनकी तथा त्रिशूल की भी गन्ध-पुष्प और नैवेद्य से पूजा की। वहीं विन्ध्यवासिनी दुर्गा उत्पन्न हुई जो मानो मेढ़ों और भैंसों के लिए यमदूती थी। वहाँ पर नन्द ने केशव (कृष्ण) को भोगों के लिए मनानेवाली यशोदा को दे दिया, मानो वह मंगलनिधियों का सुन्दर कलश हो, मानो सुधियों के कर-कमलों पर भ्रमर हो, मानो स्तनरूपी घड़ों पर तमालपत्र हो। माधव (कृष्ण) माधव (विष्णु) के समान शोभित हैं। दामोदर दुस्थितों के लिए चिन्तामणि हैं, युद्ध में गम्भीर श्रेष्ठ योद्धा हैं, शत्रुरूपी महीश्वरों के लिए सौदामिनी (बिजली) हैं, लोगों को वश में करने के लिए विद्यामणि हैं और विशाल विश्वरूपी कमल के लिए सूर्य हैं। पुत्र को देखकर माँ हर्षित हो उठी। नन्दगोप और ग्वालिनों का समूह हाथ फैलाकर स्वामी को ग्रहण करता है।

घत्ता—कलरवों में गाये गये सुन्दर आलापों में आलापित किये गये मधुमथन (कृष्ण) उसी प्रकार बढ़ने लगते हैं, जिस प्रकार रसभावों से कविग्रन्थ।

(6)

धूल-धूसरित, श्रेष्ठ मुक्त स्वरवाले तथा गोप-गोपियों के हृदय को चुरानेवाले मुरारी ने क्रीड़ा-रस के बहाने

5. S लक्कुड° | 6. BP °लोहें | 7. P विरइय | 8. AP गंधधूयचरु°; BS गंधपुप्फचरु° | 9. S केसवु | 10. P जायवि | 11. S माहवु माहवु | 12. B adds after 11 a : अणुदिणु परिणियसइ सुहियणमणि | 13. A °भवणंभो° | 14. P णिएवि | 15. APS घेप्पइ | 16. BP कलरवेहिं | 17. A महमहणु |
(6) 1. A वरमुक्क°; S वरमुक्कु |

रंगंतेण रमंतरमंतें मंथउ धरिउ भमंतु अणंतें।
मंदीरउ तोडिवि [2]आवड्डिउं अद्धविरोलिउं दहिउं पलोट्टिउं।
का वि गोवि गोविंदहु लग्गी एण महारी [3]मंथणि भग्गी।
एयहि मोल्लु[4] देउ आलिंगणु णं तो मा[5] मेल्लहु मे पंगणु।
काहि वि गोविहि पंडुरु[6] चेलउं हरितणुतेएं जायउं कालउं।
मूढ[7] जलेण काइं[8] पक्खालइ णियजडत्तु सहियहिं[9] दक्खालइ।
थण्णरहिच्छिरु छायावंतउ [10]मायहि संमुहुं परिधावंतउ।
[11]महिससिलंबउ[12] हरिणा[13] धरियउ [14]ण करणिबंधणाउ णीसरियउ।
दोहउ दोहणहत्थु समीरइ मुइ मुइ माहव कीलिउं पूरइ।
कत्थइ अंगणभवणालुद्धउ [15]बालवच्छु बालेण णिरुद्धउ।
[16]गुंजाझेंदुयरइयपओएं[17] मेल्लाविउ दुक्खेहिं [18]जसोएं।
कत्थइ लोणियपिंडु णिरिक्खिउ कण्हें कंसहु णं जसु भक्खिउं।

घत्ता—पसरियकरयलेहिं[19] सद्दंतिहिं [20]सुइसुहकारिणिहिं[21]।
भांडइ णियडि थिए घरयम्मु ण लग्गइ णारिहिं ॥6॥

चलते-चलते घूमती हुई मथानी पकड़ ली और लोहे की साँकल को तोड़कर फेंक दिया। अधबिलोया दही उलट दिया। कोई गोपी गोविन्द के पीछे लग गयी कि इसने मेरी मथानी तोड़ दी है। इसका मूल्य ये मुझे आलिंगन दें, या फिर मेरे आँगन को न छोड़ें। किसी गोपी का सफेद वस्त्र कृष्ण के शरीर की कान्ति से काला हो गया। वह मूर्ख जल से उसे धोती है और इस प्रकार अपनी मूर्खता सखियों को बताती है। दूध के स्वाद की इच्छा रखनेवाले भूखे, माँ के सम्मुख दौड़ते हुए भैंस के बच्चे को कृष्ण ने पकड़ लिया। वह उनकी हाथ की पकड़ से नहीं निकल पाता है। दुहनेवाला दुहने का पात्र हाथ में लिये हुए प्रेरित करता है। (कृष्ण से कहता है)—खेल पूरा हो गया, हे माधव इसे छोड़ो। कहीं आँगन में भवन के लोभी छोटे से बछड़े को बालक ने रोक लिया। तब यशोदा ने घुंघची की गेंद के प्रयोग द्वारा बड़ी कठिनाई से उसे छुड़ाया। वहीं कृष्ण ने नवनीत का पिण्ड रखा देखा और उन्होंने कंस के यश के समान उसे खा लिया।

घत्ता—कानों को सुन्दर लगनेवाले मधुर स्वरों में गाती हुई और हाथ फैलाई हुई स्त्रियों का (कृष्ण के निकट रहने पर) गृहकार्य में मन नहीं लगता।

2. P आवड्डिउं। 3. A मंथिणि; S मत्थणि। 4. B मुल्लु। 5. A मं मेल्लउ घरपंगणु; P मह पंगणु; S मेल्लउ मे पंगणु। 6. P पंडरु। 7. A मूढि। 8. B का वि। 9. AS सहियइं; P सहियहुं। 10. P मायए। 11. ABPS महिसि°। 12. BP °सिलिंबउ। 13. AP सिसुणा। 14. P णउ करबंधणाउ। 15. P वत्तलु वत्थु। 16. AB °झिंदुअ। 17. APS °पओवए। 18. APS जसोयए। 19. A °करयलइं सद्दंतहिं। 20. P °सुहिसुह°। 21. APS °कारिहिं।

(7)

दुवई—णउ भुंजंति गोव कयसंसय णिज्जियणीलमेहइं।
केसवकायकंतिपविलित्तइं दहियइं अंजणाहइं।।छ।।
घयभायणि[1] अवलोइवि[2] भावइ   णियपडिबिंबु विट्ठु बोल्लावइ।
हसइ णंदु लेप्पिणु अवरुंडइ   तहु उरयलु परमेसरु मंडइ।
अम्माहीरएण तं दिज्जइ[3]   णिद्दंधइयउ परियंदिज्जइ[4]।
हल्लरु हल्लरु जो जो भण्णइ   तुज्झु पसाएं होसइ उण्णइ।
हलहरभायर वेरिअगोयर[5]   तुहुं सुहुं सुयहि देव दामोयर।
तहु घोरंतहु णहयलु[6] गज्जइ   सुत्तविउद्धु[7] ण केण[8] लइज्जइ।
पुहइणाहु किर कासु ण वल्लहु   अच्छउ णरु सुरहं मि सो[9] दुल्लहु।
पियलियपयकिलेससंतावें   पसरंतें तहु पुण्णपहावें।
णंदहु केरउ गोउलु णंदइ[10]   महुरहि णारि मसाणइ[11] कंदइ[12]।
महि कंपइ पडंति णक्खत्तइं   सिविणंतरि भग्गइं [13]णिवछत्तइं।
घत्ता—णियवि[14] जलंति दिस कंसें विणएण णियच्छिउ।
जोइससत्थणिहि दिउ वरुणु [15]णाम आउच्छिउ ॥7॥

---

(7)

कृष्ण की देह की कान्ति से विलिप्त, मेघों को भी जीतनेवाले, अंजन के समान काले दही में संशय करते हुए गोप उसे नहीं खाते। घी के बर्तन में अपना प्रतिबिम्ब देखकर कृष्ण को अच्छा लगता है, विष्णु उसे बुलाते हैं। यह देखकर नन्द हँसते हैं और लेकर बालक का आलिंगन करते हैं। उनके वक्षस्थल पर कृष्ण शोभित हैं। 'जो-जो' की लोरी सुनकर वह सोते हैं और नींद से उठने पर हाथों-हाथ लिये जाते हैं। तुम्हारे प्रसाद से उन्नति होगी। हे शत्रुओं के लिए अगोचर ! हलधर के भाई दामोदर आज सुख से सोएँ। उनके घुर-घुर करने पर आकाश गरज उठता है। सोकर उठने पर वह किस-किसके द्वारा नहीं लिये जाते ! (अर्थात् उसे सभी लेते हैं) पृथ्वीनाथ भला किसके लिए प्रिय नहीं हैं ! मनुष्य की बात छोड़िए वह देवताओं के लिए भी प्रिय हैं। प्रजा के क्लेश और सन्ताप को नष्ट करनेवाले उनका पुण्य-प्रभाव फैलने पर नन्द के गोकुल में आनन्द मनाया जाता है; जबकि मथुरा की स्त्रियाँ मरघट में विलाप करती हैं, धरती काँपने लगती है, नक्षत्र टूटने लगते हैं। स्वप्न में राजा कंस का नृपछत्र भंग हो जाता है।

घत्ता—दिशाओं को जलते हुए देखकर कंस ने विनयपूर्वक, ज्योतिषशास्त्र के निधि वरुण नाम के द्विज से पूछा—

---

(7) 1. B °भाइणि। 2. P अवलोयवि; S अवलोवइ। 3. AP णंदिज्जइ। 4. AP परिअंदिज्जइ। 5. AP वइरियगोयर; S वइरिअगोयर। 6. A णयलु। 7. AP Als. सुत्तु विउद्धु; B उट्ठु विउद्धु। 8. B केण वि णज्जइ। 9. P सुदुल्लहु। 10. P णंदउ। 11. P मसाणहि। 12. A कंदउ। 13. ABP णिवछत्तइं। 14. P णिएवि। 15. A णाउं।

(8)

दुवई—भणु भणु चंदवयण जइ जाणसि[1] जीवियमरणकारणं।
मह कह विहिवसेण इह होही असुहसुहावयारणं ॥ छ ॥

किं उप्पाय जाय किं होसइ तं निसुणेवि णिमित्तिउ[3] घोसइ।
तुज्झु णराहिव बलसंपुण्णउ[4] गरुयउ[5] को वि सत्तु उप्पण्णउ।
ता चिंतवइ कंसु हयछायउ हउं जाणमि[6] असच्चु रिसि जायउ।
हउं जाणमि सससुय विणिवाइय हउं जाणमि महुं अत्थि ण दाइय।
हउं जाणमि महिवइ अजरामरु हउं जाणमि अम्हहं[7] किर को परु।
हउं जाणमि पुरि महु णउ णासइ णवर कालु[8] कं किर ण गवेसइ।
इय चिंतंतु जाम विद्दाणउ तिलु तिलु झिज्जइ[9] हियवइ राणउ।
सव्वाहरणविहूसियगत्तउ ता[10] तहिं देवियाउ संपत्तउ।
ताउ भणंति भणहि किं किज्जइ को रुंधिवि बंधिवि आणिज्जइ।
को[11] मारिज्जइ को वसि किज्जइ किं वसि करिवि वसुह तुह दिज्जइ।
हरि बल मुएवि कहसु को जिप्पइ को लोट्टिवि दलवट्टिवि घिप्पइ।

घत्ता—भणइ णराहिवइ रिउ[12] कहिं मि एत्थु महु अच्छइ।
सो तुम्हइं[13] हणहु तिह जिह[14] जमणयरहु गच्छइ ॥8॥

(8)

"हे चन्द्रमुखि ! बताओ, यदि तुम जीवन और मृत्यु का कारण जानते हो। बताओ, मुझे शुभ और अशुभ की अवतारणा किस प्रकार होगी ? यह क्या उत्पात हो रहा है ? क्या होगा ?" यह सुनकर ज्योतिषी कहता है—"हे नराधिप ! तुम्हारा बल से परिपूर्ण कोई महान् शत्रु उत्पन्न हो गया है।" तब क्षीण-कान्ति कंस विचार करता है—'मैं समझता था कि मुनि का कहा हुआ झूठ हो गया। मैं जानता था कि बहिन के पुत्र मारे गये। मैं जानता था कि मेरा अब कोई दुश्मन नहीं है। मैं जानता था कि राजा अजर-अमर है। मैं जानता था कि मेरा बैरी कौन हो सकता है। मैं जानता था कि मेरी नगरी नष्ट नहीं होगी। लेकिन नहीं, काल किसे नहीं खोजता?'

वह सोचते हुए जब वह दुखी हो उठा, और अपने हृदय में तिल-तिल जलने लगा, तब सब प्रकार के आभरणों से अलंकृत देहवाली देवियाँ वहा आयीं। वे बोलीं, "बताओ हम क्या करें, किसे रोककर बाँधकर लाएँ, किसे मारा जाये, किसे वश में किया जाए ? क्या धरती वश में कर तुम्हें दी जाए ? बलभद्र और नारायण को छोड़कर, कहो किसे जीता जाए ? किसे लुण्ठित और चकनाचूर किया जाए ? किसे पकड़ा जाये ?

घत्ता—राजा कंस कहता है—"यहीं कहीं मेरा शत्रु है, तुम लोग उसे इस प्रकार मार डालो कि जिससे वह यमनगरी के लिए चला जाए।"

(8) 1. A जाणसु। 2. A महु कइया भविस्सिही णिच्छिउ असुहरणावयारणं; P मह कइया भविस्सिहीदि णिच्छउ असुहरणावयारणं; 3. AS णेमित्तिउ। 4. AB °संपण्णउ। 5. B गरुयउ; S गरुयउ। 6. S जाणवि throughout. 7. AP अम्हहं को किर परु। 8. ABPS किं किर। 9. A छिज्जइ 10. A ता पवर्णंति देविउ थिरगत्तउ। 11. A सरहिं वि दिज्जइ को मारिज्जइ; P सरहिं विहिज्जइ को मारिज्जइ। 12. AP रिउ एत्थु कहिं मि; S रिउ कहिं वि एत्थु। 13. A तुम्हह हणह। 14. S जिय।

(9)

दुवई—कहियं देवियाहिं जो णंदणिहेलणि वसइ बालओ।।
सो पइं [1]णिव भंति कं दिवसु वि मारइ मच्छरालओ।।छ।।

जाणिइ अरिवरि ता तहिं अवसरि।
कंसाएसें मायावेसें।
बल मायाविणि धाइय जोइणि।
वच्छरवाउलु गय तं गोउलु।
जयसिरितण्हहु णवमहु कण्हहु।
पासि पवण्णी झ त्ति णिसण्णी।
पभणइ पूयण हे[2] महुसूयण।
पियगरुडद्धय आउ थणद्धय।
दुद्धरसिल्लउ पियहि थणुल्लउ।
तं आयण्णिवि चंगउं मण्णिवि।
चुयपयपंडुरि वयणु [3]पओहरि।
हरिणा णिहियउं [4]राहुं गहियउं।
णं ससिमंडलु सोहइ थणयलु।
सुरहियपरिमलु णं णीलुप्पलु।
सियकलसुप्परि विंभिउ[5] मणि हरि।
कडुएं खीरें जाणिय वीरें।
जणणि ण मेरी विप्पियगारी।
जीवियहारिणि रक्खसि [6]वइरिणि[7]।

(9)

तब देवियों ने कहा—"नन्द के घर में जो बालक रहता है, हे राजन् ! इसमें सन्देह नहीं, एक दिन ईर्ष्या से भरा हुआ वह तुम्हें मारेगा।" शत्रुवर को जान लेने पर उस अवसर पर कंस के आदेश से मायावी रूप में बलयुक्त योगिनी दौड़ी और बछड़ों के स्वर से संकुल गोकुल में पहुँची। वह विजय और लक्ष्मी के आकांक्षी नौवें नारायण कृष्ण के पास गयी और पास में बैठ गयी। पूतना कहती है—"हे मधुसूदन ! हे गरुड़ध्वज ! हे पुत्र ! दूध से रिसते मेरे स्तन को पी लो।" यह सुनकर और अच्छा समझकर, गिरते हुए दूध से सफेद स्तन में उन्होंने मुख दिया, मानो राहु द्वारा ग्रस्त चन्द्रमण्डल हो। वह स्तनमण्डल ऐसा शोभित हो रहा था, मानो सुरभित परिमलवाला नीलोत्पल हो जो श्वेत कलश पर रखा हुआ है। अपने मन में विस्मित हुए हरि ने कडुए दूध से जान लिया कि यह मेरी माँ नहीं है, यह तो कोई बुरा करनेवाली, जीवन का अपहरण

---

(9) 1. K णिव। 2. AP अहो। 3. P पओहरे। 4. P राहु व। 5. S विम्हिउ। 6. P वयरिणि; S वेरिणि। 7. A adds after 20 b : कूरवियारिणि, मायाजोइणि; B adds it in second hand.

अज्जु जि [8]मारमि पलउ समारमि[8]।
इय चिंतंतें रोसु वहंतें।
माणमहंतें[9] भिउडि करंतें।
लच्छीकंतें देवि अणंतें।
दंतहिं[10] पीडिय [11]मुट्ठिइ ताडिय।
दिट्ठिइ[12] तज्जिय थामें णिज्जिय।
अणु[13] वि ण मुक्की णहहिं[14] विलुक्की।
खलहि रसंतहि सुण्णु[15] हसंतहि।
भीमें बालें कयकल्लोलें।
लोहिउं सोसिउं पलु आकरिसिउं।
दाणवसारी भणइ भडारी।
हियरुहिरासव मुइ मुइ केसव।
णंदाणंदण मेल्लि जणद्दण।
कंसु ण सेवमि रोसु[16] ण दावमि।
जहिं तुहुं अच्छहि कील समिच्छहि।
तहिं णउ [17]पइसमि [18]छलु ण गवेसमि।

घत्ता—इय रुयंति कलुणु कह कह व [19]गोविंदें मुक्की
गय देविय कहिं मि पुणु णंदणिवासि[20] ण ढुक्की ॥9॥

करनेवाली दुष्ट राक्षसी है। इसे मैं आज ही मारता हूँ, प्रलय प्रारम्भ करता हूँ।

यह सोचते हुए और क्रोध करते हुए, मान से महान् भौंहें चढ़ाते हुए लक्ष्मीकान्त अनन्त ने उस देवी को दाँतों से पीड़ित किया, मुट्ठी से प्रताड़ित किया, दृष्टि से डाँटा और शक्ति से जीत लिया। अणु बराबर भी उसे नहीं छोड़ा। वह आकाश में छिप गयी। क्रीड़ा करते हुए उस भीम बालक ने दुष्ट बोलती हुई, शून्य में हँसती हुई उसका मुख सोख लिया, मांस खींच लिया। तब दानवीश्रेष्ठ वह बेचारी कहती है, "हे केशव ! हृदय के रुधिरासव को छोड़ो, नन्द को आनन्द देनेवाले हे जनार्दन ! मुझे छोड़ दो, मैं कंस की सेवा नहीं करूँगी, क्रोध नहीं दिखाऊँगी, जहाँ तुम रहते हो और क्रीड़ा करते हो, वहाँ मैं प्रवेश नहीं करूँगी, छल नहीं करूँगी।

घत्ता--इस प्रकार करुण रोती हुई उसे गोविन्द ने बड़ी कठिनाई से छोड़ा। वह देवी अन्यत्र चली गयी। और फिर कभी नन्द के निवास-स्थान पर नहीं आयी।

---

8. S मारेमि, समारंभि। 9. P माणह मंत। 10. B दंतिहिं। 11. BP मुट्ठिहिं; S मुट्ठिए। 12. B दिट्ठिए। 13. AP खणु वि। 14. P णहेहिं। 15. AP तहि असहन्तिहि। 16. S दोसु। 17. S पइसमि। 18. S छल्लु समासमि। 19. APS उविंदें। 20. APS °णिवासु।

(10)

दुवई—वरकाहलियवंसरवबहिरिए[1] पाइयगेयरससए[2]।
[3]रोमंथंतथक्कगोमहिसिउलसोहियपएसए[4] ॥ छ ॥

[5]अण्णहिं पुणु दिणि तहिं णियपंगणि[6]।
जणमणहारी रमइ मुरारी।
घोट्टइ खीरं लोट्टइ णीरं।
भंजइ कुंभं पेल्लइ डिंभं।
छंडइ[7] महियं चक्खइ दहियं।
कड्डइ चिंच्चिं धरइ चलच्चिं[8]।
इच्छइ केलिं[9] करइ दुवालिं[10]।
तहिं अवसरए कीलाणिरए।
कयजणराहे पंकयणाहे।
रिउणा सिट्ठा देवी दुट्ठा।
अवरा घोरा सयडायारा।
पत्ता गोट्ठं गोवइइट्ठं[11]।
चक्कचलंगी दलियभुयंगी।
उप्परि एंती[12] पलउ करंती।
दिट्ठा तेणं महुमहणेणं[13]।
पाएं[14] पहया णासिवि[15] विगया।
रविकिरणावहि[16] अवरदिणावहि[17]।

(10)

जो श्रेष्ठ काहल और बाँसुरी के शब्दों से वधिर है, जिसमें सैकड़ों रसपूर्ण गीत गाये जा रहे हैं, जो जुगाली कर बैठी हुई गाय-भैंसों के कुल से शोभित है, ऐसे अपने प्रांगण में एक दिन जनमन के लिए सुन्दर मुरारी क्रीड़ा करते हैं। दूध गिराते हैं, पानी लुढ़का देते हैं, घड़ा फोड़ देते हैं। दही चखते हैं, आग निकालते हैं, उसकी ज्वाला पकड़ते हैं, क्रीड़ा की इच्छा करते हैं, गोलाकार बनाते हैं। उस अवसर पर, लोगों की शोभा बढ़ानेवाले कमलनाथ श्रीकृष्ण जब खेलने की इच्छा करते हैं, तब शत्रु द्वारा निर्मित एक और भयंकर दुष्ट देवी शकट के आकार में, नन्द की अत्यन्त प्रिय गोठ पर पहुँची। चक्कों के समान चलते हुए अंगोंवाली, साँपों को कुचलती हुई, ऊपर आती हुई, प्रलय मचाती हुई उसे मधुमथन कृष्ण ने देखा। पैर से आहत किया, वह नष्ट होकर सूर्य की किरणों के मार्ग से भाग खड़ी हुई।

(10) 1. A °काहलेय°; BS °काहिलय° । 2. AP गाइयगोयरसए । 3. B रोमंथक्कबहुलगो° । 4. P °महिसीउल°; S °महिसिउले । 5. A अण्णहिं पि दिणे; P अण्णंम्मि दिणे । 6. AP णियभवणे । 7. PS छड्डइ । 8. A चलच्चिं । 9. B केली । 10. B दुवाली; PS दुवालिं । 11. S गोवइ° । 12. BS यंती । 13. A महमहणेणं । 14. P पाएण हया । 15. P णासेवि गया । 16. P °किरणहे । 17. P अवरम्मि अहे ।

इंदाइणिए[18] पियचारिणिए[19]।
दिहिचोरेण[20] दढडोरेण[21]।
पबलबलालो बद्धो बालो।
उद्दूखलए[22] णिहियउ[23] णिलए।
सीयसमीरं तीरिणितीरं।
सिसुकयछाया विगया माया।
ता सो दिव्वो अव्वो अव्वो।
इय सद्दंतो [24]परियट्टंतो।
तमुदूहलयं[25] पयणियपुलयं[26]।
णवकयकण्हहु[27] जयजसतण्हहु[28]।
जाणियमग्गो पच्छइ[29] लग्गो।
अरिविज्जाए गयणयराए।
ता परिमुक्कं णियडे[30] ढुक्कं।
मारुयचवलं तरुवरजुयलं।
अंगे घुलियं भुयपडिखलियं।
कीलंतेणं विहसंतेणं।
बलवंतेणं सिरिकंतेणं[31]।

घत्ता—होइवि तालतरु रंगतहु पंहि तडितरलइं।
रक्खसि[32] केसवहु सिरि घिवइ कढिणतालहलइं[33] ॥10॥

एक-दूसरे दिन सबेरे, प्रिय के साथ जाती हुई यशोदा ने धैर्य को चुरानेवाली मजबूत रस्सी से, प्रबल बलवाले उस बालक को ओखली से बाँध दिया और घर में डाल दिया। वह माँ शीतल समीरवाले यमुनातीर पर, शिशु का उत्सव मनाने के लिए चली गयी। तब वह दिव्य (बालक) 'अम्मा, अम्मा' कहता हुआ और रोमांच उत्पन्न करनेवाली उस ओखली को खींचता हुआ, मार्ग जानता हुआ उसके पीछे लग गया। तब आकाशचारी शत्रुविद्या के द्वारा मुक्त पवन से चंचल वृक्षयुगल, नवीन पुण्य से युक्त और जय के यश के आकांक्षी उनके निकट पहुँचे। क्रीड़ा करते हुए, हँसते हुए बलवान श्रीकान्त ने शरीर पर गिरते हुए उन्हें (वृक्षयुगल को) बाहुओं से प्रतिस्खलित कर दिया।

घत्ता—तब वह राक्षसी तालवृक्ष बनकर, पथ में खेलते हुए केशव के सिर पर बिजली की तरह शब्द करती हुई कठोर तालफल गिराती है।

---

18. AP णंदाणीए। 19. AP पियघरणीए। 20. A दहिचोरेणं। 21. A दड्डोरेणं। 22. P उड्डुक्खलए; S उडुक्खलए। 23. P णिहियो; S णिहिओ। 24. AP परियंदंतो; B परिअट्टंतो; S परिपट्टंतो। 25. B तमदूहल°। 26. A पयलिय°; B पयणव°। 27. A णवयतण्हो; P धणपयतण्हो। 28. AP सहसा कण्हो। 29. AP पच्छा लग्गो। 30. AP साहगुरुक्कं। 31. B सिरकंतेणं। 32. B रक्खसे। 33. PS °ताडहलइं।

(11)

दुवई—सिरिरमणीविलासकीलाघरि[1] वच्छयले घडंतइं।
णं अरिवरसिराइं विहिलुक्कइं दसदिसिवहि[2] पडंतइं ॥छ ॥

ताइ इच्छए[3] सो पडिच्छए[4]।
पंजलीयरी कीलणायरी।
गयणसंचुए णाइ झिंदुए[5]।
ता महारवा तिव्वभेरवा[6]।
पुंछलालिरी[7] कण्णचालिरी।
धाइया खरी विंभिओ[8] हरी।
उल्ललंतिया णहि मिलंतिया[9]।
वेयवंतिया दीहदंतिया।
उवरि एंतिया[10] धाउ देंतिया[11]।
णंदवासिणा जायवेसिणा।
आहया उरे धारिया खुरे।
मेहसंगहे भामिया णहे।
सुट्ठु[12] चाविरी कंसकिंकरी[13]।
तीइ ताडिओ महिहि पाडिओ।
तालरुक्खओ पुणु विवक्खओ।
जगि ण माइओ तुरउ धाइओ।

(11)

लक्ष्मीरूपी रमणी के विलास के क्रीडाघर उनके वक्ष-स्थल पर वे फल इस प्रकार गिरते हैं, मानो विधाता द्वारा काटे गये शत्रुवरों के सिर दसों दिशापथों में गिर रहे हों।

वह फेंकती है, वह झेलते हैं; जैसे वह अंजली बाँधकर आकाश से गिरती हुई तीव्र गेंद में क्रीडारत हों। तब महाशब्द करनेवाली तीव्र और भयंकर पूँछ हिलाती हुई, कान चलाती हुई एक गधी दौड़ी; कृष्ण आश्चर्य में पड़ गये। उछलती हुई, आकाश में मिलती हुई, वेगवती लम्बे दाँतोंवाली, ऊपर आती हुई, आघात पहुँचाती हुई, उसके वक्ष पर नन्दवासी यादवेश ने आहत किया और खुरों को पकड़ कर मेघों के संग्रह से युक्त आकाश में घुमा दिया। खूब चर्वण करनेवाली कंस की दासी, उनसे ताड़ित होकर धरती पर गिर पड़ी। तब तालवृक्ष पराजित हो गया। तब जग में नहीं समाता हुआ अश्व दौड़ा। गम्भीर रूप से हिनहिनाता हुआ

(11) 1. A °विलासि। 2. A °वहपडंतइं। 3. P इच्छिए। 4. P पडियच्छिए। 5. S झेडुए। 6. A भिच्चभइरवा; B तिव्व भइरवा। 7. B पुच्छ°। 8. S विम्हिओ। 9. B मिलिंतिया। 10. BP यंतिया। 11. B दंतिया। 12. AP सुट्ठचाविरी। 13. P °केंकरी।

गहिरहिंसिरो जीवहिंसिरो।
वंकियाणणो[14] णाइ[15] दुज्जणो।
हिलिहिलंतओ महि दलंतओ।
कालचोइओ एंतु[16] जोइओ।
लच्छिधारिणा चित्तहारिणा।
घुसिणपिंजरे बाहुपंजरे।
छुहिवि पीलिओ गयणि[17] चालिओ।
मोडिओ गलो पत्तपच्छलो।
रणि हओ हओ णिग्गओ गओ।

घत्ता—ता जसोय भणिय णइपुलिणइ[18] पाणियहारिहिं।
णंदणु कहिं जियइ जायउ तुम्हारिसणारिहिं ॥11॥

(12)

दुवई—मरुहयमहिरुहेहिं पहि चप्पिउ गद्दह तुरय चूरिओ।
अवरु उदूहलम्मि[1] पइं बद्धउ जाणहुं बालु मारिओ ॥ छ ॥
धाइय[2] तासु[3] जसोय विसंठुल[4] [5]करयलजुयलपिहियचलथणयल[6]।
बद्धउ उक्खलु[7] मेल्लिवि[8] घल्लिउ महु जीविएण[9] जियहि सिसु बोल्लिउ।

और जीवों को मारता हुआ। दुर्जन की तरह वक्रमुख, हिलता-डुलता हुआ, धरती को दलता हुआ और काल से प्रेरित आते हुए उसे, चित्त चुरानेवाली लक्ष्मी के धारक कृष्ण ने देखा। केशर से पीले बाहुपंजर से छूकर और पीड़ित कर उसे आकाश में घुमा दिया। गला मोड़कर, पृष्ठभाग से मिला दिया। युद्ध में आहत अश्व निकलकर भाग गया।

घत्ता—उस समय नदी-तट पर पनहारिनों ने यशोदा से कहा कि तुम जैसी स्त्रियों से जन्मा बालक कैसे जीवित रह सकता है ?

(12)

पवन से आन्दोलित वृक्ष-युगल से पथ में चाँपा गया, गर्दभ और अश्व के द्वारा पीड़ित और तुम्हारे द्वारा ओखली से बाँधा गया बालक, हम समझती हैं, मारा गया। इससे यशोदा अपने दोनों चंचल स्तनों को हाथों से ढकती हुई अस्त-व्यस्त होकर दौड़ी। बँधी हुई ओखल खोल दी। और बोली, "हे पुत्र ! तुम मेरे जीवन से जिओ, नागों, मनुष्यों और देवों से भी अतिशय महान् हरि को मुख में चूमकर उसे कटितल पर उठा

14. B वंकियक्सा° । 15. B णाव । 16. A सो °एइओ । 17. AS गयण° । 18. B °पुलिणए ।
(12) 1. B Als. उदूखणम्मि; P उदूखलम्मि । 2. B धाविय । 3. A ताम; B तामु । 4. B विसंठुलु; P विसंथुल; S दुसंथुल । 5. B °जुवल° । 6. B °थणयलु । 7. S ओक्खलु । 8. P मल्लेवि । 9. BP जीएण ।

फणिणरसुरहं मि अइअइसइयउ [10]हरि मुहि चुंबिवि कडियलि लइयउ।
किं खरेण किं तुरएं दट्ठउ मायइ सयलु अंगु परिमट्ठउं।
अण्णहिं दिणि रच्छहि कीलंतहु वालहु [11]बालकील दरिसंतहु।
दुट्ठु अरिट्ठदेउ विसवेसें [12]आइउ महुरावइआएसें।
सिंगजुयलसंचालियगिरिसिलु[13] [14]खरखुरग्गउक्खयधरणीयलु।
सरवरवेल्लिजालविलुलियगलु कमणिवायकंपावियजलथलु।
गज्जियरवपूरियभुवणंतरु[15] हरवरवसहणिवहकयभयजरु[16]।
ससहरकिरणणियरपंडुरयरु [17]गुरुकेलाससिह[18]रसोहाहरु[19]।
किर झड णिविड[20] देइ आवेप्पिणु ता कण्हें भुयदंडें[21] लेप्पिणु।
मोड़िउ कंठु[22] कड त्ति विसिंदहु को पडिमल्लु तिजगि गोविंदहु।

घत्ता—ओहमियधवलु हरि[23] गोउलि[24] धवलहिं[25] गिज्जइ।
धवलाण वि धवलु कुलधवलु केण ण थुणिज्जइ ॥12॥

(13)

दुवई—ता कलयलु सुणंति गोवालहं पणयजलोहवाहिणी।
सुयविलसिउ मुणंति णिग्गय णियगेहहु णंदगेहिणी ॥छ॥

लिया। माँ ने उसका समूचा शरीर छुआ कि कहीं गधे या घोड़े ने काटा तो नहीं। एक दूसरे दिन, जब बालक गली में खेलता हुआ अपनी बालक्रीड़ा का प्रदर्शन कर रहा था कि मथुरापति के आदेश से दुष्ट अरिष्ट देव बैल के रूप में आया। वह अपने दोनों सींगों से शिलातल को संचालित कर रहा था। तीखे खुरों से धरणी-तल को उखाड़ रहा था, उसका गला सरोवरों के लताजाल से लदा हुआ था। पैरों की चपेट से धरती को कँपा रहा था। गर्जना के शब्द से भुवनान्तर को गुँजा रहा था, शिव के नन्दी बैल को भय उत्पन्न कर रहा था, जो चन्द्रमा के किरणसमूह के समान सफेद था, महान् कैलाश-शिखर की शोभा को धारण कर रहा था। (ऐसा वह) शीघ्र आकर जैसे ही आक्रमण करना चाहता था कि कृष्ण ने अपने बाहुदण्ड पर लेकर, उस वृषभेन्द्र का, कड़-कड़ करके गला मोड़ दिया। गोविन्द के समान त्रिलोक में प्रतिमल्ल कौन है ?

घत्ता—धवल बैल को पराजित करनेवाले हरि का, गोकुल में धवल गीतों में गान किया जाता है। धवलों में धवल (श्रेष्ठों में श्रेष्ठ) धवल कुल की गान-स्तुति किसके द्वारा नहीं की जाती ?

(13)

तब, प्रणयरूपी जलसमूह की वाहिनी (नदी) नन्द की गृहिणी यशोदा गोपाल बालकों की कल-कल ध्वनि सुनती हुई और अपने पुत्र की करतूत जानती हुई अपने घर से निकली। माँ बोली—"आपत्ति में फँसा हुआ

---

10. A हरिमुहु चुंबिवि। 11. AP बाललील। 12. PS आयउ। 13. AP °संचालियाचिरसिल। 14. A °खुरग्गखयधरणीयलु। 15. A गज्जणरव°। 16. A हयचर°। 17. P गुरु केलास°; Als. गिरिकेलास°। 18. S °सिहरि°। 19. B सोहावरु। 20. P णिवड। 21. PS °दंडहिं। 22. A कंधु। 23. P हरे। 24. B गोउल°। 25. B धवलिहिं।

भणइ जणणि[1] ण दुआलिहि थयउ पुत्तु ण रक्खसु कुच्छिहि जायउ।
किह वलद्दु[2] मोडिउ[3] ओत्थरियउ दइववसें सिसु सइं उव्वरियउ।
हरिखरवसहहिं[4] सहुं सुउ जुज्झइ जणु जोवइ[5] महु हियवउं डज्झइ।
केत्तिउं मइं कुमार संतावहि आउ जाहुं[6] घरु बोल्लिउं भावहि।
तेयवंतु तुहुं पुत्त णिरुत्तउ रक्खहि अप्पाणउं करि वुत्तउं।
परमहि भडकोडिहि आरूढउ बाहुबलेण बालु जणि रूढउ[7]।
महुरापुरि घरि घरि वण्णिज्जइ णंदगोट्ठि पत्थिवहु कहिज्जइ।
तहु देवइमायरि उक्कंठिय पुत्तसिणेहें[8] खणु[9] वि ण संठिय।
गोमुहकूवउ[10] सहउ वउत्थी लोयहु मिसु मंडिवि वीसत्थी।
चलिय णंदगोउलि[11] सहुं णाहें सहुं रोहिणिसुएण चंदाहें।

घत्ता—मायइ महुमहणु बहुगोवहं मज्झि णिरिक्खिउ।
बयपरिवेढियउ कलहंसु जेम ओलक्खिउ ॥13॥

(14)

दुवई—हरि भुयजुवलदलियदाणवबलु[1] णवजोव्वणविराइओ[2]।
उग्गयपउरपुलय पडहच्छें वसुएवेण[3] जोइओ ॥ छ ॥

तू पुत्र नहीं, राक्षस है जो मेरी कोख से जन्मा है। आते और क्रुद्ध होते हुए बैल को तूने क्यों मोड़ा ? दैव के अधीन बालक स्वयं बच गया। वह (मेरा लाल) घोड़ा, गधा और बैल से स्वयं लड़ता है। लोग तमाशा देखते रहते हैं। उससे मेरा जी जलता है। हे कुमार ! तू मुझे कितना सताएगा ? आओ घर चलें, मेरी बात मान। हे पुत्र ! तुम निश्चित ही तेजस्वी हो। अपनी रक्षा करो, मेरा कहा मानो। तुम श्रेष्ठ करोड़ों योद्धाओं में प्रसिद्ध और बाहुबल के कारण लोगों में बाल नाम से प्रसिद्ध हो। मथुरापुरी के घर-घर और नन्द गोष्ठी में तुम्हारा वर्णन किया जाता है। राजा से भी कहा जाता है (तुम्हारे विषय में)। उसकी देवकी माता भी उत्कण्ठित हो जाती है, पुत्र के स्नेह के कारण एक क्षण भी ठहर नहीं पाती। व्रत में स्थित गोमुखकूप व्रत करती हुई लोगों से बहाना बनाती हुई, विश्वस्त होकर अपने स्वामी (वसुदेव) और चन्द्रमा के समान बलराम के साथ वह नन्द-गोकुल के लिए चली।

घत्ता—माता ने बहुत से ग्वाल-बालों के बीच कृष्ण को इस प्रकार देखा, जैसे बगुलों से घिरा हुआ कलहंस हो।

(14)

अपने भुजबल से दानव-दल का दलन करनेवाले, नवयौवन से शोभित और अत्यन्त रोमांचित हरि को वसुदेव ने शीघ्र ही देखा। बलराम ने शिशुक्रीडा की धूलि से धूसरित अपने भाई का दृष्टि से ही आलिंगन

---

(13) 1. A जणणि दुआलिहि णो थायउ। 2. P वलद्दु; S वलद्दुु। 3. P मोडिय उत्थ°। 4. PS हयखर°। 5. AS जोयइ; P जोयउ। 6. B जाहं घरि। 7. ABP add after 8 b : कंसु ण जाणइ किं मणि घुट्ठउ; K gives it but scores it off; BP add further जयसिरिमाणणु (B माणणि) जायउ पोढउ। 8. S पुत्तसणेहें। 9. AP कहं मि ण संठिय। 10. P गोमुहुं कु वि वउ; S गोमुहु कूवउ। 11. APS णंदउलु।

(14) 1. PS °जुयल°। 2. P °जोवण°। 3. P वसुदेवेण।

भायरु सिसुकीलारयरंगिउ[4] हलहरेण दिट्ठिइ आलिंगिउ।
भुयजुयलउं पसरंतु णिरुद्धउं जायउं हरिसें अंगु सिणिद्धउं।
चिंतिवि तेण कंसपेसुण्णउं[5] आलिंगणु देंतेण ण दिण्णउं।
गाढसिणेहवसेण णवंतइ[6] आणाविय रसोइ गुणवंतइ।
गंधफुल्लदीवउ[7] संजोइउ भोयणु मिट्ठउं मायइ ढोइउं।
अल्लयदलदहिओल्लियकूरहिं मंडयपूरणेहिं[8] घियपूरहिं[9]।
णाणाभक्खविसेसहिं जुत्तउं सरसु भाविभूणाहें[10] भुत्तउं।
सिरि णिबद्धवेल्लीदलमालहं कंचणदंड दिण्ण गोवालहं।
सुण्हइं[11] मउदेवंगइं वत्थइं भूसणाइं मणिकिरणपसत्थइं।
पुणु जणणिइ तिपयाहिण देंतिइ तणयहु उप्परि[12] खीरु[13] सवंतिइ।

घत्ता—पोरिसरयणणिहि [14]गुणगणविंभावियवासउ[15]।
कुलहरलच्छियइ णं सइं अहिसित्तउ केसउ[16] ॥14॥

(15)

दुवई—दीसइ णंदणंदु[1] णारायणु जणणीदुद्धसित्तओ।
णाइं[2] तमालणीलु णवजलहरु ससहरकरविलित्तओ ॥छ ॥

किया, अपने फैलते हुए बाहुओं को उसने रोक लिया, हर्ष से उसका शरीर स्निग्ध हो गया। कंस की दुष्टता की चिन्ता कर, मानो आलिंगन देते हुए बलराम ने आलिंगन नहीं दिया। नम्र माँ, प्रगाढ़ स्नेह के वशीभूत होकर गुणवती रसोई ले आयी। गन्ध, फूल और दीप सँजो दिये गये। माँ ने मीठा भोजन दिया, गीले पत्तों के भाजन में परोसा गया दही मिश्रित भात, घृत से भरे हुए माण्ड और पूरण और भी नाना खाद्य विशेषों से युक्त सरस भोजन, भावी भूपति ने किया। सिर में लता-दल की मालाओं को बाँधे हुए ग्वालों को स्वर्ण के दण्ड दिये गये और सूक्ष्म कोमल दिव्य वस्त्र तथा रवि-किरणों से प्रशस्त भूषण भी दिये गये। फिर तीन प्रदक्षिणाएँ देते हुए पुत्र के ऊपर वे दूध की धारा छोड़ते हैं।

घत्ता—माँ ने, पौरुष-रत्न की निधि, अपने गुणगणों से इन्द्र को विस्मित करनेवाले केशव का अभिषेक किया, मानो कुलगृह की लक्ष्मी ने स्वयं उनका अभिषेक किया हो।

(15)

माता के दूध से अभिषिक्त नारायण नन्दनन्दन कृष्ण ऐसे दिखाई दे रहे थे, मानो तमालपत्र के समान नीला नवमेघ चन्द्रमा की किरणों से लिपट गया हो, मानो कामधेनु स्वयं अवतरित हुई हो। झरते हुए स्तनों

---

4. APS °रइरंगिउ। 5. B कंसु। 6. P णमंतइं। 7. P °दीवय°; S दीवइ। 8. A मंडिय°। 9. ABS घियकरहिं। 10. A भाऊभूणाहें; BK भाइभूणाहें। 11. B सुण्हइं; PS सण्हइं। 12. P उप्परे। 13. B खीर। 14. S °विम्हाविय°। 15. S वासवु। 16. S केसवु।

(15) 1. B णंदु णंदु। 2. B णामि।

कामधेणु णं सइं अवइण्णी गलियथण्णथणि[3] जणणि णिसण्णी।
जाव ण पिसुणु को वि उवलक्खइ[1] ता तहिं संकरिसणु सइं अक्खइ।
सुललियंगि भुक्खासमरीणी उववासेण पमुच्छिय राणी।
तेणिय[5] भणिवि भुएहिं समत्थिउ दुद्धकलसु देविहि पल्हत्थिउ।
हरि[7] जोइवि[8] णीयलाहिं णयणाहिं मणि आणंदु पणच्चिउ सयणहिं।
सवलाहणमिसेण[9] संफासिवि आउच्छणमिसेण संभासिवि।
भायणाइं[10] होइवि[11] संतोसहु गयइं ताइं महुराउरिवासहु।
कालें जंतें छज्जइ पत्तउ आसाढागमि वासारत्तउ।

घत्ता—हरियउं पीयलउं दीसइ जणेण[12] तं सुरधणु।
उप्परि पओहरहं णं णहलच्छिहि उप्परियणु ॥15॥

(16)

दुवई—दिट्ठउं इंदचाउ पुणु पुणु मइं[1] पंथियहियहियभेयहो।
घणवारणपवेसि[2] णं मंगलतोरणु णहणिकेयहो ॥ छ ॥

जलु गलइ झलझलइ।
दरि भरइ सरि सरइ।
तडयडइ[3] तडि पडइ।
गिरि फुडइ सिहि णडइ
मरु चलइ तरु घुलइ।

से मां बैठी हुई थी। जब तक कोई दुष्ट पुरुष न देख ले, तब तक वहाँ बलभद्र स्वयं कहते हैं—"भूख के श्रम से क्षीण सुन्दर अंगोंवाली यह रानी उपवास के कारण मूर्च्छित हो गयी है।" उसने यह कहकर उठा हुआ दुग्ध-कलश देवी के ऊपर उड़ेल दिया। अपने गीले नेत्रों से हरि को देखकर स्वजन मन में आनन्द से नाच उठे। विलेपन के छल से स्पर्श कर, पूछने के बहाने बात कर, और सन्तोष के भाजन बनकर वे लोग मथुरा नगरी के अपने निवास के लिए चले गये। समय बीतने पर असाढ़ के आगमन पर प्राप्त वर्षा ऋतु शोभित हो उठती है।

घत्ता—मेघों के ऊपर लोगों को हरा और पीला इन्द्रधनुष ऐसा दिखाई देता है, मानो नभरूपी लक्ष्मी के ऊपर का आवरण (दुपट्टा) हो।

(16)

मैं बार-बार इन्द्रधनुष को देखता हूँ, मानो पथिकों के हृदयों का भेदन करनेवाले आकाशरूपी घर में मेघरूपी महागज के प्रवेश के लिए मंगल तोरण हो। जल गिरता है, झलझलाता है। घाटी भरती है, नदी बहती है, तड़तड़कर बिजली गिरती है, पहाड़ फूटता है, मोर नाचता है, हवा चलती है, पेड़ हिलता है।

3. B °थण्णयलिं 4. B ओलक्खइ। 5. A तिं इय भणेवि; P तें इय भणेवि। 6. B Als. समुत्थिउ। 7. A omits this line. 8. BS जोयवि। 9. A omits 8 a 10. A भोयणाइं। 11. P होयवि। 12. APS जणेण सुरवरधणु।

(16) 1. AP अइपंथिय°। 2. S घरु वारण°। 3. A तडक्कइ।

जलु थलु वि गोउलु वि।
णिरु रसिउ भयतसिउ।
थरहरइ किर मरइ।
जा ताव थिरभाव-
धीरेण वीरेण।
सरलच्छि- जयलच्छि-
तण्हेण कण्हेण।
सुरथुइण भुयजुइण।
वित्थरिउ उद्धरिउ।
महिहरउ दिहियरउ[4]।
तमजडिउं पायडिउं।
महिविवरु फणिणियरु।
फुप्फुवइ[5] विसु मुयइ।
परिघुलइ चलवलइ।
तरुणाइं हरिणाइं।
तट्ठाइं णट्ठाइं।
कायरइं वणयरइं।
पडियाइं[6] रडियाइं।
घित्ताइं चत्ताइं[7]।
हिंसाल- चंडाल-
चंडाइं कंडाइं।
तावसइं परवसइं।
दरियाइं[8] जरियाइं।

जल और थल हिल उठते हैं, गोकुल अत्यन्त आवाज करता है। भय से त्रस्त है, थरथराता है, मरता है। तब तक स्थिरभाववाले धीर, वीर, सरल आँखोंवाली जयलक्ष्मी के चाहनेवाले कृष्ण ने देवों से संस्तुत अपना भुजयुगल फैलाया, और उठा लिया धैर्य करनेवाला पहाड़। तम से जड़ित और धरती का विवर और नागसमूह प्रकट हो गया। वह फू-फू करता विष उगलता है, फैलता है, चिलबिल करता है। तरुण हरिण त्रस्त और नष्ट हो जाते हैं। कायर वनचर गिर जाते हैं और चिल्लाने लगते हैं, फेंक दिये जाते हैं, छोड़ दिये जाते हैं। चाण्डाल हिंसा करते हैं। पानी प्रचण्ड है, तापस परवश हैं, भय से आक्रान्त और ज्वराक्रान्त हैं।

4. P दिहिहरउ। 5. AB पुप्फुवइ; PS पुप्फुयइ। 6. B वडियाइं। 7. AP रत्ताइं। 8. A रडियाइं।

घत्ता—गोवद्धणपरेण[9] गोगोमिणिभारु व जोइउ।
गिरि गोवद्धणउ गोवद्धणेण उच्चाइउ[10] ॥16॥

(17)

दुवई—ता सुरखेयरेहिं दामोयरु[1] वासारत्तरुंधणो[2]।
गोवद्धणु भणेवि हक्कारिउ कयगोजूहवद्धणो ॥ छ ॥

कण्हें बाहुदंडपरियरियउ[3] गिरि छत्तु व उच्चाइवि धरियउ।
जलि पवहंतु जंतु ण[4] उवेक्खिउ धारावरिसे[5] गोउलु रक्खिउं।
परउवयारि सजीविउ देंतहं दीणुद्धरणु विहूसणु संतहं।
पविमल कित्ति भमिय महिमंडलि[6] हरिगुणकह हूई[7] आहंडलि।
कालि गलंतइ कंतिइ अहियइं कलिमलपंकपडलपविरहियइं[8]।
महुरापुरवरि अमरहिं महियइं अरहंतालइ रयणइं णिहियइं।
तिण्णि ताइं तेलोक्कपसिद्धइं खयटंकारदेहसुहणिद्धइं।
तं रयणत्तउं[9] कहिं मि णिरिक्खिउं पुच्छिउ कंसें वरुणें अक्खिउं।
णायामिज्जइ विसहरसयणें जो जलयरु आऊरइ वयणें।
जो सारंगकोडि गुणु[10] पावइ सो तुज्झु वि जमपुरि[11] पहु दावइ।

घत्ता—गो-वर्धन (गायों की वृद्धि, उन्नति) करनेवाले कृष्ण के द्वारा उठाया गया गोवर्धन गिरि ऐसा मालूम हो रहा था जैसे गोवर्धन में तत्पर व्यक्ति ने भू और लक्ष्मी का भार उठा लिया हो।

(17)

तब वर्षा ऋतु को रोकनेवाले और गौ-समूह का संवर्धन करनेवाले दामोदर को देवों और विद्याधरों ने गोवर्धन कहकर पुकारा। बाहुदण्ड से घिरा हुआ पर्वत कृष्ण ने छत्र की तरह उठाकर धारण कर लिया। जल में बहते हुए जन्तु की भी उन्होंने उपेक्षा नहीं की और मेघवर्षा से गोकुल की रक्षा की। दूसरों के उपकार में अपना जीवन अर्पित कर देनेवाले सन्तों के विभूषण और दीनों के उद्धारकर्ता। उनकी पवित्र कीर्ति पृथ्वी-मण्डल में घूम गयी। हरिगुण की कथा मानो इन्द्र-कथा हो गयी। समय बीतने पर उनकी कान्ति और अधिक हो गयी, तथा कलिमल के पटल से मुक्त हो गयी। मथुरा नगरी के अरहन्तालय (जिन-मन्दिर) में देवों के द्वारा पूज्य तीन रत्न रखे हुए थे जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध थे—शंख, धनुष और नागशय्या। कंस ने कभी उस रत्नत्रय को देखकर वरुण से पूछा था। उसने कहा था—"जो नागशय्या के द्वारा कष्ट नहीं पाता, जो अपनी ध्वनि से शंख को फूँक देता है और जो धनुष पर डोरी चढ़ा देता है, वह तुम्हें भी यमपुरी भेज सकता है।

9. A गोवद्धणधरेण; P गोवद्धणपरेण। 10. A उच्चायउ; S उच्चाइउ।
(17) 1. S दामोयर। 2. B वासारत्तु। 3. S परियरिउ। 4. A उपेक्खिउ; BP उवक्खिउ। 5. P °वरिसहो; Als. वरिसें against Mss 6. A °महिमंडलि। 7. S हूई। 8. AP °पविरहियइं। 9. S रयणत्तउं। 10. BS गुण। 11. P °पुरे।

घत्ता—उग्गसेणसुयणु विहुरंधरासि[12] तारिव्वउ।
तेण णराहिवइ जरसिंधु[13] समरि मारिव्वउ[14] ॥17॥

(18)

दुवई—पत्तिय कंस कुसलु णउ पेक्खमि पत्ता मरणवासरा।
पूयण वियडसयडजमलज्जुणतलखरदुहियहयवरा[1] ॥ छ ॥

जित्ता[2] जेण णंदगोवालें पडिभडमंथणदप्पुत्तालें।
जाउहाणु पसु भणिवि ण मारिउ जेण अरिट्ठवसहु ओसारिउ।
फुल्लकडंबविडविदिण्णाउसि[3] सत्त दियह वरिसंतइ पाउसि[4]।
गिरि गोवद्धणु जें उच्चाइउ[5] सो जाणमि[6] तुम्हारउ दाइउ।
जीविउं सहुं रज्जेण हरेसइ दइवहु पोरिसु काइं करेसइ।
तं णिसुणिवि णियबुद्धिसहाएं पुरि डिंडिमु देवाविउ राएं।
जो फणिसयणि सुयइ धणु णावइ संखु ससासें पूरिवि दावइ।
तहु[7] पहु देइ[8] देसु दुहियइ[9] सहुं ता[10] धाइयउ णिवहु सइं महुं महुं।
घत्ता—दसदिसु वत्त गय मंडलिय असेस समागय[11]।
णं गणियारिकए दीहरकर[12] मयमत्ता[13] गय[14] ॥18॥

घत्ता—दुःख के अन्धकार की राशि उग्रसेन को वह तारेगा और हे राजन् ! उसके द्वारा जरासन्ध युद्ध में मारा जाएगा।

(18)

हे कंस ! तुम विश्वास करो, मैं कुशल नहीं देखता; तुम्हारे मरने के दिन आ गये हैं। पूतना, विकट, शकट, यमलार्जुन, ताड़वृक्ष, गधा और घोड़े को, शत्रु-योद्धाओं के संघर्ष-मद को दूर करनेवाले जिस नन्दगोपाल ने जीता है और अरिष्ट को पशु समझकर नहीं मारा और उसे बैल समझकर हटा दिया, खिले हुए कदम्ब-वृक्षों को आयु देनेवाले पावस के लगातार सात दिनों तक बरसते रहने पर जिसने गोवर्धन पर्वत को उठा लिया, उसे मैं तुम्हारा शत्रु मानता हूँ। वह जीवन के साथ तुम्हारे राज्य का अपहरण करेगा, दैव का पौरुष इसमें क्या करेगा ?"

यह सुनकर, अपनी बुद्धि ही है सहायक जिसकी, ऐसे राजा कंस ने नगर में मुनादी करवा दी—"जो नागशय्या पर सोएगा, धनुष चढ़ाएगा (झुकाएगा) और श्वास से शंख को फूँककर दिखाएगा, उसे राजा अपनी कन्या के साथ देश देगा।"

(यह सुनकर) सब लोग, मैं पहले मैं पहले करते हुए दौड़े।

घत्ता—यह वार्ता दसों दिशाओं में फैल गयी। समस्त माण्डलिक राजा आये, मानो हथिनी के लिए लम्बी सूँड़वाले मतवाले महागज आये हों।

12. ABPS विहुरंबुरासि। 13. PS जरसेंधु। 14. S मारेयव्व।

(18) 1. AP °ज्जुणतरुखर°। 2. B जित्तउ। 3. A °कयंब°; P °कदंब°। 4. B पावसि। 5. AP जेणुच्चायउ। 6. S जाणवि। 7. P पहो। 8. A देसु देइ। 9. B दुहिए। 10. B Als. ता धाइय णिय होसइ महुं महुं। 11. S समागया। 12. P दीहरयर। 13. AP मयमत्त। 14. S गया।

(19)

दुवई—भाणु सुभाणु णाम विसकंधर [1]वरजरसिंधणंदणा।
संपत्ता तुरंत जउणायडि[2] थिय खंचियसंदणा[3] ॥ छ ॥

अरिकरिदंतमुसलहय कलुसिय जइ वि तो वि अरविंदहिं वियसिय।
कालीं[4] कंतिइ जइ वि सुहावइ तो वि तव जणघुसिणें भावइ।
जइ वि तरंगहिं चवलहिं[5] वच्चइ तो वि तुरंगहं सा ण पहुच्चइ।
जइ वि तीरि[6] वेल्लीहर दावइ तो वि ण दूसहं संपय पावइ।
पविउलु दिट्ठउं सिविरु[7] पमुक्कउं गोवविंदु[8] साणंदु पढुक्कउ।
तणकयवलयविहूसियथिरकरु [9]वणकणियारिकुसुमरयपिंजरु।
ससुसिरवेणुसद्दमोहियजणु काणणधरणिधाउमंडियतणु।
कूरणिबंधणवेढियकंदलु कंदलदलपोसियमहिसीउलु।

घत्ता—गुंजाहलजडियदंडयविहत्थु[10] संचल्लिउ।
महिवइतणुरुहेण आसण्णु पढुक्कउ बोल्लिउ ॥19॥

(20)

दुवई—भो आया किमत्थु किं जोयह दीसह पवर[1] दुज्जया।
पभणइ णंदपुत्तु के तुम्हइं कहिं गंतुं समुज्जया ॥ छ ॥

(19)

श्रेष्ठ जरासन्ध के, वृषभ के समान कन्धोंवाले भानु, सुभानु नाम के पुत्र शीघ्र ही यमुना-तट पर पहुँचे और अपने रथों को ठहराकर स्थित हो गये। यद्यपि यमुना शत्रुओं के हाथियों के दाँतोंरूपी मूसलों से आहत और कलुषित है, तो भी वह कमलों से विकसित है। यद्यपि कान्ति से काली है, तब भी अच्छी लगती है और लोगों को केशर से ताम्र दिखाई देती है। यद्यपि वह चंचल तरंगों से बहती है, तो भी तुरंग उसे नहीं पा सकते। यद्यपि वह किनारों पर लतागृह दिखाती है, फिर भी वस्त्रों की सम्पत्ति उसे प्राप्त नहीं कर सकती। उन्होंने विशाल मुक्त शिविर देखा और गोपसमूह सानन्द वहाँ पहुँच गया। जिसके स्थिर कर तिनकों के बने वलयों से विभूषित हैं, जो वन के कनेर पुष्पों के पराग से पीला है, जो अपनी सच्छिद्र बाँसुरी के शब्द से जनों को मुग्ध कर लेता है, जिसका शरीर वनभूमि की धातुओं से शोभित है, जिसके कपाल मजबूत बन्धनों से बँधे हुए हैं और जो लता-पत्रों से भैंसों को पोषित करता है,

घत्ता—जिसके हाथ में गुंजाफलों से विजड़ित दण्ड हैं, ऐसा गोपसमूह चला। तब निकट पहुँचने पर राजा के पुत्र ने उससे कहा--

(20)

"अरे ! तुम लोग किसलिए आये ? क्या देखते हो, बहुत प्रबल दुर्जय दिखाई देते हो !" तब नन्द-पुत्र

(19) 1. PS °जरसंध°। 2. AP जउणातडे। 3. A संचिय°। 4. B कालिए। 5. S चवल पवच्चइ। 6. APS तीरवेल्ली°। 7. AP सिमिरु। 8. B गोवबंदु। 9. A वरकणियार°, BP वणकणियार°। 10. B दंडहत्थु।
(20) 1. AP पवरदुज्जया।

अम्हइं णंदगोव फुडु वुत्तउं आया पुच्छहुं भणहुं[2] णिरुत्तउं।
भणइ सुभाणु जणणु अम्हारउ अद्धमहीसरु रिउसंघारउ।
वढ जाएसहुं महुरापट्टणु संखाऊरणु[3] फणिदलवट्टणु[4]।
तहिं विरएवि सरासणचप्पणु[5] कण्णरयणु लएसहुं घणथणु।
पुलयवसेणुग्गयरोमंचुय तं णिसुणिवि जोयंतें[6] णियभुय।
हउं मि जामि[7] गोविंदें भासिउं करमि तिविहु जं पइं णिद्देसिउं।
तरुणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ हालिउ किं णिवधीयउ[8] माणइ।
तं णिसुणेप्पिणु बालें बालउ जोयउ[9] कंसहु[10] अयसु व कालउ।
घत्ता—माहवपयजुयलु[11] उद्दिट्ठु[12] सुभाणुं रत्तउं।
दिसकरिकुंभयलु सिंदूरें णावइ छित्तउं[13] ॥20॥

(21)

दुवई—दप्पणसंणिहाइं रुइवंतइं विरइयचंदहासइं।
णक्खइं वसुह[1] णाइं मुहपंकयपविलोयणविलासइं ॥ छ ॥
जंघउ पुणु लक्खणहिं समग्गउ[2] वारणआरोहणकिणजोग्गउ[3]।
ऊरउ बहुसोहग्गपवित्तिउ तियमणकंदुयखुलणधरित्तिउ[4]।

कहता है—"तुम लोग कौन हो; कहाँ जाने के लिए उद्यत हो ?" "हम लोग नन्द-गोप हैं। हमने साफ बता दिया है, हम पूछने आये हैं; निश्चित बताएँ।" सुभानु कहता है—"हमारा पिता शत्रुसंहारक और अर्धचक्रवर्ती है। हे मूर्ख, मैं मथुरानगरी जा रहा हूँ; वहाँ शंख बजाकर, नागशय्या का दलन कर, धनुष चढ़ाकर, सघन स्तनोंवाली कन्या ग्रहण करूँगा।"

यह सुनकर जिनमें पुलक विशेष से रोमांच उत्पन्न हो गया है, ऐसी अपनी भुजाओं को देखते हुए गोविन्द ने कहा—"मैं भी जाऊँगा और जो तुमने निर्दिष्ट किया, वे तीनों काम मैं भी करूँगा। तरुणी पाता हूँ या नहीं पाता हूँ यह तो विधाता ही जानता है। गोप राजा की बेटी को कैसे माँग सकता हूँ ?"

वह सुनकर बालक ने बालक की ओर देखा जो कंस के अयश की तरह काला था।

घत्ता—सुभानु ने कृष्ण के रक्त चरण-युगल को देखा, मानो दिग्गज का कुम्भस्थल सिन्दूर से पुता हुआ हो।

(21)

उसके नख दर्पण के समान कान्तिवान, चन्द्रकिरणों का उपहास करनेवाले और धरती के मुख-कमल के देखने के लिए मानो विलास (दर्पण) थे। लक्षणों से सम्पूर्ण उसकी जाँघें हाथी पर चढ़ने की मांसग्रन्थि के योग्य थीं, अनेक सौभाग्यों की प्रवृत्तियोंवाला उसका वक्ष स्त्रियों की मनरूपी गेंदों के लिए क्रीडाभूमि था।

---

2. B भणहि; P भणहं। 3. S संखाओरणु। 4. S फणिदलु। 5. A सरासणकप्पणु। 6. AP णियंतें। 7. S जांवि। 8. K णिवधूयउ। 9. APS जोइउ। 10. A कंतिहि अजसु। 11. AP °जुवलु। 12. P ओदिट्ठु। 13. A लित्तउ।

(21) 1. AP वसुहणाहिमुह; Als वसुहणारिमुह° against Mss. and against gloss. 2. P समग्घउं। 3. B किं ण। 4. B °कंदुव°; P °कंदुय°।

मयणगिरिंदणियंबु व कडियलु　　सोहइ जुवयहु जइ वि अमेहलु[5]।
मज्झएसु[6] किसु पिसुणपहुत्तें　　णाहि[7] गहीर हिययगहिरत्तें।
वलिरेहंकिउं उयरु सुपत्तलु　　विरहिणिपणइणिसरणु व उरयलु।
दीह बाह पालियणियवक्खहं　　कालसप्पु णावइ पडिवक्खहं।
हारेण वि विणु कंठु वि रेहइ　　पट्टबंधु भालयलु समीहइ।
मुहुं[8] सुहमुहुं जममुहुं पडिवण्णउं　　सज्जणदुज्जणाहं अवइण्णउं।
कण्णजुवलु[9] कयकमलहिं सोहिउं　　णं लच्छीइ सचिंधु पसाहिउं।
केस कुडिल बुड्ढहं मंता इव　　मइ परमणहारिणि कंता इव।

घत्ता—तें तहु माहवहु जो जो पएसु[10] अवलोइउ।
सो सो तहु जि समु उवमाणविसेसु[11] पढोइउ[12] ॥21॥

(22)

दुवई—चिंतइ सो सुभाणु सामण्णु ण एहु अहो महाभडो।
णिज्जउ[1] णयरु करउ[2] तं साहसु रमणीरमणलंपडो ॥ छ ॥

अग्गि व अंबरेण ढंकेप्पिणु　　गय ते तं पुरु कण्हु लएप्पिणु।

उसका कटितल कामरूपी पहाड़ का नितम्ब था, जो बिना मेखला के ही शोभित था। उस युवक का मध्यदेश कंस की प्रभुता की चिन्ता से कृश था। हृदय की गम्भीरता के कारण नाभि गम्भीर थी और त्रिबलि से अंकित पेट पतला था। उसका उर-तल विरहिणी प्रणयिनीजनों के लिए शरण का आधार था। उसके लम्बे बाहु अपने पक्ष का पालन करनेवाले प्रतिपक्ष के लिए काल सर्प के समान थे। हार के बिना भी उसका कण्ठ शोभित था और उसका भालतल पट्टबन्ध की इच्छा कर रहा था। उसका मुख सज्जनों और दुर्जनों के लिए (क्रमशः) शुभमुख और यममुख बन गया था। उसके दोनों कान कमलों के अवतंसों से शोभित थे, मानो लक्ष्मी ने अपना चिह्न प्रसाधित कर लिया हो। उसके घुँघराले केश वृद्धों के मन्त्रों के समान थे और उसकी बुद्धि दूसरे की मति आकृष्ट करने (हरने) वाली कान्ता के समान थी।

(22)

वह सुभानु विचार करता है—यह सामान्य मनुष्य नहीं है, यह कोई महाभट है। इसको नगर ले जाया जाये। रमणीरमण-लम्पट यह विशेष साहस कर सकता है।

इस प्रकार वे आग को कपड़े से ढकने के समान, कृष्ण को लेकर गये। वहाँ जिनमन्दिर की उत्तरदिशा

---

5. S अपेलडु। 6. B मज्झयेसु। 7. B णाही गहिर। 8. D मुहु मुहु मुह; P मुहं मुहं मुहं; K मह सुहमुहं। 9. PS °जुवलु। 10. P पवेसु। 11. B उवमाणु।
12. A अढोइउ; P व ढोइउ।
(22) 1. P णिज्जइ। 2. P करइ।

जिणघरसुरदिसि जक्खीमंदिरि तहिं मिलियइ णरणियरि[3] णिरंतरि।
दिट्ठी णायसेज्ज दिट्ठउं धणु दिट्ठउ पंचयण्णु गुरुणीसणु।
गोविंदें मयवंत[4] सुदुम्मह दिट्ठ चडंत पुरिस णाणाविह।
पडिय भुयंगमजंतें पीडिय फणताडिय[5] अच्छोडिय[6] मोडिय।
ता हरिणा फणि तणु व वियप्पिउ कुप्परकरकडिदेसें[7] चप्पिउ।
लइउ संखु णं जसतरुवरफलु उरसरि तासु अहिहि णं सयदलु।
दीसइ धवलु दीहु णं मउलिउं णावइ कालिंदीदहि[8] विलुलिउं।
अरिवरकित्तिवेल्लिकंदो इव कर‌राहुं[9] धरियउ[10] चंदो इव।
मुहणीलुप्पलि हंसु व सारिउ केसवेण कंबुउ[11] आऊरिउ।
[12]पेच्छालुयमणवउलु[13] पुलइउं पायंगुट्ठएण धणु वलइउं।

घत्ता—एक्कु ण चाउ जगि अण्णु वि णयमग्गें आयउं।
गुणणवणें सहइ सुविसुद्धवंसि जो जायउ ॥22॥

(23)

दुवई—[1]विसहरसयणरावजीयारवजलरुहरवपऊरियं[2]।
भुवणं ससरि सदरिगिरिवलयमहो णिहिलं पि जूरियं ॥ छ ॥
विहडियफुडियपडियघरपंतिहिं मुडियालाणखंभगयदंतिहिं।

में यक्षीमन्दिर में नरसमूह निरन्तर एकत्र हो रहा था। वहाँ उन्होंने नागशय्या देखी, धनुष देखा और भारी स्वरवाला पांचजन्य शंख देखा। गोविन्द ने मदवाले दुर्दमनीय नाना प्रकार के लोगों को चढ़ाते हुए देखा, जो सर्पयन्त्र से पीड़ित होकर गिर पड़े, फन से ताड़ित और आस्फालित होकर मुड़ गये। तब कृष्ण ने साँप को तिनके के समान समझकर अपने हाथ की हथेली से उसके कटिभाग को चाँप लिया। उन्होंने शंख को इस प्रकार ले लिया, मानो यशरूपी वृक्ष का फल हो, या मानो उस साँप के उर रूपी सरोवर में (खिला) शतदल कमल हो, धवल, दीर्घ और मुकुलित जिसे मानो यमुना सरोवर से तोड़ लिया गया हो। शत्रुप्रवर की कीर्तिरूपी लता के अंकुर के समान वह ऐसा लग रहा था मानो उसके हाथरूपी राहु ने चन्द्रमा को पकड़ लिया हो। उसका मुखरूपी नीलकमल ऐसा शोभित था, मानो हंस स्थापित कर दिया हो। केशव ने शंख बजा दिया। दर्शक मानवसमूह पुलकित हो उठा। उन्होंने अपने पैर के अँगूठे से धनुष को मोड़ दिया।

घत्ता—जग में वह अकेला धनुष ही नहीं था, दूसरा भी नीतिमार्ग से आया था, गुणों की नम्रता (डोरी की नम्रता) से वह शोभित, सुविशुद्ध वंश में उत्पन्न हुआ था।

(23)

नागशय्या का शब्द, प्रत्यंचा का शब्द और शंख के शब्द से पूरित विश्व नदियों, घाटियों और पर्वत-मण्डलों के साथ पूरित हो उठा, यह आश्चर्य है। गृह-पंक्तियाँ विघटित होकर बिखरकर गिर गयीं। हाथियों ने अपने

3. APS णरणियर° । 4. A मयवंति । 5. AP फडताडिय; K फणिताडिय । 6. P अच्छोड्डिय । 7. AP कोप्परकरकडियलसंचप्पिउ; S कोप्पर° । 8. K कालिंदिदहि । 9. AP किर राहु व । 10. PS धरिउ । 11. A कंबउ ओसारिउ । 12. B पिच्छालुय° । 13. A माणव अवलोइउ ।
(23) 1. A °सयणचाव । 2. AP °जलरुहरवपूरियं; B °जलरुहरवऊरियं ।

खरखुरहणणवणियमणुयंगहिं चउदिसिवहि[3] णासंततुरंगहिं।
कण्णदिण्णकरणरहिं मरंतहिं[4] हा हा एउं काइं पलवंतहिं।
पउरहिं महिमंडलि धोलंतहिं धावंतहिं कंदंतकणंतहिं।
हल्लोहलिउ णयरु ता एक्कें[5] कंसहु वत्त कहिय पाइक्कें[6]।
पूरिउ संखु जलहिगंजणसरु[7] परमारणउ मयंदभयंकरु[8]।
अहि अक्कंतउ चाउ चडाविउं पट्टणु तेण णिणाएं ताविउं।
कालएण[9] कालु व आहव्वें अपसिद्धेण[10] सुभाणुहि भिच्चें।
घत्ता—णिसुणिवि तं वयणु जीवंजसवइ तहु अक्खइ।
वइरिउ लद्धु मइं एवहिं मारमि को रक्खइ ॥23॥

(24)

दुवई—इय[1] पभणंतु लेंतु करवालु ससेण्णु[2] सरोसु णिग्गओ।
ता रोहिणिसुएण अवलोइउ भायरु जित्तदिग्गओ ॥ छ ॥
फणदलि देहणालि फणिपंकइ अच्छइ भयरु[3] मुक्कउ संकइ।
संखें णं चंदेण पयासिउ सावणमेहु[4] व वलएं भूसिउ।
सो संकरिसणेण संभासिउ तुहुं दुव्वासणाइ किं वासिउ।

बाँधने के खूँटे मोड़ दिये, घोड़ों के तीव्र खुरों के आघातों से मनुष्यों के अंग घायल हो गये, कानों पर हाथ रखे हुए लोग, हा हा यह क्या, इस प्रकार चिल्लाने लगे। महीमण्डल में व्याप्त, दौड़ते हुए, आक्रन्दन करते हुए बहुतेरे मनुष्यों ने कहा—जलधि के गर्जन के समान स्वरवाला शंख पूरित कर दिया गया है, दूसरे को मारनेवाला और सिंह के समान भयानक साँप आक्रान्त कर दिया गया है, धनुष चढ़ा दिया गया है, उसके शब्द से नगर सन्तप्त है। कृष्णवर्ण काल के समान आघात करनेवाले, अप्रसिद्ध, सुभानु के अनुचर से—

घत्ता—यह वचन सुनकर जीवंजसा का पति (कंस) उससे कहता है—मैंने शत्रु को पा लिया है, अब मैं उसको मारूँगा, देखें कौन बचाता है ?

(24)

यह कहते हुए और तलवार हाथ में लेते हुए वह सैन्य सहित बाहर निकला। तब इतने में बलराम ने दिग्गज को जीतनेवाले अपने भाई को देखा कि वह उस नागरूपी कमल पर निःशंक बैठा है, जिसके फन दल हैं और शरीर मृणाल। शंख से वह (कृष्ण) ऐसा शोभित है, जैसे चन्द्रमा से प्रकाशित हो या इन्द्रधनुष से सावनमेघ भूषित हो। संकर्षण ने तब उससे कहा—तुम दुर्वासना में क्यों पड़े हुए हो ? यहाँ क्यों आये ? यह क्या किया ? तुम्हारा गोकुल भीलों ने ले लिया है।

यह सुनकर अपने सुभटत्व के तेज से घिरा हुआ वह नगर से निकलकर चल दिया। वह गोपाल वृषभ-

---

3. BP चउदिसु। 4. P डरंतहिं। 5. AP एक्कहिं। 6. AP पाइक्कहिं। 7. ABPS °गज्जण°। 8. AP घइंहु भयंकरु; BS मयंधु भयंकरु; Als. मयंधभयंकरु। 9. P कालएण कालुय। 10. A अविसिद्धेण।

(24) 1. B एम भणंतु; S इय भणंतु। 2. B ससेणु। 3. AP भमरु व। 4. AP °मेहु व ताणें भूसिउ।

किं आओ[5] सि एउं किं रइयउं गोउलु तेरउं भिल्लहिं लइयउं।
णियसुहडत्ततेयपरियरियउ[6] तं णिसुणिवि पुराउ णीसरियउ।
[7]वसहविंदढेक्कारविसट्टहि[8] लग्गउ गोवउ गोउलवट्टहि।
अवरहिं गंपि पहेण तुरंतहिं कंपियदेहएहिं सयभंतिहिं[9]।
सुयवित्तंतु पिउहि समईरिउ चंपिउ[10] चाउ संखु आऊरिउ[11]।
विसहरवरसयणयलु णिसुंभिउं तं आयण्णिवि पुत्तवियंभिउं।
णट्ठउ कहिं मि रायभयतासिउं गोउलु अण्णत्तहिं आवासिउं।
घरु आयउ रोमंचियगत्तइ[12] अवरुंडिउ [13]हरिसंसुयणेत्तइ[14]।
[illegible] हरि [illegible] मुक्कउ पुत्तु [15]दुवालिइ।
पत्थिवसयणयलि किह[16] चडियउ डिंभयकेलिइ ॥24॥

(25)

दुवई—णंदें णंदणिज्जु[1] णियणंदणु [2]ससणेहें णिहालिओ।
पाहुणयाइं जाहुं सुयबंधुहुं इय वज्जरिवि चालिओ ॥ छ ॥
तावग्गइ पारद्धु णिहेलणु तहिं[3] मि परिट्ठिउ महिवइरक्खणु।
मिलिय जुवाण अणेय महाबल[4] पायपहरकंपावियमहियल[5]।

समूह के शब्दों के विशिष्ट गोकुल के रास्ते जा लगा। दूसरों ने मार्ग से जाकर तुरन्त काँपते हुए शरीर और डर से पुत्र का समाचार पिता को दिया कि इसने धनुष चढ़ा दिया, शंख पूर दिया, नागशय्या-तल को नष्ट कर दिया। पुत्र के इन विस्मयों को सुनकर (पिता सोचता है)—राजभय से त्रस्त मैं (समझ लो) नष्ट हो गया, अब कहीं और अपना आवास बनाऊँगा। बालक घर आया, और रोमांचित शरीर एवं हर्ष के आँसुओं से भरे हुए नेत्रोंवाली माँ ने उसका आलिंगन किया।

घत्ता—माँ ने हरि से कहा—"हे पुत्र ! कुचाल से तुम्हारा पिण्ड नहीं छूटा, तुम शिशुक्रीडा से राजा की नागशय्या पर क्यों चढ़े ?

(25)

नन्द ने बढ़ते हुए अपने पुत्र को स्नेह से देखा, और वह पुत्र-बन्धुओं से यह कहकर चला कि चलो पहुनाई कर आयें। तब उसने मार्गमध्य में आवास बनाना शुरू किया। राजा के रक्षक वहाँ भी उपस्थित थे। अनेक महाबलवान युवक इकट्ठे हुए जो अपने पैरों के आघात से धरती हिला देते थे। जिन पाषाण-खम्भों को अपनी शक्ति से कोई भी नहीं हिला सका, उन्हें विजयश्री की कामना रखनेवाले श्रीकृष्ण ने ऐरावत

---

5. P आयो सि। 6. B सुहडत्तु। 7. ABS वसहवंद°। 8. B °विसट्टहि। 9. A भयवंतहिं; BK सयभंतिहिं and gloss in K उत्पन्नशतसंदेहैः; PS सयभंतहिं; Als. भयभंतहिं against Mss. 10. AP चंपिउ। 11. S आऊरिउ। 12. A °गत्तउ। 13. A हरिअंसुय°; P हरि अंसुय°। 14. A °णेत्तउ। 15. P दुवालिए। 16. AP कह।

(25) 1. AP वंदणिज्ज। 2. B ससिणेहें। 3. A महिवइ तहिं पि परिट्ठिउ रक्खणु। 4. A महाभड। 5. A °णाहयलं।

को वि ण संचालइ[6] जे थामें ते महुमहणें जयसिरिकामें।
उच्चाइवि सुरकरिकरचंडहिं पत्थरखंभणिहियभुयदंडहिं[7]।
अरिवरणरणियरें परियाणिउ णंदगोउ लहु जणणिइ णीणिउ।
आउ जाहुं हो पुत्त पहुच्चइ गोउलु सुण्णउं सुइरु ण मुच्चइ।
एव भणेप्पिणु कण्हपयावें परिमुक्काइं ताइं भयभावें।
मलवज्जिइ महिदेसि[9] समाणइ पुणरवि तेत्थु जि ठाणि चिराणइ।
आणिवि गोविंदु वि गोविंदु वि थियइं ताइं [10]दइउ जि अहिणंदिवि।

घत्ता—सुपसिद्धउ भरहि सो णंदगोठु[11] गुणराहहिं[12]।
पुप्फयंतसमहिं[13] वण्णिज्जइ वरणरणाहहिं ॥25॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णारायणबालकीलावण्णणं[14] णामपंचासीमो[15] परिच्छेउ समत्तो ॥85॥

की सूँड़ के समान प्रचण्ड अपने भुजदण्डों के द्वारा उठाकर रख दिया। शत्रुवर-समूह ने यह जान लिया, तब नन्दगोप को शीघ्र माँ ने प्रेरित किया—"हे पुत्र ! बहुत हुआ, आओ चलें, गोकुल को बहुत समय तक सूना छोड़ना ठीक नहीं।"

इस प्रकार विचारकर वे लोग कृष्ण के प्रताप से भय से मुक्त हो गये। मल से रहित समतल महीदेशवाले अपने उसी पुराने स्थान पर आकर गोविन्द और गोप-समूह रहने लगा। देव का अभिनन्दन कर वे भी वहीं स्थित हो गये।

घत्ता—भारत में गुणशोभा से युक्त जो प्रसिद्ध नन्दगोप हैं, उनका नक्षत्रों के समान उज्ज्वल श्रेष्ठ नरनाथों द्वारा वर्णन किया जाता है।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों ने गुणों और अलंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य में नारायण-लीलावर्णन नाम का पचासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

6. AP संचालइ णियथामें। 7. B °थंभ°। 8. A थइं मुक्काइं। 9. B महिदेस°। 10. A देउ जि; BS दइवु जि। 11. B णंदगोट्ठु; P णंदगोउ; S णंदगोवु; Als. णंदगोउ। 13. P पुप्फदंत°। 14. A बालकीडा°। 15. S पंचासीतितमो।

छासीतिमो संधि

वइरि जसोयहि पुत्तु हुउ कंसें मणि परिछिण्णउं।
कमलाहरणु रउद्दु तें णंदहु पेसणु दिण्णउं ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

सिहिचुरुलिभूउ[1] गउ[2] रायदूउ।
तें भणिउ णंदु मा होहि मंदु।
जहिं गरलगाहि णिवसइ महाहि।
जउणासरंतु तं तुहुं तुरंतु।
जायवि[3] जवेण कयजणरवेण।
आणहि वराइं इंदीवराइं।
ता णंदु कणइ सिरकमलु धुणइ।
जहिं दीणसरणु तहिं ढुक्कु मरणु।
जहिं राउ हणइ अण्णाउ कुणइ।
किं धरइ अण्णु तहिं विगयगण्णु[4]।
हउं काइं करमि लइ जामि मरमि।
फणि सुट्ठु चंडु तं कमलसंडु।
को करिणि छिवइ को झंप[5] घिवइ।

छियासीवीं सन्धि

(1)

कंस ने अपने मन में यह समझ लिया कि यशोदा का पुत्र (ही उसका) दुश्मन है। उसने नन्द के लिए कमल लाने का भयंकर आदेश दिया।

राजदूत आग की ज्वाला होकर गया। उसने कहा—"नन्द ! तुम देर मत करो, जहाँ विषग्राही महासर्प रहता है, उस यमुना सरोवर के मध्य तुम वेग से जाकर, जनकोलाहल से व्याप्त नीलकमल ले आओ।"

तब नन्द क्रन्दन करता हुआ अपना सिर-कमल घुमाता है कि जहाँ दीनों के लिए शरण मिलती है, वहाँ मृत्यु मिल रही है। जहाँ राजा ही मारता है और अन्याय करता है, वहाँ किस प्रसिद्धि-रहित मनुष्य की शरण ली जाय ? मैं (इस समय) क्या करूँ ? लो मर जाता हूँ। सर्प अत्यन्त भयंकर है, उस कमल-समूह को

(1) 1. P °चुरुलिय भूउ। 2. P गय। 3. APS जाइवि। 4. A विगयमण्णु। 5. ABP झंप।

धगधगधगंति हुयवहि जलंति।
उप्पण्णसोय कंदइ जसोय।
महु एक्कु पुत्तु अहिमुहि णिहित्तु।
मा मरउ बालु मंइ गिलउ[6] कालु।
इय जा तसंति दीहर[7] ससंति।
पियरइं रसंति ता विहियसंति।
अलिकायकंति रणि[8] धीरु मंति।
पभणइ उविंदु णिहणवि[9] फणिंदु।
णलिणाइं हरमि जलकील करमि।

घत्ता—इय भणिवि[10] गउ कण्हु संप्राइउ[11] जउणासरवरु।
उब्भडफडविवडंगु[12] जमपासु व धाइउ विसहरु ॥1॥

(2)

णं कंसकोवहुयवहहु[1] धूमु णं णइतरुणीकडिसुत्तदामु।
णं ताहि जि केरउ जलतरंगु णं कालमेहु दीहीकयंगु।
सियदाढाविज्जुलियहिँ[2] फुरंतु चलजमलजीहु[3] विसलव मुयंतु।
हरिसउहुं फडंगुलिरयणणक्खु[4] पसरिउ जमेण करु घायदक्खु।
णं दंडदाणु[5] सरसिरिइ मुक्कु गयवेयउ[6] कण्हहु[7] पासि ढुक्कु।

कौन छू सकता है ? कौन गुच्छे को तोड़ सकता है। शोक से व्याकुल यशोदा विलाप करती है, मानो धक्-धक् करती हुई आग जल रही हो, मेरा एक ही पुत्र है और उसे साँप के मुख में डाल दिया गया। मेरा बच्चा न मरे, चाहे काल मुझे खा ले। इस प्रकार वह त्रस्त होती है और लम्बी साँसें लेती है। इस प्रकार माता-पिता के कहने पर शान्ति करनेवाले, भ्रमर के शरीर के समान कान्तिवाले, युद्ध में धीर और विचारशील उपेन्द्र (कृष्ण) कहते हैं—नागराज को मारकर कमलों का हरण करूँगा और जलक्रीड़ा करूँगा।

घत्ता—यह कहकर कृष्ण गये और यमुना-सरोवर पर जा पहुँचे। अपने उद्भट फनों से भयंकर अंगवाला वह विषधर यमपाश की तरह दौड़ा।

(2)

मानो वह कंस की कोपरूपी आग का धुआँ हो, मानो नदीरूपी तरुणी की कटि का सूत्रदाम हो, मानो उसी की जलतरंग हो, मानो अपना लम्बा शरीर फैलाए हुए वह कालमेघ हो। अपनी श्वेत दंष्ट्राओं की बिजलियों से चमकता हुआ वह चंचल दो जीभवाला विषकण उगल रहा था। फनों की अंगुलियों के रत्नरूपी नखवाले उसने आघात में दक्ष अपना हाथ यम की तरह हरि के सम्मुख फैलाया, मानो सरोवर की लक्ष्मी ने दण्डबाण

6. B गिलिउ। 7. S दीहरु। 8. A रणवीर मंति; S रणधीरु मंति। 9. APS णिहणेवि। 10. B भणेवि। 11. P संपाइउ। 12. A °विहडंगु।
(2) 1. S °हुयवहो। 2. B °विज्जलियहिं। 3. S °जवल°। 4. B °रक्खु। 5. A दंडबाणु सरसरिपमुक्क। 6. BP गयवेयउ। 7. S कंसहो पासु।

फणि फुप्फुयंतु[8] चलु जुज्झलोलु णं तिमिरहु मिलियउ तिमिरलोलु।
दीसइ हरि दहि[9] भसलउलकालु णं अंजणगिरिवरि[10] णवतमालु।
तणुकंतिपरज्जियघणतमासु[11] णक्खइं फुरंति पुरिसोत्तमासु[12]।
सिरि माणिक्कइं विसहरवरासु दीसंतइं देंति व देहणासु[13]।
तंबेहिं[14] कुसुममणियरहिं[15] तंबु णं[16] सरिवेल्लिहि पल्लउ[17] पलंबु।
अहि घुलिउ अंगि महुसूयणासु णं [18]कत्थूरीरेहाविलासु।

घत्ता—विसहरघेलिरदेह सरि भमंतु रेहइ हरि।
कच्छालंकिउ तुंगु णं मयमत्तउ दिसकरि ॥2॥

(3)

फणि दाढाभासुरु फुक्करंतु महुमहणु व[1] जुज्झइ हुंकरंतु।
फणि उरुफणाइ[2] ताडइ तड त्ति पडिखलइ तलप्पइ[3] हरि झड त्ति।
फणि वेढइ उव्वेढइ अणंतु फणि लुंचइ वंचइ लच्छिकंतु।
फणि धरइ[4] सरइ सो वासुएउ णउ बीहइ सप्पहु गरुडकेउ।
इय विसमजुज्झसंमद्दु[5] सहिवि दामोयरेण पत्थाउ लहिवि।
पीयलवासें हउ उत्तमंगि[6] मणिकिणसिहासंताणसंगि[7]।

छोड़ा हो। फू-फू करता हुआ चंचल युद्ध-लोल वह ऐसा लगता है मानो तिमिर-समूह तिमिर से मिल गया हो। भ्रमर-कुल की तरह श्याम सरोवर में ऐसे दिखाई देते हैं, मानो अंजन गिरिधर पर नया तमाल हो। शरीर की कान्ति से सघन अन्धकार को पराजित करनेवाले पुरुषोत्तम के नख ऐसे शोभित हैं, मानो विषधर के सिर के ऊपर श्रेष्ठ माणिक्य दिखाई देते हों, मानो उसके शरीर का नाश प्रकट कर रहे हों। लाल कुसुम रूपी पद्मराग मणियों से लाल, मानो सरोवर की लता-पल्लव हो, मधुसूदन के अंग पर पड़ा हुआ साँप ऐसा लगता है, मानो कस्तूरी की रेखा का विलास हो।

घत्ता--विषधर से व्याप्त शरीरवाले सरोवर में घूमते हुए हरि ऐसे शोभित हैं, मानो कच्छ (वस्त्र) से अलंकृत ऊँचा मतवाला दिग्गज हो।

(3)

दंष्ट्राओं से भास्वर और फूत्कार करता हुआ वह नाग हुँकार करते हुए मधुसूदन के साथ युद्ध करता है। अपने भारी फन से तड़-तड़ करके ताड़ित करता है। हरि हाथ के प्रहार से शीघ्र उसे हटा देते हैं। नाग हरि को घेरता है, अनन्त (कृष्ण) उसे घेर लेते हैं; नाग लोंचता है, लक्ष्मीकान्त उसे प्रताड़ित करते हैं। नाग पकड़ता है, वसुदेव उसे चला देते हैं। गरुड़ध्वजी वह साँप से नहीं डरते। इस प्रकार विषम युद्ध में सम्मर्दन सहकर, प्रस्ताव पाकर पीताम्बर वस्त्रधारी उन्होंने मणिकिरणों की ज्वालमाला से युक्त सिर पर उसे आहत

8. A पुप्फधंतु; PS पुप्फुयतु। 9. A देहि णं भसल°; P देहए; S देहे। 10. S अंजगिरि°। 11. S °परिज्जय°। 12. B पुरुसो°। 13. B देहमासु in second hand: P देहणासु। 14. S णंलिहि। 15. P कुसुमणियरेहिं। 16. A सरवेल्लीपल्लवपलंबु; S सरिवेल्लिउ। 17. S पल्लवु। 18. B कत्थरिय°।
(3) 1. AP वि। 2. P °फडए। 3. A तडप्पए। 4. S सरइ धरइ। 5. P जुज्झ समदु। 6. APS उत्तिमंगि। 7. A °किरणसहासें तेण संगि।

गउ णासिवि विवरंतरि पइट्ठु जयसिरिइ[8] विहूसिउ झत्ति विट्ठु।
जलि कीलइ अमरगिरिंदधीरु [9]कल्लोलुप्पीलियविउलतीरु[10]।
[11]विहडियसिप्पिउडसमुग्गयाइं[12] मुत्ताहलाइं दसदिसु[13] गयाइं।
मीणउलइं भयरसमंथियाइं ण सत्तुकुडुंबइं दुत्थियाइं।
घत्ता—उड्डिवि गयणि गयाइं कीलंतहु हरिहि ससंसहु।
दिट्ठइं हंसउलाइं अट्ठियइं णाइं तहु कंसहु ॥3॥

(4)

भसलउलइं चउदिसु गुमुगुमंति णं कंसमरणि बंधव रुयंति।
कण्हहु तेएं जाया विणीय रंगंति कंक णं पिसुण भीय।
कमलाइं अलीढइं तेण केंव खुडियइं अरिसिरकमलाइं जेंव।
हरियइं पीयइं लोहियसियाइं महुरापुरणाहहु[1] पेसियाइं।
पयपब्भट्ठइं मलिणंगयाइं खलविहिणा सुकयाइं व हयाइं।
पडिवक्खभिच्चकरपेल्लियाइं बद्धाइं घरंगणि घल्लियाइं।
णलिणाइं णिवेण णिहालियाइं णं णियसयणइं उम्मूलियाइं[2]।
अण्णहिं दिणि [3]भुयबलवूढगाव[4] हक्कारिय सयल वि णंदगोव।
परजीवियहारणु मंतगुज्झु पारद्धउं राएं मल्लजुज्झु।

कर दिया। नष्ट होकर वह बिल के भीतर चला गया और विष्णु (कृष्ण) शीघ्र ही विजयलक्ष्मी से विभूषित हुए। अमर गिरिवर की तरह गम्भीर और लहरों से विशाल तट को उत्पीड़ित करते हुए वह जल में क्रीड़ा करते हैं। विघटित सीपियों के सम्पुटों से निकलते हुए मोती दसों दिशाओं में बिखर गये। मछलियों के कुल भयरस से पीड़ित हो गये, मानो दुःस्थित शत्रु-कुटुम्ब हो।

घत्ता—प्रशंसा-युक्त हरि के जलक्रीड़ा करने पर, उड़कर आकाश में गये हुए हंसकुल कंस की हड्डियों के समान प्रतीत होते हैं।

(4)

भ्रमरकुल चारों दिशाओं में गुनगुना रहे हैं, मानो कंस की मृत्यु पर उसके भाई रो रहे हैं। कृष्ण के तेज से विनीत हुए बगुले इस प्रकार चलते हैं, मानो डरे हुए दुष्ट हों। उसने कमलों को इस प्रकार ले लिया, मानो शत्रुओं के सिरकमल तोड़ लिये गये हों। हरे, पीले, लाल और सफेद कमल मथुरापुरी के राजा के लिए भेज दिये गये। वे ऐसे लगते थे, मानो दुष्ट विधाता के द्वारा आहत, पदभ्रष्ट मैले-कुचैले शरीरवाले पुण्य हों। शत्रु के भृत्यों के द्वारा पीड़ित, बँधे हुए वे घर में डाल दिये गये। राजा कंस ने उन कमलों को इस प्रकार देखा, मानो उसके अपने स्वजन उखाड़ दिये गये हों। एक दूसरे दिन, भुजबल में बढ़ा हुआ है गर्व जिनका, ऐसे समस्त नन्द गोपों को बुलवाया और राजा ने गुप्त मन्त्रणा कर दूसरे के जीवन का अपहरण करनेवाला मल्लयुद्ध प्रारम्भ किया।

8. A जयसिरिए। 9. APS °उप्पेल्लिय°। 10. AP °विउलणीरु। 11. PS विउडिय°। 12. A °सिप्पिउल°। 13. P दसदिसि। 14. B कुडंबइं; P कुटुंबइं।
(4) 1. AP महुराउरि°; P महुरापुरि°। 2. A णिमूलियाइं; B णिम्मूलियाइं। 3. B °भुव°। 4. P °रूढ°।

घत्ता—कंसहु णाउं सुणंतु[5] तिव्वकोवपरिणामें।
चल्लिउ[6] देउ मुरारि णं केसरि गयणामें ॥4॥

(5)

संचलिय[1] णंदगोवाला सयल[2] दीहरकर णं मायंग पबल[3]।
वियइल्लफुल्लबद्धुद्धकेस[4] उट्ठंत थंत[5] जमदूयवेस।
सिंदूरधूलिधूसरियदेह[6] गज्जिय णं संझारायमेह।
कालाणल कालकयंतधाम[7] भसलउलगरलघणजालसाम।
बलतोलियमहिमहिहर रउद्द मज्जायरहिय णं खयसमुद्द।
सणिदिट्ठिविट्ठिविसविसहराह रणि दुण्णिवार अरिहरिणवाह।
कयभुयरव दिसि उट्ठियणिहाय पडुपडहसंखकाहलणिणाय[8]।
खलमलणकउज्जम जमदुपेच्छ जयलच्छिणिवेसियवियडवच्छ[9]।
रत्तच्छिणियच्छिर[10] मच्छरिल्ल महुरापुरि[11] पत्त महल्ल मल्ल।
घत्ता—ता[12] तं रोलविमद्दु उव्वग्गणसंचालियधरु।
गोवयविंदु[13] णियवि आरूसिवि धायउ[14] कुंजरु ॥5॥

घत्ता—कंस का नाम सुनते ही, तीव्र क्रोध-परिणामवाले प्रसिद्ध नाम मुरारी इस प्रकार चले मानो सिंह हो।

(5)

लम्बी बाँहोंवाले, समस्त गोपाल इस प्रकार चले मानो प्रबल गज हों। खिले हुए फूलों से बँधे हुए ऊर्ध्व केशवाले यमदूत के रूप में, उठते हुए सिन्दूर की धूल से धूसरित देहवाले वे ऐसे लगते थे, मानो सन्ध्या रागवाले मेघ गरज रहे हों। कालानल काल और यम के घर भ्रमरकुल एवं गरल के घनजाल के समान श्याम, अपने बल से पर्वतों को तौलनेवाले रौद्र, वे ऐसे मालूम होते हैं, मानो मर्यादा से रहित प्रलयसमुद्र हों। शनि की दृष्टि में और विष्टि के समान विषधारण करनेवाले विषधर, युद्ध में दुर्निवार शत्रुरूपी हरिणों के लिए व्याध, बाहुओं से शब्द करते हुए तथा दिशाओं में घोर पटुपटह, काहल और शंखों के कठोर शब्दोंवाले, दुष्टों के दमन के लिए उद्यमी, यम की तरह दुर्दर्शनीय और अपने विशाल वक्ष में लक्ष्मी को निवेशित करनेवाले, लाल-लाल आँखों से देखनेवाले ईर्ष्या से भरे हुए वे मल्ल मथुरा नगरी पहुँचे।

घत्ता—तब शब्द से गरजता हुआ, उछलने से धरती को संचालित करता हुआ हाथी गोपवृन्द को देखकर उन पर क्रुद्ध होकर दौड़ा।

---

5. AP सुणंतु णिरु तिव्व°। 6. A चलिउ मुरारि समोउ णं; P चलिउ मुरारि समोउ णं।

(5) 1. AP ता चलिय। 2. AP चवल। 3. A पवर। 4. P विबउल्ल°। 5. P थंत। 6. S सेंदूर°। 7. AP कयंतयाम। 8. B °काहलि°। 9. A वियडविच्छ। 10. B °णियच्छिय। 11. S महुराउरि। 12. A तं तहिं रोलविसदु। 13. P °वेंदु; S °वंदु। 14. AS धाइउ।

(6)

मउल्लियगंडु[1] पसारियसुंडु[2]।
सरासणवंसु सयापियपंसु।
घणंजणवण्णु समुण्णयकण्णु[3]।
दिसागयभिंगु धराधरतुंगु।
महाकरि तेण जसोयसुएण।
पडिच्छिउ एंतु गियड्डिवि[4] दंतु।
सिरग्गि तड त्ति गओ[5] हउ झत्ति।
भएण गयस्स विसाणु गयस्स।
बलेण समत्थि सिरीहरहत्थि।
विरेहइ चारु जसो इव सारु।
रिउस्स पयंडु जमेण व दंडु
पयासिउ दीहु मुरारि णिसीहु[6]।

घत्ता—अप्पडिमल्लहु[7] मल्लु पडिभडमारणमग्गियमिसु।
अक्खाडइ अवइण्णु हयबाहुसद्दबहिरियदिसु[8] ॥6॥

(7)

सुयपक्खु धरिवि परिछेउ करिवि।
ओहामियक्कु[1] संणहिवि थक्कु।

(6)

आर्द्र गण्डस्थलवाला, सूँड फैलाए हुए, धनुष वंशीय धूल को सदैव चाहनेवाला, घन और अंजन के रंग का समुन्नत कर्णवाला, दिशागज के आकारवाला, पर्वत की तरह ऊँचा, ऐसे उस आते हुए महागज को यशोदा के उस पुत्र ने ललकारा और दाँत खींचकर तथा सिर पर ताड़ित कर शीघ्र गदा मारा। भय को प्राप्त उस हाथी का वह सुन्दर दाँत, बल में समर्थ श्रीकृष्ण के हाथ में ऐसा शोभित है, जैसे यम ने अपना दीर्घदण्ड प्रकाशित किया हो। मुरारी नृसिंह (महामल्ल),

घत्ता—जो अप्रतिमल्लों के मल्ल प्रतिभटों को मारने का बहाना ढूँढ़नेवाले, अपने बाहुशब्द से दिशाओं को अधीर कर देनेवाले हैं, ऐसे कृष्ण अखाड़े में उतरे।

(7)

पुत्र के पक्ष को धारण कर अपने पक्ष का विचार कर, सूर्य को पराजित करनेवाले, गजलोलगामी वासुदेव

(6) 1. P मओल्लिय°। 2. PS °सोंडु। 3. P °कंतु। 4. B णिवड्डिवि; S णियट्टिवि। 5. A हउ गओ झत्ति; P हओ गओ झत्ति। 6. K णिसीहु। 7. PS °मल्लहं। 8. B Als. हयवहुसद्द°; PS ददबाहु°।
(7) 1. S ऊहामिय°।

गयलीलगामि वसुएवसामि।
कण्हणु बलेण सुहिवच्छलेण।
पइसरिवि रंगि लग्गेवि अंगि।
वज्जरिउं कज्जु गोविंद[2] अज्जु।
जुज्झेवि कंसु दलवट्टियंसु।
करि बप्प तेम णउ जियइ जेम।
तुह जम्मवेरि उव्वूढखेरि[3]।
खलु खयहु जाउ उग्गिण्णघाउ।
भडभुयरवालि[4] कोवग्गिजालि।
पडियक्खजूरि वज्जंततूरि।
आहवरसिल्लि णच्चंतमल्लि।
घिप्पंतपुप्फि कुंकुमजलोल्लि।
अण्णण्णवण्णि विक्खित्तचुण्णि[5]।
आसण्णवज्झि तहु[6] बाहुजुज्झि।
रिउणा विमुक्कु[7] चाणूरु ढुक्कु।
पसरियकरासु दामोयरासु।
ता सो वि सो वि आलग्ग दो[8] वि।
संचालणेहिं अंदोलणेहिं[9]।
आवट्टणेहिं अवि[10] लुट्टणेहिं।
परिभमिवि लद्धु संरुद्धु[11] बद्धु।
बंधेण[12] बंधु रुंधेण[13] रुंधु।

स्वामी तैयार होकर बैठ गये। सज्जनों के लिए वत्सल, बलराम ने रंगभूमि में जाकर, कृष्ण के अंग से लगकर यह काज कहा—"हे गोविन्द ! आज तुम कंस से लड़कर उसके कन्धे उखाड़कर उस सुभट को इस प्रकार बना दो कि जिससे वह जीवित नहीं रह सके। तुम्हारा जन्मशत्रु द्वेष रखनेवाला और आघात पहुँचानेवाला यह दुष्ट नष्ट हो जाये।" जहाँ योद्धाओं का कोलाहल हो रहा है, क्रोध की ज्वाला फूट रही है, जो प्रतिपक्ष को सतानेवाला है, जहाँ नगाड़े बज रहे हैं, जो आयुधों से झनझना रहा है, जिसमें मल्ल नृत्य कर रहे हैं, फूल बरसाये जा रहे हैं, केशर-जल छिड़का जा रहा है, तरह-तरह के रंगों के चूर्ण बिखेरे जा रहे हैं, जिसमें वध निकट है, ऐसे उस बाहुयुद्ध में शत्रु के द्वारा प्रेषित चाणूर हाथ फैलाये हुए कृष्ण के पास पहुँचा। तब वह भी, वह भी, दोनों आपस में भिड़ गये। संचालनों, आन्दोलनों, आवर्तनों और लुट्टनों से घूमकर, उसे

---

2. BP गोविंदु। 3. A उव्वढवेरि। 4. AP भडभुयवमालि। 5. AP णिक्खित्तचुण्णे। 6. ABPS तहिं। 7. AP पमुक्कु। 8. A बे। 9. AP add after 20 b. उल्लालणेहिं; आवीलणेहिं। 10. AP पविलुट्टणेहिं। 11. B संरुद्ध। 12. AP खंधेण खंधु। 13. AP बंधेण बंधु।

बाहाइ[14] बाहु गाहेण गाहु।
दिट्ठीइ दिट्ठि मुट्ठीइ मुट्ठि।
चित्तेण चित्तु गत्तेण गत्तु।
परिकलिवि तुलिवि उल्ललिवि मिलिवि।
तासियगहेण सो महुमहेण।
पीडिवि करेण पेल्लिवि[15] उरेण।
रुंभिवि छलेण मोडिउ बलेण।
मणि[16] जणियसल्लु चाणूरमल्लु।
कउ मासपुंजु णं गिरिणिउंजु।
गेरुयविलित्तु थिप्पंतरत्तु।
महियलणिहित्तु पंचत्तु पत्तु।
घत्ता—विणिवाइवि चाणूरु पहु बहुदुव्वयणें[17] दूसिवि।
पुणु हक्कारिउ[18] कंसु कण्हें कालेण व रूसिवि ॥7॥

(8)

णवर ताण दोण्हं भुयारणं जाययं जणाणंदकारणं।
सरणधरणसंवरणकोच्छरं भिउडिभंगपायडियमच्छरं।
करणकत्तरीबंधबंधुरं[1] कमणिवायणा[2]वियवसुंधरं।
मिलियवलियमहिलुलियदेहयं णहसमुल्ललणदलियमेहयं।

पाकर, अवरुद्ध कर उन्होंने उसे बाँध लिया। बन्ध से बन्ध, रुन्ध से रुन्ध, बाहु से बाहु, ग्राह से ग्राह, दृष्टि से दृष्टि, मुट्ठी से मुट्ठी, चित्त से चित्त और गात्र से गात्र मिलाकर, तौलकर, उछलकर, मिलकर ग्रहों को सतानेवाले श्रीकृष्ण ने हाथ से पीड़ित कर, उर से ठेलकर, छल से रोककर, शक्ति से उसे मोड़ दिया, मानो मन में शल्य उत्पन्न करते हुए चाणूर पहलवान का उन्होंने ढेर बना दिया, मानो गेरु से लिप्त पहाड़पुंज हो। खून से लथपथ और धरती पर पड़ा हुआ वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

घत्ता—चाणूर का पतन कर और राजा कंस की अपशब्दों से निन्दा कर, कृष्ण ने काल की तरह कुपित होकर कंस को ललकारा।

(8)

उन दोनों का बाहुयुद्ध लोगों के लिए आनन्द का कारण हुआ। शरण, धरण और संवरणों (रोक देने) से उत्सुकता पैदा करना, भृकुटियों के भंग से मत्सर प्रगट करना तथा करण, कर्तरी बन्ध से सुन्दर होना, पैरों की चपेट से धरती पर झुकाना, मिलने और मुड़ने से शरीरों का धरती पर लुढ़कना, आकाश में उछलना और मेघों को दलित करना, महान् नगरजनों के जोड़ों को सन्तुष्ट करना, नाना प्रकार के आभूषणों का गिरना,

14. P बाहेण बाहु। 15. B पेल्लवि। 16. APS मण°। 17. P दुव्वयणेहिं। 18. P हक्कारिवि।
(8) 1. A बंधुबंधुरं। 2. A °णापिय°।

पवरणयरणरमिहुण[3]तोसणं परिघुलंतणाणाविहूसणं।
[4]परपरक्कमुल्लुहियदूसणं जुज्झिऊण सुइरं सुभीसणं।
[5]चरणचप्पणोणवियकंधरो वरमयाहिवेणेव[6] सिंधुरो[7]।
घत्ता—कड्ढिउ पएहिं धरिवि णिद्दलिउ गलियरुहिरोल्लिउ[8]।
कंसु कयंतहु तुंडि[9] कण्हेण[10] भमाडिवि घल्लिउ ॥8॥

(9)

हइ कंसि वियंभिय तियसतुट्ठि आयासहु णिवडिय कुसुमविट्ठि।
किंकर वर णरवइ उत्थरंत[1] कण्हेण भणिय भंडिणि भिडंत।
मा मइं आरोडहु[2] गलियगव्व मा एयहु पंथें[3] जाहु[4] सव्व।
तहिं अवसरि हरि संकरिसणेण आलिंगिउ जयहरिसियमणेण।
वसुएवें भणिय[5] म करह[6] भंति इहु[7] केसरि तुम्हइं मत्त दंति।
भो मुयह[8] मुयह णियमणि अखंति कण्हहु बलवंत[9] वि खयहु जंति।
उप्पण्णउ देविहि[10] देवईहि गब्भम्मि पसण्णि महासईहि।
कुलधवलु वसुंधरभारधारि सुउ मज्झु कंसविद्धंसकारि।
पच्छण्णु पवड्ढिउ णंदगोट्ठि एवहिं करु ढोइउ कालवट्ठि[11]।
जो कुज्झइ जुज्झइ सो जि मरइ गोविंदि[12] कुइइ किं कोइ[13] धरइ।

दूसरों के द्वारा खूब उलाहने दिये जाना—इस प्रकार बहुत समय तक भीषण युद्ध करने के बाद, पैरों की चपेट और कन्धे से झुकाकर जिस प्रकार श्रेष्ठ सिंह के द्वारा हाथी निर्दलित किया जाता है, उसी प्रकार—

घत्ता—खींचकर, पैरों से कुचलकर, गिरते हुए रक्त से लथपथ उसे नष्ट कर कृष्ण ने कंस को घुमाकर यम के मुँह में डाल दिया।

(9)

कंस के मारे जाने पर देवता आश्चर्यचकित रह गये। सन्तुष्ट होकर उन्होंने आकाश से कुसुमवृष्टि की। तब राजा के किंकर उछल पड़े। युद्ध में लड़ते हुए कृष्ण ने कहा—"हे गलितगर्व ! तुम लोग मुझसे मत लड़ो, सब लोग इसके रास्ते मत जाओ।" उस अवसर पर विजय से हर्षितमन बलराम ने श्रीकृष्ण का आलिंगन किया। वसुदेव ने कहा—"भ्रान्ति मत करो। यह सिंह है और तुम लोग मतवाले गज हो, अपने मन की अशान्ति को तुम लोग छोड़ो। कृष्ण से अधिक बलवाले भी नाश को प्राप्त होते हैं। महासती देवी देवकी के प्रसन्न गर्भ से उत्पन्न, कुलधवल पृथ्वी का भार वहन करनेवाला, कंस का नाश करनेवाला यह मेरा पुत्र है। यह नन्दगोठ में प्रच्छन्न रूप से पलपुस कर बड़ा हुआ है। इस समय इसके हाथ में कालवृष्टि है। जो क्रोध करता है या लड़ता है, वही मरता है। गोविन्द के क्रुद्ध होने पर कौन बचा सकता है ?"

3. P °मिथुण° । 4. A परपरक्कमं लुंहियदूसणं; B परपरक्कमउल्लुहियदेहयं; S °मुल्लिहिय° । 5. A चप्पणोण्णविय° । 6. A वरमहाहवेण व्व; B वरमयाहिवेणेव्व । 7. S सेंधुरो । 8. BK गलिउ । 9. APS तोंडि । 10. BP कंसवेण ।

(9) 1. P ओत्थरंत । 2. P आरोलहु । 3. S पंथे । 4. S जाह । 5. B भणिउ । 6. B करहि; P करहु । 7. A पहु । 8. B मुअहि मुअहि । 9. A बलवंतहो । 10. B देवोदेवईहिं । 11. A कालविट्ठि; B कालवट्टि । 12. A गोविंदें कुद्धें । 13. AP को वि ।

घत्ता—जाणिवि जायवणाहु णियगोत्तहु मंगलगारउ।
वंदिउ [11]णिवणियरेहिं दामोयरु वइरिवियारउ ॥9॥

(10)

कण्हेण समाणउ को वि पुत्तु संजणउ[1] जणणि विद्दवियसत्तु।
दुद्धरभररणधुरदिण्णखंधु[2] उद्धरिय जेण णिवडंत बंधु।
भंजिवि णियलइं गयवरगईइ सहुं माणिणीइ पोमावईइ।
अहिणंदियजिणवरपायरेणु[3] महुरहि संणिहियउ उग्गसेणु।
कइवयदियहहिं रइकीलिरीहिं[4] बोल्लाविउ पहु गोवालिणीहिं।
पंगुत्तउं पइं माहव सुहिल्लु कालिंदितीरि मेरउं कडिल्लु।
एवहिं महुराकामिणिहिं रत्तु महुं उप्परि दीसहि अथिरचित्तु।
क वि भणइ दहिउ[5] मंथंतियाइ तुहुं मइं धरियउ उब्भंतियाइ।
[6]लवणीयलित्तु करु तुज्झु लग्गु क वि भणइ पलोयइ मज्झु मग्गु।
तुहुं णिसि णारायण सुयहि णाहिं आलिंगिउ अवरहिं गोवियाहिं।
सो सुयरहि किं ण पउण्णवंछु[7] संकेयकुडंगुड्डीणरिंछु।
घत्ता—का वि भणइ णासंतु उद्धरिवि[8] खीरभिंगारउ।
किं वीसरियउ अज्जु जं मइं[9] सित्तु भडारउ ॥10॥

घत्ता—यादवनाथ को अपने कुल का कल्याणकर्ता जानकर शत्रुसंहारक दामोदर की राजसमूह द्वारा वन्दना की गयी।

(10)

कृष्ण के समान कौन पुत्र है, शत्रुसंहारक दुर्धर भारवाले रण की धुरा में कन्धा देनेवाले जिसे माँ ने पैदा किया हो ? उन्होंने गजवर के समान चालवाली मानिनी पद्मावती के साथ शृंखलाएँ तोड़कर, जिनवर के चरण-कमलों का अभिनन्दन करनेवाले उग्रसेन को मथुरा नगरी में स्थापित किया। कुछ दिनों तक कृष्ण के साथ क्रीड़ा करनेवाली ग्वालिनों ने कृष्ण से कहा—हे माधव ! तुमने मेरा सूक्ष्म कटिवस्त्र यमुनातीर पर छिपाया था, लेकिन इस समय आप मथुरा की स्त्रियों पर आसक्त हैं। हम लोगों पर अस्थिर चित्त दिखाई दे रहे हैं। कोई एक कहती है—दही मथते हुए उद्भ्रान्त होकर मैंने तुम्हें पकड़ लिया था और मेरा नवनीत से लिप्त हाथ तुम्हें लग गया था। कोई कहती है—मेरा रास्ता देखते रहने के कारण हे नारायण ! तुम रात्रि भर नहीं सो सके, दूसरी-दूसरी गोपियों के द्वारा तुम्हारा आलिंगन किया गया। संकेत-वृक्ष के लिए जाने को उत्सुक और सम्पूर्ण है इच्छा जिसकी ऐसे तुम उसे याद नहीं करते ?

घत्ता—कोई कहती है—क्षीरभृंगारक उठाकर, भागते हुए तुम्हारा जो मैंने अभिषेक किया था; क्या उसे तुम आज भूल गये ?

11. AP णिव°।

(10) 1. B संजणिउ। 2. A Als दुद्धररणभरधुरदिण्णकंधु; B दुद्धरभडरणदिण्णखंधु। 3. B Als. अहिवंदिय°। 4. AP °कीलणीहिं; B °कीलरीहिं। 5. AP महिउ। 6. A णवणीय°। 7. A °वत्थु। 8. AP उद्धरमि। 9. AP मइं अहिसित्तु भडारउ।

(11)

इय गोवीयणवयणइं सुणंतु कीलइ परमेसरु दरहसंतु।
संभासिउ[1] मेल्लिवि गव्वभाउ इहजम्महु महुं तुहुं ताय ताउ।
परिपालिउ थणथण्णेण[2] जाइ वीसरमि[3] ण खणु[4] मि जसोय माइ।
कइवयदियहइं तुहुं जाहि ताम पडिवक्खकुलक्खउ करमि जाम।
इय भणिवि तेण चिंतविउ[5] दिण्णु वरवसुहारइ[6] दालिद्दु छिण्णु।
आलाविय भाविय णियमणेण गोवालय पूरिय कंचणेण।
पट्ठविउ णंदु महुसूवणेण ओहामियदेवयपूयणेण[7]।
सहुं वसुएवें[8] सहुं हलहरेण सहुं परियणेण हरिकरिजणेण[9]।
घत्ता—सउरीणयरि पइट्ठु अहिसुरणरेहिं णोमाइउ।
भरहधरित्तिसिरीइ हरि पुप्फयंतु अवलोइउ ॥11॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे कंसचाणूरणिहणणो णाम
छासीतिमो[10] परिच्छेउ समत्तो ॥86॥

---

(11)

इस प्रकार गोपीजनों के वचन सुनते हुए, कुछ मुस्कराते हुए परमेश्वर क्रीड़ा करते हैं। गर्वभाव छोड़कर उन्होंने सम्भाषण किया—हे तात ! इस जन्म के तुम मेरे पिता हो। जिसने अपने थलथलाते स्तनों से मेरा परिपालन किया उस यशोदा माँ को मैं एक पल के लिए नहीं भूल सकता। कुछ दिनों के लिए आप जाएँ, तब तक के लिए जब तक मैं प्रतिपक्ष का नाश कर लूँ। यह कहकर उन्होंने मनचाहा दान किया, श्रेष्ठ धनधारा से दारिद्र्य दूर कर दिया। अपने मन से बातचीत कर और चाहकर उन्होंने ग्वालों को सोने से लाद दिया। देवी पूतना को तिरस्कृत करनेवाले मधुसूदन ने नन्द को भेज दिया और स्वयं वसुदेव के साथ, हलधर के साथ, परिजनों अश्वों तथा गजों के साथ—

घत्ता—शौरी नगर में प्रवेश करने पर नागों, सुरों और नरों ने उनकी वन्दना की। भारतभूमि की लक्ष्मी ने नक्षत्रों के समान आभावाले श्रीकृष्ण का साक्षात्कार किया।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणों और अलंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य में कंस-चाणूर-हनन नाम का
छियासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

(11) 1. B संभासिवि मेल्लिउ। 2. B थणि थण्णेण। 3. B वीसरिमि। 4. B खणु वि। 5. S चित्तविउ। 6. PS वसुधारए। 7. AP ओहें आकरिसियपूयणेण। 8. B वसुएवह। 9. APS हरिकरिणरेण। 10. A छयासीमो; P छायासीमो; S छासीतितमो।

सत्तासीतिमो संधि

मारिए महुरणाहे जीवंजस धरसिंधहु।
गय सोएण रुयंति पिउहि[1] पासि जरसिंधहु[2] ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

दुवई—दुम्मण णीससंति पियविरहहुयासणजालजालिया।
वणदवदहणहुणियणववेल्लि व सव्वावयवकालिया ॥

गयकंकण दुहिक्खलीला[3] इव पुप्फविरहिय भेलमहिला इव।
णट्ठपत्त फग्गुणवणराइ व सुट्ठु झीण णवचंदकला इव।
मोक्कलकेस कउलदिक्खा इव ण्हाणविवज्जिय जिणसिक्खा इव।
पउरविहार बउद्धपुरी विव वरविमुक्क काणीणसिरी[4] विव।
कंचिविवज्जिय उत्तरमहि[5] विव पंडुछाय[6] छणदंयहु सहि विव।
णिरलंकारी कुकइहि वाणि व दुक्खहं भायण णारयजोणि व।
गलियंसुयजलसित्तपओहर अवलोएवि धीय मउलियकर।
भणइ जणणु गुरु आवइ पाविय किं कज्जेण केण संताविय।
भणु तुह केण[7] कयउं विहवत्तणु को ण गणइ महुं तणउ पहुत्तणु।
जीविउं अज्जु[8] जि कासु हरेसइ कासु कालु कीलालि तरेसइ।

सतासीवीं सन्धि

मथुरानाथ के मारे जाने पर यशचिह्नवाले पिता जरासन्ध के पास शोक से रोती हुई जीवंजसा आयी।

(1)

दुर्मना, प्रिय विरह की अग्निज्वाला से प्रज्वलित निश्वास लेती हुई, दावानल से दग्ध वनलता की तरह उसके सभी अंग काले पड़ गये थे। दुर्भिक्ष लीला की तरह 'गयकंकण' (कंगन, अन्नकण से रहित) वृद्ध महिला की तरह, पुष्परहित (फूल, ऋतु रहित), फागुन की वनस्पति की तरह नष्टपत्र (नष्ट पत्ररचना और पत्ते), नवचन्दकला के समान अत्यन्त क्षीण, कौलदीक्षा की तरह मुक्तकेश, जिनशिक्षा की तरह स्नान से रहित, बौद्ध नगरी की तरह (प्रचुर विहारवाली, विशेष हारों से रहित), कानीन की लक्ष्मी की तरह (पति, वर से मुक्त), उत्तरभारत की तरह कंचीविवर्जित (काँची नगरी, करधनी से रहित), कुकवि की वाणी की तरह निरलंकार, नरकयोनि के समान दुःख की भाजन थी। पिता कहता है—तुमने महान् आपत्ति पायी है, किस काम से किसने तुझे सताया है ? बताओ, तुम्हारा वैधव्य किसने किया ? कौन मेरी प्रभुता को स्वीकार नहीं करता ? आज भी मैं किसके जीवन का अपहरण नहीं कर सकता ? आज यम किसके रक्त में तैरेगा ?

(1) 1. A पहुहे पासि। 2. AP जरसंधहो। 3. P दुभिक्ख°। 4. P काणीणे। 5. P महि उत्तर। 6. A पंडुच्छाय सहि छणहंदहो इव। 7. AP कयउ केण। 8. B अज्जु वि।

घत्ता—जीवंजसइ पवुत्तु[9] गुणि किं मच्छरु किज्जइ।
ताय सत्तु बलवंतु तुम्हु समाणु भणिज्जइ ॥1॥

(2)

दुवई—वासारत्ति पत्ति बहुसलिलुप्पेल्लियणंदगोउले।
जेणेक्केण धरिउ गोवद्धणु[1] गिरि हत्थेण णहयले ॥छ॥

वइरिणि णियथामेण[2] विणासिय बालत्तणि[3] जें पूयण तासिय।
मायासयडु जेण संचूरिउ जेण तुरंगु[4] तुंगु मुसुमूरिउ।
जेण तालु धरणीयलु पाविउ जेण अरिट्ठवयणु[5] वंकाविउं।
तरुजुवलउं[6] मोडिउं भुयजुयलें णायसेज्ज आयामिय पबलें।
चाउ पणाविउ संखापूरणु[7] कियउं[8] जेण णियपिसुणविसूरणु।
कालियाहि तासिवि अरविंदइं खुडियइं जेण पउरमयरंदइं[9]।
दंतिहि जेण दंतु उप्पाडिउ सो ज्जि पुणु वि कुंभत्थलि ताडिउ।
जो वग्गिवि भडरंगि[10] पइट्ठउ कालसलोणउ लोएं दिट्ठउ।

घत्ता—जेण मल्लु चाणूरु जममुहकुहरि णिवेइउ[11]।
तेण णंदगोवेण[12] मारिउ तुह जामाइउ[13] ॥2॥

घत्ता—जीवंजसा ने कहा—गुणवान व्यक्ति में क्या ईर्ष्या की जाए, हे पिता ! दुश्मन तुम्हारे समान दृढ़ बताया जाता है।

(2)

वर्षाऋतु प्राप्त होने पर नन्द गोकुल के अत्यधिक जल में डूबने पर जिसने अकेले गोवर्धन पर्वत को हाथ से आकाश में उठा लिया, बचपन में जिसने शत्रुणी पूतना को त्रस्त कर दिया, जिसने माया-शकट को चूर-चूर किया, जिसने ऊँचे घोड़े को मसल दिया, जिसने ताल वृक्ष को धरती पर गिरा दिया, जिसने अरिष्ट वृषभ को नम्र बना दिया, भुजयुगल से तरुयुगल को मोड़ दिया, जिस प्रबल ने नागशय्या को झुका दिया, धनुष चढ़ा दिया, शंख बजा दिया, और जिसने अपने शत्रुओं को नष्ट कर दिया, कालियानाग को त्रस्त कर प्रचुर मकरन्दवाले कमल तोड़ लिये, जिसने हाथी का दाँत उखाड़ दिया, और उसी को फिर कुम्भस्थल पर ताड़ित किया, जो क्रुद्ध होकर मल्लयुद्ध-भूमि में प्रविष्ट हुआ, और जिसे लोगों ने यम के समान सुन्दर देखा।

घत्ता—जिसने चाणूरमल्ल को यम के मुँहरूपी कुहर में निवेदित कर दिया, उसी नन्दगोप ने तुम्हारे दामाद को मारा है।

---

9. AP पउत्तु; S उपत्तु।

(2) 1. S गोवद्धणगिरि। 2. A तिय थामेण। 3. S बालत्तें। 4. B तुरंगतुंग। 5. B Als. अरिट्ठु 6. APS °जुयलउं। 7. ABPS संखाऊरणु। 8. ABP कयउं। 9. B पवर। 10. PS भडु। 11. PS णिवाइउ। 12. B णंदगोविंदें। 13. P जामाइओ।

(3)

दुवई—वसुएवेण पुत्तु सो घोसिउ भायरु सीरहेइणा।
ससयणमरणवयणु णिसुणेप्पिणु ता कुद्धेण राइणा ॥छ॥

पेसिया सणंदणा ससंदणा।
धाविया[1] सवाहणा ससाहणा।
सूरपट्टणं चियं धयंचियं।
कण्हपक्खपोसिरा सरोसिरा[2]।
णिग्गया दसारुहा[3] जसारुहा।
जाययं सकारणं महारणं।
दिण्णघायदारुणं पलारुणं।
रत्तवारिरेल्लियं रसोल्लियं[4]।
दंतिदंतपेल्लियं विहल्लियं[5]।
छिण्णछत्तचामरं णयामरं[6]।
पुप्फवासवासियं णिसंसियं।

घत्ता—णवर दुरंतरयाहं दुप्पेक्खहं गयणायहं।
णट्ठा वइरिणरिंद णारायणणारायहं ॥3॥

(4)

दुवई—णासंतेहिं तेहिं महि कंपइ णाणामणियरुज्जला।
महुमंथणरयाहि महिमहिलहि हल्लइ जलहिमेहला ॥छ॥

---

(3)

वसुदेव ने उसे अपना पुत्र घोषित किया है और बलराम ने अपना भाई। तब स्वजन की मृत्यु की खबर सुनकर राजा एकदम क्रुद्ध हो उठा। उसने रथ के साथ अपने पुत्र भेजे। वे वाहनों और सेना के साथ दौड़े। वीर पट्टों से वेष्टित और ध्वजों से सहित कृष्णपक्ष के समर्थक, रोष से भरे हुए कृष्ण के यशस्वी भाई दशार्हादि भी निकल पड़े। जो किये गये आघातों से भयंकर हैं, मांस से अरुण, रक्तजल से प्रेरित, रुधिर से आर्द्र, गजदन्तों से आहत कम्पित, छिन्न छत्र-चँवरों से युक्त, और देवत्व को प्राप्त है, ऐसा महायुद्ध उनमें कारण हुआ। पुष्पवास से सुवासित और मनुष्यों द्वारा वह प्रशंसित था।

घत्ता—दुष्टों का अन्त करनेवाले दुर्दर्शनीय आकाशगामी नारायण के तीरों से शत्रुराजा नष्ट हो गये।

(4)

उनके नष्ट होते ही नाना मणिकिरणों से उज्ज्वल धरती काँप उठी। वासुदेव में अनुरक्त महीरूपी महिला

---

(3) 1. A धाइया। 2. PS सुरोसिरा। 3. A दहारुहा। 4. S वसोल्लियं। 5. A यहिल्लियं। 6. A णियामरं; P णयोमरं।

णियपयपंकयतलि[1] आसीणा ते अवलोइवि संगरि रीणा।
राएं अवरु पुत्तु अवरायउ पेसिउ जो केण वि ण पराइउ।
तेण वि जाइवि[2] जयसिरिलोहें रहकिंकरहयगयसंदोहें।
सउरीपुरु चउदिसहिं णिरुद्धउं[3] णीसरियउं जायवबलु कुद्धउं।
करिकरवेढणेहिं[4] असरालिहिं[5] रहसंकडि पडंतमहिवालहिं[6]।
चंडगयासणिदलियधुरिल्लहिं[7] णिवडियकोंतसूलहलसेल्लिहिं[8]।
फुरियकिरणमालापइरिक्कहिं[9] विहडियमउडकडयमाणिक्कहिं[10]।
[11]भडकरगाहधरियसिरमालहिं[12] असिसंघट्टणहुयवहजालहिं[13]।
विणविवलियलोहियकल्लोलहिं[14] दिसिविदिसामिलंतवेयालहिं[15]।
दाढाभासुरभइरवकायहिं किलिकिलिसद्दहिं भूयपिसायहिं।

घत्ता—जुज्झइ णरघोराइं[16] करि करवालु करेप्पिणु[17]।
छायालीसइं तिण्णि सयइं एम जुज्झेप्पिणु ॥4॥

(5)

दुवई—गइ अवराइयम्मि[1] [2]वसुएवतणूरुहसरणिसुंभिए।
पविउलसयलभुवणभवणंगणजसवडहे[3] वियंभिए ॥छ॥

की जलधिरूपी मेखला हिल उठी। राजा (कृष्ण) के चरणकमलों के नीचे बैठे हुए, युद्ध में खिन्न अपने पुत्रों को देखकर राजा जरासन्ध ने अपना दूसरा पुत्र अपराजित भेजा, जो किसी से भी पराजित नहीं हुआ था। रथों, अनुचरों, अश्वों और गजों के समूह से और विजयश्री के लोभ से उसने भी जाकर शौरीपुर को चारों ओर से अवरुद्ध कर लिया। यादवकुल भी क्रुद्ध होकर निकला। हाथियों की सूँडों के प्रचुर वेष्टनों, रथों के अवकाश में पड़ते हुए भूमिपालों, प्रचण्ड वज्रगदाओं से दलित सारथियों (या धुरीनों), गिरते हुए भालों, शूलों, हलों और सेलों से स्फुरित किरणमालाओं से प्रचुर, नष्ट हुए मुकुट कंटकों के मणियों व योद्धाओं के हाथों से पकड़े हुए शिरस्त्राणों तथा तलवारों की रगड़ से उत्पन्न अग्निज्वालाओं, घावों से रिसते हुए रक्त के कल्लोलों से, दिशा-विदिशा में मिलते हुए वेतालों की डाढ़ों से भास्वर और भैरव शरीरवाले भूत-पिशाचों के द्वारा किलि-किलि शब्द करनेवाले थे।

घत्ता—हाथ में तलवार लेकर भयंकर तीन सौ छियालीस योद्धा युद्ध करने के लिए आये।

(5)

वसुदेव के पुत्र कृष्ण के तीरों से अपराजित के विनष्ट होने पर, समस्त भुवनरूपी विशाल भवन के आँगन

(4) 1. B णियपंकयतल° । 2. B जायवि । 3. P णेरुद्धउं । 4. A °विंमलेहिं; B °वेढणेहिं । 5. APS असरालहिं । 6. P °महिपालहिं । 7. B °गयासिणि° । 8. AP °हलभल्लहिं । 9. B °पयरिक्कहिं । 10. APS °कडयमउड° । 11. B °करवाल । 12. AP °सिरवालहिं । 13. B °हुयवय° । 14. K विण° । 15. BKP मिलंति । 16. A णरधोरेहिं; B णरघोराहं । 17. A लएप्पिणु ।
(5) 1. B अवरायम्मि । 2. B °तणुरुह° । 3. S °सयलभुवणंगण° ।

अण्णु वि सुउ जरसिंधहु[4] केरउ विहलियसुयणहँ[5] सुहइं जणेरउ।
कालु व वइरिवीरजीवियहरु उट्ठिउ कालजमणु दट्ठाहरु।
पभणइ ताय ताय आयण्णहि दीण वइरि[6] किं हियवइ मण्णहि।
पित्तिएहिँ[7] सहुं समरि धरेप्पिणु आणमि[8] णंदगोउ बंधेप्पिणु।
पुलउ जणंतु णराहिवदेहहु सहुं सेण्णेण विणिग्गउ गेहहु।
जलि थलि णहयलि कहिं मि ण माइउ सो सरोसु सहरिसु उद्धाइउ।
गंपिणु पिसुणचरिउं जं दिट्ठउं तं तिह हरिहि चरेण[9] उवइट्ठउं।
तं णिसुणेप्पिणु[10] जाणियणाए सहु मंतिहिं सुहुं सुहिसंघाएं।
बंधुवग्गु मंतणइ पइट्ठउ मंतिइ[11] मंतु महंतउ दिट्ठउ।
जइ सबलेहिं अबलु आढप्पइ तो णासइ जइ सो पडिकुप्पइ।
बेण्णि जि[12] होंति विणासहु अंतरु तप्पवेसु[13] अहवा देसंतरु।
तहिं पहिलारउ अज्जु ण जुज्जइ देसगमणु पुणु णिच्छउं किज्जइ।
हरि असमत्थु दइउ[14] का जाणइ को समरंगणि जयसिरि माणइ।
खलरामाहिरामसुविरामें तं णिसुणेप्पिणु अलिउलसामें।

घत्ता—बोल्लिउं महुमहणेण हउं असमत्थु ण वुच्चमि।
मइं मेल्लह रणरंगि एक्कु जि रिउहुं[15] पहुच्चमि ॥5॥

में यशरूपी पट के ध्वस्त होने पर, जरासन्ध का दूसरा पुत्र कालयवन, जो विह्वल स्वजनों को सुख देनेवाला तथा काल के समान शत्रुवीरों के जीवन का अपहरण करनेवाला था, अपने होंठ भींचता हुआ उठा। वह पिता से बोला—"हे पिता ! सुनिए, सुनिए, दीन शत्रु को आप अपने मन में बड़ा क्यों मानते हैं ? युद्ध में चाचाओं के साथ पकड़कर और बाँधकर मैं नन्दगोप को ले आऊँगा।"

इस प्रकार राजा के शरीर में पुलक उत्पन्न करता हुआ। सैन्य के साथ वह अपने घर से निकला। जल, थल और आकाश में, वह कहीं भी नहीं समा सका, क्रोध और हर्ष के साथ वह शीघ्र दौड़ा। जब दूत ने उस दुष्ट का चरित जैसा देखा, वैसा हरि से निवेदित किया। यह सुनकर न्याय-नीति जाननेवाले बन्धुवर्ग ने सुधिसमूह और पण्डितों के साथ मन्त्रणा की। मन्त्री ने यह महान् परामर्श दिया कि यदि कोई अबल सबलों के द्वारा मारा जाता है, तो जो (दुर्बल) प्रतिरोध (प्रतिक्रोध) करता है, वह नाश को प्राप्त होता है। यद्यपि दोनों विनाश के लिए हैं, चाहे तपस्वी वेश हो या देशान्तर गमन। इसलिए आज पहला ठीक नहीं है, देशगमन निश्चित रूप से करना चाहिए। हरि असमर्थ हैं ? दैव को कौन जानता है ? कौन युद्ध में विजयश्री को मानता है ? शत्रुओं की स्त्रियों के सौन्दर्य को विराम देनेवाले भ्रमरकुल की तरह श्याम कृष्ण ने यह सुनकर कहा—

घत्ता—कृष्ण ने कहा—मैं कहता हूँ कि मैं असमर्थ नहीं हूँ, मुझे तुम युद्धभूमि में छोड़ दो, अकेला ही मैं शत्रु के लिए पहुँचता हूँ।

---

4. PS जरसेंधहो। 5. A विहडिय°। 6. AP दीणवयणु। 7. K पित्तिएण, but gloss पितृव्यैर्नवभिः सह। 8. S आणेवि। 9. B चरेँ तय°। 10. AP णिसुणेवि विधाणियणाएं; S णिसुणेविणु जाणियणाएं। 11. P मंतिउ मंतु महंतहिं। 12 A वि। 13. P तप्पविसु। 14. P दइवु। 15. P रिउहे।

(6)

दुवई—णासिउ जेहिं वइरिविज्जागणु भेसिउ जेहिं विसहरो।
मारिउ जेहिं कंसु चाणूरु वि तोलिउ जेहिं महिहरो।।छ।।

ते भुय होंति ण होंति व मेरा किं एवहिं जाया विवरेरा।
इय गज्जंतु मुरारि णिवारिउ हलिणा[1] मंतमग्गि संचालिउ।
जं केसरिसरीरसंकोयणु तं जाणसु करिजीवविमोयणु।
अज्जु कण्ह ओसरणु तुहारउं पुरउ पहोसइ परखयगारउं।
इय कहेवि मच्छरु ओसारिउं मड्डइ[2] दाणवारि णीसारिउ।
गयउरसउरीमहुरापुरवइ णिग्गय जायव सयल वि णरवइ।
वहइ सेण्णु अणुदिणु णउ थक्कइ महि कंपइ अहि भरहु ण सक्कइ।
भूवइ भूमि कमंतकमंतहं जंतहं ताहं पहेण महंतहं[3]।
कालु व कालायरणि ण भग्गउ कालजमणु[4] अणुमग्गें लग्गउ।
जलियजलणजालासंताणइं डज्झमाणपेयाइं मसाणइं।
हरिकुलदेवविसेसहिं[5] रइयइं सिवजंबुयवायससयछइयइं[6]।
णायरणारिरूवेण[7] रुयंतिउ[8] दिट्ठउ देवयाउ सोयंतिउ।

(6)

जिन मेरे बाहुओं ने शत्रु के विद्यासमूह को नष्ट किया है, जिनने विषधर को डराया, जिनने कंस और चाणूर का काम-तमाम किया और पहाड़ को उठा लिया, क्या वे मेरे बाहु आज मेरे होते हुए भी मेरे नहीं हैं ? क्या वे आज विपरीत हो गये हैं ? इस प्रकार गर्जना करते हुए मुरारी ने उनको मना किया। बलराम उन्हें नीति के मार्ग पर ले आये कि सिंह का जो अपने शरीर का संकोचन है, उसे तुम हाथी के प्राणों का विमोचन जानो। इसलिए हे कृष्ण ! आज तुम्हारा हटना आगे शत्रु के विनाश का कारण होगा।

यह कहकर उसका मत्सर दूर किया और बलपूर्वक दानवारि श्रीकृष्ण को हटा दिया गया। गजपुर, शौरीपुर और मथुरापुर के राजा, यादव और दूसरे समस्त राजा निकल पड़े। दिन-प्रतिदिन सेना चली जा रही है, वह थकती नहीं है। धरती काँप उठती है, शेषनाग भार नहीं उठा पाता है। राजा और धरती को लाँघते और पथ पर चलते-चलते उन महान् लोगों का काल के समान मृत्यु में आदर नष्ट नहीं हुआ (अर्थात् मृत्यु उनके पीछे पड़ी हुई थी); कालयवन उनके पीछे लग गया। तब यादवकुल के किसी देवविशेष के द्वारा सैकड़ों सियारों और वायसों से आच्छादित जलती हुई आग की ज्वालाएँ, जलते हुए प्रेत और श्मशान निर्मित किये गये। नागर-नारियों के रूप में रोती हुई शोक करती हुई देवियाँ दिखाई गयीं।

(6) 1. S हलिणा। 2. AP मड्डुए; B मड्डुए। 3. B तहंतहं। 4. A कालजमण। 5. S हरिउलवंसविसेसहिं। 6. A °जंबू°; P °जंबुव°। 7. ABP णायरणारिरूवेण; S णायरणारीरूवि। 8. P रुयंतिउ।

घत्ता—हा समुद्दविजयंक हा धारण हा पूरण।
थिमियमहोयहिराय[9] हा हा अचल अकंपण ॥6॥

(7)

दुवई—हा वसुएव वीर हा हलहर दुम्महदणुयमद्दणा।
हा हा उग्गसेण गुणगणणिहि हा हा सिसु जणद्दणा ॥छ॥

हा हा पंडु चंडु किं[1] जायउं पत्थिववइरु विहुरु संप्रावउ[2]।
हा हा धम्मपुत्त हा मारुइ हा हा पत्थ विजयमहिमारुइ।
हा सहएव णउल कहिं पेक्खमि वत्त कासु कहिं जाइवि[3] अक्खमि।
हा हा कौंति मद्दि हा रोहिणि हा देवइ अणंगसुहवाहिणि,
हा महिणाहु कुइउ जमदूयउ सव्वहं[4] केम कुलक्खउ हूयउ।
तं आयण्णिवि चोज्जु[5] वहंतें पुच्छिउ णिवसुएण विहसंतें।
कज्जें केण दुहेण[6] विसण्णा[7] किं सोयह के मरणु पवण्णा।
तं णिसुणेवि देवि तहु ईरइ भणु णरणाहि[8] कुद्धि को धीरइ।
तहु[9] भीएहिं सिबिरु[10] संचालिउ महियलि सरणु ण कहिं मि णिहालिउं।
हय[11] पुण्णक्खइ णं जरपायव अग्गिपवेसु करिवि मय जायव।
तं णिसुणेप्पिणु रणभरजुत्तें भासिउं खोणीयलवइपुत्तें।

घत्ता—"हा समुद्रविजयांक, हा धारण, हा पूरण, हा स्तमितसागर, अचल, अकम्पन ! तुम्हारा अस्त हो गया।

(7)

हा वसुदेव वीर ! हा दुर्मददानवों का मर्दन करनेवाले हलधर ! हा हा उग्रसेन ! गुणगणनिधि हा हा, शिशु जनार्दन, हा हा प्रचण्ड, चण्ड, तुम्हें क्या हो गया ? राजा के शत्रु ने संकट पैदा कर दिया है। हे हे धर्मपुत्र ! हे मारुति (भीम) ! विजय की महिमा की कान्तिवाले हे अर्जुन ! हे सहदेव ! नकुल ! तुम्हें कहाँ देखें ? किससे कहाँ जाकर बात कहें ? हे कुन्ती ! माद्री ! हे रोहिणी ! कामसुख को देनेवाली हे देवकी !....हा महीनाथ, यमदूत क्या कुपित हो गया है ? सबका कुलक्षय कैसे हो गया !"

यह सुनकर आश्चर्य करते हुए हँसकर राजा कालयवन ने पूछा—

"ये लोग किस दुःख से दुःखी हैं, किसका शोक कर रहे हैं, कौन लोग मरण को प्राप्त हुए हैं ?"

यह सुनकर देवी उससे कहती है—"बताइए, नरनाथ के कुपित होने पर कौन धीरज धारण कर सकता है ? तुम्हारे भय से शिविर चल पड़ा है, उसे महीतल में कहीं भी शरण नहीं दिखाई दी। पुण्य का क्षय होने पर वे नष्ट हो गये, मानो जीर्ण पेड़ हों। यादव आग में प्रवेश करके मर चुके हैं।" यह सुनकर रणभार में जुते हुए पृथ्वीतलपति के पुत्र कालयवन ने कहा—

9. P °महोवहि°।

(7) 1. P कें। 2. A संजायउ; P संपाइउ। 3. P जायवि। 4. ABPS सव्वहुं। 5. B चुज्जु। 6. P दुहेहिं। 7. A णिसण्णा। 8. S णरणाह। 9. A तुह। 10. PS सिमिरु। 11. AP णियपुण्ण°।

घत्ता—भल्लउ[12] सुहडणिहाउ णिग्घिणजलणें तं[13] खद्धउ।
आहवि सउहुं[14] भिडेवि मइं जसु जिणिवि ण लद्धउं ॥7॥

(8)

दुवई—हा मइं कंसमरणपरिहवमलु रिउरुहिरें ण धोइओ।
इय चिंतंतु थंतु मलिणाणणु जणणसमीवि आइओ ॥छ॥

पायपणामपयासियविणएं[1] दिट्ठउ ताउ तेण पियतणएं[2]।
जोइउं सुयउं सच्चु[3] विण्णवियउं अरिउलु[4] णिरवसेसु सिहिखवियउं।
अत्थमिएण णियाहियवंदें[5] थिउ मेइणिपहु परमाणंदें।
एत्तहि पहि पवहंत महाइय हरि बल जलहितीरु संपाइय[6]।
दिट्ठउ महिएण[7] रयणायरु वेलालिंगियचंददिवायरु[8]।
वाडवग्गिजालाहिं पलित्तउ जलकरिकरजलधारहिं[9] सित्तउ।
णवपवालसरलंकुररत्तउ णं कुंकुमराएण विलित्तउ।
जलयरघोसें भणइ व मंगलु हसइ णाइ मोत्तियदंतुज्जलु।
तलणिहित्तणाणामणिकोसें णच्चइ[10] संवड्ढियसंतोसें।
परगंभीरु[11] पयइगंभीरउ ण सहइ मलु णं अरुहु भडारउ।
महुमह आउ आउ साहारइ णं तरंगहत्थें[12] हक्कारइ।

घत्ता—"अच्छा हुआ कि शत्रुसमूह को दुष्ट आग ने खा लिया। युद्ध में सामने लड़कर उसे जीतने का यश मुझे नहीं मिल सका।"

(8)

हा, मैंने कंस की मृत्यु के पराभव का मल शत्रु के खून से नहीं धो पाया—यह सोचता हुआ वह अपना मैला मुख किये पिता के पास आया। चरणों में प्रणाम कर अपनी विजय प्रकाशित करते हुए प्रिय पुत्र ने अपने पिता से भेंट की। पिता ने पुत्र को देखा और उसे सुना और मान लिया कि अशेष शत्रुकुल आग में नष्ट हो गया। अपने अहित-समूह के अस्त हो जाने पर—पृथ्वी का राजा आनन्द से रहने लगा। यहाँ पर महाआदरणीय वे (हरि और बलराम) पथ पर चलते हुए, समुद्र के किनारे पहुँचे। कृष्ण ने समुद्र देखा जिसके तट सूर्य-चन्द्रमा का आलिंगन कर रहे थे, जो वाडवाग्नि की ज्वाला से जल रहा था और गजों की सूँड़ों की धाराओं से जल सींचा जा रहा था। नये मूँगों के सरल अंकुरों से जो लाल रंग का था, मानो केदार राग से लिप्त हो। शंखों के घोष से जो मंगल कहा जाता था, मोतियों के दाँतों से उज्ज्वल जो मानो हँस रहा था, अपने तल में रखे हुए नाना मणिकोषों के कारण, बढ़े हुए सन्तोष के कारण जो नाच रहा था, शत्रु के लिए गम्भीर वह मल सहन नहीं करता, मानो प्रकृति से गम्भीर परमजिन हो। हे मधुसूदन ! तुम आओ, आओ—यह कहकर जो धीरज देता है और अपने तरंगरूपी हाथ से मानो उसे बुलाता है।

---

12. AP भग्गउ। 13. ABPS om. तं। 14. B सम्मुहुं।

(8) 1. B पयासियपणएं। 2. S णियतणएं। 3. K सच्चु and gloss सर्वं सत्यं वा; ABPS सव्वु। 4. P अरिकुलु। 5. A णियाहियवंदें। 6. AP संपत्तइय। 7. A महुएण। 8. AP वेलालिंकिय°। 9. B °करजलधारासित्तउ; S °करधारहिं सित्तउ। 10. AP णच्चइ णं वड्ढिय°। 11. AP परहु दुलंघु। 12. ABPS हत्थहिं।

घत्ता—भूसणदित्तिविसालु णावइ तारायणु थक्कउं।
जायवणाहें तेत्थु सायरतडि सिबिरु[13] विमुक्कउं ॥8॥

(9)

दुवई—खंचिय रह तुरंग मायंगोयारियसारिभारया[1]।
खंभि[2] णिबद्ध के[3] वि गय के वि कराहयभूरिभूरया ॥छ॥

णियसंतावयारिरविसयणइं[4] उम्मूलंति के वि करि णलिणइं।
केण[5] वि पंकु सरीरि णिहित्तउ सीयलु[6] मइलु विलेवणु[7] थक्कउ।
दाणबिंदुचंदियचित्तलजलु दीसइ काणणु चूरियदुमदलु[9]।
मुक्कइं खलिणइं मणिपरियाणइं तुरयहं भडहं विविहतणुताणइं।
थाणुणिबद्धइं तवसिउलाइं व गुणपसरियइं सुधम्मफलाइं व।
उब्भियाइं दूसइं बहुवण्णइं चलियचिंध[10] मंडवि[11] वित्थिण्णइं।
कइवय दियह तेत्थु णिवसंतहं गय दुग्गमपएस[12] जोयंतहं।
पुणु अण्णहि दिणि मंतु समत्थिउ गुरुयणेण माहउ[13] अब्भत्थिउ।
हरि तुहुं पुण्णवंतु जं इच्छहि तं जि होइ णियसत्ति[14] णियच्छहि।

घत्ता—यादवनाथ ने उस सागर-तट पर अपने शिविर ठहरा दिये। भूषणों की दीप्ति से विशाल वह ऐसे लगते थे, जैसे तारागण आकर ठहर गये हों।

(9)

रथ और तुरंग तथा जिनसे पर्याणों का भार उतार लिया गया है ऐसे महागज ठहरा दिये गये। कितने ही गज खम्भों से बाँध दिये गये। कितने ही गज अपनी सूँड़ों से धूल उड़ा रहे थे। कोई गज अपने राजा के लिए सन्ताप देनेवाले सूर्य के स्वजन कमलों को उखाड़ रहे थे। किसी ने कीचड़ अपने शरीर पर डाल ली, मानो शीतल कीचड़ का विलेपन उसके शरीर पर स्थित हो। मदजल की बूँदोंरूपी चन्द्रिका से जल चित्रित दिखाई देता है और कानन ऐसा दिखाई देता है, जैसे उसके द्रुमदल चूर-चूर हो गये हों। अश्वों के लगाम और मणियों के जीन तथा भटों के शरीरों से विविध कवच उतार दिये गये। रंग-बिरंगे तम्बू तान दिये गये, जो तपस्वियों के कुल के समान थान पर बँधे (स्थाणु-खूँटा, स्थान से बँधे हुए) थे, जो सुधर्म के फल की तरह गुणों (डोरी, दयादि गुणों) से प्रसारित थे, जो चंचल पताकाएँ बाँधकर मानो फैला दिये गये थे। वहाँ रहते हुए और उस दुर्गम प्रदेश को देखते हुए उनके कई दिन बीत गये। दूसरे एक दिन उन्होंने मन्त्रणा की याचना की। गुरुजन ने माधव से अभ्यर्थना की—

"हे हरि ! तुम पुण्यवान हो, जो चाहते हो वही होगा। अपनी शक्ति-सामर्थ्य को देखें। तुम ऐसा करो

---

13. S सिमिरु।

(9) 1. B °योत्तारिय°। 2. S खंभ°। 3. A के वि करहाहिय वसह वि भूरिभारया; BPS कराहिय°। 4. AP णिव°। 5. APS केहिं मि। 6. AP सीयलु णाइं विलेवणु घित्तउं। 7. B विलेमणु। 8. A °चंदिय°। 9. AP चूरिय°। 10. B °भंग। 11. A मंडव°। 12. APS पवेसु। 13. S माहवु। 14. A णियसंति।

तिह करि जिह रयणायरपाणिउं[15]   देइ मग्गु मयरोहरमाणिउं।
णिरसणु अट्ठ दियह मलणासणि   ता रक्खसरिउ थिउ दब्भासणि।
णइगमु अमरु णिसिहि संपत्तउ   हरिवेसें हरि तेण पवुत्तउ।
घत्ता—आउ जिणिंदु णवेवि जणियतायजयतुट्ठिहि[16]।
माहव[17] चिंतहि काइं चडु महु तणियहि[18] पुट्ठिहि ॥9॥

(10)

दुवई—ता हय गमणभेरि कउ कलयलु लंघियदसदिसामरे।
मणिपल्लाणपट्टचलचामरि[1] चडिउ उविंदु हयवरे ॥छ॥
चवलतुरंगतरंगणिरंतरि[2]   तुरउ पइट्ठु समुद्दब्भंतरि।
हरिवरगइमज्जायइ धरियउं   पाणिउं बिहिं भाइहिं[3] ओसरिउं।
तहु अण्णुमग्गें साहणु चल्लिउं   हयढक्काएवहरिसरसोल्लिउं[4]।
थियउं सेण्णु सुरणिम्मिइ गयमलि   वेसादप्पणसंणिहि महियलि।
भवसंसरणदुक्खदुक्खियहरि[5]   बावीसमु समुद्दविजयहु घरि।
तित्थंकरु सिवदेविहि होसइ   छम्मासहिं सुरणाहु पघोसइ।
एयहं दोहिं मि पंकयणेत्तहं   वणि णिवसंतहं वहुवरइत्तहं।
जक्खराय तुहुं[6] करि पुरु भल्लउं   चित्तजयंतिपंतिसोहिल्लउं।

कि जिससे मत्स्यों से मान्य समुद्र का जल रास्ता दे दे। तब राक्षसों के शत्रु हरि, पापनाशक दर्भासन पर आठ दिन तक निराहार बैठे। रात्रि में निगम नाम का अमर आया और अश्व के रूप में वह हरि से बोला—

घत्ता—जिनेन्द्र को नमस्कार करके आओ और पीड़ित विश्व को सन्तुष्ट करनेवाली मेरी पीठ पर चढ़ जाओ। हे हरि, तुम चिन्ता क्यों करते हो।

(10)

तब युद्ध के नगाड़े बजा दिये गये, कोलाहल होने लगा, मणिमय पर्याण-पट्ट और चंचल चामरों से युक्त, दसों दिशाओं को लाँघनेवाले अश्व पर उपेन्द्र (हरि) आरूढ़ हो गये। चंचल तुरंग की तरह तुंग तरंगों से परिपूर्ण समुद्र के भीतर अश्व चला। अश्ववर की गति की मर्यादा से गृहीत उसका पानी दो भागों में हट गया। उसके (अश्व के) पीछे-पीछे सेना चल दी, बजते हुए नगाड़ों के शब्दों और हर्ष-ध्वनियों से रसार्द्र, देवों से निर्मित, मल से रहित, वेश्या के दर्पण के समान स्वच्छ महीतल पर सेना ठहर गयी। देवेन्द्र घोषित करता है कि संसार के भ्रमण के दुःख से दुःखितों को धारण करनेवाले समुद्रविजय के घर में शिवादेवी से छह माह में बाईसवें तीर्थंकर होंगे। अतः हे कुबेर ! तुम वन में निवास करनेवाले कमलनयन इन दोनों बन्धुवरों के लिए चित्रित ध्वजपंक्तियों से शोभित एक सुन्दर नगर की रचना कर दो।

15. AP °यरवाणिउं। 16. AP जणियजयत्तयतुट्ठिहे। 17. K माहउ। 18. B तणिहिं।
(10) 1. P °पट्टे। 2. A चंचलु तुरउ तरंग°; P चलतरंगरंगंतणिरंतरि। 3. APS भायाहिं। 4. P °ढक्काएए हरिस°। 5. A °दुक्खिय°। 6. AP करि तुहुं।

घत्ता—झत्ति पसाउ भणेवि गउ पेसिउ सहसक्खें।
पुरि परिहाजलदुग्ग कय दारावइ जक्खें ॥10॥

(11)

दुवई—कच्छारामसीमणंदणवणफुल्लियफलियतरुवरा।
सोहइ[1] पंचवण्णचलचिंधहिं दूरोरुद्धरवियरा ॥छ॥

धरइं सत्तभउमइं[2] मणिरंगइं रयणसिहरपरिहट्टपयंगइं।
पंगणाइं[3] माणिक्कणिबद्धइं तोरणाइं मरगयदलणिद्धइं।
जलइं सकमलइं थलइं ससासइं माणुसाइं पालियपरिहासइं।
कुंकुमपंकु[4] धूलि कप्पूरें पउ धुप्पइ ससिकंतहु[5] णीरें।
महुयर रुणुरुणंति महु थिप्पइ परहुय[6] वासइ पूसउ कुप्पइ।
कह कहंतु जायउ रसु खंचइ कलमकणिसु एमेव विलुंचइ।
कुसुमरेणु पिंगलु णहि[7] दीसइ कालायरुधूमउ दिस भूसइ।
बेण्णि वि णं संझाघण णवघण जहिं दुहु णउ मुणंति णायरजण।
जहिं जिणहरइं वरइं रमणीयइं वीणावंसविलासिणिगेयइं[8]।

घत्ता—तहिं[9] सभवणि सुत्ताए रयणिहि दुक्कियहारिणि।
दिट्ठी सिविणयपंति सिवदेविइ सिवकारिणि ॥11॥

घत्ता—देवेन्द्र द्वारा प्रेषित कुबेर 'जो प्रसाद' यह कहकर शीघ्र गया और उसने परिखा तथा जलदुर्ग से युक्त द्वारावती की रचना कर दी।

(11)

गृहवाटिकाओं, उद्यानों, सीमाओं, नन्दनवनों और फूले-फले तरुवरों से युक्त और रविकिरणों को दूर से रोक देनेवाली वह नगरी पचरंगी चंचल ध्वजों से शोभित है। उसमें सातभूमियों, मणिमण्डपों और रत्नशिखरों से सूर्य को घर्षित करनेवाले घर हैं। माणिक्यों से विरचित प्रांगण हैं। मरकतदल से रचित तोरण हैं। कमलों सहित जल और धान्यों सहित स्थल हैं। परिहास करनेवाले मनुष्य हैं। जहाँ केशर की कीचड़ है और कपूर की धूल है, जहाँ चन्दकान्त मणि के जल से पैर धोये जाते हैं। भ्रमर गुनगुनाते हैं, मधु झरता है। कोयल शब्द करती है, तोता क्रोध करता है, कथा कहते-कहते रस में मग्न हो जाता है, और धान्य के कणों को यों ही लोंचता है। पीली कुसुमधूल आकाश में दिखाई देती है। कालागुरु का धुआँ दिशाओं को शोभित करता है। दोनों (पुष्परज और अगुरुधूम) ऐसे लगते हैं, मानो सन्ध्यावन और नवघन हों। जहाँ नागरजनों को किसी प्रकार का दुःख नहीं है, जहाँ विशाल और रमणीय जिनमन्दिर हैं, वीणा, बाँसुरी और विलासिनियों के गीत हैं,

घत्ता—ऐसी उस नगरी में अपने भवन में रात्रि में सोती हुई शिवादेवी ने पापों का हरण करनेवाली कल्याणमयी स्वप्न-पंक्ति देखी।

---

(11) 1. B सोहिय। 2. P °भोमइं। 3. B पंगणाइं। 4. P °पंक°। 5. A ससियंतहो। 6. BS परहुव। 7. AP णहु। 8. P °गीयइं। 9. AB तहिं जि भवणि।

(12)

दुवई—वियलियदाणसलिलचलधारासित्तकओलमूलओ[1]।
पसरियकण्णतालमंदाणिलघोलिरभसलमेलओ ॥छ॥

दिट्ठउ मत्तउ णयणसुहावउ[2] संमुहुं एंतउ करि अइरावउ[3]।
कामधेणुकीलारसलीणउ विसु ईसाणविसिंदसमाणउ।
रायसीहु उल्लंघियदरिगिरि सिरि पुणु[4] दिट्ठी णं तिहुयणसिरि।
झुल्लंतउं णहि भमरझुणिल्लउं सुरतरुकुसुमदामजुयलुल्लउं।
सारयससहरु[5] जोण्हइ जुट्ठउ[6] हेमंतागमदिणयरु[7] . दिट्ठउ।
मीण झसंकझसा इव रइधर[8] गंगासिंधुकलस मंगलधर।
सरु माणसु समुद्दु खीरालउ मयरमच्छकच्छवरावालउ[9]।
सेहीरासणु[10] जणमणमोहणु इंदविमाणु फणिंदणिहेलणु।
रयणपुंजु[11] हुयवहु अवलोइउ मुद्धइ सिविणउ पियहु[12] णिवेइउ।

घत्ता—सिविणयफलु जउजेट्ठु[13] कहइ सइहि[14] णिवकेसरि।
होसइ तिहुयणणाहु[15] तुज्झु गब्भि परमेसरि ॥12॥

---

(12)

जिसका कपोल झरती हुई नवजलधारा से सिक्त है, जिस पर फैले हुए ताल के समान कर्ण मन्द पवन से भ्रमर-समूह जैसे घूम रहे हैं, जो नेत्रों को सुहावना लगनेवाला है—ऐसा सामने आता हुआ ऐरावत हाथी देखा। रुद्र के वृषभ (नन्दी) के समान, कामधेनु से क्रीड़ारस में लीन बैल; घाटियों और पहाड़ों को लाँघनेवाला सिंहराज देखा। फिर लक्ष्मी को देखा जो मानो त्रिभुवन की लक्ष्मी हो। भ्रमरों की ध्वनि से युक्त, आकाश में झूलती हुई कल्पवृक्ष के फूलों की दो मालाएँ देखीं। पुनः ज्योत्स्ना से युक्त शरत्काल का चन्द्रमा देखा। हेमन्त के आगमन के साथ दिनकर देखा। रति के स्वामी कामदेव की पलक के समान दो मीन देखे। गंगा-सिन्धु के समान मंगल को धारण करनेवाले कलश देखे। मानसरोवर, क्षीरसमुद्र, मगर-मत्स्य एवं कछुओं के शब्दों से युक्त समुद्र देखा। जनमन के लिए सुन्दर सिंहासन, इन्द्र का विमान, नाग-लोक, रत्न-समूह और अग्नि देखी। उस मुग्धा ने ये स्वप्न अपने प्रिय को बताये।

घत्ता—यादवों में सबसे जेठा नृपसिंह समुद्रविजय उस सती को स्वप्नफल बताता है—हे परमेश्वरी ! तुम्हारे गर्भ से त्रिभुवन-स्वामी होगा।

---

(12) 1. PS °कवोल° । 2. B °सुहायइ । 3. B अइरावइ । 4. B पुण । 5. S सायरसस° । 6. AP जुत्तउ । 7. A °दिणयरि दित्तउ; P °दिणयरदित्तओ । 8. A रइयर; P रइथर । 9. B कच्छमच्छव° । 10. B सेरीहासणु । 11. B °पुंज । 12. B पियहि । 13. A जणजेट्ठु; B जउजिट्ठु । 14. AP पियहे । 15. P तिहुयण° ।

(13)

दुवई—हिरिसिरिकित्तिसंतिदिहिबुद्धिहिं[1] देविहिं कित्तिलच्छिहिं।
सेविय रायमहिसि महिसामिणि[2] अहिणवपंकयच्छिहिं ॥छ॥

सक्कणिओइयाहिं पणवंतिहिं अवराहिं[3] मि उवयरणइं देंतिहिं।
तहिं पहुपंगणि[4] पउरंदरियइ आणइ पउरपुण्णपरिचरियइ[5]।
मणिमयमउडपसाहियमत्थउ पुव्वमेव णिहिकलसविहत्थउ।
उडुमाणाइं तिण्णि पविउड्डउ[6] धणयमेहु धणधारहिं वुड्डउ।
कत्तियसुक्खपक्खि छट्ठइ[7] दिणि उत्तरआसाढइ मयलंछणि।
देउ जयंतु[8] णाणसंपण्णउ[9] गयरूवेण गब्भि अवइण्णउ।
आय देव देवाहिव दाणव वंदिवि भावें सफणि समाणव।
पुज्जिवि जिणपियराइं महुच्छवि णच्चिय पवियंभियभंभारवि।
णवमासावसाणकयमेरें[10] पुणु वसुपाउसु विहिउ कुबेरें।
पंचलक्खवरिसइं[11] णरसंकरि संजायइ णमिणाहजिणंतरि।
सावणमासि समुग्गइ ससहरि पुण्णजोइ[12] पुव्वुत्तइ वासरि।
तक्कालंतजीवि णिम्मलमणु जणणिइ जणिउ देउ सामलतणु।

---

(13)

ह्री, श्री, कान्ति, शान्ति, धृति, बुद्धि, कीर्ति और लक्ष्मी (अभिनव कमल के समान आँखोंवाली) देवियों ने ही स्वामिनी राजरानी की सेवा की। देवेन्द्र के द्वारा नियोजित और प्रणाम करती हुई और दूसरी देवियों ने भी उपकरण देते हुए (सेवा की)। उस राजा के प्रांगण में इन्द्र के प्रचुर पुण्य से युक्त आज्ञा से, जिसका मस्तक मणिमय मुकुटों से प्रसाधित है और जिसके हाथ में पहले से ही निधियों के कलश हैं, ऐसा कुबेर छह माह तक धनरूपी धाराओं को बरसाता रहा।

कार्तिक शुक्ल पक्ष छठी के दिन, चन्द्रमा के उत्तर आसाढ़ नक्षत्र में स्थित होने पर, ज्ञान से सम्पूर्ण जयन्त स्वर्ग से देव गजरूप से गर्भ में अवतीर्ण हुआ। तब देव-देवाधिप, दानव, नाग और मनुष्य आये और भावपूर्वक वन्दना कर जिन भगवान् के माता-पिता की पूजा कर, जिसमें भम्भा (वाद्य विशेष) का शब्द बढ़ रहा है ऐसे महोत्सव में उन्होंने नृत्य किया। नौ माह पर्यन्त की अवधि में कुबेर ने फिर से धनवृष्टि की। नमिनाथ जिन के जन्म के पश्चात् मानव-परम्परा में पाँच लाख वर्ष बीतने पर सावन माह में चन्द्रमा के उदय होने पर (शुक्ल पक्ष में) ब्रह्मयोग में छठी के दिन उस काल के अन्त में जीनेवाले (अर्थात् एक हजार वर्ष जीनेवाले) निर्मल-मन, श्यामल-शरीर देव (जिनदेव) को माता ने जन्म दिया।

---

(13) 1. S दिहिं। 2. A सासामिणि; P तियसामिणि; 3. A अमराहिवउवयरणइं देंतिहिं। 4. AP °पंगणि। 5. APS परियरियइ। 6. AP परिउड्डउ; S परितुट्ठउ। 7. P छट्ठहि। 8. P जयंत। 9. B माणु। 10. B मेरं। 11. P °वरिसहं। 12. B पुण्णु।

घत्ता—उप्पण्णे[13] जिणणाहे सग्गि सुरिंदहु आसणु।
कंपइ ससहावेण कहइ व देवहु[14] पेसणु ॥13॥

(14)

दुवई—घंटाझुणिविउद्ध कप्पामर हरिसवसेण[1] पेल्लिया।
जोइस हरिरवेहिं वेंतर पडुपडहरवेहिं[2] चल्लिया ॥छ॥

भावण संखणिणायहिं णिग्गय गयणि ण माइय कत्थइ हय गय।
सिवियाजाणहिं विविहविमाणहिं उल्लोवेहिं दियंतपमाणहिं।
मोरकीरकारंडहिं चासहिं फणिमंजारमरालहिं[3] मेसहिं।
करिदसणाहयणीलवराहिं आया सुरवर सहुं सुरणाहिं।
दारावइ पइट्ठ[4] परियंचिवि मायाडिंभें मायरि वंचिवि।
जय परमेट्ठि परम पभणंतिइ उच्चाइउ जिणु सुरवइपत्तिइ[5]।
पाणिपोमि[6] भसलु व आसीणउ इंदहु दिण्णउ तिहुयणराणउ[7]।
अणिमिसणयणहिं सुइरु णियच्छिउ कयपंजलिणा तेण पडिच्छिउ।
अंकि णिहिउ कंचणवण्णुज्जलि हरिणीलु व सोहइ मंदरयलि।

घत्ता—ईसाणिंदें[8] छत्तु देवहु उप्परि धरियउं।
सोहइ अहिणवमेहि[9] ससिबिंबु व विप्फुरियउं ॥4॥

घत्ता—जिननाथ के जन्म लेने पर स्वर्ग में स्वभाव से देवेन्द्र का आसन काँपता है और वह देवों को आज्ञा देता है।

(14)

घण्टों की ध्वनियों से प्रबुद्ध कल्पवासी देव हर्ष के कारण प्रेरित हो उठे। ज्योतिष देव सिंहनादों से तथा पटुपटह के शब्दों से छह व्यन्तर देव चल पड़े। भवनवासी देव शंख-निनादों के साथ निकले। हाथी और घोड़े आकाश में कहीं भी नहीं समा सके। शिविका, यानों, विविध विमानों, दिगन्त प्रमाणवाले चँदोवों, मोरों, तोतों, कारण्डों, चातकों, साँपों, बिलावों, हंसों, मेढ़ों, हाथियों के दाँतों से प्रताड़ित नीले मेघों और इन्द्र के साथ सुरवर आये। तीन प्रदिक्षणा देकर वे द्वारावती में प्रविष्ट हुए। मायावी बालक से माता को प्रवंचित कर तथा 'परम परमेष्ठी की जय हो' यह कहते हुए, देवियों की कतार ने जिनवर को उठा लिया। करकमल में भ्रमर की तरह बैठे हुए त्रिभुवननाथ को उसने इन्द्र के लिए दे दिया। वह अपने अपलक नेत्रों से बहुत समय तक देखता रहा और फिर हाथ जोड़कर उसने उन्हें ले लिया। स्वर्ण-रंग के समान उज्ज्वल गोद में रखे हुए जिन ऐसे शोभित हैं, जैसे मन्दराचल पर इन्द्रनीलमणि हो।

घत्ता—ईशानेन्द्र ने देव के ऊपर छत्र धारण किया, जो अभिनव मेघ में चमकते हुए चन्द्रबिम्ब के समान प्रतीत हो रहा था।

13. S उप्पण्णेहि। 14. A दइवहो; S दइवहो।

(14) 1. P हरिसवसेण। 2. APS पडहसरेहिं। 3. APS °मज्जार°। 4. B पयट्ठ। 5. S सुरवर°। 6. AP पाणिपोम°। 7. AP तिहुवण°। 8. P ईसाणदें। 9. B °मेहें।

(15)

दुवई—मंगलतूरवीरघोसें महिहरभित्तिवियारणो[1]।
चरणंगुट्ठएहिं[2] संचोइउ सुरवइणा सवारणो ॥छ॥

तारायणगहपंतिउ लंघिवि सुरगिरिसिहरु झत्ति आसंघिवि।
दसदिसिवहिं[3] धाइयजोण्हाजलि[4] अद्धचंदसंकासि सिलायलि।
णच्चियसुररामारसणासणि णिहिउ सुणासीरें सिंहासणि[5]।
णाहणाहु परमक्खरमंतें सायारें हविंदुरेहंतें।
इंदजलणजमणेरियवरुणहं पवणकुबेररुद्दहिमकिरणहं।
पडिवत्तीइ दिणेसफणीसहं[6] अण्णभाउ ढोइवि णीसेसहं।
पंडुरेहिं णिज्जियणीहारहिं कलसहिं वयणविणिग्गयखीरहिं।
णं कित्तीथणेहिं[7] पयलंतहिं णं संसारमलिणु णिहणंतहिं।
णावइ रइरसतिस णिरसंतहिं णं अट्ठारहदोस धुयंतहिं।
सित्तउ देवदेउ[8] देविंदहिं गज्जंतहिं सिहरि व णवकंदहिं।

घत्ता—इंदें जिणणिहियाइं पुप्फइं तंतुयबद्धइं[9]।
णं वम्महकंडाइं[10] आयमसुत्तणिबद्धइं ॥15॥

---

(15)

मंगल तूर्य, वाद्य और वीरतापूर्ण शब्दों के साथ, इन्द्र ने अपने पैरों के अँगूठे से महीधर भित्तियों को विदारण करनेवाले अपने हाथी ऐरावत को प्रेरित किया। तारागणों और ग्रहों की कतारों को लाँघते हुए वह शीघ्र ही सुमेरु पर्वत के शिखर पर पहुँच गया। जिसका ज्योत्स्नारूपी जल दशों दिशापथों में दौड़ रहा है, ऐसे अर्धचन्द्र के समान शिलातल पर नाचती हुई देवांगनाओं की करधनियों के शब्दों से युक्त सिंहासन पर इन्द्र ने, 'ओं स्वाहा' इस साकार परमाक्षर मन्त्र के साथ, उन्हें स्थापित कर दिया। इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरुण, पवन, कुबेर, रुद्र और चन्द्रमा, दिनेश और नागेश सभी देवों को आदर के साथ, आदर देकर, हिमकणों को पराजित करनेवाले जिनके मुख से सफेद दूध निकल रहा है, ऐसे कलशों के द्वारा देवदेव का अभिषेक किया, मानो प्रगलित कीर्तिस्तनों से संसार की मलिनता को नष्ट करते हुए, मानो रतिरस की तृष्णा का निरसन करते हुए, मानो अठारह दोषों को धोते हुए, देवेन्द्र ने इस प्रकार अभिषेक किया मानो गरजते हुए नवमेघों ने पर्वत का अभिषेक किया हो।

घत्ता—धागे से बँधे हुए, जिन पर रखे हुए पुष्प ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो कामदेव के तीरों को आगम सूत्रों ने बाँध दिया हो।

---

(15) 1. A °दारुणो। 2. PS °गुट्ठएण। 3. AS °यह°। 4. AP °पसारियजोण्हा°। 5. HP सीहासणि। 6. P °फणीसहं। 7. B कंतीथणेहिं; P कित्तीथणेहिं। 8. S देवदेवु। 9. P तंतुहिं बद्धइं। 10. P °कुंडाइं।

(16)

दुवई—हरिणा कुंकुमेण पविलित्तउ छज्जइ णाहदेहओ।
संझारायएण पिहियंगउ णावइ कालमेहओ ॥छ॥

णिवसणु काइं[1] तासु वण्णिज्जइ जो णिग्गंथभाउ[2] पडिवज्जइ।
सहइ हारु वच्छयलि[3] णिलंबिरु णं अंजणगिरिवरु[4] सरणिज्झरु।
कुंडलाइं रयणावलितंबइं कण्णालग्गइं णं रविबिंबइं।
भणु कंकणहिं कवण किर उण्णइ भुयबंधणाइं व मुणिवइ वण्णइ।
पहु मेल्लेसइ अम्हइं जोएं पयणेउरइं कणंति व सोएं।
सयमहु जाणइ जिणहु ण रुच्चइ भूसणु सो परिहइ जो णच्चइ।
लोयायारें सव्वु समारिउं तियसिंदें[5] थुइवयणु उईरिउं[6]।
णाणासद्दमहामणिखाणिइ पुणु लज्जिउ वण्णंतु सवाणिइ[7]।
तुच्छइ जिणगुणपारु ण पेक्खइ[8] अण्णु जहण्णु[9] मुक्खु किं अक्खइ।

घत्ता—अमर मुणिंद थुणंतु बाल वि बुद्धिइ कोमल[10]।
तो सव्वहं फलु एक्कु जइ मणि भत्ति सुणिम्मल ॥16॥

(16)

इन्द्र के द्वारा केशर से लिप्त स्वामी की देह ऐसी शोभा दे रही थी, जैसे सन्ध्याराग से कालमेघ ढक दिया गया हो। उसके वस्त्रों का क्या वर्णन किया जाय जो निर्ग्रन्थ भाव को स्वीकार करते हैं। वक्षःस्थल पर लटकता हुआ हार शोभित था मानो जल के निर्झर से सहित अंजन पर्वत हो। रत्नावलि से ताम्र कुण्डल ऐसे जान पड़ते थे मानो सूर्य के प्रतिबिम्ब कान से आ लगे हों। बताओ, कंगनों की क्या उन्नति हो ? मुनिवर उसे बाहु के बन्धन के समान बताते हैं। पैरों के नुपूर मानो शोक से कण-कण ध्वनित होते हुए यह कह रहे थे कि स्वामी योग लेकर मुझे छोड़ देंगे। इन्द्र जानता है कि स्वामी को आभूषण अच्छे नहीं लगते। भूषण वह पहिनता है जो नाचता है, परन्तु लोकाचार से उन्होंने सब कुछ किया। देवेन्द्र ने स्तुति वचन शुरू किये,

"नाना शब्द रूपी महामणियों की खान अपनी वाणी के द्वारा आपका वर्णन करते हुए, मैं पुनः लज्जित हूँ। तुच्छ व्यक्ति जिनवर के गुणों के पार को नहीं देख सकता, दूसरा निकृष्ट मूर्ख क्या कहे ?

घत्ता—यदि अमर मुनीन्द्र और बुद्धि से कोमल बालक की स्तुति करता है तो सबका फल एक है; यदि मन में निर्मल भक्ति हो।

(16) 1. A तासु काइं। 2. S °भाउ। 3. S वच्छयल°। 4. A गिरिवरं 5. P तियसेंदें। 6. B समीरिउ। P सयाणिउ। 8. PS पेच्छइ। 9. S जघण्णु। 10. A कोमल।

(17)

दुवई—दहिअक्खयसुणीलदूवंकुरसेसासीहिं[1] णंदिओ।
धम्ममहारहस्स गइगुणयरु णेमि सद्दिओ ॥छ॥
पुणु दारावइपुरु[2] आवेप्पिणु[3] [4]सुद्धभाउ[5] भावें भावेप्पिणु[6]।
[7]तियरण[8]सुविसुद्धिइ[9] पणवेप्पिणु जिणु जणणीउच्छंगिथवेप्पिणु।
णच्चइ सुरवइ दससयलोयणु [10]दहसयवद्धपहसियपवराणणु[11]।
दिसिविदिसिपसरियचलदससयकरु डोल्लइ णहयलु सरवि ससहरु।
महि हल्लइ विसु मेल्लइ विसहरु[12]।
दिण्णुद्दंडवाउ[13] णहि णज्जइ पायंगुट्ठणक्खु ससि छज्जइ।
चलइ जलहि धरणीयलु रेल्लइ लीलइ बाहुदंडु जहिं घल्लइ।
तहिं कुलमहिहरणियरु[14] विसट्टइ विप्फुरंति तारावलि तुट्टइ।
णच्चिवि[15] एम सरसु आणंदें वंदिवि जिणु[16] सहुं सुरवरवंदें[17]।
गउ सोहम्मराउ सोहम्महु पुरवरि णाहहु पालियधम्महु।
णिवसंतहु वउ णिरुवमरूवउं[18] दहधणुदंडपमाणु[19] पहूयउं।
णवजोव्वणु सिरिहरु णित्तामसु सामिउ[20] एक्कु सहसवरिसाउसु।

(17)

दही, अक्षत, अत्यन्त हरे दूर्वादल, शेषपुष्पों और आशीर्वादों से हर्षित तथा धर्मरूपी महारथ की गति को सम्भव करनेवाले उन्हें 'नेमि' (आरा) कहकर पुकारा गया। फिर द्वारावती नगरी में लाकर, भाव से शुद्धभाव का ध्यान कर, तीन प्रकार की विशुद्धियों से प्रणाम कर, जिन बालक को माता की गोद में स्थापित कर, अपने पाँच सौ मुखों से हँसता हुआ, दिशा-विदिशाओं में अपने हजार करों को फैलाता हुआ सहस्रनयन देवेन्द्र नृत्य करता है। आकाश सूर्य और चन्द्रमा के साथ डोल उठता है। धरती हिल जाती है, विषधर विष उगलने लगता है, आकाश में उद्दण्ड वायु जान पड़ती है। पैरों के अँगूठे के नख में चन्द्रमा शोभित है, समुद्र चलायमान है, धरणीतल प्रवाहित है। लीलापूर्वक वह बाहुदण्ड जहाँ फेंकता है, वहाँ कुलमहीधरों का समूह नष्ट हो जाता है, चमकती हुई तारावलि टूटने लगती है। इस प्रकार आनन्द के साथ सरस नृत्य कर और सुरवर-समूह के साथ जिनदेव की वन्दना कर, सौधर्मराज अपने सौधर्म स्वर्ग चला गया। धर्म का परिपालन करते हुए, नगरी में निवास करते हुए उनकी वय, अनुपम रूप और शरीर दस धनुष प्रमाण हो गया। लक्ष्मी का धारक नवयौवन, अदैन्य स्वामित्व, एक हजार वर्ष आयु,

(17) 1. S °दुव्वंकुर° । 2. ABPS °पुरि । 3. BS आणेप्पिणु । 4. AP read 3 *b* as 4 *a*. 5. S °भाव । 6. B पणवेप्पिणु । 7. AP read 4 *a* as 3 *b*. 8. AB तिरयण°; K तिरयण in second hand but gloss त्रिकरण । 9. AB सुविसुद्धिं; P सुद्धबुद्धि । 10. AHP दस° । 11. A सहसअद्ध° । 12. B adds तंतीघडलआइमहुरसरु । 13. A दिण्णदंडपाउ वि णहि; P ओड्डंड° । 14. AB °सिहरु । 15. B णच्चवि । 16. P जिणयरु सहुं सुरविंदें । 17. PS सुरविंदें । 18. B णिरुपम° । 19. S पवाणु । 20. A सामिउ एक्कु वरिसु सहसाउसु; P सामिउ सहसु एक्कु वरिसाउसु ।

घत्ता—थिउ भुंजंतु सुहाइं णेमि सबंधवसंजुउ।
भरहसरोरुहसूरु पुप्फदंतगणसंथुउ ॥17॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमितित्थकरउप्पत्ती[21] णाम
सत्तासीतिमो[22] परिच्छेउ समत्तो।

घत्ता—और सुखों का भोग करते हुए अपने भाइयों से युक्त नेमि, भरतरूपी कमल के सूर्य थे, और नक्षत्रों के द्वारा संस्तुत थे।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणों और अलंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और
महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस महाकाव्य का नेमि-तीर्थंकर-उत्पत्ति नामक
सत्तासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

21. A °तित्थंकर°; S तित्थयर°। 22. P सत्तासीमो; S सत्तासीतितमो।

अट्ठासीतिमो संधि

धणुगुणमुक्कविसक्कसरु[1] ओरुद्धदिवायरकरपसरु[2] ।
णं वणकरि करिहि[3] समावडिउ जरसिंधहु[4] रणि मुरारि भिडिउ ॥ध्रुवकं॥

(1)

दुवई—सउरीपुरि विमुक्कि[5] जउणाहें मउलियसयणवत्तए।
णिवसुइ कालजमणि कुलदेवयमायावसणियत्तए[7] ॥छ॥

गज्जिइ[8] हरिपयाणभेरीरवि खंचिइ अमरिसविसरइ णवि[9] णवि।
पंथि पउरि[10] कप्पूरें वासिइ करिघंटाटंकारवविलासिइ[11] ।
[12]दसदिसिवहमयणिवहि[13] पणासिइ[14] सायरतीरि सेण्णि आवासिइ।
पिसिइ[15] मंति[16] महंति अणुट्ठिइ णारायणि कुससयणि परिट्ठिइ।
आवाहिइ[17] मणहरसुरहयवरि[18] दोहाईहूयइ रयणायरि।
लद्धइ मग्गि विणिग्गय[19] हरिबलि पुणरवि चलियमिलियजलणिहिजलि[20] ।

अठासीवीं सन्धि

धनुष की डोरी के साथ जिसने बाण और हुंकार शब्द छोड़ा है, जिसने सूर्य की किरणों का प्रसार अवरुद्ध कर लिया है, ऐसा मुरारी युद्ध में जरासन्ध से भिड़ गया, मानो वनगज वनगज से भिड़ गया हो।

(1)

शौरीपुर के नष्ट होने पर, यदुनाथ अर्थात् कृष्ण द्वारा स्वजनों का समाचार छिपा लेने पर, तथा उसकी कुलदेवता की माया के वशीभूत हो जाने पर, राजपुत्र कालयवन लौट गया। हरि के प्रस्थान की भेरी बजने पर, क्रोध का नया-नया वेग उत्पन्न होने पर, मार्ग के प्रचुर कपूर से सुवासित होने पर, हाथियों के घण्टों के टंकारव के विलसित होने पर, दशों दिशापथों में मृग-समूह के भाग जाने पर, सागर-तीर पर सेना के ठहरने पर, बड़े चाचा के मन्त्र का अनुष्ठान करने पर, नारायण (श्रीकृष्ण) के कुशासन पर स्थित होने पर, नैगमदेव रूपी अश्व के आने पर, समुद्र के दो भागों में स्थित होने पर, मार्ग मिलते ही हरि-सेना के चलने

P has, at the beginning of this Samdhi, the following stanza :-
बम्भण्डाखण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डस्स समं समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥1॥
This stanza occurs at the beginning of XXXII for which see Vol. I. ABKS do not give it at all.

(1) 1. PS. °मुक्कपिसक्क° । 2. ABP रुद्ध°; KS औरुद्ध । 3. P °करिहो; S °करिहे । 4. PS जरसंधहो । 5. A विक्कयु । 6. A मउलियइ; P मिलियए । 7. BK माय° । 8. B गज्जिय° । 9. B णवणवि । 10. A पवर°; PS पउर° । 11. AP °टंकारए । 12. P °दिसियहे । 13. B °णिवह° । 14. S पयासिए । 15. B पित्तए; P पिलिय°; S पितुपयंते; Als. पितृयमंते against Mss. 16. B मंत । 17. BP आवाहिय° । 18. B सुरयरहरि । 19. B विणिग्गय । 20. B चलिए मलिए, P वलिय मिलिय; Als. चलिए मिलिए against Mss.

जिणपुण्णाणिलकंपियसयमहि[21] रयणकिरणमंजरिपिंजरणहि।
बारहजोयणाइं वित्थिण्णइ रइयइ णयरि रिद्धिसंपण्णइ।
घत्ता—संगामदिक्खसिक्खाकुसलि वसुएवचरणसररुहभसलि[22]।
असुरिंदमहाभडमयमहणि सिरिरमणीलंपडि महुमहणि ॥1॥

(2)

दुवई—[1]दीहरकंसविडविउम्मूलणगयवरगरुयसाहसे[2]।
थिय[3] सुहिसीरिविहियआणाविहिकयणयभयपरव्वसे[4] ॥छ॥
उप्पण्णइ सामिइ णेमीसरि तवहुयवहमुहहुयवम्मीसरि।
कालि गलंतइ[5] पइहि णिरंतरि एत्तहि रायगिहंकइ पुरवरि।
मगहाहिउ[6] अत्थाणि बइट्ठउ केण वि वणिणम पणविवि दिट्ठउ।
ढोइयाइं रयणाइं विचित्तइं तासु तेण करि णिहिय पवित्तइं।
सपसाएण वयणु जोएप्पिणु पुच्छिउ राएं सो विहसेप्पिणु।
कहिं लद्धइं माणिक्कइं दिव्वइं मलपरिचत्तइं णावइ भव्वइं।
भणइ सेट्ठि हउं गउ वाणिज्जहि पत्थिव दविणावज्जणविज्जहि[7]।
दुव्वाएं[8] जलजाणु ण भग्गउं जाइवि कत्थ पुरवरि[9] लग्गउं।

पर, समुद्र के भंग हुए जल के फिर से मिल जाने पर, जिनदेव के पुण्यरूपी पवन से इन्द्र के काँप उठने पर, रत्नों की किरणमंजरी से आकाश के पीला होने पर, बारह योजन विस्तृत और ऋद्धि से सम्पन्न नगर की रचना होने पर,

घत्ता--संग्राम की शिक्षा और दीक्षा में कुशल, वसुदेव के चरणरूपी कमलों के भ्रमर, असुरेन्द्ररूपी महाभटों के मद को चूर करनेवाले, लक्ष्मीरूपी रमणी के लिए लम्पट,

(2)

कंसरूपी विशाल वृक्ष के उन्मूलन के लिए गजवर के समान महान् साहसवाले श्रीकृष्ण के सुधी बलभद्र द्वारा की गयी आज्ञाविधि के कारण नीतिभय के अधीन रहने पर, तपरूपी आग के मुख में कामदेव को आहत करनेवाले नेमीश्वर स्वामी के उत्पन्न होने पर, जब प्रजा निरन्तर अपना समय बिता रही थी, तब यहाँ राजगृह नगर में मगधराज दरबार में आसन पर बैठा था। तभी एक वणिक् ने प्रणाम कर उससे भेंट की। लाये हुए बहुत-से पवित्र रत्नों को उसने उनके हाथ पर रख दिया। प्रसादपूर्वक उसका मुख देखते हुए राजा ने उससे हँसकर पूछा—ये माणिक्य-धन कहाँ पाया ? मल से रहित ये ऐसे लगते हैं मानो भव्य हों ? सेठ बोला--हे राजन् ! द्रव्य कमाने की वाणिज्य विद्या के लिए मैं गया था। दुर्वात से किसी प्रकार

---

21. Als. °कंपिए। 22. B सरोरुह°।

(2) 1. P °उम्मूलणे। 2. S °गरुव°। 3. Als. थिए against Mss. 4. A °णहयपरवसे; BS °णवहय°। 5. P गलंति पइहि। 6. S मगहाहिवु। 7. S दविणायज्जण°। 8. S दुव्वाइं। 9. B पुरि वरि।

मइं पुच्छिउ णरु एक्कु जुवाणउ पुरवरु कवणु एत्थु को राणउ।
कहइ पुरिसु पडिभडदलवट्टणु किं ण मुणहि दारावइ पट्टणु।
किं ण मुणहि बहुपुण्णहं गोयरु राणउ एत्थु देउ दामोयरु।
ता हउं णवरि पइट्ठउ केही मणहारिणि सुरवरपुरि[10] जेही।
घत्ता—तहिं[11] णिवधरु[12] सणिहु मंदरहु अणुहरइ[13] णरिंदु पुरंदरहु।
णर[14] सुर सुतिरच्छणियच्छिरउ[15] णारिउ णावइ अमरच्छरउ ॥2॥

(3)

दुवई—तं पेच्छंतु संतु हउं विंभिउ[1] गेण्हिवि रयणसारयं।
आयउ तुज्झु[2] पासि मगहाहिव पसरियकरवियारयं[3] ॥छ॥
तं णिसुणिवि विहिवंचणढोइउं पहुणा कालजमणमुहुं जोइउं।
मइं जियंति जीवंति ण जायव हुयवहु लग्गु धरंति ण पायव।
कहिं वसंति णियजीविउं लेप्पिणु वणि सियाल सीहहु ल्हिक्केप्पिणु।
हउं जाणउं[4] ते सयल विवण्णा सिहिपइट्ठ[5] पाणभयदण्णा[6]।
णवरज्ज वि जीवंति विवक्खिय णंदगोवभुयबलपरिरक्खिय[7]।
मारमि तेण समउं णीसेस वि फेडमि बलविलासु[8] पसरच्छवि।

मेरा जलयान नष्ट नहीं हुआ, और जाकर किसी प्रकार किसी नगर से जा लगा। मैंने एक युवक से पूछा कि यह कौन-सा नगर है और यहाँ कौन राजा है ? वह बोला—क्या तुम नहीं जानते कि शत्रु-योद्धाओं को नष्ट करनेवाला यह द्वारावती नगर है ? क्या नहीं जानते कि अनेक पुण्यों के द्रष्टा देव दामोदर (कृष्ण) इसके राजा हैं ? तब मैं नगरी में इस प्रकार घुसा, मानो सुन्दर अमरावती हो।

घत्ता—वहाँ सब देखते हुए मैं विस्मय में पड़ गया और अपने किरण-समूह को प्रसारित करनेवाले इन श्रेष्ठ रत्नों को लेकर आपके पास आया हूँ।

(3)

यह सुनकर राजा ने विधि की प्रवंचना को प्राप्त कालयवन के मुख की ओर देखा। वह (कालयवन) बोला—"मेरे जीते-जी यादव लोग जीवित नहीं रह सकते। आग लगने पर पेड़ को नहीं बचाया जा सकता। अपना जीवन लेकर सियार वन में सिंह से छिपकर कहाँ रह सकते हैं ? मैंने समझा था कि वे सब नष्ट हो गये और प्राणों के भय से पीड़ित होकर आग में जल मरे। लेकिन नहीं, आज भी शत्रु जीवित हैं और नन्दगोप के बाहुबल से सुरक्षित हैं। मैं उसके सहित सबको मारूँगा और फैलती हुई कान्तिवाले उसे और सैन्य विलास को नष्ट कर दूँगा।"

---

10. P °पुरे जेही। 11. P ताहें। 12. S णृवधरु। 13. A अणुहवइ। 14. A णयसरभिसिणिणियच्छिरउ। 15. APS तिरिच्छि°; B °तिरच्छि°।
(3) 1. S विंभिउ। 2. S तुज्झ। 3. A °करदिवायरं। 4. P जाणमि। 5. P सिहिहि पइट्ठ। 6. B पाण°। 7. PS पडिरक्खिय।

ता संगामभेरि[9] अप्फालिय गुरुरवेण मेइणि संचालिय।
उट्ठिय जोह कोहदुद्दंसण कंचणकवयविसेसविहूसण।
चावचक्ककोंतासणिभीसण गुलुगुलंति[10] मयमयगलणीसण।
खलकुलदूसण णियकुलभूसण हिलिहिलंत हरिवर बद्धासण।
हक्कारिय दिसिविदिससवासण रुहिरासोसण डाइणिपोसण।
इच्छियजयसिरिकरसंफासण मग्गियअमरविलासिणिदंसण।

घत्ता—रह रहियहिं[11] चोइय हयपवर धाइय सुहडुक्खयखग्गकर।
णहि कहिं मि ण माइय सुरखयर गुरुडमरडिंडिमोमुक्कसर[12] ॥3॥

(4)

दुवई—लहु संचलिउ राउ जरसंधु[1] मयंधु महारिदारणो।
गउ [2]कुरुखेत्तमरुणचरणंगुलिचोइयमत्तवारणो[3] ॥छ॥

भुयबलचप्पियसयणफणिंदहु[4] णारयरिसिणा गंपि उविंदहु।
कहिउ गहीर वीर गोवद्धण णियपोरिसगुणरंजियतिहुयण[5]।
दुज्जइ पहु[6] जरसिंधु[7] समायउ बहुविज्जाणियरेहिं समेयउ[8]।
अच्छइ कुरुखेत्तइ समरंगणि सुहडदिण्णसुरवहुआलिंगणि[9]।

तब संग्राम-भेरी बज उठी और भारी शब्द से धरती हिल गयी। क्रोध से दुर्दर्शनीय और स्वर्णकवचों के विशेष भूषणवाले तथा धनुष, चक्र, भाला और वज्र से भीषण योद्धा उठे। मदमाते गले के स्वरवाले हाथी चिंघाड़ते हैं। शत्रुकुल के लिए दूषण और अपने कुल के लिए आभूषण तथा जिन पर आसन बँधा हुआ है, ऐसे श्रेष्ठ अश्व हिनहिनाते हैं। दिशा-विदिशा में, खून पीनेवाले और डाइनों का पोषण करनेवाले, राक्षसों को हकारनेवाले, विजयश्री के कर का स्पर्श चाहनेवाले और अमर विलासिनियों का दर्शन माँगनेवाले,

घत्ता—रथिकों (सारथियों) द्वारा अश्वप्रवर और रथ प्रेरित कर दिये गये, और सुभट अपनी तलवारें हाथ में उठाकर दौड़े।

(4)

तब अपनी अरुण चरणांगुलियों से मस्त गज को प्रेरित करनेवाला, भयंकर शत्रुओं को मारनेवाला, मदान्ध राजा जरासन्ध शीघ्र चला। इस बीच नारद ऋषि ने, अपने बाहुबल से नागशय्या को चाँपनेवाले उपेन्द्र (कृष्ण) से जाकर कहा—हे गम्भीर वीर गोवर्धन, अपने पौरुष से त्रिभुवन को रंजित करनेवाले (हे देव), अनेक विद्या-समूह से सहित दुर्जेय राजा जरासन्ध आ गया है। जहाँ सुभटों द्वारा देववधुओं को आलिंगन दिया जाता है, ऐसे

8. AB °विलास। 9. BPS संगामभेरि। 10. ABPS गुलुगुलंत। 11. B रहियई। 12. AB °डामर°।
(4) 1. ABPS जरसंधु। 2. B °खेत्त अरुण°; P °खेत्तिमरुण°। 3. B चरणंगुलि°। 4. S °सयल°। 5. P °तिहुवण। 6. B इहु; PS एहु। 7. PS जरसंधु।
8. P समाइउ। 9. AP °दिंत°।

अज्ज वि किर[10] तुहुं काइं चिरावहि णियदुयालि किं णउ मणि भावहि[11]।
किं संघारिउ[12] तहु जामाइउ किं चाणूरु रणंगणि घाइउ।
तं णिसुणिवि हरि कयपहरणकरु[13] उट्ठिउ हणु भणंतु दट्ठाहरु।
हलहर अज्ज वइरि णिद्दारमि[14] दे आएसु असेसु वि मारमि।
ता संणद्ध कुद्ध[15] ते णरवर चोइय गयवर वाहिय हयवर[16]।
पहयइं रणतूराइं रउद्दइं रवपूरियगिरिकुहरसमुद्दइं।
जायवबलु जलणिहिजलु लंघिवि थिउ कुरुखेत्तु झत्ति आसंघिवि।

घत्ता—संणद्धइं वड्ढियमच्छरइं करवालसूलसरझसकरइं।
अब्भिट्टइं कयरणकलयलइं दामोयरजरसिंधहं[17] बलइं ॥4॥

(5)

दुवई—[1]हयगंभीरसमरभेरीरवबहिरियणहदियंतयं[2]।
[3]उक्खयखग्गतिक्खखणखणरवखंडियदंतिदंतयं[4] ॥छ॥

कोंतकोडिचुंबियकुंभयलइं रुहिरवारिपूरियधरणियलइं।
चुयमुत्ताहलणियरुज्जलियइं विलुलियंतचुंभलपक्खलियइं[5]।
सेल्लविहिण्णवीरवच्छयलइं[6] सरवरपसरपिहियगयणयलइं।

कुरुक्षेत्र के युद्ध-प्रांगण में स्थित है। आप देर क्यों कर रहे हैं ? अपनी दुश्चाल क्या मन में नहीं सोचते उसके दामाद का संहार क्यों किया ? चाणूर का रणांगण में वध क्यों किया ?

यह सुनकर कृष्ण अपने हाथ में अस्त्र लेकर उठे। होंठ चबाते और मारो कहते हुए बोले—हे बलराम ! आज मैं शत्रु को चूर-चूर करूँगा। आदेश दें, सबको मारूँगा।

तब वे नरश्रेष्ठ क्रुद्ध होकर तैयार हो गये। उन्होंने गजवरों को प्रेरित किया और अश्ववरों को चलाया। भयंकर रणतूर्य आहत कर दिये गये। यादवसेना समुद्र का जल लाँघकर और अध्यवसाय करके कुरुक्षेत्र में स्थित हो गयी।

घत्ता—बढ़ रहा है मत्सर जिनमें ऐसी तथा हाथ में करवाल, शूल, तीर और झस लिये हुए, युद्ध का कोलाहल करती हुई, दामोदर और जरासन्ध की तैयार सेनाएँ आपस में भिड़ गयीं।

(5)

आहत, गम्भीर समरभेरियों के शब्द से दिशाएँ और आकाश बहरे हो गये। उठी हुई तलवारों की तीखी खन-खन आवाज से हाथियों के दाँत खण्डित हो गये। भालों की नोकों से गजों के कुम्भस्थल चुम्बित थे। रक्तरूपी जल से धरणीतल आप्लावित हो गया। गिरे हुए मोतियों के समूह से उज्ज्वल हो गया। हिलते हुए शिरोभूषण गिर गये। वीरों के वक्षःस्थल बरछों से विदीर्ण हो गये। श्रेष्ठ तीरों के प्रसार से आकाशतल

10. AP तुहुं किर। 11. P दावहि। 12. S संहारिउ। 13. P °पहरणु। 14. B णिद्दारिमि। 15. ABP कुद्ध णिव णरयर। 16. PS रहवर। 17. B °जरसिंध।बलइं; PS °जरसेंधहं।

(5) 1. P °तूरभेरी°। 2. BPS Als. °दियंतइं। 3. AP Als. °तिक्खखग्ग°। 4. BPS Als. °दंतइं। 5. P विलुलियअंत°। 6. A °पिहिण्ण°; S °विहीण°।

उच्छलंतधणुगुणटंकारइं[7] जोहविमुक्कफारहुंकारइं।
तोसियफणिदिणयरससिसक्कइं वज्जमुट्ठिचूरियसीसक्कइं।
हयमत्थइं[8] मत्थिक्करसोल्लइं[9] दलियट्ठियवीसढवसगिल्लइं[10]।
मोडियधुरइं विहिण्णतुरंगइं लउडिघायजज्जरियरहंगइं[11]।
[12]पग्गहणिल्लूरण[13]विहिभीसइं[14] करकड्ढियसारहिसिरकेसइं[15]।
भग्गरहाइं लुणियधयदंडइं[16] पासखंडपीणियभेरुंडइं[17]।
लुद्धगिद्धखद्धंगपएसइं[18] सुरकामिणिकरघल्लियसेसइं।
वणवियलियधाराकीलालइं[19] किलिकिलंति[20] जोइणिवेयालइं।

घत्ता—ता रहवरहरिकरिवाहणहं जुज्झंतहं दोहं[21] मि साहणहं।
जो सुहडहं मच्छरग्गि जलिउ तहु[22] धूमु[23] व रउ णहि उच्छलिउ ॥5॥

(6)

दुवई—णं मुहवडु णिहित्तु जयलच्छिहि लोयणपसरहारओ।
णं रणरक्खसस्स[1] पवणुद्धुउ[2] पिंगलकेसभारओ ॥छ॥

असिधारातोएण ण पसमिउ[3] पंडुरछत्तहु णवरुप्परि[4] थिउ।
उद्धु गंपि कुंभत्थलि पडियउ णिच्चब्भासें गयवरि चडियउ।

छा गया। धनुषों और डोरियों की टंकारें उछलने लगीं। योद्धा स्फीत हुंकार करने लगे। नाग, दिनकर, चन्द्र और इन्द्र सन्तुष्ट हो गये। वज्रमुट्ठियों से शिरस्त्राण टूटने लगे। घोड़ों के सिर रक्तरूपी रस से आर्द्र थे। दलित हड्डियों से भयंकर और वसा से गीले थे। जिनकी धुराएँ मुड़ चुकी हैं, अश्व अलग-अलग जा पड़े हैं, ऐसे रथचक्र दण्डों के आघात से जर्जर हो गये। जो रस्सी (लगाम) खींचने की विधि से भयंकर हैं, हाथों से सारथि के सिर के बाल खींच लिये गये हैं, ऐसे रथ भग्न हो चुके थे। ध्वजदण्ड काटे जा चुके थे। मांसखण्डों से भेरुण्ड पक्षी प्रसन्न हो रहे थे। लुब्ध गिद्धों के द्वारा आधे अंग-प्रदेश खाये जा रहे थे, देवबालाओं के द्वारा हाथों से शिरीष पुष्प डाले जा रहे थे, घावों से रक्तधाराएँ विगलित हो रही थीं। योगिनी और वैतालिक किलकारियाँ भर रहे थे।

घत्ता—तब रथवरों, घोड़ों और हाथियों के वाहनों से युक्त दोनों ओर की सेनाएँ आपस में भिड़ जाती हैं। सुभटों की ईर्ष्या की आग जल उठी, मानो आकाश में उड़ रही धूल उसी का धुआँ हो।

(6)

वह (धूल) ऐसी लग रही थी मानो विजयलक्ष्मी पर आँखों के प्रसार को रोकनेवाला मुखपट डाल दिया गया हो; जो मानो युद्धरूपी राक्षस का पवन से उड़ता हुआ पीला केशसमूह हो। वह (धूल) तलवार के धारारूपी जल से शान्त नहीं हुई, वह सफेद छत्रों के ऊपर स्थिर हो गयी, ऊपर जाकर हाथियों के कुम्भस्थलों पर

7. P °धणगुण° । 8. APS हयमत्थय° । 9. B मंकिक्क° । 10. A रसगिल्लइं । 11. P लगुडि° । 12. AP खग्गह° । 13. A णिल्लूरियबहय° । 14. AP °सीसइं । 15. B °करकेसइं । 16. S लुणिय° । 17. B मंस° । 18. A °पवेसइं । 19. B °विगलिय° । 20. ABP किलिकिलंत°; S किलिगिलंत° । 21. B दोहिं । 22. P तहे धूम । 23. B धूमरओ ।

(6) 1. A णहरक्खसस्स । 2. S पवणुद्धउ । 3. A पसरिउ । 4. P °उप्परि ।

गंडि[5] थंतु कण्णेण झडप्पिउ मइलणसीलउ कासु ण विप्पिउ।
वंसि थंतु चिंधेण गलत्थिउ दंडि थंतु चमरेणवहत्थिउ[6]।
करपुक्खरि पइसइ गणियारिहि लोलइ थोरथणत्थलि णारिहिं।
चेलंचलपडिपेल्लिउ गच्छइ चउदिसि[7] णिब्भंछिउ[8] किं अच्छइ[9]।
दिट्ठिपसरु[10] असिपसरु[10] णिवारइ अंतरि पइसिवि णं रणु वारइ।
मणि[11] विलग्गु वीसासु अ[12] मग्गइ पयणिवडिउ[13] णं पायह[14] लग्गइ।
हरिखुरखउ रोसेण व उट्ठइ जं जं पावइ तहिं[15] तहिं संठइ।
ढंकइ मणिसंदणजंपाणइं जोयंतहं सुरवरहं विमाणइं।
घत्ता—धूलीरउ रुहिररसोल्लियउं णं रणवहुराएं पेल्लियउं।
थिउ रत्तु[16] पउ वि णउ[17] चल्लियउं णं वम्महबाणें[18] सल्लियउं ॥6॥

(7)

दुवई—पसमिइ धूलिपसरि पुणरवि रणरहसुद्धाइया[1] भडा।
अंकुसवस[2] विसंत विसमुब्भड चोइय मत्तगयघडा ॥छ॥

पड़ी। अपने नित्य के अभ्यास से हाथियों के ऊपर चढ़ गयी। गण्डस्थल पर स्थित वह कानों के द्वारा झड़प दी गयी। मलिन स्वभाववाला किसे बुरा नहीं लगता ? बाँस पर स्थित उसे पताका ने गर्दनिया दी, दण्ड पर स्थित होने पर उसे चमरों ने अपने हाथ से हटा दिया। वह हथिनियों के कररूपी सूँड में प्रवेश कर जाती है। नारियों के स्थूल स्तनस्थल पर घूमती है, उनके वस्त्र के अंचल से हटायी गयी वह चल देती है। चारों ओर से लांछित होकर (भर्त्सित होकर) वह क्या ठहर सकती है ? वह दृष्टि-प्रसार और असि-प्रसार को रोकती है, मानो भीतर प्रवेश कर युद्ध का निवारण करती है। मन में लगकर, वह मानो विश्वास की याचना करती है। पैरों पर उड़कर, मानो पैरों से लग गयी है। घोड़ों के खुरों से आहत होकर जो क्रोध से उठती है। जो-जो वह पाती है, वहाँ-वहाँ स्थित हो जाती है। वह मणि-रथों, जंपानों और देखते हुए देवविमानों को ढक लेती है।

घत्ता—रणवधू के राग से प्रेरित होकर, रक्तरूपी रस से आर्द्र हो वह एकदम रक्त (रक्त, लीन और लाल) होकर, एक भी कदम नहीं चल सका, मानो कामदेव के बाण से पीड़ित हो गया।

(7)

धूल का प्रसार शान्त होने पर, फिर से योद्धा युद्धरथों से उठे। विषम उद्‌भट द्वेष करती हुई, अंकुश के वश में रहनेवाली गजघटाएँ प्रेरित कर दी गयीं। किसी का तीरों से उर विदीर्ण हो गया, मानो नागों

---

5. B गल्ल। 6. P चमरेण विहत्थिउ। 7. A रउदिसु; PS चउदिसु। 8. AB णिब्भच्छिउ; S णिब्भंछिउ। 9. AP add after this : अंधारउ करंतु दिस गच्छइ, A भंतु पपुच्छइ कहिं किर गच्छइ, P अह चंचलु किं णिच्चलु अच्छइ। 10. AP °पसर। 11. A सवणि पइसि वीसासु। 12. APS व। 13. PS पयवडियउ। 14. APS पायहिं। 15. A तं तहिं। 16. B रत्तपओ वि; P रत्तउ पउ वि; Als. रत्तउं पउ वि against Mss. 17. S ण चल्लियउं। 18. A °बाणहं।

(7) 1. S °सुद्धाविया। 2. A °विसविसंत।

कासु वि णारायहिं उरु दारिउं णायहिं णं वसुहयलु वियारिउं।
को वि अद्धइंदें[3] सिरि[4] भिण्णउ सोहइ भड्डु रुद्दु व अवइण्णउ।
गुणमुक्केहिं सगुणसंजुत्तउ बहुलोहेहिं लोहपरिचत्तउ।
को वि सुहडु धरणियलु[5] ण पत्तउ मग्गणेहिं चाइ[6] उक्खित्तउ।
केण वि जगु धवलिउ णिरु णिद्धें [7]असिधेणुयविढत्तजसदुद्धें[8]।
धरहुं ण सक्किउ छिण्णकरग्गहिं केण वि धरिउं चक्कु दंतग्गहिं।
कासु वि सिरु अच्चंततिसाइउ[9] असिवरपाणियधारहिं[10] धायउं[11]।
कासु वि अंतइं [12]पयजुयघुलियइं[13] पहुरिणबंधणाइं णं दुलियइं[14]।
कासु वि गलिउं रत्तु गत्तंतहु फेडइ तिस णिरु तिसियकयंतहु[15]।
कासु वि सिव कामिणि व णिरिक्खइ णहहिं वियारिवि हियवउं चक्खइ।
को वि सुहडु पहरणु[16] णउ मुज्झइ मुच्छिउ[17] उम्मुच्छिउ पुणु जुज्झइ।
को वि सुहडु जहिं जहिं परिसक्कइ तहिं तहिं संमुहु[18] को वि ण ढुक्कइ।

घत्ता—चलचामरपट्टालंकरिय[19] हरिवाहिय मच्छरफुरुहुरिय[20]।
अब्भिडिय[21] गरुयरणभारधर पवरासवारकरवालकर ॥7॥

द्वारा वसुधा-तल फाड़ दिया गया हो। कोई अर्धचन्द्र से सिर में विदीर्ण हो गया। वह योद्धा, मानो अवतरित हुए रुद्र के समान शोभित है। गुणों (तीरों, याचकों) से मुक्त होने पर भी, जो सगुण (स्वगुण) से युक्त है, बहुत से लोहों (लोहा) के होते हुए भी लोह (लोभ) से परित्यक्त है। कोई सुभट धरतीतल पर नहीं आ सका, त्यागी (दानी) के समान उसे मग्गणों (तीरों, याचकों) के द्वारा ऊपर उठा लिया गया। अत्यन्त चिकने असिरूपी धेनु से अर्जित यशरूपी दूध से किसी ने सारे विश्व को धवल कर दिया। कटे हुए हाथों के अग्रभागों से जो चक्र पकड़ा नहीं जा सका, उसे किसी ने अपने दाँतों के अग्रभाग से पकड़ लिया। किसी का सिर प्यास से शान्त हो गया। किसी की आँतें पदयुगलों में व्याप्त हो गयीं, मानो स्वामी के ऋणबन्धन गिर गये हों। किसी के शरीर के मध्य से रक्त स्खलित हो उठा और वह अत्यन्त तृषाकुल यम की प्यास मिटाने लगा। किसी के लिए शिवा (सियारिन) कामिनी के समान दिखाई देती है जो हृदय को अपने नखों से विदीर्ण कर चखती है। कोई सुभट अपना अस्त्र नहीं भूलता, मूर्च्छित-उन्मूर्च्छित होकर भी वह फिर युद्ध करता है। कोई सुभट जहाँ-जहाँ पहुँच जाता है, वहाँ-वहाँ सामने कोई भी सुभट नहीं आता।

घत्ता—हिलते हुए चमरों और पट्टों से अलंकृत, घोड़ों से ले जाये गये, ईर्ष्या से विस्फरित भारी युद्धभार को उठानेवाले तथा प्रवर तलवारों को हाथों में लिये हुए अश्वारोही आपस में भिड़ गये।

3. APS अद्धधंदें। 4. AP सिरु। 5. AP धरणियले। 6. A णायइ उक्खित्तउ। 7. P °धेणुय°। 8. B °विढंत°। 9. A णच्चंतु; P अच्चंतु। 10. PS °धारहे। 11. PS धाइउं। 12. P °जुय°। 13. A धुलियउ। 14. A खलियउ; P चलियइं; S वलियइं। 15. P °कंतहो। 16. A पहरणि ण समुज्झइ; P पहरणे णउ। 17. A मुच्छिउ पुणु उ मुच्छिउ जुज्झइ; P मुच्छिउ मुच्छिउ पुणु पुणु जुज्झइ। 18. P समुहुं। 19. A °पट्टालंकरिय। 20. A °हुरुहुरिय; S °फुरुहरिय। 21. AP अब्भिड्ड गरुय°; S अब्भिडिय।

(8)

दुवई—[1]हयसंणाहदेहणिव्वट्टियलोट्टियतुरयसंकडे[2]।
के वि समोवडंति पडिभडथडि विरसियतूरसंघडे[3] ॥छ॥

जयसिरिरामालिंगणलुद्धहं एक्कमेक्क पहरंतहं कुद्धहं।
असिसंघट्टणि उट्ठिउ हुयवहु कढकढंतु सोसिउ सोणियदहु।
दसविदिसासइं तेण पलित्तइं पक्खरचमरइं चिंधइं छत्तइं।
ता पडिवक्खपहरभयतट्ठउं महुमहबलु दसदिसिवहणट्ठउं[4]।
[5]पोरिसगुणविंभावियवासउ[6] हणु भणंतु सइ[7] धाइउ केसउ[8]।
णरहरि[9] तुरय रहिण[10] संचूरइ सारइ दारइ मारइ जूरइ।
धीरइ हक्कारइ पच्चारइ हणइ वणइ विहुणइ विणिवारइ।
दमइ रमइ परिभमइ पयट्टइ संघट्टइ लोट्टइ आवट्टइ।
सरइ धरइ अवहरइ ण संचइ खंचइ कुंचइ[11] लुंचइ वंचइ।
उल्लालइ वालइ[12] अप्फालइ[13] रूसइ दूसइ पीलइ हूलइ[14]।
ईहइ संखोहइ आवाहइ रोहइ मोहइ[15] जोहइ साहइ।

(8)

जिसमें कवचों के नष्ट हो जाने से, विघटित और लौटते हुए अश्वों का संकट है तथा मृदंग समूह बज रहा है, ऐसी प्रतियोद्धाओं की टोली में कितने ही योद्धा गिर पड़ते हैं। विजयलक्ष्मीरूपी रमणी के आलिंगन के लोभी एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए अत्यन्त क्रुद्ध योद्धाओं की तलवारों के संघर्षण से आग निकली और उसने कड़-कड़ करते हुए 'रक्त सरोवर' को सोख लिया। उससे दिशा-विदिशाएँ, कवच, चमर, चिंध और छत्र, प्रज्वलित हो उठे। तब प्रतिपक्ष के प्रहार के भय से त्रस्त कृष्ण की सेना दशों दिशापथों में बिखर गयी। (उस समय) अपने पौरुष गुण से देवेन्द्र को विस्मित करनेवाले केशव 'मारो, मारो' कहते हुए दौड़े। नरश्रेष्ठ वह घोड़ों-रथों को चूर-चूर करते हैं, हटाते हैं, प्रहार करते हैं, विदीर्ण करते हैं, मारते हैं, पीड़ित करते हैं, धीरज बँधाते हैं, हकारते हैं, पुकारते हैं, हनन करते हैं, घाव करते हैं, धुनते हैं, निवारण करते हैं, दमन करते हैं, रमते हैं, घूमते हैं, प्रवृत्ति करते हैं, संघर्ष करते हैं, लौटते हैं, घुमाते हैं, चलते हैं, पकड़ते हैं, अपहरण करते हैं। घुमाते हैं, चलते हैं, पकड़ते हैं, संकुचित करते हैं, ले जाते हैं, वंचित करते हैं। ऊँचा फेंकते हैं, मोड़ते हैं, आस्फालित करते हैं। क्रुद्ध होते हैं, दूषण लगाते हैं, पीड़ित करते हैं, शूल घुसेड़ते हैं, अवलोकन करते हैं, आह्वान करते हैं, घिराव करते हैं, मुग्ध करते हैं, देखते हैं, कहते हैं, झूलती हुई सघन

(8) 1. A °णिवट्टिय° । 2. B °लुट्टिय°; P °लोट्टिय° । 3. A °तुरसंकडे । 4. P °दिसिवहे; S °दिसवह° । 5. S °विम्भाविय° । 6. S °वासवु । 7. AP संधायउ । 8. S केसवु । 9. AP सो णरहरि तुरयहिं (P तुरयइं) संचूरइ; B Als. णरकरि though Als. thinks that क is written in second hand; K records a p : णरकरि इति वा पाठः; T also records a p : णरकर (रि ?) इति वा पाठः । 10. S रहेण । 11. ABS खुंचइ; P कोंचइ । 12. A चालइ । 13. B अप्फालइ । 14. P लूहइ । 15. S जोहइ मोहइ ।

अंत[16] ललंतइं गाढइं[17] ताडइ   रुंडमुंडखंडोहइं पाडइ।
वेढइ उव्वेढइ संदाणइ   रक्खे भुक्खारीणइं[18] पीणइ।
वग्गइ रंगइ[19] णिग्गइ[20] पविसइ[21]   दलइ मलइ उल्ललइ ण दीसइ।

घत्ता—कुसपास विलुंचइ हयवरहं गलगिज्जउं तोडइ गयवरहं।
वरवीर रणंगणि पडिखलइ मंडलियहं रयणमउड दलइ ॥8॥

(9)

दुवई—जुज्झइ वासुएउ परमेसरु परबलसलिलमंदरो[1]।
[2]सुरकामिणिणिहित्तकुसुमावलिणवमयरंदपिंजरो[3] ॥छ॥

गयमयपंकभमिइ[4] चलमहुयरि   हयलालाजलवाहिणि[5] दुत्तरि।
संदणसंदाणियइ दुसंचरि   रुंडमुंडविच्छंडभयंकरि[6]।
लोहियंभथिंभेहिं[7] सुसंचुएइ[8]   कडयमउडकुंडलहारंचिइ।
सामिपसायदाणरिणणिग्गमि   ढुक्क विहंगमि तहिं रणसंगमि[9]।
सिरिसकुलससामत्थमयंधें[10]   माहउ पच्चारिउ जरसंधें[11]।
णंदगोव घियदुद्धें मत्तउ   जं तुहुं महु करि मरणु ण पत्तउ।
तं जाणहि करिमयररउद्दइ   लिहिक्किवि थक्कउ लवणसमुद्दइ।

आँतों को ताड़ित करते हैं, सिरों और धड़ों के समूहों को गिराते हैं, बाँधते हैं, सहारा लेते हैं, भूख से पीड़ित राक्षसों को सन्तुष्ट करते हैं, व्याकुल होते हैं, चलते हैं, निकलते हैं, प्रवेश करते हैं, दलन करते हैं, मलते हैं, गीले होते हैं, दिखाई नहीं देते।

घत्ता—अश्ववरों के तर्जकों को वह नष्ट कर देते हैं। गजवरों की सूड़ों को मसल देते हैं और माण्डलिक राजाओं के रत्नमुकुटों को चूर-चूर कर देते हैं।

(9)

शत्रुसेनारूपी जल के लिए मन्दराचल के समान, सुरबालाओं द्वारा रखी गयी कुसुमांजलि के नवपराग से पीत परमेश्वर वासुदेव युद्ध करते हैं। जिसमें गजमदजल की कीचड़ बह रही है, भ्रमर चल रहे हैं, जो घोड़ों की लार के जल की नदी से दुस्तर है, जिसमें रथों का सहारा लिया जा रहा है; जो दुस्संचर है, सिरों और धड़ों के समूह से भयंकर है, जो रक्तरूपी जल की बूँदों से सुसिंचित है, जो कटकमुकुट और कुण्डलहारों से अंचित है; जिसमें स्वामी के प्रसाद और दान के ऋण का निर्यातन किया जा रहा है, ऐसे उस भयंकर युद्ध-संगम में पहुँचे हुए माधव को श्री और अपने कुल के सामर्थ्य मद से अन्धे जरासन्ध ने ललकारा—हे नन्दगोप ! घी-दूध से मत्त तुम मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए—उसका तुम यह कारण जान लो कि

---

16. A अंतललंतं; S अण्णेणण्णं। 17. APS गाढं। 18. AS °रीणि; P रिण (ई)। 19. S रग्गइ। 20. B णिक्खइ। 21. P पइसइ।

(9) 1. A °मंदिरो। 2. ABS °कुसुमंजलि°। 3. PS °मयरिंद°। 4. P °भमिय°। 5. K °जलि वाहणि दुत्तरि but gloss नदी on जलियाहणि। 6. BPS °विच्छड्ड°। 7. S °थंभेहिं। 8. APS सुसिंचिए; B सुसंचिए। 9. B रणि। 10. AP सिरिकुलबलसामत्थ°। 11. P जरसेंधें।

पइं विणु गाइहिं महिसिहिं रुण्णउं णंदहु केरउं गोउलु सुण्णउं।
जाहि जाहि गोवाल म ढुक्कहि अज्जु मज्झु कमि पडिउ ण चुक्कहि।
णिवकुलकमलसरोवरहंसु[12] जेण परक्कमु भग्गउ कंसहु।
तं भुयबल तेरउं दक्खालहि पेक्खहुं कुलकलंकु पक्खालहि।
एवहिं तुज्झु ण णासहुं जुत्तउं ता णारायणेण पडिवुत्तउं।
घत्ता—पइं मारिवि दारिवि अज्जु रणि तोसावमि[13] सुरवर[14] णर भुवणि।
उज्जालिवि[15] णंदहु तणउ कउं गोमंडलु पालमि गोउ[16] हउं ॥9॥

(10)

दुवई—अवरु वि पेक्खु पेक्खु[1] हरिसुज्जलसिरिथणकुंकुमारुणा।
एए बाहुदंड महुं केरा वइरिकरिंददारणा[2] ॥छ॥
एए बाण एउं बाणासणु एहु इंदु करिवरखंधासणु।
इहु सो तुहुं रिउ एउं रणंगणु एउ[3] सक्खि सुरभरिउं णहंगणु।
जइ णियकुलपरिहउ[4] ण गवेसमि जइ पइं कंसपहेण ण पेसमि।
तो बलएवहु पय ण णमंसमि अरहंतहु सासणु ण पसंसमि।
हउं णउ णासमि घाउ पयासमि अज्जु तुज्झु जीविउं णिण्णासमि।

तुम जलगजों और मगरों से भयंकर लवणसमुद्र में जाकर छिप गये थे। तुम्हारे बिना गायों और भैंसों से रहित नन्द का गोकुल सूना हो गया है। हे गोपाल ! तुम जाओ-जाओ, यहाँ मत पहुँचो। आज मेरे पैरों की चपेट में आकर तुम नहीं बचोगे। अपने जिस पराक्रम से तुमने राजकुलरूपी कमलों के सरोवर के हंस कंस का पराक्रम भंग किया है, तुम मुझे अपना बाहुबल दिखाओ तो मैं देखूँगा। तू कुलकलंक (गोपत्व) प्रक्षालित कर ले (मिटा ले)। इस समय तुम्हारा नाश ठीक नहीं। इस पर नारायण ने कहा—

घत्ता—तुम्हें आज युद्ध में मारकर और फाड़कर लोक में देववरों और मनुष्यों को सन्तुष्ट करूँगा। नन्द के गोकुल को आलोकित कर मैं गोमण्डल (गायों के मण्डल, पृथ्वी-मण्डल) का पालन करता हूँ, मैं गोप हूँ।

(10)

और भी देखो देखो, हर्ष से उज्ज्वल लक्ष्मी के स्तन की केशर से अरुण, शत्रुरूपी गजराजों को विदारण करनेवाले ये मेरे बाहुदण्ड। ये बाण, ये धनुष, गजवर के कन्धे पर आरूढ़ यह बलभद्र। यह तुम, ये शत्रु, और यह युद्ध का मैदान। देवताओं से भरा हुआ यह आकाश साक्षी है; यदि मैं अपने कुल के पराभव का बदला नहीं लेता, यदि तुम्हें कंस के पथ पर नहीं भेजता, तो बलराम के चरणों में प्रणाम नहीं करता और अर्हन्त के जिनशासन की प्रशंसा नहीं करता। मैं नष्ट नहीं हूँगा, तुम्हें आघात दूँगा, आज तुम्हारे जीवन

---

12. S णिवकुल°। 13. A तोसावधि; P तोसावेमि। 14. सुर णरवर णर। 15. A उज्जालउं; S उज्जालमि। 16. P गो हउं।
(10) 1. S पेक्खु once. 2. S वइरिंददारणा। 3. P एहु। 4. S °परिहवु।

इय गज्जंतहिं भंगुरभावइं   दोहिं मि अप्फालियइं सचावइं।
उट्ठिउ गुणटंकारणिणायउ   वेविउ वाउ वरुणु जडु जायउ[5]।
सद्दभएण व तेण चमक्कइ[6]   सुरकरि दाणु देंतु णउ थक्कइ।
ससि तसियउ हुउ झीणकलालउ[7]   थिउ जमु णं भयभीएं[8] कालउ।
जलणिहिजलइं चलइं परिघुलियइं   गहणक्खत्तइं महियलि लुलियइं।
कंपियाइं सत्त वि पायालइं   गिरिसिहरइं णिवडियइं करालइं।

घत्ता—अमरासुरविसहरजोइयइं तोणीरइं खंधारोइयइं[9]।
उप्पुंखविचित्तइं[10] संगयइं[9] णं गरुडहं पिंछइं[11] णिग्गयइं[12] ॥10॥

(11)

दुवई—[1]वलइयरयणसारि[2] बहुपहरण चडुलसमीरधुयधया।
ता जरासंधरायदामोयरपयजुयचोइया[3] गया ॥छ॥

करडगलियमयमिलियमहुयरा   जलहर व्व पविमुक्कसीयरा।
सायर व्व गज्जणमहारवा   वइवसु[4] व्व तइलोक्कभइरवा[5]।
मुणिवर व्व कयपाणिभोयणा   थीयण व्व लीलावलोयणा[6]।
पत्थिव व्व सोहंतचामरा   खलणर[7] व्व परिचत्तभीयरा[8]।
सुपुरिस व्व दढबद्धकच्छया   रक्खस व्व मारणविणिच्छया।

को नष्ट करूँगा। इस प्रकार क्षणिक आवेग से गरजते हुए दोनों ने अपने-अपने धनुष चढ़ा लिये। डोरियों की टंकार का शब्द उठा। उससे पवन काँप गया और वरुण जड़ हो गया। उस शब्दभय से ऐरावत डर जाता है और मदजल छोड़ता हुआ नहीं थकता है। चन्द्रमा त्रस्त होकर क्षीण कलाओंवाला हो गया। यम मानो भयभीत होकर काला पड़ गया। समुद्र का जल चंचल होकर व्याप्त हो गया। ग्रह-नक्षत्र धरणीतल पर झूल गये। सातों पाताललोक काँप उठे। भयंकर गिरिशिखर गिर पड़े।

घत्ता—अमर, असुर और विषधरों के द्वारा देखे गये, कन्धों पर रखे हुए, पुंखों से विचित्र और मिले हुए तरकस ऐसे लगते हैं, मानो गरुड़ों के पंख निकल आये हों।

(11)

जिनके सोने के पल्याण (जीन) झुके हुए हैं, जो प्रचुर अस्त्रों से युक्त हैं, जिन पर चंचल पवन से ध्वज उड़ रहे हैं तथा जरासन्ध राजा और दामोदर के दोनों पैरों से प्रेरित किये गये, सूँड़ों से झरते हुए मद पर मँडराते हुए मधुकरवाले वे गज मेघों की तरह जल-कण छोड़ रहे थे। वे समुद्र के समान महागर्जनवाले थे। यम की तरह त्रिलोक के लिए भयावह थे। मुनिवरों की तरह पाणि (हाथ, सूँड़) से भोजन करनेवाले थे। स्त्रीजन के समान लीलापूर्वक देखनेवाले थे। राजाओं की तरह चामरों से शोभित थे। दुष्टजनों की तरह भय से दूर थे। सत्पुरुष की तरह वस्त्र (ब्रह्मचर्य, रस्सी) जिन्होंने अच्छी तरह धारण कर रखा है, राक्षसों

5. P जाइउ। 6. PS चवक्कइ। 7. ABPS Als. झीणु कला°। 8. APS भयभीयए। 9. BP °रोहियइं। 10. S संगइं। 11. BP पिच्छइं। 12. K णिग्गइं।

(11) 1. P वलविय°। 2. A °रणसारि। 3. PS जरसंध°। 4. ABS वइवस व्व। 5. B तिलुक्क°; P तेलोक्क°। 6. B Als. लीलाविलोयणा। 7. S खलयण व्व। 8. AB परिचित्त°।

सुररह[9] व्व घंटालिमुहलिया[10] वासर व्व पहरेहिं पयलिया।
णवणिहि[11] व्व रयणेहिं उज्जला कज्जलालिपुंज व्व सामला।
चरणचालचालियधरायला खलखलंतसोवण्णसंखला।
पुक्खरग्गसंगहियगंधया[12] एक्कमेक्कमारणविलुद्धया।
रोसजलणजालोलिछाइया[13] बिहिं मि कुंजरा सउंह[14] धाइया।

घत्ता—कालउ सुरचावालंकरिउ [15]कडिछुरियइ[16] विज्जुइ विप्फुरिउ[17]।
सरधाराहिं वुट्ठउ महुमहणु णं णवपाउसि ओत्थरिउ[18] घणु ॥11॥

(12)

दुवई—सरणीरंधपसरि[1] संजायइ खगु वि ण जाइ णहयले।
विद्धंतेण[2] तेण भड सूडिय पाडिय मेइणीयले ॥छ॥

वरधम्मेण जइ वि परिचत्ता लोहणिबद्धा चित्तविचित्ता।
परणरजीवहारि दुद्दंसण चंचलयर णावइ कामिणियण[3]।
वम्मविहंसण पिसुणसमाणा दूरोसारियअमरविमाणा।
धणुहें दिण्णउं जइ वि णवेप्पिणु कोडिउ ताउ[4] दो वि मेल्लेप्पिणु।

की तरह जो मारने का निश्चय किये हुए हैं, जो देवरथों की तरह घण्टावलियों से मुखरित हैं, जो दिनों के समान प्रहरों (प्रहर, प्रहारों) से युक्त हैं, नवनिधि के समान जो रत्नों से उज्ज्वल हैं, जो काजल और अलिसमूह की तरह श्यामल हैं, जो अपनी पद-चाल से धरती को प्रकम्पित करनेवाले हैं; जिनकी स्वर्ण शृंखलाएँ खनखना रही हैं, जिनकी सूँड़ों के अग्रभाग में गन्ध संगृहीत है, जो एक-दूसरे को मारने के लिए उत्सुक हैं, इस प्रकार क्रोधरूपी ज्वालावलि से आच्छादित दोनों ही महागज सामने दौड़े।

घत्ता—बिजली के समान कमर की धुरी से चमकते हुए कृष्ण सर-धाराओं (तीर, जलकण की धाराओं) से बरस पड़े, मानो श्याम एवं इन्द्रधनुष से अलंकृत नवघन, नवपावस में उमड़ पड़े हों।

(12)

तीरों के छिद्रहीन प्रसार के कारण आकाशतल में पक्षी नहीं जा पाता। भेदन करते हुए नारायण ने योद्धाओं को नष्ट करके धरती पर लिटा दिया। वे तीर यद्यपि वरधर्म (धनुष, धर्म) से परित्यक्त, लोह-निबद्ध (लोहा, लोभ से घटित), चित्रविचित्र, दूसरे जीव का हरण करनेवाले, दुर्दर्शनीय और अत्यन्त चंचल थे, मानो कामिनीजन हों। वे दुष्ट के समान वर्म्म (मर्म, कवच) का भेदन करनेवाले थे, और देवविमानों को दूर से ही हटानेवाले थे। यद्यपि ये तीर धनुष द्वारा दोनों कोटियाँ झुकाकर छोड़े गये थे, तब भी वे तृष्णाकुल की तरह लाख

9. ABP सुरहर व्व। 10. BS घंटाहिं मुह°। 11. P णिवणिहि। 12. P पुंखर व्व। 13. S छाइया। 14. S सहुवहुं; BP समुहुं। 15. B कडि। 16. P °छुरिए। 17. P विप्फुरियउ। 18. B उत्थरिउ।

(12) 1. AP °णीरंधयारे। 2. S विंधंतेण। 3. S कामिणिजण। 4. AP तो वि वेण्णि; B Als. ताउ दोण्णि।

लक्खहु धावइ[5] णं तिह्नालुय अह किं किर करंति[6] जड गुणचुय।
मग्गणा वि णिय मोक्खहु कण्हें वइरिवीरणिद्दारणतण्हें।
ता मगहाहिवेण रूसंतें हरिधणुवेयणाण[7] दूसंतें।
णियसरेहिं विणिवारिय रिउसर विसहरेहिं छिण्णा इव विसहर।

घत्ता—ता कण्हें विद्धउ पइसरिवि धयछत्तइं चमरइं कप्परिवि।
णरवइ णारायहिं वणिउ किह धुत्तेहिं विलासिणिलोउ जिह ॥12॥

(13)

दुवई—ता देवइसुयस्स बलसत्ति[1] पलोइवि[2] णिज्जियावणी[3]।
मणि चिंतविय[4] विज्ज जरसिंधें[5] विसरिसविविहरूविणी[6] ॥छ॥

दंडउ[7]—णवर पवररायाहिराएण संपेसिया दारणी मारणी मोहणी[8] थंभणी सव्वविज्जाबलच्छेइणी[9] ॥1॥
पलयघरवारणी[10] संगया खग्गिणी पासिणी चक्किणी सूलिणी हूलणी[11] मुंडमालाहरी कालकावालिणी ॥2॥
पयडियमुहदंतपंतीहिं हा[12] हि त्ति हासेहिं पिंगुद्धकेसेहिं मायाविरुद्धेहिं[13] भीमेहिं भूएहिं[14] रुद्धा रहा ॥3॥

के लिए दौड़ रहे थे (जो करोड़ों को पाकर भी लाख की इच्छ करे।) अथवा गुणों से च्युत जड़ क्या करते हैं। (इधर) शत्रुवीर को नष्ट करने की तृष्णा रखनेवाले कृष्ण ने धनुर्वेद को दूषित करते हुए और क्रुद्ध होते हुए, (उधर) मगधराज ने अपने तीरों से शत्रुतीरों का निवारण किया, जैसे विषधरों से विषधर छिन्न-भिन्न हुए हों।

घत्ता—कृष्ण ने प्रवेश कर ध्वजों, छत्रों और चमरों को काटकर अपने तीरों से बिद्ध राजा को इस प्रकार घायल कर दिया, जैसे धूर्तों के द्वारा विलासिनी घायल कर दी गयी हो।

(13)

तब धरती को जीतनेवाली कृष्ण की बलशक्ति को देखकर, जरासन्ध ने असामान्य विविध रूप धरण करनेवाली विद्या की अपने मन में चिन्ता की। प्रवरराजाधिराज ने दारणी, मारणी, मोहिनी, स्तम्भिनी सर्पविद्या, बलछेदिनी प्रलयघरवारिणी, खग्गिणी, पासिनी, चक्रिणी, शूलिनी, हूलिनी, मुण्डमालाधरी और काल-कापालिनी रूप (विद्या) प्रेषित की। अपने मुखों और दाँतों की पंक्तियों को दिखाते हुए, हा ! हा ! इस प्रकार अट्टहास करते, पीले ऊँचे केशराशिवाले, माया से अवरुद्ध, भयंकर भूतों द्वारा रथ रोक लिये गये। कृष्ण ने युद्ध में

5. P Als. धाइय। 6. AP कुर्णति। 7. PS णाणु।
(13) 1. B बलसत्तिए लो°। 2. S पलोयवि। 3. S णिज्जया°। 4. A चित्तविय; S चिंतवीय। 5. PS जरसंधें। 6. P वेविहरूविणी। 7. A omits दंडउ। 8. S omits मोहणी। 9. B °छेयणी। 10. AP पलयघणधारिणी; B पलयघरवारिणी; Als. पलयघरवारणी against Mss. and against gloss in all Mss. 11. A omits हूलणी; S हूलिणी। 12. S हा हं ति। 13. AP मायाविरूवेहिं। 14. P भूतेहिं।

हरिकरिवरे किंकरे छत्तदंडम्मि चावम्मि[15] चिंधम्मि जाणे विमाणम्मि
कण्हेण[16] जुज्झे रिऊ[17] दीसए ॥4॥
विहुणइ[18] सयलं बलं जाव [19]फुट्टंतसव्वट्ठिअंगेहिं[20] तावंराले
चलंतुग्गपक्खिंदकेऊहरो[21] संठिओ ॥5॥
फणिसुरणरसंथुओ[22] सूरसंगामसंघट्टसोढो[23] महामंतवाईसरो तप्पहावेण
णिण्णासिया ॥6॥
जलहरसिहरे खलंती चलंती[24] घुलंती तसंती रसंती सुसंती चलायासमग्गे
सुदूरं गया देवया ॥7॥
घत्ता—हरिदंसणि[25] णहयलि दिण्णपय जं बहुरूविणि णासेवि गय।
तं परतरुणीगलहारहर पहुणा अवलोइय णियकर ॥13॥

(14)

दुवई—पभणइ कोवजलणजालारुण दिट्ठि धिवंतु माहवे।
किं कीरइ खलेहिं भूएहिं थिएहिं गएहिं आहवे ॥छ॥
तेण दुंछिओ[1] हरी नृपिंडमुंडखंडणे[2] किं बहूहिं किंकरेहिं मारिएहिं भंडणे।
होइ[3] भू हए णिवे ण बुज्झसे[4] किमेरिसं एहि कट्ठ धिट्ठ दुट्ठ पेच्छ मज्झ पोरिसं।

घोड़े, हाथी, अनुचर, छत्रदण्ड, चाप, पताकायान और विमान पर शत्रु को देख लिया। और जब तक वह विद्या नष्ट होती हुई हड्डियों और अंगों के साथ समस्त सेना को नष्ट करती है, तब तक चंचल और उग्र गरुड़ को धारण करनेवाले वह (श्रीकृष्ण) वहाँ स्थित हो गये, जहाँ नागों, असुरों और मनुष्यों से संस्तुत, शूरवीरों के संग्राम का संघर्ष करने में समर्थ और महामन्त्र वादीश्वर था। उसके प्रभाव से नष्ट होती हुई वह विद्यादेवी मेघशिखरों पर स्खलित होती हुई, गिरती हुई, त्रस्त होती हुई, चिल्लाती हुई और सिसकती हुई, चलाकाश के मार्ग से कहीं दूर चली गयी।

घत्ता—हरि को डसनेवाली वह बहुरूपिणी विद्या जब आकाश में अपने पैर रखती हुई कहीं चली गयी, तब राजा ने शत्रुतरुणियों के गले के हारों का हरण करनेवाले अपने हाथ देखे।

(14)

क्रोधाग्नि की ज्वालाओं से अरुण अपनी दृष्टि माधव पर डालते हुए जरासन्ध कहता है—युद्ध में स्थित अथवा गये हुए भूतों से क्या किया जाये ? उसने हरि की निन्दा की कि मनुष्यों के धड़ों और सिरों का खण्डन करनेवाले युद्ध में बहुत से अनुचरों को मारने से क्या लाभ। राजा के मारे जाने पर धरती अपने अधीन हो जाएगी, क्या तुम इतना नहीं जानते ? हे कष्ट, ढीठ दुष्ट ! आ, और मेरा पौरुष देख। तब

---

15. K omits चावम्मि चिंधम्मि। 16. P कण्हेण कुद्धेण जुज्झेवि रिऊ। 17. BK रिउ। 18. BKP विहुणेइ। 19. D फुट्टंत; P फुट्टंति। 20. B सव्वट्ठिअंगम्हि। 21. A °केऊरहो; P °केऊरहे। 22. A फणिणरसुर°। 23. APS °संगाम°; P °संगामि संघाविओ सो महापुण्णणेमीसरो तप्पहा° in second hand. 24. A चलंतो। 25. B तहु दंसणि in second hand; S जिणदंसणि।

(14) 1. A दोच्छिओ; B दुच्छिओ; S दोंछिओ। 2. ABP णिपिंड°। 3. P होउ। 4. B झुज्झसे; P जुज्झसे।

केसरि व्व दुद्धरो करग्गणक्खराइओ सो वि तस्स संमुहो समच्छरो पधाइओ।
ता महीसरेण झत्ति पाणिपल्लवे कयं [5]लोयमारेणक्कबिंबसंणिहं[6] सचक्कयं।
उत्तमेण कुंकुमेण चंदणेण चच्चियं भामियं करेण वीरदेहरत्तसिंचियं।
[7]गुत्थपंचवण्णपुप्फदामएहिं[8] पुज्जियं राहियामणोहरस्स संमुहं विसज्जियं।
[9]चंडसूररस्सिरासिचिच्चियच्चिसच्छहं[10] कालरूवभीमभूयमच्चुदूयदूसहं।
वेरितासयारि भूरिभूइभाइ भासुरं भीयजीयभट्ठचेट्ठतट्ठकिंणरासुरं[11]।
घत्ता—णाणामाणिक्कहिं वेयडिउ[12] तं रिउरहंगु हरिकरि चडिउं।
णियकंकणु तिहुयणसुंदरिए णं पाहुडु पेसिउं जयसिरिए ॥14॥

(15)

दुवई—तं हत्थेण लेवि दुव्वोल्लिउ पुणरवि रिउ णराहिओ[1]।
अज्ज वि देहि पुहवि[2] मा णासहि अणुणहि सीरि सामिओ[3] ॥छ॥
तं णिसुणेवि वुत्तु[4] मगहेसें आरुट्ठें कयंतभडभीसें।
तुहुं गोवालु बालु णउ[5] जाणहि संढु होवि कामिणियणु माणहि।
जड किं सिहि सिहाहिं संतावहि महु अग्गइ सुहडत्तणु दावहि।
चक्कें[6] एण कुलालु व मत्तउ अज्जु मित्त[7] कहिं जाहि जियंतउ[8]।

सिंह के समान दुर्धर कराग्र में स्थित खड्गरूपी नखों से शोभित वह भी ईर्ष्या से भरकर उसके सम्मुख आये। इतने में राजा जरासन्ध ने शीघ्र ही अपने पाणिपल्लव में लोक का नाश करने के लिए प्रलयार्क-बिम्ब के समान अपना चक्र ले लिया जो उत्तम केशर और चन्दन से चर्चित था। वीरों के शरीर के रक्त से सिंचित था, गुँथी हुई पंचरंगी मालाओं से पूजित था, राधा के प्रिय कृष्ण के सम्मुख छोड़ा। वह प्रचण्ड सूर्य-रश्मिराशि की अग्नि की ज्वालाओं के समान था, काल के रूप के समान भयंकर, भूतों और मृत्युदूत की तरह दुःसह्य, शत्रुओं के लिए त्रासदायक, प्रचुर विभूतियों से भास्वर, भीतजीवों की भ्रष्ट चेष्टाओं से किन्नरों और असुरों को डरानेवाला, तथा—

घत्ता—तरह-तरह के माणिक्यों से जड़ा हुआ था। वह चक्र श्रीकृष्ण के हाथ पर ऐसे चढ़ गया, मानो त्रिभुवन की सुन्दरी विजयश्री ने अपना कंगन उपहार में भेजा हो।

(15)

उस चक्र को हाथ में लेकर उन्होंने फिर से उस शत्रु राजा से कहा—"तुम आज भी धरती दे दो, अपने को नष्ट मत करो, स्वामी बलभद्र से प्रार्थना करो।" यह सुनकर क्रुद्ध और यमभट की तरह भयंकर मागधेश ने कहा—"गोपाल ! तुम नहीं जानते हो, नपुंसक होकर कामिनीजन को मानते हो। हे मूर्ख ! क्या अग्नि अग्नि से शान्त होती है ? तुम मेरे सामने सुभटपन बता रहे हो, इस चक्र से तुम कलाल की तरह मतवाले

---

5. Als °मारणक्क° against Mss. misunderstanding the gloss. 6. A °बिंबासण्णिहं विसक्कयं। 7. A गुत्तु; PS गुंथ°। 8. BP °पुप्फ°। 9. A चंडसूररासि°; B चंडसूरतेयरासि°। 10. A °सच्छिहं। 11. A °भट्ठकिट्ठणट्ठकिंणरा°। 12. B वियडियउं।

(15) 1. PS णराहिवो। 2. B पुहइ। 3. PS पत्थिवो। 4. P पउत्तु। 5. B ण हु। 6. AP चक्केणेण। 7. B मित्तु। 8. AP अथिरउ।

ओसरु सरु[9] पइसरु[10] मा जमपुरु जाम ण भिंदमि सत्तिइ तुह उरु ।
राउ समुद्दविजउ कम्मारउ वसुएउ वि पाइक्कु महारउ ।
तुहुं घइं[11] तासु पुत्तु किं गज्जहि धिट्ठ धरत्ति मग्गंतु ण लज्जहि ।
हरिणु व सीहें सहुं रणु इच्छहि भिच्चु होवि[12] रायत्तहु[13] वंछहि ।
खल खज्जिहिसि पाव पावें तुहुं णासु णासु मा जोयहि महुं मुहुं ।
ता हरिणा रहचरणु विमुक्कउं रविबिंबु व अत्थयरिहि[14] ढुक्कउं ।

घत्ता—णरणाहहु छिण्णउं सिरकमलु णावइ[15] रहंगु[16] णवकुसुमदलु ।
थिउ हरि हरिसें कंटइयभुउ पवरच्छरकोडीहिं थुउ ॥15॥

(16)

दुवई—हइ जरिसंधराइ[1] महुमहसिरि रुंजियमहुयरालओ[2] ।
सुरवरकरविमुक्कु[3] णिवडिउ णववियसियकुसुममेलओ ॥छ॥

अरिणारिंदणारीमणजूरइं कउ कलयलु पहयइं जयतूरइं ।
पायपोमपाडियगिव्वाणें दहधणुतणुउच्छेहपमाणें ।
चिरभवचरियपुण्णसंपुण्णें णवघणकुवलयकज्जलवण्णें ।
एक्कसहसवरिसाउणिबंधें रणभरधरणथोरथिरकंधें[4] ।

हो रहे हो ? हे मित्र ! आज तुम जीवित कहाँ जा सकते हो ? जब तक मैं शक्ति से तुम्हारे उर का छेदन नहीं करता, तब तक यहाँ से हट जाओ, यमपुर में प्रवेश मत करो। समुद्रविजय मेरा काम करनेवाला (सेवक) है, वसुदेव भी मेरा अनुचर है। तू उसका पुत्र व्यर्थ क्यों गरजता है ? ढीठ ! धरती माँगते हुए तुझे लज्जा नहीं आती ? हरिण की तरह तू सिंह के साथ युद्ध की इच्छा करता है, नौकर होकर राजछत्र की इच्छा करता है ? रे दुष्ट ! पाप पाप के द्वारा तू खाया जाएगा। भाग, भाग, मेरा मुँह मत देख।" इस पर श्रीकृष्ण ने चक्र चला दिया, जैसे सूर्यबिम्ब अस्तगिरि पर पहुँच गया हो।

घत्ता—उसने नरनाथ का सिररूपी कमल काट दिया, मानो चक्रवाक ने नवकुसुमदल को छिन्न कर दिया हो। हर्ष से हरि की भुजाएँ पुलकित हो गयीं। करोड़ों श्रेष्ठ अप्सराओं ने उनकी स्तुति की।

(16)

जरासन्ध के मारे जाने पर, जिस पर मधुकर-समूह गुनगुना रहा है ऐसे श्रीकृष्ण के सिर पर देवों के द्वारा मुक्त नवकुसुम-समूह बरस पड़ा। शत्रु-राजाओं की स्त्रियों के मन को सतानेवाले आहत जय-नगाड़ों का कल-कल होने लगा, जिसके चरण-कमलों में देव मस्तक झुकाते हैं, जिसके शरीर की ऊँचाई दस धनुष प्रमाण है, जो पूर्वजन्म में आचारित पुण्य से परिपूर्ण है, जो नवघननील कमल और काजल के समान कृष्ण वर्ण है, जिसकी आयु का बन्ध एक हजार वर्ष है, जिसके स्थूल कन्धे युद्ध का भार उठाने में समर्थ हैं,

9. P ऊसरु । 10. B पइसरु । 11. A तहु पइं तासु; B पइं; P घरि । 12. BS होइ । 13. AS Als. रायत्तणु । 14. APS अत्थइरिहि । 15. A णाइं । 16. AP रहंगं ।

(16) 1. B जरसिंधु; P जरसेंधु; S जरसेंध° । 2. S रुंजियं । 3. P °विमुक्क । 4. PS °खंधें ।

मागहु वरतणु समउं पहासें साहिय कयदिव्विजयविलासें।
सुरसरिसिंधुवकंठणिकेयइं[5] मेच्छरायमंडलइं अणेयइं।
सिरिविरइयकडक्खविक्खेवें णिज्जियाइं णारायणदेवें।
विप्फुरंत णहयलि पेसिय सर विज्जाहरदाहिणसेढीसर।
जिणिवि गरुडसोहंतधयग्गें[6] महि तिखंडमंडिय जिय खग्गें।
णियपयमुद्दिय दप्पुल्ललियहं चूडामणि णाणामंडलियहं[7]।

घत्ता—[8]कोत्थुयमाणिक्कु[9] दंडु अवरु गय संखु चक्कु धणुहु वि[10] पवरु।
सिद्धइं सहुं सत्तिइ सत्त तहु रयणइं मेइणिपरमेसरहु ॥16॥

(17)

दुवई—अट्ठसहास जासु वरदेवहं[1] मणहररिद्धिरिद्धहं।
सोलह बलणिहित्तदिण्णायहं रायहं मउडबद्धहं ॥छ॥

[2]कइयवकरणालिंगणणिलयहं[3] घरि तेत्तियइं[4] सहासइं णिलयहं।
रुप्पिणि सच्चहाम जंबावइ पुणु सुसीम लक्खण मंथरगइ।
हावभावविब्भमपाणियणइ सइ[5] गंधारि गोरि पोमावइ।
एयउ[6] साहिय पुहइणरिंदहु अट्ठमहाएविउ गोविंदहु।

जिसने दिव्य विजय-विलास किया है, ऐसे श्रीकृष्ण ने प्रभास के साथ मागध, वरतनु आदि को सिद्ध कर लिया। गंगा और सिन्धु नदियों के उपकण्ठों पर जिनके घर हैं, ऐसे अनेक म्लेच्छराज मण्डलों को, श्री (विजयश्री) द्वारा जिनपर कटाक्ष-विक्षेप किया गया है, ऐसे नारायण देव ने जीत लिया। जिनके द्वारा प्रेषित तीर आकाशतल में चमकते हैं, जिनके ध्वज का अग्रभाग गरुड़ से शोभित है, ऐसे श्रीकृष्ण ने विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी के राजाओं को जीतकर, अपनी तलवार से तीन खण्ड धरती जीत ली। दर्प से उद्धत नाना मण्डलीक राजाओं के चूड़ामणि को अपने पद (पैर) से अंकित कर दिया।

घत्ता–कौस्तुभमणि, दण्ड, गदा, शंख, चक्र, प्रवर धनुष और शक्ति—ये सात रत्न धरती के स्वामी को सिद्ध हुए।

(17)

सुन्दर ऋद्धियों से सम्पन्न श्रेष्ठ देवों और शक्ति से दिग्गजों को परास्त करनेवाले, मुकुटबद्ध उन राजाओं की (बलभद्र और नारायण की क्रमशः) आठ हजार और सोलह हजार रानियाँ थीं तथा मायाचारपूर्ण आचरण और आलिंगन की घर उन वनिताओं के उतने ही घर थे। रुक्मणि, सत्यभामा, जाम्बवती, सुसीमा, मन्थरगति लक्ष्मणा, हावभाव और विभ्रमरूपी पानी की नदी सती गान्धारी, गौरी और पद्मावती ये आठ महादेवियाँ

---

5. A °सिंधुकंठ°; PS °सेंधुवकंठ°। 6. BS °सोहंति। 7. °मंडलियहं। 8. P कोत्थुह°। 9. P माणिक्क। 10. B वि पवरु; P वि अवरु।
(17) 1. B °देवहिं। 2. BK कइयव° but gloss in K कैतव; P कइविय। 3. A °णलियहं। 4. A तेत्तियइं जेहे वरविलयहं; P तेत्तिय सहसइं वरविलयहं।
5. B सइं। 6. B एयउ।

बलएवहु माणवमणहारिहिं अट्ठसहासइं मंदिरि[7] णारिहिं।
रयणमाल गय मुसलु सलंगलु चउ रयणाइं तासु बहुभुयबलु।
कसण धवल[8] बेण्णि वि णं जलहर पुरि दारावइ गय हरि हलहर।
अहिसिंचिउ उविंदु सामंतहिं गिरि व घणेहिं णवंबु सवंतहिं।
बद्धउ पट्टु विरेहइ केहउ तडिविलासु वरमेहहु[9] जेहउ।
दिव्वकामसोक्खइं भुंजंतहु णमिकुमारहु तहिं णिवसंतहु।
अण्णहिं दिवसि[10] कंसमहुवइरिउ णियअंतेउरेण परिवारिउ।

घत्ता—पप्फुल्लवेल्लिपल्लवियवणि गयपाउसि सरयसमागमणि।
गउ जलकेलिहि हरि सीरधरु णामेण मणोहरु कमलसरु ॥17॥

(18)

दुवई—सोहइ चिक्कमंति जहिं चारु सलील मरालपंतिया।
णं रुंदारविंदकयणिलयहि[1] लच्छिहि देहकंठिया[2] ॥छ॥

पोमहि णियबहिणियहि गवेसिय णं चंदेण जोण्ह संपेसिय।
उड्डिय भमरावलि ताहि[3] अंगें अयसकित्ति णं कित्तिहि संगें।
बहुगुणवंतु जइ वि कोसिल्लउं जइ वि सुपत्तु सुमित्तु[4] रसिल्लउं।
तो वि णलिणु[5] सालूरें चप्पिउं जडपसंगु किं ण करइ विप्पिउं।

पृथ्वी के नरेन्द्र गोविन्द को साधकर सिद्ध हुई। बलदेव के घर में मानव-मन का हरण करनेवाली आठ हजार रानियाँ थीं। उनके रत्नमाला, गदा, मूसल और हल ये चार महारत्न थे। दोनों ही महान् बाहुवाले, मानो काले और गोरे (सफेद) मेघ हों। नारायण और बलभद्र द्वारावती नगरी गये। सामन्तों ने श्रीकृष्ण का अभिषेक उसी प्रकार किया, जिस प्रकार नवजल बरसाते हुए मेघ पहाड़ का करते हैं। बाँधा हुआ राजपट्ट ऐसे शोभित होता है, जैसे मेघों में विद्युद्विलास हो। दिव्य कामसुखों को भोगते हुए नेमिकुमार वहाँ रहने लगे। किसी दिन कंस और मधु के शत्रु कृष्ण अपने अन्तःपुर के साथ घिरे हुए थे—

घत्ता—वर्षा बीतने और शरद् के आने पर खिली हुई लताओं और पल्लवोंवाले वन में श्रीधर नामक सुन्दर कमल सरोवर में वे जलक्रीड़ा के लिए गये।

(18)

वहाँ पर सुन्दर और लीलापूर्वक चलती हुई हंसों की कतार ऐसी शोभित थी, मानो विशाल कमलों में निवास करनेवाली लक्ष्मी के शरीर का कण्ठ हो, मानो अपनी बहिन लक्ष्मी को खोजने के लिए चन्द्रमा ने ज्योत्स्ना को भेजा हो। उनके शरीर से उड़ती हुई भ्रमरावली (ऐसी शोभित थी) मानो कीर्ति के साथ अयश की कीर्ति उड़ रही हो। यद्यपि कमल कर्णिकायुक्त और बहुगुणों से युक्त हैं तथा अच्छे मित्र के समान पत्तों और मकरन्दवाले हैं, तो भी वह मेंढक के द्वारा खा लिये जाते हैं। जड़ प्रसंग (मूर्ख की संगति, जल

---

7. A मंदिरणारिहिं। 8. AP धवल णं बेण्णि वि। 9. S omits "वर"। 10. B दिवहि।

(18) 1. B कयणिलहिं; K कयणिलयहि but gloss कृतनिलयायाः। 2. ABS देहकंतिया। 3. B तहु; S तहें। 4. B सुमत्तु। 5. B °णलिण।

जहिं सारसइं सुपीयलियंगइं णं सरसिरियथणवट्टइं[6] तुंगइं।
तहिं जलकील करइ तरुणीयणु अहिसिंचिंतु देउ णारायणु।
काहि[7] वि वियलिय हारावलिलय सयदलदलजलकणसंसय गय।
पयलिउं थणकुंकुमु पइ[8] सित्तउ णावइ रइरसु राविंयगत्तउ।
काहि वि सुण्हु[9] वत्थु लग्गुल्लियउं अंगावयवु सव्वु पायडियउं[10]।
काहि वि सित्तहि णवविल्लि[11] व वर[12] णं णिग्गय रोमावलिअंकुर[13]।
काहि वि उल्हाणउ[14] कवलियबलु[15] कण्हजलंजलिहउ विरहाणलु।
काहि[16] वि दिण्णु[17] कण्णि णीलुप्पलु गेण्हइ णाइं[18] णयणवइहवहलु[18]।
का वि कण्हतणुकंतिहि णासइ बलदेवहु[19] धवलत्तें दीसइ।
कंठि लग्ग क वि णेमिकुमारहु णाइं[20] अहिंस धम्मवित्थारहु।

घत्ता—तहिं सच्चहामदेविइ[21] सइइ णं विंझसिहरि रेवाणइइ।
अइसरसवयणरोमंचियउ णीरें णेमीसरु सिंचियउ ॥18॥

(19)

दुवई—जो देविंदचंदफणिवंदिउ तिहुयणणाहु[1] बोल्लिओ।
सो वि णियंबिणीहिं कीलंतिहिं जलकीलाजलोल्लिओ ॥छ॥

की संगति) किसका बुरा नहीं करता। जहाँ पीले अंगवाले सारस ऐसे लगते हैं, मानो सरोवररूपी लक्ष्मी के ऊँचे स्तनपृष्ठ हों। देव नारायण कृष्ण के ऊपर जल सींचती हुई युवतियाँ उस सरोवर में जलक्रीड़ा करती हैं। किसी की हारावलि गिर जाती है जो कमलों के पत्तों के जलकणों का संशय पैदा कर रही है। पति से सींचा गया तथा स्तनों से गिरा हुआ केशर-जल ऐसा लगता है, मानो रति का आस्वाद लेनेवाला रति-रस हो। किसी का सूक्ष्म वस्त्र शरीर से चिपक जाता है, उससे समस्त शरीरावयव प्रकट हो जाते हैं। किसी की सींची गयी नवल त्रिबलि ऐसी लगती है, मानो रोमावलि के अंकुर निकल आये हों। शक्ति को कुण्ठित करनेवाला किसी का विरहानल कृष्ण की जलांजलि से आहत होकर शान्त हो गया। किसी ने काम में नीलकमल देख लिया, जैसे उसने नेत्र के वैभव का फल पा लिया हो। कृष्ण की शरीर की कान्ति किसी से छिप जाती है और बलराम की धवलता से वह प्रकट होती है। कोई नेमिकुमार के गले लग जाती है, जैसे अहिंसा धर्मविस्तार से लग जाती है।

घत्ता—वहाँ सती सत्यभामा देवी के द्वारा, अत्यन्त सरसमुख वाले और पुलकित नेमीश्वर जल से ऐसे सींचे दिये गये, मानो नर्मदा के द्वारा विन्ध्य सींचा गया हो।

(19)

जो देवेन्द्ररूपी चन्द्रों और नागराजों से वन्दनीय हैं और त्रिलोकनाथ कहे जाते हैं, उन्हें भी क्रीडा करती

---

6. DP °वट्टइं। 7. B काह। 8. A पयसित्तउं; B पइसित्तउं; K पइ सित्तउं and gloss भर्त्रा; K records *a p* : पय पाठे जलसिक्तः; S पयईसित्तउं; T पयसित्तउ जलसिक्तः। 9. A सण्हु। 10. BK पायडिउ। 11. A तिवलिल्लिहे वर; P णिव; Als. णववेल्लिहे वर। 12. B वरु। 13. B °अंकुरु। 14. AB Als. उण्हाणउ; P ओल्हाणउ। 15. P °यलु। 16. P काए। 17. PS कण्णे दिण्णु। 18. B णाभि। 19. ABPS बलएवहो। 20. B णाभि। 21. S सच्चभाम°।
(19) 1. P तिहुवण°।

देवें चारुचीरु परिहंतें तरलतारणयणेहिं[2] णियंतें।
पुणु वि तेण तहिं कील करंतें उप्परि पोत्ति घित्त विहसंतें।
णिप्पीलहि[3] कडिल्लु परिबोल्लिय[4] थिय सुंदरि णं सल्लें सल्लिय।
णारिउ णउ मुणंति पुरसंतरु जो देवाहिदेउ[5] सइं जिणवरु।
जासु पायधूलि वि वंदिज्जइ तहु ओल्लणिय[6] किं ण पीलिज्जइ।
ता देवेण भणिउ णउ मण्णिउं पेसणु दिण्णउं किं अवगण्णिउं।
भणु भणु सच्चभामि[7] सच्चउं तुहुं किं कालउं किउं जरकमलु व मुहुं।
ता वीलावसमउलियणयणइ उत्तउं उत्तरु तहु ससिवयणइ।
बहुकल्लाणणाणविस्थिण्णइं जइ वि तुम्ह पुण्णइं संपुण्णइं।
तो वि ण एहु[8] महापहु जुज्जइ एएं महुं सरीरु णिरु झिज्जइ[9]।
किं पइं संखाऊरणु रइयउं किं सारंगु पणामिवि[10] लइयउं।
किं तुहुं[11] फणिसयणयलि पसुत्तउ जें कडिल्लु मज्झुप्परि घित्तउं।
होसि होसि भत्तारहु भायरु किं तुहुं देवदेउ[12] दामोयरु।

घत्ता—इय जं खरदुव्वयणेण हउ तं लग्गउ[13] तहु अहिमाणमउ।
णारायणपहरणसाल जहिं परमेसरु पत्तउ झत्ति तहिं ॥19॥

हुई स्त्रियों ने जलक्रीडा के जल से गीला कर दिया। स्वच्छ और चंचल नेत्रों से उन्हें देखते हुए तथा हँसते उन्होंने (नेमि ने) उनके ऊपर अपनी धोती फेंक दी और कहा—मेरा कटिवस्त्र निचोड़ दो। सुन्दरी सत्यभामा वेदना से पीड़ित होकर रह गयी। नारियाँ पुरुषों का अन्तस् (हृदय) नहीं समझतीं। जो देवाधिदेव स्वयं जिनवर हैं, जिनके चरणों की धूल की भी वन्दना की जाती है, उसकी धोती क्यों नहीं निचोड़ी जाती ?" तब देव ने कहा—"तुमने (मेरी बात) नहीं मानी। मैंने आदेश दिया था, उसकी अवहेलना क्यों की ? हे सत्यभामा ! तुम सच-सच बताओ, तुमने पुराने कमल की तरह अपना मुख पीला क्यों किया ?" तब लज्जा के कारण अपनी आँखें बन्द करती हुई चन्द्रमुखी सत्यभामा ने उन्हें उत्तर दिया—

यद्यपि तुम्हें बहुकल्याण और ज्ञान से विस्तीर्ण पुण्य प्राप्त है, फिर भी यह (आपके) महाप्रभु होने योग्य नहीं है। इससे (तुम्हारी धोती धोने से) मेरे शरीर को तकलीफ होती है। क्या तुमने शंख फूँककर बजाया ? क्या तुमने धनुष झुकाया ? क्या तुम नागशय्या पर सोये ? तो फिर कैसे तुमने अपना कटिवस्त्र मेरे ऊपर फेंका ? होगे होगे, तुम मेरे पति के भाई ? क्या तुम देव दामोदर हो ?

घत्ता—जब उसने (सत्यभामा ने) तीव्र दुष्ट वचनों से नेमिकुमार को आहत किया, तो वह बात उस स्वाभिमानी को लग गयी। और जहाँ पर श्रीकृष्ण की आयुधशाला थी, वह परमेश्वर शीघ्र वहाँ पहुँचे।

---

2. P °णाल° । 3. B Als. णिप्पीलेहि । 4. AS पच्चोल्लिय; B Als. पवोल्लिय; P पच्चेल्लिय । 5. S °देवु । 6. ABPS उल्लणिय । 7. BP सच्चहामे । 8. PS एउं । 9. B जिज्जइ । 10. PS पणवेवि । 11. AP किं फणीससयणयले पसुत्तउं; S किं पइं फणि° । 12. S देवदेव । 13. A लग्गउ तहो मणे अहिमाणगउ ।

(20)

दुवई—चप्पिउं कुप्परेहिं[1] फणिसयणु पणाविउं वामपाएँणं।
धणु करि णिहिउं संखु आऊरिउ जगु बहिरिउं णिणाएँणं ॥छ॥
महि थरहरिय[2] डरिय णिग्गय फणि　गयणंगणि कंपिय ससि दिणमणि।
बंधविसट्टइं सरिसरतीरइं　पडियइं पुरगोउरपायारइं।
मुडियखंभ[3] भयवस गय गयवर　गलियणिबंधण णट्ठा हयवर।
कण्णदिण्णकर महिंणिवडिय णर[4]　पडिय ससिहर सधय णाणाघर।
हरिणा रयणकिरणविप्फुरियहि[5]　उप्परि हत्थु दिण्णु कडिछुरियहि।
हल्लोहलउ णयरि संजायउ　जंपइ जणु भयकंपियकायउ।
वट्टइ पलयकालु कहिं गम्मइ　किं हयदइयहु[6] पसरइ दुम्मइ।
तहिं अवसरि किंकरु गउ तेत्तहि　अच्छइ घरि महुसूयणु[7] जेत्तहिं।
तेण तेत्थु पत्थाउ लहेप्पिणु　दाणवारि विण्णविउ णवेप्पिणु।
घत्ता—तुह किंकर बलिमड्डइ[8] धरिवि घरि णेमिकुमारें पइसरिवि।
धणु णाविउं[9] जलयरु पूरियउ सयणयलि महोरउ चूरियउ ॥20॥

(20)

उन्होंने हथेलियों से नागशय्या को चाँप दिया, बायें पैर से धनुष को झुका दिया एवं शंख फूँकने से जग बहरा हो गया। धरती काँप उठी, डर कर शेषनाग बाहर निकल आया। आकाश के आँगन में सूर्य और चन्द्रमा काँप गये। नदियों और सरोवरों के बाँध टूट गये। नगर-गोपुर और परकोटे गिर पड़े। भयभीत गज आलानस्तम्भ को मोड़कर भाग गये। खुल गये हैं बन्धन जिनके, ऐसे अश्व भाग गये। कानों पर हाथ देकर लोग धरती पर गिर पड़े। अनेक घर अपने शिखरों और ध्वजों के साथ धराशायी हो गये। तब रत्नकिरणों से चमकती हुई अपनी कमर की छुरी पर श्रीकृष्ण ने अपना हाथ रखा। नगर में कोलाहल मच गया। डर से काँपते हुए शरीरवाले लोगों ने कहा—प्रलय काल आ गया है। अब कहाँ जाया जाये ? हतदैव की यह दुर्मति क्यों हो रही है ?

उस अवसर पर एक किंकर वहाँ गया, जहाँ श्रीकृष्ण अपने घर में थे। वहाँ पर अवसर पाकर उसने श्रीकृष्ण से प्रणामपूर्वक निवेदन किया—

घत्ता—तुम्हारे अनुचर को जबर्दस्ती पकड़कर और आयुधशाला में प्रवेश कर कुमार नेमि ने धनुष चढ़ा दिया, शंख फूँक दिया और शय्यातल पर नागराज को कुचल दिया।

(20) 1. PS कोप्परेहिं। 2. A थरहरिय। 3. P omits °खंभ। 4. P कर। 5. S omits ण in रयण°। 6. APS °दइवहो। 7. B महसुअणु। 8. A °मड्डए। 9. AP णामिउं

(21)

दुवई–पइं रइयाइं जाइं परिवाडिइ हयजणसवणधम्मइं।
एक्कहिं खणि कयाइं बलवंतें तिण्णि मि[1] तेण कम्मइं ॥छ॥

सिंथसंखसरु[2] जो तहिं णिग्गउ तेण असेसु वि जणवउ भग्गउ।
सच्चभाम[3] पवियंभिय एत्तिउं णिप्पीलिउ[4] ण चीरु वरि घित्तउं।
महिलहं णत्थि मंतणेउण्णउं जणि पयडंति जं पि पच्छण्णउं।
चावपणामणु[5] विसहरजूरणु वण्णिउं तेरउं संखाऊरणु।
अवरु भणिउं णउ हरि संकरिसणु किह महुं उप्परि घल्लहि णिवसणु।
तं णिसुणिवि हियउल्लउं कलुसिउं इय एहउं णेमिसें विलसिउं[6]।
ता कण्हेण कयउं कालउं मुहुं णउ दाइज्जथोत्ति[7] कासु वि सुहुं।
बलएवेण भणिउं लइ जुज्जइ मच्छरु तेत्थु[8] भाय णउ किज्जइ।
जसु तेएं कंपइ रविमंडलु पायहिं जासु[9] पडइ आहंडलु।
सगिरि ससायर महि उच्चल्लइ जो सत्त वि सायर उत्थल्लइ[10]।
जासु णाउं[11] जगि पुज्जु पहिल्लउं कुसुमसयणु तहु फणिसयणुल्लउं।
खुब्भइ[12] संखु सरासणु पिंजणु किं सुहडत्तें णियमहि णियमणु।

(21)

लोगों के श्रवणधर्म को नष्ट करनेवाले जो कार्य परिपाटी से (क्रम से) तुमने किये थे, उस बलवान ने वे तीनों कार्य एक क्षण में सम्पन्न कर दिये। प्रत्यंचा और शंख का जो शब्द हुआ उससे सम्पूर्ण जनपद नष्ट हो गया। सत्यभामा ने केवल इतना किया था कि उसने उसका वस्त्र धोया नहीं, बल्कि फेंक दिया। स्त्रियों में मन्त्रनिपुणता नहीं होती। जो चीज गुप्त होती है, वे उसे भी प्रकट कर देती हैं। उसने तुम्हारा धनुष का चढ़ाना, नागशय्या का झुकाना और शंख का फूँकना प्रकट कर दिया, और यह भी कहा कि वह (नेमिनाथ) हरि और संकर्षण नहीं है, फिर मेरे ऊपर अपना वस्त्र क्यों फेंका ? यह सुनकर नेमीश्वर का हृदय कलुषित हो गया। यह उनकी चेष्टाएँ हैं ! तब कृष्ण का मुँह काला हो गया। अपने सगोत्री की प्रशंसा में किसी को भी सुख नहीं मिलता। बलदेव ने कहा—यह ठीक है। हे भाई, इसमें मत्सर नहीं करना चाहिए। जिसके तेज से रविमण्डल काँप उठता है, जिसके चरणों में इन्द्र झुकता है। पहाड़ और समुद्र सहित धरती उछल पड़ती है, जो सातों समुद्र पार कर सकता है, जिसका नाम विश्व में प्रथमतः पूज्यनीय है, उसके लिए नागशय्या फूलों की सेज है। यदि वह शंख फूँककर क्षुब्ध करता है और धनुष चढ़ाता है, तो तुम अपना मन सुभटत्व से क्यों नियमित करते हो ?

(21) 1. BS वि। 2. B सिंथ°। 3. B सच्चहाम; P सच्चिहाम। 4. A णिप्पीलिऊण। 5. S °पणावणु। 6. AP चवसिउ। 7. BPS दायज°। 8. AP एत्थु। 9. APS पडइ जासु। 10. PS ओत्थल्लइ। 11. ABPS णामु। 12. ABPS खुब्भउ।

घत्ता—हलहर दामोयर बे[13] वि जण ता मंतिमंतविहिदिण्णमण[14]।
जिणबलपविलोयणगलियमय[15] ते चित्तकुसुममहिभवणु गय ॥21॥

(22)

दुवई—मंतिउ मंतिमंतु गोविंदें लहु काणणि णिहिप्पए।
कुलवइ सत्तिवंतु तेयाहिउ जइ दाइउ ण जिप्पए ॥छ॥
पइं मि मइं मि सो समरि जिणेप्पिणु भुंजेसइ महिलच्छि लएप्पिणु।
तं णिसुणिवि संकरिसणु घोसइ[1] णारायण णउ एहउं होसइ।
चरमदेहु भुयणत्तयसामिउ सिवएवीसुउ सिवगइगामिउ।
परमेसरु परु णउ संतावइ रज्जु अकज्जु तासु मणि भावइ।
रज्जु पंथु दावियभयजरयहं धूमप्पहतमतमपहणरयहं।
रज्जें जडु माणुसु वेहविवउं[2] अम्हारिसहं रज्जु गउरवियउं।
जिणु पुणु तिणसमाणु[3] मणि मण्णइ रायलच्छि दासि व अवगण्णइ।
जइ पेच्छइ णिव्वेयहु कारणु तो पंचिंदियभडसंघारणु[4]।
करइ णाहु तवचरणु णिरुत्तउं ता महुमहणें कवडु णिउत्तउं।
तणुलायण्णवण्णसंपण्णी [5]जयवइदेविउयरि[6] उप्पण्णी[7]।
मग्गिउ उग्गसेणु सुवियक्खण रायमइ[8] त्ति पुत्ति सुहलक्खण।

घत्ता—मन्त्रियों की मन्त्रणाविधि में अपना मन देनेवाले वे दोनों भाई, नेमीश्वर की शक्ति देखकर, गलितमद होते हुए अपने चित्रकुसुम मन्त्रणागृह में गये।

(22)

शीघ्र ही कृष्ण ने मन्त्रिमन्त्र का विचार किया कि यदि कुलपति शक्तिशाली और तेजाधिक है और यदि वह स्वगोत्री से नहीं जीता जा सकता, तो शीघ्र ही उसे वन में स्थापित करना चाहिए। वह मुझे और तुम्हें युद्ध में जीतकर, धरती की लक्ष्मी लेकर भोग करेगा।

यह सुनकर संकर्षण घोषित करता है—हे नारायण ! ऐसा नहीं होगा। वे चरमशरीरी और भुवनत्रय के स्वामी हैं, शिवादेवी के पुत्र और शिवगति को जानेवाले हैं। परमेश्वर दूसरे को नहीं सता सकते। उनके मन में राज अकार्य लगता है। राज्य-भय और बुढ़ापा धूमप्रभ और तमःप्रभ नरकों का पथ दिखाने वाला है। राज्य से मूर्ख मनुष्य ही अपने को वैभवशाली समझते हैं। उन जैसे लोगों के लिए राज्य क्या गौरवान्वित करनेवाला है? जिन भगवान् तो उसे अपने मन में तृण के समान समझते हैं, राज्यलक्ष्मी को दासी के समान समझते हैं। यदि वह पाँच इन्द्रियरूपी भटों का संहार करनेवाले निर्वेद का कोई कारण देखते हैं, तो निश्चय ही स्वामी तप ग्रहण कर लेंगे। इस पर श्रीकृष्ण ने अपने मन में एक कपटयुक्ति सोची। उन्होंने जयवती देवी के उदर से उत्पन्न, शरीर के लावण्य और वर्ण से पूर्ण, शुभलक्षणा राजमती नाम की कन्या उग्रसेन से माँगी।

13. AP बेण्णि जण। 14. AP °मंतसंदिण्णमण। 15. A जिणवर°।
(22) 1. APS भासइ। 2. B वेहविवउ। 3. P तेणु समाणु; S तणसमाणु। 4. PS पंचेंदिय°।

घत्ता—णिरु सालंकार सारसरस भुयणयलि पयडसोहग्गजस।
परमेसरि मुणिहिं मि हरइ मइ णं वरकइकव्वहु तणिय[9] गइ ॥22॥

(23)

दुवई—पत्थिय[1] माहवेण महुरावइघरु गंपिणु सराहहो।
सुय तेरी मरालगयगामिणि[2] ढोयहि णमिणाहहो ॥छ॥

तं आयण्णिवि कंसहु ताएं दिण्ण वाय गोविंदहु राएं।
जं जं काइं मि णयणाणंदिरु जं जं घरि अम्हारइ सुंदरु।
तं तं सव्वु तुहारउ[3] माहव धीयइ किं जियवइरिमहाहव[4]।
अवरु वि देवदेउ[5] जामाइउ कहिं लब्भइ बहुपुण्णविराइउ।
ता मंडवि चामीयरघडियइ पंचवण्णमाणिक्कहिं जडियइ।
कंचणपंकयकेसरवण्णहि अंगुत्थलउ छूढु[6] करि कण्णहि।
जयजयसद्दें मंगलघोसें दविणदाणकयविहलियतोसें।
णाहविवाहकालि णर ससि रवि आय सुरासुर विसहर खयर वि।
पंडुरदेवंगइं[7] वरणिवसणु कडयमउडमणिहारविहूसणु।
दंडाहयपडुपडहणिणाएं णच्चंतें सुरवरसंघाएं।

घत्ता—जिसका भुवनतल में सौभाग्य और यश विख्यात है, जो श्रेष्ठ अलंकारों से सहित और सरस है, ऐसी वह परमेश्वरी मुनियों के भी मन को हरण करती है, मानो श्रेष्ठ कवि के काव्य की गति हो।

(23)

मथुरा के राजा की धरती पर जाकर माधव ने उग्रसेन से प्रार्थना की—तुम्हारी हंसगति-गामिनी कन्या शोभाशाली नेमिनाथ के लिए दीजिए।

यह सुनकर कंस के चाचा राजा उग्रसेन ने गोविन्द के लिए वचन दिया—मेरे घर में जो जो नेत्रों को आनन्द देनेवाला है, जो जो सुन्दर है, हे माधव ! वह सब तुम्हारा है। शत्रुओं के महायुद्धों को जीतनेवाले हे कृष्ण ! कन्या से क्या ? और फिर अनेक पुण्यों से शोभित देवदेव जैसा दामाद कहीं मिल सकता है ? तब स्वर्णनिर्मित तथा पंचरंगे मणियों से विजड़ित मण्डप में स्वर्णकमल और केशर के रंगवाली कन्या के हाथ में, जय जय शब्द मंगल घोष एवं द्रव्यदान द्वारा विकल लोगों को सन्तोष-दान के साथ अँगूठी पहना दी। स्वामी के विवाह के अवसर पर मनुष्य, शशि, सूर्य, सुर-असुर, विषधर और विद्याधर आये। सफेद देवांग उत्तम वस्त्र, कटक, मुकुट और मणिहारों के भूषणों, दण्डों से आहत उत्तम नगाड़ों के शब्दों से नाचते हुए

5. P जइयइ°; K जयवय° । 6. AP °गब्भि । 7. P संपण्णी । 8. P रइमइ । 9. P तणि गई ।
(23) 1. AP पत्थिउ । 2. ABPS मरालगइगामिणि । 3. AP तुम्हारउ । 4. B °वयरि । 5. S देवदेवु । 6. B धुट्टु किर । 7. A देवंगंबर° ।

कामपाससंकासलयाभुय　　पहु परिणहुं[8] चल्लिउ पत्थिवसुय।
सुंदरेण सुहवत्तणरूढें　　ताम तेण मणिसिबियारूढें।
विरसोरसणसमुट्ठियकलयलु[9]　　वइवेढिउं अवलोइउं मिगउलु[10]।

घत्ता—अहिसेयधोयसुरमहिहरिण ता सहयरु पुच्छिउ जिणवरिण।
भणु भणु कंदंतइं भयगयइं किं रुद्धइं णाणामिगसयइं[11] ॥23॥

(24)

दुवई—ता भणियं णरेण पारद्धियदंडहयाइं काणणे।
एयइं तुह विवाहकज्जागयणिवपारद्धभोयणे[1] ॥छ॥

डरियइं धरियइं वाहसहासें　　देवदेव गोविंदाएसें।
आणियाइं सालणयणिमित्तें　　ता चिंतइ जिणु दिव्वें चित्तें।
जे भक्खंति मासु सारंगहं　　ते णर कहिं मिलंति सारंगहं।
खद्धउं जेहिं[2] पिसिउं मोराणउं　　तेहिं ण कियउं वयणु मोराणउं।
जंगलु जेहिं गसिउं[3] तित्तिरयहु　　ते पेच्छंति ण मुहुं तित्तिरयहु।
जेहिं जूहु विद्धंसिउ रउरउ　　ते पाविहहिं[4] णरउ णिरु रउरउ।
कवलिउ जेण देहिदेहामिसु[5]　　तहु खंडंति कालदूयामिसु।

देवसमूहों के साथ स्वामी कामपाश के समान लताभुज राजकन्या से विवाह करने के लिए चले। अपने शुभाचरण के लिए प्रसिद्ध, मणिमय पालकी में बैठे हुए सुन्दर कुमारनेमि ने विद्रूप चिल्लाने से जिसमें कोलाहल हो रहा है, ऐसे एक बाड़े में घिरा हुआ पशुसमूह देखा।

घत्ता—जिनके अभिषेक में सुमेर पर्वत धोया गया है, ऐसे जिनवर ने अपने सहचर से पूछा—"बताओ, बताओ; आक्रन्दन करते हुए भयभीत ये सैंकड़ों पशु यहाँ क्यों रोककर रखे गये हैं ?"

(24)

तब उसने कहा—"आपके विवाह-कार्य में आये हुए राजाओं के मांस भोजन के लिए शिकारियों के दण्डों से आहत ये यहाँ हैं। हे देवदेव ! गोविन्द के आदेश से हजारों व्याधों ने इन्हें डराकर पकड़ा है और साग बनाने के लिए यहाँ रखा गया है।"

तब जिन भगवान् अपने दिव्य चित्त में विचार करते हैं—जो मनुष्य सारंगों (पशुओं) का मांस खाते हैं, वे सारंग (उत्तम) शरीर कैसे पा सकते हैं ? जिन्होंने मयूरों का मांस खाया है, उन्होंने मेरा बचन नहीं माना। जिन्होंने तीतरों का मांस खाया है, वे तृप्ति युक्त सुरति का मुँह नहीं देख सकते। जिन्होंने मृगसमूह का ध्वंस किया है, वे निश्चय ही रौरव नरक प्राप्त करेंगे। जिन्होंने शरीरधारियों के मांस का भक्षण किया है, कालदूत उसके मांस का खण्डन करते हैं। जिसने हरिण के उस माँस को खाया, उसका दुःख ऋण की तरह

8. B परिचणहुं चलिउ। 9. ABP समुट्ठिउ। 10. S मृगउलु। 11. S मृगसयइं।
(24) 1. A °भूव°। 2. AP पिसिउ जेहिं; B जेण पिसिउं। 3. AP असिउं। 4. AP भुंजंति।

पालिउ कव्वु जेण तं हारिणु तहु दुक्खिकउ वड्ढइ[6] णं हा रिणु।
होइ अणंतदुक्खचिंतावइ जो पसुअट्ठिउं हुयवहि तावइ।
सो अट्ठियसंबंधु ण पावइ किं किज्जइ रायाणीपावइ।
जहिं मिगमारणु[7] भोज्जु णिउत्तउं तेण विवाहें महु पज्जत्तउं।
घत्ता—जइ इच्छहु[8] सासयपरमगइ तो खंचहु[9] परहणि[10] जंत[11] मइ।
महु मासु परंगण परिहरहु सिरिपुप्फयंतु[12] जिणु संभरहु ॥24॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जरसिंधणिहणणं[13] णाम
अट्ठासीतिमो[14] परिच्छेउ समत्तो ॥88॥

बढ़ता है। जो पशुओं की हड्डियों को आग में तपाता है, वह अनन्त दुःखों और चिन्ताओं का स्वामी होता है अथवा हड्डियों का सम्बन्ध ही नहीं पा पाता (गर्भ में ही विलीन हो जाता है) है। रानी की प्राप्ति से क्या, जहाँ पशुओं का मारण और भोज्य किया जाता है, वह विवाह मेरे लिए पर्याप्त है (व्यर्थ है)।

घत्ता—यदि तुम शाश्वत परमगति चाहते हो, तो दूसरे के धन में जाती हुई अपनी गति को रोको, मधु मांस और परस्त्री का त्याग करो और पुष्पदन्त जिनवर का ध्यान करो। त्रिभुवन के स्वामी नेमिनाथ को हरिण देखकर क्लेश हुआ और मन में करुणरस उत्पन्न हो गया।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण के महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित
और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का जरासन्ध के निधनवाला
अठासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥88॥

---

5. AP कोलउंडखंगिमसु। 6. A वड्ढइ। 7. S मिगमारणु। 8. B इच्छह। 9. BP खंचहु। 10. A परहण। 11. P जंते। 12. P °पुप्फदंतु। 13. A जरसंधणिव्वाणं।
14. S अट्ठासीतिमो।

एक्कूणणवदिमो संधि

जोइवि हरिणइं तिहुयणसामिहि[1]।
मणि करुणारसु जायउ णेमिहि ॥ध्रुवकं॥

(1)

दुवई—एक्कहु तित्ति[2] णिविसु अण्णेक्कु वि जहिं पाणिहिं[3] विमुच्चए।
तं भवविहुरकारि पलभोयणु महु सुंदरु ण रुच्चए ॥छ॥

संसारु घोरु चिंतंतु संतु गउ णियणिवासु एवं भणंतु।
णाणें परियाणिउं कज्जु[4] संचु णारायणकउ मायापवंचु।
रोहियससयूयरसंवराइं जिह धरियइं णाणावणयराइं।
अवियाणियपरमेसरगुणेण कुद्धेण रज्जलुद्धेण तेण।
णिव्वेयहु कारणि[5] दरसियाइं[6] रोवंतइं वेवंतइं थियाइं।
एएं जीएण असासएण किं होसइ परदेहें हएण।
झायंतु एम मउलियकरेहिं संबोहिउ सारस्सयसुरेहिं।
जय जीव देव भुयणयलभाणु पइं दिट्ठउ परु अप्पहं[7] समाणु।
तुहुं जीवदयालुउ[8] लोयबंधु लहु ढोयहि संजमभरहु[9] खंधु।
तुहुं रोसमुसाहिंसाबहित्थु जगि पयडहि बावीसमउं तित्थु।

नवासीवीं सन्धि

तीन लोक के स्वामी नेमिकुमार उन हिरणों को देखकर मन में करुणा-रस से पूरित हो गये।

(1)

जहाँ पलभर के लिए तृप्ति होती है, किन्तु अनेक को प्राणों से मुक्त होना पड़ता है, ऐसा संसार का दुःख देनेवाला मांसभोजन मुझे अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार घोर संसार का विचार करते हुए और यह सोचते हुए वे अपने निवास-स्थान के लिए गये। ज्ञान से उन्होंने सच्चा कारण जान लिया कि यह सब नारायण के द्वारा किया गया प्रपंच है। मछली, खरगोश, सुअर और साँभर तथा दूसरे नाना वनप्राणियों को, परमेश्वर के गुण को नहीं जाननेवाले क्रुद्ध राज्यलोभी उसने किस प्रकार पकड़वाया, और वैराग्य के कारण के लिए उन्हें रोते, काँपते, बैठे हुए दिखाया। इस अशाश्वत जीवन से और दूसरे के शरीर को आहत करने से क्या होगा ? वे जब इस प्रकार ध्यान कर रहे थे, तब हाथ जोड़े हुए लोकान्तिक देवों ने उन्हें सम्बोधित किया—"हे भुवनतल के भानु आपकी जय हो, हे देव आप जिएँ। आपने स्व-पर को समान समझा है। आप जीवदयालु और लोकबन्धु हैं। अब शीघ्र ही संयम का भार कन्धे पर उठाएँ। आप क्रोध, झूठ, हिंसा से बाहिर स्थित हैं और जग में बाईसवें के तीर्थंकर के रूप में प्रकट हुए हैं।

(1) 1. P तिहुवण°। 2. AP णिमिसतित्ति; P णिविस तित्ति; Als. णिमिसतित्ति। 3. AP पाणहिं; B पाणिहिं; S प्राणहिं। 4. B कज्ज°। 5. P कारण। 6. APS दरिसियाइं। 7. APS अप्पयसमाणु।

घत्ता—अमरयरुत्तइं[10] णिज्जियमारहु।
वयणइं लग्गइं णेमिकुमारहु ॥1॥

(2)

दुवई—तहिं अवसरि सुरसंदोहें सिंचिउ विमलजलधारिहिं।
वीणातंतिसद्दसंताणें[1] गाइउ[2] विविहणारिहिं ॥छ॥

उत्तरकुरुसिबियारूढदेहु णं गिरिसिहरासिउ कालमेहु।
सोहइ मोत्तियहारें[3] सिएण णहभाउ[4] व ताराविलसिएण।
रत्तुप्पलमालइ सोह देंतु णं जउणादहु[5] जणमलु[6] हरंतु।
ससिसेयसियवसोहासमेउ[7] णं अंजणमहिहरु तुहिणतेउ।
सिरि वलइयवरमउडेण[8] दित्तु णं सो ज्जि[9] रयणकूडेण जुत्तु।
पियवयणाउच्छियमित्तबंधु णिच्छिहु[10] सिढिलीकयपणयबंधु।
पडुपडहसंखकाहलसरेहिं[11] उच्चाइउ णरखयरामरेहिं।
तरुसाहासयढंकियपयंगु फलरसणिवडियणाणाविहंगु।
मंदारकुसुमरयपसरपिंगु[12] गुमुगुमुगुमंतपरिभमियभिंगु।

घत्ता—काम को जीतनेवाले नेमिकुमार को देवों द्वारा कहे गये ये वचन लग गये।

(2)

उस अवसर पर सुरसमूह के द्वारा विमलजलों से वह अभिषिक्त हुए। विविध नारियों द्वारा वीणातन्त्री की स्वर-परम्परा में उनका गान किया गया। उत्तरकुरु शिविका में आरूढ़ उनका शरीर ऐसा लगता था, मानो गिरिशिखर पर आश्रित कृष्णमेघ हो। वह श्वेत मुक्ताहार से इस प्रकार शोभित थे, मानो तारावलियों से विलसित आकाश-भाग हो। रक्तकमलों की माला से वह ऐसे शोभित थे, मानो जनमल को दूर करता हुआ यमुना सरोवर हो। शशि के समान श्वेत वस्त्रों की शोभा से सहित वह ऐसे लगते थे, मानो चन्द्रमा से युक्त अंजन पर्वत हो। सिर पर मुड़े हुए श्रेष्ठमुकुट से चमकते हुए ऐसे लगते थे, मानो वही (महीधर) अपने रत्नशिखर से युक्त हो। जिन्होंने प्रियवचनों से अपने बन्धुजनों से पूछ लिया है, ऐसे निःस्पृह तथा प्रणय सम्बन्ध को ढीला करनेवाले उन्हें धौंसा, नगाड़ा, शंख और ढोल के शब्दों के साथ मनुष्यों, विद्याधरों और देवों ने उठा लिया। जिसने वृक्षों की सैंकड़ों शाखाओं से सूर्य को ढक लिया है जहाँ फल के रसों पर नाना पक्षी आकर बैठते हैं, जो मंदार कुसुमों के रज-प्रसार से पीला है, जिसमें गुनगुनाते हुए भ्रमर घूम रहे हैं, जो अशोक वृक्ष के चंचल दलसमूह से आताम्र है और जिसमें कदम्बवृक्ष खिला हुआ है, ऐसे सहस्राम्र वन में जिनवर

---

8. B °थालुवु। 9. S °भरहं। 10. S अमरु।

(2) 1. APS °संताणाहिं। 2. BK गायउ। 3. P °हारिए। 4. B °भावउ। 5. S °द्रहु। 6. P जणमणु; S जणमलु। 7. A °सियय°; B °वत्थ for सियय°; S °पंगेथय°। 8. AB विग्गइय°। 9. S ज्ज for ज्जि। 10. B णिच्छिह। 11. B °काहलरवेहिं। 12. B °कुंदरय°।

कंकेल्लिलुलियदलवलयतंबु[13] सहसंबयवणु फुल्लियकयंबु[14]।
गउ सइं परिलुंचिउ[15] केसभारु पडिवण्णउ दड्ढु जिणवइविहारु।
तरुणीयणु बोल्लइ रोवमाणु हा हा अत्थमियउ[16] कुसुमबाणु।
उप्पण्णहु एयहु ववगयाइं हलि माइ तिण्णि वरिसहं सयाइं।
सिवणंदणु अज्जि[17] वि सुट्ठु[18] बालु रिसिधम्महु एहु ण होइ कालु।

घत्ता—एण विमुक्किया रायमई सई।
महुराहिवसुया[19] किह जीवेसई ॥2॥

(3)

दुवई—चामरधवलछत्तसीहासणधरणिधणाइं[1] पेच्छहे[2]।
णिरु[3] जरतणसमाइं मणि मण्णिवि थिउ मुणिमग्गि दूसहे ॥छ॥

जिणु जम्में सहुं उप्पण्णबोहि हलि वण्णइ को एयहु समाहि।
सावणपवेसि ससिकिरणभासि अवरण्हइ छट्ठइ दिणि पयासि।
चित्ताणक्खत्तइ चित्तु धरिवि छट्ठोववासु णिब्भंतु करिवि।
सहुं रायसहासें हासहारि जायउ जहुत्तचारित्तधारि।
माणवमणमइलणधंतभाणु संजमसंपण्णचउत्थणाणु[4]।
अच्चंतवीरतवतावतविउ[5] बलएववासुएवेहिं[6] णविउ।
पिंडहु कारणि णिग्गइ णिरुट्ठु अण्णहिं दिणि दारावइ पइट्ठु।

गये। स्वयं उन्होंने अपना केशभार उखाड़ लिया और दृढ़ता के साथ जिनपति के विहार को स्वीकार कर लिया। रोती हुई तरुणियाँ कहती हैं—हा हा !! कामदेव का अस्त हो गया है। हे माँ ! अभी इन्हें जन्म लिये हुए कुल तीन सौ वर्ष बीते हैं, शिवा का पुत्र आज भी बालक है, मुनिधर्म स्वीकार करने का उनका यह समय नहीं है।

घत्ता—इन्होंने राजमती सखी को छोड़ दिया है। मथुरापति की वह राजपुत्री अब किस प्रकार जीवित रहेगी ?

(3)

वह चमर, धवल छत्र, सिंहासन, धरती और धनादि को मन में जीर्ण तिनके के समान समझकर दुःसह मुनिमार्ग में स्थित हो गये। जिन को जन्म के समय से ही ज्ञान प्राप्त था। हे सखी ! उनकी समाधि का वर्णन कौन कर सकता है ? चन्द्रकिरण से प्रकाशित (शुक्लपक्ष में) सावन माह का प्रवेश होने पर छठे दिन अपराह्न में चित्रा नक्षत्र में अपने चित्त को (अपने में) धारण कर निर्भ्रान्त तीन दिन का उपवास (तेला) कर, हास का हरण कर, एक हजार राजाओं के साथ, वह यथोक्त चारित्र को धारण करनेवाले बन गये। (जिन्होंने दीक्षा ग्रहण कर ली) मानव-मन के मैलरूपी ध्वान्त के लिए सूर्य के समान, तथा संयम से सम्पन्न चतुर्थ ज्ञान प्राप्त कर, अत्यन्त वीर तप का तपश्चरण कर, बलभद्र और वासुदेव द्वारा प्रणम्य, शरीर के लिए

13. B °वयल° । 14. S °कलंबु । 15. ABPS आलुंचिउ । 16. B अत्थिमियउ । 17. B अज्ज । 18. B सुद्धु । 19. B उग्गसेणसुअ in second hand.
(3) 1. B °सिंहासण° । 2. B पिच्छहो । 3. B णिच्छउ जरतणाई मणि मण्णिवि । 4. A °संपत्त°; B °संपुण्ण° । 5. A °धीर°; B °धीरु° । 6. B °वासुएवहिं ।

वरयत्तणरिंदहु भवणि थक्कु णं अब्भब्भंतरि[7] भासुरक्कु।
परमेट्ठिहि णवविहपुण्णठाणु तहु दिण्णउं तेणाहारदाणु।
माणिक्कविट्ठि[8] णवकुसुमवासु गंधोअयवरिसणु[9] देवघोसु।
दुंदुहिणिणाउ जिणु जिमिउ जेत्थु जायाइं पंच चोज्जाइं तेत्थु।
माहवपुरि[10] मेल्लिवि जंतु जंतु पासुयपएसि[11] पय देंतु देंतु।
छप्पण्ण दियह[12] हयमोहजालु वोलीणहु तहु छम्मत्थकालु।

घत्ता—कुसुमियमहिरुहइं हिंडियसावयं।
पत्तो जइवई[13] [14]रेवयपावयं[15] ॥3॥

(4)

दुवई—पविउलवेणुमूलि आसीणउ जाणियजीवमग्गणो।
तवचरणुग्गखग्गधाराहयदुद्धरकुसुममग्गणो[1] ॥छ॥

परियाणिवि[2] चलु संसारु विरसु रसगिद्धिलुद्धु णिज्जिणिवि[3] सरसु।
परियाणिवि धुउ[4] परमत्थरूउ[5] आसत्तु रूवि णिज्जियउं रूउ।
परियाणिवि सुहुं परियलियसद्दु जोईसरेण णियमियउ सद्दु।
परियाणिवि मोक्खु विमुक्कगंधु एक्कु वि ण समिच्छिउ तेण गंधु।

(आहार लेने निमित्त) निष्ठापन करते हेतु वे (नेमीश्वर) दूसरे दिन द्वारावती में प्रविष्ट हुए। वे राजा वरदत्त के भवन में ठहर गये, मानो बादलों के भीतर चमकता हुआ सूरज छिप गया हो। उस राजा ने नौ प्रकार के पुण्य स्थान परमेष्ठी नेमीश्वर को आहार दिया। वहाँ रत्नों की वर्षा, नवकुसुमों की गन्ध, गन्धोदक की वर्षा, देवघोष और दुंदुभि-निनाद ये पाँच आश्चर्य हुए जहाँ जिननाथ ने आहार किया। द्वारावती को छोड़कर, जाते-जाते और पड़ौसी प्रदेश में पैर रखते हुए, मोहजाल को नष्ट कर, छद्मस्थ काल के छप्पन दिवस बिताकर,

घत्ता—जब वह यतिवर, जहाँ खिले हुए वृक्ष हैं और जंगली पशु विचरते हैं, ऐसे रैवत पर्वत पर पहुँचे।

(4)

जीव की मार्गणाओं को जाननेवाले तथा तपश्चरण की उग्र खड्ग-धार से दुर्धर कामदेव को आहत करनेवाले, विशाल वेणुवृक्ष में मूल में बैठे हुए उन्होंने चंचल संसार को विरस जानकर, रसों के लालच में लुब्ध अपनी रसना इन्द्रिय को जीतकर, शाश्वत परमार्थरूप को जानकर, रूप में आसक्त रूप को जीत लिया (नेत्रेन्द्रिय को जीत लिया), सुख को क्षीण शब्द वाला जानकर ज्योतीश्वर ने शब्द को (कर्णेन्द्रिय के विषय को) जीत लिया। मोक्ष को विमुक्तगन्ध जानकर उन्होंने एक भी गन्ध को पसन्द नहीं किया (घ्राण को जीत लिया)।

---

7. A णं अब्भंतरि भाभासुरक्कु। 8. B °वुट्ठि। 9. B गंधोवय°; P गंधोयपवरिसणु। 10. P °पुरे। 11. B °पदेसे। 12. B °दियहइं हउ। 13. AB जयवई। 14. B °रेवइ°। 15. P °पव्वयं।

(4) 1. B Als °धरणग°। 2. P परियाणेविणु संसारु। 3. AS णिज्जियउ; P णिज्जिउ। 4. S धुवु। 5. S °रूवु।

परियाणिवि सिद्धहं णत्थि फासु णिज्जिउ णेमिं[6] वसुविहु[7] वि फासु।
अवइण्णियाहि सिसुचंदसियहि आसोयमासि पाडिवयदियहि[8]।
णक्खत्ति[a] चारुचित्ताहिहाणि पुव्वण्हयालि पयलंतमाणि।
गुणभूमितुंगि तिहुयणपहाणि[9] चडियउ तेरहमइ साहु ठाणि।
उप्पण्णउ केवलु दलियदप्पि उट्ठिय[10] घंटारव[11] कप्पि कप्पि।

घत्ता—चल्लियं[12] आसणं हरिसुप्पिल्लिओ।
जिणसंथुइमणो[13] इंदो चल्लिओ ॥4॥

(5)

दुवई—बहुमुहि बहुयदंति[1] बहुसवदलपत्तपणच्चियच्छरे।
आरूढउ[2] करिंदि अइरावइ[3] विलुलियकण्णचामरे ॥छ॥

दंडउ—विणयपणयसीसो सुरेसो गओ वंदिउं[4] देवदेवो अताओ[5] असाओ[6]
महाणीलजीमूयवण्णो पसण्णो ॥1॥

गणहरसुरवंदो अमंदो अणिंदो जिणिंदो मइंदासणत्थो[7] महत्थो पसत्थो
असत्थो[8] समत्थो सगत्थो अवत्थो विसत्थो ॥2॥

वियलियरयभारो गहीरो सुवीरो[9] उयारो अमारो[10] अछेओ अभेओ
अमेओ अमाओ अरोओ असोओ अजम्मो ॥3॥

यह जानकर कि सिद्धों में स्पर्श नहीं होता, नेमिनाथ ने आठ प्रकार के स्पर्शों को जीत लिया। शिशुचन्द्र से श्वेत आसौज माह के आने पर कृष्णपक्ष की प्रतिपदा के दिन सुन्दर चित्रा नक्षत्र में पूर्वाह्न काल बीतने पर, गुणस्थानभूमियों में श्रेष्ठ, त्रिभुवन में प्रधान, तेरहवें गुणस्थान में वह महामुनि आरूढ़ हो गये। उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। स्वर्ग में दर्प का दलन करनेवाली घण्टाध्वनि होने लगी।

घत्ता—आसन हिलने लगा। हर्ष से प्रेरित हो जिन भगवान् की स्तुति का मन रचनेवाला इन्द्र चल पड़ा।

(5)

जिसके दन्तरूपी अनेक कमलपत्रों पर अप्सराएँ नाच रही हैं, जिसके कानरूपी चमर हिल रहे हैं, ऐसे अनेक मुखों और दाँतोंवाले ऐरावत महागज पर इन्द्र आरूढ़ हो गया। विनय से प्रणतसिर देवेन्द्र गया और उसने देवदेव की वन्दना की—हे अताप, अशाप, मेघ के समान वर्णवाले, प्रसन्न, गणधरों और देवों के द्वारा वन्दनीय, अमन्द, अनिन्द्य, जिनेन्द्र, सिंहासनस्थ, महार्थ, प्रशस्त, अशस्त्र, अवस्त्र और विशस्त्र;

रजोभार से रहित, गम्भीर, सुवीर, उदार, कामरहित, अछेद्य और अभेद्य, अमापी, अरोग, अशोक और

---

6. BP णेमें। 7. A वसुविहि। 8. A पडिवइय°। 9. B तिहुवण°। 10. S उट्ठिउ। 11. BS घंटारबु। 12. AS चलियं। 13. A °संथुउ मणे।

(5) 1. P बहुभुयदंते। 2. A आरूढ करिंदि। 3. P अइरावण। 4. P वंदिओ। 5. PS अतावो। 6. PS असावो। 7. P मईदासण°। 8. A समत्थो असत्थो; P समग्गो समत्थो। 9. ABS सुधीरो। 10. P अमायो।

विसहरधरसंरुद्धणाणादुवारंतरो[11] पंडुडिंरपिंडुज्जलुद्दामभाभूरिणा
चामरोहेण जक्खेहिं विज्जिज्जमाणो । 4 ।
अमरकरविमुच्चंतपुप्फंजलीगंधलुद्धालिसामंगणो
[12]देवसानंगणच्चणारद्धगेयज्झुणीदिण्णतोसो[13] । 5 ।
सयलजणपिओ[14] धम्मवासो सुभासो हयासो अरोसो अदोसो सुलेसो
सुवेसो सुणासीरईसो ससीरीसिरीसंथुओ । 6 ।
सुरवरतरुसाहासुराहासमिल्लो जयंको जणाणं पहाणो
जरासंधरायारिभीसावहो भिण्णमायाकयंको । 7 ।
पविउलपरभामंडलुब्भूयदित्ती[15] विहिज्जंतघोरंधयारो विराओ
विरेहंतछत्तत्तओ पत्तसंसारपारो । 8 ।
अमरकरणिहम्मंतभेरीरवाहूयतेलोक्कलोयाहिरामो सुधामो[15] सुणामो
अधामो अपेम्मो सुसोम्मो[16] । 9 ।
कलिमलपरिवज्जिओ पुज्जिओ भावणिंदेहिं चंदेहिं कप्पामरिंदाहमिंदेहिं
णो णिज्जिओ भीमपंचिंदियत्थेहिं[17] णिग्गंथपंथस्स णेयारओ । 10 ।
[18]कलसकुलिससंखंकुसंभोयसयलिंदवत्तीधरित्तीधरामहातीरिणीलक्खणालंकिओ[19]
वंकभावेण मुक्को रिसी अज्जवो[16] उज्जुओ सिट्ठतच्चो सुसच्चो । 11 ।

अजन्मा विषधरों के नाना कठोर आक्रमणों को रोकनेवाले सफेद फेन समूह के समान उज्ज्वल और उत्कट क्रान्ति से प्रचुर चमर समूह से यक्षिणियों द्वारा हवा किये जाते हुए, देवों की हस्तमुक्त पुष्पांजलियों की गन्ध पर लुब्ध होनेवाले भ्रमरों के समान श्याम अंगोंवाले, देवों द्वारा श्रीकृष्ण के आँगन में नृत्य के अवसर पर प्रारब्ध गेयध्वनि से सन्तोष देनेवाले, समस्त जनों के लिए प्रिय, धर्म के निवास, सुभाषी, हताश, अरोष, सुलेश्य, सुवेश, इन्द्रेश और बलभद्र सहित श्रीकृष्ण के द्वारा संस्तुत;

कल्पवृक्षों की शाखाओं की सुन्दर शोभा से सहित, जय से अंकित, जनों में प्रधान, जरासन्ध रूपी शत्रु के लिए अत्यन्त भीषण, माया को दूर करनेवाले यश से अंकित;

विशाल एवं श्रेष्ठ भामण्डलों से उत्पन्न दीप्तिवाले, घोर अन्धकार को नष्ट करनेवाले, विरागी, तीन छत्रों से शोभित और संसार-पार को पा जानेवाले (उसका अन्त करनेवाले);

देवों के हाथों से आहत भेरियों के शब्दों से बुलाये गये, त्रिलोक में सुन्दर, सुधाम, सुनाम, अधाम, अप्रेम और सुसौम्य;

कलिमल से रहित जो कल्पवासी देवों और अहमेन्द्रों द्वारा पूज्य हैं तथा जो भयंकर इन्द्रियों के द्वारा नहीं जीते जा सके, ऐसे निर्ग्रन्थ पथ के नेता हैं;

कलश, वज्र, शंख, कुश, कमल मेरुयुक्त धरती, पताका और महानदी के लक्षणों से अंकित, कुटिलता के भाव से मुक्त, ऋषि, वचन और शरीर से सरल; तत्त्वों का कथन करनेवाले और सत्यशील ।11।

---

11. AP "वर" for धर" । 12. P दिव्व" । 13. S "जणपीओ । 14. P पविउलपभामंडल" । 15. AB सधम्मो सुधुव्वंतणामो अवामो । 16. AP सुलम्मो ।
17. PS "पंचेंदिय" । 18. Als. "सइलिंदवंती"; P "सइलिंददंती" । 19. BS धरत्ती । 20. P अज्जुवो ।

जणमणगयसंसयाणं कयंतो महंतो अणंतो कणंताण ताणेण हीणाण
दुक्खेण रीणाण बंधू जिणो कम्मवाहीण वेज्जो। 12।
घत्ता—सुरवरवंदिओ महसु महाहियं।
सिवएवीसुओ देवो[21] माहियं[22] ॥5॥

(6)

दुवइ—णिम्मलणाणवंत[1] सम्मत्तवियक्खण चरियमणहरा[2]।
वरदत्ताइ[3] तासु एयारह जाया पवर गणहरा ॥छ॥
साहुहुं सव्वह[4] संपयरयाइं जहिं पुव्ववियड्ढहं चउसयाइं।
पासुयभिक्खासणभिक्खुयाहं एयारहसहसइं[5] सिक्खुयाहं।
परिगणियइं अट्ठसयाहियाइं अप्पत्थि[6] परत्थि सया हियाइं।
पण्णारह सय अवहीहराहं[7] केवलिहिं मि जाणियसंवराहं।
संसोहियवम्महसरवणाहं एयारह सय[8] सविउव्वणाहं।
मणपज्जयणाणिहिं जहिं पयासु एक्कें सएण ऊणउं सहासु।
परवयणविणासविराइयाहं वसुसमइं सयाइं विवाइयाहं।
चालीससहासइं संजईहिं जहिं एक्कु लक्खु मंदिरजईहिं।

जनमनों में रहनेवाले, संशयों के निवारक (निकाल देनेवाले), महान्, अनन्त और कृतान्त, उनसे हीन और दुःखों से क्षीण, लोगों के लिए बन्धु और कर्मरूपी व्याधि के लिए जिनदेव वैद्य हैं।

घत्ता—जो सुरवरों के द्वारा वन्दित, शिवदेवी के सुत और देव हैं, महाहितकारी उन्हें ज्ञान-लक्ष्मी के लिए तुम पूजो।

(6)

निर्मल ज्ञानवाले सम्यक्त्व से विलक्षण और चारित्र में जो सुन्दर हैं, ऐसे वरदत्त आदि उनके ग्यारह गणधर उत्पन्न हुए। उनके समवसरण में समस्त साधुओं में पूर्णरूप से पण्डित तथा रत्नत्रय सम्पन्न चार सौ साधु थे। प्रासुक भिक्षा का भोजन करनेवाले, आत्महित और परहित में सदा तत्पर रहनेवाले ग्यारह हजार आठ सौ शिक्षक थे। अवधीश्वर मुनि पन्द्रह सौ थे। संवर के जाननेवाले और कामदेव के बाणों का संशोधन करनेवाले केवलज्ञानी भी पन्द्रह सौ थे। विक्रिया ऋद्धि के धारक ग्यारह सौ तथा मनःपर्यय ज्ञान के धारक नौ सौ (सौ कम एक हजार) थे। दूसरों के वचनों के खण्डन से शोभित वादी मुनि आठ सौ चालीस हजार आर्यिकाएँ थीं। वहाँ पर मन्दिर जानेवाले श्रावक एक लाख थे। जिनमें व्रत-पालन का प्रेम वृद्धिंगत है, ऐसी तीन लाख

---

21. BP देउ। 22. AP समाहियं।

(6) 1. B °णाणवंत। 2. B Als. चरियधणहरा; S चरियधण मणहरा 3. B वरयत्ताइ। 4. A सव्वहं संजयरयाइं; P सुव्वयसंजयरयाइं। 5. S °सहइं। 6. P omits this foot. 7. B अवहीसराहं। 8. ABKS सहस विउव्वणाहं; B has ह for य in second hand

परिवड्ढियवयपालणरईहिं लक्खाइं तिण्णि वरसावईहिं।
संखाय तिरिय सुरवर असंख वज्जंति[9] पडह मद्दल असंख[10]।
जहिं पइसइ लोउ असेसु सरणु तहिं किं वण्णिज्जइ समवसरणु।
[11]घत्ता जियकूरारिणा वसुमइहारिणा।
णेमी[12] सीरिणा णविवि मुरारिणा ॥6॥

(7)

दुवई—धम्मधम्मकम्मगइपुग्गलकालायासणामहं।
पुच्छिउ किं पमाणु[1] परमागमि चउदहभूयगामहं[2] ॥छ॥
किं खणविणासि किं णिच्चु एक्कु किं देहत्थु वि कम्मेण मुक्कु।
किं णिच्चेयणु चेयणसरूउ किं चउभूयहं संजोयभूउ[3]।
किं णिग्गुणु णिक्कलु णिव्वियारि किं कम्महं कारउ किं अकारि।
ईसरवसेण किं रयवसेण संसरइ देव संसारि केण।
परमाणुमेत्तु किं सव्वगामि अप्पउ केहउ भणु भुवणसामि।
तं णिसुणिवि णेमीसरिण[4] वुत्तु जइ खणविणासि[5] अप्पउ णिरुत्तु।
तो किं जाणइ णिहियउं णिहाणु वरिसहं सए वि णिहिदव्वठाणु[6]।

श्रेष्ठ श्राविकाएँ थीं। संख्यात तिर्यंच एवं असंख्य सुरवर थे। असंख्य नगाड़े और मृदंग बज रहे थे। जहाँ सम्पूर्ण लोक आश्रय लेता है, उस समवसरण का क्या वर्णन किया जाए ?

घत्ता—दुष्ट शत्रु को जीतनेवाले, पृथ्वी का हरण करनेवाले बलभद्र और कृष्ण ने नेमिनाथ को प्रणाम कर पूछा—

(7)

धर्म, अधर्म, कर्म, गति, पुद्गल, काल, आकाश नामक द्रव्यों तथा चौदह भूतग्रामों (लोकों) का परमागम में क्या प्रमाण है ? क्या क्षणभंगुर है ? क्या नित्य है ? कौन देहस्थ होते हुए भी कर्ममुक्त हैं ? अवचेतन क्या है ? या इनका चेतन स्वरूप क्या है ? चार महाभूतों का संयोगरूप क्या है ? निर्गुण, निष्पाप और निर्विकार क्या हैं ? क्या वह कर्मों का कारक है या अकारक है ? ईश्वर के वशीभूत होने से या कर्म के कारण, किस कारण हे देव ! जीव संसार में भ्रमण करता है ? वह क्या परमाणु मात्र है अथवा क्या सर्वगामी है ? हे भुवनस्वामी ! बताइए, आत्मा का स्वरूप क्या है ?

यह सुनकर नेमीश्वर ने कहा—यदि निश्चय से आत्मा क्षणभंगुर है, तो वह रखे हुए धन को सौ वर्षों के बाद भी उसके स्थान को कैसे जान लेती है ? यदि वह नित्य है, तो उत्पत्ति और मृत्यु को कैसे जान

9. S वज्जंत। 10. P असंख। 11. S omits घत्ता lines. 12. BK णेमि।
(7) 1. A किं पि माणु। 2. APS चोद्दह°। 3. PS संजोए हूउ। 4. APS णेमीसेण। 5. A खणि विणासि। 6. APS णियदव्व°।

णिच्चहु किर[7] कहिं उप्पत्ति मच्चु जंपइ जणु रइलंपडु असच्चु।
जइ एक्कु जि तइ को सग्गि[8] सोक्खु[9] अणुहुंजइ णरइ महंतु दुक्खु।
जइ भूयवियारु भणंति भाउ ... तो किर[10] किं लब्भइ मइविहाउ।
णिक्किरियहु कहिं करणइं हवंति[11] कहिं पयइबंधु[12] जुत्ति वि थवंति।
जइ सिववसु हिंडइ भूयसत्थु तो कम्मकंडु[13] सयलु वि णिरत्थु।

घत्ता—जइ अणुमेत्तउ जीवो एहउ।
तो सज्जीवउ किह करिदेहउ ॥7॥

(8)

दुवई—जीवु[1] अणाइणिहणु गुणवंतउ सुहुमु सकम्मकारओ।
भोत्तउ गत्तमेत्तु रयचत्तउ उड्ढगई भडारओ ॥छ॥

इय वयणइं सवणसुहासियाइं आयण्णिवि जिणवरभासियाइं।
बलएवें गुणहरिसियमणेण सम्मत्तु[2] लइउ णारायणेण।
अरहंतहु केरी परम सिक्ख अवरेहिं लइय[3] णिग्गंथदिक्ख।
अवरेहिं चारुसावयवयाइं णिव्वूढइं परिपालियदयाइं।
एत्थंतरि सुरगयवरगईइ वरदत्तु पपुच्छिउ[4] देवईइ।

लेती है ? रति के लम्पट लोग असत्य कथन करते हैं। यदि आत्मा एक है, तो स्वर्ग में सुख का अनुभव और नरक में दुःख का अनुभव कौन करता है ? यदि यह कहा जाये कि 'चेतना' भूतों (चार महाभूतों) का विकार है, तो फिर उनमें बुद्धि का विभाजन कैसे होता है ? निष्क्रिय है तो इन्द्रियाँ किस प्रकार होती हैं ? फिर, प्रकृतिबन्ध की युक्ति किस प्रकार सिद्ध होती है ? यदि भूतसमूह शिव के अधीन होकर घूमता है, तो समूचा कर्मकाण्ड व्यर्थ है ?

घत्ता—यदि यह जीव अणुमात्र है, तो हाथी का समूचा शरीर सचेतन कैसे है ?

(8)

जीव अनादि निधन है, गुणवान है, सूक्ष्म है, अपने कर्म का कारक है। भोक्ता, शरीर परिणामी और कर्मरज से रहित होने पर ऊर्ध्वगतिवाला है।

कानों को सुखद लगनेवाले जिनवर के द्वारा कहे गये इन शब्दों को सुनकर गुणों से हर्षितमन बलभद्र और नारायण ने सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया तथा दूसरे (बलभद्र) ने अरहन्त की परमशिक्षा जिनदीक्षा ग्रहण कर ली। दूसरे ने दया का परिपालन करनेवाले सुन्दर श्रावक-व्रतों को ग्रहण किया। इसी बीच ऐरावत के समान गति लीलावाली देवकी ने गणधर वरदत्त से पूछा—संयमशील से सुशोभित तथा चर्यामार्ग से आये

7. APS कहिं किर। 8. S सग्गसोक्खु। 9. P सक्खु। 10. APS किर कहिं। 11. P वहंति। 12. A °बंधजुत्ति। 13. A कम्मकंदु।
(8) 1. APS जीउ। 2. B समत्तु लयउ। 3. B लयइय। 4. AP वि पुच्छिउ।

संजमसीलेण सुहाइयाइं चरियामग्गें घरु[5] आइयाइं।
जइजुयलइं तिण्णि पलोइयाइं महु णयणइं णेहें छाइयाइं।
किं किर कारणु पणयाणुराइ ता भणइ भडारउ णिसुणि माइ।
पिहुजंबुदीवि इह भरहखेत्ति महुराउरि जिणवरघरपवित्ति।
सपयावपरज्जियवइरिसेणु णरवइ तहिं णिवसइ सूरसेणु।
तेत्थु जि पुरि वणिवइ भाणुदत्तु[6] जउणायत्तासइरइहि[7] रत्तु।
तहु[8] पढमपुत्तु णामें सुभाणु पुणु भाणुकित्ति पुणु अवरु भाणु।
पुणु भाणुसेणु पुणु सूरदेउ पुणु सूरदत्तु पुणु सूरकेउ।

घत्ता—तेत्थु महारिसी समजलसायरो।
जियपंचेंदिओ णाणदिवायरो ॥8॥

(9)

दुवई—पणविवि अभयणंदि णरणाहें णिसुणिवि धम्मसासणं।
मुइवि सियायवत्तचलचामरमेइणिहरिविरासणं[1] ॥छ॥

णरवरसाहियसग्गापवग्गि लइयउं मुणित्तु[2] जइणिंदमग्गि।
वणिणाहु वि तवसिरिभूसियंगु थिउ तेण समउ णिम्मुक्कसंगु।
जउणादत्तइ वणि फुल्लणीवि वउ[3] लइयउं जिणदत्तासमीवि।
ते पुत्त सत्त वसणाहिहूय सत्त वि दुद्धर णं कालदूय।

हुए तीन यति युगलों को मैंने देखा और मेरे नेत्र स्नेह से छा गये। इस प्रणयानुराग का क्या कारण है ? यह सुनकर आदरणीय गणधर कहते हैं—हे माता ! सुनो। विशाल जम्बूद्वीप के इस भरतक्षेत्र में जिनमन्दिरों से पवित्र मथुरा नगरी में अपने प्रताप से शत्रुसेना को पराजित करनेवाला सूरसेन नाम का राजा निवास करता था। उसी नगरी में भानुदत्त नाम का सेठ था, जो अपनी पत्नी सती यमुनादत्ता के प्रेम में अनुरक्त था। उसके प्रथम पुत्र का नाम सुभानु था, फिर भानुकीर्ति, भानु, फिर भानुसेन, फिर सूरदेव, सूरदत्त, फिर सूरकेतु था।

घत्ता—वहाँ समता-जल के समुद्र, जितेन्द्रिय और ज्ञान-दिवाकर महामुनि—

(9)

अभयनन्दी को प्रणाम कर और धर्म का अनुशासन सुन राजा ने सफेद छत्र, चंचल चमर, भूमि और सिंहासन छोड़कर, जो स्वर्ग और मोक्ष को साधनेवाले राजाओं द्वारा साधा गया है, ऐसे जैनमार्ग में दीक्षा ग्रहण कर ली। जिसका शरीर तपश्री से भूषित है, ऐसा परिग्रह से रहित सेठ भी उसके साथ हो लिया। यमुनादत्ता ने भी वन में खिले हुए कदम्ब वृक्ष के नीचे जिनदत्ता आर्या के निकट व्रत ग्रहण कर लिया। वे सातों ही पुत्र व्यसनों के वशीभूत (अभिभूत) हो गये। सातों ही कठोर मानो यमदूत थे। राजा ने उन्हें

---

5. S तहिं आइयाइं। 6. PS भाणुयत्तु। 7. AP °दत्तासइरत्तचित्तु। 8. S तहे।
(9) 1. B सयायवत्त°। 2. P मुणिवउ। 3. B वउ।

णिद्धाडिय राएं पुरवराउ मयपरवस णं करिवर सराउ।
ते[4] गय अवंति णामेण देसु उज्जेणिणयरु मणहरपएसु[5]।
तहिं संपत्ता रयणिहि मसाणु जुज्झंतकुद्धसिवसाणठाणु।
संणिहिउ तेत्थु सो सूरकेउ अवर वि पइट्ठ पुरु धवलकेउ[6]।
तहिं चोर किं पि चोरंति जाम अण्णेक्कु कहंतरु होइ[7] ताम।
पुरपहु वसहद्धउ तासियारि सहसभडु भिच्चु तहु दढपहारि।
वप्पसिरि घरिणि सिसुहरिणिदिट्ठि तहि तणुरुहु णामें वज्जमुट्ठि।

घत्ता—विमलतणूरुहा रइरसवाहिणी।
णामें मंगिया तहु पियगेहिणी।।9।।

(10)

दुवई—तें[1] सहुं पत्थिवेण महुसमयदिणागमणि वणं गया।
जा कीलंति किं पि सव्वाइं वि ता पिसुणा सुणिद्दया।।छ।।

आरुट्ठ दुट्ठ वरइत्तमाय मुहि णिग्गय णउ कडुययर[2] वाय।
सुकुसुममालइ सहुं अइमहंतु घडि घित्तु सप्पु फुक्कार[3] देंतु।
ससिमुहि छउओयरि[4] मज्झखाम संपत्त सुण्ह णवपुप्फकाम।
आलिंगिय कोमलयरभुयाइ मणु[5] जाणिवि बोल्लिउं सासुयाइ।

नगर से निकाल दिया, मानो तालाब से मतवाले हाथी को निकाल दिया हो। वे अवन्ती नाम के देश में चले गये। उत्तम प्रदेश उज्जैन नगरी में पहुँचे। वहाँ वे रात में, जो क्रुद्ध सियारों और कुत्तों के युद्ध का स्थान है, ऐसे मरघट में पहुँचे। सूरकेतु वहीं जाता है। दूसरे भी धवल पताकाओं वाले नगर में प्रवेश करते हैं। जब तक वे वहाँ कुछ चोरी करें, तब तक वहाँ एक और कथा घट जाती है। शत्रुओं को त्रस्त करनेवाला नगरराजा वृषभध्वज था। उसका दृढ़प्रहार नाम का सहस्रभट अनुचर था। उसकी शिशुहरिणी के समान नेत्रवाली वपुश्री नाम की पत्नी थी। उसका पुत्र वज्रमुष्टि था।

घत्ता—विमल की पुत्री, रतिरस की नदी मंगिया नाम की उसकी गृहिणी थी।

(10)

वसन्त के दिनों के आगमन पर, उस राजा के साथ वे लोग वन गये। जब वे वहाँ क्रीड़ा कर रहे थे, तभी क्रूर, दुष्ट और निर्दय वप्रश्री (वरदत्त की माँ, मंगिया की सास) क्रुद्ध हो उठी। उसके मुँह से कड़वी बात भर नहीं निकली, लेकिन पुष्पमाला के साथ उसने अत्यन्त लम्बा फुफकारता हुआ साँप घड़े में रख दिया। चन्द्रमुखी, कृशोदरी, मध्यक्षीण, नवपुष्प की इच्छा रखनेवाली बहू उसके पास आयी। सास ने अपनी

---

4. APS गय ते। 5. S °पवेसु। 6. B धयकेउ। 7. हुक्कु ताम।
(10) 1. ABP ते सह। 2. B कडुइययरु; P कडुअयर। 3. A फुंकारु। 4. B खामोअरि; P तुच्छोयरि। 5. A °जाणेविणु बोल्लिउं।

तुह जोग्गी चलमहुयररबाल मइं णिहिय कलसि वरपुप्फमाल।
अमुणंतिइ गइ असुहारिणीहि पच्छण्णविरुद्धहि वइरिणीहि।
बालाइ[6] कुंभि करयलु णिहित्तु उद्धाइउ फणि चलु[7] रत्तणेत्तु।
हा हा करंति[8] सा खद्ध तेण णिवडिय महियलि मुच्छिय विसेण।
तणवेंढइ[9] बेढिवि पिहियणयण गयकायतेय मउलंतवयण।
पेसुण्णसलिलसंगहसरीइ घल्लिय पिउवणि पइंमायरीइ।

घत्ता—तावाओ[10] पिओ भणइ सुसंगिया।
कहिं सामंगिया अव्वो मंगिया ॥10॥

(11)

दुवई—कहियं अंबियाइ विसहरदाढागरलेण घाइया।
पुत्तय तुज्झ[1] घरिणि[2] खयकालमुहे विहिणा णिवाइया[3] ॥छ॥

अम्हेहिं मोहरसपरवसेहिं दड्ढी ण जीवियासावसेहिं।
घल्लिय कत्थइ दुग्गंतरालि पेयग्गिजालमालाकरालि।
ता चल्लिउ सो संगरसमत्थु उक्खायतिक्खकरवालहत्थु[4]।
हा[5] हे सुंदरि परिसोयमाणु परिभमइ पेयमहि[6] जोवमाणु[7]।

कोमल भुजाओं से उसका आलिंगन किया और उसका मन जानकर बोली—चंचल भ्रमरों के शब्दों से युक्त उत्तम पुष्पों की माला मैंने कलश में रख दी है।

प्राणों का हरण करनेवाली, प्रच्छन्न रूप से विरुद्ध, दुश्मन सास की चाल को न जाननेवाली बाला ने घड़े में हाथ डाला। चंचल और लाल आँखोंवाला साँप दौड़ा और उसे उसने काट खाया। हाहाकार करती हुई वह विष से मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ी। जिसकी शरीर की कान्ति जा चुकी है, मुकुलित मुख और बन्द आँखोंवाली उसे घास के वेष्टन से ढँककर, दुष्टता रूपी जल संग्रह की नदी, पति की यात्रा के द्वारा मरघट में फेंक दिया गया।

घत्ता—इतने में पुत्र वज्रमुष्टि आकर पूछता है—हे माँ ! श्यामांगी अच्छी मंगिया कहाँ है ?

(11)

माता ने कहा—विषधर की डाढ़ों के जहर के आघात से, हे पुत्र ! तुम्हारी गृहिणी विधाता ने क्षयकाल के मुख में डाल दी है। मोहरूपी रस के वशीभूत होकर, उसके जीवित होने की आशा के कारण हम लोगों ने जलाया नहीं, बल्कि प्रेतों की ज्वालमाला से कराल किसी दुर्गम वन के भीतर फिकवा दिया है।

तब संग्राम में समर्थ वह अपनी तीखी तलवार हाथ में उठाए हुए चला। 'हाय ! हे सुन्दरि', इस प्रकार

6. ABPS बालए कुंभे। 7. A चलरत°। 8. S भणंति। 9. A तणुवेंढिपवेढिए; B Als तणविंढए वेढिवि; P तणवेढिए। 10. A तावायउ; B तावाइउ।

(11) 1. APS तुज्झु। 2. P घरणि। 3. A णिवेइया। 4. A उक्खय°; P omits this foot. 5. ABPS हा हा हे सुंदरि सोयमाणु। 6. AS थिया°; P चिहा°। 7. APS जोयमाणु।

ता तेण दिट्ठु तहिं धम्मणामु   रिसि दूसहतवसंतावखामु।
ओवाइउं भासिउं तासु एम   जइ पेच्छमि पिययम कह व[8] देव।
चलचंचरीयधुयकेसरेहिं   तो पइं पुज्जमि इंदीवरेहिं।
इय भणिवि भमंतें[9] तहिं मसाणि   अणवरयदिण्णणरमासदाणि।
दिट्ठी पणइणि णासियगरेण[10]   मुणिवरतणुपवणोसहभरेण।
जीवाविय जाव सचेयणंगि   परिमिट्ठ[11] रहंगें णं रहंगि।
रमणीदंसणपुलइयसरीरु   गउ कमलहं[12] कारणि कहिं मि धीरु[13]।
गइ पिययमि मंगीहिययथेणु   कवडेण पढुक्कउ सूरसेणु।
घत्ता—तेण मणोहरं तहिं तिह बोल्लियं।
जिह हियउल्लयं तीइ विरोल्लियं ॥11॥

(12)

दुवई—परपुरिसंगसंगरइरसियउ मयणवसेण णीयओ।
महिलउ कस्स होंति साहीणउ बहुमायाविणीयओ ॥छ॥
परिहरिवि चिराणउ धीरु रमणु   पडिवण्णउं ते सहुं तीइ रमणु[1]।
तहिं अवसरि आयउ वज्जमुट्ठि   कंतहि करि अप्पिय खग्गलट्ठि।

शोक प्रकट करता हुआ तथा श्मशानभूमि देखता हुआ वह घूमता है। इतने में वह दुःसह तपसन्ताप से क्षीण, धर्म नामक मुनि को वहाँ देखता है। उनकी सेवा करते हुए उसने इस प्रकार कहा—दे देव ! यदि किसी प्रकार मैं अपनी प्रियतमा को देख सकूँ, तो मैं चंचल भ्रमरों से काँपती केशरवाले इन्दीवरों से आपकी पूजा करूँ ?

यह कहकर उस मरघट में, जिसमें अनवरत नरमांस का दान दिया जाता है, घूमते हुए, उसने प्रणयिनी को देखा। जहर को नष्ट कर देनेवाली, मुनिवर के शरीर की हवारूपी औषधि को धारण करनेवाले उसने उसे जीवित कर लिया। वह सचेतन अंगोंवाली हो गयी, मानो चकवे ने चकवी को जीवित कर लिया हो। पत्नी के दर्शन से पुलकित-शरीर वह धीर, कमलों के लिए कहीं गया। प्रियतम के चले जाने पर मंगिया के हृदय का चोर सूरसेन कपटपूर्वक वहाँ आ पहुँचा।

घत्ता—उसने वहीं इतनी सुन्दर बातें कीं कि जिससे उसका हृदय भग्न हो गया।

(12)

परपुरुष के संग रति का आस्वाद लेनेवाली, कामदेव के द्वारा ले जायी गयी महिला भला किसी होती है ? बहुमाया से विनीत वे स्वाधीन होती हैं। अपने पुराने सुन्दर पति को छोड़कर, उसने उसके साथ रमण

---

8. B विं। 9. B महंतें; but notes a p : भमंते त्ति पाठः। 10. A adds after this : अथक्कोइवि परबलरिउमहेण। 11. AS परिमइ; B पइमइ। 12. B कमलहो। 13. AP वीरु।

(12) 1. B गमणु।

इच्छिवि[2] परणररइरसपवाहु सा ताइ जाम किर हणइ णाहु।
ता वणिसुएण उड्डिउ सबाहु णिसिंसु पडिउ णं कालगाहु।
अंगुलि खंडिय णं पावबुद्धि कम्मुवसमेण वड्ढिय विसुद्धि।
चिंतवइ होउ माणिणिरएण दरिसावियधणजीवियखएण[3]।
दुग्गंधु[4] पुरंधिहिं तणउ देहु मणु पुणु बहुकवडसहासगेहु।
रप्पिज्जइ किं किर कामणीहिं वइसियमंदिरि[5] चूडामणीहिं।
किं वयणें लालाणिग्गमेण अहरें किं वल्लूरोवमेण।
किं गरुयगंडसरिसेण तेण माणिज्जंतें घणथणजुएण।
परिगलियमुत्तसोणियजलेण किं किज्जइ किर सोणीयलेण।
पररत्तिइ गुणविद्दावणीइ एत्थंतरि दढमायाविणीइ।
मइं खग्गु मुक्कु भीयाइ माइ वरइत्तहु उत्तरु दिण्णु ताइ।

घत्ता—घेत्तुं[6] परहणं सुट्ठु अकायरा[7]।
ताम पराइया तें[8] तहिं भायरा ॥12॥

(13)

दुवई—दिण्णं तेहिं तस्स दविणं तहिं तेण[1] वि तं ण इच्छियं।
हिंसाअलियवयणचोरत्तणपरयारं[2] दुगुंछियं ॥छ॥

करना स्वीकार कर लिया। ठीक इसी अवसर पर वज्रमुष्टि आया और उसने कान्ता के हाथ में तलवार की मूठ दे दी। परपुरुष के रति-रसप्रवाह को चाहती हुई वह, उस तलवार से जब तक अपने पति पर वार करती है तब तक वणिक पुत्र ने अपना हाथ उठाया, उस पर तलवार इस प्रकार पड़ी जैसे काल का ग्राह हो। उसकी अँगुलियाँ कट गयीं, मानो पापबुद्धि खण्डित हुई हो। कर्म का उपशम होने से उसकी चित्तशुद्धि हुई। वह सोचता है कि जिसने धन और जीवन का नाश दिखाया है, ऐसे स्त्रीप्रेम से क्या ? स्त्रियों का शरीर दुर्गन्धयुक्त होता है। फिर मन हजार कपटों का घर होता है। माया-मन्दिर की चूड़ामणि स्त्रियों के द्वारा क्यों आक्रमण किया जाता है ? लार गिरते हुए मुख से क्या ? सूखे हुए माँस के समान अधरों से क्या ? भारी गण्डस्थल के समान सघन स्तन-युगल मानने से क्या ? मूत और रक्तजल झरनेवाले श्रोणीतल से क्या किया जाय ? दूसरे में अनुरक्त, गुणों को नष्ट करनेवाली, दृढ़माया से विनीत उसने अपने पति को उत्तर दिया—भयभीत मुझसे तलवार छूट गयी।"

घत्ता—अत्यन्त साहसी उसके भाई परधन को लेने के लिए वहाँ आये।

(13)

उन्होंने उसका धन उसे दिया, वहाँ उसने भी वह धन नहीं चाहा। उसने हिंसा, झूठ वचन, चोरी और

2. A इंछियº। 3. B खयेण। 4. B दुग्गंध। 5. APS ºमंदिरº। 6. AP घित्तं। 7. S अकारया। 8. D तहिं ते।
(13) 1. B तिण। 2. B परयाइं।

तणमिव मण्णिउं तं चोरदव्वु मंगीविलसिउं वज्जरिउं सव्वु।
खलमहिलउ किं किर णउ कुणंति भत्तारु जारकारणि हणंति।
तियचरिउं[3] कहंतें भायरेण छिण्णंगुलि दाविय ताहं तेण।
तं णिसुणिवि मेल्लिवि मोहजालु सरकरिहरि[4] दयदाढकरालु।
वसिकिय पंचेंदिय णियमणेहिं णिव्वेइएहिं वणिणंदणेहिं।
आसंघिउ धम्ममहामुणिंदु तउ लइउं तेहिं पणविवि जिणिंदु।
जिणदत्तहि खंतिहि पायमूलि उवसामियभवयरसल्लसूलि।
वउ[5] लइयउं लहुं तणुअंगियाइ[6] णियचरियविसण्णइ मंगियाइ।
हिंताललालतालीमहंति उज्जेणीबाहिरि काणणंति।
अच्छंति जाम संपुण्णतुट्ठि[7] परमेट्ठि पणासियमोहपुट्ठि[8]।
अंचिवि णवकमलहिं सच्चदिट्ठि संपत्तु ताम सो वज्जमुट्ठि।
पुच्छियउं तेण णिवसह वणम्मि पव्वज्जइ[9] किं णवजोव्वणम्मि।
मंगीवियारु तवचरणहेउ वज्जरिउं तेहिं तं[10] मयरकेउ।
विद्धंसिवि लइयउं रिसिचरित्तु[11] तहु गुरुहि पासि गुणगणपवित्तु।
सोहम्मसग्गि सोहासमेय चारित्तवंत चंदक्कतेय।
संणासु करेप्पिणु लद्धसंस सुर जाया सत्त वि तायतिंस[12]।

परस्त्री की निन्दा की। उस चोरी के धन को उसने तृण के समान समझा और उसने मंगिया की सारी करतूत बतायी। दुष्ट महिलाएँ क्या नहीं करतीं , यार के लिए वे अपने पति की भी हत्या कर देती हैं। स्त्रीचरित कहते हुए उसने अपने भाइयों को कटी हुई अपनी अँगुलियाँ बतायीं।

यह सुनकर और मोहजाल छोड़कर नियमशील, वैराग्य को प्राप्त वणिक्पुत्रों ने पाँचों इन्द्रियों को वश में किया और कामरूपी गज के लिए सिंह के समान तथा भयंकर दाढ़ के लिए दया के आश्रय-स्थान धर्म नामक महामुनि की उन्होंने शरण ली। जिनेन्द्र को प्रणाम कर उन्होंने तप ग्रहण कर लिया। आर्या जिनदत्ता के, संसाररूपी कर की फाँस को नष्ट करनेवाले पादमूल में, अपने चरित से दुःखी होकर तन्वंगी मंगिया ने भी व्रत ग्रहण कर लिये। हिन्ताल, ताल और ताड़ी वृक्षों से महान्, उज्जैन के बाहर वन के भीतर जब सम्पूर्ण तुष्टिवाले और मोह की पुष्टि को नष्ट करनेवाले सत्यदृष्टि मुनि विराजमान थे, तब वह वज्रमुष्टि वहाँ पहुँचा। उसने उनकी नवकमलों से पूजा की और पूछा—आप वन में क्यों निवास कर रहे हैं, आपने नवयौवन में वैराग्य क्यों धारण किया ? उन्होंने उत्तर दिया—मंगिया का विकार तपश्चरण का कारण है। फिर उसने भी काम को नष्ट कर, उसके गुरु के पास गुणगण से पवित्र मुनित्व स्वीकार कर लिया। चारित्र्य से युक्त, चन्द्रार्क के समान तेजवाले और शोभा से युक्त, प्रशंसा प्राप्त करनेवाले वे सातों भाई संन्यास धारण कर सौधर्म स्वर्ग में देव हुए।

3. Als. तृय; S त्रियचरिउं। 4. A सरहरिकरिहियदाढ°। 5. K वह। 6. S तणुयंगि°। 7. A संपण्णबुद्धि; DPS संपण्णतुट्ठि। 8. AP मोहबुद्धि। 9. APS पावज्जए। 10. Als. तें against Mss. 11. A तवचरित्तु। 12. B तायतीसं।

घत्ता—ताहिंतो[13] चुया धादइसंडए।
भरहे[14] खेत्तए वरतरुसंडए ॥13॥

(14)

दुवई—णिच्चालोयणयरि[1] अरिकरिकुंभुद्दलणकेसरी[2]।
पत्थिउ[3] चित्तचूलु तहु[4] पियपणइणि णामें मणोहरी ॥छ॥

चित्तंगउ जायउ पढमपुत्तु धयवाहणु पंकयपत्तणेत्तु।
अण्णेक्कु गरुलवाहणु[5] पसत्थु मणिचूलु पुप्फचूलु वि महत्थु।
पुणु णंदणचूलु[6] वि गयणचूलु तेत्थु जि दाहिणसेढिहि विसालु।
मेहउरि[7] धणंजउ पहु हयारि सच्चसिरि णाम तहु इट्ठणारि।
कालेण ताइ णं मयणजुत्ति धणसिरि णामें संजणिय पुत्ति।
तेत्थु जि णिण्णासियरिउपयाउ आणंदणयरि हरिसेणु राउ।
सिरिकंत कंत हरिवाहणक्खु सुउ संजायउ कमलाहयक्खु।
साकेयणयरि णं हरि सिरीइ सोहंतु महंतु सुहंकरीइ।
तहिं चक्कवट्टि पुरि पुप्फदंतु तहु सुट्ठु दुट्ठु तणुरुहु सुदत्तु।
पावेण[8] तेण णववेणुवण्ण हरिवाहणु मारिवि लइय कण्ण।
सुविरत्तचित्त संसारवासि भूयाणंदहु जिणवरहु पासि।
तं पेच्छिवि ते चित्तंगयाइ मुणिवर संजाया जइणवाइ।
अरिमित्तवग्गि होइवि समाण अणसणतवेण[9] पुणु मुइवि पाण[10]।

घत्ता—वहाँ से च्युत होकर, धातकीखण्ड द्वीप में सुन्दर वृक्षों के समूहवाले भरतक्षेत्र में—

(14)

नित्यालोक नगर है। उसमें शत्रुरूपी गजों के कुम्भों को विदारित करनेवाला राजा चित्रचूल (चन्द्रचूल) था। उसकी मनोहरा नाम की देवी थी। उसका पहिला पुत्र चित्रांगद हुआ। फिर कमल-पत्र के समान ध्वजवाहन। एक और प्रशस्त गरुड़वाहन हुआ। महार्थवाले मणिचूल और पुष्पचूल भी उत्पन्न हुए। फिर नन्दनचूल और गरुड़चूल हुए। वहीं विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी में विशाल मेघपुर में शत्रु का नाश करनेवाला राजा धनंजय था। उसकी सत्यश्री नाम की इष्ट स्त्री थी। समय बीतने पर उसे कामदेव की युक्ति के समान धनश्री नाम की पुत्री हुई। वहीं शत्रु के प्रताप को नष्ट करनेवाला हरिसेन नाम का राजा आनन्दनगरी में उत्पन्न हुआ। जिस प्रकार इन्द्र लक्ष्मी से शोभित है, उसी प्रकार प्रीतिकरी पत्नी से शोभित महान् चक्रवर्ती पुष्पदन्त अयोध्या नगरी में शोभित था। उसका दुष्टपुत्र सुदत्त था। उस पापी ने नववेणु के समान वर्णवाले हरिवाहन को मारकर उसकी कन्या ले ली। यह देखकर चित्रांगद आदि भाई संसारवास से विरक्तचित्त होकर भूतानन्द जिनवर के पास जैनवादी मुनि हो गये। शत्रु और मित्र में समान होकर और अनशन तप के द्वारा उन्होंने अपने प्राण छोड़ दिये।

13. P ताहिंतो। 14. B भरहे खित्तए।

(14) 1. PS णिच्चालोय। 2. ABP °कुंभत्थलदलण°; S °कुंभयलदलण°। 3. S पत्थिवु। 4. AP तहो पणइणि तहे णामें। 5. S गरल°। 6. P णंदणु चूलु। 7. Als मेहउरे; S मेहउरि। 8. A तं लइय मरंवरि सामण्ण। 9. A °तवेणं। 10. B पाण।

घत्ता—सग्गि चउत्थए सामण्णा सुरा।
ते संजायया[11] सत्त वि भायरा ॥14॥

(15)

दुवई—सत्तसमुद्दमाणु परमाउसु भुंजिवि पुणु वि णिवडिया।
कालें इंद चद धरणिंद वि के के णेय[1] विहडिया ॥छ॥

इह भरहखेत्ति सुपसिद्धणामि कुरुजंगलि देसि विचित्तधामि।
गयउरि धणपीणियणिच्चणीसु वणिणाहु सेयवाहणु णिहीसु।
बंधुमइ घरिणि[2] तहि धम्मकंखु हुउ सुउ सुभाणु णामेण संखु।
तहिं पुरवरि राणउ गंगदेउ णंदयसघरिणिमणमीणकेउ[3]।
उप्पण्णउ णंदणु ताहं गंगु गंगसुरु अवरु णावइ अणंगु।
पुणु गंगमित्तु पुणु णंदवाउ पुणरवि सुणंदु संपुण्णकाउ।
पुणु णंदसेणु[4] णिद्धंगराय अवरोप्परु णेहणिबद्धछाय[5]।
अण्णम्मि गब्भि संभूइ[6] राउ उव्वेइउ वर णंदणु म होउ[7]।
मा एहउ महुं संतावयारि डहु[8] पावयम्मु संतोसहारि।
उप्पण्णउ रेवइधाइयाइ रायाएसें संचोइयाइ।
बंधुमइहि बालु विइण्णु णंपि रक्खइ माणुसु भवियव्वु[9] किं पि।
णिण्णामउ कोक्किउ ताइ सो वि अण्णहिं दिणि उववणि सह भमेवि।
छ[10] वि ते भायर भुंजंति जाम णिण्णामु पराइउ[11] तहिं जि ताम।

घत्ता—वे सातों भाई चौथे स्वर्ग में सामानिक जाति के देव हुए।

(15)

सात सागर प्रमाण आयु भोगकर, वहाँ से वे च्युत हुए। काल के द्वारा इन्द्र, चन्द्र और धरणेन्द्र भी, कौन ऐसा है जो विखण्डित नहीं होता ? इस भरतक्षेत्र में प्रसिद्ध कुरुजांगल नामक देश में विचित्र गृहोंवाला गजपुर है। उसमें धन से दरिद्रों को नित्य प्रसन्न करनेवाला निधीश श्वेतबाहन नाम का सेठ है। उसकी बन्धुमती गृहिणी है। उत्तम सूर्य के समान तथा धर्म की आकांक्षा रखनेवाला उसका शंख नाम का पुत्र हुआ। उसी नगरी में गंगदेव नाम का राजा हुआ, जो अपनी गृहिणी नन्दयशा के मन का कामदेव था। गंग उसका पुत्र हुआ। और दूसरा गंगदेव जो मानो कामदेव था। फिर गंगमित्र और नन्द, फिर पुण्यशरीर सुनन्द एवं स्निग्धराग नन्दसेन। वे आपस में बहुत प्रेम से बँधे हुए थे। नन्दयशा के एक और गर्भ रह जाने पर राजा उद्विग्न हो गया कि अच्छा हो कि पुत्र न हो। यह मुझे सन्तापदायक न हो, सन्तोष हरण करनेवाला पापकर्मा यह मुझे न जलाए। बालक उत्पन्न होने पर राज्यादेश से प्रेरित रेवतीधाय ने जाकर उसे बन्धुमती को दे दिया। कोई-न-कोई भवितव्य मनुष्य की रक्षा करता है। उसने उस शिशु को निर्नाम कहना शुरू कर दिया। एक दिन उपवन में घूमकर जब वे छहों भाई भोजन कर रहे थे, तब निर्नाम वहाँ पहुँचा।

11. B संजाया।

(15) 1. A ण य। 2. P घरणि। 3. P णंदजस°। 4. APS णंदिसेणु। 5. S °छाय। 6. S संभूये। 7. A adds after this : जइ हुवइ एहु वरु खयहो जाउ; K writes it but scores it off. 8. B दहु; P दहु। 9. S भवियव्वु (?)। 10. P omits छ वि। 11. B परायउ।

घत्ता—संखें बोल्लिउं महु मणु रंजहि।
आवहि बंधव तुहुं सहुं[12] भुंजहि ॥15॥

(16)

दुवई—ता[1] भुंजंतु पुत्तु[2] अवलोइवि सरसं गोट्ठिभोयणं।
वयणं रोसएण णंदजसहि[3] जायं तंबलोयणं ॥छ॥

दुव्वयणसयाइं चवंतियाइ चरणयलें हउ असहंतियाइ।
सोयाउरमणु संखेण दिट्ठु एमेव[4] को वि जणु कहु वि इट्ठु।
तं दुक्खु[5] सदुक्खु व[6] मणि वहंतु दुत्थियवच्छलु महिमामहंतु।
अण्णहिं दिणि बहुकिंकरसएहिं सहुं णरणाहें हयगयरहेहिं[7]।
गउ सो णिण्णामु वि विस्सरामु दुमसेणमहारिसिणमणकामु।
गुणवंतसंगइभावबुद्धु वंदिउ जोईसरु जोयसुद्धु।
संखें पुच्छिउ णंदयस[8] देव णिण्णामहु विणु कज्जेण केम।
रूसइ परमेसरि[9] कहउ[10] तेम हउं जाणमि पयडपयत्थु[11] जेम।
तं णिसुणिवि अवहिविलोयणेण बोल्लिउं तवसंजमभायणेण।
सोरट्ठदेसि गिरिणयरवासि चित्तरहु राउ आसत्तु मासि।
तहु केरउ विरइयपावपंकु सूयारउ अमयरसायणंकु।
पहुणा जिब्भिंदियलंपडेण[12] पलपयणवियक्खणु मुणिवि तेण।

घत्ता—शंख ने कहा—मेरे मन का रंजन करो। आओ भाई ! तुम मेरे साथ भोजन करो।

(16)

पुत्र को सरस गोष्ठीभोजन करते हुए देखकर, नन्दयशा का मुख और नेत्र क्रोध से लाल हो गये। सैंकड़ों दुष्ट शब्द कहती हुई और सहन नहीं करती हुई वह उसे लात से आहत कर देती है। शोकातुर बालक को शंख ने देखा। (वह सोचता है) इस प्रकार किसी भी मनुष्य का इष्ट होना व्यर्थ है। उस दुःख को मन में अपना दुःख समझते हुए, दुःस्थितों के लिए वत्सल और महिमा से महान् वह, एक दिन सैंकड़ों अनुचरों, घोड़ों, हाथियों और राजा के साथ विश्व मनोहर द्रुमसेन महामुनि को नमस्कार करने की कामना से गया। निर्नाम भी वहाँ गया। गुणवान् और संगतिभाव से प्रबुद्ध करनेवाले योगशुद्ध योगीश्वर की उन्होंने वन्दना की। शंख ने पूछा—हे देव ! नन्दयशा बिना कारण निर्नाम पर क्रोध क्यों करती है ? बताइए जिससे हम प्रकट पदार्थ की तरह स्पष्ट रूप से जान सकें।

यह सुनकर तप और संयम के पात्र, तथा अवधिज्ञानरूपी लोचनवाले मुनि ने कहा—सौराष्ट्र देश के गिरनार नगर का निवासी राजा चित्ररथ मांस में आसक्त था। उसका पापपंक में सना अमृत-रसायन नाम का रसोइया था। जिव्हा इन्द्रिय के लोभी उस राजा ने मांस-पाक-विज्ञान में उसे विशेषज्ञ मानकर, उससे

---

12. B सुहं; S सह।

(16) 1. B Als. सो; PS तो। 2. S पत्तु। 3. A णंदजसहो; BS णंदयसहे। 4. BS एमेय। 5. Als. तहुक्खु against Mss ; P सदुक्खु। 6. B वि for व। 7. APS रहवरणाहिं। 8. P णंदजस। 9. B परमेसरु। 10. AS कहहिं; B कहह। 11. B पइड°। 12. APS जीहिंदिय°।

घत्ता—तूसिवि राइणा पायवियाणउ।
बारहगामहं[13] किउ सो राणउ ॥16॥

(17)

दुवई—णवर सुधम्मणाममुणिणाहें संबोहिउ महीसरो।
थिउ जइणिंददिक्ख पडिवज्जिवि उज्झियमोहमच्छरो ॥छ॥

पुत्तेण तासु सावयवयाइं गहियाइं छिण्णबहुभवभयाइं[1]।
मेहरहें णिंदिय मासतित्ति हित्ती सूयारहु तणिय वित्ति।
आरुट्ठु सुट्ठु सो मुणिवरासु हा केम महारउ हित्तु गासु।
वेहाविय बेण्णि वि बप्पपुत्त सवणेण जिणागमवहि णिउत्त।
मारउ[2] मारिज्जइ णत्थि दोसु मणि एम जाम सो वहइ रोसु।
गोयारि पइट्ठउ ता सुधम्मु सद्धालुउ छड्डियछम्मकम्मु[3]।
सूयारें पत्थिउ दिट्ठि देहि परमेट्ठि साहु रिसि ठाहि ठाहि।
ता थक्कु सूरि संचियमलेण पच्छण्णेण जि कुद्धें खलेण।
फरुसाइं विसाइं सवक्कलाइं[4] करि दिण्णइं घोसायइंफलाइं[5]।
सिद्धइं संभारविमीसियाइं[6] जइपुंगमेण संपासियाइं[7]।
मेल्लिवि अभक्ख तच्चावलोइ परदिण्णु वि[8] विसु भुंजंति जोइ।

घत्ता—सन्तुष्ट होकर उस पाकविज्ञानी को बारह गाँव का राजा बना दिया।

(17)

एक दिन सुधर्म नाम के मुनि ने राजा को सम्बोधित किया। मोह-मत्सर छोड़ते हुए उसने जैन दीक्षा स्वीकार कर ली। उसके पुत्र ने भी अनेक जन्मों के दुःखों को दूर करनेवाले श्रावक के व्रत स्वीकार कर लिये। पुत्र मेघरथ ने मांसतृष्णा की निन्दा की और रसोइया की आजीविका छीन ली। वह दुष्ट अमृत-रसायन रसोइया मुनिराज से अप्रसन्न हो गया कि इसने किस प्रकार मेरे मुँह का कौर छीन लिया। इस श्रमण ने जिन धर्मपथ में दीक्षित कर बाप-बेटे को ठग लिया। मारनेवाले को मारना चाहिए, इसमें दोष नहीं है। जब वह अपने में इस प्रकार क्रोध कर रहा था कि इतने में श्रद्धामय और पापकर्मों से रहित सुधर्मा मुनि गोचर्या के लिए निकले। रसोइए ने प्रार्थना की—'दृष्टि दीजिए, परमेष्ठी साधु ऋषि मुनि ठहरिए।' इस पर मुनि ठहर गये। तब संचितमलवाले प्रच्छन्न उस दुष्ट क्रोधी ने छिलके से युक्त कठोर विषाक्त तुमड़ी के पके हुए और धनिया (सम्हार) से मिले हुए फल उन्हें दिये। मुनिश्रेष्ठ ने उन्हें खा लिया। तत्त्व का अवलोकन करनेवाले योगी अभक्ष्य को छोड़कर दूसरे का दिया हुआ विष (विषैला भोज्य) भी खा लेते हैं। गिरनार पर्वत

---

13. PS बारहं।

(17) 1. A °भवसयाइं; P °भयभयाइं। 2. B मारुउ। 3. B छंडिय°। 4. S सवक्कलाइं। 5. A घोसाईफलाइं; Als घोसायइफलाइं against his Mss. 6. AP विसभार°। 7. B संपासियाइ। 8. P विसु वि।

गउ उज्जंतहु[9] संणासु करिवि मुणि समभावें[10] जिणु सरिविं मरिवि।
अहमिंदु इंदु उवरिल्लठाणि संभूयउ अवराइयविमाणि।
रसपंडिउ तइयइ णरइ पडिउ कम्मेण ण को भीमेण णडिउ।
कालेण [11]दुक्खणिक्खविउ[12] खामु णरयाउ विणिग्गउ[13] अमयणामु।
इह मलयविसइ[14] वित्थिण्णणीडि विक्खायइ गामि पलासकूडि।
तहिं णिवसइ गहवइ जक्खदत्तु पिय जक्खदत्त सो ताहं पुत्तु।
जायउ कोक्किउ जक्खाहिहाणु अण्णेक्कु वि जक्खिलु सउलभाणु।

घत्ता—गरुयउ[15] णिद्दओ दुक्कियमाणिओ।
लहुउ दयालुओ तहिं जगि[16] जाणिओ ॥17॥

(18)

दुवई—अण्णहिं दिणि दयालुपडिसेहे[1] कए वि सधवलु ढोइओ।
सयडो णिद्दएण पहि जंतहु उरयहु उवरि चोइओ ॥छ॥

फणि मुउ हुउ सेयवियापुरीहि[2] वासवपत्थिवहु वसुंधरीहि।
रायाणियाहि णंदयस धूय[3] कइवण्णियतणुलायण्णरूय[4]।
भायरवयणें उवसंतभाउ णिक्किउ[5] णंदयसहि[6] पुत्तु जाउ।
णिण्णामउ ओहच्छइ[7] ण भंति तें वासवतणयहि[8] मणि अखंति।

पर जाकर संन्यास ग्रहण कर तथा समभाव से जिन-भगवान् का नाम लेकर और मृत्यु को प्राप्त होकर, अपराजित विमान के ऊपरी भाग में वे अहमेन्द्र इन्द्र हुए। वह रसपण्डित (रसोइया) तीसरे नरक में गया। कर्म के द्वारा कौन नहीं नचाया जाता ? समय पूर्ण होने पर दुःख से पीड़ित और दुबला वह अमृत रसायन रसोइया नरक से निकला। यहाँ मलय देश में; विस्तृत घरोंवाले पलाशकूट गाँव में यक्षदत्त नाम का गृहस्थ रहता था। उसकी यक्षदत्ता नाम की प्रिया थी। वह (अमृत-रसायन) उन दोनों का यक्ष नाम का पुत्र हुआ। उनके कुल में सूर्य के समान एक और यक्षिल नाम का पुत्र था।

घत्ता—बड़ा भाई निर्दय और पाप को माननेवाला था; जबकि छोटा भाई दुनिया में दयालु समझा जाता था।

(18)

एक दिन दयालु लोगों के मना करने पर भी, उस निर्दय ने बैल सहित अपनी गाड़ी रास्ते में जाते हुए साँप पर दौड़ा दी। साँप मरकर श्वेताविका नाम की नगरी में वासव नाम के राजा की रानी नन्दयशा की कन्या रूप में उत्पन्न हुआ जिसके शरीर के रूप और सौन्दर्य की कवि प्रशंसा करते हैं। अपने छोटे भाई के समझाने पर उपशान्त भाव को धारण करनेवाला निरनुकम्प नन्दयशा का पुत्र हुआ। वहाँ निर्नाम बैठा

---

9. P उज्जंतहो। 10. A सभावें। 11. S दुक्खु। 12. B णिक्खविय। 13. B विणिग्गउ। 14. B मलइ। 15. APS गरुओ। 16. AS जणे; B जण°।

(18) 1. A °पडिसेवहे। 2. P सेयवियार°। 3. P धूव। 4. P °रूव। 5. S णिक्किवु। 6. P °जस पुत्तु। 7. B उवहच्छह in first hand and तुह इच्छह in second hand; S ओयछइ; Als. एहु अच्छइ against Mss. 8. S वासतणयहि, omits व।

इय णिसुणिवि चल परिचत्त[9] प्फारु संसारु अगारु सरीर[10] भारु।
छ वि णिवणंदण[11] पावज्ज लेवि थिय मिच्छासंजमु परिहरेवि।
सो संखु वि सहुं णिण्णामएण ण्हायउ मुणिवरदिक्खामएण।
सुव्वय पणवेप्पिणु संजईउ जायउ णंदयसारेवईउ
ए सत्त वि दढपडिबद्धपणय[12] अण्णहिं मि जम्मि महुं होंतु तणय।
इय णंदयसइ बद्धउं णियाणु को णासइ विहिलिहियउं विहाणु।
कालें जंतें सयलइं मुयाइं दहमइ[13] दिवि अमरत्तणु गयाइं।
सोलहसमुद्दमुत्ताउयाइं पुणु तहिं होंतइं सव्वइं चुयाइं।
सो संखणामु बलएउ जाउ रोहिणिहि गब्भि जायवहं राउ।

घत्ता—छुहधवलियघरि धणपरिपुण्णए।
मयवइदेसइ णयरि दसण्णए[14] ॥18॥

(19)

दुवई—जाया देवसेणराएण सुया धणएविगब्भए।
सा णंदयस[1] पुत्ति देवइ णामेण पसिद्धिया जए ॥छ॥
वरमलयदेसि[2] पुरि भद्दिलंकि पासायतुंगि वियलियकलंकि।
धणरिद्धिवंतु तहिं वसइ सेट्ठि वइसवणसरिसु णामें सुदिट्ठि।
रेवइ तहु सेट्ठिणि अलयणाम[3] हूई पीणत्थणि मज्झखाम[4]।

हुआ है, इसलिए वासव की कन्या में अशान्ति का भाव है।

यह सुनकर चंचल विशाल संसार असार शरीरभार छोड़कर, छहों ही राजपुत्र संन्यास लेकर, मिथ्या संयम को छोड़कर स्थित हो गये। निर्नाम के साथ शंख ने भी मुनिवर के दीक्षामृत में स्नान किया। सुव्रता नाम की आर्या को प्रणाम कर नन्दयशा और रेवती धाय भी आर्यिका बन गयी। 'दृढ़ प्रतिबद्ध प्रेमवाले ये सातों दूसरे जन्म में भी मेरे पुत्र हों!' नन्दयशा ने यह निदान किया। विधि के लिखित विधान को कौन नष्ट कर सकता है ? समय आने पर सब मृत्यु को प्राप्त हुए वे दसवें स्वर्ग में देव हुए। सोलह सागर आयु भोगने के बाद, फिर वे वहाँ से च्युत हुए। शंख बलदेव हुआ—रोहिणी के गर्भ से यादवों का राजा।

घत्ता—सफेद घरों से युक्त धन से परिपूर्ण मृगावती देश के दशार्ण नगर में,

(19)

वह नन्दयशा देवसेन राजा की धनदेवी के गर्भ से पुत्री हुई, जो जग में देवकी नाम से प्रसिद्ध है। श्रेष्ठ मलय देश में भद्रिल नाम की नगरी है, जो प्रासादों से ऊँची और कलंकों से रहित है। उसमें कुबेर के समान धन और ऋद्धि से सम्पन्न सुदृष्टि नाम का सेठ निवास करता है। रेवती उसकी अलका नाम की पीनस्तनी

---

9. A परियत्तपारु। 10. S सरीरु। 11. S नूयणंदण। 12. A °परिबद्ध°। 13. A दसइं; P दसमए। 14. P दसण्णले।
(19) 1. P णंदजस। 2. A °भद्दिलदेसे। 3. B णाउं। 4. B °खामु।

छह तणुरुह देवइगब्भि जाय लक्खणलक्खिय ते चरमकाय।
दरिसियसज्जणसुहसंगमेण इंदाएसें णिय णइगमेण।
वणिघरिणिहि अप्पिय भद्दणयरि[5] कलहोयसिहरकीलंतखयरि[6]।
सिसु देवदत्तु पुणु देवपालु पुणु अणियदत्तु भुयबलविसालु[7]।
अण्णेक्कु वि पुत्तु अणीयपालु सत्तुहणु[8] जित्तसत्तु वि जसालु।
जरमरणजम्मविणिवारणेण हूया रिसि केण वि कारणेण।
पिंडत्थि[9] णयरि घरि घरि पइट्ठ चिरभवतणुरुह पइं माइ दिट्ठ।
वियलियथणथण्णें[10] सित्त[11] देहु तें कज्जें तुह उप्पण्णु णेहु।
पुव्विल्लि[12] जम्मि चलगरुडकेउ पेच्छवि[13] सयंभु पहु[14] वासुदेउ[15]।
तवचरणजलणहुयकामएण बद्धउं णियाणु णिण्णामएण।
एही दावियवसुहद्दसिद्धि आगामि जम्मि महुं होउ रिद्धि।

घत्ता—कप्पि[16] सुरो हुउ चुउ किसलयभुए।
रिसि णिण्णामउ आयण्णहि सुए ॥19॥

(20)

दुवई—कंसकढोरकंठमुसुमूरणभुयबलदलियरिउरहो[1]।
[2]णिवजरसिंधगरुयजरतरुवरसरजालोलिहुयवहो[3] ॥छ॥

और कृशोदरी सेठानी हुई। देवकी के गर्भ से छह पुत्र उत्पन्न हुए। लक्षणों से लक्षित वे छहों चरम शरीरी हैं। सज्जनों के साथ शुभसंगम दिखानेवाले इन्द्र के आदेश से नैगम देवों के द्वारा उनका अपहरण किया गया और उन्हें, जिनके स्वर्णशिखरों पर विद्याधर क्रीड़ा करते हैं, ऐसे भद्रनगर में सेठ की पत्नी को सौंप दिया गया। शिशु देवदत्त फिर देवपाल। फिर विशालभुज अनीकपाल। और यश का आलय शत्रुघ्न और जितशत्रु। जरामरण और जन्म का निवारण करनेवाले वे किसी कारण से मुनि हो गये। आहार के लिए घर-घर में प्रवेश करते हुए वे, हे आदरणीया ! तुमने अपने पूर्वजन्म के पुत्र देखे हैं; इसलिए झिरते स्तन से तुम्हारी देह गीली हो गयी। और इसी कारण तुम्हारा स्नेह उत्पन्न हुआ। पूर्वजन्म में चंचल गरुड़ध्वजवाले राजा स्वयम्भू वासुदेव को देखकर, तप की ज्वाला में काम को आहत करनेवाले निर्नाम ने यह निदान बाँधा था कि सुभद्र सिद्धि को दरसानेवाली ऐसी ऋद्धि आगामी जन्म में मेरी हो।

घत्ता—हे किशलय बाहुवाली पुत्री ! सुनो, वह कल्पस्वर्ग में उत्पन्न हुआ, वहाँ से च्युत होकर वह निर्नामक मुनि हुआ है।

(20)

जिसने कंस के कठोर कण्ठ को मसलनेवाले भुजबल से शत्रुओं को दलित कर दिया है, तथा राजा जरासन्ध

5. B भद्दिणयरि। 6. B °सिहरि। 7. P भुयबलि। 8. B सत्तुहण। 9. B पिंडत्थाए पुरि घरि। 10. P °थणयण्णें। 11. ABS सित्तु। 12. ABS पुव्विल्ल°।
13. A णिच्छेवि; S पच्छेवि। 14. A सयंपहु; B सइंभु; S सइंभू। 15. P वासुएउ। 16. B Als. कप्पसुरो।
(20) 1. PS °कठोर°। 2. PS °जरसंध°। 3. B °गरुव°।

भीसणपूयणथणरत्तलित्तु घरु आय कायवहणेक्कचित्तु[4]।
उत्तुंगतुरंगमसिरकयंतु[5] जमलज्जुणभंजणमहिमहंतु।
उप्पाडियमायावसहसिंगु[6] णित्तेईकयखयदिणपयंगु[7]।
उड्डावियजउणासरविहंगु करतिक्खणक्खणत्थियभुयंगु।
धीरेउ धराधरधरणबाहु कमलावल्लहु[8] सिरिकमलणाहु।
तुह जायउ तणुरुहु रिउविरामु णारायणु णवघणभसलसामु[9]।
तं णिसुणिवि सीसें देवईइ गुरु वंदिउ सुविसुद्धइ मईइ।
केहिं मि लइयाइं महव्वयाइं तहिं केहिं मि पंचाणुव्वयाइं।
भो साहु साहु विच्छिण्णकम्मु जिणु णेमि भणिउ पच्चण्णधम्मु[10]।

घत्ता—इय सोउं कहं भरहसुरमणिया[11]।
णिसढा[12] पहसिया सुकुसुमदसणिया[13] ॥20॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे देवइबलएवसभायरदामोयर[14] भवावलिवण्णणं[15] णाम एक्कूणणवदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥89॥

के भारी वृद्ध वृक्षरूपी तीर जाल के लिए हुताशन है, ऐसा भयंकर एवं पूतना के स्तनरक्त से लिप्त तथा वध में एकमात्र चित्त रखनेवाला वह घर आया है। उत्तम अश्वों के सिरों के लिए कृतान्त, यमलार्जुन के वध से मही में महान्, मायावी वृषभ के सींग उखाड़नेवाला, प्रलयकाल के सूर्य को निस्तेज कर देनेवाला, यमुना सर के पक्षियों को उड़ानेवाला, अपने पैने नखों से साँप को नाथनेवाला, पर्वत के भार को उठानेवाला, लक्ष्मीपति, पद्मनाभ, शत्रु को विराम देनेवाला, नये मेघ और भ्रमर की तरह श्याम नारायण तुम्हारा पुत्र हुआ। यह सुनकर देवकी ने सुविशुद्ध मति से गुरु को सिर से प्रणाम किया। किसी ने महाव्रत लिये, किसी ने वहाँ पर पाँच अणुव्रत लिये। स्थित धर्मरूप नेमिराज के द्वारा कथित, काम को नष्ट करनेवाला साक्षात्धर्म ठीक है, ठीक है।

घत्ता—इस प्रकार भरत के कुल में तथा कौरव वंश में उत्पन्न देवकी और नृपसभा कथा सुनकर फूलों के समान अपने दाँतों से हँस पड़ी।

इस तरह त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त, महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का देवकी बलदेव और भाई सहित दामोदर-भवावली-वर्णन नाम का नवासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

4. A °पहणेक्क°; S °ग्रहणेक्क° । 5. AS उत्तुंगु तुरंगासुरकयंतु; P उत्तुंगतुरंगासुरकयंतु । 6. S °वसहिसंगु । 7. B णित्तेइयकय°; S णित्तेकय° । 8. A °वल्लहो । 9. B घणघण° । 10. S पच्छण्णु धम्मु । 11. B भारह° । 12. A णिसह । 13. P कुसुम° (omits सु) । 14. A °सभायरवण्णणं । 15. S °भवावली° ।

णवदिमो संधि

णिसुणिवि देवइदेविहि भवइं पाय[1] णवेप्पिणु णेमिहि।
हरिकरिसररुहगरुडद्धयहु[2] धम्मचक्कवरणेमिहि[3] ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

दुवई—तो[4] सोहग्गरूवसोहावहि गुणमणिमहि महासई।
पभणइ सच्चभाम[5] मुणिपुंगम[6] भणु मह जम्मसंतई ॥छ॥

भासइ गणहरु वियसियतरुवरि[7] मालइगंधि मलयदेसंतरि।
भद्दिलपुरि[8] मेहरहु णरेसरु सूहउ णं पंचमु मणसियसरु।
णंदादेवि चंदबिंबाणण णहपहरंजियदिच्चक्काणण।
अवरु वि भूइसम्मु तहिं बंभणु कमलाबंभणिथणलोलिरमणु।
णंदणु णाम मुंडसालायणु अइकामुय[9] कामियबालायणु[10]।
जणि जायइ[11] चुयचारुविवेयइ सीयलणाहतित्थि वोच्छेयइ।
तेण जिणिंदवयणु विद्धंसिवि गाइभूमिदाणाइं पसंसिवि।
कव्वु करिवि रायहु वक्खाणिउं मूढें राएं अण्णु ण याणिउं।

नब्वेवीं सन्धि

देवकी देवी के भवों को सुनकर तथा मालामृगेन्द्रादि ध्वजाओं से युक्त धर्मचक्र के उत्तम आरा स्वरूप नेमिनाथ के चरणों में प्रणाम कर,

(1)

सौभाग्यरूपा और शोभा की सीमा, गुणरूपी मणियों की भूमि महासती सत्यभामा कहती है—"हे मुनिश्रेष्ठ ! मेरी जन्मपरम्परा कहिए। गणधर कहते हैं कि विकसित वृक्षवाले और मालती से सुगन्धित मलयदेश में भद्रिलपुर में मेघरथ नाम का राजा था, जो इतना सुन्दर था, मानो पाँचवाँ कामदेव हो। उसकी चन्द्रमुखी पत्नी नन्दादेवी थी, जिसकी नखप्रभा से दिशाओं के मुख आलोकित थे। एक और वहाँ भूतिशर्मा नाम का ब्राह्मण था जो अपनी ब्राह्मणी कमला के स्तनों का लम्पट और रमण करनेवाला था। उनका मुण्डशालायन नाम का, बालाओं को चाहनेवाला अत्यन्त कामुक पुत्र था। तीर्थंकर शीतलनाथ के तीर्थ के उच्छिन्न होने पर लोगों का सुन्दर विवेक नष्ट हो चुका था। उसने भी जिनेन्द्र-वचनों का खण्डन करने तथा गौ और भूमि के दान की प्रशंसा करने के लिए काव्य (शास्त्र) की रचना कर राजा के पास उसकी व्याख्या की। उस मूर्ख राजा ने और किसी

---

(1) 1. ABPS पय पणवेप्पिणु। 2. S °करुह°। 3. A धम्मचक्कु। 4. B ता। 5. AHP सच्चहाम। 6. B °पुंगव in second hand. 7. P विहसिय°। 8. S भद्दलपुरे। 9. APS °कामुउ। 10. B कमीयालोयणु। 11. S जाए।

किं किज्जइ घोरें तवचरणें किं णरिंद संणासणमरणें।
विप्पहं वाहणु णयणाणंदिरु दिज्जइ कण्ण सुवण्ण[12] सुमंदिरु[13]।

घत्ता--मंचउ सहुं महिलइ मणहरइ रयणविहूसणु[14] णिवसणु।
जो ढोवइ[15] धम्में बंभणहं मेइणि मेल्लिवि सासणु ॥1॥

(2)

दुवई—वीर वि णर तसंति घरदासि व णिवसइ गोमिणी घरे।
तस्स णरिंदचंद किं बहुएं होइ सुहं भवंतरे ॥छ॥

केसालुंचणु णिच्चेलत्तणु णग्गत्तणु तणुमलमइलत्तणु।
माणुसु [1]समणधम्म[2]विगुत्तउं[3] मरइ परत्तपिसाएं भुत्तउं।
अम्हारइ महयालि[4] महु पिज्जइ सिद्धउं मिट्ठउं मासु[5] गसिज्जइ।
अम्हारइ णिव[6] विगलियमइरइ होइ सग्गु सउयामणिमइरइ[7]।
अम्हारइ गोसउ[8] विरइज्जइ जणणि वि बहिणि वि तहिं जि[9] रमिज्जइ।
धम्मु परिट्ठिउ वेयपमाणें किं किर खवणएण अण्णाणें।
कंताणेहणिबंधणबद्धउ जीहोवत्थासत्तिइ खद्धउ।
जडु धुत्तागमकरणें णडियउ सत्तमणरइ डोड्डु[10] सो पडियउ।

धर्म को जानने का प्रयास नहीं किया। घोर तपश्चरण करने से क्या, हे राजन् ! संन्यास-मरण से क्या ? ब्राह्मणों को नयनाभिराम वाहन, कन्या, स्वर्ण और सुन्दर घर देना चाहिए।

घत्ता—सुन्दर महिला के साथ, जो पलंग, रत्नाभूषण और निवास-गृह धर्म (-बुद्धि) से ब्राह्मण को देता है, अपनी भूमि और शासन को छोड़कर,

(2)

उससे वीर लोग भी त्रस्त होते (डरते) हैं और लक्ष्मी गृहदासी के समान घर में रहती है। हे राजन् ! बहुत कहने से क्या, उसे दूसरे जन्म में भी सुख होता है। केशलोंच करना, निर्वसनता, दिगम्बरत्व और शरीर को मैला रखना—इस प्रकार श्रमणधर्म से फजीते में पड़ा हुआ तथा परलोक के पिशाच से खाया जाकर मनुष्य मरता है। हमारे यज्ञ के समय मधुपान किया जाता है। पका हुआ मीठा मांस खाया जाता है। हे राजन् ! जिसमें बुद्धिरूपी पाप नष्ट हो गया है, ऐसे हमारे सौदामिनी यज्ञ की मदिरा से स्वर्ग मिलता है। हमारा गौयज्ञ करना चाहिए, उसमें माँ और बहिन से भी रमण करना चाहिए; वेद के प्रमाण से ही धर्म प्रतिष्ठित है, अज्ञानी क्षपणकों (श्रमणों) से क्या ? इस प्रकार कान्ता-स्नेह-निबन्ध से बँधा हुआ तथा जीभ और उपस्थ (गुप्तांग) की शक्ति से खाया गया तथा धूर्तशास्त्र की रचना से प्रतारित वह वज्रमूर्ख सातवें नरक गया। एक लम्बा समयचक्र बीतने पर वह क्रम से दूसरे छह नरकों (भी) में घूमा। फिर तिर्यंच गति

---

12. सुयण्णु। 13. P समंदिरु। 14. PS रयणु। 15. S ढोयइ।

(2) 1. B समणु। 2. P °धम्मु। 3. S °विगुत्तउं। 4. AP महालि; S महयाले; Als. महयलि। 5. APS मासु वि खज्जइ। 6. S नृव। 7. B सउयामिणि°।
8. S गोसवु विरज्जइ। 9. P पि for जि। 10. AB डोड्डु।

दीहरकालचक्कि णिद्धाडिइ इयर वि छ वि हिंडिउ परिवाडिइ।
पुणु तिरिक्खु पुणु णरइ णिहम्मइ को दुक्खाइं ण पावइ दुम्मइ।
विमलगंधमायणगिरिणिग्गय[11] जलकल्लोलगलत्थियदिग्गय।
णीरपूरपूरियमहिहरदरि[12] गंधावइ णामेण महासरि।
ताहि तीरि णं दुक्कियवेल्लिहि पसुअसुहरभल्लंकियपल्लिहि[13]।
सो[14] सालायणु भवविब्भुल्लउ कालु णाम जायउ सवरुल्लउ।
घत्ता—वर धम्मरिसिहि णिसुणेवि गिर मासाहारु मुएप्पिणु[15]।
वेयड्ढि [16]पवरअलयाउरिहि खेयरु हुयउ मरेप्पिणु[17] ॥2॥

(3)

दुवई—पुरुबलपत्थिवस्स[1] जुइमालाबालाललियतणुरुहो।
सो वि अणंतवीरकहियामलतवणिरओ महाबुहो ॥छ॥
मरिवि दव्वसंजउ रिसि अइबलु सुरु सोहम्मि लहिवि जिणवयहलु।
खगमहिहरि रहणेउरपुरवरि पहुहि[2] सुकेउहि णहयरकुलहरि।
पुत्ति सयंपहाहि संभूई सच्चभाम[3] णं कामविहूई।
णेमित्तियणरेहिं[4] तुहुं दिट्ठी एही वत्त णरिंदहु सिट्ठी।
पुत्ति तुहारी[5] सिय[6] माणेसइ अद्धचक्कवट्टिहि पिय होसइ।

में और नरक में गया। दुर्मति कौन दुःख प्राप्त नहीं करता है ? विमल गन्धमादन पर्वत से निकली हुई गन्धावती नाम की महानदी है; जिसने जल की लहरों से दिग्गजों को हटा दिया है, जलों के पूर से पर्वतों की घाटियों को भर दिया है। उसके किनारे पर मानो दुष्कृत की बेल के समान पशुओं के प्राणों का हरण करनेवाले भीलों की बस्ती में वह शालायन ब्राह्मण जन्म से विह्वल कालू नाम का भील हुआ।

घत्ता—श्रेष्ठ धर्ममुनि की वाणी सुनकर तथा मांसाहार छोड़कर और मरकर वह विजयार्ध पर्वत की अलकापुरी नगरी में विद्याधर हुआ।

(3)

महाबल राजा की पत्नी ज्योतिर्माला नाम की स्त्री का एक अत्यन्त सुन्दर पुत्र था। वह महापण्डित भी अनन्तवीर्य मुनि के द्वारा कहे गये तप में निरत हो गया। वह द्रव्यसंयमी अतिबल मुनि मरकर जिनव्रत का फल पाकर सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। फिर वह विजयार्ध पर्वत के रथनूपुर नगर में राजा सुकेतु के विद्याधरकुल में स्वयंप्रभा से पुत्री उत्पन्न हुआ जो सत्यभामा नाम से मानो काम की विभूति हुई। निमित्तशास्त्र जाननेवालों ने तुझे देखा और राजा से यह बात कही कि तुम्हारी पुत्री लक्ष्मी का भोग करेगी और अर्धचक्रवर्ती की

---

11. A °मायणि। 12. S °महिहरि। 13. S °भल्लंकी°। 14. S सा साला°। 15. B मुएविणु। 16. A पउर। 17. P मुएप्पिणु।

(3) 1. A पुरबल°। 2. B पुहुहि। 3. ABP सच्चहाम। 4. S णेमिय°। 5. P तुम्हारी। 6. S सूय।

परिणिय राएं जायवचंदें णायसेज्ज चंप्पिवि गोविंदें।
एवहिं मुक्की बहुभवकम्में महएवित्तणु लद्धउं धम्में।
महुं केहाइं देव[7] कयछम्मइं पभणइ[7] रुप्पिणि[8] भणु भणु जम्मइं।
कहइ मुणीसरु[9] इह दीवंतरि भरहवरिसि मागहदेसंतरि।
सामरिगामि[10] विप्पु सोमिल्लउ लच्छीमइहि कंतु रिद्धिल्लउ।
तहु सा बंभणि दप्पणु जोवइ[11] घुसिणपंकु मुहि मंडणु ढोवइ[12]।
ताम समाहिगुत्तपडिबिंबउं अद्दइ दिट्ठउं मुक्कविडंबउं[14]।
घत्ता—पुव्वक्कयकम्मविहिण्णमइ भणइ लच्छि[15] उब्भेवि करु[16]।
णिल्लज्जु[17] अमंगलु विट्टलउ किह आयउ मेरउं[18] घरु ॥3॥

(4)

दुवइ—खरसूयरसमाणु दुग्गंधु दुरासउ दुक्खभायणो।
किह मइं दिट्ठु[1] एहु[2] मलमइलिउ भिक्खाहारभोयणो ॥छ॥
दप्पिट्ठहि दुट्ठहि णिक्किट्ठहि एम चवंतिहि तहि[3] गुणभट्ठहि।
मच्छियमिट्ठइ[4] सुट्ठु अणिट्ठहि अंगु विणट्ठउं उंबरकुट्ठइं।
तक्खणि सडियइं रोमइं णक्खइं भग्गइं णासावंसकडक्खइं।
परिगलियउ वीस वि अंगुलियउ [5]तणुलायण्णवण्णु[6] खणि ढलियउ।

प्रिया बनेगी। यादवचन्द्र कृष्ण ने नागशय्या में चाँपकर उससे विवाह कर लिया। इस समय तुम बहुत से कर्मों से मुक्त हुई हो और धर्म से तुमने महादेवी के पद को पा लिया। तब रुक्मणी कहती है—"हे देव ! कपट से भरे मेरे जन्म कैसे हैं ? बताइए, बताइए।" मुनीश्वर कहते हैं—इस द्वीप में भरतवर्ष के मगधदेश में सामर ग्राम में सौमित्र ब्राह्मण है। ऋद्धि से सम्पन्न वह लक्ष्मीमती का पति है। उसकी वह ब्राह्मणी एक दिन दर्पण देख रही थी और केशर का लेप अपने मुख पर लगा रही थी। इतने में काम से रहित समाधिगुप्त मुनि का प्रतिबिम्ब उसे दर्पण में दिखाई दिया।

घत्ता—पूर्वजन्म में किये गये कर्म से विभिन्नमति वह लक्ष्मी अपने दोनों हाथ उठकर कहती है—"निर्लज्ज अमंगलकारी नीच यह मेरे घर क्यों आया ?

(4)

गधे और सुअर के समान दुर्गन्धवाला, खोटी नियतवाला, दुःख का पात्र, मति से मैला, भीख का आहार खानेवाला, यह मैंने क्यों देखा ? इस प्रकार कहते हुए दर्प से भरी हुई दुष्ट, नीच, अनिष्ट और गुण-भ्रष्ट उसका शरीर उम्बरकोढ़ से नष्ट हो गया। उसी समय उसके रोम और नख सड़ गये। नाक की हड्डी और कटाक्ष नष्ट हो गये। उसकी बीसों अँगुलियाँ गल गयीं। शरीर का सौन्दर्य और रंग भी ढल गया। शरीर

7. A देवि कयकम्मइं। S पहणइ। 8. B रूपिणि। 9. B मुणीरु। 10. P सोमरि°। 11. AS जोयइ। 12. AS ढोयइ। 13. P °गुत्तु। 14. P °विडंबिउ। 15. P बाल। 16. B करि। 17. S णिलज्जु। 18. B मेरए घरि।

(4) 1. AP दुट्ठु दिट्ठु मल°। 2. B एहउ। 3. B चवंतिहिं तिहिं। 4. A मच्छियरिट्ठहे। 5. P °लायण्ण°; S °लायण्णु। 6. B °वण्णु।

रुहिरपूयकिमिपुंजकरंडउ देहु परिट्ठिउ मासहु पिंडउ[7]।
पावयम्म पुरिलोएं[8] तज्जिय बंधवयणभत्तारविवज्जिय[9]।
जणि भिक्ख वि मग्गंति ण पावइ पाविट्ठहं को वण्णइ आवइ।
भोयणु धणु हियवइ सुमरेप्पिणु[10] मुय सा सुण्णालइ पइसेप्पिणु[11]।
णियवरइत्तहु मंदिरि सुंदरि हूई दीहदेह[12] छुच्छुंदरि।
धाइय रमणहु उवरि सणेहें तेण वि सभयचमक्कियदेहें[13]।
घल्लिय अच्छोडिवि घरपंगणि[14] अंगरुहिरु उच्छलिउं णहंगणि।
मुय[15] तहिं पुणु[16] गद्दहजम्मंतरु भुत्तउं भीसणु दुक्खु णिरंतरु।
पुव्वब्भासें णयणपियारउं घरु आवंतु सणाहहु केरउं।
चंडदंडसिलघाएं तासिउ गद्दहु बडुवएहिं[17] विद्धंसिउ।
अवडि पडिउ[18] मुउ सूवरु[19] जायउ पेक्खिवि थोरमाससंघायउ।

घत्ता—सो खंडिवि पउलिवि घइ तलिवि[20] संभारंभें सिंचिवि।
खद्धउ जीहिंदियलुद्धइहिं[21] लोइहिं[22] लुंचिवि[23] लुंचिवि ॥4॥

(5)

दुवई—मंदिरणामगामि[1] मंडुक्किहि [2]मच्छंधिणिहि हूइया।
सूयरु[3] मरिवि पुत्ति दुग्गंधतणू णामेण पूइया ॥छ॥

रक्त, पीप और कीड़ों का पिण्ड बनकर मांस का पिण्ड रह गया। उस पापशीला का नगर के लोगों ने तिरस्कार किया। वह भाई, बन्धु और पति के द्वारा छोड़ दी गयी। लोगों से भीख माँगने लगी, लेकिन वह भी उसे नहीं मिलती थी। पापियों की आपत्ति का कौन वर्णन कर सकता है ? अपने हृदय में भोजन और धन का स्मरण करती हुई वह एक सूने घर में घुसकर मर गयी और अपने ही पति के सुन्दर घर में छछूँन्दर हुई। वह स्नेह से अपने पति के ऊपर दौड़ी। भय से चौंकते हुए शरीरवाले उसने भी घायल कर, उसे घर के बाहर फेंक दिया। उसके शरीर का खून आकाश में उछल रहा था। वहाँ से मरकर, उसने पुनः गधे के जन्म में निरन्तर भीषण दुःख उठाया। अपने पूर्व अभ्यास से अपने पति के सुन्दर घर आते हुए उस गधे की बहुत से छात्रों ने डण्डे और पत्थरों के प्रचण्ड आघातों से त्रस्त कर दुर्दशा कर डाली। तब कुँए में गिरकर वह मर गया और सुअर हुआ। उस स्थूल मांस का समूह देखकर—

घत्ता—उसके टुकड़े-टुकड़े कर, पकाकर, घी में तलकर, सम्भार के जल में बघारकर, जीभ के लोभी लोगों ने लोंच-लोंचकर उसे खा लिया।

(5)

वह सुअर मरकर, मन्दिर नाम के गाँव में मण्डूकी मछियारिन की अत्यन्त दुर्गन्धित शरीरवाली पूतिका

---

7. S उंडउ। 8. APS पुरलोएं। 9. P बंधवजण°। 10. APS सुमरेप्पिणु। 11. S पएसेप्पिणु। 12. P देहदेह। 13. PS °चवक्किय°। 14. BP °पंगणे। 15. APS मय। 16. AP गय for पुणु। 17. AP बडुयएहिं। 18. P वडिउ। 19. APS सूयरु। 20. AP तलियउ। 21. APS °लुद्धएण; B °लुद्धयहिं। 22. APS लोएण; लोएहिं। 23. P लुंचिवि once.

(5) 1. S °णामग्गामे। 2. S omits मच्छंधिणिहि। 3. B सूअर।

मायइ मइयइ मायामहियइ[4] पालियकरुणाभावें[5] सहियइ।
बप्पु ताहि कहिं जीवइ[6] पावहि बहुदालिद्दुक्खसंतावहि।
[7]विदिगिच्छासरितीरि[8] अहिट्ठिहि मुणिहि समाहिगुत्तपरमेट्ठिहि।
चिरु दप्पणि[9] दिट्ठहु तहु संतहु पडिमाजोयठियहु भयवंतहु।
दंसमसय णिवडंत णिवारइ चेलंचलपवणेणोसारइ।
दुरियतिमिरहर णासियबहुभव मलइ चलण[10] कोमलकरपल्लव।
संजमभारु[11] वहंतहं संतहं जेण चाडु विरइउं गुणवंतहं।
तासु किलेसु असेसु वि णासइ रविउग्गमणि धम्मु रिसि भासइ।

घत्ता—तुहुं [12]पुत्तिइ जीवहं करहि दय मज्जु मासु महु वज्जहि।
दुज्जयबल[13] पंचिंदिय जिणिवि जिणु[14] मणसुद्धिइ पुज्जहि ॥5॥

(6)

दुवई—इय धम्मक्खराइं आयण्णिवि [1]मण्णिवि ताइ कण्णए।
अणुवयगुणव्वयाइं [2]पडिवण्णइं उवसमरसपसण्णए[3] ॥छ॥
मुणिपायारविंदु[4] सेवंतिहि णियजम्मंतराइं णिसुणंतिहि।
[5]भोयदेहसंसारविहेयउ हियउल्लइ वड्ढिउ णिव्वेयउ।

नाम की पुत्री हुआ। माँ के मर जाने पर, स्नेहमयी आजी न करुणाभाव से उसका पालन-पोषण किया। बहुत दारिद्र्य और दुःख से सन्तप्त उस पापिनी का पिता भी कहाँ जी सकता था ? विदिगिच्छा नदी के किनारे विराजमान ऐश्वर्यसम्पन्न महामुनि परमेष्ठी समाधिगुप्त प्रतिमायोग में स्थित थे, जिनको उसने पहले जन्म में दर्पण में देखा था। वह उनके शरीर पर आते हुए डाँस-मच्छरों का अपने वस्त्र के अंचल की हवा से निवारण करती है, और उनके पापरूपी अन्धकार को नष्ट करनेवाले चरणों को कोमल हस्त-पल्लव से मलती है। इस प्रकार संयम के भार को वहन करते हुए गुणवान् महामुनि की उसने सेवा की। उनका समस्त क्लेश दूर हो गया। सूर्योदय होने पर महामुनि ने उसे धर्म का उपदेश दिया।

घत्ता—"हे पुत्री ! तू जीवों की दया कर, मद्य, मांस और मधु का त्याग कर। अजेयबलवाली पाँचों इन्द्रियों को जीतकर शुद्धमन से जिन की पूजा कर।"

(6)

इस प्रकार धर्म के अक्षरों को सुनकर और उन्हें मानकर उपशमभाव से प्रसन्न उस कन्या ने अणुव्रत और गुणव्रत स्वीकार कर लिये। मुनि के चरण-कमलों की सेवा करते हुए और अपने जन्मान्तरों को सुनते हुए उसके हृदय में भोग, देह और संसार सम्बन्धों से निर्वेद उत्पन्न हो गया। एक गाँव से दूसरे गाँव जाते

---

4. A मायासहियए। 5. P °भाषए। 6. B जीवहि। 7. A विदिगिंछा°, B थिविगिंछा°; PS विजिगिच्छा°. 8. P °मरे। 9. A दप्पणु। 10. APS °चरण। 11. AS संजमसारु महंतु वहंतहं; B संजमसारु वहंतु वहंतहं; PAls संजमभारु महंतु वहंतहं। 12. BS पुत्तिय। 13. P omits "बल" 14. S omits जिणु।

(6) 1. S omits मण्णिवि। 2. S omits पडिवण्णइं। 3. B °रससंपुण्णइए। 4. P °विंद। 5. B °थिदेहउ।

गामा गामंतरु हिंडंतिहि अज्जियाहिं सहुं जिण वंदंतिहि।
गयइ कालि जरकंथाधारिणि पासुयपाणाहारविहारिणि।
सिट्ठसिट्ठणिट्ठाइ सुणिट्ठिय वउ[6] चरंति गिरिविवरि परिट्ठिय।
पव्वि पव्वि उववासु करंती दुक्कियाइं घोराइं हरंती।
अण्णइ बालइ बालवयंसिय पुण्णवंत तुहुं भणिवि पसंसिय।
अणसणु [7]करिवि तेत्थु मुणिमंतिणि हूई अच्चुइंदसीमंतिणि।
पणपण्णासपल्लथिरदेही रूवें जोव्वणेण सा[8] जेही।
तिहुयणि अण्ण[9] ण दीसइ तेही तं वण्णंती कइमइ केही।
चविवि विदब्भदेसि कुंडलपुरि वासवरायहु सइसिरिमइउरि।
आसि कालि जा होंती[10] बंभणि सा तुहुं एवहुं हूई रुप्पिणि।
घत्ता—कोसलपुरि भेसहु पुहइवइ मद्दि तासु पिय[11] गेहिणि।
सोहग्गभवणचूडामणि व णं सिसिरयरहु रोहिणि ॥6॥

(7)

दुवई—जायउ ताहं बिहिं मि सिसुपालु[1] कयारिवकंदभोयणो।
पसरियखरपयाव[2] मत्तंडु व चंडवहु[3] तिलोयणो ॥छ॥

हुए आर्यिकाओं के साथ जिनदेव की वन्दना करते हुए फटी कन्था (कथरी, गुदड़ी) धारण करनेवाली प्रासुक पान और आहार के साथ विहार करनेवाली, मुनियों द्वारा कथित निष्ठा में लीन वह व्रतों का आचरण करती हुई पर्वत-गुफा में प्रविष्ट हुई। प्रत्येक पर्व पर उपवास करती हुई और घोर पापों को नष्ट करती हुई, दूसरी बाल सखी के द्वारा 'तुम पुण्यवान हो'—यह कहकर प्रशंसित हुई। वहाँ पर उपवास करके एवं पंच णमोकार मन्त्र के साथ मरकर अच्युतेन्द्र स्वर्ग में इन्द्राणी हुई। पचास पल्यों तक स्थिर शरीरवाली वह शरीर और रूप में जैसी थी, वैसी दूसरी त्रिभुवन में भी दिखाई नहीं देती थी। उसका वर्णन करनेवाली कविमति भी वैसी है ? वहाँ से च्युत होकर विदर्भ देश के कुण्डलपुर में वासवराजा की सती श्रीमती के उर से उत्पन्न, पूर्व काल में जो ब्राह्मणी थी, वह इस समय तुम रुक्मणी हुई हो।

घत्ता—कोशलपुर में राजा भीष्मक है। मद्री उसकी प्रिय गृहिणी है। सौभाग्यभवन की चूडामणि वह ऐसी जान पड़ती है मानो चन्द्रमा की रोहिणी हो।

(7)

उन दोनों के शत्रुरूपी कन्द का भोजन करनेवाला, सूर्य के समान प्रखर प्रतापवाला और प्रचण्डों का वध

---

6. ABP वउ। 7. AP तेत्थु करेवि। 8. S सा जेजी। 9. P दीसइ अण्ण ण। 10. BS होंति। 11. S प्रिय।

(7) 1. B सिसुवालु। 2. P °पयाउ; S °पयाउ। 3. B चंडयवहु; P चंडु पहु।

अण्णहिं दिणि[4] णेमित्तिउ भासइ जें दिट्ठें तइयच्छि पणासइ[5]।
तहु हत्थेण मरणु पावेसइ मद्दीसुउ जमपुरु[6] जाएसइ।
तं सुइविरसु वयणु णिसुणेप्पिणु[7] मायापियरइं तणउ लएप्पिणु।
सहसा संगयाइं दारावइ दिट्ठउ हरि सिरिकयमारावइ।
तहंसणि भालयलुवरिट्ठउ[8] बालहु तइयउं णयणु पणट्ठउं।
जाणिउं तक्खणि मायाताएं पुत्तु मरेसइ महुमहघाएं।
भद्दिउ वारवार ओलग्गिवि पत्थिउ [9]मद्दिइ पायहिं लग्गिवि।
महुं तणुरुहहु रइयसुहिडाहहं पइं खमियव्वउं सउं अवराहहं।
तं पडिवण्णउं कण्हें मणहरु ताइं गयाइं पुणु वि णियपुरवरु।
वइरिहि सउं अवराहहं [10]पुण्णउं विसहिउं[11] हरिणा मद्दिहि दिण्णउं।
सो णिहणिवि तुहुं परिणिय कण्हें आणिय[12] दारावइ जसतण्हें।
तं णिसुणिवि मुणिवरकुल[13] वंदिउं अप्पुणु[14] देविइ पुणु पुणु णिंदिउ।
घत्ता—ता जंबवइ[15] णमंसियउ पुच्छिउ भावें[16] मुणिवरु।
आहासइ जलहरगहिरसरु णिसुणहि सुइ[17] सभवंतरु ॥7॥

करनेवाला शिव के समान शिशुपाल राजा नाम का पुत्र हुआ। एक दिन निमित्तशास्त्री कहता है—"जिसके देखने से तीसरी आँख मिट जाती है, उसके हाथ से मृत्यु को प्राप्त होगा और यह मद्रीपुत्र शिशुपाल यमपुर को जाएगा।" कानों को अप्रिय लगनेवाले इन शब्दों को सुनकर, माता-पिता पुत्र को लेकर शीघ्र द्वारावती गये और लक्ष्मी से काम को आपत्ति पैदा करनेवाले हरि से भेंट की। उनके देखने से बालक के भालतल पर स्थित तीसरा नेत्र मिट गया। माता-पिता ने उसी समय जान लिया कि कृष्ण के आघात से पुत्र की मृत्यु होगी। कृष्ण की बार-बार सेवा कर माद्री ने पैरों पर पड़कर प्रार्थना की कि सुधियों को ईर्ष्या उत्पन्न करनेवाले मेरे पुत्र के तुम सौ अपराध क्षमा कर देना। यह सुन्दर बात कृष्ण ने स्वीकार कर ली। वे लोग पुनः अपने घर चले गये। शत्रु के सौ अपराध पूरे हो गये; जैसा कि श्रीकृष्ण ने हँसते हुए माद्री से कहा था—उसको मारकर तूने कन्या का पाणिग्रहण किया। यश के लोभी तुम उसे द्वारावती ले आये। यह सुनकर उसने मुनिसंघ की वन्दना की और देवी ने बार-बार अपनी निन्दा की।

घत्ता—तब जाम्बवती ने नमस्कार किया और भावपूर्वक मुनिराज से पूछा। मेघ के समान गम्भीर स्वरवाले वे कहते हैं—हे पुत्री ! अपने जन्मान्तर सुनो।

4. S दिणिहि णिमित्तिउ। 5. AP विणासइ। 6. AS जमपुरि; B जमउरु। 7. S सुणेप्पिणु। 8. B °वरिट्ठिउं। 9. P मद्दए। 10. B पण्णउं। 11. P विसहिवि। 12. AP कय महएवि पेम्मजजतण्हें। 13. P °कुलु। 14. A अप्पउं; PS अप्पणु। 15. PAls. जंबवइए। 16. P मुणिवरु भावें। 17. B सइ।

(8)

दुवई—जंबूणामदीवि [1]पुव्विल्लविदेहइ[2] पुक्खलावई।
देसु असेसदेसलच्छीहरु[3] पसमियमाणवावई ॥छ॥

वीयसोयपुरि[4] दमयहु वणियहु देवमइ[5] त्ति घरिणि[5] [6]धणधणियहु।
देविल सुय सउमित्तहु दिण्णी पइमरणेण भोयणिव्विण्णी[7]।
मुणि जिणदेउ णाम आसंघिउ वम्महु ताइ तवेंणवलंघिउ[8]।
गुरुचरणारविंदु [9]सुमरेप्पिणु कालि पउण्णइ तेत्थु मरेप्पिणु।
देवय णवपल्लवपायवघणि उप्पण्णी मंदरणंदणवणि।
तहिं भुंजंतिहि[10] सोक्खु सहरिसहं चउरासीसहास गय वरिसहं।
पुणु महुसेणबंधुवइणामहं तुहुं हूई सि पुत्ति सुहकामहं।
बंधुजसंक विहियजिणसेवहु अवर धूय सुंदरि जिणदेवहु।
सा जिणयत्त णाम विक्खाई तुज्झु वयंसुल्लिय[11] पिय[12] हूई।
जिणकमकमलजुयलगयमइयउ बेण्णि वि संणासेण जि मुइयउ[13]।
पढमसग्गि तुहुं देवि कुबेरहु चिरसंचियसकम्मसुंदेरहु[14]।
पुणु वि [15]पुंडरिंकिणिपुरि तरुणिहि वज्जें वणिएं सुप्पहघरिणि।

(8)

जम्बूद्वीप के पूर्वविदेह में पुष्कलावती देश है। उसमें अशेष (सम्पूर्ण) देश की लक्ष्मी को धारण करनेवाले तथा मानवी आपत्तियों को शान्त करनेवाले वीतशोक नामक नगर में दमनक नामक धन से सम्पन्न वणिक की देवमती नाम की गृहिणी थी। उसकी पुत्री देविल सौमित्र को दी गयी थी, जो पति की मृत्यु हो जाने से भोगों से विरक्त हो गयी थी। वह मुनि जिनदेव की शरण में गयी। उनके तप के प्रभाव ने कामदेव को भी अतिक्रान्त कर दिया था। गुरु के चरणकमल की याद कर, समय पूरा होने पर, वहाँ से मरकर वह नव पल्लवोंवाले वृक्षों से सघन सुमेरुपर्वत के नन्दनवन में उत्पन्न हुई। वहाँ सुख भोगते हुए उसके हर्षपूर्वक चौरासी हजार वर्ष बीत गये। फिर तुम शुभकामवाली मधुसेन और बन्धुमती की बन्धुयशा नाम की पुत्री हुई। जिनवर की सेवा करनेवाले जिनदेव की एक और कन्या थी जो जिनदत्ता के नाम से विख्यात थी। वह तुम्हारी प्रिय सखी बन गयी। जिन भगवान् के चरणकमलों में अपनी मति को लगानेवाली वे दोनों संन्यासपूर्वक मर गयीं और प्रथम स्वर्ग में चिरसंचित अपने कर्म सौन्दर्यवाले कुबेर की तुम पुत्री हुई। फिर पुण्डरीकिणी नगरी में वज्रमुष्टि वणिक् की सुप्रभा नाम की युवती गृहिणी से, हे पुत्री ! तुम सुमति नाम

(8) 1. S पुव्विल्ल°; 2. B °विदेहे। 3. B असेसु। 4. B °सोयपउरि। 5. B देमइ। 6. D घरिणी। 6. PAls. धणधणियहो। 7. A सोयणि°। 8. ABP तवेण विलंघिउ। 9. P सुमरेप्पिणु। 10. A भुंजंतें सोक्खु; B भुंजंतिहिं सोक्खु; P भुंजंति सोक्ख सहयरिसहं। 11. B विअंसुलय। 12. S प्रिय। 13. ABS मइयउ। 14. B° सकम्मसंदेरहो; P सकम्मसंदेरहो। 15. AP पुंडरीकिणिउरि; Als. पुंडरीगिणि° against Mss; S पुंडरिंगिणिपुरि।

तुहुं सुय सुमइ णाम[16] संभूई ता[17] णं धम्में पेसिय[18] दूई।
सुव्वय भिक्खामग्गि[19] पइट्ठी भवणंगणि चडंति[20] पइं दिट्ठी।
सहुं पणिवाएं पय धोएप्पिणु[21] दिण्णउं दाणु समाणु[22] करेप्पिणु।
अवरु[23] वि तणुसंतवियपयासें रयणावलिणामेणुववासें[24]।
मुय संणासें णिरु णिम्मच्छर हूई बंभलोइ तुहुं अच्छर।
घत्ता—इह जंबूदीवइ वरभरहि इह [25]खयरंकिइ[26] महिहरि।
उत्तरसेढिहि[27] ससियरभवणि जणसंकुलि जंबूपुरि ॥8॥

(9)

दुवई—अरिकरिरत्तलित्तमुत्ताहलमंडियखग्गभासुरो[1]।
खगवइ जंबवंतु तहिं णिवसइ बलणिज्जियसुरासुरो ॥छ॥
जंबुसेणदेविहि गयवरगइ पुणु हूई[2] सि पुत्ति जंबावइ।
पवणवेयखयरहु कोमलियहि तुह मेहुणउ पुत्तु सामलियहि।
णमि णामें कामाउरु कंपइ एक्कहिं दिणि सो एम पजंपइ।
बालकयलिकंदलसोमाली माम माम जइ देसि ण साली[3]।
तो अवहरमि[4] णेमि[5] बलदप्पें तं णिसुणेवि तेण तुह बप्पें।
मच्छियविज्जइ सो खावाविउ भाइणेउ ससुरें संताविउ।

से उत्पन्न हुई। इतने में तुमने धर्म के द्वारा प्रेषित दूती के समान, भिक्षामार्ग में प्रविष्ट, घर के आँगन में चढ़ती हुई (चढ़कर आती हुई) सुव्रता आर्या को देखा। प्रणाम के साथ उनके चरणों को धोकर तुमने सम्मान के साथ दान (आहार-दान) दिया। और भी, शरीर को शान्त करने के प्रयासवाले रत्नावली नाम के उपवास और संन्यास से मरकर तुम ब्रह्मलोक में ईर्ष्या से रहित अप्सरा हुईं।

घत्ता—इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में विजयार्धपर्वत की उत्तर श्रेणी में जन-संकुल और चन्द्रमा के समान घरोंवाले जम्बूपुर में—

(9)

जाम्बवन्त नाम का विद्याधर राजा निवास करता था जो शत्रुगजों के खून से रंजित मोतियों से मण्डित खड्ग से भास्वर था और जिसने अपने बल से सुर-असुरों को जीत लिया था। हे पुत्री ! तुम फिर उसकी

किंणरपुरणाहेण ससल्लें[6] आवेप्पिणु ससयणवच्छल्लें।
मच्छियाउ[7] विद्धंसिवि घित्तउ जंबुकुमारु[8] तांव तहिं पत्तउ[9]।
णिरु गज्जंतु णाइ[10] खयसायरु जंबवंतसुउ[11] तेरउ भायरु।
तेण असेसउ विज्जउ छिण्णउ पडिभडणियरु दिसाबलि दिण्णउ।
णमिणा[12] सह दिणयरकरपविमलि जक्खमालि गउ णासिवि [13]णहयलि।
तहिं अवसरि संगामपियारउ जाइवि[14] कण्हहु अक्खइ णारउ।

घत्ता—जंबूपुरि जंबवंतखगहु जंबुसेण पणइणि सइ।
रूवें सोहग्गें णिरुवमिय ताहि[15] धीय जंबावइ ॥9॥

(10)

दुवई—ता [1]सरसुच्छुदंडकोवंडविसज्जियसरवियारिओ[2]।
रणि मयरद्धएण गरुडद्धउ कह वि हु ण मारिओ ॥छ॥

हरि असहंतु मयणबाणावलि गउ जिणपयणिहित्तकुसुमंजलि[3]।
खयरगिरिंदणियंबु पराइउ जाणिउ जंबवंतु[4] अवराइउ।
उववासिउ दब्भासणि सुत्तउ तावायउ सिणेहसंजुत्तउ।
जक्खिल चिरभवभाइ सहोयरु भासिवि तासु महासुक्कामरु।

ले जाऊँगा।" यह सुनकर तुम्हारे उन पिता ने मक्षिका विद्या से उसे कटवा दिया। इस प्रकार ससुर ने अपने भानजे को कष्ट दिया। तब किन्नर नगर के स्वामी यक्षमाली ने शल्यसहित, अपने स्वजन के वात्सल्य के कारण आकर मक्षिका विद्या को नष्ट करके फेंक दिया। इतने में जम्बुकुमार वहाँ आ पहुँचा—एकदम क्षयसमुद्र के समान गरजता हुआ; जाम्बवन्त का पुत्र और तुम्हार छोटा भाई। उसने समूची विद्या नष्ट कर दी और शत्रु योद्धा समूह की दिशाबलि दे दी। यक्षमली नमि के साथ दिनकर-किरणों से निर्मल आकाश में भाग गया। इसी अवसर पर संग्रामप्रिय नारद कृष्ण से कहते हैं—

घत्ता—जम्बूपुर में जाम्बवन्त विद्याधर की जम्बूसेना नाम की सती प्रणयिनी है। उसकी कन्या जाम्बवती रूप और सौभाग्य में अद्वितीय है।

(10)

सरस इक्षुदण्ड के धनुष से विसर्जित तीरों से विदारित करनेवाले गरुड़ध्वजी (कृष्ण) को युद्ध में कामदेव ने किसी प्रकार मारा भर नहीं। कामदेव की बाणावली को सहन नहीं करते हुए तथा जिन के चरणों में कुसमांजलि चढ़ानेवाले कृष्ण वहाँ गये। विद्याधर राजाओं का समूह आ गया। यह जानकर कि जाम्बवन्त

6. A सभल्लें। 7. AP मक्खियाउ। 8. B °कुमार। 9. S संपत्तउ। 10. B णामि। 11. BP °वंतु। 12. S भणिणा। 13. P महियले। 14. S जायवि। 15. AP जाहि।

(10) 1. S सुरसुच्छंदड°. 2. P °कोदंड°. 3. °णिहित्तु। 4. जंबुवंतु। 5. AP गरुडसीहि (B भीहि) वाहिणियहं विज्जहं। 6. S तियसाहिवु। 7. AP विवाणाहो

साहणविहि फणिखेयरपुज्जहं　　खोहणिमोहणिमारणविज्जहं[5]।
गउ तियसाहिउ[6] तियसविमाणहु[7]　　लग्गु जणद्दणु भणियविहाणहु।
मंतें खीरसमुद्दु रएप्पिणु　　तहिं अहिसयणहु उवरि चडेप्पिणु।
विज्जउ साहियाउ गोविंदें　　पुणु रणि जुज्झिवि समउं खगिंदें।
तुहुं परिणिय कण्हें बलगावें[8]　　महएवित्तु दिण्णु सब्भावें।
ता[9] जंबवइइ सभवु[10] सुणंतिइ　　मुणिकमकमलजुयलु[11] पणवंतिइ।

घत्ता—भत्तिइ पणिवाउ [12]करंतियइ संचियसुहदुहकम्मइं।
ता भणिउं सुसीमइ वज्जरहि महुं वि देव गयजम्मइं[13] ॥10॥

(11)

दुवई—पभणइ मुणिवरिंदु सुणि सुंदरि धादइसंडदीवए।
पुव्विल्लम्मि भाइ पुव्विल्लविदेहि पहुल्लणीवए ॥छ॥

मंगलवइजणवइ मंगलहरि　　रयणंचियइ[1] रयणसंचयपुरि[2]।
वीसदेउ[3] पहु देवि अणुंधरि　　मुउ पिययमु रणि अरिकरिवरहरि।
करि करवालु करालु करेप्पिणु　　उज्झाणाहें सहुं जुज्झेप्पिणु।
पणइणि समउं पइट्ठी हुयवहि　　पयडियथावरजंगमजियवहि।

अपराजेय है, वह दर्भासन पर बैठ गया। तब स्नेह से युक्त, पूर्वजन्म के भाई सहोदर यक्षिल, महाशुक्र स्वर्ग का देव वहाँ आया और उसने नागों और विद्याधरों से पूज्य क्षोभिनी, मोहिनी और मारण विद्याओं की साधनविधि बतायी। देव अपने देव विमान में चला गया। कृष्ण बताए हुए (विद्या साधन) विधान में लग गया। मन्त्र के द्वारा क्षीर समुद्र की रचना कर और उसमें नागशय्या पर चढ़कर गोविन्द ने विद्याएँ सिद्ध कर लीं और फिर युद्ध में विद्याधरेन्द्र के साथ लड़कर, बलगर्व के साथ तुमसे विवाह किया। सद्भावपूर्वक तुम्हें महादेवी का पद दिया। इतने में जाम्बवती के पूर्वजन्म सुनते हुए, मुनि के चरणकमलों का वन्दन करते हुए—

घत्ता—भक्ति से प्रणाम करते हुए सुसीमा ने कहा—"हे देव ! सुख-दुःख का संचय करनेवाले मेरे गतजन्मों को बताइए।"

(11)

मुनिवर कहते हैं—"हे सुन्दरी ! सुनो—धातकीखण्ड द्वीप के विकसित कदम्ब वृक्ष से युक्त पूर्व विदेह के मंगलावती जनपद में मंगलगृह रत्नसंचयपुर में राजा विश्वदेव और उसकी पत्नी अनुन्धरी देवी है। शत्रुरूपी गजों के लिए सिंह के समान उसका पति अपने हाथ में तलवार लेकर और अयोध्यानाथ के साथ जूझकर युद्ध में मारा गया। प्रकट है स्थावर और जंगम जीवों का वध जिसमें ऐसी आग में प्रणयिनी अनुन्धरी भी

(P विहाणओ also) । 8. S बलगामें । 9. P जा । 10. P सभउ; S सभमु । 11. ABP मुणि वंदियउ सीसु विहुणंतिए । 12. S करंतिए ।

(11) 1. S रयणंचिए । 2. B °संचिय° । 3. A वीसंदउ ।

विंतरसुरि[4] खयरायलि हूई दससहसइहं भुत्तविहूई।
भवविब्भमि भमेवि इह दीवइ भरहखेत्ति पुणु सामरिगामइ[5]।
यक्खहु[6] हलियहु रइरसवाहिणि देवसेण णामें तहु गेहिणि।
तहि उप्पण्णी वरमुहसररुह जक्खदेवि णामें तहु[7] तणुरुह।
धम्मसेणु[8] मुणि महियाणंगउ कयमासोववासु खीणंगउ।
पय पक्खालेप्पिणु[9] विणु गावें ढोइउ तासु गासु पइं भावें।
घत्ता—अण्णहिं दिणि वणि कीलंति तुहुं महिहरविवरि पइट्ठी।
तहिं भीमें अजयरेण[10] गिलिय मुय सयणेहिं ण दिट्ठी ॥11॥

(12)

दुवई—हरिवरिसंतरालि[1] उप्पण्णी मज्झिमभोयभूमिहे।
किह आहारदाणु णउ दिज्जइ जिणवरमग्गगामिहे ॥छ॥
तहिं मरेवि बहुसोक्खणिरंतरि णायकुमारदेवि भवणंतरि।
पुणु इह पुव्वविदेहि मणोहरि देसि पुक्खलावइहि सुहंकरि।
पुरिहि पुंडरीकिणिहि[2] असोयहु[3] सोमसिरिहि भुंजियणिवभोयहु[4]।
सुय सिरिकंत णाम होएप्पिणु जिणयत्तहि [5]समीवि वउ[6] लेप्पिणु।
कणयावलिउववासु करेप्पिणु[7] सल्लेहणजुत्तीइ मरेप्पिणु।
जुइपब्भारपरज्जियचंदइ हूई देवि कप्पि माहिंदइ।

उसके साथ प्रवेश कर गयी। मरकर वह व्यन्तरलोक में विद्याधरी हुई। दस हजार वर्षों तक भोग भोगने के बाद और भव-विलासों में भ्रमण करने के बाद, इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में सामर गाँव में यक्ष नाम के किसान की, रतिरस की नदी, देवसेना नाम की गृहिणी थी। वह उसकी श्रेष्ठकमलमुखी यक्षदेवी नाम की कन्या हुई। अनंग को नष्ट करनेवाले, एक माह का उपवास करने के कारण क्षीणकाय, धर्मसेन नामक मुनि आये। बिना किसी गर्व के उनके चरणों का प्रक्षालन कर उसने भावपूर्वक उन्हें आहार दिया।

घत्ता—दूसरे दिन वन में खेलती हुई तुम पहाड़ के विवर में प्रवेश कर गयीं। वहाँ भयंकर अजगर के निगलने से तुम मर गयीं, स्वजन तुम्हें नहीं देख सके।

(12)

तुम मध्यमभोगभूमि के हरिवर्ष क्षेत्र में उत्पन्न हुई। अतः जिनवर-मार्ग में चलनेवालों को आहारदान क्यों न दिया जाए ? वहाँ से मरकर प्रचुर सुखों से निरन्तर भरपूर भवनवासी स्वर्ग में वह नागकुमार की देवी हुई। फिर, इस पूर्व विदेह में पुष्कलावती के सुन्दर शुभंकर देश में पुण्डरीकिणी नगरी के राजा के ऐश्वर्य को भोगनेवाले अशोक और सोमश्री की श्रीकान्ता नाम की पुत्री होकर तुमने जिनदत्ता के पास व्रत ग्रहण

4. S वेंतरसुर। 5. S °गावए। 6. APS जक्खहो। 7. AIs तुहुं। 8. P धम्मसेण। 9. AP पक्खालेप्पिणु पय विणु। 10. AS अंजगरेण।

(12) 1. B °वरसंतरालि। 2. S पुंडरिंगिणिहि। 3. A असोयहो। 4. A णिवभोयहो; S नृप°. 5. S समीवे। 6. K वउ। चरेप्पिणु; B धरेप्पिणु।
7. A सुरइपहगहो।

जणणिहिं जेट्ठहि णयणरविंदहु पुणु सुरट्ठवद्धणहु[9] णरिंदहु।
तुहुं[9] सुसीम सुय हरिघरिणित्तणु पत्ती माइ[10] परमगुणकित्तणु।
पुणु लक्खणइ[11] वियक्खणसारउ णियभव[12] पुच्छिउ देउ भडारउ।
अक्खइ गणहरु वरि[illegible]मेहइ [illegible]बूदीवइ [illegible]विदेहइ।
पवरपुक्खलावइविसयंतरि सारि अरट्ठिणयरि कुवलयसरि।
वासवराएं वसुमइदेविहि सिसु सुसेणु जायउ सियसेविहि।
ताएं संजमेण अइसइयउ सयरसेणपासि[13] तउ लइयउ।

घत्ता—अइअट्टज्झाणवसेण मुय पुत्तसणेहें[14] वसुमइ।
हूई [15]पुलिंदि गिरिवरकुहरि मिच्छत्तें मइलियमइ ॥12॥

(13)

दुवई—दिट्ठउ ताइ कहिं मि तहिं माणणि सायरणंदिवद्धणो।
चारणमुणिवरिंदु पणवेप्पिणु सिढिलियकम्मबंधणो ॥छ॥

सावयवयइं तेण तहि दिण्णइं उज्झियधम्मइं कम्मइं छिण्णइं।
भत्तपाणपरिचायपयासें सवरि मरेवि तेत्थु[1] संणासें।
हूई हावभावविब्भमखणि अट्ठमसग्गसुरिंदहु णच्चणि।
पुणु इह भरहखेत्ति खयरायलि दाहिणसेढिहि चंदयरुज्जलि।

कर लिये। रत्नावली उपवास कर तथा सल्लेखनाव्रत की विधि से मरकर, अपनी द्युति के प्रभाव से माहेन्द्र स्वर्ग में चन्द्रमा को जीतनेवाली देवी हुई। फिर, नेत्रों के लिए सूर्य के समान सुराष्ट्रवर्धन राजा की जेठी रानी से तुम सुसीमा नाम की कन्या उत्पन्न हुईं और फिर कृष्ण के परम गुण-कीर्तन से युक्त पत्नीत्व को प्राप्त हुईं। फिर, लक्ष्मणा ने अपने पूर्वजन्म पूछे। पण्डितश्रेष्ठ आदरणीय देव गणधर कहते हैं कि जम्बूद्वीप में मेघों से बरसते विदेहक्षेत्र में विशाल पुष्कलावती देश के अन्तर्गत कुवलयों की नदी अरिष्टा नाम की नगरी है। उसमें वासवराज की श्री से सेवित वसुमती देवी को सुषेण नाम का पुत्र हुआ। पिता ने सागरसेन मुनि के पास संयम से महान् तप ग्रहण कर लिया।

घत्ता—वसुमती रानी पुत्र के प्रेम में अत्यन्त आर्तध्यान से मरकर तथा मिथ्यात्व से मलिनमति होकर गिरिवर की गुफा में भीलनी हुई।

(13)

उसने वन में कहीं सागरनन्दिवर्द्धन मुनि के दर्शन किये। शिथिलित कर्मबन्धवाले चारणमुनि को प्रणाम किया। उन्होंने उसे श्रावकव्रत दिये। उसने धर्म से रहित कर्मों को काट दिया। भक्तप्राणों का त्याग करनेवाले प्रयास से युक्त संन्यास से वहाँ मरकर वह भीलनी आठवें स्वर्ग के इन्द्र की हावभाव और विभ्रम की खदान

9. B तुहं। 10. B मत्त। 11. A लक्खणपवियक्खण°. 12. ABS °भत्तु; P°भउ। 13. ABP सयरसेणपासि; सायरेण पासिलउ। 14. A °सिणेहें। 15. P पुलिंदिए।
(13) 1. S तित्थ।

पुरि चंदउरि [2]महिंदु महापहु तासु अणुंधरि णामें पियवहु।
तुहुं तहि कणयमाल देहुब्भव हूई हंसवंसवीणारव।
लइयउ पइं रइरमणरसालइ[3] वरु हरिवाहु सयंवरमालइ।
अण्णहिं दिणि तिहुयणचूडामणि[4] वंदिवि सिद्धकूडि जमहरमुणि।
वोलीणाइं भवाइं सुणेप्पिणु मुत्तावलिउववासु करेप्पिणु।
तइयसग्गि देविंदहु[5] वल्लह हूई पुण्णविहूणहु दुल्लह।
णवपल्लोवमाइं जीवेप्पिणु पुणु सुरबोंदि[6] अणिंद चएप्पिणु।
संवरराएं सिरिमइकंतहि तुहुं संजणिय विविहगुणवंतहि।
पउमसेणधुवसेणहु अणुई लक्खण णाम पुत्ति तणुतणुई।

घत्ता—पढमेव[7] पसंसिवि गुणसयइं णहसायरचलमयरें।
तुहुं आणिवि अप्पिय महुमहहु[8] पवणवेयवरखयरें ॥13॥

(14)

दुवई—तेण वि तुज्झु दिण्णु देवित्तणु पट्टणिबंधभूसियं[1]।
ता तीए वि णमिउ[2] णेमीसरु दुच्चरियं विणासियं ॥छ॥

पुच्छइ माहवु[3] मयणवियारा महुं अक्खहि वरयत्तभडारा।
गंधारि वि गोरि वि पोमावइ किह पत्ताउ भवेसु भवावइ।

नर्तकी हुई। इस भरतक्षेत्र के विजयार्धपर्वत की दक्षिण श्रेणी में चन्द्रकिरणों से उज्ज्वल चन्द्रपुर में महेन्द्र नामक महान् राजा था। उसकी अनुन्धरा नाम की प्रिय वधू हुई। तुम हंस और वीणा के समान स्वरवाली उसके शरीर से कनकमाला नाम से उत्पन्न हुई। तुमने रतिरस की घर स्वयंवरमाला से हरिवाहन को अपना वर बनाया। दूसरे किसी दिन त्रिभुवनश्रेष्ठ यमधर मुनि की सिद्धकूट पर्वत पर वन्दना कर और अपने बीते हुए पूर्व भव सुनकर तथा मुक्तावलि उपवास कर तीसरे स्वर्ग में देवेन्द्र की पत्नी हुई जो पुण्य से विहीन के लिए दुर्लभ है। नौ पल्य के बराबर आयु जीकर फिर देवशरीर से च्युत होकर, वह तुम संवर राजा की विविध गुणों से युक्त श्रीमती पत्नी के रूप में उत्पन्न हुई। पद्मसेना और ध्रुवसेना छोटी थीं और लक्ष्मणा सबसे छोटी थी।

घत्ता—आकाशरूपी समुद्र के मत्स्य पवनवेग विद्याधर ने पहले से ही सैकड़ों गुणों की प्रशंसा कर तुम्हें लाकर श्रीकृष्ण को सौंप दिया।

(14)

उन्होंने भी तुम्हें पट्टबन्ध से विभूषित देवीपद प्रदान किया। उसने भी नेमीश्वर को नमस्कार कर अपने दुश्चरित का नाश किया। कृष्ण पूछते हैं—"हे कामदेव को नाश करनेवाले परम आदरणीय ! बताइए, गान्धारी,

---

2. A महिंदु। 3. ABPAls. °रमणविसालए। 4. P तिहुयण°, S तिहूयण°। 5. देवेंदहो। 6. A सुरवंदि; BP सुरवोंदि; S सुरबोंदि। 7. AP पणवेवि पसंसवि। 8. S माहवहो।

(14) 1. B °णिबद्ध°। 2. S णविउ। 3. P माहउ।

भणइ भडारउ महुमह[4] मण्णहि गंधारिहि भवाइं आयण्णहि।
जंबुदीवि कोसलदेसंतरि पहु सिद्धत्थु अत्थि उज्झाउरि[5]।
विणयसिरि त्ति पत्ति पत्तलतणु बुद्धत्थहु करि दिण्णउं सुअसणु।
मुणिहि तेण पुण्णेणुत्तरकुरु[6] तहिं मुउ णाहु कहिं मि जायउ सुरु।
घरिणि मरेप्पिणु जोण्हारुंदहु चंदवई[7] पिय हूई चंदहु।
एत्थु दीवि पुणु खयरमहीहरि उत्तरसेढिहि णहवल्लहपुरि।
विज्जुवेयकंतहि[8] सद्दित्तिहि पुत्ति पहूई उत्तिमसत्तिहि[9]।
णिच्चालोयणयरि रुइरुंदहु णाम सुरूविणि[10] दिण्ण महिंदहु।
मुणि विणीयचारणु वंदेप्पिणु अण्णहिं दिवसि[11] धम्मु णिसुणेप्पिणु।

घत्ता—तउ लइउ महिंदें पत्थिविण पंच वि करणइं दंडियइं।
अट्ठ वि मय धाडिय[12] णिज्जिणिवि तिण्णि वि सल्लइं खंडियइं ॥14॥

(15)

दुवई—ताइ सुहद्दियाहि पयमूलइ मूलगुणेहिं[1] जुत्तउं।
तउ[2] अच्चंतघोरु मारावहु तणुतावयरु तत्तउं ॥छ॥
मुय[3] संणासें पुणु णिरु णिरुवमु पहिलइ सग्गि एक्कु पल्लोवमु।
भुत्तउं ताइ चारु देवित्तणु[4] ढुक्कउं तहिं वि कालि परियत्तणु[5]।

गोरी और पद्मावती पूर्वजन्मों में किन आपत्तियों को प्राप्त हुईं ?" आदरणीय कहते हैं—हे कृष्ण ! गान्धारी के जन्मान्तरों को सुनो और सत्य मानो। जम्बूद्वीप के कौशल देश में अयोध्यापुरी में राजा सिद्धार्थ था। उसकी विनयश्री पत्नी थी, जो दुबले-पतले शरीर की थी। उसने बुद्धार्थ मुनि के हाथ में आहार-दान दिया। उस पुण्य से मरकर उत्तरकुरु में कहीं पर उसका पति देव हुआ। गृहिणी मरकर ज्योत्स्ना से विशाल चन्द्रमा की प्रिया के समान चन्द्रावती देवी हुई। इसी द्वीप में फिर से विजयार्ध पर्वत की उत्तरश्रेणी के गगनवल्लभपुर में उत्तम शक्तिवाले सद्‌दीप्ति राजा और विद्युद्वेगा की पुत्री हुई। नित्यालोक नगर में कान्ति से महान् राजा महेन्द्र के लिए वह सुन्दरी दी गयी। वहाँ विनीतचारण मुनि की वन्दना कर, दूसरे दिन धर्म को सुनकर—

घत्ता—राजा महेन्द्र ने तप ले लिया, और पाँचों ही इन्द्रियों को दण्डित किया, आठों मदों का नाश किया और तीनों शल्यों को जीतकर उन्हें खण्डित कर दिया।

(15)

उसने भी सुभद्रा आर्यिका के चरणमूल में मूलगुणों से युक्त होकर अत्यन्त घोर काम का नाश करनेवाला तप किया। संन्यास से मरकर पुनः उसने पहले स्वर्ग में एक पल्य तक अत्यन्त अनुपम सुन्दर देवीत्व का भोग किया। समय होने पर, उसकी भी परिसमाप्ति हो गयी। यह गान्धार विषय में कोमल उद्यानवाले विशाल

4. B मउमह। 5. S उज्झापुरे। 6. S °णुत्तरु कुरु। 7. B चंदमई। 8. P विज्जावेय°. 9. A उत्तम°। 10. A सरूविणि। 11. S दिवसें। 12. A धाडिवि; B धाडिउ।
(15) 1. B °गुणाहिं। 2. PS तवु। 3. B मुइ। 4. S देवत्तणु। 5. APS परिवत्तणु।

इह गंधारिविसइ कोमलवणि [6]विउलपुक्खलावइवरपट्टणि।
सुपसिद्धहु रायहु इंदइरिहि असिधारादारियणियवइरिहि।
मेरुमईहि गब्भि उप्पण्णी धूय एह गंधारि रवण्णी।
किर मेहुणयहु दिज्जइ लग्गी अक्खिउं णारएण तुह जोग्गी।
पइं जाइवि तं पडिबलु जित्तउं कण्णरयणु एउं रणि हित्तउं।
णिसुणि साम पियराम पयासमि गोरीभवसंभवणु समासमि।
णायणयरि हेमाहु णरेसरु जससइभज्जथणंतरकयकरु[7]।
चारणु जसहरु पियइ णियच्छिउ वंदिवि णियजम्मंतरु पुच्छिउ।
तं[8] संभरिवि पइहि वक्खाणिउं जं णियगुरुसमीवि[9] सुवियाणिउं।
[10]वड्ढमाणपुरिसित्थीपंडइ[11] भणइ महासइ[12] धादइसंडइ।
पुव्वामरगिरिअवरविदेहइ पवरासोयणयरि वरगेहइ।
आणंदहु जाया[13] णियवस णंदयसा सयसा कयरइरस।
ताइ दयालुयाइ गुणवंतइ णवविहु[14] पुण्णवंतु वणिकंतइ।
दिण्णउं अण्णदाणु भयवंदहु[15] अमियाइहि[16] सायरहु मुणिंदहु।
णहि देवइं पच्चक्खइं आयइं पंचच्छरियइं घरि संजायइं।

पुष्कलावती श्रेष्ठ नगर के सुप्रसिद्ध, असि की धारा से अपने शत्रुओं का अन्त करनेवाले राजा इन्द्रगिरि की मेरुमती के गर्भ से उत्पन्न हुई कन्या सुन्दर गान्धारी है। जब यह मामा के लड़के को दी जाने लगी, तो नारद ने कहा कि यह तुम्हारे योग्य है। तुम वहाँ से चलकर शत्रुसेना को जीतकर इस कन्यारत्न को रण से उठा लाये। हे श्याम ! और प्रिय राम ! (बलराम) सुनो, संक्षेप में गोरी के जन्मान्तरों का कथन करता हूँ। नागपुर में हेमाभ नाम का राजा था जो अपनी यशस्वती भार्या के स्तनों के बीच में हाथ रखनेवाला था। एक दिन प्रिया ने यशोधरा चारण मुनि को देखा। उनकी वन्दना कर उसने अपने जन्मान्तर पूछे। उनसे अपने जन्मान्तर सुनकर उसने अपने पति के लिए बताया जो उसने गुरु के समीप जाना था। वह महासती कहती है कि जिसमें पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक वृद्धि पर हैं, ऐसे धातकीखण्ड द्वीप में पूर्व विजयार्ध पर्वत के पश्चिम विदेह में उत्तम गृहोंवाला अशोकनगर है। आनन्द की आज्ञाकारिणी, यशवाली, रतिरस माननेवाली नन्दयशा नाम की सेठ की पत्नी थी। उस गुणवन्ती दयालु सेठानी ने निर्भय अमितसागर मुनीन्द्र को पुण्यवान् नौ प्रकार का आहार दान दिया। आकाश में देव प्रत्यक्षरूप से आये और घर में पाँच आश्चर्य प्रकट हुए।

---

6. B नरपुक्खलावइ°; S थिउले पोक्खलावइ° । 7. S °करकरू । 8. A omits this line. 9. AS °समीवि खलु जाणिउं; B °समीवि सुयाणिउं; P समीसुवियाणिउं । 10. BS वड्ढमाण°; P वद्धमाण° । 11. B पोरिसि थियसंडए । 12. AP महारिसि । 13. ABPS जाया जाया वस । 14. S णवविहपुण्णवंतु; P पुण्णु पत्तु; Als. णवविहपुण्णवंतवणि° । 15. AP हयणिंदहो; BAls. भयवंदहो । 16. P अमियायहि ।

घत्ता—मुय कालें जंतें मिगणयण[17] उत्तरकुरुहि हवेप्पिणु।
पुणु भावणिंदमहएवि[18] हुय हउं[19] उप्पण्ण चएप्पिणु ॥15॥

(16)

दुवई—पुणु[1] केयारणयरि णरवइसुय [2]संजमदमदयावरं[3]।
झत्ति समासिऊण सब्भावें [4]सायरयत्तमुणिवरं ॥छ॥

किउं तवचरणु परमरिसिआणइ मय[5] गय थिय सोहम्मविमाणइ।
सुमइहु समइहि[6] धणजलवाहहु कोसंबिहि णयरिहि वणिणाहहु।
पुणरवि अमरालावणिसद्दहि[7] हूई सुय सेट्ठिणिहि सुहद्दहि।
जणवएण कोक्किय सुहकम्मिणि धम्मसील सा णामें धम्मिणि।
अइसंतियहि[8] समीवि पसत्थी जिणवरगुणसंपत्ति वउत्थी[9]।
वीयसोयपुरि पुणु कयणिरइहि मेरुचंदरायहु चंदमइहि।
गोरी एह धीय उप्पण्णी विजयपुरेसें विजएं दिण्णी।
आणिवि तुज्झु कण्ह कयणेहें पइं वि अणंगबाणहयदेहें।
परिणिय पीणियरइमयरद्धउ महएवित्तणपट्टु[10] णिबद्धउ।
पुणु आहासइ देउ दियंबरु णिसुणहि[11] पोमावइजम्मंतरु।

घत्ता—आयु पूर्ण होने पर वह मृगनयनी मृत्यु को प्राप्त हुई और उत्तरकुरु में होती हुई फिर भवनवासी स्वर्ग में देवी हुई। वहाँ से आकर मैं उत्पन्न हुई हूँ।

(16)

केदार नगरी में राजा की पुत्री हुई और शीघ्र ही संयम, दम और दया में श्रेष्ठ सागरदत्त मुनिवर के पास सद्भाव से आश्रय लेकर मैंने परम ऋषि की आज्ञा से तपश्चरण किया और मरकर सौधर्म विमान में स्थित हुई। फिर कौशाम्बी नगरी में धन को पानी की तरह बहानेवाले अच्छी मतिवाले सुमति सेठ के यहाँ और फिर देवों के आलाप के समान शब्दोंवाली सुभद्रा सेठानी की पुत्री हुई। शुभ कर्म करनेवाली और धर्मात्मा कहकर उस धर्मशीला को पुकारना आरम्भ कर दिया। फिर अतिशान्ति आर्या के पास प्रशस्त जिनवर गुणों को प्राप्त व्रतों में स्थित वह, वीतशोकनगर के पुण्यरत मेरुचन्द्र राजा और चन्द्रमती की गौरी नाम की यह पुत्री उत्पन्न हुई जो विजयपुर के नरेश विजय ने दी है। हे कृष्ण ! प्रेम करनेवाले और कामदेव के तीरों से आहत शरीर तुमने भी उससे विवाह कर लिया तथा कामदेव को प्रसन्न करनेवाला महादेवी का पट्ट उसे बाँध दिया। दिगम्बर मुनि पुनः कहते हैं—अब पद्मावती के जन्मान्तर सुनो। यहाँ उज्जैन में विजय नाम

---

17. AP मिग°; P मिगणयणे। 18. B भावणिंद°। 19. A तहे तं देहु मुएप्पिणु; P हउं तं देहु मुएप्पिणु।

(16) 1. B पुण। 2. P समसंजमदया°। 3. P °दयाधरं। 4. A सायरपरमभुणिवरं; BP सायरदत्त°। 5. P मुय। 6. P सुमइहे। 7. A अमलालाविणि°; PS °लाविणि°। 8. BS अइयरवंति°। 9. BPS add after this : सा मह (P महि) सुक्कसग्गे देवी हुय, तेत्थु सोक्खु भुंजेवि पुणरवि चुय। 10. AP °त्तणे; BS °त्तणु। 11. S णिसुणइ। 12. S सकंसउ।

एत्थु जि उज्जेणिहि विजयंकउ　　पहु सोमत्तगुणेण ससंकउ[12]।
तासु देवि अवराइय[13] णामें　　गुणमंडिय धणुलट्ठि व[14] कामें।
घत्ता—तहि पुत्ति सलक्खण विणयसिरि हत्थसीसपुरि[15] रायहु।
दिण्णी हरिसेणहु हरिसिएण ताएं लच्छिमहायहु ॥16॥

(17)

दुवई—गयपंचेंदियत्थपरमत्थसिरीरयरमणधुत्तहो[1]।
दिण्णउं ताइ भोज्जु घरु आयहु[2] रिसिहि समाहिगुत्तहो ॥छ॥
तेण फलेण सोक्खसंपत्तिहि　　हुय हेमवयइ भोयधरित्तिहि।
पुणु वि वरामरचित्तणिरोहिणि　　हूई देवहु[3] चंदहु रोहिणि।
एक्कु पल्लु तहिं सुहुं माणेप्पिणु　　जोइसजम्मसरीरु[4] मुएप्पिणु।
धणकणपउरि मगहदेसंतरि　　सामलगामि[5] वेणुविरइयघरि।
विजयदेवहलियहु पिय देविल　　सुमुहि[6] सुभासिणि सुहयलयाइल।
पउमदेवि तहु[7] दुहिय घणत्थणि　　सा चंदाणी गुणचिंतामणि।
रिसिणाहहु कर मउलि करेप्पिणु　　वरधम्महु पयाइं पणवेप्पिणु।
गहिउं ताइ रसणिंदियणिग्गहु　　अवियाणियतरुहलहु अवग्गहु।

का राजा था जो सौमित्र के गुणों से सशंकित था। उसकी अपराजिता नाम की देवी थी। गुणों से मण्डित वह कामदेव की धनुर्लता के समान थी।

घत्ता—उसकी लक्ष्मीवती पुत्री विजयश्री थी जिसे लक्ष्मी से सम्पन्न हस्तिनापुर के राजा हरिषेण को पिता ने हर्ष के साथ दे दिया।

(17)

पाँच इन्द्रियों के विषयों से रहित तथा परमार्थ-लक्ष्मी में रमण करने में कुशल घर आये हुए समाधिगुप्त मुनि को उसने आहार-दान दिया। उसके फल से वह सुख-सम्पत्ति से भरपूर भोगभूमि में हेमवती हुई। फिर उत्तम देवों के चित्तों का निरोध करनेवाली वह देव की देवी हुई, उसी प्रकार जिस प्रकार चन्द्रमा की रोहिणी। वहाँ एक पल्य पर्यन्त सुख मानकर ज्योतिर्जन्य शरीर का त्यागकर धान्यकण से प्रचुर मगध देश के, बाँस से निर्मित घरोंवाले शालिग्राम में विजयदेव हलधर की सुमुखी, मीठा बोलनेवाली, और सौन्दर्य लता की भूमि देविल प्रिया थी। उसकी वह पद्मादेवी नाम की सघन स्तनोंवाली कन्या हुई, जो गुणों की चिन्तामणि, रोहिणी का जीव थी। उसने मुनिवर के लिए हाथ जोड़कर और श्रेष्ठ धर्मवाले उनके पैर पड़कर रसना इन्द्रिय के निग्रह का व्रत ग्रहण कर लिया कि—वह नहीं जाने हुए फल को ग्रहण नहीं करेगी। मुख की हवा से विलसित

13. S अयराय। 14. S य for व। 15. P हत्थिसीसे।
(17) 1. B °रइरमण°। 2. B आयहि। 3. APS देवय। 4. S °सरीर। 5. A सामरिगामे; BPS सामलिगामे। 6. B समुहि। 7. APS तहि।

मुहमरुविलसियभिंगयसद्दहिं[8] णिहउ[9] गाउं णाहलहिं रउद्दहिं।
भवणदविणणासें[10] विद्दाणउ भइयइ लोउ असेसु पलाणउ।

घत्ता—गउ काणणु जणु णिरु दुक्खियउ[11] विसवेल्लिहि फलु भक्खइ।
अमुणंतणामु[12] सा हलियसुय पर तं किं पि ण चक्खइ ॥17॥

(18)

दुवई—मुउ [1]णरणियरु [illegible]हु वयभंग[illegible] ण खाइ[2] विसहलं।
जीविय पउमदेवि विहुरे[3] वि मणं गरुयाण[4] णिच्चलं ॥छ॥

कालें मय गय सा हिमवयहु[5] देसहु कप्परुक्खभोयमयहु।
पलिओवमु जि तेत्थु जीवेप्पिणु भोयभूमिमणुयत्तु मुएप्पिणु[6]।
दीवि सयंपहि देवि सयंपह सुरहु सयंपहणामहु मणमह।
हुई पुणु[7] इह दीवि[8] सुहावहि चंदसूरभावंकइ भारहि।
चारुजयंतणयरि विक्खायहु सिरिमंतहु सिरिसिरिहररायहु।
सिरिमइदेविहि विमलसिरी सुय णवमालइमालाकोमलभुय।
दिण्णी जणणें पालियणायहु[9] भद्दिलपुरवरि मेहणिणायहु।
तिविहेण वि णिव्वेएं लइयउ रज्जु[10] मुएवि सो वि पव्वइयउ।

भौंरों के शब्दवाले भयंकर भीलों ने उस गाँव को नष्ट कर दिया। घर और धन के नाश से दुःखी सभी लोग वहाँ से भाग खड़े हुए।

घत्ता—लोग जंगल में गये और अत्यन्त दुःखी होकर उन्होंने विषबेल का फल खा लिया। लेकिन उस कृषक कन्या ने फल का नाम न जानने के कारण उसे नहीं खाया।

(18)

समस्त जनसमूह मर गया। लेकिन व्रत भंग होने के भय से उसने विषफल नहीं खाया और इस प्रकार पद्मादेवी जीवित रहती है। महान् लोगों का मन संकट में भी निश्चल रहता है। समय के साथ मरकर वह कल्पवृक्ष के भोगवाले हिमवन्त क्षेत्र में उत्पन्न हुई। वहाँ एक पल्य तक जीवित रहकर भोगभूमि के मनुष्यत्व को छोड़कर स्वयंप्रभ द्वीप के स्वयंप्रभ देव की स्वयंप्रभा नाम की देवी हुई। फिर, इस जम्बूद्वीप के सुखावह, चन्द्रमा और सूर्य की आभा से अंकित भारत में सुन्दर जयन्तनगर में श्रीमन्त श्री श्रीधर नाम के राजा और श्रीमती देवी की नवमालतीमाला के समान कोमल भुजावाली विमलश्री नाम की पुत्री हुई। पिता ने उसे न्याय का पालन करनेवाले भद्दिलपुर के मेघघोष को दे दिया। तीन प्रकार से निर्वेद लेकर और राज्य छोड़कर वह भी प्रव्रजित हो गया।

---

8. B °भिंगय° । 9. AP गहिउ । 10. A भवणे दविणु । 11. BP भुक्खियउ । B records a p: 'जण णिरु दुक्खियउ' या पाठः । 12. ABPS अमुणंति ।

(18) 1. S जणणियरु । 2. BAls.खाएवि विसहलं and Als. thinks that वि in his other Ms is lost. 3. A विहुरेवि । 4. A गरुयाण ; P गरुयाण । 5. APS हेमवयहो । 6. S मुयेप्पिणु । 7. P पुण । 8. B देवि । 9. S °णाहहो । 10. AP वरधम्महो समीवि पावइयउ ।

घत्ता—मुउ जइवरु हुउ सहसारवइ मेहराउ[11] मेहाणिहि।
गोवइखंतिहि[12] पासि कय विमलसिरीइ[13] सुतवविहि ॥18॥

(19)

दुवई—अच्छच्छंबिलेण[1] भुंजंती अणवरयं सुरीणिया।
जाया तस्स[2] चेय णियदइयहु पवरच्छरपहाणिया ॥छ॥

पुणु अरिट्ठपुरि सुरपुरसिरिहरि रयणसिहरणियरंचियमंदिरि।
मरुणच्चवियमंदणंदणवणि [3]हिंडिरकोइलकुलकलणीसणि[4]।
राउ हिरण्णवम्मु[5] णिम्मलमइ तासु घरिणि वल्लह सिरिमइ सइ।
ताहि गब्भि सहसारेंदाणी[6] सिरिघणरवहु चिराणी राणी।
पोमावइ हूई णियपिउपुरि[7] एयइ तुहुं वरिओ सि सयंवरि।
कुसुममाल उरि घित्त गुरुक्की णं कामें बाणावलि मुक्की।
पइं मि कण्ह सुललिय गब्भेसरि कय महएवि देवि[8] परमेसरि।
जहिं संसारहु आइ ण दीसइ केत्तिउं तहिं जम्मावलि सीसइ।
णिव[9] अण्णण्णहिं भावहिं वच्चइ जीउ[10] रंगगउ णडु जिह णच्चइ।

घत्ता—मेधानिधि मेघघोष मुनिवर मरकर सहस्रार स्वर्ग में इन्द्र हुआ। विमलश्री देवी ने भी गोवई आर्यिका के पास सुतपविधि स्वीकार कर ली।

(19)

आचाम्लवर्धन व्रत और उपवास करती हुई, अनवरत रूप से श्रान्त, वह भी अपने उसी पति की प्रवर प्रधान अप्सरा के रूप में उत्पन्न हुई। फिर, जो इन्द्रपुर की शोभा का हरण करती है, जिसमें प्रासाद रत्नशिखरों के समूह से अंचित है, जिसमें हवा से नन्दनवन धीरे-धीरे आन्दोलित है और भ्रमण करती हुई कोयलों का कलकल शब्द हो रहा है, ऐसे अरिष्टपुर नगर में निर्मलमति हिरण्यवर्मा नाम का राजा था। उसकी प्रिय गृहिणी श्रीमती सती थी। उसके गर्भ से सहस्रार इन्द्र की इन्द्राणी, तथा राजा श्री मेघघोष की पुरानी रानी पद्मावती के रूप में उत्पन्न हुई। इस समय इसके द्वारा स्वयंवर में तुम्हारा वरण किया गया है। तुम्हारे उर में विशाल पुष्पमाला डाली है, मानो काम ने बाणावलि छोड़ी हो। हे सुन्दर कृष्ण ! तुमने भी गर्वेश्वरी परमेश्वरी देवी को महादेवी बना दिया है। जहाँ संसार का आदि नहीं दिखाई देता, वहाँ जन्मावलि के बारे में कितना कहा जाये ? हे राजन् ! यह जीव अन्य-अन्य भाव से जीता है और वह रंगमंच पर गये हुए

---

11. S मेहणाउ। 12. A पोमावइ°। 13. B विमलसरीए; S विपलसिरिए।

(19) 1. A अच्छच्छंबिलेण। 2. A तस्स देवि णिय°। 3. B हिंडिय°। 4. S °णीसरे। 5. P °वम्मु। 6. S सहसारिंदाणी। 7. AP णियपिय°। 8. P देवि गब्भेसरि। 9. S नृव। 10. BPS जिउ रंगगउ।

णच्चाविज्जइ चित्तायरियएं[11] [12]विविहकसायरायरसभरियएं[13]।
इय आयण्णिवि कुवलयणयणहि जय जय जय भणेवि भव्वयणहिं।
घत्ता—देवइयइ हरिणा हलहरिण महएविहिं अहिणंदिउ।
सिरिणेमिभडारउ भरहगुरु पुप्फयंतजिणु[14] वंदिउ ॥19॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे [15]गोविंदमहादेवीभवावलि[16]
वण्णणं णाम णवदिमो[17] परिच्छेउ समत्तो ॥90॥

नट की तरह नृत्य करता रहता है। विचित्र कषायों और राग-रस से भरे हुए चित्तरूपी आचार्य के द्वारा वह नचाया जाता है। यह सुनकर कुवलय नेत्रोंवाले भव्यजनों ने जय-जय-जय कहकर—

घत्ता—देवकी, श्रीकृष्ण, बलराम और महादेवियों ने उनका अभिनन्दन किया और भरत के गुरु पुष्पदन्त जिन के समान श्री आदरणीय नेमि भट्टारक की वन्दना की।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारोंवाले इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
वर्णन एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का गोविन्द-महादेवी-भवावलि
नाम का नब्बेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

11. P S चित्ताइरिएं। 12. P °रूय°। 13. PS °भरिएं। 14. P पुप्फदंतु। 15. S महाएवी°। 16. AS भवावण्णणं। 17. S णउदिमो।

एक्कणवदिमो संधि

[1]पज्जुण्णभवाइं[2] पुच्छिउ सीरहरेण मुणि।
तं णिसुणिवि तासु वयणविणिग्गउ[3] दिव्वझुणि ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

इह दीवि भरहि वरमगहदेसि पुरपट्टणणयरायरविसेसि।
दुब्भिरगोहणमाहिसपगामि[4] बहुसालिछेत्ति तहिं सालिगामि।
सोत्तिउ सुहुं[5] णिवसइ सोमदेउ कयसिहिविहि अग्गिलवहुसमेउ।
तहि पहिलारउ सिसु अग्गिभूइ लहुयारउ जायउ [6]वाउभूइ।
बिण्णि वि चउवेयसडंगधारि बिण्णि वि पंडियजणचित्तहारि।
ते अण्णहिं वासरि विहियजण्ण पुरु कहिं मि णंदिवद्धणु पवण्ण।
णच्चंतमोरकेक्कारवंति[7] तहिं [8]णंदिघोसणंदणवणंति।
कुसुमसरसिसिरकरकुइयराहु रिसि अवलोइउ रिसिसंघणाहु।
बिण्णि वि जण वेयायारणिट्ठ ते दुट्ठ कट्ठ दप्पिट्ठ धिट्ठ।
आवंत[9] णिहालिय जइवरेण[10] जइ बोल्लिय[11] मउ महुरें सरेण।

इक्यानवेवीं सन्धि

बलभद्र ने मुनि से प्रद्युम्न के जन्मान्तर पूछे। यह सुनकर उनके मख से दिव्यध्वनि निकली।

(1)

इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के पुर, पट्टन और नगर-समूह से विशिष्ट, दुधारू गायों और भैंसों से भरपूर, प्रचुर धान्य क्षेत्रोंवाले मगधदेश में शालिग्राम नाम का गाँव है। उसमें अग्निहोत्र यज्ञ करनेवाला सोमदेव ब्राह्मण अपनी अग्निला देवी के साथ सुख से रहता था। उसका पहला पुत्र अग्निभूति था और छोटा वायुभूति हुआ। दोनों ही चारों वेदों और छह अंगों को धारण करनेवाले थे। दोनों ही पण्डितों के चित्त का हरण करते थे। यज्ञ करनेवाले वे दोनों एक दिन किसी नन्दिवर्द्धन नगर में पहुँचे। वहाँ उन्होंने नाचते हुए मयूरों की केका-ध्वनि से सुन्दर नन्दिघोष युक्त नन्दनवन में कामदेव रूपी चन्द्रमा के लिए कुपित राहु के समान, मुनिसंघ के स्वामी मुनिवर को देखा। वे दोनों ही वैदिक आचार में निष्ठ थे। वे दुष्ट, कठोर, दर्पिष्ट और ढीठ थे। मुनिवर ने उन्हें आते हुए देख लिया। मधुर स्वर में उन्होंने धीरे से कहा–

---

(1) 1. P पहुण्ण°। 2. S °भावइं। 3. P °विणिग्गय। 4. A दुद्धिर°। 5. A सुउ; P सुहे। 6. PS वाइभूइ। 7. AP °किंकार°। 8. PS णंदघोस°। 9. S अवंत। 10. A जयवरेण। 11. A बोल्लिउ।

घत्ता—किज्जइ उप्पेक्ख पावि ण लग्गइ धम्ममइ।
लोयणपरिहीणु किं जाणइ णडणट्टगइ ॥1॥

(2)

गुरुवयणु सुणिवि खयकामकंद　थिय माणु लएप्पिणु मुणिवरिंद[2]।
जे खलु जोइवि णियतणु चयंति　उवसमि वि थंति जिणु संभरंति।
जे जीविउं मरणु वि समु गणंति　परु पहणंतु वि णउ पडिहणंति।
जे मिग[3] जिह णिज्जणि वणि वसंति　मुणिणाहहं ताहं मि वइरि होंति।
आया ते पभणिवि अभणियाइं　खमदमदिहिवंतहिं[4] णिसुणियाइं।
णिग्गय गय पिसुण पलंबबाहु　गामंतरि दिट्ठउ अवरु साहु।
सो भणिउ तेहिं रे मूढ णग्ग　मणमलिण मोक्खवाएण भग्ग।
पसु मारिवि खद्धु ण जण्णि मासु　तुम्हारिसाहं कहिं तियसवासु।
ता सच्चयमुणिवरु[5] भणइ एम्व　जइ हिंसायर णरा होंति देव।
तो[6] सूणागारहु पढमु[7] सग्गु　जाएसइ को पुणु णरयमग्गु[8]।
जंपिउं जणेण जइ भणइ[9] चारु　जायउ विप्पहं माणावहारु।
अण्णहिं दिणि जोइयभुयबलेहिं　णिवसंतहु संतहु वणि खलेहिं[9]।

घत्ता—उपेक्षा करनी चाहिए, पापी को धर्म की बुद्धि नहीं लगती। जो नेत्रों से परिहीन है, वह नृत्य की गति क्या जान सकता है ?

(2)

क्षीण हो गया है कामांकुर जिनका, ऐसे मुनिवरेन्द्र यह सुनकर मौन होकर स्थित हो गये। जो तृण देखकर चलते हैं, उपशम में स्थिर रहते हैं, जिनदेव का स्मरण करते हैं, जो जीवन और मृत्यु को समान गिनते हैं, दूसरे के प्रहार करने पर भी उसके प्रति प्रहार नहीं करते, जो पशुओं की तरह निर्जन वन में निवास करते हैं, ऐसे मुनिनाथों के भी शत्रु होते हैं। वे दोनों नहीं कहने योग्य कहने के लिए आये। लेकिन क्षमा, दम और धैर्य से युक्त उन्होंने उसे सह लिया। वे दुष्ट निकलकर चले गये। गाँव के भीतर उन्हें एक और मुनि मिले। उन दोनों ने उनसे कहा—"रे रे मूर्ख ! नंगे ! तुम मन से मैले और मोक्षरूपी वात से भग्न हो। तुमने यज्ञ में पशु मारकर नहीं खाया। तुम जैसे लोगों के लिए देववास कैसा ?"

इस पर सात्यकि मुनि कहते हैं—"यदि हिंसा करनेवाले मनुष्य देव होते हैं, तो कसाई के लिए सबसे पहले स्वर्ग मिलना चाहिए। और फिर तब नरक कौन जाएगा ?" लोगों ने कहा कि मुनि ठीक कहते हैं। ब्राह्मणों का इससे मानापहार हो गया। एक दिन, वन में निवास कर रहे उन पर अपना बाहुबल दिखाते

---

(2) 1. A °कंदु। 2. A °वरिंदु। 3. S मृग। 4. P °विहियंतहिं। 5. A सुच्चय°। 6. P ता। 7. BAls. पढमसग्गु। 8. B णयरमग्गु। 9. A दियखलेहिं; P वियखलेहिं।

आवाहिउ भीसणु असिपहारु कंचणजक्खें किउ[10] दिव्वचारु।
ते बिण्णि वि थंभिय खग्गहत्थ णं मट्टियमय[11] थिय किय णिरत्थ।
वरदेवपहावणिपीलियाइं अट्ठंगोवंगइं खीलियाइं।
अलियउं ण होइ जिणणाहसुत्तु पावेण पाउ खज्जइ णिरुत्तु।
घत्ता—तणुरुहतणुरोहु अवलोइवि उव्वेइयइं[12]।
मायापियराइं जक्खहु सरणु पराइयइं[13] ॥2॥

(3)

कंपंति णाइं खगहय भुयग जंपंति[1] विप्प महिणिवडियंग।
सोवण्णजक्ख जय सामिसाल रक्खहि अम्हारा बे वि बाल।
ता भणइ देउ पसुजीवहारि जइ ण करह[2] कम्मु[3] कुजम्मकारि।
हिंसाइ विवज्जिउ सच्चगम्मु[4] जइ पडिवज्जह जइणिंदधम्मु।
ता[5] करमि सुयंगइं मोक्कलाइं पेक्खहु अज्जु जि सुकियफलाइं।
गहियाइं तेहिं पालियदयाइं मायाभावें सावयवयाइं।
णिवडिय ते कुगइमहंधयारि णीसारसारि तंबारवारि।
अणुहविवभीमभवसयरुएहिं पुणु पालिउं वउं[6] दियवरसुएहिं।

हुए उन दुष्टों ने भीषण असिप्रहार किया। उस अवसर पर कांचन यक्ष ने सुन्दर आचरण किया। हाथ में तलवार लिये यक्ष के द्वारा वे दोनों कील दिये गये। उन्हें इस प्रकार निष्क्रिय कर देने पर वे ऐसे हो गये जैसे मिट्टी के बने हों। वरदेव के प्रभाव से निष्पीड़ित आठों अंगोपांग कील दिये गये। जिननाथ का कथन झूठा नहीं हो सकता। निश्चय ही पाप के द्वारा पाप खाया जाता है।

घत्ता—अपने पुत्रों का शरीररोध देखकर माता-पिता बहुत परेशान हुए और वे यक्ष की शरण में पहुँचे।

(3)

गरुड़ से आहत, साँप की तरह काँपते हुए और धरती पर पड़ते हुए वे कहते हैं—"हे स्वामिन् ! श्रेष्ठ कांचन यक्ष ! तुम्हारी जय हो। तुम हमारे दोनों पुत्रों की रक्षा करो।" तब देव कहता है—"यदि ये पशुओं को मारने और कुजन्म को करनेवाला कर्म नहीं करते और हिंसा से रहित सत्यगम्य जैनधर्म स्वीकार करते हैं, तो मैं पुत्रों के अंगों को मुक्त करता हूँ। आज ही तुम सुकृत का फल देखो।" तब उन्होंने, जिसमें दया का पालन है, ऐसे श्रावक-व्रतों को कपटभाव से स्वीकार कर लिया। वे भी कुगति के अधिकार से मुक्त, निःसारता से युक्त तम्बार नरक में जा पड़े। फिर सैकड़ों भयंकर संसार-रोगों का अनुभव करनेवाले उन द्विजवर पुत्रों ने व्रत का पालन किया। वे सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुए, और उन्होंने पाँच पल्य तक देवक्रीड़ाओं

---

10. APS कउ। 11. BS भट्टियम्किम थिय णर णिरत्थ। 12. B उव्वेइयउ। 13. B पराइयउ।

(3) 1. S जप्पंति। 2. AP करहु; S क्करह। 3. AP जण्णु। 4. P °कम्मु। 5. ABPS तो। 6. ABP वउं।

गय सोहम्महु कयसुरभोइ[7] भुंजाइं पंच पलिओवमाइं।
पुणु सिहरासियकीलंतखयरि इह दीवि भरहि साकेयणयरि।
णरणाहु अरिंजउ वइरितासु[8] वणि वणिउलपुंगमु[9] अरुहदासु।
वप्पसिरि घरिणि सुउ पुण्णभद्दु अण्णेक्कु वि जायउ माणिभद्दु।
घत्ता—सिद्धत्थवणंतु[10] सहुं राए जाइवि[11] वरइं।
गुरु णविवि महिंदु आयण्णिवि धम्मक्खरइं ॥3॥

(4)

णियलच्छि विइण्ण[1] अरिंदमासु पावइयउ जावउ अरुहदासु।
सिरसिहरचडावियणियभुएहिं पुणु मुणि पुच्छिउ वणिवरसुएहिं।
चिरभवमायापियराइं जाइं जायाइं भडारा केत्थु ताइं।
रिसि भणइ बद्धमिच्छत्तराउ जिणधम्मविरोहउ तुज्झु ताउ।
रयणप्पहसप्पावत्तविवरि हुउ णरइ णारयाढत्तसमरि।
अणुहुंजिवि तहिं[2] बहुदुक्खसंघु मायंगु पहूयउ कायजंघु।
कुलगव्वें णडियउ पावयम्मु सो सोमदेउ संपुण्णछम्मु[3]।
तहु मंदिरि तुम्हहुं बिहिं मि माय सा सारमेय[4] हूई वराय।
अग्गिलबंभणि तं सुणिवि तेहिं तहिं जाइवि[5] मउवयणामएहिं।

का वहाँ उपभोग किया। अनन्तर, इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, जिसके शिखरों पर पक्षी क्रीड़ा करते हैं ऐसे साकेत नगर में, शत्रुओं को सन्ताप देनेवाला अरिंजय नाम का राजा तथा वणिक् कुल में श्रेष्ठ अरुहदास नाम का वणिक् था। उसकी पत्नी वप्रश्री थी। उसका एक पूर्णभद्र पुत्र हुआ और दूसरा मणिभद्र हुआ।

घत्ता—सिद्धार्थ वन में राजा के साथ जाकर, महेन्द्र गुरु को नमस्कार कर तथा उत्तम धर्माक्षर (प्रवचन) सुनकर—

(4)

अरिंजय और अरुहदास अपनी लक्ष्मी वितरित कर प्रव्रजित हो गये। सिर रूपी शिखर पर अपने दोनों हाथ चढ़ाते हुए दोनों वणिक्पुत्रों ने मुनि से पूछा—"जो हमारे पूर्वभव के माता-पिता थे, आदरणीय वे कहाँ जन्मे ?" मुनि कहते हैं—"मिथ्यात्व के राग को बाँधनेवाले और जिनधर्म के विरोधी तुम्हारे पिता रत्नप्रभा नरक के सर्पावर्त बिल में उत्पन्न हुए हैं, जहाँ नारकियों के द्वारा युद्ध प्रारम्भ किया जाता है। वहाँ प्रचुर दुःख समूह को सहन करने के बाद कागजंघा नामक चाण्डाल हुआ। कुलगर्व से प्रतारित पापकर्मा वह पूरा पाखण्डी सोमदेव (तुम्हारा पिता), उसी के घर में तुम दोनों की वह माँ बेचारी कुतिया हुई जो अग्निला नाम की ब्राह्मणी थी।" यह सुनकर उन दोनों ने वहीं जाकर अपने मृदु वचनामृत से उन दोनों को सम्बोधित

7. A °सुहरमाइं; P सुररसाइं। 8. A वयरि°। 9. A वणिवरपुंगमु। 10. P °वणंते। 11. जाइ विरए।
(4) 1. B °वियिदिण्ण°। 2. S तेहिं। 3. A संपत्तछम्मु। 4. AP सारमेइ। 5. B जायवि।

संबोहियाइं बिण्णि वि जणाइं उवसंतइं जिणपयगयमणाइं।
मुउ कायजंघु कायवयविहीसु संजायउ णंदीसरि[6] णिहीसु।
परिपालियणियकुलहरकमेण[7] संजणिय णिवेणारिंदमेण।
अग्गिलसुणी वि सिरिमइहि धीय सुइ सुप्पबद्ध णामें विणीय।
घत्ता—आसीणणिवासु[8] अग्घोसियमंगलरवहु।।
णवजोव्वणि जंति बाल सयंवरमंडवहु[9]।।4।।

(5)

पइणाम पडिवज्जिवि णारिदेह मायंगजम्मु बहुपावगेहु।
सुणहत्तणु तं वज्जरिउ ताहि हलि अग्गिलि किं रइ तुह विवाहि।
तं णिसुणिवि सा संजयमणाहि[1] पावइय पासि पियदरिसणाहि।
तउ करिवि मरिवि सोहम्मि जाय मणिचूल णाम सुरवइहि जाय।
ते भायर सावयवय[2] धरेवि ते[3] पुण्णमाणिभद्दंक बे वि।
तत्थेव य वियलियमलविलेव जाया मणहर सावण्णदेव[4]।
वोलीणइ[5] देहि समुद्दकालि हुय[6] कुरुजंगलदेसंतरालि[7]।
गयउरि[8] णिउ णामें अरुहदासु कासव पिययम वल्लहिय तासु।
महु कीडय णामें ताहि[9] तणय ते जाया गुणगणजणियपणय।

किया। उनका मन शान्त होकर जिनचरणों में लग गया। व्रत की विधि का पालन करनेवाला कागजंघा मर कर नन्दीश्वर में यक्ष हो गया। अपने कुलगृह कर्म का पलन करनेवाले राजा अरिंदमन ने भी, अग्निला कुतिया को श्रीमती की पुत्री के रूप में, पवित्र सुप्रबुद्धा विनीता नाम से उत्पन्न किया।

घत्ता—जिसमें मंगल वर बुलाये गये हैं, ऐसे विवाह के मण्डप में जिसमें राजा लोग बैठे हैं, उस नवयौवना बाला के जाने पर,

(5)

पति (पूर्वभव का सोमदेव, अब यक्ष) ने मना करने के लिए वह नारी शरीर, अनेक पापों का घर चाण्डाल जन्म, वह कुतियापन, उसे बताया और बोला—"हला अग्निले ! क्या फिर से तुम्हारी विवाह में रति है ?" यह सुनकर वह संयम मनवाली प्रियदर्शना आर्यिका के पास प्रव्रजित हो गयी। तप कर और मरकर वह सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुई और मणिचूल नामक देव की देवी हो गयी। वे दोनों भाई पूर्णभद्र और मणिभद्र भी श्रावक व्रत ग्रहण कर वहीं पर मलविलेप से रहित होकर सुन्दर सामानिक देव हुए। एक सागर पर्यन्त समय बीतने पर और शरीर के च्युत होने पर कुरुजांगल देश के गजपुर में अरुहदास नाम का राजा था। उसकी प्रियतम पत्नी काश्यपी थी। वे दोनों उसके मधु और क्रीड़क नाम के पुत्र हुए जो अपने गुणगण से नम्रता प्रकट करनेवाले थे।

6. A णंदीसर° । 7. B °कुलहरणिय° । 8. A आसीणवराम् । 9. B °मंडहो।

(5) 1. P संयम° । 2. AP सावयवउ धरेवि । 3. B जे । 4. P सामण्ण° । 5. A वोलीणदेहि दुसमुद्द° । 6. P हुय । 7. AB °जंगालि । 8. A गयउरि णामें णिउ अरुहदासु । 9. A ताहे।

घत्ता—आयण्णिवि धम्मु भवसंसरणहु[10] संकियउ।
विमलप्पहपासि अरुहदासु दिक्खंकियउ ॥5॥

(6)

महु कीडय बद्धसणेहभाव[1]　　गयउरि संजाया[2] बे वि राय।
ता [3]अवरकंपपुरवइ पसण्णु　　कणयरहु णाम[4] कणयारवण्णु[5]।
आयउ किर किंकरु महुहि पासु　　ता तेण[6] वि इच्छिय घरिणि तासु।
पीणत्थणि णामें कणयमाल　　पहुमणि[7] उग्गय मयणग्गिजाल।
असहंतें पहुणा सरपिसक्कु　　उद्दालिय बहु वियलियवियक्कु[8]।
जडु दुजडतवसिपयमूलि[9] थक्कु　　तियसोएं[10] कउ तउ[11] भेसियक्कु।
कणयरहें सोसिउ णिययकाउ[12]　　विसहिउ दूसहु पंचग्गिताउ।
वंदेवि भडारउ विमलबाहु　　दुद्धरवयसंजमवारिवाहु।
परियाणिवि तच्चु तवेण तेहिं　　इंदत्तु पत्तु महुकीडवेहिं[13]।
चिरु दहमइ सग्गि महापसत्थु　　मणु रंजिवि भुंजिवि इंदियत्थु।
हरिमहएविहि रुप्पिणिहि गब्भि　　चंदु व संचरियउ[14] पविमलब्भि।
महु संभूयउ पज्जुण्णु णामु　　पसरियपयाउ रामाहिरामु।

घत्ता—भवभ्रमण से शंकित अरुहदास ने धर्म सुनकर विमलप्रभ के पास दीक्षा ग्रहण कर ली।

(6)

स्नेहभाव से बँधे हुए मधु और क्रीड़क दोनों गजपुर के राजा हो गये। इसी समय अमरकम्पपुर का राजा कनकरथ अत्यन्त प्रसन्न और कनेर के पुष्प के रंग का था। मधु के पास उसका अनुचर आया। उसने भी उसकी गृहिणी पीनस्तनवाली कनकमाला को पसन्द कर लिया। राजा मधु के मन में काम की ज्वाला भड़क उठी। कामदेव के तीर सहन न कर सकने के कारण राजा ने उस वधू को उड़ा लिया। विवेकशून्य होकर मूर्ख कनकरथ जटावाले तपस्वी के चरणों में बैठ गया और पत्नी के वियोग से दुःखी होकर उसने पंचाग्नि तप तपा। कनकरथ ने अपना शरीर सुखा डाला। उसने असह्य पंचाग्निताप सहा। दुर्धरव्रत और संयम के मेघ, विमलबाहु मुनि की वन्दना कर, तत्त्व को जानकर उन दोनों—मधु और क्रीड़क—ने तप से इन्द्रपद प्राप्त किया। बहुत समय तक दसवें स्वर्ग में महाप्रशस्त मन का रंजन कर, तथा इन्द्रियार्थ भोगकर कृष्ण की महादेवी रुक्मणी के गर्भ से मधु स्त्रियों के लिए रमणीय, प्रसरित प्रतापवाला प्रद्युम्न वैसे ही उत्पन्न हुआ, जैसे स्वच्छमेघों में से चन्द्रमा।

---

10. AP °संसरहो।

(6) 1. PS भाय। 2. AS जाया ते बे वि; P ते जाया बे वि। 3. AB अमरकम्प°; P अवरकंक°। 4. P णामु। 5. A कण्णयार°; S कणियार°। 6. AP तेण पलोइय। 7. महो मणि; P महुमणि। 8. B °वितक्कु। 9. D दुजड़ 10. S तृय°। 11. S तवु। 12. णियइ°। 13. P °कीडएहिं। 14. AP °चरियउ विमलअब्भि।

घत्ता—कणवरहु मरिवि जायउ भीसणवइरवसु[15]।
णहि जंतु विमाणु खलिउं कुइउ[16] जोइसतियसु ॥6॥

(7)

थक्कइ विमाणि सो[1] भिण्णकेउ आरूढउ[2] गज्जइ धूमकेउ।
चिरु जम्मंतरि सिसुहरिणणेत्तु अवहरिउं जेण मेरउं कलत्तु।
सो जायउ अज्जु जि एत्थु वेरि मरु मारमि[3] खलु णिव्वूढखेरि।
घल्लमि काणणि अविवेयभाउ[4] दुहुं अणुहुंजिवि जिह मरइ[5] पाउ।
गयणयललग्गतालीतमालि इय मंतिवि खयरवणंतरालि।
परियणु मोहेप्पिणु सयलणयरि सिसु घल्लिउ[6] तक्खयसिलहि उवरि[7]।
पुरि वड्ढिउ[8] सोउ महायणाहं हलहररुप्पिणिणारायणाहं[9]।
ता विउलि[10] सेलि वेयड्ढणामि अमयवइदेसि वित्थिण्णगामि।
दाहिणसेढिहि घणकूडणयरि णहसायरि[11] विलसियचिंधमयरि।
तहिं कालि कालसंवरु[12] खगिंदु गणियारिविहूसिउ णं गइंदु।
घत्ता—सविमाणारूढु कंचणमालइ समउं तहिं।
संपत्तउ राउ अच्छइ महुमहडिंभु जहिं ॥7॥

घत्ता—भीषण बैर के वशीभूत होकर कनकरथ ज्योतिष देव हुआ और आकाश में जाते हुए उसका विमान रुक गया। वह कुपित हो उठा।

(7)

विमान रुक जाने पर, उस पर आरूढ़ विद्धध्वज धूमकेतु गरजता है—"पिछले जन्म में जिसने मृगशावक के नेत्रोंवाली मेरी स्त्री का अपहरण किया था, वह शत्रु आज यहाँ उत्पन्न हुआ है। बढ़ते हुए द्वेषवाले उसको, लो, मैं मारता हूँ। उस विवेकशून्य को जंगल में फेंक देता हूँ, जिससे वह पापी दुःख का अनुभव करके मर जाए।" ऐसा विचार कर उस खेचर (विद्याधर) ने वन के अन्तराल में सम्पूर्ण नगरी और परिजनों को सम्मोहित कर उस शिशु को, आकाशतल से जा लगे हैं ताड़ और तमाल वृक्ष जिसमें ऐसी तक्षशिला पर पटक दिया। नगर में बलभद्र, नारायण और रुक्मणी आदि महाजनों में शोक छा (बढ़) गया। इसी समय विजयार्ध नगर के उस विशाल पर्वत पर विस्तीर्ण गाँवोंवाले अमृतवती देश में दक्षिण श्रेणी के मेघकूट नगर में, जो ऐसा लगता था कि शोभित चिह्न रूपी नगरोंवाला नभसागर हो, उसमें कालसंवर नरेश था। वह ऐसा था जैसे हथिनी से विभूषित हाथी हो।

घत्ता—कंचनमाला सहित अपने विमान में आरूढ़ वह देव वहाँ आया, जहाँ कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न था।

---

15. ABPS भीसणु। 16. A कुयउ।

(7) 1. A सौहिसकेउ। 2. AP आरूढउ। 3. S मारेमि। 4. S °भावु। 5. S मरण पावु। 6. S घत्तिय। 7. B उअरि; P उप्परि। 8. B वड्ढिउ। 9. B °रूपिणि°। 10. B विउल °। 11. APS णहसायर°। 12. D कालसंभवु।

(8)

अवलोइउ बालउ कर थिवंतु छुडु छुडु उग्गउ णं रवि तवंतु।
बोल्लिउ पहुणा लायण्णजुत्तु लइ लइ सुंदरि तुह होउ पुत्तु।
बालउ लक्खणलक्खंकियंगु रूवें णिच्छउ होसइ अणंगु।
ता ताइ लइउ सुउ ललियबाहु णं णियदेहहु मयणग्गिडाहु।
वरतणयलंभहरिसियमणाइ पुणु पत्थिउ णियपिययमु अणाइ।
परमेसर जइ मइं करहि कज्जु तो तुह परोक्खि एयहु जि रज्जु।
जिह होइ देव तिह देहि[1] वाय रक्खिज्जउ महु सोहग्गछाय।
तं णिसुणिवि पहुणा विप्फुरंतु उव्वेल्लिवि कंतहि कणयवत्तु।
बद्धउ पुत्तहु जुवरायपट्टु पुलएं जणणिहि कंचुउ विसट्टु।
घत्ता—णियणयरु गयाइं पुण्णपहावपहारियइं।
णंदणलाहेण बिण्णि वि हरिसाऊरियइं ॥8॥

(9)

मंदिरि मिलियइं सज्जणसयाइं णाणामंगलतुरइं हयाइं।
काणीणहुं दीणहुं दिण्णु[1] दाणु पूरियदिहि[2] अइइच्छापमाणु।

---

(8)

अपने हाथों को बढ़ाते हुए उसने बालक को देखा, मानो अभी-अभी ऊगा हुआ सूर्य आलोकित हो। राजा ने कहा—"हे सुन्दरी ! लावण्य से युक्त इसे ले लो। यह तुम्हारा पुत्र होगा। यह बालक लाखों लक्षणों से सहित है। रूप में निश्चित ही यह कामदेव होगा।" तब उसने सुन्दर बाँहोंवाले उस पुत्र को ले लिया, मानो वह जैसे अपने शरीर की मदनाग्नि की जलन हो। उत्तम पुत्र को पाने के कारण हर्षितमन उस रानी ने फिर अपने स्वामी से प्रार्थना की—"हे स्वामी ! यदि आप मेरी बात मानें तो आपके परोक्ष में राज्य जिस प्रकार इसका हो सके, उस प्रकार का वचन मुझे दीजिए और मेरी सौभाग्य छाया की रक्षा कीजिए।" यह सुनकर राजा ने चमकता हुआ कनकपत्र निकालकर पुत्र को युवराजपट्ट बाँध दिया। रोमांच से माता का कंचुक वस्त्र फट गया।

घत्ता—पुण्य प्रभाव की प्रभा से परिपूर्ण और पुत्र मिल जाने के कारण हर्ष से भरे हुए वे दोनों अपने नगर चले गये।

(9)

महल में पहुँचने पर सैकड़ों सज्जन उससे मिले। नाना मंगल तूर्य बजाये गये। व्यासों और दीनों को

---

(8) 1. S देवि थाय।

(9) 1. PS दिण्ण। 2. AP पूरियदिहियइं।

बंदियइं अणेयइं पुज्जियाइं कारागाराउ विसज्जियाइं।
विरइउ तणयहु उच्छवपयत्तु[3] तहु णामु[4] पइट्ठिउ देवयत्तु।
आणंदु पणच्चिउ सज्जणेहिं उच्छाहु विमुक्कउ दुज्जणेहिं।
णं कित्तिवेल्लिवित्थरिउ कंदु परिवुड्ढु[4] बालु णं बालयंदु।
संजाउ णिहिलविण्णाणकुसलु जिणणाहपायराईवभसलु।
मंडलियणियरकलियारएण एत्तहि हिंडंतें णारएण।
रुप्पिणिहि[5] महंतंगयविओउ कण्हहु जाइवि अवहरिउ सोउ।
णिवमउडरयणकंतिल्लपाय[6] गोविंद णिसुणि[7] रायाहिराय।
घत्ता—मेइणि विहरंतु पुव्वविदेहि पसण्णसरि[8]।
हउं गउ णरणाह चारु [9]पुंडरीकिणिणयरि[10] ॥9॥

(10)

तहिं महुं[1] विद्धंसियमयगहेण अक्खिउं अरुहेण[2] सयंपहेण।
जिह णिउ देवें वइरायरेण जिह घित्तु[3] रण्णि परमारएण।
जिह पालिउ अवरें खेयरेण सुउ पडिवज्जिवि पणयंकरेण[4]।
जिह जायउ सुंदरु णवजुवाणु सोलहसंवच्छरपरिपमाणु[5]।

दान दिया गया, जो भाग्य की पूर्ति करनेवाला और अति इच्छाओं के प्रभाव के अनुरूप था। अनेक वन्दियों का सम्मान किया गया और कारागार से उन्हें विसर्जित कर दिया गया। पुत्र का उत्सव प्रयत्न से किया गया और उसका नाम देवदत्त रखा गया। सज्जनों ने आनन्द मनाया और दुर्जनों का उत्साह चला गया। बालक बढ़ने लगा मानो कीर्तिरूपी लता का विस्तृत अंकुर हो, मानो बालचन्द्र हो। वह अखिल विज्ञानों में कुशल और जिननाथ के चरणकमलों की पंक्ति का भ्रमर हो गया। माण्डलीक राजाओं के समूह में कलह करानेवाले, भ्रमण करते हुए नारद ने जाकर यहाँ रुक्मणी और कृष्ण का महान् पुत्रवियोग और शोक दूर किया। राजाओं के मुकुटरत्नों से कान्तिमय-चरण, हे राजाधिराज गोविन्द ! सुनिए—

घत्ता—धरती पर विहार करते हुए पूर्व विदेह में लक्ष्मी से प्रसन्न सुन्दर पुण्डरीकिणी नगरी में, हे नरनाथ ! मैं गया था।

(10)

वहाँ मुझे कामदेव रूपी ग्रह को ध्वस्त करनेवाले अरहन्त स्वयंप्रभ ने बताया कि किस प्रकार शत्रुता रखनेवाला देव बालक को ले गया, और किस प्रकार दूसरों को मारनेवाले उसने उसे वन में फेंक दिया। किस प्रकार दूसरे प्रियंकर विद्याधर ने उसका पालन-पोषण किया, और किस प्रकार उसे अपना पुत्र माना। वह सुन्दर नवयुवक किस प्रकार सोलह वर्ष का हो गया। यह सुनकर रुक्मणी और कृष्ण का हर्ष आँसुओं

---

3. B उच्छउ। 4. B णाउ; S णाइं। 4. A परिवुड्ढु। 5. B रुपिणिहि। 6. S णव°। 7. S णिसुणेवि। 8. B °सिरि। 9. AS पुंडरिगिणि°; P पुंडरिकिणि°; 10. S °णयरहिं।

(10) 1. A मुह। 2. A अरहेण। 3. AP घित्तउ वणि। 4. P पणयंधरेण। 5. D संवत्सरपरियमाणु।

तं णिसुणिवि [6]रूविणिहिरिहि हरिसु संजायउ हरिसंसुयइ[7] वरिसु।
एत्तहि वि कुमारें हयमलेण रणि अग्गिराउ बंधिवि बलेण।
अप्पिउ णियतायहु णीससंतु अवलोइवि णंदणु गुणमहंतु।
कंचणमालहि कामग्गिजाल उड्डिय हियउल्लइ णिरु कराल।

घत्ता—अहिलसिउ सपुत्तु[8] मायइ विरहविसंठुलइ[9]।
कामहु बलवंतु को वि णत्थि मेइणियलइ ॥10॥

(11)

पंगणि[1] रंगंतु विसालणेत्तु जं उच्चाइउ धूलीविलित्तु।
जं थणचूयइ[2] लाइउ रुवंतु[3] जं कलरवु[4] परियंदिउ सुयंतु[5]।
जं जोइउ[6] णयणहिं वियसिएहिं जं बोल्लविउ पियजंपिएहिं[7]।
तं एवहि पेमुग्गयरसेण वीसरिय[8] सव्वु वम्महवसेण।
पुत्तु जि पइभावें लइउ ताइ संताविय मणरुहसिहिसिहाइ।
हक्कारिवि[9] दरिसिउ पेम्मभाउ तुहुं होहि देव खयराहिराउ।
मइं इच्छहि लइ पण्णत्ति विज्ज णिव्वूढमाण माणवमणोज्ज।
तं णिसुणिवि भासिउं तेण सामु करपल्लवि ढोइउं पाणिपोमु।

के रूप में बरस गया। यहाँ पर पवित्र कुमार ने अग्निराज को युद्ध में बलपूर्वक बाँधकर और सिसकते हुए उसे अपने पिता के लिए सौंप दिया। गुणों से महान् अपने पुत्र को देखकर कंचनमाला के हृदय में भयंकर कामज्वाला उठी।

घत्ता—विरह से अस्त-व्यस्त माँ अपने ही पुत्र को चाहने लगी। इस धरतीतल पर कामदेव से बलवान् दूसरा कोई नहीं है।

(11)

आँगन में चलते हुए जिस विशालनेत्र धूलधूसरित बालक को गोद में उठाया, रोते हुए जिसे अपने स्तन के अग्रभाग से लगाया, खिली हुई आँखों से जिसे देखा गया, सोते हुए जिसे सुन्दर लोरियाँ सुनायीं, इस समय वह प्रेम के उद्‌भव रस और कामदेव के वशीभूत होकर सब कुछ भूल गयी। उसने पुत्र को भी पतिभाव से लिया। वह कामदेव की अग्नि की ज्वाला से सन्तप्त हो उठी। बुलाकर उसने कुमार को प्रेमभाव दिखाया और कहा—"हे देव! तुम विद्याधर राजा बन जाओ। मान का निर्वाह करनेवाले हे मानव सुन्दर ! मुझसे प्रेम करो और यह प्रज्ञप्ति विद्या लो।" यह सुनकर उसने श्यामा से बात की और उसके करतल में अपना करकमल दे दिया, तथा हृदय के ऊपर के वस्त्र से अपने स्तन को प्रकट करनेवाली उसके द्वारा दी गयी

---

6. ABPS [illegible]। 7. A °सुयपयरिसु; Als. °सुयपयरिसु against Mss. 8. S सुपुत्तु। 9. APS मयणविसंठुलए; B records A p: मयण इति वा पाठः।

(11) 1. AP अंगणे। 2. A थणजुयहे; B थणजुयलइ; PS थणचूयहे। 3. APIS रुयंतु। 4. P कलरउ। 5. B अयंतु। 6. P जोयउ। 7. B जं पियवएहिं। 8. AP वीसरिउ; S विसरिय। 9. S हक्कारवि दरसिउ।

गलिउत्तरिज्जपयडियथणाइ संगहिय विज्ज दिण्णी अणाइ।
गयणंगणलग्गविचित्तचूडु[10] गउ सुंदरु जिणहरु[11] सिद्धकूडु।
अवलोइवि[12] चारण बिण्णि तेत्थु मुणिवर जयकारिवि जगपयत्थु।
आयण्णिवि बहुरसभावभरिउं सिरिसंजयंतरिसिणाहचरिउं।
तप्पायमूलि संसारसारु विरइउ विज्जासाहणपयारु।

घत्ता—पुणु आयउ[13] गेहु सुउ जोयंति विरुद्धएण।
उरि विद्धी झत्ति कणयमाल मयरद्धएण ॥11॥

(12)

णिरत्था सरेणं उरग्गं करेणं।
हणंती कणंती ससंती धुणंती।
कओले विचित्तं विसाएण पत्तं।
विइण्णं पुसंती अलं णीससंती।
रसेणं विसट्ठं ण पेच्छेइ णट्टं[1]।
णिसामेइ[2] गेयं ण कव्वंगभेयं।
पढंतं ण कीरं पढावेइ सारं।
घणं दंसिऊणं कलं जंपिऊणं।
वरं चित्तचोरं ण णाडेइ मोरं।
पहाए फुरंतं[3] सलीलं चरंतं[4]।
ण मण्णेइ[5] हंसं ण वीणं ण वंसं।

विद्या स्वीकार कर ली। वह सुन्दर बालक "आकाशरूपी आँगन के लगे हुए हैं विचित्र शिखर जिसके ऐसे सिद्धकूट जिनमन्दिर गया। वहाँ दो चारण मुनियों को देखकर, उनकी जय-जयकार कर, उनसे विश्व के तत्त्वों तथा बहुत रसभाव से भरे हुए श्री जयन्त ऋषिनाथ का चरित सुनकर, उन्हीं के चरणों के मूल में संसार के श्रेष्ठ विद्यासाधन-प्रकार को उसने साधा।

घत्ता—पुनः घर आये हुए पुत्र को देखकर विरुद्ध कामदेव ने कनकमाला के हृदय को शीघ्र विद्ध कर दिया।

(12)

कामदेव से वह व्यर्थ हो गयी। हाथ से अपने हृदय को पीटती हुई, चिल्लाती, सिसकती, धुनती हुई, विषाद से गालों पर विचित्र फैली हुई पत्ररचना को पोंछती हुई, अत्यन्त निःश्वास लेती हुई वह रस से भी विशिष्ट नाट्य को नहीं देखती, न गीत को सुनती और न काव्यांग भेद को। न पढ़ते हुए तोते को सुनती है और न मैना को पढ़ाती है। बादलों को देखकर, सुन्दर बोलकर, श्रेष्ठ चित्त को चुरानेवाले मयूर को भी

---

10. ABP °कूडु। 11. PS जिणघरु। 12. S अवलोइएवि। 13. PS आइउ।

(12) 1. णेट्टं। 2. AP ण कव्वंगभेयं, णिसामेइ गेयं। 3. B पुरंतं। 4. B चलंतं।

ण ण्हाणं ण खाणं ण पाणं ण दाणं।
ण भूसाविहाणं ण एयत्थठाणं।
ण कीलाविणोयं ण भुंजेइ भोयं।
सरीरे घुलंती जलद्दा जलंती।
णवंभोयमाला[6] सिहिस्सेव जाला।
ण तीए सुहिल्ली मणे कामभल्ली।
णिरुत्तण्णमण्णा जरालुत्तसण्णा।
विमोत्तूण संकं सगोत्तस्स पंकं।
पक्काउं पउत्ता सरुत्तत्तगत्ता[7]।
सपेम्मं[8] थवंती पएसुं णमंती[9]।
पहासेइ एवं सुयं कामएवं।
अहो सच्छभावा मइं इच्छ[10] देवा।
तओ तेण उत्तं अहो हो अजुत्तं।
विइण्णंगछाया तुमं मज्झु माया।
थणंगाउ[11] थण्णं गलंतं पसण्णं।
मए तुज्झ पीयं म जंपेहि बीयं।
असुद्धं अबुद्धं बुहाणं विरुद्धं।

घत्ता—ता ससिवयणइ[12] जंपिउं जंपहि णेहचुउ।
तुहुं काणणि लद्धु णंदणु णउ महु देहहुउ[13] ॥12॥

नहीं नचाती है। प्रभा से भास्वर लीलापूर्वक विचरण करते हुए हंस को भी वह नहीं मानती, न वीणा को और न बाँसुरी को। न स्नान, न भोजन, और दान-पान, न वेशभूषा का विधान और इसके लिए स्थान चाहती है। न क्रीड़ा-विनोद करती, और न भोगों को भोगती। शरीर में घुलती हुई, जल से आर्द्र होने पर भी जलती हुई, आग से झुलसी हुई उसे नव मेघमाला अच्छी नहीं लगती। उसके मन में काम की मल्लिका (छोटी माला) है। निश्चय से वह अन्यमनस्क एवं विरहज्वर से लुप्त चेतनावाली है। अपने गोत्र की शंका और कलंक को छोड़कर, पकी हुई आयु को प्राप्त, कामदेव से संतप्त शरीर, प्रेमपूर्वक स्तुति करती हुई, पैरों में पड़ती हुई वह कामदेवपुत्र से इस प्रकार कहती है—"हे स्वच्छभाववाले देव ! मुझे चाहो।" तब उसने कहा—"अहो यह अयुक्त है। शरीर को कान्ति देनेवाली तुम मेरी माँ हो। तुम्हारे स्तनांग से झरते हुए दूध को मैंने पिया है, तुम अन्यथा बात मत करो जो अशुद्ध, मूर्ख तथा पण्डितों के लिए विरुद्ध हो।"

घत्ता—इस पर वह चन्द्रमुखी कहती है—"तुम स्नेहहीन बात करते हो, तुम जंगल में मिले हुए मेरे पुत्र हो, तुम मेरे शरीर से उत्पन्न नहीं हुए।

---

5. S पाणेइ। 6. A सिहिस्सेवजाला, णवंभोयमाला। 7. P सरुत्तत्त°। 8. AP सुपेम्मं। 9. BS णवंती। 10. B इच्छि। 11. A थणग्गाण थण्णं; Als. थणग्गाउ थण्णं against Mss. 12. PS ससिवयणाए। 13. S देहे हुओ।

(13)

तक्खयसिल णामें तुज्झु माय महुं कामसत्तहि[1] देहि वाय।
तं वयणु सुणिवि मउलंतणयणु अवहेर[2] करेप्पिणु गयउ मयणु।
ता धिट्ठ दुट्ठ दुब्भावगेहु णियणहहिं वियारिवि णिययदेहु।
आरुट्ठ सुट्ठु[3] णिट्ठुर हयास अक्खइ णियइयहु जायरोस।
तुहुं देव डिंभकरुणाइ भुत्तु परजणिउ होइ किं कहिं मि पुत्तु।
कामंधु पाणिपल्लवि[4] विलग्गु जोयहि णहदारिउं महुं थणग्गु।
तं णिसुणिवि राएं कुद्धएण जलणेण व जालारिद्धएण[5]।
भीसणपिसुणहं मारणमणाहं आएसु दिण्णु णियणंदणाहं।
णिल्लज्ज अज्जु दायज्ज[6] महहु[7] पच्छण्णउं एसु[8] वहाइ वहहु[9]।
तणयहं जयगहणुक्कंठियाइं ता पंच सयाइं समुट्ठियाइं।

घत्ता—प्रियवयणु[10] भणेवि सिरिरमणंगउ साहसिउ।
णिउ रण्णहु तेहिं सो कुमारु[11] कीलारसिउ ॥13॥

(14)

णं पलयकालजमदूयतुंडु[1] तहिं हुयवहजालाजलियकुंडु[2]।
णियजणणसुपेसणपेरिएहिं दक्खालिवि बोल्लिउं वइरिएहिं[3]।

---

(13)

नाम से तक्षशिला तुम्हारी माँ है। मुझ कामपीड़ित से तुम बात करो।" यह सुनकर अपनी आँखें बन्द कर, उपेक्षा कर कामदेव प्रद्युम्न चला गया। तब दुर्भावों की घर, ढीठ, दुष्ट वह अपने नखों से अपने शरीर को विदारित कर, रुष्ट, हताश, निष्ठुर एवं क्रुद्ध होकर अपने पति से कहती है—"हे देव ! बालक की करुणा तुम्हें खा गयी। दूसरे के द्वारा उत्पन्न हुआ क्या कभी पुत्र हो सकता है ? वह कामान्ध पाणिपल्लव से आ लगा, देखो यह नख से विदारित मेरा स्तनाग्र भाग।" यह सुनकर ज्वालाओं से समृद्ध आग के समान, क्रुद्ध राजा ने अत्यन्त भीषण, कठोर, मारने की इच्छा रखनेवाले अपने पुत्रों को आदेश दिया कि आज निर्लज्ज इस सौतपुत्र को मथ डालो। प्रच्छन्न इसका वध कर डालो। जय पाने की इच्छा रखनेवाले उसके पाँच सौ पुत्र उठे।

घत्ता—वे लोग प्रिय वचन कहकर, साहसी और क्रीड़ा-रसिक पुत्र को जंगल में ले गये।

(14)

वहाँ अग्निज्वालाओं से प्रज्वलित कुण्ड था जो मानो प्रलयकाल के यमदूत का मुख हो। अपने पिता

---

(13) 1. AP कामाउरोह पदेहि; B कामाउरहि। 2. ABS अवहेरि। 3. B सुट्ठ। 4. B °पल्लव। 5. AP °रुद्धएण। 6. PS दाइज्ज। 7. AP महह। 8. A पसुवहइ। 9. AP वहह। 10. BP पिय°। 11. B कुमार।

(14) 1. PS °तोंडु। 2. PS °जलिउ। 2. P °कुंडु; S कोंडु। 3. APS वेरिएहिं।

भो देवयत्त दुक्करु विसंति एयहु दंसणि[4] कायर मरंति।
तं णिसुणिवि विहसिवि तेत्थु तेण महुमहणरायरुप्पिणिसुएण।
अप्पउ घल्लिउ[5] सहस त्ति केम सीयलचंदणचिक्खिल्लि[6] जेम।
पुज्जिउ देवीइ महाणुभाउ अण्णहिं जाइवि पुणु सोमकाउ[7]।
सोमेसमहीहरमज्झि[8] णिहिउ कूरेहिं तेहिं चउदिसहिं[9] पिहिउ।
वीरेण तेण संमुह भिडंत थहरूव[10] धरिय गिरिवर पडंत।
पुणु जक्खिणीइ जगसारएहिं पुज्जिउ वत्थालंकारएहिं।
साहसियहु तिहुयणु होइ सज्झु दुग्गु वि अदुग्गु दुग्गेज्झु[11] गेज्झु।
घत्ता—सयलेहिं मिलेवि वइरिहिं करिकरदीहरभुउ[12]।
सूयरगिरिरंधि पुणु पइसारिउ कण्हसुउ ॥14॥

(15)

तहिं महिहरु धाइउ[1] होवि[2] कोलु घुरुघुरणरावकयघोररोलु[3]।
दाढाकरालु देहणिविलित्तु[4] णीलालिकसणु रत्तंतणेत्तु[5]।
अरिदंतिदंतणिहसणसहेहिं[6] भुयदंडहिं[7] चूरियरिउरहेहिं।
मोडिउ रहसुब्भडु[8] खरु अमंदु वइकंठहु[9] पुत्तें कंठकंदु।

की आज्ञा से प्रेरित शत्रुओं ने उसे दिखाते हुए कहा—"हे देवदत्त ! इसमें प्रवेश करना कठिन है। इसके दर्शन मात्र से कायर नष्ट हो जाते हैं।" यह सुनकर राजा कृष्ण और रुक्मणी के पुत्र ने हँसकर अपने को उस अग्निकुण्ड में इस प्रकार डाल दिया, जैसे वह शीतल चन्दन की कीचड़ हो। देवी ने उस महानुभाव की पूजा की। दूसरों ने पुनः जाकर सौम्यशरीर उसे सोमेश महीधर के भीतर रख दिया और उन दुष्टों ने चारों ओर से उसे ढक दिया। उस वीर ने सामने भिड़ते हुए छाग (मेष) के आकारवाले गिरते हुए पहाड़ों को रोक लिया। फिर यक्षिणी ने विश्व में श्रेष्ठ वस्त्रालंकारों से कुमार की पूजा की। साहसी व्यक्तियों के लिए त्रिभुवन साध्य होता है। उन्हें अदुर्ग भी दुर्ग, दुर्ग्राह्य भी ग्राह्य हो जाता है।

घत्ता—समस्त शत्रुओं से मिलकर हाथी की सूँड़ के समान भुजाओंवाले कृष्णपुत्र कुमार को वराह पर्वत की गुफा में फिर से घुसा दिया।

(15)

वहाँ घुर-घुर शब्द से भयंकर आवाज करता हुआ महीधर वराह बनकर दौड़ा जो दाढ़ों से भयंकर कीचड़ से सनी देहवाला, भौंरों के समान काला और लाल-लाल आँखोंवाला था। तब शत्रुगजों के दाँतों के संघर्षण

---

4. P दरिसणे। 5. A घित्तउ। 6. B °चिक्खिल्लु ; चिक्खेल्लु। 7. APS सोम्मकाउ। 8. S °महीहरे। 9. P °दिसिहिं। 10. A थहुरूय। 11. P सुदुग्गेज्झु। 12. APS °दीहभुउ।

(15) 1. A धाविउ। 2. P होइ। 3. B °घोरु। 4. A देहिणि°; B देहिण°। 5. B रत्तत°। 6. A °सएहिं। 7. B °दंडिहिं। 8. ABPS रोसुब्भडु। 9. ABPS वइकुंठहो।

सुथिरसें णिज्जियमंदरासु[10] तं विलसिउं पेच्छिवि[11] सुंदरासु।
देवयइ[12] विइण्णउ[13] विजयघोसु जलयरु परवाहिणिहियसोसु[14]।
अण्णेक्कु पिसुणपाढीणजालु ढोइयउ महाजालु वि विसालु।
सज्जणहु वि दुज्जणु कुडिलचित्तु पुणु कालणामगुहमुहि[15] णिहित्तु।
रयणीयरेण सुहउ पसत्थु पणवेवि महाकालेण तेत्थु।
विसंसदणु[16] भडकडमद्दणासु[17] तहु दिण्णउ[18] केसवणंदणासु।
पुणु वम्महेण दिट्ठउ खयालि पब्भट्ठचेट्ठु रुक्खंतरालि।
विज्जाहरु विज्जाबलहरेण कीलिउ केण वि विज्जाहरेण।
तहु वसुणंदइ अवलोइयाइ णियकरयलसयदलढोइयाइ।
णरदेहसोक्खसंजोयणीइ[19] गुलियाइ[20] णिबंधणमोयणीइ।
मेल्लाविउ भाविउ[21] भाउ ताउ उप्पण्णउ तासु सणेहभाउ[22]।
हरितणयहु दरपहसियमुहेण[23] दिण्णाउ तिण्णि विज्जाउ तेण।
उवयारहु पडिउवयारु रइउ भणु को ण सुयणसंगेण लइउ।

घत्ता--दुज्जणवयणेण परिवड्ढियअहिमाणमउ।
सहसाणणसप्पविवरि पइट्ठउ जयविजउ ॥15॥

को सहन करनेवाले तथा शत्रुओं के रथों को चूर-चूर करनेवाले भुजदण्डों से वेग से उद्भट, तीव्र, असुन्दर सूकर के कण्ठ को श्रीकृष्ण के पुत्र (प्रद्युम्न) ने मोड़ दिया। अपने शौर्य से मन्दराचल को जीतनेवाले कुमार की उस चेष्टा को देखकर देवी ने शत्रु-सेना के हृदय का शोषण करनेवाला विजयघोष नाम का शंख दिया, तथा अन्य एक दुष्ट मत्स्यों के लिए जाल के समान विशाल महाजाल दिया। सज्जन के लिए भी दुर्जन कुटिलचित्त होता है। फिर उसे 'काल' नामक गुहा के मुख में डाल दिया। वहाँ महाकाल नामक रजनीचर ने उस सुन्दर प्रशस्त को प्रणाम कर, योद्धाओं की सेना को चकनाचूर कर देनेवाले केशवपुत्र को वृषभ नाम का रथ दिया। फिर उस कामदेव ने आकाश में, दो वृक्षों के अन्तराल में प्रभ्रष्ट चेष्टावाले, विद्याबल का हरण करनेवाले किसी विद्याधर के द्वारा कीलित किये गये विद्याधर को देखा। कृष्णपुत्र के द्वारा देखी गयी, अपने करतलरूपी शतदल से उठायी गयी, मनुष्य-देह में सुख का संयोजन करनेवाली, बन्धन से मुक्त करनेवाली विद्याधर की दी हुई गुटिका से (कृष्ण-पुत्र ने) उसे उन्मुक्त कर दिया। वह उसे पिता और माता के समान लगा। उसका स्नेह भाव हो गया। किंचित् स्मित मुख से उसने कृष्ण के पुत्र के लिए तीन विद्याएँ दीं। इस प्रकार उपकार करनेवाले का प्रत्युकार किया। बताओ ! सुजन की संगति से क्या नहीं मिलता ?

घत्ता—तब दुर्जन के वचनों से बढ़ रहा है अभिमान जिसका, ऐसा जयों का भी विजेता वह कुमार सहस्रानन सर्पगुफा में प्रवेश कर गया।

---

10. BP °मंदिरासु। 11. S पेच्छिउ। 12. S देवए। 13. B विदिण्णउ। 14. B °हियइ। 15. B गुहमुहे। 16. S विसदंसणु। 17. AP °कडयंदणासु। 18. दिण्णिउ। 19. APS °सोक्खु। 20. B अंगुलिए। 21. A लाविउ भाउभाउ। 22. A सिणेह°। 23. A दरिसियसियमुहेण; P दरवियसियमुहेण।

(16)

तहिं संखाऊरणणिग्गएण　　णाएण सणाइणिसंगएण।
पव्वालंकिउ जयलच्छिवण्णु　　धणु दिण्णउं कामहु चित्तवण्णु।
बहुरूवजोणि णरवरविमद्द　　अण्णेक्क कामरूविणिय मुद्द[1]।
जोएवि दुवालिइ[2] लोयणेट्ठु[3]　　थामें कंपाविउ तरुकविट्ठु।
तहिं गयणंगणगमणउ चुयाउ　　लइयाउ कुमारें पाउयाउ।
सुविसिट्ठइट्ठपावियसिवेण[4]　　पुणु तूसिवि पंचफणाहिवेण।
ढोइय हरिपुत्तहु पंच बाण　　णंदयधणुजोग्गा[5] उहयमाण।
तप्पणु पुणु तावणु मोहणक्खु[6]　　विलवणु भग्गणु हयवइरिपक्खु।
पंचमु सरु मारणु चित्तविउडु　　ओसहिमालइ सहुं दिण्णु मउडु।
चलचमरजुयलु[7] सेयायवत्तु　　णं सिरिणवभिसिणिहि सहसवत्तु।
गुणरंजिएण जसलंपडेण　　खीरवणणिवासें मक्कडेण[8]।
कइवमुहिवाविहिं[9] णायवासु　　दिण्णउ एयहु रिउदिण्णतासु।
तहु संपय पेच्छिवि भायरेहिं　　तिलु तिलु झिज्जंतकलेवरेहिं।
[10]पच्छण्णजणियकोवाणलेहिं[11]　　पुणरवि पडिचोइउ हयखलेहिं[12]।
जइ पइसहि तुहुं पायालवावि　　तो तुह सिरि होइ अउव्व का वि।

---

(16)

वहाँ शंख बजाने से अपनी नागिन के साथ निकले हुए नाग ने पर्वों से अलंकृत, विजयलक्ष्मी से परिपूर्ण चित्रवर्ण नामक धनुष कामदेव (प्रद्युम्न) के लिए प्रदान किया तथा एक और अनेक रूपों की योनि, श्रेष्ठनरों का मर्दन करनेवाली कामरूपिणी मुद्रिका दी। नेत्रों के लिए प्यारा कवीट (कैंथ) का वृक्ष देखकर दुःसाहस करनेवाले उसने अपनी शक्ति से हिला दिया। वहाँ आकाश के आँगन में चलनेवालीं गिरी हुईं दो पादुकाएँ कुमार ने ग्रहण कर लीं। फिर सुविशिष्ट इष्ट को सुख देनेवाले पाँच फनवाले नागराज ने सन्तुष्ट होकर कृष्णपुत्र के लिए पाँच बाण दिये, जो फल और मान के विचार से नन्द्यावर्त धनुष के योग्य थे। तपन, फिर तापन, फिर मोहनाक्ष, फिर विलपन, जो शत्रुपक्ष का संहारक था। पाँचवाँ बाण मारण बाण था जो चित्त की तरह विपुल था। फिर, क्षीरवन में रहनेवाले यश के लम्पट और गुणी व्यक्ति से प्रसन्न होनेवाले वानर ने औषधिमाला के साथ मुकुट दिया। चंचल दो चमर तथा श्वेत चँदोवा दिया जो मानो श्रीरूपी नवकमलिनी का सहस्रदल हो। उसके बाद उसे कदम्बमुखी बावड़ी के द्वारा शत्रु को त्रास देनेवाला नागपाश दिया गया। उसकी सम्पत्ति देखकर तिल-तिल जलते हुए शरीरवाले तथा प्रच्छन्न रूप से भड़क रही है कोपरूपी ज्वाला जिनमें ऐसे दुष्ट भाइयों ने पुनः उसे प्रतिप्रेरित किया—"यदि तुम पाताल बावड़ी में प्रवेश करोगे, तो तुम्हें कोई अपूर्व श्री प्राप्त होगी।"

---

(16) 1. P मुद्दे। 2. P दुआलिए; S दुवालिए। 3. APS लोयणिट्ठु। 4. APS °इच्छियसिवेण। 5. ABP जोग्गाउहयमाण। 6. B मोहणक्खु। 7. °जुवल। 8. BPS मंकडेण। 9. A कइमम्मुहि°। 10. ADPS °जणिय°। 11. A णलेण। 12. A खलेण।

घत्ता—पिसुणिंगिउ[13] एम [14]जाणेवि सुंदरु ओसरइ।
वाविहि पण्णत्ति तहु रूवें सइं पइसरइ ॥16॥

(17)

पच्छण्णु ण दिट्ठउ तेहिं बालु अप्पाणहु कोक्किउ पलयकालु।
सिलवीढें छाइय वावि जाम रुप्पिणितणुरुहु[1] मणि कुइउ[2] ताम।
ते तेण णायपासेण[3] बद्ध सुहिअवयारें के के ण खद्ध।
णिक्खित्त अहोमुह सलिलरंधि सिल[4] उवरि णिहिय[5] जायइ तमंधि।
णियसयणविहुरविणिवारएण खगवइतणएं[6] लहुयारएण[7]।
जोइप्पहेण सा धरिय केम उप्परि णिवडंती मारि जेम।
तहिं अवसरि परबलदुम्महेण "णाहि एंतु[8] पलोइउ वम्महेण।
आसण्णु पत्तु तें भणिउ कामु भो दिट्ठु जम्मणेहहु विरामु।
तुज्झुप्परि आयउ तुज्झु ताउ भो मयरद्धय लइ ससरु[10] चाउ।
ता रूसिवि पडिभडमद्दणेण देवें दामोयरणंदणेण।
हय[11] गय हय गय चूरिय रहोह विच्छिण्णछत्त महिवित्त जोह।

घत्ता—इस प्रकार दुष्टों की चेष्टा जानकर सुन्दर (कुमार स्वयं) हट जाता है और प्रज्ञप्ति-विद्या स्वयं उसके रूप में बावड़ी में प्रवेश करती है।

(17)

उन्होंने छिपे हुए बालक को नहीं देखा। उन्होंने अपने लिए प्रलयकाल बुला लिया। जब वे शिलापीठों से बावड़ी को आच्छादित कर रहे थे, तब प्रद्युम्न अपने मन-ही-मन में कुपित हो उठा। उसने नागपाश से उन लोगों को बाँध लिया। सज्जन के साथ अपकार करने से कौन-कौन नहीं नष्ट हुए ? उसने मुख नीचा करके पानी के छेद में डाल दिया और ऊपर से चट्टान रख दी। तमान्धकार होने पर, अपने स्वजनों के संकट का निवारण करनेवाले छोटे विद्याधरपुत्र ज्योतिप्रभ ने उस चट्टान को इस प्रकार धारण किया, जैसे आती हुई बीमारी (महामारी) हो। उस अवसर पर शत्रुबल का नाश करनेवाले कामदेव ने आकाश में आते हुए (कालसंवर विद्याधर) को देखा। वह पास आया। उसने कामदेव से कहा—"अरे ! जन्मस्नेह का अन्त देख लिया। तुम्हारे ऊपर तुम्हारे तात आये हैं। हे कामदेव ! तीरों सहित अपना धनुष लो।" तब शत्रुयोद्धा का नाश करनेवाले देव दामोदर-पुत्र ने क्रुद्ध होकर अश्व और गजों को आहत कर नष्ट कर दिया। रथसमूह चूर-चूर हो गया। छत्र नष्ट हो गये और योद्धा धरती पर जा गिरे।

13. A पिसुणंगिउ; K पिसुणिगउ। 14. S जाणवि।

(17) 1. B °तणरुहु; S तरुहु। 2. P कुविउ। 3. S °वासेण। 4. P omits this foot. 5. A विहिय। 6. P °तणुएं। 7. B लहुवारएण। 8. PS णहें। 9. B इंतु। 10. B समरु। 11. A हयं हय गय गय।

घत्ता—पेच्छिवि दुव्वार कामएवसरणियरगइ।
णं कुमुणिकुबुद्धि भग्गउ समरि खगाहिवइ ॥17॥

(18)

पवणुद्धयचिंधपसाहणेण णासेवि जणणु सहुं साहणेण।
पायालवावि संपत्तु जाम बोल्लिउं लहुएं तणुएण[1] ताम।
जोइप्पहेण सिलरोहणेण तुहुं मोहिउ दइवें मोहणेण।
जहिं जहिं अम्हहिं कवडें णिहित्तु पप्फुल्लकमलदलविमलणेत्तु।
तहिं तहिं णीसरइ महाणुभाउ देविहिं[2] पुज्जिज्जइ दिव्वकाउ।
किं कहिं मि पुत्तु अहिलसइ माय को पावइ कामहु तणिय छाय।
को[3] अण्णु सुसच्चसउच्चवंतु गंभीरु वीरु[4] गुणगणमहंतु।
को[5] जाणइ किं अंबाइ वुत्तु मारावहुं पारद्धउ सुपुत्तु[6]।
महिलाउ होंति मायाविणीउ ण मुणहिं पुरिसंतरु दुव्विणीउ।
किं ताय णियंबिणिछंदु चरहि लहु गंपि कुमारहु विणउ करहि।
पडिवण्णउं पालहि चवहि सामु अणुणहि णियणंदणु देउ कामु।
इय णिसुणिवि चारुपबोल्लियाइं पहुणयणइं अंसुजलोल्लियाइं।

घत्ता—कामदेव के वाण-समूह की गति दुर्वार देखकर विद्याधर राजा युद्ध के मैदान से इस प्रकार भाग गया, मानो खोटे साधु की कुबुद्धि हो।

(18)

हवा में उड़ती हुई पताका, प्रसाधन और सेना के साथ जब तक पिता पाताल-बावड़ी पर पहुँचता है, तब तक शिला पर आरोहण करनेवाले छोटे पुत्र ज्योतिष्प्रभ ने कहा—"हे पिता ! तुम दैवयोग से मोहन (शक्ति) से मोहित हो। जहाँ-जहाँ हम लोगों ने कपटपूर्ण ढंग से उसे रखा, खिले हुए कमलदल के समान विशालनेत्र वह महानुभाव बचकर निकल आया और देवियों ने उसके दिव्य शरीर की पूजा की। क्या कहीं पुत्र भी माता की इच्छा करता है ? काम के तन की छाया को कौन पा सकता है ? दूसरा कौन सत्य और शौचव्रत वाला है, जो गम्भीर, वीर और गुणगण से महान् हो ? कौन जानता है कि माता ने क्या कहा ? उसने पुत्र को मरवाना शुरू करवा दिया। स्त्रियाँ माया से विनीत होती हैं, दुर्विनीत वे परपुरुष का भी विचार नहीं करतीं। हे पिता ! स्त्री के कपट पर क्यों विश्वास करते हो ? शीघ्र जाकर कुमार के प्रति विनय कीजिए। जो स्वीकार किया है उसका पालन करो, श्याम से कहो अपने पुत्र कामदेव से अनुनय करो।" इन सुन्दर वचनों को सुनकर राजा की आँखें आँसुओं से गीली हो गयीं। वह वहाँ गया जहाँ श्रीकृष्ण का पुत्र था।

(18) 1. ABPS तणएण। 2. APS देवहिं। 3. AP को महियलि अण्णु सुसच्चवंतु। 4. ABPS धीरु। 5. AP को (P किं) जाणइ किं मायए (P माएं) पवुत्तु (P पउत्तु)। 6. ABPS सपुत्तु।

गउ तहिं जहिं थिउ सिरिरमणतणउ बोल्लाविउ तें किउ[7] तासु पणउ।
णीसल्लु पघोसिउं णियडु[8] ढुक्कु आलिंगिउं दोहिं मि एक्कमेक्कु[9]।
उच्चाइवि सिल केसवसुएण अण्णत्थ घित्त कक्कसभुएण।
घत्ता—कय वियलियपासें[10] ते खेयररायंगरुह[11]।
णिग्गय सलिलाउ दुज्जसमसिमलमलिणमुह[12] ॥18॥

(19)

मयणहु सुमणोरहसारएण[1] तहिं अवसरि अक्खिउं णारएण।
भो णिसुणि णिसुणि रिउवुव्विजेय[2] दारावइपुरवरि[3] पवरतेय[4]।
[5]जरसिंधकंसकयपाणहारि[6] तुह जणणु जणद्दणु चक्कधारि[7]।
तहु पणइणि रुप्पिणि तुज्झु माय पत्तियहि महारी सच्च वाय।
भो आउ जाहुं किं वयणएहिं णियगोत्तु णियहि णियणयणएहिं।
पणमियसिरेण[8] मउलियकरेण ता भणिउ कालसंभवु[9] सरेण।
तुहुं ताउ महारउ गयविलेव वड्ढारिउ[10] हउं[11] पइं रुक्खु जेव।
पयलंतखीरधारापणाल[12] वीसरमि ण जणणि वि कणयमाल।
जं [13]दुब्भणिओ सि दुणियच्छिओ सि तं खमहि जामि आउच्छिओ सि।
ता तेण विसज्जिउ गुणविसालु अणडुहसंदणि आरूढु बालु।
कलहयरें सहुं चल्लिउ तुरंतु गयपुरु संपत्तउ संचरंतु।

उसने उसे बुलाया और उसे प्रणाम किया। निःशल्य होकर पास पहुँचा, और दोनों ने एक-दूसरे का आलिंगन किया। कठोर बाहुवाले कुमार ने शिला उठाकर दूसरी जगह रख दी।

घत्ता—बन्धन छूट जाने से, अपयश रूपी स्याही के मल से मलिन मुखवाले वे विद्याधर-पुत्र पानी से निकल आये।

(19)

सुन्दर कामनाओं की पूर्ति करनेवाले नारद ने उस अवसर पर कहा—"ओ शत्रुओं के लिए अजेय, प्रवरतेज तुम सुनो, द्वारिकापुरी में जरासन्ध और कंस के प्राणों का अपहरण करनेवाले चक्रधारी श्रीकृष्ण तुम्हारा पिता हैं। उनकी प्रणयिनी रुक्मणी तुम्हारी माँ है। तुम मेरी बात को सच मानो। शब्दों से क्या ? आओ चलें। अपने कुल को अपनी आँखों से देख लो।" तब हाथ जोड़कर और सिर से प्रणाम करते हुए कुमार काम ने कालसम्भव विद्याधर से कहा—"हे देव ! तुम मेरे अहंकार रहित पिता हो। तुमने वृक्ष की तरह मुझे बड़ा किया है। दूध की धारा की प्रणाली बहानेवाली माँ कनकमाला को मैं नहीं भूल सकता। जो मैंने बुरा-भला कहा और देखा उसे क्षमा कर दें। तुमसे पूछकर मैं जाता हूँ।" तब, उनसे विसर्जित हो गुणों से विशाल कुमार वृषभरथ में जाकर बैठ गया। कलह करनेवाले नारद के साथ वह तुरन्त चला और विचरण करता हुआ गजपुर पहुँचा।

---

7. APS कउ। 8. B णिड्डु ढुक्कु। 9. B एक्कुमेक्कु। 10. P °पासें। 11. A खेयरातिवअंगरुह; P खयराहिवअंगरुह। 12. APS °मइलमुह।

(19) 1. A °रहगारएण। 2. AP °दुव्विजेउ। 3. B °पुरि। 4. AP दिव्वतेउ; S पउरतेय। 5. BP जरसंधु°; जरसंध°। 6. B खयप्राणहारि; °कयपाणहारि 7. APS चक्कपाणि। 8. P °णमिय°। 9. AP काललवरु। 10. B वड्ढाविउ। 11. S पइं हउं। 12. AP °धारायणाल। 13. DK दुब्भणिओसि दुणिण°।

घत्ता—संगरकंखेण कामहु केरउ णउ रहिउ।
सिहिभूइपहूइ भवसंबंधु सव्वु कहिउ ॥19॥

(20)

ता भणइ मयणु मइं माणियाइं चिरजम्मइं[1] किह पइं जाणियाइं।
ता भासइ णारउ मयमहेण अक्खिउं अरुहें विमलप्पहेण।
ता बिण्णि वि जण उवसमपसण्ण[2] एवं चवंत गयउरु पवण्ण।
तहिं कुंदकुसुमसमदंतियाउ जाणिवि भाणुहि दिज्जंतियाउ।
कंकेल्लिपत्तकोमलभुयाउ दुज्जोहणपहुजलणिहिसुयाउ[3]।
वेहवियउ दमियउ तावियाउ मायारूवेण हसावियाउ।
जणु सयलु वि विब्भमरसविसट्टु[4] गउ मयणु महुरमग्गें पयट्टु।
कारावियमणिमयमंडवेहिं महुराउरि पंचहिं पंडवेहिं।
पारद्धी भाणुहि देहुं पुत्ति णं कामकइयवायारजुत्ति।
तहिं धारिवि सरेण पुलिंदवेसु अलिकज्जलसामलकविलकेसु।
णीसेसकलाविण्णाणधुत्त खेल्लिवि[5] [6]खरियालिवि पंडुपुत्त।
दारावइणयरि पराइएण कुसुमसरें कंतिविराइएण।

घत्ता—संग्राम की इच्छा रखनेवाले नारद ने कामदेव के अग्निभूति प्रभृति समस्त पूर्वभव बता दिये, कुछ भी नहीं छिपाया।

(20)

तब कुमार कामदेव पूछता है—"मेरे द्वारा भोगे गये पूर्वजन्मों को आपने कैसे जान लिया ?" काम का नाश करनेवाले नारद ने कहा कि अरहन्त विमलप्रभ ने मुझे बताया था। शान्ति से प्रसन्न वे दोनों इस प्रकार बातचीत करते हुए गजपुर पहुँच गये। वहीं पर यह जानकर कि कुन्दकुसुम के समान दाँतोंवाली और अशोकपत्र के समान कोमल बाहुवाली दुर्योधन की पुत्री उदधिकुमारी भानुकुमार को दी जा रही है। उसने मायावी रूप बनाकर लोगों को खूब छकाया, सन्तप्त किया और हँसाया। समस्त लोग आश्चर्य-रस में डूब गये। कामदेव चला और मथुरा के मार्ग से जा लगा। मथुरा नगरी में मणिमय मण्डप बनानेवाले पाँचों पाण्डवों ने कुमार भानु को पुत्री देना प्रारम्भ कर दिया, जो मानो काम के कैतव की मूर्तिमती युक्ति थी। वहाँ, भ्रमर और काजल के समान हैं काले बाल जिसके ऐसे उस कामदेव प्रद्युम्न ने भील का रूप धारण कर समस्त कला-विज्ञान की धूर्तताएँ खेलकर तथा पाण्डु-पुत्रों को खिन्न कर, द्वारावती नगरी में पहुँचकर, कान्ति से शोभित,

(20) 1. A किर जम्मइं। 2. P °पसण्ण। 3. A °पहुजाणिहि। 4. AP विब्भयरस°, BS विम्हयरस°। 5. S खेल्लेवि। 6. A खलियालिवि। 7. A °विरुहइ° 8. P णयरु।

घत्ता—विज्जइ [7]छाइवि णारउ[8] गयणि ससंदणउ।
वाणरवेसेण आहिंडइ महुमहतणउ ॥20॥

(21)

दक्खालियसुरकामिणिविलासु सिरिसच्चहामकीलाणिवासु[1]।
दिसविदिसघित्तणाणाहलेण[2] उज्जाणु भग्गु मारुयचलेण।
सोसेवि वावि[3] झसमाणिएण सकमंडलु पूरिउ पाणिएण।
थिरथोरकंधघोलंतकेस रहवरि जोत्तिय गद्दह समेस।
जणु पहसाविउ मणहरपएसि कामेण [4]णयरगोउरपवेसि[5]।
पुरणारिहिं हियउ हरंतु रमइ पुणु वेज्जवेसु घोसंतु भमइ।
हउं छिण्णकण्णसंधाणु करमि वाहियउ[6] तिव्ववेयाउ हरमि।
भाणुहि णिमित्तु उवणियउ जाउ विहसाविउ [7]णिवकुवरीउ ताउ।
पुणु [8]भाणुमायदेवीणिकेउ गउ बंभणवेसें[9] मयरकेउ।
घरि वइसारिउ सहुं बंभणेहिं [10]घियऊरिहिं लड्डुयलावणेहिं[11]।
भुंजइ भोयणु केम[12] वि ण धाइ आवग्गी जाम रसोइ खाइ।

घत्ता—विद्या के द्वारा रथ-सहित नारद मुनि को आकाश में आच्छादित कर दिया और वह कृष्णपुत्र स्वयं बन्दर के वेश में घूमने लगा।

(21)

सुर-बालाओं के विलास को दिखानेवाले तथा सत्यभामा के क्रीड़ानिवास स्वरूप उद्यान को दिशा-विदिशा में नाना फलों को फेंकती हुई चंचल हवा से उजाड़ दिया। बावड़ी को सोखकर, मत्स्यों के द्वारा मान्य जल को कमण्डलु में रख लिया। और अपने श्रेष्ठ रथ में स्थिर स्थूल कन्धों पर जिनके बाल फैल रहे हैं, ऐसे मेष सहित गधे को रथ में जोत लिया। नगर के गोपुर प्रवेश और उस सुन्दर प्रदेश में उसने लोगों का खूब मनोरंजन किया। वह नगर-स्त्रियों के हृदय का हरण करता हुआ रमण करता है, फिर अपने को वैद्य कहता हुआ घूमता है कि मैं कटे हुए कान-नाक जोड़ देता हूँ, तीव्र वेगवाली व्याधियों को नष्ट कर सकता हूँ। और जो कुमारी भानु के लिए ले जाई जा रही थी, कुमार ने उसे भी हँसा दिया। फिर कामदेव ब्राह्मण का रूप बनाकर भानु की माता सत्यभामा के भवन में गया। उसे घर में ब्राह्मणों के साथ बैठाया गया। घी से भरे लड्डू आदि व्यंजनों का वह भोजन करता है, परन्तु किसी प्रकार उसकी तृप्ति नहीं होती। जितनी

---

(21) 1. AP °सच्चभाम°। 2. APS दिसिविदिसि°। 3. APS वाविउ। 4. B णयरे। 5. P पएसे। 6. AS वाहिउ; 7. S नृव°; 8. AP सच्चाहाम°; S सच्चभाम°। 9. S बम्हण°। 10. APS घियऊरहिं। 11. B लड्डुय°; P लड्डुअ°; S लड्डुव°। 12. A केम।

ता सच्चहाम[13] पभणइ सुदुट्ठु बंभणु होइवि[14] रक्खसु पइट्ठु।

घत्ता—ता भासइ भट्टु देण[15] ण सक्कइ भोयणहु।
किह[16] दइवें जाय एह भज्ज णारायणहु ॥21॥

(22)

पुणु गयउ झसद्धउ बद्धणेहु खुल्लयवेसें णियजणणिगेहु।
हउं भुक्खिउ रुप्पिणि गुणमहंति दे देहि भोज्जु सम्मत्तवंति।
ता सरसभक्खु उक्खित्तगासु णाणातिम्मणकयसुरहिवासु।
जेमाविउ तो वि ण तित्ति जाइ हियउल्लइ देविहि गुणु जि थाइ।
कह कह व ताइ पीणिउ विहासि विरएवि पुरउ लड्डुयहं रासि।
विणु कालें कोइलरवमुहलु[1] अवयारिउ महुरसमत्तभसलु।
तक्खणि वसंतु अंकुरियकुरुहु कयपणयकलहु जणजणियविरहु।
णारउ पुच्छिउ पीणत्थणीइ कोऊहलभरियइ रुप्पिणीइ।
महुं घरु को आयउ खयरु[2] देउ ता तेण कहिउं सिसु मयरकेउ।
अवयरिउ माइ दे देहि खेउं ता कामें णिसुणिवि वयणु एउं।
दरिसिउं सरूउ[3] णियमाउयाहि पण्हवपयपयलियथणजुयाहि।

रसोई बनती जाती है, वह उसे चट करता जाता है। इस पर सत्यभामा कहती है—"यह दुष्ट राक्षस ब्राह्मण होकर घुस आया है।"

घत्ता—तब वह ब्राह्मण कहता है कि भोजन तक नही दे सकती ! भाग्य से यह नारायण की पत्नी कैसे बन गयी ?

(22)

फिर प्रेम से बँधा हुआ वह कामदेव क्षुल्लक के रूप में अपनी माँ के घर गया (और बोला)—"हे गुणों से महान् ! सम्यग्दर्शन से युक्त रुक्मणि ! तुम मुझे भोजन दो, मैं भूखा हूँ।" तब परोसे गये हैं कौर जिसमें ऐसे नाना व्यंजनों की सुगन्धि से सुवासित सरस भोजन उसे खिलाया गया, तब भी उसकी तृप्ति नहीं हुई। वह देवी के गुणों की अपने मन में थाह लेना चाहता था। किसी प्रकार उसने लड्डुओं की राशि और सुन्दर पूरी बनाकर खिलायी जिससे उसे तृप्ति हुई। इतने में असमय में कोयल का मधुर कलरव होने लगा। मधुरस से मत्त भ्रमर गूँजने लगे और प्रणय-कलह करनेवाला, लोगों में विरह पैदा करनेवाला वसन्त तत्क्षण आ गया। तब पीन स्तनोंवाली कुतूहल से भरी हुई रुक्मणी ने नारद से पूछा—"मेरे घर कौन विद्याधर देव आया है ?" तो उसने कहा—"कामदेव-पुत्र अवतरित हुआ है। हे आदरणीया ! उसे आलिंगन दो।" जब कुमार ने यह सुना तो उसने पन्हाते हुए दूध से प्रगलित स्तनोंवाली अपनी माँ को अपना स्वरूप प्रकट कर दिया।

13. P सच्चभाम। 14. P ण होइ for होइवि। 15. AP दीण। 16. S किह।
(22) 1. APS °रोल°; B °रव°। 2. BP खयरदेउ। 3. S सरूवु।

घत्ता—जणणीथण्णेण सुउ मिलंतु[4] अहिसित्तु किह।
गंगातोएण पुप्फयंतु[5] पहु भरहु जिह ॥22॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे [6]रुप्पिणिकामएवसंजोउ णाम [7]एक्कणवदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥91॥

घत्ता—माँ के स्तन्य से मिलता हुआ पुत्र इस प्रकार अभिषिक्त हो गया, जिस प्रकार गंगाजल से पुष्पदन्त प्रभु भरत को (कर देते हैं)।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारोंवाले इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस काव्य का रुक्मणी-कामदेव-संयोग नाम का इक्यानवेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

4. A ता पल्लहिं for मिलंतु in second hand. 5. S पुप्फदंत° । 6. B रुप्पिणि° । 7. AS एक्काणवदिमो; B एक्कणवदिमो; एक्काणउदिमो।

दुणउदिमो संधि

पसरंतणेहरोमंचिएण[1] देवें रइभत्तारें।
कमकमलइं जणणिहि णविवाइं सिरिपज्जुण्णकुमारें ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

जहिं अच्छिउ तं पुरु घरु देसु वि पुणु वित्तंतु कहिउ णीसेसु वि।
मुहकुहरुग्गयसुमहुरवायहि बालकील दक्खालिय मायहि।
पुत्तसणेहु जणिउ णिरु णिब्भरु तहिं कालइ परियाणिवि अवसरु।
दुज्जणु[2] हरिसें कहिं मि ण माइउ छुरविहत्थु[3] चंडिलउ पराइउ।
तेण समीहंतें दूसह कलि मग्गिय मयणजणणिअलयावलि।
भाणुकुमारहु ण्हाणणिमित्तें तं णिसुणिवि णिरु विंभियचित्तें[4]।
पुच्छिय णियमायरि कंदप्पें किं पवुत्तु[5] एएण सदप्पें।
णील णिद्ध[6] भंगुर सुहकारा[7] किं मग्गिय धम्मिल्ल तुहारा।
तं णिसुणिवि देवीइ पवुत्तउं पुव्वकम्मु परिणवइ णिरुत्तउं।
[8]दिव्वपुरिसलक्खणसंपण्णउ[9] जइयहुं तुहुं महु सुउ उप्पण्णउ।

बानवेवीं सन्धि

फैलते हुए स्नेह से रोमांचित, रति के स्वामी देव श्रीप्रद्युम्नकुमार ने माता के चरणकमलों में प्रणाम किया।

(1)

वह कुमार जहाँ-जहाँ रहा, उस घर, देश और नगर का कुल वृत्तान्त उसने सुनाया। अपने मुखरूपी कुहर से मधुर वाणी बोलनेवाली माता के लिए उसने बाल-क्रीड़ाएँ दिखायीं। उसे पूर्ण पुत्रस्नेह हो गया। उसी समय अवसर जानकर, एक दुर्जन चण्डाल हर्ष से फूला न समाता हुआ, हाथ में छुरा लेकर वहाँ पहुँचा। दुःसह कलह की इच्छा रखनेवाले उसने कामदेव (प्रद्युम्न) की माता की अलकावलि माँगी, भानुकुमार के स्नान के लिए। सुनकर, अत्यन्त आश्चर्यचकित चित्त होकर कामदेव ने अपनी माता से पूछा कि दर्प के साथ इसने क्या कहा ? इसने स्निग्ध घुँघराली शुभ करनेवाली तुम्हारी अलकावली क्यों माँगी ? यह सुनकर देवी ने कहा कि पूर्वजन्म का कर्म निश्चित रूप से परिणमित होता है। दिव्य पुरुष के लक्षणों से युक्त जब तू

---

(1) 1. AP °णेहरोमंचिएण। 2. दुज्जण। 3. S omits this foot. 4. S विंभिय°। 5. B पवुत्तु एइं एण सदप्पें। 6. B णिद्धु। 7. APS सुहगारा। 8. A °पुरिस्। 9. A °संपुण्णउ।

तइयहुं सच्चभामणामंकइ[10] भाणु जणिउ मुहजित्तससंकइ।
बिहिं[11] मि सहीउ गयाउ उविंदहु पासि पायपाडियरिउवंदहु[12]।

घत्ता—ता तहिं हरिणा सुत्तुट्ठिएण पियपायंति बइट्ठी।
अम्हारी सिसुमिगलोयणिय[13] सहयरि सहसा दिट्ठी ॥1॥

(2)

देवदेव रुप्पिणिहि[1] सुछायउ लक्खणवंजणचच्चियकायउ[2]।
ताइ पवुत्तु पुत्तु संजायउ तं णिसुणिवि हरिसिउ महिरायउ।
पढमपुत्तु तुहुं चेय पघोसिउ पडिवक्खहु मुहभंगु पदेसिउ[3]।
वइरिएण वड्ढियअवलेवें णवर णिओ सि कहिं मि तुहुं देवें।
विमलसरलसयदलदलणेत्तहु जेट्ठउ[4] कमु जायउ सावत्तहु।
कलहंतिहिं वड्ढियपिसुणत्तणि[5] चिरु बोल्लिउं दोहिं मि तरुणत्तणि।
बिहिं मि पुत्तु जा पढमु[6] जणेसइ सा अवरहि धम्मिल्ल[7] लुणेसइ।
मंगलधवलथोत्तहयसोत्तइ[8] पुत्तविवाहकालि[9] संपत्तइ।
हरिसें अज्जु [10]सवत्ति विसट्टइ सुयकल्लाणण्हाणु घरि वट्टइ।
एहु ताहि आएसें वग्गइ णाविउ[11] मज्झ सिरोरुह मग्गइ।

मेरा पुत्र उत्पन्न हुआ था, तभी अपने मुँह से चन्द्रमा को जीतनेवाली सत्यभामा ने भानुकुमार को जन्म दिया था। हम दोनों सखियाँ शत्रुओं को अपने पैरों पर गिरानेवाले श्रीकृष्ण के पास गयीं।

घत्ता—तब उस अवसर पर प्रिय के पैरों के अन्त में बैठी हुई, हमारी शिशु मृगनयनी सखी को सोकर आते हुए कृष्ण ने सहसा देखा।

(2)

उसने (सत्यभामा ने) कहा—"हे देवदेव ! रुक्मिणी के लक्षणों और सूक्ष्म चिह्नों से अंकित शरीर और सुन्दर कान्तिवाला पुत्र उत्पन्न हुआ है।" यह सुनकर महाराज प्रसन्न हुए और उन्होंने तुम्हीं को पहला पुत्र घोषित किया। इससे प्रतिपक्ष का मुख फीका पड़ गया। बढ़ रहा है गर्व जिसका ऐसा पूर्वजन्म का वैरी देव तुम्हें कहीं ले गया। तब विमल और सरल कमल के समान नेत्रोंवाली सपत्नी सत्यभामा के पुत्र का क्रम जेठा हो गया। जिसमें दुष्टता बढ़ रही है ऐसे तारुण्य में एक बार झगड़ते हुए हम दोनों ने बहुत पहले यह तय किया था कि हम दोनों में से जिसके पहले पुत्र होगा, वह दूसरे की चोटी काटेगी। मंगल और धवल स्तोत्र-गीतों से कानों को आहत कर देनेवाले पुत्र का विवाह-काल आने पर सौत हर्ष से विशिष्ट हो रही है। आज घर में उसके पुत्र का स्नान-कल्याण है। उसी के आदेश से यह इतरा रहा है और मेरे

10. A सच्चहाम° । 11. B विहं । 12. S पायपडिय° । 13. S °मृग° ।

(2) 1. A रुप्पिणिसुच्छायउ । 2. P °विंजण° । 3. A पदरसिउ । 4. A जेट्ठकम्मु पालिउ सावत्तहो; BSAls. जेट्ठाकम्मु जाउ सावत्तहो; P जेट्ठकम्मु पालिउ सावत्तहो; Als. suggests to read जेट्ठकमु जायउ सावत्तहो । 5. S वड्ढिए । 6. S पढम । 7. B धम्मिल्लु; P धम्मेल्लु; S धम्मेल्ल । 8. BS °गित्त° । 9. AP णियत्तणुरुहवियाहे आढत्तए । 10. D सवित्ति । 11. S ण्हाविउ ।

तं णिसुणिवि विज्जासामत्थें देवें उच्छुसरासणहत्थें[12]।
वम्महेण जणकोंतलहारिहि अवरु सहाउ विहिउ छुरधारिहि।
एंत अणंत वि णं जमदूएं तज्जिय भिच्च जणद्दणरूएं[13]।
घत्ता—पसरंतें गयणालग्गएण रूसिवि एंतु दुरंतउ।
अइदीहें पाएं ताडियउ जरु णामेण महंतउ ॥2॥

(3)

मेसें होइवि[1] हउ सपियामहु हलिहि भिडिउ होएप्पिणु[2] महुमहु[3]।
रुप्पिणिरूउ अण्णु किउ तक्खणि णिहिय विमाणि[4] णीय गयणंगणि।
दामोयरु ससेण्णु कुढि लग्गउ णिवजालेण[5] सो वि णिवु[6] भग्गउ।
जयसिरिलीलालोयपसण्णहं को पडिमल्लु एत्थु कयपुण्णहं।
दर हसंतु सुरणरकलियारउ तहिं अवसरि आहासइ णारउ।
कामएउ णरणयणपियारउ एम्व[6] वियंभिउ पुत्तु तुहारउ।
जं कल्लोलहु[7] उत्तंगत्तणु तं महुमह सायरहु पहुत्तणु।
जं तणयहु पयाउ खलदूसणु तं माहव कुलहरहु विहूसणु।
हरि हरिवंससरोरुहणेसरु तं णिसुणिवि [8]हरिसिउ परमेसरु।

केश माँग रहा है। यह सुनकर इक्षुदण्ड का धनुष जिसके हाथ में है, ऐसे विद्या की सामर्थ्यवाले कामदेव कुमार ने लोगों के केश काटनेवाले नाई का एक और सहायक नियुक्त कर दिया। कृष्ण के रूप में कुमार ने आते हुए भृत्यों को डाँट दिया, मानो यमदूत ने डाँट दिया हो।

घत्ता—फैलकर आकाश से लगते हुए अत्यन्त लम्बे पैर से जर नाम के महान् व्यक्ति को ताडित किया।

(3)

मेष बनकर, उसने अपने पितामह वसुदेव को आहत किया और कृष्ण बनकर बलराम से भिड़ गया। उसने रुक्मिणी का एक और रूप बनाया और उसे विमान में बैठाकर आकाश में ले गया। दामोदर सेना के साथ उसके पीछे लगा, परन्तु प्रद्युम्न ने नरेन्द्रजाल विद्या से उस नृप को भग्न कर दिया। विजयश्री के लीलालोक से प्रसन्न रहनेवाले पुण्य करनेवाले लोगों का प्रतिमल्ल इस संसार में कौन हो सकता है ? मनुष्यों और देवों में कलह करानेवाले नारद, उस अवसर पर थोड़ा मुसकाते हुए बोले—कि लोगों के नेत्रों के लिए प्रिय और कामदेव यह तुम्हारा पुत्र ही बड़ा हो गया है जो लहरों की ऊँचाई है। हे कृष्ण ! वही सागर का प्रभुत्व है। दुष्टों को दूषित करनेवाला पुत्र का जो प्रताप है, वही कुलधर का विभूषण है। हरिवंशरूपी कमल के लिए सूर्य परमेश्वर कृष्ण हर्षित हो उठे। प्रेम करनेवाले प्रत्येक पिता को पुत्र की साहसिक चेष्टाएँ

---

12. P उच्छु° । 13. P °सूवें; S रूवें ।

(3) 1. S होयवि । 2. S होएवि तहिं । 3. B मुहुमुहु; P संमुहु । 4. AP विमाणमज्झे । 5. AP णिवबालेण; S नृवजालेण । 6. APS रणि । 6. B एव; S एवं । 7. A कल्लोलु होउ तुंगत्तणु । BPS उत्तुंग° । 8. A हसिउ ।

सिसुदुव्विलसियाइं कयरायहु   हरिसु जणंति अवस[9] णियतायहु।
एत्थंतरि अणंगु पयडंगउ   होइवि गुरुयणि[10] विणयवसं गउ।
पडिउ चरणजुयलइ महुमहणहु   कंसकेसिपायवदवदहणहु।
तेण वि सो भुयदंडहिं[11] मंडिउ   आसीवाउ देवि अवरुंडिउ।
घत्ता—कंदप्पु कणयणिहु केसवहु अंगालीणउ मणहरु।
णं अंजणमहिहरमेहलहिं दीसइ संझाजलहरु ॥3॥

(4)

हरिणा मयणु चडाविउ मयगलि   णं दियहेण भाणु उययाचलि[1]।
उवसमेण परमत्थविमाणइ   णं अरहंतु[2] देउ गुणठाणइ।
बंदिविंदउग्घोसियभद्दें[3]   पुरि[4] पइसारिउ[5] जयजयसद्दें।
किउ अहिसेउ सरहु सुरमहियहु   भाणुवइट्ठकुमारिहिं[6] सहियहु।
सो ज्जि कुलक्कमि[7] जेट्ठु पयासिउ   पडिवक्खहु उव्वेउ पविलसिउ।
लुय रुप्पिणीइ गंपि णीलुज्जल[8]   सच्चहामदेविहि[9] सिरि कोंतल।
भवियव्वउं पच्छण्णु [10]पदरिसिउं   अण्णहिं वासरि केण वि भासिउं।
गोविंदहु करिकरदीहरकरु   होही को वि पुत्तु कप्पामरु।

अवश्य हर्ष उत्पन्न करती हैं। इस बीच कामदेव प्रद्युम्न प्रकटशरीर होकर गुरुजनों के सम्मुख विनीत हो गया। वह कंस और केशीरूपी वृक्षों के लिए दावानल के समान श्रीकृष्ण के चरणों में गिर पड़ा। उन्होंने भी उसे अपने बाहुदण्डों से अलंकृत किया और आशीर्वाद देकर उसका आलिंगन किया।

घत्ता—केशव (श्रीकृष्ण) के शरीर में लीन, स्वर्ण के समान सुन्दर कामदेव ऐसा लग रहा था, मानो अंजन महीधर की मेखला पर सान्ध्यमेघ दिखाई दे रहा हो।

(4)

श्रीकृष्ण ने कामदेव (प्रद्युम्न) को, जिसका मद झर रहा है ऐसे महागज पर बैठाया, मानो दिन ने सूर्य को उदयाचल पर चढ़ाया हो। मानो उपशम भाव से अरहन्त देव मोक्ष या गुणस्थान में चढ़ गये हों। वन्दीजनों के द्वारा उद्घोषित मंगल और जय-जय शब्द के साथ उसे नगर में प्रवेश दिया गया तथा भानुकुमार के लिए उपदिष्ट कुमारी के साथ, देवों द्वारा पूज्य कामदेव का अभिषेक किया गया। उसी (प्रद्युम्न) को कुलपरम्परा में बड़ा घोषित किया गया। इससे प्रतिपक्ष का उद्वेग बढ़ गया। रुक्मिणी ने जाकर सत्यभामा देवी के सिर के काले उजले केश काट लिये। दूसरे दिन प्रच्छन्न होनहार को प्रदर्शित करते हुए किसी नैमित्तिक ने कहा—कोई देव गोविन्द का हाथी की सूँड़ के समान दीर्घ हाथोंवाला पुत्र होगा। यह सुनकर भानुकुमार की माँ सत्यभामा

---

9. P अयसु। 10. गुरुयण°। 11. S भुयदंडहिं।

(4) 1. B उवयाचलि। 2. S अरहंतदेउ। 3. B °वंद°। 4. S omits this foot. 5. AB पयसारिउ। 6. S भाणु वि इट्ठ°; P भाणुवइट्ठु कुमारीहिं। 7. P कुलकम। 8. AP णीलुप्पल। 9. APS सच्चभाम°। 10. BS वि दरिसिउं।

तं आवण्णिवि भाणुहि मायरि गय तहिं जहिं अत्थाणइ थिउ हरि।
पत्थिउ पिययमु लाइ णवेप्पिणु अण्ण म सेवहि मइं मेल्लेप्पिणु।
ताव जाव तणुरुहु[11] उप्पज्जइ तं मग्गिउ हरि दइएं[12] दिण्णउं।
तं णिसुणिवि रुप्पिणिइ सणंदणु भणिउ सयणमणणयणाणंदणु।
पुत्त पुत्त पिसुणहि पाविट्ठहि मज्झु [13]सवत्तिहि दुट्ठहि धिट्ठहि।

घत्ता—खयरिइ[14] महुसूयणवल्लहइ[15] जइ वि णाहु ओलग्गिउ।
तो वि तिह करि[16] ण[17] होइ सुउ एत्तिउं तुहुं मइं मग्गिउं।।4।।

(5)

ताहि म होउ होउ वर एयहि जंबावइहि पुण्णससितेयहि।
वच्छल पियसहि णंदउ रिज्झउ इयर विसमसंतावें डज्झउ।
तं णिसुणिवि विहसिवि[1] कंदप्पें णियविज्जासामत्थवियप्पें।
पइरइकामहि[2] वड्डियछायहि रयसलिदियहि[3] चउत्थइ ण्हायहि।
जंबावइहि रूउ[4] किउ केहउं सच्चहामदेविहि[5] जं जेहउं।
कामरूयमुद्दिय[6] [7]पहिरेप्पिणु गय हरिणा वि[8] पवर [9]मण्णेप्पिणु।
रमिय गब्भु तक्खणि संजायउ कीडवसुरु[10] सग्गग्गहु आयउ।

वहाँ गयी जहाँ दरबार में श्रीकृष्ण बैठे हुए थे। उसने प्रणाम कर प्रियतम से प्रार्थना की कि आप मुझे छोड़कर किसी दूसरे के पास तब तक न जाएँ, जब तक पुत्र उत्पन्न न हो जाए। उसने जो माँगा प्रिय ने वह दे दिया। यह सुनकर रुक्मिणी ने स्वजनों के मन और नेत्रों को आनन्द देनेवाले अपने पुत्र से कहा—"हे देव ! हे पुत्र ! पिशुन-पापिष्ठ-दुष्ट-ढीठ मेरी सौत सत्यभामा—

घत्ता—यद्यपि कृष्ण की उस प्रिया ने अपने स्वामी से वचन ले लिया है। पुत्र न हो, तुम ऐसा कुछ करो, मैं तुमसे इतना माँगती हूँ।

(5)

उसके न हो, अच्छा है कि पुण्यरूपी शशि से तेजवाली जाम्बवती के वह पुत्र हो। हे पुत्र ! प्रिय सखी आनन्दित हो और प्रसन्न हो। दूसरी विषम सन्ताप-ज्वाला में जले।" यह सुनकर कामदेव ने अपनी विद्या की समार्थ्य के विकल्प से, रजस्वला होने के दिन से चौथे दिन नहाई हुई, बढ़ रही है कान्ति जिसकी ऐसी तथा पति से रमण की इच्छा रखनेवाली जाम्बवती का रूप, ऐसा बना दिया जैसे वह सत्यभामा देवी का रूप हो। कामरूप मुद्रा पहिनकर वह गयी और कृष्ण ने भी उसे बड़ी रानी (सत्यभामा) मानकर उससे रमण किया। तत्क्षण उसके गर्भ रह गया। क्रीडवदेव स्वर्ग के अग्रभाग से तत्क्षण उसके गर्भ में आकर स्थित हो

---

11. B तणरुहु। 12. P तहि दइवें; S तं दइएं। 13. BP सवित्तिहे। 14. BP खेयरिए। 15. P महसूयण°। 16. S करे। 17. BPS णउ.होइ।

(5) 1. P हसेवि। 2. B °कामहो। 3. APS रयसज्ज°। 4. S रूवु। 5. APS सच्चभाम°। 6. S °रूव°। 7. S परिहेप्पिणु। 8. B Als. वियवर (वि अवर)।
9. A मेल्लेप्पिणु। 10. AP कीडवसरु ली सग्गहो आइउ।

णवमासहिं लायण्णरवण्णउ[11] संभवु[12] णाम पुत्तु उप्पण्णउ।
जंबावइहि[13] पउण्ण मणोरह सुय वड्ढंति महंत महारह।
जणणिजणियपिसुणत्तें दारुणु अवरहिं दिवसि जाय कोवारुणु।
संभवेण अवमाणिवि चित्तउ भाणु भणियसरजाइहि[14] जित्तउ।
पुण्णविसेसु [15]सुणिवि महंतउ मुक्कउ झत्ति रोसपब्भारउ।
सच्चहामदेविइ[16] गुणकित्तणु पडिवण्णउं रुप्पिणिसयणत्तणु।
घत्ता—इय णिसुणिवि मुणिगणहरकहिउं सीरपाणि पुणु भासइ।
अज्ज[17] वि कइ वरिसइं महुमहणु देव रज्जु भुंजेसइ ॥5॥

(6)

दसदिसिवहपविदिण्णहुयासें णासेसइ दीवायणरोसें।
मज्जणिमित्तें दारावइ पुरि जरणामें वणि णिहणेवउ[1] हरि।
एउं भविस्सु देउ उग्घोसइ बारहमइ संवच्छरि होसइ।
पढमणरइ सिरिहरु णिवडेसइ[2] एक्कु समुद्दोवमु जीवेसइ।
पच्छइ पुणु तित्थयरु हवेसइ एत्थ[3] खेत्ति कम्माइं डहेसइ।
तुहुं छम्मास जाम सोआयरु[4] हिंडेसहि सोयंतउ[5] भायरु।

गया। नौ माह में लावण्ययुक्त सुन्दर शम्भव नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। जाम्बवती की कामना पूरी हुई। दोनों (जाम्बवती का शम्भव और सत्यभामा का सुभानु) महान् महारथी पुत्र बढ़ने लगते हैं। माँ के द्वारा की गयी दुष्टता के कारण दूसरे दिन वह क्रोध से लाल हो गया। शम्भव ने उसे अपमानित करके छोड़ दिया। भानु भणित स्वर जाति विवादों में जीत लिया गया। फिर उसे (शम्भव को) पुण्यविशेषवाला और महान् सुनकर उसने क्रोध के प्रभार को छोड़ दिया। सत्यभामा देवी ने गुणकीर्तन और रुक्मिणी का स्वजनत्व स्वीकार कर लिया।

घत्ता—गणधर मुनि के इस कथन को सुनकर बलभद्र पुनः कहते हैं–"हे देव ! श्रीकृष्ण अभी कुछ वर्ष और राज्य का उपभोग करेंगे।

(6)

जिससे दसों दिशाओं में आग फैल गयी है, ऐसे द्वीपायन मुनि के क्रोध से शराब के कारण द्वारिका नगरी नष्ट होगी और वन में जरतकुमार के द्वारा कृष्ण मारे जाएँगे।" देव घोषणा करते हैं कि यह बारहवें साल में होगा। श्रीकृष्ण पहले नरक में जाएँगे और एक सागरपर्यन्त न जीवित रहेंगे। बाद में फिर तीर्थंकर होंगे। और इस क्षेत्र (भरतक्षेत्र) में कर्मों का नाश करेंगे। तुम छह माह तक, भाई का शोक करते हुए, शोकातुर

---

11. P लावण्ण°। 12. B संभयणामु; P जंबावइहे पुत्तु उप्पण्णउ। 13. AP ते वेण्णि वि पउण्णमणोरह। 14. BK °जायहिं। 15. AP सुणेवि। 16. APS सच्चभाम°। 17. P अज्जु।

(6) 1. P णिहणेव्वउ। 2. ABPS णिवसेसइ। 3. AP एत्थु खेत्ति। 4. AS सोयाउरु; P सोयायरु। 5. B सोएंतउ।

विमलि[6] देविं उम्मोहेवउ[7] वणि सिद्धत्थें संबोहेवउ।
दइगंबरिय दिक्ख पालेप्पिणु कुच्छिउ णरसरीरु मेल्लेप्पिणु।
माहिंदइ अमरत्तु लहेसहि पुणरवि एउं खेत्तु आवेसहि।
होसहि सिरिअरहंतु भडारउ दुम्महवम्महवम्मवियारउ।
इय णिसुणिवि दीवायणु[8] मुणिवरु हुउ गउ अण्णहो पवरु देसंतरु।
महुमहमरणायण्णणसंकिउ थिउ जाइवि[9] णियदइवें ढंकिउ।
जरकुमारु[10] विलसियपंचाणणि कोसंबीपुरिणियडइ काणणि।
भूसिउ गुंजाहरणविसेसें संठिउ सुंदरु णाहलवेसें।

घत्ता—मिच्छत्तें [11]मलिणीहूयएण दढणरयाउसु बद्धउं।
महुमहणें पुणु संसारहरु जिणवरदंसणु[12] लद्धउं।।16।।

(7)

पसरियसमयभत्तिगुणरुंदें वेज्जवच्चु कयउं गोविंदें।
सत्तुय काराविय णियपुरवरि[1] ओसहु तें दिण्णउं[2] मुणिवरकरि।
तित्थयरत्तु णामु तेणज्जिउं जं अमरिंदणरिंदहिं पुज्जिउं।
इय णिसुणिवि [3]माहउ आउच्छिवि णासणसीलु सव्वु जगु पेच्छिवि।
पज्जुण्णाइ पुत्त वउ लेप्पिणु थिय णिग्गंथ कलुसु मेल्लेप्पिणु।
रुप्पिणि आइ करिवि महएविउ अट्ठ वि दिक्खियाउ [4]सियसेविउ।

घूमोगे। विमलादेवी के द्वारा तुम मोह छोड़ोगे और वन में सिद्धार्थ देव तुम्हें सम्बोधित करेगा। तुम दिगम्बर दीक्षा का परिपालन कर तथा कुत्सित मानव-शरीर छोड़कर, माहेन्द्र स्वर्ग में देवत्व प्राप्त करोगे। फिर इसी क्षेत्र में आओगे। तुम दुर्दमनीय काम के मर्म का नाश करनेवाले भट्टारक श्री अरहन्त बनोगे।" यह सुनकर द्वीपायन मुनिवर अन्य उत्तम देशान्तर चले गये। कृष्ण के मरण के श्रवण से आशंकित, अपने भाग्य से आच्छादित जरत्कुमार जाकर कौशाम्बीपुर के निकट सिंहों से विलसित वन में स्थित हो गया। घुँघचियों के आभूषणों से भूषित वह सुन्दर भीलरूप में निवास करने लगा।

घत्ता—मिथ्यात्व से मलिनीभूत कृष्ण ने नरकायु का दृढ़ बन्ध कर लिया। फिर उन्होंने संसार का नाश करनेवाले जिनवर का दर्शन प्राप्त किया।

(7)

जिनमत में प्रसारित भक्ति गुण से विशाल गोविन्द ने वैयावृत्ति की। श्रीकृष्ण ने अपने नगर में चूर्ण बनवाया और उन्होंने मुनिवरों के हाथ में औषधि दी। उन्होंने तीर्थंकरत्व का अर्जन किया जो देवेन्द्रों और मानवेन्द्रों के द्वारा पूज्य है। यह सुनकर तथा श्रीकृष्ण से पूछकर समस्त संसार को क्षणभंगुर समझकर, प्रद्युम्न आदि पुत्र व्रत लेकर, क्लेशभाव छोड़कर, निर्ग्रन्थ हो गये। रुक्मिणी आदि सहित, लक्ष्मी से सेवित आठों

6. APS विमलें देवें। 7. A उम्मोएवउ; P उम्मोहेव्वउ। 8. P दीवायणु। 9. S जायवि। 10. B °कुमार। 11. B मिलिणीहुयएण। 12. B °दंसण।

(7) 1. B णियपुरि। 2. S दिण्णा। 3. S माहवु। 4. B सूय°।

वम्महु संभउ[5] रिसि अणुरुद्धउ[6] तवजलणें दंडिवि[7] मयरद्धउ।
तिण्णि वि उज्जयंतगिरिवरसिरि महुरमहुरणिग्गयमहुयरगिरि।
केवलणाणु विमलु उप्पाइवि किरियाछिण्णु[8] झाणु णिज्झाइवि।
घत्ता—गय मोक्खहु णेमि सुरिंदथुउ णिम्मलणाणविराइउ।
विहरेप्पिणु बहुदेसंतरइं पल्लवविसयहु आइउ ॥7॥

(8)

बलएवें पुच्छिउ सुरसारउ पंडवकह वज्जरइ भडारउ।
कंपिल्लिहि णयरिहि णरपुंगमु दुमउ[1] णाम महिवइ सुहसंगमु।
दढरह घरिणि पुत्ति तहु दोवइ जा सोहग्गें कामु वि गोवइ।
सा दिज्जइ कहु मंतु पमंतिउ चंडु णाम पोयणपुरि खत्तिउ।
देविल घरिणि पुत्तु जाणिज्जइ इंदवम्मु तहु सुंदरि दिज्जइ।
अवरें[2] भणिउं भीमु मडकेसरि[3] जो आहवि घल्लइ णहयलि करि।
दिज्जइ तासु धूय परमत्थें अवरु भणइ जइ परिणिय पत्थें।
तो एयहि तियपट्टु[4] णिबज्झइ अण्णु भणइ महुं हियवइ सुज्झइ।
सुयहि सयंवरविहि मंडिज्जइ केत्तिउं हियउल्लउं खंडिज्जइ।
जो रुच्चइ सो माणउ इच्छइ दुज्जण किं करंति किर पच्छइ।

महादेवियाँ भी दीक्षित हो गयीं। प्रद्युम्न, शम्भव और मुनि अनिरुद्ध तप की ज्वाला में कामदेव को दण्डित कर, तीनों ही गिरनार पर्वत के शिखरों पर, जिनमें मधुकरों की मधुर-मधुर ध्वनि हो रही थी, घातिया कर्मों का नाश करनेवाला ध्यान करके, विमल केवलज्ञान को उत्पन्न कर,

घत्ता—मोक्ष गये। देवेन्द्रों से संस्तुत तथा पवित्रज्ञान से विराजित नेमिनाथ अनेक देशान्तरों में भ्रमण करते हुए पल्लवदेश में आये।

(8)

तब बलराम के द्वारा पूछे जाने पर सुरश्रेष्ठ आदरणीय पाण्डवकथा कहते हैं—कम्पिला नगरी में नरश्रेष्ठ शुभसंगम द्रुपद नाम का राजा था। उसकी गृहिणी दृढ़रथ थी और पुत्री द्रौपदी जो सौभाग्य में काम को भी क्रुद्ध कर देती थी। वह किसे दी जाये—इस पर मन्त्री ने परामर्श दिया कि पोदनपुर में चन्द्र (चन्द्रदत्त) नाम का क्षत्रिय है। उसकी गृहिणी देवला है। उसका पुत्र इन्द्रवर्मा जाना जाता है, उसे सुन्दरी दी जाये। किसी दूसरे ने कहा—योद्धाओं में श्रेष्ठ भीम है, जो युद्ध में हाथी को आकाश में उछाल देता है। वास्तव में कन्या उसे देना चाहिए। दूसरा कहता है—यदि अर्जुन से विवाहित हो तो इसे पट्टरानी का पट्ट बाँधा जाएगा। एक और कहता है—मेरे मन में तो यह सूझ पड़ता है कि कन्या की स्वयंवर विधि की जाये। हृदय को कितना खण्डित किया जाए ? जो अच्छा लगता है, मनुष्य उसकी इच्छा करता है, बाद में दुर्जन कुछ भी करते रहें।

5. AB संभूरिसि। 6. APS अणिरुद्धउ। 7. ABPS डहेवि। 8. S °छिण्ण।

(8) 1. AP दुमउ णामु; S द्रुमउ। 2. BS अवरिं। 3. AB भीममडु। 4. B तृयपट्टु।

घत्ता–तहिं अवसरि खलदुज्जोहणेण[5] कवडें जूइ[6] जिणेप्पिणु।
णिद्धाडिय पंडव पुरवरहु सइं थिउ पुहइ लएप्पिणु ॥8॥

(9)

पुव्वपुण्णपब्भारपसंगें जउहरि[1] घल्लिय णट्ठ सुरंगें[2]।
गय तहिं जहिं आढत्तु सयंवरु विविहकुसुमरयरंजियमहुयरु[3]।
मिलिय अणेय राय मउडुज्जल[4] चमरधारिचालियचामरचल[5]।
पहपंसुल पंथिय छुडु आइय ते पंच वि कण्णाइ पलोइय।
दइवें लोयवाल[6] णं ढोइय णं वम्महसरगुण संजोइय।
सिद्धत्थाइ राय अवगण्णिवि कामु व दिव्वधणुद्धरु[7] मण्णिवि।
पत्थु सलोणु विसेसें जोइउ तहि दइवें भत्तारु णिओइउ।
घित्त सदिट्ठि माल तहु उरयलि लच्छीकीलापंगणि[8] पविउलि।
ता हरिसिय णीसेस णरेसर पहिय पणच्चिय उब्भिवि णियकर।
जयजयसद्दें [9]णयरि पइट्ठहिं जिणअहिसेयपणामपहिट्ठहिं[9]।
कालु जंतु बहुरायविणोयहिं णाउ[10] जाणइ भुंजेवि य भोयहिं।

घत्ता–उस अवसर पर दुष्ट दुर्योधन ने जुए में कपट से जीतकर पाण्डवों को नगर से बाहर निकाल दिया और पृथ्वी पर अधिकार कर स्वयं स्थित हो गया।

(9)

पूर्वपुण्य के प्रभार से लाक्षागृह में डाले गये, वे सुरंग से भाग निकले। वे वहाँ पहुँचे जहाँ विविध कुसुमरज से शोभित हैं मधुकर जिसमें, ऐसा स्वयंवर हो रहा था। मुकुटों से उज्ज्वल चमर धारण करनेवाले के द्वारा संचालित चामरों से चंचल अनेक राजा आकर मिले। पथ की धूल से धूसरित, शीघ्र आये हुए वे पाँचों पथिक भी कन्या ने देखे, मानो दैव ने लोकपाल दिये हों। मानो कामदेव के बाण चढ़ा दिये गये हों। सिद्धार्थ आदि राजाओं की उपेक्षा कर, दिव्यधनुर्धारी (अर्जुन) को कामदेव के समान समझकर, (कन्या ने) सुन्दर अर्जुन को विशेष रूप से देखा। दैव ने ही उसका पति नियोजित कर दिया था। उसके लक्ष्मी की लीला के प्रांगण और विशाल उरतल पर, उसने अपनी माला और दृष्टि डाल दी। इससे समस्त राजा प्रसन्न हो उठे। वे पथिक दोनों हाथ उठाकर नाचने लगे। जय-जय शब्द के साथ नगर में प्रवेश करते हुए तथा जिनेन्द्र भगवान् के अभिषेक और प्रणाम से प्रसन्न होते हुए, बहुराग विनोदों और भोगों के कारण भोगकर भी उन्होंने जाते हुए समय को नहीं जाना।

5. B खलु। 6. BP जूएं।

(9) 1. A जऊहरे; BPS जउहरे। 2. P सुतुंगें। 3. BS °कुसुमरसरंजिय°। 4. BP °ज्जलु। 5. B °चलु। 6. P लोइयवाल। 7. P दिव्वु। 8. AB °पंगणि; S °पंगण°। 9. A °पणामअहिट्ठहिं। 10. BAls. णउ अणिज्जइ भुंजियभोयहिं।

घत्ता—कालें जंतें थिरथोरकरु[11] रणि पल्हत्थियगयघडु।
पत्थेण सुहद्दहि संजणिउ सिसु अहिअण्णु[12] महाभडु ॥9॥

(10)

अवरु[1] वि मुहमरुथियमत्तालिहि सुय पंचाल[2] जाय पंचालिहि।
पुणु वि भुयंगसेणपुरि[3] पविसणु[4] कियउ[5] तेहिं कीअयणिण्णासणु।
मायावियरूयाइं[6] धरेप्पिणु पुणु[7] विराडमंदिरि णिवसेप्पिणु।
अरिणरवइ जिणेवि सर धरेवि कुढि लग्गिवि गोउलइं णियत्तिवि।
पुणु कुरुखेत्ति पवड्ढियगोरव[8] पंडुसुएहिं परज्जिय कोरव[9]।
अखलियपरिपालियहरियाणउ जाउ जुहिट्ठिलु देसहु राणउ।
थिउ रायाणुवट्टि[10] गुणवंतउ भायरेहिं सुहुं[11] सिरि भुंजंतउ।
बारहवरिसइं णवर पउण्णइं गलियइं पंकयणाहहु पुण्णइं।
वणघल्लियमइराइ[12] पमत्तहिं[13] मयपरवसहिं पघुम्मिरणेत्तहिं।
सिसुकीलारएहिं संताविउ रायकुमारहिं रिसि रोसाविउ।
सो दीवायणु छुडु छुडु आयउ मुउ भावणसुरु[14] तक्खणि जायउ[15]।

घत्ता—समय बीतने पर, अर्जुन ने सुभद्रा से स्थिर स्थूल हाथवाला, गजघटा का संहार करनेवाला महान् योद्धा शिशु अभिमन्यु को उत्पन्न किया।

(10)

और भी, जिसके मुख-पवन में मतवाले भ्रमर स्थित हैं, ऐसी द्रौपदी से पांचाल नामक पाँच पुत्र हुए। फिर उन्होंने भुजंगशैलपुर में प्रवेश कर कीचक का वध किया। फिर मायावी रूप धारण कर तथा विराट् के भवन में निवास कर, फिर शत्रु राजा को तीर मारकर, तथा जीतकर, पीछे लगकर, लौटकर और गोकुल को लेकर, फिर कुरुक्षेत्र में बढ़ा हुआ है गौरव जिनका ऐसे कौरवों को पाण्डुपुत्रों ने पराजित किया। अस्खलित रूप से परिपालन किया है 'हरियाणा' का राज्य जिसने, ऐसा युधिष्ठिर देश का राजा हो गया। राज्य का अनुगामी, गुणवान्, भाइयों के साथ सुख और ऐश्वर्य का भोग करता हुआ वह रहने लगा। पूरे बारह वर्ष बीत गये और श्रीकृष्ण का पुण्य नष्ट हो गया। वन में बनायी गयी मदिरा से प्रमत्त, मद से परवश घूमती हुई आँखोंवाले, शिशुक्रीड़ा में रत राजकुमारों के द्वारा मुनि सताये गये और क्रुद्ध किये गये वही द्वीपायन जो अभी-अभी आये हुए थे, मरकर उसी समय भवनवासी देव हुए।

---

11. A थिरथोरकरु। 12. APS अहिवण्णु।

(10) 1. S अवरु। 2. BS पंचालु। 3. B भुयंगसेल°; S भुयंगसल°। 4. P पइसणु। 5. S कयउं। 6. P °रूवाइं। 7. S omits this foot. 8. BAls °गारव; PS °गउरव। 9. PS कउरव। 10. AP णायाणुयट्टि; B रायाणुवट्टि। 11. P सउं। 12. ABPS यणे। 13. B पत्तहिं। 14. B भावणि; S भावणु। 15. P संजायउ।

घत्ता—आरूसिवि पिसुणें मुक्क सिहि पावेप्पिणु सुरदुग्गइ।
धवलहरधवलधयमणहरिय[16] खणि दड्ढी[17] दारावइ ॥10॥

(11)

सयणमरणउहसोएं[1] भरियउ सहुं बलएवें लहुं णीसरियउ।
होउ होउ दिव्वाउहसिक्खइ पोरिसु काइं करइ भग्गक्खइ।
ण[2] धय ण छत्त ण रह णउ गयवर णउ किंकर[3] [4]चलंति णउ चामर।
देहमेत्त[5] सावयभीसावणु बेण्णि वि भाय[6] पइट्ठ महावणु[7]।
चक्कि विडवितलि सुत्तु तिसायउ[8] सीरि[9] सलिलु पविलोयहुं धाइउ।
तहिं अवसारि हयदइवें[10] रुद्धउ जरकुमारभिल्लें[11] हरि विद्धउ।
जइ वि जीउ[12] दुग्गइं आसंघइ तो वि ण णियइ को वि जगि लंघइ।
मुउ गउ पढमणरयविवरंतरु[13] सोक्खु णकासु वि भुयणि[14] णिरंतरु।
जलु लएवि तक्खणि पडियाएं[15] पसरियमोहतिमिरसंघाएं।
घत्ता—खयकालफणिंदें कवलियउ महि णिवडिउ णिच्चेयणु।
बोल्लाविउ भायरु हलहरिण माहउ[16] मउलियलोयणु ॥11॥

घत्ता—देवों की दुर्गति पाकर, उस दुष्ट ने क्रुद्ध होकर आग फेंकी। और, धवल गृहों तथा धवल ध्वजों से सुन्दर द्वारावती एक क्षण में जलकर खाक हो गयी।

(11)

स्वजनों के मरने से उत्पन्न शोक से भरे हुए श्रीकृष्ण, बलदेव के साथ शीघ्र निकल गये। दिव्यायुधों से शिक्षित रहे, भाग्य के क्षय होने पर पौरुष क्या कर सकता है ? न ध्वज, न छत्र, न रथ, न गजवर, न किंकर, और न ही चमर चलते हैं। शरीरमात्र वे दोनों भाई श्वापदों से भयंकर महावन में प्रविष्ट हुए। चक्रवर्ती प्यास से व्याकुल होकर वृक्ष के नीचे सो गये। बलभद्र पानी देखने के लिए दौड़े। उस अवसर पर हतदैव से रुद्ध, जरतकुमार भील के तीर से हरि घायल हो गये। यदि जीव दुर्ग में भी आश्रय ले ले, तब भी विश्व में नियति का उल्लंघन कोई नहीं कर सकता। मरकर वह, प्रथम नरक के बिल में गये। इस संसार में निरन्तर सुख किसी को नहीं मिलता। बलभद्र जल लेकर तत्काल वापस आये। बढ़ रहा है मोहान्धकार का समूह जिनमें, ऐसे—

घत्ता—बलराम ने क्षयकालरूपी नाग से कवलित धरती पर अचेतन पड़े हुए, मुकुलित-नयन भाई माधव को बुलाया।

---

16. P °अइमणोहरिय। 17. B दिड्ढी।

(11) 1. AP °मरणभयसोएं। 2. P धण यण छत्त ण रह णउ गयवर; S ण धय ण छत्त णउ गयवर। 3. B किंकिर। 4. AP चलंति चामरधर। 5. B ° मित्तु; S °मेत्तु। 6. B भाइ। 7. B वणे। 8. APS तिसाइउ। 9. P सीरि वि सलिलु पलोयहुं धाइओ।

(12)

उट्ठि उट्ठि अप्पाणु णिहालिहि लइ जलु महुमह मुहुं[1] पक्खालहि।
दामोयर धूलीइ विलित्तउ उट्ठि उट्ठि किं भूमिहि सुत्तउ।
उट्ठि उट्ठि केसव मइं आणिउं णिरु तिसिओ सि पियहि तुहुं पाणिउं।
उट्ठि उट्ठि सिरिहर साहारहि मइं णिज्जणि वणि किं अवहेरहि।
उट्ठि उट्ठि हरि मइं बोल्लावहि चिंताउलिउ केत्तिउं सोवहि।
पूयणमंथण[2] सयडविमद्दण विमणु म थक्कहि देव जणद्दण।
इंदु वि बुड्ढइ तुह असिवरजलि अज्ज[3] वि तुहुं जि राउ धरणीयलि।
डज्झउ पुरि विहडउ तं परियणु अंतेउरु णासउ वियलउ धणु।
भाइ [4]धरत्तिदित्ति[5]उप्पायण[6] छुडु तुहुं एक्कु होहि णारायण[7]।
जहिं तुहुं तहिं सिरि अवसें णिवसइ जहिं ससि तहिं किं जोण्ह ण विलसइ।
उट्ठि उट्ठि भद्दिय जाइज्जइ किं किर गिरिकंदरि णिवसिज्जइ।
किं ण मज्झु करयलि करु ढोयहि किं रुट्ठो सि बप्प णउ जोवहि[8]।

घत्ता—उट्ठाविवि सुइरु सबंधवेण हरिहि अंगु परिमट्ठउं।
वणविवरहु होंतउ रुहिरजलु ताम गलंतउं दिट्ठउं ॥12॥

(12)

उठो, उठो, अपने को देखो। हे माधव ! पानी लो और अपना मुँह धो लो। हे दामोदर ! तुम धूल-धूसरित हो रहे हो। उठो, उठो, तुम भूमि पर क्यों सो रहे हो ? उठो ओ, केशव मैं ले आया हूँ। तुम अत्यन्त प्यासे हो, लो यह पानी पिओ। हे श्रीधर (कृष्ण) उठो, उठो, मुझे सहारा दो। इस निर्जन वन में मेरी उपेक्षा क्यों कर रहे हो ? हे हरि ! उठो, उठो, मुझसे बात करो। चिन्ता से व्याकुल होकर तुम कितना सो रहे हो ? पूतना का नाश करनेवाले, शकटासुर के नाशक, हे देव जनार्दन ! तुम उन्मन मत रहो। तुम्हारी तलवार के जल में इन्द्र भी डूब जाता है। आज भी तुम धरती के राजा हो। नगरी जल जाये, परिजन नष्ट हो जाये, अन्तपुर मिट जाये, धन नष्ट हो जाये, परन्तु धरती की दीप्ति को उत्पन्न करनेवाले हे भाई नारायण ! तुम अकेले बने रहो। जहाँ तुम हो, वहाँ लक्ष्मी अवश्य निवास करेगी। जहाँ चन्द्रमा है, वहाँ क्या ज्योत्स्ना नहीं शोभित होगी ? हे भद्र ! उठो, उठो, चला जाये, पहाड़ की गुफा में कैसे रहा जाएगा ? मेरे हाथ में हाथ क्यों नहीं देते ? तुम क्यों रूठ गये हो ? हे सुभट ! मुझे नहीं देखते ?"

घत्ता—बहुत समय तक उठाकर भाई (बलभद्र) ने कृष्ण के शरीर को छुआ तो उसे घाव के छेद से बहता हुआ खून दिखाई दिया।

---

10. B रुव। 11. AP °भासें। 12. S जीवु। 13. P °णारए। 14. P सुयणे। 15. APS पडिआएं। 16. S माहवु।

(12) 1. S मुहु। 2. P °मथण°। 3. Als. अज्जेवि; BS अज्जि वि। 4. APS °धरित्ति°। 5. A °दित्ति° P °दित्ति°। 6. P °उप्पायणु। 7. P णारायणु। 8. APS जोयहि।

(13)

तं अवलोइवि सीरिहि रुण्णउं[1] तुज्झु वि तणु किं सत्थें भिण्णउं।
गरुडणाहु[2] किं डसियउ[3] सप्पें अहवा किं किर एण वियप्पें।
मं छुडु जरकुमारु एत्थाइउ तेण महारउ बंधवु[4] घाइउ।
घाइउ[5] ण मरइ कण्हु भडारउ दुद्दमदाणविंदसंघारउ।
एउ[6] भणंतु[7] पेउ सो ण्हाणइ सोयाउरु णउ काइं मि जाणइ।
देवंगइं वत्थइं परिहावइ भूसणेहिं भूसइ भुंजावइ।
मुयउ तो वि जीवंतु व मण्णइ जणभासिउं ण किं पि आयण्णइ।
कुंकुमचंदणपंकें मंडइ खंधि चडाविवि महि आहिंडइ।
देवें सिद्धत्थें संबोहिउ थिउ बलएउ समाहिपसाहिउ।
छम्मासहिं महियलि ओयारिउ विट्ठु सइट्ठु तेण सक्कारिउ।
सुहिविओयणिव्वेएं लइयउ णेमिणाहु पणविवि पावइयउ।
अच्छरकरचालियचलचामरु सो संजायउ माहिंदामरु।

घत्ता—आयण्णिवि महुसूयणमरणु[8] जसधवलियजयमंडव।
गय पंच वि सिरिणेमीसरहु सरणु पइट्ठा[9] पंडव ॥13॥

(13)

यह देखकर बलराम रो पड़े—"क्या तुम्हारा भी शरीर शस्त्र से आहत हो गया ? क्या गरुडराज को साँप ने काट खाया ? अथवा इस विकल्प से क्या, शायद जरत्कुमार यहाँ आया है और उसने मेरे भाई को आहत किया है। दुर्दम दानवेन्द्र का संहार करनेवाला मेरा भाई आदरणीय कृष्ण आहत होने से नहीं मर सकता।" यह कहते हुए वह उस प्रेत को स्नान कराते हैं। शोक से व्याकुल वह कुछ भी नहीं जानते। वह उसे देवांग वस्त्र पहिनाते हैं। आभूषणों से भूषित करते हैं, भोजन कराते हैं, वह मर चुके हैं तो भी जीवित के समान मानते हैं। लोगों के कहे हुए को बिल्कुल भी नहीं सुनते। केशर-चन्दन के लेप से लेप करते हैं, कन्धों पर चढ़ाकर धरती पर घूमते हैं। तब सिद्धार्थदेव के द्वारा सम्बोधित होने पर बलभद्र समाधि से शोभित हुए (समाधि ग्रहण की)। छह माह होने पर उन्होंने देव को कन्धे से उतारा और तब अपने इष्ट विष्णु का (कृष्ण का) उन्होंने दाह-संस्कार किया। सुधीजन के वियोग से विरक्त उन्होंने श्री नेमिनाथ को प्रणाम कर दीक्षा ग्रहण कर ली। अप्सराओं से चालित है चंचल चामर जिसके लिए, ऐसे वह माहेन्द्रस्वर्ग के देव हो गये।

घत्ता—श्रीकृष्ण की मृत्यु सुनकर, अपने यश से जगरूपी मण्डप को धवलित करनेवाले पाँचों पाण्डव भी गये और श्री नेमिनाथ की शरण में जा पहुँचे।

---

(13) 1. AS सीरि; P सीरें। 2. B गुरुड°। 3. B डसिउ। 4. APS बंधु वि घाइउ। 5. APS घायउ। 6. P एम। 7. A भणंतु कण्हु सो। 8. B महुसयण°; S महसूयण°। 9. P पयट्टा।

(14)

दिट्ठउ जिणु णीसल्लु णिरंतरु[1] पणवेप्पिणु पुच्छिउ सभवंतरु।
अक्खइ णेमिणाहु इह भारहि चंपाणयरिहि महियलि[2] सारहि।
मेहवाहु[3] कुरुवंसपहाणउ होंतउ इंदसमाणउ राणउ।
सोमदेउ बंभणु सोमाणणु सोमिल्लाबंभणिथणमाणणु।
सोमयत्तु सोमिल्लउ भाणिउ णंदण सोमभूइ जणि जाणिउ।
ताहं अणेयधण्णधणरिद्धिउ[4] अग्गिभूइ माउलउ पसिद्धउ।
अग्गिलगब्भवाससंभूयउ[5] एयउ तिण्णि तासु पियधूयउ।
धणसिरि मित्तसिरी वि मणोहर णायसिरी वि सुतुंगपओहर[6]।
दिण्णउ ताहं[7] ताउ धवलच्छिउ कुलभवणारविंदणवलच्छिउ।
जिणपयपंकयाइं पणवेप्पिणु सोमदेउ गउ दिक्ख लएप्पिणु।
अण्णहिं दिणि धम्मरुइ भडारउ दूसहतवसंतत्तसरीरउ।
णवकंदोट्टदलुज्जलणेत्तें सोमदत्तणामें[8] दियपुत्तें।
परमइ अणुकंपाइ णियच्छिउ घरपंगणु पावंतु पडिच्छिवि।
धणसिरि[9] पभणिय तेण सगेहहो[10] भोयणु देहि[11] रिसिहि णिण्णेहहु।

घत्ता—ता रूसिवि ताइ अलक्खणइ साहुहि विसु करि दिण्णउं।
तं भक्खिवि तेण समंजसेण संणासणु पडिवण्णउं ॥14॥

(14)

उन्होंने निरन्तर निःशल्य जिन के दर्शन किये और प्रणाम कर अपने जन्मान्तर पूछे। नेमिनाथ कहते हैं—"इस भरतक्षेत्र की चम्पानगरी में धरती पर श्रेष्ठ कुरुवंश का प्रधान राजा मेघवाहन था जो इन्द्र के समान था। चन्द्रमा के समान मुखवाला तथा अपनी सोमिला नाम की ब्राह्मणी के स्तनों का माननेवाला सोमदेव ब्राह्मण था। उसके सोमदत्त, सोमिल और सोमभूति पुत्र लोगों में जाने जाते थे। उनका अनेक धन-धान्य से समृद्ध अग्निभूति मामा प्रसिद्ध था। पत्नी अग्निला के गर्भ से उत्पन्न उसकी ये तीन पुत्रियाँ थीं—धनश्री, मित्रश्री और नागश्री; सुन्दर और अत्यन्त ऊँचे स्तनोंवाली। धवल आँखोंवाली तथा कुलभवन रूपी अरविन्द की नवलक्ष्मियाँ वे कन्याएँ उनको (मानजों को) दे दी गयीं। सोमदेव जिनवर के चरणकमलों में प्रणाम कर दीक्षा लेकर चला गया। दूसरे दिन असह्य तप से संतप्त-शरीर भट्टारक धर्मरुचि मुनि को नवकमल-दल के समान नेत्रवाले सोमदत्त नामक ब्राह्मणपुत्र ने अत्यन्त अनुकम्पा से देखा तथा घर के आँगन में पाकर पड़गाहा और उसने धनीश्री से कहा कि व्रतों को ग्रहण करनेवाले वीतराग मुनि को आहार दो।

घत्ता—तब क्रुद्ध होकर उस लक्षणहीना ने साधु के कर में विष दे दिया। उसे खाकर सामंजस्यशील मुनि ने संन्यास स्वीकार कर लिया।

(14) 1. D णिरंतरु। 2. APS महियल°। 3. A मेहवाउ। 4. APS °धणरिद्धउ। 5. AIs °वासे; D °वासि। 6. P °पयोहर। 7. A ताउ ताहं। 8. P सोमभूइ°। 9. A धणिसिरिं; P फणिसिरि। 10. S व्रयगेहहो। 11. S दिण्णु।

यहाँ पर 'संन्यास' का अर्थ सल्लेखना या समाधि है। —सम्पादक

(15)

देउ भडारउ हुयउ अणुत्तरि दुक्खविवज्जिइ सौक्खणिरंतरि।
तं[1] तेहउं दुक्किउं अवलोइवि मइ अरहंतधम्मि संजोइवि।
वरुणायरियहु[2] पासि अमाया तिण्णि वि भायर मुणिवर जाया।
गुणवइखंतिहि पयइं णवेप्पिणु कामु कोहु मोहु वि मेल्लेप्पिणु।
तरुणिहिं संजमगुणवित्थिण्णउं[3] मित्तणायसिरिहिं[4] मि वउं[5] चिण्णउं।
सल्लेहणविहिलिहियइं गत्तइं अच्चुयकप्पि सुरत्तणु पत्तइं।
पंच वि ताइं पहाइ महंतइं थियइं दिव्वसोक्खइं[6] भुंजंतइं।
ताम जाम बावीससमुद्दइं धम्में[7] कासु ण जायइं भद्दइं।
रिसि मारिवि दुक्कियसंछण्णी पंचमियहि पुहइहि[8] उप्पण्णी।
पुणु वि [9]सयंपहदीवि दुदरिसणु फणि हूई दिट्ठीविसु भीसणु।
पुणु वि [10]णरइ तसथावरजोणिहि हिंडिवि दुक्खसमुब्भवखाणिहि[11]।
पुणु मायंगि जाय चंपापुरि गोउरतोरणमालाबंधुरि।
साहु समाहिगुत्तु मण्णेप्पिणु[12] धम्मु जिणिंदसिट्ठु जाणेप्पिणु।
घत्ता—तेत्थु जि पुरि पुणरवि सा मरिवि दुग्गंधेण विरूई।
मायंगि [13]सुयंधहु वणिवरहु सुय धणएविहि[14] हूई ॥15॥

(15)

(वह मरकर) दुःखों से रहित और सुखों से भरपूर अनुत्तर स्वर्ग में देव हुआ। उसके वैसे दुष्कृत्य को देखकर, अपनी बुद्धि अरहन्त धर्म में नियोजित कर निष्कपट भाव से आचार्य वरुण के पास आकर तीनों ही भाई मुनिवर हो गये। गुणवती आर्या के पैरों को प्रणाम कर, काम, क्रोध और मोह को छोड़कर, तरुणियों—मित्रश्री और नागश्री ने भी संयमगुण से विस्तीर्ण व्रत ग्रहण कर लिया। उन्होंने सल्लेखना विधि से शरीर सुखा लिया और वे अच्युत स्वर्ग में देवत्व को प्राप्त हुईं। प्रभा से महान्, वे पाँचों ही दिव्य सुखों का भोग करते हुए तब तक स्थित रहे, जब तक बाईस सागरपर्यन्त समय नहीं बीत गया। धर्म से किसका कल्याण नहीं होता ? पाप से आच्छन्न धनश्री मुनिश्री का वध कर पाँचवें नरक में उत्पन्न हुई। फिर स्वयंप्रभा द्वीप में दुर्दर्शनीय भीषण दृष्टिविष साँप हुई। फिर दुःखों की उत्पत्ति की खान त्रस-स्थावर योनियों और नरक में घूमकर, फिर गोपुर एवं तोरणमाला से सुन्दर चम्पापुर में चाण्डाली हुई। वहाँ मुनि समाधिगुप्त को मानकर और जिनेन्द्र द्वारा कथित धर्म को जानकर,

घत्ता—उसी नगरी में फिर से मरकर वह चाण्डाली, सुबन्धु सेठ और धनदेवी दुर्गन्धा से अत्यन्त विरूप कन्या उत्पन्न हुई।

(15) AS तें तेहउं; BP ते तेहउ। 2. PS वरुणाइरियहो। 3. P °गुणु। 4. P °णायधणसिरिहिं। 5. S व्रउं। 6. A सोक्ख दिव्वइं। 7. S omits this foot. 8. APS पुढविहे। 9. PS सयंपहे दीवे। 10. S णरय। 11. P °खोणिहे। 12. AP माणेप्पिणु। 13. ABAls. सुबंधुहे। 14. A धणदेविहे।

(16)

तेत्थु जि धणदेउ वणिउत्तउ घरिणि [1]जसोयदत्त धणवंतहु[2]।
सुउ जिणदेउ अवरु जिणयत्तउ जिणवरपयपंकयजुयभत्तउ[3]।
पूइगंध किर दिज्जइ इट्ठें एउं वयणु आयण्णिवि जेट्ठें।
बालहि कुणिमसरीरु [4]दुगुंछिवि सुव्वयमुणि गुरु हियइ समिच्छिवि।
तउ लेप्पिणु[5] थिउ सो परमट्ठहु[6] पायहिं णिवडिय[7] परु पाणिट्ठहु।
उवरोहें कुमारि परिणाविउ दुग्गंधेण सुट्ठु संताविउ।
ण हसइ ण रमइ णउ बोल्लावइ दुहवत्तणु किं कासु वि भावइ।
णिंदंती णियकुणिमकलेवरु णिंदइ णियसुहुं धणु[8] परियणु घरु।
सुव्वयखंतिय[9] झत्ति णियत्तिइ[10] पुच्छिय[11] चरणकमलु पणवंतिइ।
बिण्णि[12] वि देविउ गुणगणरइयउ एयउ किं कारणु पावइयउ।
भणइ भडारी वरमुहयंदहु वल्लहाउ चिरसोहम्मिंदहु[13]।
बेण्णि वि जिणपुज्जारयमइयउ णंदीसरदीवंतरु गइयउ।
तहिं संविग्गमणें संजाएं अवरोप्परु बोल्लिउं अणुराएं।
जइ माणुसभउ[14] पुणु पावेसहुं तो बेण्णि वि तवचरणु चरेसहुं।
इय णिबंधु[15] बद्धउ विहसंतिहिं दोहिं मि करु करपंकइ दिंतिहिं।

(16)

वहीं पर धनदेव नाम का धनवान् वणिक्पुत्र था। उसकी गृहिणी अशोकदत्ता थी। जिनदेव और जिनदत्त नामक पुत्र जिनवर के चरणकमलों के भक्त थे। 'दुर्गन्धयुक्त कन्या (जेठ भाई को) दी जाती है'—यह वचन सुनकर बड़ा भाई बाला के सड़े-गले शरीर से घृणा कर; सुव्रत मुनि को अपने मन में धारण कर और तप लेकर परमार्थ में स्थित हो गया। दूसरा अर्थात् छोटा भाई, अपने प्राणों के लिए इष्ट (बन्धुजन या माता-पिता) के चरणों में जा गिरा और उनके अनुरोध से उस कन्या से विवाह कर लिया। परन्तु उसकी दुर्गन्ध से अत्यन्त सन्तप्त हुआ। वह न हँसता, न रमण करता और न बुलाता। दुर्गन्धित शरीर क्या किसी को अच्छा लगता है ? अपने सड़े हुए शरीर की निन्दा करती हुई वह अपने सुख, धन और घर की निन्दा करती है। घर से निकलकर वह शीघ्र ही चरणकमलों में प्रणाम करती हुई सुव्रता और क्षान्ति नामक आर्यिकाओं से पूछती है—"गुणों के समूह से शोभित आप दोनों देवियाँ प्रव्रजित हैं। इसका क्या कारण है ?" आदरणीया कहती है—हे देवी, पूर्वजन्म में हम दोनों सौधर्म स्वर्ग के इन्द्रों की देवियाँ थीं। हम दोनों जिनपूजा में लीनबुद्धि होने के कारण नन्दीश्वर द्वीप के लिए गयीं। वहाँ मन के विरक्त हो जाने से अनुरागपूर्वक एक-दूसरे ने आपस में कहा कि हम पुनः मनुष्यजन्म प्राप्त करेंगी, तो हम दोनों तपश्चरण करेंगी। दोनों ने हाथ में हाथ

(16) 1. AP असोयदत्त; BS यसोयदत्त। 2. S धणवतहो। 3. AP °पंकयकयभत्तउ। 4. B दुगंछिवि। 5. APS लएवि। 6. Als. परमेट्ठहो against Mss. 7. AP णिवडिउ बंधु कणिट्ठहो; Als. णिवडिउ परु। 8. A परियणु धणु। 9. APLs. °खंतिय। 10. AP णियंतिए। 11. B पुच्छिय दुग्गंधा पणवंतिए in second hand. 12. B बिण्णि वि सुहियाउ गुणगणरइयउ। 13. APS चिरु। 14. S °भउ। 15. A णिबद्धु।

उज्झहि[16] सिरिसेणहु णरणाहहु सिरिकंतहि जयलच्छिसणाहहु।
जायउ पुत्तिउ[17] कुवलयणयणउ[18] [19]मुहससंककरधवलियगयणउ[20]।
घत्ता—हरिसेण णाम तहिं पढम सुय हरिसपसाहियदेही।
सिरिसेण अवर वम्महसिरि व रूवें सुरवहु जेही।।16।।

(17)

वरणरणारीविरइयतंडवि सरिवि [1]सजम्मु सयंवरमंडवि।
बद्धसंध जाणिवि ससितेयउ हलि बिण्णि वि पावइयउ एयउ।
खंतिवयणु आयण्णिवि तुट्ठी सुकुमारि[2] वि तवयम्मि णिविट्ठी।
एक्कु[3] दिवसु झायंतिउ जिणु मणि जोइयाउ[4] सव्वउ णंदणवणि।
झ[5]त्ति वसंतसेणणामालइ वेसइ कुसुमसरावलिमालइ[6]।
चिंतिउं जिह एयहं सिवगामिउ तिह मज्झु वि होज्जउ तव दूसहु।
जिह एयहुं णिव्वूढपरीसहु तिह मज्झु वि होज्जउ तवु दूसहु।
एव सलाहणिज्जु सलहंतिइ गणियइ पावें सहुं कलहंतिइ।

लेते हुए और हँसते हुए यह निदान किया। अयोध्या में विजयलक्ष्मी से युक्त श्रीषेण राजा की श्रीकान्ता की हम दोनों कुवलय नेत्रोंवाली और मुखचन्द्र की किरणों से आकाश को धवल कर देनेवाली पुत्रियाँ हुईं।

घत्ता—उनमें पहली का नाम हरिषेणा थी, जिसका शरीर प्रसन्नता से प्रसाधित था। दूसरी श्रीषेणा कामलक्ष्मी के समान और रूप में सुरवधू जैसी थी।

(17)

नर-नारियों द्वारा किया जा रहा है नृत्य जिसमें ऐसे स्वयंवर मण्डप में अपने पूर्वजन्म को याद कर तथा ली हुई प्रतिज्ञा को जानकर, चन्द्रमा के समान कान्तिवाली हम दोनों ने यह संन्यास ले लिया।" क्षान्ति आर्यिका के वचन सुनकर सुकुमारी सन्तुष्ट होकर तपकर्म में लग गयी। एक दिन नन्दनवन में जिनवर का मन में ध्यान करती हुई सबकी सब देखी गयीं। कामदेव के तीरों की माला वसन्तसेना वेश्या ने सोचा—जिस प्रकार इनका (तप है) हे शिव गामी जिनस्वामी ! वैसा मेरा भी हो, जिस प्रकार इनका परीषह सहन करनेवाला तप है, उसी प्रकार मेरा भी दुःसह तप हो। इस प्रकार प्रशंसनीय की प्रशंसा करती हुई तथा पाप के साथ संघर्ष करती हुई उस गणिका ने जिस पुण्य का अर्जन किया, उसका क्या वर्णन किया जाये ? जिनेन्द्र का स्मरण करनेवालों

---

16. P ओज्झहे। 17. S पुत्ति कुव°। 18. AP °णयणिउ। 19. ABPS मुहससहरकर°। 20. A गयणिउ; P गयणओ।

(17) 1. AS omits स in सजम्मु; B सुजम्मु। 2. P सुकुमारे। 3. From this line to 18.2, P has the following version :-
एक्कु दिवसु झायंतिउ जिणु मणे, संठियाउ सव्वउ णंदणवणे। तेत्थु वसंतसेणाणामालिय, वेसय कुसुमसरावलिमालिय। बहुविंदेहिं परिमंडी जंती, लीलए वयणहो वयणु भणंती। णियकर कयंतलेसु लायंती, णयणसरावलीए पहणंती। णियवि णियाणु कयउ सुकुमारिए, बहुदोहग्गभारणिरुमारिए। जिह एयहे एए सुकरायर, तिह मज्झु वि जम्मंतरे णरवर। जिह एयहे सोहग्गमहाभरु, तिह मज्झु वि होज्जउ सुणिरंतरु। एम णियाणु करेवि अण्णाणिणि, हुय अप्पाणहो जिस सा वइरिणि। कालें कहिं मि मरेवि सण्णासें, दंसणणाणचरित्तपयासें। अंतसग्गे जाइय सियसेविय, चिरभवसोमभूइ सुरदेविय। घत्ता—तहिं होंतउ कालें ओयरेवि हुउ सोमयत्तु जुहिट्ठिलु। सोमिलु भीमु भीमारिभडु मुयबलमलणु महाभडु ।।17।।

4. A संठियाउ। 5. A तेत्थु for झत्ति। 6. A °सारए।

पुण्णु णिबद्धउं किं वण्णिज्जइ जिणु सुमरंतह[7] दुक्किउ छिज्जइ।
मरिवि तेत्थु बिण्णि[8] वि संणासें दंसणणाणचरित्तपयासें।
अग्गसग्गि[9] जायउ [10]सियसेविउ चिरभवसोमभूइ सुरु[11] सेविउ।
घत्ता—तहिं [12]होंती कालें ओयरिवि हुय[13] हरिसेण जुहिट्ठिलु।
सिरिसेण[14] भीमु भीमारिभिडु भुयबलमलणु महाबलु ॥17॥

(18)

[1]बालमराललीलगइगामिणि अवर वसंतसेण जा कामिणि।
सा किरीडि होइवि उप्पण्णी णायसिरि णउलु धम्मविच्छिण्णी[2]।
मित्तसिरि वि सहएउ ण चुक्कइ कम्मु णिबद्धउं अवसें ढुक्कइ।
दुवयहु सुय पेम्मंभमहाणइ जा दुग्गंध कण्ण सा दोमइ[3]।
भणइ जुहिट्ठिलु हयवम्मीसर भणु भणु णियभवाइं णेमीसर।
कहइ भडारउ भक्खियतरुहलु होंतउ पढमजम्मि हउं णाहलु।
रिसि विद्धंतु सघरिणिइ वारिउ पाणि सबाणु धरिउ[4] ओसारिउ।
णविय भडारा वियलियगावें महुमासहं णिवित्ति कय भावें।

का पाप नष्ट हो जाता है। वहाँ पर वे दोनों दर्शन, ज्ञान और चरित्र का है प्रकाश जिसमें, ऐसे संन्यास के साथ मरकर सोलहवें स्वर्ग में श्री से सेवित देवियाँ हुईं; पूर्वजन्म के सोमभूतिचर देव के द्वारा सेवित।

घत्ता—वहाँ से होकर, समय के अनन्तर हरिषेणा युधिष्ठिर हुई। श्रीषेणा शत्रुओं से लड़नेवाला, भुजबल से चूर-चूर कर देनेवाला महाबल भीम हुई।

(18)

बालहंस की लीलागति के समान गमन करनेवाली जो दूसरी वसन्तसेना थी, वह अर्जुन के रूप में उत्पन्न हुई है। धर्म से विच्छिन्न नागश्री नकुल के रूप में जन्मी है, मित्रश्री सहदेव हुई। बाँधा हुआ कर्म कभी नहीं चूकता। वह अवश्य होकर रहता है। और जो दुर्गन्धयुक्त कन्या थी, वह प्रेमरूपी जल की महानदी, राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी है।" युधिष्ठिर पूछते हैं—"हे कामदेव का नाश करनेवाले नेमीश्वर ! आप अपने जन्मान्तर बतायें।" आदरणीय नेमीश्वर कहते हैं कि प्रथम जन्म में मैं वृक्षों के फल खानेवाला भील था। एक मुनि को विद्ध करते हुए अपनी पत्नी के द्वारा मना किया गया और मैंने हाथ पर रखे हुए बाण को उठा लिया। गर्वरहित होकर मैंने आदरणीय मुनि को प्रणाम किया और भावपूर्वक मधु, मांस से मैंने निवृत्ति ले ली। साँप के काटने पर बेचारा भील मर गया, और वणिग्वर कुल में इब्भकेतु हुआ। फिर समय आने पर जिनवर के लिए सिर से प्रणाम करनेवाला मैं व्रत के फल से कल्पवासी देव हुआ। फिर कान्ति से भास्वर

7. A सुजरंतहे; S सुमरंतहं। 8. A तिण्णि वि। 9. AS अंतसग्गि। 10. A सियसेविय। 11. A सुरदेविय; S सुरदेविउ। 12. A होंतउ। 13. A हुउ सोमयत्तु जुहिट्ठिल। 14. A सोमिल्लु भीमु। (It appears that P contains an altogether new version from बहुविदेहि down to बइरिणि, while A seems to agree with P in lines which are common to all versions.

(18) 1. A agrees with P in the text of the first two lines for which see under 17. 2. S धम्मु। 3. A दोवइ। 4. AP धरेवि।

फणि डंकिउ[5] मुउ भिल्लु वरायउ इब्भकेउ वणिवरकुलि जायउ।
पुणु हउं कालें जिणपणवियसिरु[6] वयहलेण हुयउ कप्पामरु।
पुणु सुरु [7]धरिवि देवभाभासुरु[8] हुउ चिंतागइ खयरणरेसरु।
पुणु तउ[9] चरिवि समाहि लहेप्पिणु[10] उप्पण्णउ माहिंदि मरेप्पिणु।
पुणु अवराइउ णरवइ हूयउ मुणि होइवि अच्चुइ[11] संभूयउ।
पुणु संजायउ दव्वणिहीसरु[12] सुप्पइट्ठु[13] णामें पुहईसरु।
घत्ता—हउं हुउ[14] रिसि सोलहकारणइं णियहियउल्लइ भावियइं।
जिणजम्मकम्मु मइं संचियउं बहुदुरियइं उड्डावियइं ॥18॥

(19)

पुणरवि मुउ [1]रयणावलियंतइ अहमिंदत्तणु पत्तु जयंतइ।
तहिं होंतउ आयउ मलचत्तउ अरहंतत्तणु इह संपत्तउ।
ता पंचमगइसामि णवेप्पिणु पंचासवदाराइं[2] [3]वहेप्पिणु।
पंचिंदियइं दिहीइ[4] णियत्तिवि[5] पंच वि संणाणइं संचिंतिवि।
पंचमहव्वयपरियरु रइयउ पंचहिं पंडवेहिं तउ[6] लइयउ।
कोंति सुहद्द दुवइ[7] [8]सुयसत्तउ[9] रायमईहि पासि णिक्खंतउ[10]।
तिव्वतवेण[11] पुण्णसंपुण्णउ[12] अच्चुयकप्पि ताउ उप्पण्णउ।
तिण्णि वि पुणु मणुयत्तु लहेप्पिणु सिज्झिहिंति कम्माइं महेप्पिणु।

देह धारण कर देव हुआ। फिर चिन्तागति विद्याधर राजा हुआ। फिर तपकर और समाधि प्राप्त कर माहेन्द्र स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। फिर, अपराजित राजा हुआ। फिर, अच्युत स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। फिर, मैं द्रव्यनिधीश्वर सुप्रतिष्ठ नाम का राजा हुआ।

घत्ता—मैं फिर मुनि हुआ, और मैंने अपने हृदय में सोलहकारण भावनाओं की भावना की। मैंने पुण्य का बन्ध किया और अनेक पापों को उड़ा दिया।

(19)

फिर मरकर रत्नमालाओं से सुन्दर जयन्त स्वर्ग में अहमेन्द्रत्व को प्राप्त किया। वहाँ से आकर मल से त्यक्त यह अरहन्तपद यहाँ पाया।" तब पाँचवीं गति (मोक्ष) के स्वामी को प्रणाम कर, पाँच आश्रव के द्वारों को बन्द कर, सन्तोष से पाँच इन्द्रियों को निवृत्त कर, पाँच सत् ज्ञानों की चिन्ता कर, पाण्डवों ने पाँच महाव्रतों का समूह रचा और तप ग्रहण कर लिया। शास्त्रों में आसक्त कुन्ती, सुभद्रा और द्रौपदी ने राजमती के पास दीक्षा ले ली। पुण्य से सम्पूर्ण वे तीव्र तप के कारण अच्युत स्वर्ग में उत्पन्न हुई। तीनों फिर मनुष्यत्व को प्राप्त कर कर्मों का नाश कर सिद्धि को प्राप्त करेंगी।

---

5. APS डंकिउ। 6. S °पणमियं°। 7. ABPK मरेवि। 8. A देहभालासुरु। 9. S तवु। 10. B लएप्पिणु। 11. B अच्चुउ। 12. A देउणिहीसरु; BPS दिव्वणिहीसरु। 13. P सुपइट्ठु। 14. BKS omit हुउ।

(19) 1. P °वलिअंतए। 2. S °दाराबइं। 3. AP पिहेप्पिणु; Als. थहेप्पिणु। 4. B दिहिए। 5. AP णियंतिवि। 6. A वउ। 7. PAls. दुवय°। 8. A सुह°; P सुव°। 9. APAls. संतउ। 10. A णिक्खिलउ; B णिक्खंतउ। 11. A पुन्नतवेण। 12. P °संपण्णउ।

घत्ता—पंच वि तवतावसुतत्ततणु[13] चिरु जिणेण सहुं हिंडिवि।
गय ते सत्तुंजयगिरिवरहु पंडव जणवउ छंडिवि ॥19॥

(20)

सिट्ठवरिट्ठसणिट्ठाणिट्ठिय[1]　　तहिं आयावणजोयपरिट्ठिय[2]।
भायणेउ[3] कुरुणाहहु केरउ　　पावयम्मु दुज्जणु विवरेरउ।
तेण दिट्ठ ते तहिं अवमाणिय　　चउदिसु साहणेण संदाणिय।
कडयमउडकुंडलइं सुरत्तइं[4]　　कडिसुत्ताइं हुयासणतत्तइं।
तणुपलरसवसलोहियहरणइं　　रिसि परिहाविय लोहाहरणइं।
खमभावेण विवज्जियदुक्खहु　　तव सुय भीमज्जुण[5] गय मोक्खहु।
णियसरीरु जरतणु व गणेप्पिणु　　अरिविरइउ उवसग्गु सहेप्पिणु।
णउलु महामुणि सहएउ[6] वि मुउ　　पंचाणुत्तरि अहमीसरु हुउ।

घत्ता—मिच्छत्तु जडत्तणु णिद्दलवि देंतु बोहि दिहिगारा।
पंडवमुणि [7]जणमणतिमिरहर महुं पसियंतु भडारा ॥20॥

(21)

छहसयाइं णवणवइ[1] य वरिसइं　　णवमासाइं अवरु चउदिवसइं।
महि विहरेप्पिणु मयणवियारउ　　गउ उज्जंतहु[2] णेमि भडारउ।

घत्ता—तप के ताप से सन्तप्त-शरीर वे पाँचों पाण्डव भी बहुत समय तक जिनवर के साथ परिभ्रमण कर, जनपद छोड़कर शत्रुंजय गिरिवर के ऊपर गये।

(20)

श्रेष्ठ वरिष्ठ अपनी निष्ठा में निष्ठ वे आतापनयोग में स्थित हो गये। तब कुरुनाथ (दुर्योधन), पापकर्मा दुर्जन और विरोधी भानजा वहीं पर रहता था। उसने उन्हें देखा और वहीं उनकी अवमानना की। चारों ओर से सेना ने घेर लिया। कड़ा, मुकुट, कुण्डल, कटिसूत्र आग में तपाये तथा शरीर के मांस, रस, चर्बी और रक्त का अपहरण करनेवाले लोहे के आभरण मुनि को पहिनाये। लेकिन क्षमाभाव से युधिष्ठिर (तप:सुत) भीम और अर्जुन, दुःख से रहित मोक्ष चले गये। अपने शरीर को जीर्ण तिनके की तरह समझते हुए शत्रुकृत उपसर्गों को सहन करते हुए नकुल और सहदेव महामुनि भी मृत्यु को प्राप्त हुए और सर्वार्थसिद्धि में अहमेन्द्र हुए।

घत्ता—मिथ्यात्व और जड़त्व का निर्दलन कर, बोधि देते हुए, धैर्य धारण करनेवाले, जनमन का अन्धकार दूर करनेवाले आदरणीय पाण्डव मुनि मुझ पर प्रसन्न हों।

(21)

छह सौ निन्यानवे वर्ष, नौ माह और चार दिन तक धरती पर विहार करने के बाद, कामदेव के नाशक

---

13. BS सुतत्तणु।

(20) 1. PAls. °सुणिट्ठा° । 2. A आवणजोएण; S आयावणजोएं । 3. P भाइणेउ । 4. B सुतत्तइं । 5. B भीमज्जुण । 6. S सहएवु । 7. S omits मण ।

(21) 1. AP °सयाइं वरिसहं णवणउयइं; S णवउयइं वरि°; Als. णवणउयइं वरिसइं । 2. APS उज्जंतहो ।

पंडियपंडियमरणपयासें मासमेत्तु थिउ जोयब्भासें।
तवतावोहामियमयरद्धउ पंचसएहिं रिसिहिं सह[3] सिद्धउ।
आसाढहु मासहु सियपक्खइ सत्तमिवासरि चित्तारिक्खइ।
पुव्वरत्ति[4] भत्तामरपुज्जिउ णेमि सुहाइं देउ मलवज्जिउ।
एयहु धम्मतित्थि पवहंतइ णिसुणहि सेणिय कालि गलंतइ।
बंभमहामहिणाहहु णंदणु चूलादेविहि णयणाणंदणु।
बंभयत्तु णामें चक्केसरु संजायउ जगजलरुहणेसरु।
वण्णें[5] तत्तकणयवण्णुज्जलु सत्तचावपरिमाणु[6] महाबलु।
सत्तसयाइं समाहं जिएप्पिणु[7] छक्खंड वि मेइणि भुंजेप्पिणु।
गउ मुउ कालहु को वि ण चुक्कइ सक्कु वि खयकालहु णउ सक्कइ[8]।
इय जाणिवि चारित्तपवित्तहु संतहु [9]सत्तुमित्तसमचित्तहु[10]।
घत्ता—सुविहिहि अरुहहु तित्थंकरहु धम्मचक्कणेमिहि वरइं।
संभरह[11] पुप्फदंतहु पयइं विविहजम्मतमसमहरइं[12] ॥21॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णेमिणाहणिव्वाणगमणं[13]
णाम [14]दुणउदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥92॥

आदरणीय नेमि ऊर्जयन्त पर्वत पर गये और संलेखनाव्रत के प्रयास में एक माह तक योगाभ्यास में स्थित रहे। तप के ताप से कामदेव को नष्ट करनेवाले वे पाँच सौ मुनियों के साथ सिद्ध हो गये। आषाढ़ माह के शुक्लपक्ष में चित्रा नक्षत्र में सप्तमी के दिन, पूर्वरात्रि में, भक्तामरों के द्वारा पूजित और मल से वर्जित होकर शोभित थे। हे श्रेणिक ! सुनो इनके धर्मतीर्थ के प्रवाहित होने पर और समय बीतने पर, ब्रह्म महामहीश्वर और चूलादेवी के नेत्रों को आनन्द देनेवाला पुत्र, ब्रह्मदत्त नाम का चक्रवर्ती हुआ, जो विश्वरूपी कमल के लिए सूर्य था। वर्ण में तपे हुए सोने के रंग का, सातधनुष ऊँचे शरीरवाला महाबली, सात सौ वर्ष जीवित रहकर छह खण्ड धरती का उपभोग कर, वह भी मर गया। काल से कोई नहीं बचता। इन्द्र भी काल के आगे कुछ नहीं कर सकता। यह जानकर चारित्र से पवित्र, शत्रु-मित्र में समचित्त रखनेवाले सन्त,

घत्ता—सुविधि अरहन्त धर्मचक्र नेमि तीर्थंकर और पुष्पदन्त के श्रेष्ठ विविध जन्मों का अन्धकार दूर करनेवाले चरणों को याद करो।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का नेमिनिर्वाण-गमन नाम का
बानवेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

3. P सहुं। 4. A reads *b* as *a* and *a* as *b*. 7. AP जीवेप्पिणु। 8. A चुक्कइ। 9. P सत्त°। 10. BP °मित्तु। 11. P संभरहु। 12. A °जम्मभवसमहरइं; BSAls. °जम्मभमसमहरइं; P °जम्मसमहरइं। 13. A adds : बंभदत्तचक्कवट्टिकहंतरं। 14. AS दुणवदिमो। 15. A omits this पुष्पिका। 16. B जरासंधु।

तिणवदिमो संधि

पणवेप्पिणु पासु णियसुकइत्तु[1] पयासमि।
णासियपसुपासु[2] तासु जि चरिउं समासमि ॥ धुवकं ॥

(1)

मुक्का जेण खमावई तवसासस्स खमावई।
रइया जो विमहावई संजाओ पमहावई।
सुरहियदिचक्काणणं जो संपत्तो काणणं।
सोढुं खरकिरणावयं[3] [4]सबउं पि हु किर णायवं।
मोत्तुं जो गिरिधीरओ थिउ[5] उवसमधीरओ।
जस्स रिऊ असुरो अही उवयारी सुयणो अही।
जो दोण्हं पि समंजसो [6]बुड्ढो जेण समं जसो।
णाणं जस्सुप्पण्णयं खुहियणरामरपण्णयं।
जेणुवसग्गा विसहिया णाइंदाणी विसहिया।
जस्स णया पोमावई भुवणत्तयपोमावई।
एक्कवायचप्पियरसा[7] अमुणियपरमागमरसा।

तिरानवेवीं सन्धि

पार्श्व जिन को प्रणाम कर, मैं अपना सुकवित्व प्रकाशित करता हूँ और उन्हीं का चरित प्रकाशित करता हूँ।

(1)

जिन्होंने पृथ्वीपतियों को छोड़ दिया है, जो तपरूपी धान्य के लिए बाड़ लगानेवाले हैं, जो महापद से रहित होकर महाव्रती हुए हैं, जिनका दिक्चक्ररूपी आनन सुरभित है, ऐसे कानन में वे पहुँचे। प्रखर सूर्य की भी आपदा को सहन करने के लिए उनका अपना शरीर भी व्रत अनुष्ठानादि न्याय का पालन करनेवाला था। गिरि के समान धीर जो मुक्ति के लिए उपशम से धीर होकर बैठ गये। अहो ! असुर (बुद्धिहीन कमठ) जिनका शत्रु है और अहि (नागराज) मित्र है, जो दोनों में ही सामंजस्य रखते हैं, जिनका यश और समता भाव समान रूप से बढ़ा हुआ है, जिनको नरों, अमरों और नागों को क्षुब्ध करनेवाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है, जिन्होंने उपसर्गों को सहन किया है, नागेन्द्राणी भी (जिनसे) धर्मरत हुई, भुवनत्रय में प्रशंसनीय पद्मावती जिनके लिए नत है, (तथा) जिन्होंने एक पैर से धरती को चाँप रखा है और जो परमागमशास्त्र के रस

(1) 1. णियसुकयत्तु; P णियसयकइत्तु। 2. णासियनसु°। 3. APT किरणायवं। 4. A सवओ; P सुवउं। 5. AP थक्कउ। 6. A वुड्ढो; P रूढो; T वुड्ढो। 7. A एक्कपाय°।

सिवदिक्खाकंतावसा[8] जं दट्ठूणं तावसा।
जस्स धम्ममग्गं गया उज्झियमिच्छासंगया।
भणिमो तस्स विचित्तयं काउं सुद्धं चित्तयं।
दिव्वं दुक्कियरित्तयं पासजिणस्स चरित्तयं।

घत्ता—इह[9] जंबूदीवि भरहि सुरम्मउ[10] सुहयरु।
जणवउ दाणालु करि व रायढोइयकरु ॥1॥

(2)

कणभरियकणिसकरिसण पगाम सुहभूयगाम जहिं विउलराम[1]।
जहिं जणु अरोसु[2] संपण्णकामु[3] सोहग्गें[4] रूवें जित्तकामु।
जहिं ढेक्करंत[5] पवहंत धवल घरकामिणीहिं गिज्जंत[6] धवल।
जहिं गोउलाइं मणरंजणाइं णवणीयभरियबहुरंजणाइं[7]।
जहिं दुद्धइं घणसाहालयाइं णंदणवणइं वि साहालयाइं।
जहिं कणयकंजकिंजक्करेणु णियसिरि घिवंति मत्ता करेणु।
जहिं गामासण्णहिं संचरंति कलविंक कलमछेत्तहिं[8] चरंति।
सलिलेण[9] काइं पिज्जइ पवासु पंडच्छहिं रसु पसमियपवासु।

को भी नहीं मानते, जो शिव दीक्षारूपी कान्ता के वशीभूत हैं, ऐसे तपस्वी जिन (पार्श्वनाथ) को देखकर, मिथ्या संगति को छोड़कर धर्ममार्ग में लगते हैं, ऐसे उन पार्श्वनाथ के चरित को, जो दिव्य और दुष्कृतों से रहित है, विचित्र चित्त की शुद्धि के लिए कहता हूँ।

घत्ता—इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में शुभंकर सुरम्य जनपद है, जो दानयुक्त हाथी के समान राजा के लिए ढोइयकर (कर देनेवाला, सूँड देनेवाला) है,

(2)

जहाँ कणों से भरे हुए धान्य से युक्त प्रचुर क्षेत्र हैं, शुभ प्राणिसमूह है और बड़े-बड़े उद्यान हैं; जहाँ मनुष्य क्रोधरहित और पूर्णकाम हैं तथा सौभाग्य और रूप में कामदेव को जीतनेवाले हैं, जहाँ ढेक्कार ध्वनि करते (ढेंकारते) हुए धवल (बैल) घूमते हैं और गृहस्त्रियों द्वारा धवल गीत गाये जाते हैं; जहाँ मनोरंजन करनेवाले गोकुल तथा नवनीत से भरे हुए, प्रचुर जलपात्र हैं; जहाँ दूध अत्यन्त प्रशंसा से युक्त है, जहाँ नन्दनवन भी अनेक शाखाओं से युक्त हैं; जहाँ स्वर्णकमल की परागधूल मतवाले हाथी अपने सिर के ऊपर डालते हैं; जहाँ ग्रामों के निकट के धान्य खेतों में चटक पक्षी विचरण करते हैं; प्याऊ पानी से क्या, जहाँ मार्ग की थकान को मिटानेवाला रस ईखवृक्षों से पिया जाता है; गोपों की वेणु (बाँसुरी) में दिये हैं कान

---

8. A सिवकंतादिक्खावसा। 9. A इय। 10. A सुरम्मउ इयरु।

(2) 1. A विउलगामा। 2. AP अरोउ। 3. P संपुण्ण°। 4. A सो सोहग्गें रूवें जित्तकामु; P omits this foot. 5. AP ढेक्करंति। 6. गिज्जंति। 7. A बहुजणाइं।
8. A कलमछेत्तहिं। 9. A reads this line as : सलिलेण काइं पिज्जइ पवासु, पंडुच्छुहि रसु पए पए समियपवासु; P reads it as : पुंडुच्छुहिं रसु पसमियपवासु, सलिलेण काइं पिज्जइ पवासु।

माहिसियवंसरवदिण्णकण्ण जहिं मृगइं[10] ण वारइ हलियकण्ण।
मिगइं वि भक्खंति ण कणविसेसु[11] जहिं सव्वु सुसुत्थिउ णिलइ[12] सेसु।

घत्ता—तहिं पोयणणामु[13] णयरु अत्थि वित्थिण्णउं।
सुरलोएं णाइ [14]धरिणिहि पाहुडु दिण्णउं ॥2॥

(3)

कारंडहंसकयणीसणाइं जहिं सुरतरुछण्णइं उववणाइं।
जहिं सरि सरि णिरु मिट्ठइं पयाइं णं कइकयाइं सरसइं पयाइं।
जहिं [1]सकुसुमदुमजणियाहिलास णं मयरद्धयपहरणणिवास।
भक्खंतहं रससोक्खुज्जलाइं जहिं फलइं णाइं सुक्कियफलाइं।
वेल्लीहराइं जहिंसुरहियाइं कीलासयवहुवरसुरहियाइं[2]।
णिच्चं चिय लक्खणमाणियाउ गहिराउ ससीयउ माणियाउ।
विमलाउ सपोमउ सोहियाउ णं रहुवइवित्तिउ[3] दीहियाउ।
परिहाउ तिण्णि पाणिउं वहंति जहिं[4] णं णिवदासित्तणु कहंति।
जहिं विविहरयणदित्तीविचित्तु पायारु दुग्गु णं सइहि[5] चित्तु।

जिन्होंने ऐसी कृषक कन्याएँ जहाँ मृगों को नहीं भगातीं और हरिण भी कण विशेष नहीं खाते; जहाँ घरों में सब लोग सुस्थित हैं,

घत्ता—वहाँ फैला हुआ पोदनपुर नाम का नगर है, जो मानो स्वर्गलोक ने धरती के लिए उपहार में दिया हो।

(3)

जिनमें चातक और हंस पक्षी शब्द कर रहे हैं, ऐसे कल्पवृक्षों से आच्छन्न उपवन जहाँ हैं; जहाँ नदी-नदी में मीठा (पय) पानी है, मानो कवि के द्वारा रचित पद्य (पद) हों; जहाँ पुष्पों सहित वृक्षों के द्वारा अभिलाषा उत्पन्न करनेवाले वृक्ष ऐसे मालूम होते हैं मानो कामदेव के प्रहरणों के निवास हों। रससुख से उज्ज्वल फलों को खानेवालों के लिए वे ऐसे लगते हैं, जैसे उनके सुकृतों के फल हों; जहाँ लताग्र सुरभित हैं, जो क्रीड़ा की इच्छा रखनेवाले सैकड़ों वधूवरों को प्रच्छन्न किये हुए हैं; जहाँ बावड़ियाँ रघुपति (राम) के चरित की तरह नित्य ही लक्खणमाणियाउ (सारस, लक्ष्मण से सहित), गम्भीर, ससीय (शीतलता, सीता से सहित), मान्य और विमलाउ (विमल अप (जल) वाली, निर्मल), सपोम (कमल, राम से सहित), जहाँ पानी को धारण करनेवाली तीन-तीन परिखाएँ हैं, जैसे वे राजा की दासता को बता रही हों; जहाँ विविध रत्नों की दीप्तियों से विचित्र प्राकार और दुर्ग ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे सती के चित्त हों;

---

10. AP मिगाइं। 11. A तिणविसेसु। 12. A जणवउ असेसु। 13. AP पोयणु णाम। 14. AP धरणिहे।

(3) 1. AP सुकुसुम°। 2. A कीलासुरवरयहुवरहियाइं; P कीलासयबहुवर°। 3. A रहुवइचित्तादीहियाउ; P रहुवइवित्तीउ। 4. A जहिं णं णयदासित्तणु कहंति; P जहिं णिवदासित्तणु णं कहंति। 5. A सयहि।

घत्ता—जहिं घरसिरचिंधु सिहरकलसि परिघोलइ।
सिंचहुं णियवंसु णावइ सलिलु णिहालइ ॥3॥

(4)

जहिं इंदणीलकंतीविहिण्णु णउ णज्जइ कज्जलु णयणि दिण्णु।
जहिं पोमरायमाणिक्कदित्ति उच्छलइ ण दीसइ घुसिणलित्ति।
सम सोहइ महिय थणत्थलीहिं जहिं रंगावलि हारावलीहिं।
जहिं णिवडियभूसणफुरियमग्गु हरिलालाकरिमयपंकदुग्गु।
जहिं लोयघित्ततंबोलराउ बुड्डइ[1] कुंकुमचिक्खल्लि पाउ।
जहिं बहलधवलकप्पूर धूलि कुसुमावलिपरिमलविलुलियालि।
सामंत मंति भड [2]भुत्तभोय जहिं एंति जंति णायरिय लोय।
जहिं चंदकंतणिज्झरजलाइं[3] पवहंति सुसीयइं णिम्मलाइं।
सोहग्गरूवलायण्णवंत जहिं णर सयल वि णं रइहि कंत।
जहिं खत्तिय थिय[4] णं खत्तधम्म जहिं बंभण विरइयबंभयम्म।
जहिं वइस पवर वइसवणसरिस वण्णत्तयपेसणजणियहरिस।
सुद्द वि विसुद्धमग्गाणुगामि तहिं राउ वसइ चउवण्णसामि।

घत्ता—जहाँ घरों के अग्रभाग पर स्थित पताकाएँ शिखर-कलशों पर हिलती हैं, मानो अपने वंश को सींचने के लिए जल को देख रही हों;

(4)

जहाँ आँखों में लगाया गया काजल इन्द्रनीलमणि की कान्ति से प्रभावित होकर दिखाई नहीं देता; जहाँ पद्मराग माणिक्यों की दीप्ति चमकती है, केशर का लेप दिखाई नहीं देता; जहाँ स्तनरूपी स्थलियों (थालियों) से सम्मानीय महिला और हारावलियों से रंगावली समान रूप से शोभित है; जहाँ के मार्ग गिरे हुए आभूषणों से स्फुरित हैं; घोड़ों की लार एवं हाथियों के मद-पंक से दुर्गम हैं; जहाँ लोगों के द्वारा छोड़ा गया ताम्बूल राग और पाँव केशर की कीचड़ में डूब जाता है; जहाँ कपूर की प्रचुर सफेद धूल है; जहाँ कुसुमावलियों के पराग पर भ्रमर मँडरा रहे हैं; जहाँ चन्द्रकान्त मणियों के पवित्र और शीतल निर्झर-जल प्रवाहित हैं; जहाँ सौभाग्य, रूप और लावण्य से युक्त सभी मनुष्य ऐसे मालूम पड़ते हैं, जैसे रति के कान्त (प्रिय) हों; जहाँ क्षत्रिय ऐसे हैं, जैसे क्षात्र-धर्म स्थित हों; जहाँ ब्राह्मण ऐसे हैं जो ब्राह्मधर्म का आचरण करनेवाले हैं; जहाँ वैश्य कुबेर के समान हैं; जिन्होंने वर्णत्रय की सेवा में हर्ष माना है, ऐसे शूद्र भी विशुद्ध मार्ग के अनुगामी हैं; वहाँ चारों वर्णों का स्वामी राजा निवास करता है।

(4) 1. A बुड्डइ। 2. A भुत्तिपभोय। 3. A चंदकंति°। 4. A णं थिय। 5. A अरि°।

घत्ता—अरिविंदकयंतु परवहुविंदहं दुल्लहु।
णामें अरविंदु[5] अरविंदालयवल्लहु ॥4॥

(5)

दाणेण जासु णउ णीस संति रिउ जासु भएण जि णीससंति।
भुंजंति फलइं काणणि वसंति सिहिपिंछइं[1] तरुपल्लव वसंति।
पुण्णेण जासु महि पिक्कसास कुसधाविर[2] अविधल्लियकसास[3]।
भिच्चयणहं पूरिय जेण सास वीहंति जासु विसहर विसास।
तमजालकाल पायालवास रणि संक वहंति सुहालवास।
बज्झंति धरिवि परिचत्तमाण मंडलिय जासु मंडलसमाण।
जयसिरि णिवसइ जसु दीहदोसु दंडेण जेण उवसमिउ दोसु।
सिरिपरगमणोत्तिउ जेण कोसु णायज्जियदव्वें भरिउ कोसु।
मायंग जासु घरि बद्धरयण णाणारयणायरदिण्णरयण।
तहु मंति विप्पु माणियविहूइ णामेण पसिद्धउ विस्सभूइ।
घत्ता—पिय बंभणि तासु गुणतरुधरणि अणुंधरि।
पइवय पइभत्त पइरइरसिय जुयंधरि ॥5॥

घत्ता—शत्रुसमूह के लिए यम के समान तथा परस्त्रियों के लिए दुर्लभ तथा लक्ष्मी का सखा अरविन्द नाम का राजा था।

(5)

जिसके दान से दरिद्र लोग लम्बी साँसें नहीं लेते, किन्तु जिसके भय से शत्रु लम्बी साँसें लेते हैं, फल खाते हैं और जंगल में निवास करते हैं, मयूर पंख और वृक्षों के पत्ते पहिनते हैं; जिसके पुण्य से धरती पके हुए धान्यवाली है; लगाम से दौड़नेवाले जिसके अश्व चमड़े के चाबुक से आहत नहीं होते; जिसने अपने भृत्यजन की सदैव आशा पूरी की है; जिससे विषमुख विषधर डरते हैं; जहाँ पातालवास तमसमूह के समान काला है; अमृतकण का भोजन करनेवाले जिससे युद्ध में आशंका करते हैं; बन्दी बनाकर छोड़े गये माण्डलिक राजा जिसके लिए कुत्तों के समान हैं; जिसके लम्बे हाथों में लक्ष्मी निवास करती है; जिसने दण्ड से दोषों का शमन कर दिया है; जिसने लक्ष्मी के लिए दूसरे के पास जाने के लिए कोशपात्र दे दिया है (क्षमा कर दिया है); जिसने न्याय के द्वारा अर्जित द्रव्य से अपना कोश भरा है, उसकी विभूति को माननेवाला विश्वभूति नाम का प्रसिद्ध ब्राह्मण मन्त्री था।

घत्ता—उसकी गुणरूपी वृक्ष की भूमि अनुन्धरा प्रिय ब्राह्मणी थी जो पतिव्रता, पतिभक्ता और पतिप्रेम की रसिका प्रधान पत्नी थी।

---

(5) 1. A सिरिपिंछइं। 2. A कुसयारि रयवि। 3. P °कुसास।

(6)

तहि पढमपुत्तु णामेण कमदु[1] कयवेयघोसु णं विउलु कमदु[2]।
वंकगइ कुमइ णं भीमु सप्पु छिद्दण्णेसिउ उब्बूढदप्पु।
बीयउ मरुभूइ महाणुभाउ णं सुरगुरु[3] गुरुबुद्धीणिहाउ।
अक्खरवंतउ[4] णं परममोक्खु सुरघरकुड्डु[5] व चित्तेण चोक्खु।
जेट्ठहु वरुणारुणकमलपाणि अणुयहु वि वसुंधरि सोक्खखाणि।
जायउ दोहिं मि दो गेहिणीउ णं कामरसायणवाहिणीउ[6]।
कालें जंतें रइरत्तएण दुस्सीलें पेम्मुम्मत्तएण[7]।
मत्तेण व करिणा विंझकरिणि अवलोइय लहुभायरहु घरिणि।
कमढेण[8] सढेण[9] गणिवि सुहिणि बहुदुक्खजोणि[10] णं णरयकुहिणि।
घत्ता—ढोयवि तंबोलु णहमणिकिरणहिं फुरियउ[11]।
करपल्लवु ताहि तेण हसंतें धरियउ ॥6॥

(7)

आलग्गउ खणि खणि णिरु पयंडु चलु कुसुमबाणचोवाणदंडु।
दरिसाविय कामें[1] रायकेलि लंघिवि ऊरूजुयवाहियालि।
तहु मणु[2] झिंदु व परिघुलिउ[3] ताम उत्तुंगपीणथणलाणि[4] जाम।
सो कीलइ रीणउ केंव जियइ णं बिंबाहररसपाणु पियइ।

(6)

उसका प्रथम पुत्र कमठ नाम का था, मानो वेदों का घोष करनेवाला बड़ा भारी ब्राह्मणमठ हो। कुबुद्धि और वक्रगतिवाला जो मानो साँप हो, छिन्द्रान्वेषी और दर्प धारण करनेवाला। दूसरा पुत्र था—मरुभूति महानुभाव, जो मानो विशाल बुद्धि का खजानेवाला बृहस्पति हो, जो मानो अक्खरवंत (अक्षरों, सिद्धों से युक्त) मोक्ष था, देवगृह की भित्ति की तरह जो चित्त (चित्र, चित) से उत्तम (चोक्खु) था। बड़े की पत्नी रक्तकमल के हाथोंवाली वरुणा थी और छोटे की पत्नी सुख की खान वसुन्धरा थी। इस प्रकार दोनों की दो पत्नियाँ थीं जो मानो कामरूपी रसायन की नदियाँ थीं। समय बीतने पर रति में रक्त एवं दुःशील तथा प्रेम से उन्मत्त उसने, जिस प्रकार मत्त गज विन्ध्याचल की हथिनी को देखता है, अपने छोटे भाई की पत्नी को देखा। धूर्त कमठ ने उसे सुहृदया समझा, जबकि वह अनेक दुःखों की योनि नरक की गली थी।

(7)

क्षण-क्षण अत्यन्त उत्तेजित होता हुआ वह चंचल कामदेव के चौगान का चंचल प्रचण्ड दण्ड उससे आ लगा। काम के द्वारा वह राजक्रीड़ा दिखाता है। दोनों उरुरूपी मैदान को लाँघकर उसका मन गेंद के समान वहाँ तक पहुँचता है, जहाँ तक ऊँचे और पीनस्तनों की मर्यादा थी। वह क्रीड़ा करता है। श्रान्त आदमी

(6) 1. A कमढ; P कमठु। 2. P कमठु। 3. A सुरगुरु बुद्धीए जलणिहाउ; P सुरवरगुरु बुद्धीणिहाउ। 4. A अक्खरमत्तउ। 5. A असुरघरकुड्डुवि; P सुरघरकुड्डु व। 6. A कामरसायणमोयणीउ। 7. A पेमुपमत्तएण। 8. P कमढेण सढेण। 9. A संढेण। 10. P बहुदुक्खणिरंतर णरयकुहिणि। 11. AP विप्फुरियउ।

(7) 1. A कालें। 2. AP मणझेंदुओ। 3. A घरघुलिउ। 4. AP °थणिलाणि।

वीसमइ णियंबत्थलि णिसण्णु दरमम्मणमणियहं देइ कण्णु।
कंठग्गहकेसग्गहणिरुद्ध कहिं जियइ पाउ पावेण खद्धु[5]।
मरुभूएं वम्महभूयणडिउ सइं दिट्ठउ[6] सुरयगइंदि चडिउ।
विण्णविउ णरिंदहु भायरेण जिह लइयउं[7] कलत्तु सहोयरेण।
राएं पेसिय वइरावहारि किंकर करालकरवालधारि[8]।
णिग्गुणु णिग्घिणु परिगलियमाणु सो परवहुए[9] सहुं कीलमाणु।

घत्ता—मंदिरु जाएवि णिब्भररमणरसंतरियउ[10]।
जमदूयसमेहिं [11]पक्कलपाइक्कहिं [12]धरियउ ॥7॥

(8)

आणेप्पिणु[1] दाविउ पत्थिवासु तें णिंदिउ खल तुहुं मंति कासु।
छुरयम्में मुंडिउं सीसु तासु अहिमाणु व फेडिउ केसवासु।
कउ बिल्लबंधु[2] सिरि सहइ मुक्खु णं दीसइ फलियउ पावरुक्खु।
आरोहिउ गद्दहि खुद्दभाउ पुरि भामिउ णं णारयहु[3] राउ।

कैसे जीवित रहता है ? मानो वह बिम्बाधरों का रसपान करता है। उसके नितम्बस्थलों पर बैठकर विश्राम करता है। थोड़ी-थोड़ी काम की उक्तियों पर ध्यान देता है। कण्ठग्रह और केशग्रह से वह विरुद्ध हो गया। पाप से खाया हुआ पापी कहाँ तक जीवित रहता है ? कामदेवरूपी भूत से प्रवंचित तथा सुर-गजेन्द्र पर आरूढ़ उसे स्वयं मरुभूति ने देख लिया। भाई ने जाकर राजा से निवेदन किया कि किस प्रकार सगे भाई ने उसकी स्त्री को ले लिया। राजा ने शत्रुता का अपहरण करनेवाले भयंकर तलवार धारण करनेवाले अनुचर भेजे। निर्गुण, निर्दय, स्खलितमान तथा दूसरे की वधू के साथ क्रीड़ा करते हुए,

घत्ता—घर में जाकर, परिपूर्ण रमण रस में डूबे हुए, यमदूत के समान प्रगल्भ अनुचरों ने उसे पकड़ लिया।

(8)

उसे लाकर राजा को दिखाया गया। उसने उसकी निन्दा की कि तुम किसके मन्त्री हो ? छुराकर्म से उसका सिर मुँड़वा दिया गया। अभिमान के समान उसका केशपाश काट दिया गया। सिर पर बिल्वबन्ध कर दिया गया। वह मूर्ख ऐसा दिखाई देता है, मानो पापरूपी वृक्ष फलित हो गया हो। क्षुद्रभाव उसे गधे पर बैठाया गया, मानो नरक के राजा को नगर में घुमाया गया हो। उसका गायक कौन ? उसके माथे पर

5. AP add after this the following four lines : विरुअउ देक्खेवि आयरणु तासु, वसुणाइ कहिउ णियदेयरासु। तउ भायरु तुह घरिणीइ रत्तु, पत्तिज्जइ महु फुडु वयणु वुत्तु। तं णिसुणेवि देवरु सच्चसंधु (A सच्चबंधु), किं एहउ जं आयरइ (A एहउ किं आयरइ) बंधु। महिलाउ सुट्ठु थिरएंति एउ, बंधुहिं पि परोप्परु करहिं भेउ (A कहिउ भेउ)। 6. A दिट्ठउ देविहे देहचडिउ; P दिट्ठउ सुरयगइं चडिउ। 7. AP लइवं। 8. A कठोरकरवालधारि; P करवालकरालधारि। 9. P परवहुयए। 10. AP °रसंसरिउ। 11. A फलपाइक्केहिं; P पक्खलपायक्कहिं। 12. AP धरिउ।

(8) 1. A आणेविणु। 2. A वेलुबंधु; P विल्लिबंधु। 3. AP णारयहं।

को गायउ तहु किर टक्कराउ[4] मत्थइ पडियउ जणटक्कराउ[5]।
पडहें वज्जंतें विगयधम्मु णीसारिवि घल्लिउ पावयम्मु[6]।
घत्ता—णासइ कुलु सीलु परमधम्मु जसकित्तणु[7]।
डज्झउ परयारु दुग्गइगमणपवत्तणु ॥8॥

(9)

उव्वेइउ गउ काणणहु जारु तं दिट्ठु तेण साहारसारु।
गिरिकंदरि[1] णिज्झरसलिलहारु तं दिट्ठु तेण णवतिलयचारु।
तं दिट्ठु तेण सरकमलवयणु लीलालोइर[2] मिगणयणणयणु।
तं दिट्ठु तेण मुयवत्तचेलु धरणीहरकडयावलिकरालु।
तं दिट्ठु तेण महुघुसिणगिल्लु करिकुंभत्थलथणमणहरिल्लु।
तं दिट्ठु तेण थियरसविसेसु सोहिल्लमोरपिंछोहकेसु।
तं दिट्ठु तेण महिधाउरत्तु[3] तं दिट्ठु तेण णं परकलत्तु।
तहिं तावसकुलु[4] हरचरणभत्तु दिट्ठउ दूसहतवतावतत्तु।
घत्ता—वज्जरियसडंगु चउविहवेयवियारणु।
रुद्दंकुसचिंधु वारियवम्महवारणु[5] ॥9॥

टंकार करनेवाला कौन ? बजते हुए नगाड़े के साथ धर्महीन और पापकर्मा उसे निकालकर बाहर किया गया।

घत्ता—परस्त्री कुल, शील, परमधर्म और यशकीर्तन का नाश करती है। दुर्गति के गमन में प्रवर्तन करानेवाली परस्त्री में आग लगे।

(9)

वह जार (कमठ) उद्विग्न होकर कानन में चला गया। वहाँ उसने उत्तम आम्रवृक्ष को स्त्री के रूप में देखा। पहाड़ की गुफा से झरती हुई जलधारा को उसने सुन्दर नवतिलक के रूप में देखा। उसने सरोवर के कमलरूपी मुख को इस प्रकार देखा, जैसे लीला से हिलते हुए मृगनयनी के नेत्र हों। पहाड़ की कटकावलि (गिरिनितम्ब, कंकणों की पंक्ति) से भयंकर, भूर्जपत्ररूपी वस्त्र को देखा। उसने मधु और केशर से गीले, हाथी के कुम्भस्थल के समान मनोहर स्तन को देखा। उसने शोभायुक्त मयूर के पुच्छभार को स्त्री के रसविशेष (शृंगारादि रस) के रूप में देखा। उसने धरती पर धातु की जो रक्तिमा देखी, मानो वह उसने परकलत्र को देखा। वहाँ पर शिवचरणों का भक्त दुःसह तप-ताप से सन्तप्त एक तापस-कुल उसे दिखाई दिया।

घत्ता—छहों अंगों को कहता हुआ, चारों वेदों का विचार करता हुआ, रुद्रांकुश के चिह्नवाला और कामदेव का निवारण करनेवाला।

(10)

---

4. A टकराउ। 5. P °ढक्कराउ। 6. A पावकम्मु। 7. A जगे कित्तणु।

(9) 1. AP °कंदर°। 2. A °लोलिर°; P °लोइय। 3. A °धारत्तु। 4. A वासवकुलहर°; P तावसकुल हर°। 5. A °वम्महं वारणु।

(10)

अण्णत्थ अहोमुहपीयधूमु[1] अण्णत्थ होमधूमोहसामु।
अण्णत्थ णिहियकुसपूलणीलु अण्णत्थ सुपोसियबालपीलु।
अण्णत्थ वलियमेहलगुणालु अण्णत्थ गुत्थवक्कलविसालु[2]।
अण्णत्थ पभक्खियतोयवाउ अण्णत्थ सहियपंचग्गिताउ।
अण्णत्थ परिट्ठियएक्कपाउ अण्णत्थुववासहिं खीणकाउ।
अण्णत्थ पुसियपालियकुरंगु अण्णत्थ चिण्णचंदायणुग्गु।
अण्णत्थ तवइ कयउद्धहत्थु अण्णत्थ संतिघोसणसमत्थु[3]।
अण्णत्थालाविणिसद्दमंजु[4] अण्णत्थ पउंजियछारपुंजु।
अण्णत्थ पत्तसंचयसमेउ अण्णत्थ गीयगंधारगेउ।
अण्णत्थ विचिंतियरुद्दजाउ गायंति जांव संणिहियभाउ।
अण्णत्थ धूलियउद्धूलिएण करि[5] मणिमयवलएं चालिएण।
अण्णत्थ ण्हंतु वंदंतु संझ सोहइ भरंतु मंत वि दुसज्झ।

घत्ता—तहिं तावसणाहु दिट्ठउ तेण दुरासें।
पणमिउ सीसेण मुक्कदीहणीसासें ॥10॥

किसी दूसरी जगह, कोई अधोमुख होकर धुआँ पी रहा था। एक और जगह कोई होम के धूम-समूह से श्यामवर्ण हो रहा था। एक और जगह, कोई रखे हुए दर्भ के पूलों से नीला था। एक और जगह किसी ने हाथी के बच्चे को पाल रखा था। एक और जगह, किसी ने मेखला और योगपट्ट बाँध रखा था। एक और जगह किसी ने विशाल वल्कल पहिन रखा था। एक और जगह पानी और हवा खानेवाला, एक और जगह पंचाग्नि तप सहनेवाला, एक और जगह एक पैर से स्थित रहनेवाला, एक और जगह उपवासों से क्षीणशरीर, एक और जगह पालित हरिण को खिलाता हुआ, एक और जगह उग्र चान्द्रायण तप करनेवाला, एक और जगह कोई ऊँचा हाथ करके तप करनेवाला, एक और जगह शान्ति की घोषणा करने में समर्थ, एक और जगह वीणा के आलाप शब्द से सुन्दर, एक और जगह भस्मसमूह का प्रयोग करनेवाला, एक और जगह पत्रों के समूह का संचय करनेवाला था। एक और जगह गान्धार गीत गानेवाला, एक और जगह रुद्रजप का विचार करते हुए सन्निहित भाव से गाते हुए, एक और जगह हाथ में धूल से धूसरित चलते हुए मणिमय वलय से तथा एक और जगह स्नान करते और सन्ध्या-वन्दना करते हुए और असाध्यमन्त्र का ध्यान करते हुए शोभित था।

घत्ता—खोटी आशा से उसने तापसनाथ को देखा और लम्बी साँस खींचते हुए सिर से प्रणाम किया।

(10) 1. A होममुह° । 2. AP °चंदायणंगु । 2. A वत्थवक्कल° । 3. AP °घोसणपसत्थु । 4. AP °लावणि° । 5. A करमणिमयवलसंचालिएण; P करमणिमयवलए चालिएण।

(11)

सिवमत्थु[1] भणिवि सिवतावसेण ता सो परिपुच्छिउ तावसेण।
दीसहि बहुपुण्णाहिउ महंतु भणु भणु किं आयउ णीससंतु।
भणु भणु किं दुक्खें दुत्थिओ सि तुह केण हओ सि गलत्थिओ सि।
दप्पिट्ठु दुट्ठु खलु पावरासि तं णिसुणिवि भासइ अलियभासि।
पोयणपुरवरि अरविंदु राउ हउं तासु मंति वबगयविसाउ।
खुद्दें दाइज्जें भायरेण मरुभूएं गुरुवइरायणेण।
महुं सिरि ण[2] सहंतें करिवि रोसु अलियउं जि देवि[3] परयारदोसु।
णीसारहु मारहु एहु[4] वज्झु रोसाविउ लाविउ राउ[5] मज्झु।
राएण वि तेण वि पेरिएण हउं किंकरलोएं वइरिएण।
धम्मिल्लि धरिवि अच्छोडिओ[6] मि करमुट्ठिहिं लट्ठिहिं ताडिओ[7] मि।
विब्भाडिउ धाडिउ पट्टणाउ अमरु व वरभमरु व सुरवणाउ[8]।
एवहिं लग्गउ परलोयसिक्ख दे देहि भडारा सइवदिक्ख[9]।

घत्ता—चप्पिवि जडभारु हरतवलच्छिइ मंडिउ[10]।
सो गुरुणा सीसु भूईरयभुरुकुंडिउ[11] ॥11॥

(11)

'कल्याण हो' (शिवमस्तु) कहकर, शिवतापस तपस्वी ने उससे पूछा—"तुम अत्यधिक पुण्य से महान् दिखाई देते हो ! बताओ, बताओ, लम्बी साँस लेते हुए क्यों आये ? बताओ, बताओ, तुम किस दुःख से दुःखी हो ? तुम्हें किसी ने मारा या किसी ने निकाल दिया ? दर्पिष्ठ, दुष्ट, खल, पापराशि और झूठ बोलनेवाला वह कहता है—पोदनपुर में राजा अरविन्द है। मैं विषाद को प्राप्त उसका मन्त्री हूँ। क्षुद्र सौतेले भाई मरुभूति ने, मेरी लक्ष्मी सहन न कर सकने के कारण, क्रोध कर और झूठा परदार-दोष लगाकर, 'यह वध्य है, इसे निकालो, मारो', इस प्रकार मेरे विरुद्ध राजा को क्रोध दिलाकर मुझे निकलवा दिया। उस राजा के द्वारा प्रेरित अनुचर समूह बैरी के द्वारा चोटी पकड़कर घसीटा गया, हाथ की मुट्ठियों और लाठियों से प्रताड़ित किया गया और घुमाकर नगर से निकाल दिया गया, जैसे अमर या श्रेष्ठ भ्रमर को नन्दनवन से निकाल दिया जाये। अब मैं परलोक-शिक्षा में लग गया हूँ। हे आदरणीय ! मुझे शैव दीक्षा दीजिए।

घत्ता—जटाभार बाँधकर, उसे शिव की तपलक्ष्मी से मण्डित कर दिया गया। वह शिष्य गुरु के द्वारा भूतिरज से अलंकृत कर दिया गया।

(11) 1. AP सिवसत्थु। 2. A णहसंगें; P असहंतें। 3. A देव। 4. A एउ वज्झु; P एहु विवक्खु। 5. A रायज्झु (1); P रायपक्खु। 6. A अत्थोडिओ सि। 7. A ताडिओ मि। 8. AB सुवरणाउ। 9. A सेयदिक्ख। 10. AP मंडियउ। 11. AP भूइरयसुर कुंडियउ।

(12)

जिह सिरि सजडु[1] तिह हियइ जडु।
जिह सरइ हरु तिह विरइहरु।
जिह संभरइ तिह संभरइ[2]।
जिह गत्तरयं तिह चित्तरयं।
णिच्चं धरइ पावंधरइ[3]।
जिह कोवणिओ तिह को वणिओ।
कड्ढइ[4] छुरियं जुइविच्छुरियं[5]।
धियमेहलओ सुसमेहलओ।
सो तावसओ दुक्कियवसओ।
जा तहिं वसइ वक्कल[6] वसइ।
पत्तं असइ बुद्धी असइ।
बुद्धिं विगया बहुभावगया।
वसुमाणमया किं हा समया।
काणणवसही[7] जइ णत्थि सही।
करुणा परमा ता किं परमा।
लब्भइ जइणा एवं जइणा।
भासंति वहं जगसंतिवहं[8]।

---

(12)

जिस प्रकार उसका सिर सजड (जटायुक्त) था, उसी प्रकार वह हृदय में भी जड़ था। जिस प्रकार वह शिव को याद करता है, उसी प्रकार विशिष्ट रतिगृह को याद करता है। जिस प्रकार उसकी शम्भु में रति थी, उसी प्रकार स्वयं में रति थी। जिस प्रकार शरीर में धूल थी, उसी प्रकार उसके चित्त में भी धूल थी। पापान्ध वह पापरूपी धूल नित्य धारण करता है। जिस प्रकार कौपीन धारण करता है, उसी प्रकार वह कोपनशील भी है। द्युति से चमकती हुई छुरी निकालता है। योगपट्ट को धारण करता है। जिसकी इच्छा का विनाश हो गया है, वह तपस्वी पापों के वशीभूत था। वह वहाँ रहता है और वल्कल धारण करता है, पत्ते खाता है। उसकी बुद्धि असती है। वृद्धि को प्राप्त और नाना चित्त परिणामों से युक्त है। धन और मानवाली है, पशु सहित है, और वन में निवास करनेवाली है, लेकिन यदि उसकी सखी में परम करुणा नहीं है, तो यति के द्वारा, क्या परम लक्ष्मी पायी जा सकती है ? इस प्रकार जैन-जग में शान्ति स्थापित करनेवाले पथ का कथन करते हैं।

---

(12) 1. A सज्जडु। 2. A संचरइ। 3. A पावे धरइ। 4. A चड्डइ। 5. P पहयविच्छुरियं। 6. A वक्कं। 7. A को ण वणमही। 8. A omits जगसंतिवहं।

घत्ता—तावेत्तहि तेण कंचणणिम्मियगोउरि।
मरुभूएं राउ परिपुच्छिउ पोयणपुरि ॥12॥

(13)

सो[1] पभणइ णिसुणहि देवदेव रायाहिराय कयमणुयसेव।
खलमहिलहि कारणि णिग्घिणेण मइं णेहविहीणें[2] दुज्जणेण।
भायरु गरुयारउ पिउसमाणु णीसारिउ गउ वणु भग्गमाणु[3]।
तं गंपि खमावमि करमि खंति खंतिइ चंडाल वि देव होंति।
ता चवइ णाहु भो सच्छभाव[4] किं भणिउं बप्प पइं गलियगाव।
किं पिसुणयणेण[5] खमाविएण किं किर विसेण [6]गुडभाविएण।
इय वारिज्जंतु वि अणकहंतु[7] गउ सो[8] तं काणणु गुणगणमहंतु।
ससहोयरु दिट्ठउ तव करंतु पंचग्गिताव दूसह सहंतु।
तुहुं [9]खमहि खमहि बंधव भणंतु पावें[10] पायहं उप्परि पडंतु।
हउ मत्थइ विउलसिलायलेण गउ जीउ ण को मारिउ खलेण[11]।
पाविज्जइ[12] लच्छि अलच्छि जेण दइवें णिज्जइ[13] णिरु तेत्थु तेण।

घत्ता—उवयइरि मुएवि भापब्भारविणासहु।
जाणंतु वि जाइ रवि अत्थवणपएसहु[14] ॥13॥

घत्ता—तभी यहाँ, स्वर्णनिर्मित गोपुरवाले पोदनपुर नगर में मरुभूति ने राजा से पूछा।

(13)

वह कहता है—"हे देवदेव ! मनुष्यों की सेवा करनेवाले राजाधिराज सुनिए। दुष्ट महिला के कारण, स्नेहहीन मुझ दुर्जन और निर्दय ने पिता के समान अपने बड़े भाई को निकलवा दिया। अपमानित होकर वह वन चला गया। मैं उसके पास जाकर क्षमा माँगूँगा। क्षमा से चाण्डाल भी देव होते हैं।" तब राजा कहता है—"हे स्वच्छभाव और गलितगर्व ! तुम क्या कहते हो ? दुष्ट आदमी से क्षमा माँगने से क्या ? गुड़ से मिले हुए विष से क्या ?" इस प्रकार मना करने पर भी, बिना कहे हुए ही गुणगण से महान् वह उस जंगल में गया। उसने अपने भाई को दुःसह पंचाग्नि तप करते हुए देखा। 'हे भाई ! तुम मुझे क्षमा करो, क्षमा करो" यह कहते हुए, और पैरों पर पड़ते हुए उसे पापी ने एक बड़े शिलातल से सिर में आहत कर दिया। जीव चला गया। दुष्ट के द्वारा कौन नहीं मारा जाता है ? जिस होनहार से लक्ष्मी और अलक्ष्मी पाई जाती है, मनुष्य दैव से उसके द्वारा ले जाया जाता है।

घत्ता—सूर्य उदयगिरि को छोड़कर प्रकाशसमूह का नाश करनेवाले अस्तप्रदेश को जानते हुए भी वहाँ जाता है।

---

(13) 1. A ता. 2. AP °विहूणें। 3. A विग्गमाणु। 4. A चत्तभाव। 5. AP किं तें पिसुणेण खमाविएण। 6. AP गुल°। 7. P अणुकहंतु। 8. A तं सो काणणु गुणमहंतु; P सो तं काणणु गुणमहंतु। 9. A खमहि मज्झु बंधव भणंतु। 10. A भावें। 11. AP add after this the following three lines : लीलइ महियलि महिहरथविरु, पुणु पुणु पहणइ सो कुद्धचित्तु। दय णत्थि अजइणहं तावसाहं, सकसायहं जडकंतायसाहं। बंधु वि वहंति पावंधबुद्धि, कह होइ ताहं परलोयसुद्धि। 12. P reads *a* as *b* and *b* as *a*. 13. A णरु णिज्जइ; P णिरु णिज्जइ। 14. P अत्थइरिपएसहो।

(14)

अल्लल्लपहुल्लियवेल्लिजालि[1] तणजाललग्गदावग्गिजालि।
महिरुहछाइयदिच्चक्कवालि सूयरहयवणयरचक्कवालि।
गिरिसिहरकुहरकक्करकरालि पविमलमाणिक्कसिलाकरालि[2]।
पविउलखुज्जयमलयंतरालि सल्लइवणि तुंगतमालतालि।
मरुभूइ मरिवि कयझाणदोसु हुउ कुंजरु णामें वज्जघोसु।
जा वरुणा णामें कमढघरिणि[3] सा हूई तहिं तहु इट्ठकरिणि।
करु करहु देइ सरु सरहु घिवइ[4] हत्थेण कुक्खिकक्खंतु[5] छिवइ।
संघट्टइ अंगें अंगु तेव मयगलहु पवड्ढइ[6] पेम्मु जेव।

घत्ता—वड्ढियणेहाइं मयणणिमीलियणेत्तइं।
बिण्णि वि कीलंति मेहुणकील[7] करंतइं ॥14॥

(15)

घणगज्जियसद्दहु णहु णियंतु गिरिवरभित्तिउ दंतहिं हणंतु।
पवलबल चवल पडिगय खलंतु सरवरि तरंतु कमलइं दलंतु।
घल्लंतु देहि [1]दवपंकपंसु उड्डावियतीरिणितीरहंसु।

(14)

जिसमें गीले-गीले और पुष्पित लता-जाल हैं, तृणसमूह में दावाग्नि लगी हुई है, जिसका दिग्मण्डल वृक्षों से आच्छादित है, जिसमें वन्यप्राणियों का समूह सुअरों से आहत है, जो गिरि-शिखरों और गुफाओं से कठोर और भयंकर है, स्वच्छ माणिक्य की किरणों से जो युक्त है, जो विशाल ऊबड़-खाबड़ प्रदेश वाला है, और जिसमें ऊँचे-ऊँचे तमाल और ताल वृक्ष हैं, ऐसे सल्लकीवन में, मरुभूति आर्तध्यान से मरकर वज्रघोष नाम का हाथी हुआ। और जो वरुणा नाम की कमठ की पत्नी थी, वह मरकर उसकी इष्ट करनेवाली हथिनी हुई। वह सूँड में सूँड देती है, सरोवर से पानी डालती है। सूँड से कुक्षीकक्ष के अन्त को छूती है और शरीर को शरीर से इस प्रकार रगड़ती है, जिससे उस मैगल हाथी में प्रेम उत्पन्न हो जाये।

घत्ता—बढ़ रहा है स्नेह जिनमें, ऐसे वे दोनों काम-भाव से अपनी आँखें बन्द किये हुए रतिक्रीड़ा करते हैं।

(15)

मेघों के गर्जन शब्द से वह गज आकाश को देखता हुआ, गिरिवर की दीवारों का दाँतों से भेदन करता हुआ, प्रबल बलवाले प्रतिगजों को स्खलित करता हुआ, सरोवर में तैरता हुआ, कमलों को दलता हुआ, जल, कीचड़ और धूल को शरीर पर डालता हुआ, नदियों में किनारों के हंसों को उड़ाता हुआ, तोड़-मरोड़कर

(14) 1. A अण्णण्ण° । 2. AP पविउल° । 3. AP कमठ° । 4. A देइ । 5. A कुक्खिकरकरु । 6. P पवट्टइ । 7. AP मेहुणकीलइ रत्तइं ।
(15) 1. AP दहपंकु । 2. A सुरकरिहिं देंतु ।

उल्लूरिवि किसलयकवलु लेंतु पियगणियारिहिं भिसु[2] करिहिं देंतु।
अणवरयगलियकरडयलदाणु काणणि णाणादुम भंजमाणु।
हिमसीयलजलसीयर मुयंतु णं अहिणवधाराहरु सरंतु।
दढदंतमुसलखयखोणिभाउ कंपवियविवरु [3]रूसवियणाउ।
गुमुगुमुगुमंतभमियालिविंदु णं जंगमु अंजणमहिहरिंदु।
घत्ता—रणभरहु समत्थु दसणदित्तिधवलासउ।
सो विंझगइंदु पुप्फयंतसंकासउ ॥15॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे मरुभूइकरिंदजम्मावयारो
णाम तिणवदिमो[4] परिच्छेउ समत्तो ॥93॥

किसलयों के कौर खाता हुआ, प्रिय हथिनियों को कमलिनी-कन्द देता हुआ, गण्डस्थल से अनवरत मदजल गिराता हुआ, वन में नाना वृक्षों को नष्ट करता हुआ, चन्द्रमा के समान शीतलजल कण छोड़ता हुआ मानो अभिनव जल-धारा बरसाता हुआ, अपने दृढ़ दाँतोंरूपी मूसल से धरती को खोदता हुआ, पक्षिवरों को कँपाता हुआ, और साँप को क्रुद्ध करता हुआ, जिसके चारों ओर गुनगुन करते हुए भ्रमर घूम रहे हैं, वह गज ऐसा लगता था, मानो चलता-फिरता अंजनपर्वत हो।

घत्ता—रणभार में समर्थ, दाँतों की दीप्ति से आशाओं (दिशाओं) को धवलित करनेवाला वह विन्ध्यगज दिग्गज के समान था।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य में मरुभूति का करीन्द्र-जन्मावतार नाम का
तेरानबेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

3. A रूसवियउ णाउ; P तूसवियणाउ। 4. AP तिणउदिमो।

चउणउदिमो संधि

मयमत्तउ मारणसीलु चलु मारइ जं जं पेच्छइ।
सहुं वरुणाकरिणिपरत्तमणु[1] सो करिंदु तहिं अच्छइ ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

जा [2]तावेत्तहि पोयणपुरवरि तेणरविंदणरिंदें णियघरि।
अच्छंतेण दिट्ठु सियजलहरु तुंगसिहरु सोहइ णं जिणहरु[3]।
एणायारें णयणाणंदिरु किज्जइ जयवइपडिमहें[4] मंदिरु।
एव भणेप्पिणु कागणि लेप्पिणु जा किर लिहइ राउ विहसेप्पिणु।
ता तहिं[5] तं सरूउ खणि णट्ठउं अण्णु जि काइं वि पहुणा दिट्ठउं।
अद्धुवु धुवु ण किं पि संसारइ किं कीरइ किर मइ रामारइ।
एव विचिंतिवि तणु व[6] वियप्पिवि महिमंडलु णियसुयहु समप्पिवि।
णरवइ विरइयदुक्कियसंवरु जायउ तक्खणि देउ दियंबरु।
घत्ता—संमेयहु जंतु सो संपत्तउ भीसणु।
अण्णेक्कु समत्थु[7] सत्थवाहु[8] सल्लइवणु ॥1॥

चौरानवेवीं सन्धि

मतवाला, मारणशील और चंचल वह गज जिस-जिसको देखता उसे मारता। वरुणा हथिनी में अत्यन्त अनुरक्त-मन वह करीन्द्र वहीं रहने लगा।

(1)

इसी बीच यहाँ पोदनपुर नगर में, अपने घर में रहते हुए उस अरविन्द राजा ने एक श्वेत मेघ देखा जो मानो ऊँचे शिखरवाले मन्दिर के समान शोभित था। इसी आकार का, नेत्रों के लिए आनन्ददायक जगत्पति जिनदेव की प्रतिमाओं का मन्दिर बनाया जाए, यह विचार कर जैसे ही वह राजा हाथ में कागज लेकर, हँसते हुए उसे लिखता (चित्रित करता) है वैसे ही उस मेघ का स्वरूप तत्काल नष्ट हो गया। राजा ने दूसरा ही कोई रूप देखा। 'संसार में सब-कुछ अनित्य है, नित्य कुछ भी नहीं है, फिर मैं स्त्रीरति में बुद्धि क्यों करता हूँ ?' यह विचार कर और महीमण्डल को तृण के समान समझकर उसे अपने पुत्र को सौंपकर, राजा पापों का संवरण कर उसी क्षण दिगम्बर मुनि हो गया।

घत्ता—सम्मेदशिखर जाते हुए, वह और उसके साथ ही एक समर्थ सार्थवाह सल्लकीवन में पहुँचे।

---

(1) 1. A °करिणिरत्त° । 2. AP ता एत्तहे । 3. A जिणवरु । 4. AP जइवइ° । 5. AP तहो° । 6. A पवियप्पिवि । 7. P सुमत्थु । 8. A सत्थवाहि ।

(2)

छुडु छुडु उब्भियाइं वणि दूसइं हरियइं पीयइं चिंधविहूसइं।
छुडु छुडु दीहरपंथें भग्गा हय गय वसह चरेव्वइ लग्गा।
छुडु करहावलि चरहुं विमुक्किय छुडु खयचुल्लिहिं सिहि संधुक्किय।
छुडु जणवउ[1] सधूमु वणि उट्ठिउ[2] छुडु जोईसरु जोए परिट्ठिउ।
ता करडयलगलियबहुमयजलु मयजललुलियचलियमहुयरउलु।
तेण गइंदें मारणसीलें कलिकयंतकालाणलणीलें[3]।
हरि वंकमुहु दिसाबलि दिण्णउ खरु [4]खरबुक्किरु दंतहिं भिण्णउ।
करहु उद्धमुहु फाडिवि छंडिउ[5] मुक्कु बलद्दु झ त्ति पविहंडिउ।
णासमाण बहुमाणव मारिवि एव सत्थु सयलु वि संघारिवि।
दिट्ठउ[6] विरइयधम्मणिओएं[7] रिसि संठिउ आयावणजोएं।
धायउ [8]जूरियकूरकयंतहिं जा वच्छत्थलु पेल्लइ दंतिहिं।

घत्ता—ता दिट्ठउ तेण तहु उरयलि सिरिलंछणु[9]।
सुयरिवि चिरजम्मु [10]पयहिं पडिउ उवसममणु ॥2॥

---

(2)

शीघ्रातिशीघ्र वन में हरे-पीले और चिह्नों से विभूषित तम्बू उठा दिये गये। शीघ्र ही लम्बे रास्ते के कारण थके हुए घोड़े, हाथी और बैल चरने लगे। शीघ्र ही ऊँटों का समूह चरने के लिए भेज दिया गया। शीघ्र ही खोदे गये चूल्हों में आगी चेता दी गयी। शीघ्र ही वन में लोक (लोग, जनता) धूम-सहित उठ गये। शीघ्र ही योगीश्वर योग में स्थित हो गये। इतने में, जिसके गण्डस्थल से बहुत अधिक मदजल गिर रहा है, जिसके मदजल के कारण भ्रमरकुल आन्दोलित और चंचल है, ऐसे प्रलयाग्नि के समान श्याम उस हिंसक गज ने वक्रमुख घोड़े की दिशाबलि दे दी। कठोर बोलनेवाले गधे को दाँतों से फाड़ डाला। ऊँचे मुखवाले ऊँट को फाड़कर छोड़ दिया। बैल को प्रखण्डित कर शीघ्र छोड़ दिया। भागते हुए बहुत-से लोगों को मारकर तथा समूचे सार्थवाह का संहार कर, उसने धर्म-नियोग विहित आतापनयोग में स्थित मुनि को देखा। वह हाथी दौड़ा। क्रूर यम को भी पीड़ित करनेवाले अपने दाँतों से जब तक वह उनके वक्षःस्थल को धक्का दे,

घत्ता—उसने उनके उरतल पर श्री का चिह्न देखा। अपने पूर्वजन्म की याद कर वह उपशान्त होकर मुनि के पैरों में पड़ गया।

---

(2) 1. A जाणवमधूमु; P जणरओ सधूमु। 2. A उट्ठिय। 3. A कालाणलकीलें। 4. AP खरभुक्किरु। 5. AP छड्डिउ। 6. AP चिट्ठउ। 7. AP °धम्मविओएं। 8. A चूरिय°। 9. AP सिरिमंछणु। 10. A पाएहिं।

(3)

मुणिणा धम्मबुद्धि पभणंतें संभासिउ गउ महुरु चवंतें।
पइ[1] पावहु वि पावु णउ[2] संकिउ भो मरुभूइ काइं किउ दुक्किउ।
हिंसइ बप्प दुक्खु पाविज्जइ चिरु संसारसमुद्दि भमिज्जइ।
हिंसइ[3] होइ कुरूउ दुगंधउ कुंटु[4] मंटु पंगुलु बहिरंधउ।
हिंसइ होइ जीउ दुद्दंसणु परहरवासिउ परपिंडासणु।
भो भो गयवर हिंस पमेल्लहि अप्पुणु[5] अप्पउ णरइ म घल्लहि।
लइ सावयवयाइं परमत्थें पेक्खु पेक्खु दुक्कियसामत्थें।
बंभणु होंतउ जायउ कुंजरु एत्थच्छहि[6] गिरिगेरुयपिंजरु।
जम्मंतरि तुहुं मंति महारउ एवहिं जायउ करि विवरेरउ।
हउं अरविंदु किं ण परियाणहि करि जिणधम्मु म दुक्खइं माणहि।
घत्ता—तं णिसुणेवि[7] गइंदु दुच्चरियाइं दुगुंछिवि।
थिउ गुरुपय पणवेवि सावयवयइं पडिच्छिवि ॥3॥

(4)

गउ मुणिवरु जगपंकयणेसरु रण्णि चरइ वउ[1] रण्णगएसरु।

---

(3)

मुनि ने 'धर्मबुद्धि हो' यह कहते हुए मधुर शब्दों में हाथी को सम्बोधित किया—"तुम पापी के पाप से भी शंकित नहीं हुए। हे मरुभूति ! तुमने पाप क्यों किया ? हे सुभट ! तुम हिंसा से दुःख पाओगे और चिरकाल तक संसाररूपी समुद्र में भ्रमण करोगे। हिंसा से व्यक्ति कुरूप और दुर्गन्धयुक्त होता है, कुण्ट (सुस्त, आलसी), निरुद्यमी, लँगड़ा, बहरा और अन्धा होता है। हिंसा से जीव दुदर्शनीय होता है, दूसरे के घर में रहनेवाला और दूसरे का भोजन करनेवाला। हे हे गजवर ! हिंसा छोड़ दो। अपने को अपने से नरक में मत डालो। परमार्थभाव से तुम श्रावकव्रतों को ग्रहण करो। देखो, देखो, पाप की सामर्थ्य से, तुम ब्राह्मण होकर भी हाथी हुए और पहाड़ के गेरु से लाल यहाँ स्थित हो। जन्मान्तर के तुम मेरे मन्त्री हो, इस समय हाथी होकर तुम मेरे विरुद्ध हो। मैं (राजा) अरविन्द हूँ, क्या तुम नहीं जानते ? तुम दुःख मत मनाओ, जिनधर्म धारण करो।"

घत्ता—यह सुनकर, गजेन्द्र दुश्चरित छोड़कर, गुरुचरणों में प्रणाम कर तथा श्रावक व्रत स्वीकार कर स्थित हो गया।

(4)

विश्वरूपी कमल के सूर्य मुनिवर चले गये। वह जंगली हाथी जंगल में व्रतों का आचरण करता है।

---

(3) 1. A पइयारुहो। 2. AP ण विसंकिउ। 3. A हिंसइ जुअउ दुद्दु दुगंधउ; P हिंसइ होइ कूरु वि दुगंधउ। 4. कुंटु मंटु। 5. A अप्पउ। 6. A ओ अच्छहि; P तुहुं अच्छहि। 7. P तं सुणेवि।

(4) 1. AP वयवंतु गएसरु।

अप्पउ खमदमभावें रंजइ अवरुल्लूरिउ[2] पल्लवु भुंजइ।
पियइ सलिलु परकरिसंखोहिउं ण हणइ हरिणु[3] वि जंतउ रोहिउ।
किमिपिपील[4] लहुजीव णियच्छइ परपयमलिएं [5]मग्गें गच्छइ।
कम्भुब्भडु[6] सयियारु ण जोयइ गणियारिहिं करु कहिं मि ण ढोयइ।
अंगें अंगु[7] समाणु ण पेल्लइ पाणिउं पंकु सरीरि ण घल्लइ।
अट्टरउद्दझाणु विणिवायइ जिणचरणारविंदु[8] णिज्झायइ।
रत्तिदियहु उब्भुब्भउ अच्छइ दंसणणाणचरित्तइं इच्छइ।
पोसहविहिसंखीणसरीरउ सहइ[9] परीसह सुरगिरिधीरउ।
दूसहतण्हातावें लइयउ एक्कदिवसु[10] सो गउ अणुवइयउ।
वेयवइ त्ति जाम सरि पत्तउ ता तहिं दुद्दमि कद्दमि खुत्तउ।

घत्ता—मइं घिवहि सरीरि हउं तुह णेहणिबद्धउ।
इय चिंतिवि णाइ मयगलु पंकें रुद्धउ ॥4॥

(5)

सो खलु तावसु मरिवि वरावउ तेत्थु जि फणिकुक्कुडु संजायउ।
जहिं गयवरगइ तहिं जि पराइउ कालें कालवासु णं ढोइउ।
दिट्ठउ तेण हत्थि सो केहउ वयभरधरणु महामुणि जेहउ।

स्वयं को क्षमा और संयम से रंजित करता है। पत्ते तोड़कर खाता है। सूँड़ से संशोधित (प्रासुक) पानी पीता है। जाते हुए रोहित हरिण को नहीं मारता। कृमि, चिंटी आदि जीवों को देखकर चलता है। दूसरों के पैरों से मलिन मार्ग को देखकर चलता है। विचारपूर्वक वह उद्भट कर्म नहीं करता। हथिनियों पर अपनी सूँड़ कभी भी नहीं ले जाता। एक अंग से दूसरे अंग को नहीं खुजलाता। पानी और कीचड़ शरीर पर नहीं डालता। वह आर्त, रौद्र ध्यानों का नाश कर देता है और जिनवर के चरणकमलों का ध्यान करता है। रात-दिन अपनी सूँड़ ऊपर किये रहता है। वह दर्शन, ज्ञान और चारित्र की इच्छा करता है। प्रोषधोपवास की विधि से क्षीणशरीर, सुमेरु पर्वत की तरह धीर वह परीषह सहन करता है। एक बार असह्य प्यास से संतप्त होकर वह अणुव्रती गज ज्योंहि बेतवा नदी के भीतर पहुँचा त्योंहि उस दुर्दम कीचड़ में फँस गया।

घत्ता—'तुम मुझे शरीर पर डालते हो, मैं तुम्हारे स्नेह से बँधी हुई हूँ'—यह विचार कर ही मानो कीचड़ ने उस मदमाते हाथी को रोक लिया था।

(5)

वह बेचारा दुष्ट तापस (कमठ) मरकर वहीं पर कुक्कुड साँप हुआ। और जहाँ गजवर की गति थी, वह वहाँ पहुँचा मानो काल अपना कालपाश ले आया हो। उसने उस हाथी को इस प्रकार देखा जैसे व्रत

---

2. AP °उज्जूरिय पत्तउ। 3. AP हरिण ण जंतु वि रोहिउ। 4. AP °पिप्पीलि। 5. P पंथें। 6. A पेमु भेडु। 7. A अंगुलसमचणु, P अंगु समयणु। 8. A जिणवरचरणा°। 9. AP सहियपरीसहु। 10. A °दिवसें सो गय पावइयउ; P °दिवसे गयवरु पावइयउ।

पुव्ववइरसंबंधवियारहिं तिक्खणक्खखरचंचुपहारहिं।
लेण विहउ[1] करि वियलिउं सोणिउं णं गेरुयगिरिवरणइवाणिउं[2]।
मुउ सुहझाणें सुरवरसारइ उप्पण्णउ[3] सुकप्पि सहसारइ।
अमरकोडिसेविउ[4] पवरामरु पविमलकडयमउडकुंडलधरु।
सोलहजलहिपमाणचिराउसु माणिवि दिव्वणारिकीलारसु।
जंबूदीवि[5] पवियलियतममलि पुव्वविदेहि विउलि खयरायलि।
लोउत्तमु पुरु किं वण्णिज्जइ सुरपुरेण जहिं हासउ दिज्जइ।

घत्ता—तहिं खयरणरिंदु इंदसमाणउ विज्जुगइ।
गेहिणि तडिमाल णाइं अणंगहु मिलिय रइ ॥5॥

(6)

एयहं बिहिं मि जणहं कीलंतहं लीलइ सुरयसोक्खु भुंजंतहं।
चुउ सहसारदेउ सुउ जायउ रस्सिवेउ णामें विक्खायउ।
सिरि अणुहुंजिवि कालें जंतें उप्पउ परु जाणंतें संतें।
सूरि समाहिगुत्तु आसंघिउ अइदुत्तरु भवसायरु लंघिउ[1]।
वउ[2] लइयउं णिवसिरि परिसेसिवि थिउ अप्पउं सीलेण विहूसिवि।

के भार को धारण करनेवाला महामुनि हो ! लेकिन पूर्वजन्म के वैर सम्बन्ध के विकारोंवाले तीखे नखों और तीव्र चंचु-(दन्त-) प्रहार से उसने हाथी को काट खाया, उससे रक्त बह निकला। मानो गैरिक पर्वत की नदी का पानी हो। शुभध्यान से मरकर वह गज सुरवरश्रेष्ठ सहस्रार स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। करोड़ों देवों से शोभित तथा कटक, मुकुट और कुण्डलों को धारण करनेवाला वह दिव्यांगनाओं के साथ क्रीड़ा-रस मानकर, सोलह सागर प्रमाण की चिर आयुवाला महान् देव हुआ। जम्बूद्वीप के पूर्वविदेह में, नष्ट हो गया है तम-मल जिसमें, ऐसे विशाल विद्याधर-लोक में त्रिलोकोत्तम नगर है। उसका क्या वर्णन किया जाय, सुर-पुर के द्वारा जिसका मनोरंजन किया जाता है !

घत्ता—वहाँ इन्द्र के समान विद्युतगति नाम का विद्याधर राजा है। उसकी तडिन्माला नाम की गृहिणी है मानो कामदेव के लिए रति मिल गयी हो।

(6)

क्रीड़ा करते और लीलापूर्वक सुरति सुख भोगते हुए, इन दोनों के, वह सहस्रार देव च्युत होकर पुत्र उत्पन्न हुआ, जो रश्मिवेग के नाम से विख्यात था। समय बीतने पर, श्री का भोग करने के अनन्तर, स्व-पर को जानते हुए, उसने समाधिगुप्त मुनि की शरण ली और अत्यन्त दुस्तर संसार-समुद्र लाँघा। राज्यश्री को छोड़कर उसने व्रत ग्रहण कर लिया, और स्वयं को शील से विभूषित कर स्थित हो गया। दीर्घ समय तक

(5) 1. AP णिहउ। 2. A °गिरिणिज्झरपाणिउ; P °गिरिणिज्झरवाणिउं। 3. A हुयउ देउ तहिं पुणु सहसारए। 4. A °विंभियपवरामरु। 5. A °दीवए विधांतिय्तपायले।

(6) 1. A लिंघिउ। 2. D व्रउ।

दीहु कालु मयमोहु हरेप्पिणु[3] घोरवीरतवचरणु[4] चरेप्पिणु।
जोउ लएप्पिणु सुयवणयरसरि थिरु थिउ हिमगिरिवरकुहरंतरि।
कुक्कुडाहि धूमप्पहि णारउ पुणु[5] पुणु हुउ बहुदुक्खहँ[6] भारउ।
अजयरु तेण गिलिउ[7] सो जइवरु मुउ परमेसरु संजमभरधरु।
अच्चुयकप्पि गुणोहरवण्णउ जायउ देउ णिच्चु तारुण्णउ।

घत्ता—तहिं तेण सुरेण दिव्वभोयसंजुत्तउं।
बावीससमुद्दसमु परमाउसु भुत्तउं।।6।।

(7)

गयणविलंबियमणहरमेहइ पुणु इह दीवइ अवरविदेहइ।
पउमदेसि आसउरि[1] सुहंकरि दुग्गवंति रिउणयरखयंकरि[2]।
वज्जवीरु णामें तहिं राणउ आहंडलससिसूरसमाणउ।
विजयाएवि[3] तासु सीमंतिणि हावभावविब्भमजलवाहिणि।
णियसुहकम्मवसें सुच्छायउ तहि अच्चुयसुरु तणुरुहु जायउ।
लक्खणवंजणचच्चियकायउ णामें वज्जणाहु[4] महिरायउ।
असिवरधारइ सयल वि जित्ती छक्खंड वि तें मेइणि भुत्ती।
खेमंकरु जिणणाहु णवेप्पिणु धम्मु अहिंसापरमु सुणेप्पिणु।

मदमोह का हरण कर, घोर वीर तप का आचरण कर, योग लेकर वह, जिसमें वनचरों के शब्द सुनाई देते हैं ऐसी श्रेष्ठ हिमगिरि की एक गुफा में स्थित हो गया। कुक्कुड नाम का वह सर्प धूमप्रभा नरक में नारकी हुआ। फिर बहुत दुःखों को धारण करनेवाला अजगर हुआ और उसने संयम के भार को धारण करनेवाले उन परमेश्वर यतिवर को डस लिया। वह मृत्यु को प्राप्त हुए और अच्युत स्वर्ग में गुणसमूह से सुन्दर नित्य युवा देव हुए।

घत्ता—वहाँ उस देव ने दिव्यभोगों से संयुक्त बाईस समुद्रपर्यन्त परम आयु का भोग किया।

(7)

इसी जम्बूद्वीप में, जहाँ सुन्दर मेघ आकाश पर अवलम्बित रहते हैं, ऐसे अपरविदेह के पद्मदेश में शुभ करनेवाली अश्वपुरी है, दुर्गों से युक्त और शत्रुनगर का नाश करनेवाली। उसमें वज्रवीर्य नाम का राजा है—इन्द्र, सूर्य और शशि के समान। उसकी पत्नी विजयादेवी हावभाव और विभ्रमरूपी जल की नदी है। अपने शुभ कर्म के वश से सुन्दर कान्तिवाला वह अच्युत देव उन दोनों का पुत्र हुआ। लक्षणों और सूक्ष्म चिह्नों से शोभित-शरीर वह वज्रनाभ नाम से महापति (राजा) हुआ। अपनी तलवार की धार से उसने समस्त धरती जीत ली और छह खण्ड धरती का उपभोग किया। फिर, क्षेमंकर नाम के जिन तीर्थंकर को नमस्कार कर,

3. A हणेप्पिणु। 4. AP घोरु वीरु तव°। 5. A मुउ पुण हुउ; P मुउ पुणु हुउ। 6. पुण दुक्खहं। 7. A गि लि उ सो जयवरु; P गिलिउ जोईसरु।
(7) 1. A आउसरे। 2. P रिउणियर°। 3. AP विजयादेवि। 4. AP वज्जणाहि।

चक्कवट्टि संसारहु संकिउ सहुं णरणाहहिं रिसिदिक्खंकिउ।
जावच्छइ वणि रवियरतत्तउ लंबियकरु उज्झियणियगत्तउ।
अजयरु तमपहबिलि[5] उप्पज्जिवि तहिं बावीसजलहि दुहुं भुंजिवि।
सबरिहि सबरें वणि जणियउ सुउ सो कुरंगु णामें वणयरु हुउ।
आयउ तहिं जहिं मुणिवंदियजणि[6] सत्तुमित्तसमचित्तु महामुणि।
सुयरिवि वइरु दंतदट्ठोट्ठें[7] विद्धउ साहु[8] तेण पाविट्ठें।
धम्मगुणुज्झिएण पवियारउ अप्पसमाणें[9] बाणें मारिउ।
संभूयउ मज्झिमगेवज्जहि तहिं मज्झिमविमाणि णिरवज्जहि।
सत्तावीससमुद्दइं जीविउ कासु ण कासु देउ मणि भाविउ।

घत्ता—इह जुबूदीवि लवणजलहिजलणिवसणि।
पुणु कोसलदेसि उज्झाउरि[10] णवपल्लववणि ॥7॥

(8)

कासवगोत्तु राउ जियमहिवलु वज्जबाहु[1] पहु वज्जि व बहुबलु।
दुक्खलक्खदोहग्गखयंकरि देवहु[2] दुल्लह देवि पहंकरि।
चूउ अहमिंदु ताहि[3] सो हूयउ सिसु आणंदु णाम वररूयउ।
मंडलेसु कयमंडलसूरउ सूरहु उग्गउ णं पडिसूरउ।

अहिंसा रूप परम धर्म सुनकर, वह चक्रवर्ती संसार से शंकित हो उठा और राजाओं के साथ उसने दीक्षा ले ली। जब वह वन में सूर्य की किरणों से संतप्त, अपने शरीर की सुधबुध खोकर हाथ लम्बे किये हुए बैठे थे, कि तभी वह अजगर तमःप्रभा नरक में उत्पन्न होकर तथा बाईस सागर प्रमाण दुःख भोगकर, भील के द्वारा एक भीलनी से पुत्ररूप में उत्पन्न हुआ। वह कुरंग नाम का भील हुआ। वह वहाँ आया, जहाँ मुनियों के द्वारा वन्दनीय एवं शत्रु-मित्र में समता भाव रखनेवाले महामुनि विराजमान थे। पुराने बैर की याद कर दाँतों से ओठ चबाते हुए उस पापी ने मुनि को वेध दिया। अपने ही समान धम्म गुण (धर्मरूपी गुण, धनुष की डोरी) से मुक्त बाण के द्वारा उसने उन्हें मार दिया। वे मध्यम ग्रैवेयक में निरवद्य मध्यम विमान में उत्पन्न हुए। वहाँ सत्ताईस सागरपर्यन्त जीवित रहकर वह देव किस-किस के मन को अच्छा नहीं लगा!

घत्ता—लवणसमुद्र के जल से निवसित इस जम्बूद्वीप में, नवपल्लवों से युक्त कोशलदेश में अयोध्या नगरी है।

(8)

उसमें कश्यपगोत्रीय, धरती को जीतनेवाला, वज्र के समान शक्तिशाली बज्रबाहु नाम का राजा था। उसकी लाखों दुःखों और दुर्भाग्यों का नाश करनेवाली, देवों के लिए भी दुर्लभ प्रभंकरी नाम की देवी थी। वह अहमेन्द्र से च्युत होकर, सुन्दर रूपवाला उसका आनन्द नाम का पुत्र हुआ। वह मण्डलेश्वर शत्रुराजाओं के लिए शूर

5. A तमहविलइ। 6. A °मुणिवंदियगुणि; P गुणवंदियमुणि। 7. A दट्ठदंतोट्ठें। 8. P तेण साहु। 9. AP सप्पसमाणें। 10. A उज्झाणयरे उववणे; P उज्झाउरे ण उववणे।

(8) 1. A °बाहु बाहुबलि व; P °बाहु पहु बलि व। 2. AP देवहं। 3. A ताहं संभूयउ; P ताहि सुउ हूयउ।

पहाहियमंतें विणिग्गयजडिमउ[4] णंदीसरि णाणाजिणपडिमउ।
सिंचियाउ घियदहिएं[5] खीरें चंदणघुसिणकरंबियणीरें।
अंचियाउ चंपयमंदारहिं[6] अलिउलरुणुरुंटियसिंदूरहिं।
तहिं णरणाहु पलोयहुं आयउ तहु हियउल्लइ संसउ जायउ।
विपुलमइ[7] त्ति णाम तहिं अच्छिउ गणहरु तें पणवेप्पिणु पुच्छिउ।
किं णिच्चेयणेण पाहाणें पुज्जिएण किं एयहु ण्हाणें।

घत्ता—अक्खइ मुणिणाहु जिणु भावें भाविज्जइ।
तहु बिंबहु तेण जलकुसुमंजलि दिज्जइ ॥8॥

(9)

णउ [1]तरुवरि ण पंकि ण सिलायलि वसइ देउ हियउल्लइ णिम्मलि।
देवट्ठाणइं[2] पुण्णपवित्तइं सुद्धइं दंसणणाणचरित्तइं।
ताहं बुद्धिसंदेहविरामें जाणियभुवणत्तयपरिणामें।
मिच्छत्तासंजमपरिचाएं ताहं बुद्धि कय णवर विराएं।
णिहयावरणु छिण्णसंसारउ विगयराउ अरहंतु भडारउ।
कम्मकलंकपडलु ओसारइ जो णिययाइं ताइं वित्थारइ।
सो अवसें जिणवरु जयकारइ भावसुद्धि[3] छंडइ[4] महिमारइ।

था, सूर्य के लिए जैसे प्रतिसूर्य उत्पन्न हुआ हो। स्वामी के हितैषी मन्त्री ने नष्ट हो गयी है जड़ता जिनकी, ऐसी नाना जिन-प्रतिमाओं का नन्दीश्वर में घी, दूध और दही से अभिषेक किया। चम्पक और मन्दार कुसुमों तथा जिनमें भ्रमरकुल गुनगुना रहा है ऐसे सिन्दूर पुष्पों से पूजा की। वहाँ दर्शन के लिए राजा भी आया। उसके हृदय में सन्देह उत्पन्न हो गया। वहाँ विपुलमति नाम के गणधर थे। उन्हें प्रणाम कर उसने पूछा—"अचेतन पत्थरों को पूजने और इनका स्नान करने से क्या ?"

घत्ता—तब मुनिनाथ कहते हैं—"जिन को जिस भाव से ध्यान करना चाहिए, उसी भाव से उनके बिम्ब को जल कुसुमांजलि देनी चाहिए।

(9)

देव न तो तरुवर में रहता है—न पंक में और न शिलातल में। वह तो पवित्र हृदय में रहता है। विशुद्ध, पुण्यपवित्र सम्यक्दर्शन, ज्ञान और चारित्र ही देवस्थान हैं। बुद्धि के सन्देह के विराम, तीनों लोकों को जाननेवाले, परिणाम और मिथ्या संयम के परित्याग से जिन की बुद्धि विराग से युक्त हो जाती है, जिन्होंने आवरण को नष्ट कर दिया है तथा संसार को छिन्न कर दिया है, ऐसे आदरणीय अरहन्त विगतराग होते हैं। वे कर्मरूपी कलंक के पटल को हटा देते हैं। जो अपने दर्शन, ज्ञान और चारित्र का विस्तार करना चाहता है, वह अवश्य जिनवर की जयकार करता है। भाव-विशुद्धि चित्त की शल्य को दूर कर देती है। भाव से

4. AP विणिहय°। 5. AP घय° 6 A चंपयमालूरहिं। 7. AP विमलमइ।

(9) 1. A तरुथले। 2. AP देवहो ठाणइं। 3. AP भावसुद्धु। 4. A छड्डइ।

भावसुद्धि[5] फेडइ मणसल्लइं भावसुद्धु णरु आणइ फुल्लइं।
जिणपडिबिंबइं ण्हाणइ पुज्जइ अप्पाणहु सुविसोहि समज्जइ।
चित्तविसुद्धिहि अणुदिणु सुज्झइ सच्चइं सत्त वि तच्चइं बुज्झइ।

घत्ता—जिणु जिणपडिबिंबु णउ तूसइ णउ कुप्पइ।
इह[6] एण मिसेण जीवें सुद्धि विढप्पइ ॥9॥

(10)

जइ वि बप्प जिणपडिम अचेयण जाणइ पुज्ज ण खंडण वेयण।
तो वि अंतरंगहु सुहकम्महु होइ हेउ परमागमधम्महु।
मुइय विलासिणि कालें छित्ती विडु चिंतइ मइं केव ण भुत्ती।
सुणहु भरइ[1] मइं केव ण खद्धी जालावलिजलणेणाउद्धी[2]।
झायइ मुणि अवियाणियणेयइ[3] किह तवचरणु ण चिण्णउं एयइ।
जइ वि अजीयउ[4] कामिणिकायउ तो वि भाउ अण्णण्णु जि जायउ।
गउ दुग्गइ बहुकामगहिल्लउ[5] जीहिंदिवसु मुउ सुणहुल्लउ।
रिसि संसारु घोरु णिज्झाइवि गउ सग्गहु दुक्किय विणिवाइवि।
अण्णत्तें[6] बहिरंगें विप्पइ भाउ दुभेएं कम्में छिप्पइ।
एहउ जाणिवि भाउ विसिट्ठहिं परिपालियजिणवरवयणिट्ठहिं[7]।

विशुद्ध मनुष्य पुष्प लाता है (चढ़ाता है), जिन प्रतिमा का अभिषेक और पूजन करता है और अपने लिए सुविशुद्धि अर्जित करता है। चित्त की विशुद्धि से प्रतिदिन शुद्धि मिलती है, और सातों सच्चे तत्त्वों का भी ज्ञान हो जाता है।

घत्ता—जिन भगवान् अथवा उनकी प्रतिमा न तो सन्तुष्ट होती है और न क्रुद्ध होती है। लेकिन इस प्रकार से इसके द्वारा जीव चित्त की शुद्धि का उपार्जन करता है।

(10)

हे सुभट ! यद्यपि जिन-प्रतिमा अचेतन है, वह पूजा और खण्डन की वेदना को नहीं जानती, तो भी वह अन्तरंग शुभ कर्म और परमागम तथा धर्म का कारण होती है। काल से स्पृष्ट होने पर बेचारी वेश्या मर जाती है। विट (विलासी) सोचता है—मैं उसका किसी प्रकार भोग न कर सका। कुत्ता सोचता है—मैं किसी प्रकार उसे खा नहीं सका, वह आग की ज्वालाओं में जलकर खाक हो गयी। मुनि सोचते हैं कि इस अज्ञानी ने तपश्चरण क्यों नहीं किया ? यद्यपि वेश्या के लिए शरीर जड़ है, तब भी, उससे भिन्न-भिन्न भाव उत्पन्न होते हैं। अत्यन्त काम से पागल कामी दुर्गति में गया। जिह्वा-इन्द्रिय के वशीभूत कुत्ता मर गया। मुनि घोर संसार को छोड़कर और पाप का नाश कर स्वर्ग गये। नानात्व और बहिरंग कर्म से भाव ग्रहण किया जाता है और वह शुभ, अशुभ दो प्रकार के कर्म से स्पृष्ट होता है। 'भाव' को इस प्रकार का जानकर, जिनवर के वचनों में निष्ठा का परिपालन करनेवाले विशिष्ट लोगों के द्वारा उन-उन वस्तुओं से भावना करनी

5. A उह एणा णियमणसुद्धि विढप्पइ।

(10) 1. A भणइ। 2. AP जालावलें जलणें रुद्धी। 3. A °वेयए। 4. A अजीविउ। 5. AP विडु काम°। 6. AP अण्णण्णें। 7. A °णय°।

तेहिं तेहिं वत्थुहिं भाविज्जइ　　जेहिं जेहिं सुहमइ उप्पज्जइ।
चित्ताचेयइं[8] ताइं अणेयइं　　जिणपडिबिंबमहारिसिभेयइं।
घत्ता—सुहकम्मरयाहं[9] [10]पावविविहवित्थारणु।
असुहम्मिहिं[11] होउ दव्वु णियंबिणिकारणु ॥10॥

(11)

कारणाहं[1] जगु भरियउ अच्छइ　　णाणवंतु णाणेण णियच्छइ।
झसरूवहं सालूरसरूवहं　　उंदररूवहं[2] अत्थि बहूयहं[3]।
जिह विविहहं पाहाणहं छित्तइं[4]　　तिह अरहंयजिणबिंबइं चित्तइं[5]।
रुंदपंचमंदरहं णियंबइं　　ससिरविबिंबइं करणिउरुंबइं।
भावणभवणइं कप्पविमाणइं　　अकयजिणाहिवपडिमाठाणइं।
जो वंदइ तहु पाउ पणासइ　　एव भडारउ गणहरु भासइ।
ता राएं णियहियवइ[6] भाविउं　　भाणुबिंबु पुरवरि काराविउं[7]।
णाणाविहमाणिक्कहिं जडियउं　　णं गयणाउ तं जि सइं पडियउं।
छत्तत्तयसुरविडविपलंबहिं　　सहियउं मणिमयजिणपडिबिंबहिं।
जोएप्पिणु गयणयलि दि[illegible]　　[illegible]।
एहु जि मग्गु [8]जगि जायउ रूढउ　　पत्थिवचरियाणुउ जणु मूढउ।

चाहिए जिनसे शुभबुद्धि पैदा होती हो। जिनप्रतिबिम्ब और महामुनियों के भेद से चेतन-अचेतन बहुत-से कारण हैं।

घत्ता—शुभ कर्म करनेवालों के लिए इस प्रकार द्रव्य का बहुविध विस्तार होता है। अशुभ कर्म करनेवालों के लिए द्रव्य (रूप) स्त्रीबन्ध का कारण होता है।

(11)

कारणों से यह संसार भरा हुआ है। ज्ञानी ज्ञान से उसे देख लेता है। मत्स्यरूप, मेंढकरूप, चूहारूप, आदि बहुरूपों के पत्थर, क्षेत्र आदि कारण हैं, उसी प्रकार अरहन्त जिन की विचित्र मूर्तियाँ कारण हैं। पाँच सुमेरु पर्वतों के नितम्ब, किरणों से सहित सूर्य-चन्द्र के बिम्ब भवनवासियों के विमान, कल्पविमान अकृत्रिम जिनवरों की प्रतिमा के स्थान हैं; इनकी जो वन्दना करता है उसका पाप नष्ट हो जाता है—ऐसा आदरणीय गणधर कहते हैं।" यह सुनकर राजा ने अपने मन में विचार किया कि मैं एक सूर्यबिम्ब का अपने नगर में निर्माण कराऊँगा। नाना प्रकार के मणियों से विजड़ित, जैसे सूर्य ही आकाश से स्वयं गिर पड़ा हो। तीन छत्रों, कल्पवृक्ष के पत्तों, मणिमय जिन प्रतिमाओं से सहित दिनेश्वर को आकाशतल में देखकर राजा ने उनका अर्घ उतारा। फिर, यह मार्ग जग में रूढ़ हो गया। मूर्ख जन राजा के चरित्र का अनुगमन करते रहते हैं।

---

8. A चिंतियथेयइं; P चिंतियचेयइं। 9. A सुहकम्मारयाह। 10. A एवं बहुविहधारणु; P एम विविहवित्थारणु। 11. AP असुहाह वि होइ दव्वु।

(11) 1. A कारणाइं। 2. AP उंदुर°। 3. AP पभूयहं। 4. A छेत्तहं। 5. A धुत्तहं। 6. A णियहियए। 7. A कराविउ। 8. 11. AP जाउ जगे

घत्ता—संसारु असारु कालें जंतें भाविउ।
रिसि सायरदत्तु[9] गुरु परमेट्ठि णिसेविउ[10] ॥11॥

(12)

चिंतामणि व विविहफलदाइणि मुणिवरु जायउ छंडिवि मेइणि।
तवियइं तिव्वतवेण णियंगइं अब्भसियइं एयारह अंगइं।
सोलह कारणाइं भावेप्पिणु तिण्णि वि सल्लइं उम्मूलेप्पिणु।
पंचेंदियकसायबलु पेल्लिवि खीरवणंतरालि[1] तणु घल्लिवि।
मुउ पाओवगमणमरणें मुणि पाणयकप्पि हूउ मणहरझुणि।
पवरच्छरकरचालियचामरु वीससमुद्दमियाउ महामरु।
जा पंचममहि तावहि घल्लइ णीसासु वि दसमासहिं[2] मेल्लइ।
वरिसहं वीससहासहिं भुंजइ णियतेएं[3] अच्छरमणु रंजइ[4]।
रयणिउ तिण्णि सरीरें तुंगउ जासु[5] ण रूवसमाणु अणंगउ।
पुणु कालावसाणि संपत्तइ एत्थु दीवि इह भारहखेत्तइ[6]।
कासीदेसि णयरि वाणारसि जहिं धवलहरहिं पह मेल्लइ ससि।

घत्ता—तहिं अत्थि णरिंदु विस्ससेणु गुणमंडिउ।
बंभादेवीए भुयलयाहिं अवरुंडिउ ॥12॥

घत्ता—समय बीतने पर उसे संसार असार लगा। उसने परमेष्ठी मुनि गुरु सागरदत्त की सेवा की।

(12)

वह चिन्तामणि के समान विविध फलों को देनेवाली धरती को छोड़कर मुनि हो गया। उन्होंने तीव्रतप से अपने शरीर को सन्तप्त किया, ग्यारह अंगों का अभ्यास किया। सोलहकारण भावनाओं की भावना कर, तीन शल्यों का उन्मूलन कर, पाँच इन्द्रियों और कषाय बल का दमन कर, क्षीर वन के भीतर शरीर का त्याग कर मृत्यु को प्राप्त हुए। प्रायोपगमन विधि से मरकर वह मुनि प्राणत स्वर्ग में देव हुए। सुन्दर ध्वनि से युक्त, जिस पर महान् अप्सराएँ अपने हाथ से चमर ढोरती हैं, वह बीस सागर की आयुवाला महान् अमर हुआ। जहाँ तक पाँचवीं भूमि (नरकभूमि) है, वहाँ तक का अवधिज्ञान होता है, निश्वास भी वह दस माह में लेता है। बीस हजार वर्ष में भोजन करता है। अपने तेज से अप्सराओं के मन का रंजन करता है। जिसका शरीर ऊँचाई में तीन हाथ है, जिसके रूप के समान कामदेव भी नहीं है। फिर, समय का अवसान आने पर इसी जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के काशीदेश में वाराणसी नगरी है, जहाँ के धवलगृहों के कारण चन्द्रमा अपनी प्रभा छोड़ देता है,

घत्ता—वहाँ गुणों से मण्डित राजा विश्वसेन है जो ब्रह्मादेवी की बाहुलताओं से आलिंगित है।

रूढ़ा। 9. AB सायरगुत्तु। 10. A पसेविउ।

(12) 1. A खीण धणंतरालि। 2. AP दह°। 3. AP सुण्णचउअंकदुअहहिं जुंजइ। 4. AP read after this : पडमासि वि मणेण आणंगउ। 5. AP omits this line. 6. AP add after this : दरिसियणाणम्मणे पवहंतए, अमरसहासरे णीरि वहंतए।

(13)

ता [1]वण्णियं तेण   धम्मं णियंतेण।
पुण्णं बुवाहेण[2]   सोहम्मणाहेण।
सग्गाउ [3]एहिंति   गब्भम्मि थाहिंति।
रूवेण रंभाइ   देवीइ बंभाइ।
भो पोमपत्तक्ख   तेवीसमो जक्ख।
लद्धावलोयस्स   सामी तिलोयस्स।
एवं अवेरस्स   सिट्ठं[4] कुबेरस्स।
चित्तम्मि मंतूण   ता तेण गंतूण।
मंदाणिलालाइं   उज्जाणलीलाइं।
सग्गग्गलीलाइं   सालाविसालाइं।
रयणंसुजालाइं   हिंडियमरालाइं।
तोरणदलालाइं   महुयररवालाइं।
पिहुपंगणालाइं[5]   सगवक्खजालाइं।
मणिमयकवाडाइं   णहलग्गकूडाइं।
पायडियकम्माइं   रम्माइं हम्माइं[6]।
णयरम्मि काऊण   पुण्णाइं [7]णाऊण।
वुट्ठो सुवण्णेहिं   कणियारवण्णेहिं[8]।
जक्खाहिवो ताम   छम्मास गय जाम।

(13)

पुण्यरूपी जल के वाहक, उस सौधर्म्य स्वर्ग के इन्द्र ने अच्छी तरह देखते हुए जान लिया और अजातशत्रु कुबेर से कहा—"हे कमलपत्रनेत्र यक्ष ! प्राप्त किया है अवलोकन जिसने ऐसे त्रिलोक के स्वामी तेईसवें तीर्थंकर स्वर्ग से आएँगे और रूप में रम्भा के समान ब्रह्मादेवी के गर्भ में स्थित होंगे।" तब उसने अपने मन में विचारकर और जाकर नगर में वास्तुकर्म को प्रकट करनेवाले सुन्दर प्रासाद बनाये, जिनमें मन्दपवन के झोकोंवाली उद्यान क्रीड़ाएँ थीं, स्वर्ग की अग्रलीलाओं को धारण करनेवाली विशाल शालाएँ थीं, रत्नकिरणों की तरह उज्ज्वल घूमते हंस थे, तोरणदलों का समूह, मधुकरों के शब्दों का आलाप, विशाल प्रांगण, गवाक्षजालों से युक्त, मणिमय किवाड़ोंवाले और उनके शिखर आकाश को छूनेवाले थे। इस प्रकार प्रासाद बनाकर एवं पुण्य जानकर उसने कनेर के रंग के स्वर्णों की वर्षा की; तब तक कि जब तक छह माह बीत गये।

(13) 1. AP जाणियं। 2. A पुण्णं विवाहेण। 3. AP पेहिंति। 4. P omits this foot 5. A पहु°। 6. A रम्माइं। 7. P लाऊण। 8. P कणयार°।

घत्ता—णिसि सुहुं [9]सुत्ताइ परिवड्ढियतणुछायइ।
सिविणावलि दिव्व[10] दीसइ जिणवरमायइ ॥13॥

(14)

अणिंदो गइंदो विसिंदो मइंदो।
महासोक्खखाणी सई माहवाणी।
भमंतालिसामं णवं पुप्फदामं।
हयंधारपंको पउण्णो ससंको।
तमंवित्तछेओ[1] रवी तिव्वतेओ।
झसाणं सुरम्मं घडाणं च जुम्मं।
कुसंलज्जणालं सरं सारणालं।
जलुल्लोलवंतो महंतो रसंतो।
महीअत्ततीरो पओही[2] गहीरो।
पसत्थं परूढं कुरंगारिवीढं[3]।
सुहाणं णिहाणं सुराणं विमाणं।
घरं सारसाणं सुकुंभीणसाणं।
गगणसामरूहो मणीणं समूहो।
वणंतं[4] डहंतो किसाणू जलंतो।

घत्ता—पुणु पडिबुद्धाइ जाइवि वइरिकियंतहु।
इय सिविणय ताइ पेक्खिवि अक्खिय कंतहु ॥14॥

घत्ता—रात्रि में सुखपूर्वक सोते हुए, बढ़ रही है शरीर की कान्ति जिनकी, ऐसी जिनवर की माँ ने स्वप्नावली देखी।

(14)

अनिन्द्य गजराज, श्रेष्ठ वृषभ, सिंह, अत्यन्त सुख की खान सती लक्ष्मी, मँडराते हुए भ्रमरों से युक्त पुष्पमाला, अन्धकार की कीचड़ को साफ करनेवाला पूर्ण चन्द्र, अन्धकार का नाशक दिव्य तेजवाला सूर्य, मत्स्यों और कलशों के सुन्दर जोड़े। जल के भीतर रहनेवाले नालों से युक्त कमलों का सरोवर, जल से चंचल और खूब गरजनेवाला तथा तटों से धरती को छूनेवाला गम्भीर समुद्र, प्रशस्त और उन्नत सिंहासन पीठ, सुहावना कोश, देवताओं की विमान लक्ष्मी से युक्त नागों का लोक, दिशाओं में व्याप्त किरणोंवाला, मणियों का समूह, वन को जलाती हुई और जलती हुई आग।

घत्ता—प्रातःकाल जागने पर शत्रु के लिए यम के समान अपने पति से भेंट कर उसने यह स्वप्नावली उन्हें बतायी।

9. AP सुत्तए। 10. A दिव्वा।

(14) 1. A तमीरंतछेओ; P तमीयंतछेओ। 2. A omits this foot; P समुद्दो गहीरो। 3. °पीढं। 4. A वणंतो।

(15)

तओ तेण उत्तं सुवत्ते पवित्ते हले वच्छले बालसारंगणेत्ते।
सुओ तुज्झ होही णिवंदो जिणिंदो खगाहिंदभूमिंददेविंदवंदो।
मए भासियं लोयसारं विसुद्धे इमं दंसणाणं फलं जाण मुद्धे।
तओ तम्मि वइसाहमासम्मि आए दुइज्जे दिणे कण्हपक्खस्स जाए।
विसाहक्खरिक्खे तमिल्लीविरामे[1] पियालावलीलारसुप्पण्णकामे।
मउम्मत्तमायंगलीलागईए सिरीए हिरीए[2] दिहीए मईए।
अलं कंतिकित्तीहिं संसोहियंगे थिओ गब्भवासे महापुण्णसंगे।
गइंदस्स रूवेण देवाहिदेवो अतावो असावो अगाओ अलेवो।
सुरिंदेहिं चंदेहिं संथुव्वमाणो तिलोयं तिणाणेहिं संजाणमाणो[3]।
दहट्ठेव पक्खा मही दिण्णदिट्ठी[4] कया जक्खराएण माणिक्कविट्ठी[5]।
पुणो कालपक्खे पडंतम्मि सीए हुओ पूसमासम्मि एयारसीए।
थिए दिम्मुहे णीरए णिव्वियारे[6] वरे वाउजोए जणाणंदसारे[7]।

घत्ता—उप्पण्णइ णाहि कंपिय सुरवरपायव।
णाणाकप्पेसु संजाया[8] घंटारव ॥15॥

(15)

यह सुनकर वह बोले—हे सुन्दर वृत्तान्तवाली, पवित्र वत्सले ! बाल हरिण के समान आँखोंवाली ! तुम्हारा पुत्र नरश्रेष्ठ जिनेन्द्र विद्याधरों, नागेन्द्रों, मनुष्येन्द्रों और देवेन्द्रों के द्वारा वन्द्य होगा। हे विशुद्ध मुग्धे ! मेरे द्वारा कहा गया स्वप्नदर्शनों का यह लोकश्रेष्ठ फल जानो। उसी समय वैशाख माह के आने पर कृष्णपक्ष की द्वितीया के दिन विशाखा नक्षत्र में, प्रियालाप और लीला रस से जिसमें काम उत्पन्न हो रहा है, रात्रि के ऐसे अन्तिम प्रहर में कोमल लेकिन मतवाले गज की लीला गतिवाली, श्री, ह्री, धृति, मति, समर्थ कान्ति और कीर्ति देवियों के द्वारा संशोधित अंगवाले, महापुण्य से युक्त, गर्भवास में गजेन्द्र के रूप में स्थित हो गये। वे देवाधिदेव जो ताप, शाप और रोग रहित, निर्मल, सुरेन्द्र और चन्द्र के द्वारा स्तूयमान, तीन ज्ञानों से त्रिलोक के मान को जाननेवाले हैं। अठारह पक्ष तक धरती भाग्यशाली थी, (क्योंकि) यक्षराज ने माणिक्यों की वृष्टि की थी। फिर, पूस माह आने पर कृष्णपक्ष की एकादशी के दिन जब दिशामुख निर्मल था, ऐसे निर्विकार जनानन्ददायक श्रेष्ठ विशाखा नक्षत्र में वह उत्पन्न हुए।

घत्ता—स्वामी के उत्पन्न होने पर देवों के कल्पवृक्ष काँप उठे। नाना कल्पों में घण्टानाद होने लगा।

(15) 1. K तिमल्लीविरामे but gloss रात्रिः। 2. A हिरीए मईबुद्धिईए; P हिरीए विहीए मईए। 3. A संजायमाणो। 4. P दिण्णतुट्ठी। 5. P °वुट्ठी। 6. P णिव्वयारे। 7. AP जणाणंदयारे। 8. P सइं जाया।

(16)

आसणं कंपियं सग्गिणा[1] जंपियं।
देवदेवो हुओ बंभदेवीसुओ।
चारुसंचियसमो अज्जु तेवीसमो।
इय चवंतेण से झाइयं[2] माणसे।
अमरवरवारणो झत्ति अइरावणो।
पत्तओ पोढओ तम्मि आरूढओ।
बहुमुहो[3] सयमहो सुरबुहो[4] बहुमुहो।
अवि य देवी मई[5] वारुणामी[6] सई।
हंसिणी[7] सारसी उव्वसी माणसी।
गोमिणी पोमिणी रामिणी सामिणी।
भामिणी[8] कामिणी धारिणी हारिणी।
वम्महायारिणी रोहिणी खोहणी[9]।
माणणी[10] मोहणी।
पेसला[11] पल्लवी चंदिणी[12] माहवी।
णंदिणी णाइणी मेत्ति[13] इंदाइणी।
उज्जला पत्तला कोमला सामला।
विज्जुला वच्छला मंगला पिंगला।
सतिलया सविलया[14] सपुलया सकिलया[15]।
सरलिया तरलिया सुललिया लवालिया।
कंति[16] कित्ती रसा लच्छि णीरंजसा।

(16)

आसन काँप उठा, इन्द्र उचक पड़ा। ब्रह्मादेवी के पुत्र देवाधिदेव सुन्दर, संचित उपशम भाव के समान तेईसवें तीर्थंकर आज हुए हैं, इस प्रकार कहते हुए देवताओं ने मन में उनका ध्यान किया। अमरों का श्रेष्ठ गज प्रौढ़ ऐरावत शीघ्र आ गया। बहुमुखी इन्द्र उस पर शीघ्र आरूढ़ हो गया और आदरणीय बृहस्पति भी। देवी सरस्वती, वारुणी नाम की इन्द्राणी और सरस हंसिनी, उर्वशी, मानसी, गोमिनी, पद्मिनी, रामिणी, स्वामिनी, भामिनी, कामिनी, धारिणी, हारिणी, मन्मथकारिणी, रोहिणी, क्षोभिणी, मानिनी, मोहिनी, पेशला, पल्लवी, चाँदनी, माधवी, नन्दिनी, नागिनी, मित्रा, इन्द्रायणी, उज्ज्वला, पत्रला, कोमला, श्यामला, विद्युत्-वत्सला, मंगला और पिंगला। तिलक, पुलक, वलय और क्रीड़ा के साथ सरला, तरला, सुललिता और लवलिका, कान्ति, कीर्ति, रसा, लक्ष्मी और नीलंजसा—

(16) 1. P सग्गिणा। 2. AP झाइओ। 3. A महमहो सयमहो। 4. AP सुविबुहो बहुमुहो। 5. AP सई। 6. AP वारुणी मीणई। 7. K हिंसिणी। 8. AP भगिणी। 9. AP खोहिणी। 10. A माणिणी। 11. A पोसला। 12. A चंदणी। 13. A मित्ति मंदाइणी; P मत्ति मंदाइणी; 14. P सवलया। 15. AP किसलया। 16. A कित्ति संती रसा; P कित्ति संती रिसा।

घत्ता—इय बहुणामाहिं सुरवरणारिहिं सेविउ।
संचल्लिउ इंदु भणु किर केण ण भाविउ ॥16॥

(17)

पवणुद्धुयणेयविहवण्णचिंधेहिं[1] [2]महिघित्तकुसुमंजलीसुरहिगंधेहिं।
उद्धरियउल्लोवसेयायवत्तेहिं अच्छरकरुक्खित्तकल्लाणवत्तेहिं[3]।
गंधव्वगिज्जंतमंगलणिणाएहिं दिसिविदिसिदीसंतचउसुरणिकाएहिं।
कारंडभेरंडमणहरमऊरेहिं[4] णाणाविमाणेहिं विरसंततूरेहिं।
संचलियचलधवलचामरविलासेहिं वंदारयाणंदकयमंदघोसेहिं[5]।
गंतूण[6] वाणारसिं ते पुरं तेण गयबाह जय णाह जय जिण भणंतेण।
मायाइ मायासिसुं[7] झत्ति दाऊण देवो जिणिंदो णियंकम्मि[8] काऊण।
चंदक्कधामाहिं[9] उद्धं चरंतेण सिग्घं णिओ मंदरं पुण्णवंतेण।
सक्केण अहिसेयजोग्गम्मि[10] दिव्वम्मि णिहिओ सिलावीढसीहासणग्गम्मि।
सियसलिलधाराहि गुरुमंतगुरुएण[11] गंधेण पुप्फेण दिव्वेण चरुएण।
पत्ताइं भरिऊण[12] [13]भणियं [14]चउद्दिसह जिणण्हवणकालम्मि[15] एत्थेत्थ उवविसह।
हे इंद सिहि काल हे णेरिदीराय हे वरुण [16]हयमरण [17]चलगवण हे वाय।
हे हे कुबेरंक ईसाण धरणिंद रुइरुंद हे चंद हे सूर साणंद।

घत्ता—इस प्रकार अनेक नामवाली देवांगनाओं द्वारा सेवित वह (इन्द्र) चला। बताओ चन्द्रमा किसे अच्छा नहीं लगता ?

(17)

हवा में उड़ते हुए अनेक प्रकार के रंगों के ध्वजों, धरती पर गिरी हुई कुसमांजलियों की सुरभिगन्धों, धारण किये हुए चन्द्रतुल्य श्वेत आतपत्रों, अप्सराओं के हाथों से छोड़े गये मंगलद्रव्यों, गन्धर्वों के द्वारा गाये मंगलनिनादों, दिशा-विदिशा में दिखाई देते हुए चार प्रकार के देव-निकायों, चक्रवाक-भेरुण्ड-सुन्दर मयूरों, अनेक विमानों, बजते हुए तूर्यों, चलते हुए चंचल धवल चमरों के विलासों और देवों के द्वारा आनन्द में किये गये उद्घोषों के साथ वाराणसी नगरी में जाकर बाधा रहित 'हे नाथ ! जय हो हे जिन ! जय हो' कहते हुए, उसने माता के लिए माया शिशु शीघ्र देकर, जिनेन्द्रदेव को अपनी गोद में रखकर, चन्द्र और सूर्य के स्थानों से ऊपर जाता हुआ पुण्यवन्त इन्द्र उन्हें शीघ्र सुमेरु पर्वत पर ले गया। इन्द्र ने उन्हें अभिषेक के योग्य दिव्य शिलापीठ के सिंहासन के अग्रभाग पर विराजमान कर दिया। उसने कहा—श्वेतसलिल धारा, गुरुमन्त्र से गुरु, गन्ध, पुष्प, दिव्य और नैवेद्य से पात्रों को भरकर, जिनवर के अभिषेक के समय, हे कुबेरांक ! ईशान, धरणेन्द्र, कान्ति से सुन्दर चन्द्र, हे सानन्द सूर्य ! आप लोग चारों दिशाओं में यहाँ, यहाँ बैठ जाएँ।

(17) 1. AP °णेयबहुधण्ण°। 2. A महुघित्त°। 3. AP कल्लाणवत्तेहिं। 4. AP °भेरुंड°। 5. A °कयघंद°। 6. A गंतूण तं वाणरासिं पुरं तेण; P गंतूण तं वाणरसिं ते पुरिं तेण। 7. AP मायासिसू। 8. A णियं कम्म काउण। 9. A चंदक्कधम्मेहिं। 10. AP °जोगम्मि लग्गम्मि। 11. AP °गरुएण। 12. P भणिऊण। 13. A भमियं। 14. AP च दिहि दिसहं। 15. AP °ण्हवणयालम्मि। 16. P हयमरुण। 17. AP चलगमण।

घत्ता—अहवा[18] सयल थुणंत पणवह पय जिणरायहु[19]।
गिण्हह जण्णविहाउ पुण्णकलस उच्चायहु[20] ॥17॥

(18)

सव्वदोसवज्जिओ सव्वदेवपुज्जिओ।
सव्ववाइदूसणो सव्वलोयभूसणो।
सव्वकम्मणासणो सव्वदिट्ठिसासणो।
[1]भव्वपोमणेसरो ण्हाणिओ[2] जिणेसरो।
तावभावहारिणा सीयखीरवारिणा।
कुंकुमेण पिंजरं सित्तसाणुकुंजरं।
विंतरेहिं सेवियं भावणेहिं भावियं।
जोइसेहिं णंदियं कप्पवासिवंदियं।
खेयरेहिं इच्छियं सीसए पडिच्छियं।
चारणेहिं भण्णियं जक्खिणीहिं वण्णियं।
पक्खिणीहिं माणियं जाव[3] ण्हाणवाणियं।
देवदारुवासियं चंदयंतभासियं।
मंदरस्स कंदरे दुच्चरम्मि कक्करे।
किंणरीण संतियं धोयवत्तपत्तियं[4]।
घत्ता—सिंचिवि अंचिवि थुइवयणहिं संभासिउ।
पहु पासविणासु पासु[5] भणेवि पयासिउ ॥18॥

घत्ता—अथवा आप सब लोग स्तुति करते हुए, जिनराज के चरणों में प्रणाम करें। यज्ञ-विभाग (पूजा-सामग्री) को ग्रहण करें और पुण्य-कलश उठा लें।

(18)

सभी दोषों से रहित, सब देवों से पूजित, सभी मिथ्यावादियों के दूषण, सर्वलोकभूषण, समस्त कर्मों को नाश करनेवाले, सभी दृष्टियों का शासन करनेवाले, भव्यरूपी कमलों के लिए सूर्य के समान और सन्तापभाव का हरण करनेवाले जिनेश्वर का शीतल क्षीरजल से अभिषेक किया गया। इस बीच, स्नान का जल, जो कि केशर से पीला था, जिसने तटस्थ गजों को अभिषिक्त किया था, व्यंतरों से सेवित, भवनवासियों से भावित, ज्योतिषदेवों से नन्दित, कल्पवासियों से वन्दित, विद्याधरों से अभिलषित शिष्यों से इच्छित चारणों के द्वारा मान्य, यक्षिणियों के द्वारा वर्णनीय, पक्षिणियों के द्वारा मान्य, देवदारु वृक्षों से सुवासित और चन्द्रमा की कान्ति के समान भास्वर था, वह मन्दराचल की अगम्य कठोर गुफा में किन्नरियों के मुखों की पत्ररचना को धोनेवाला था।

घत्ता—इस प्रकार अभिषेक कर, पूजा कर, स्तुतिवचनों से सम्भाषण किया और प्रभु को 'पाप का नाश करनेवाला पार्श्व' कहकर प्रकाशित किया (उनका नाम पार्श्व रखा)।

---

18. AP आवह। 19. AP °रायहो। 20. AP उच्चायहो।

(18) 1. A सव्वपोम°। 2. AP ण्हाइओ। 3. AP जाइ। 4. A केयपत्तयंगियं; P धोयपत्तपंतियं।

(19)

घरचूडामणिविलिहियगयणं   माणिणिघणथणविलसियमयणं।
विहलियणरदुहहरधणपयरं[1]   अइऊणं हरिणा तं णयरं।
बंभादेविइ दिण्णो ईसो   देवो पासो सो णिद्दोसो।
अहिणवणवरसभावविसट्टं   सुरवरणाहो काउं णट्टं।
संतं दंतं भुवणमहंतं   पुणु णमिऊणं दुरियकयंतं।
सधओ ससुरो सुयमियमग्गं[2]   सगओ विगओ सक्को सग्गं।
सुण्णपंचभयगुत्तिवसूणं[3]   वासाणं माणेण गुरूणं।
पत्ताणं परमं णिव्वाणं   वोलीणाणं णेमिजिणाणं।
तक्कालासियवरिससयाऊ   रूवरिद्धिणिज्जियझसकेऊ।
वण्णेणुज्जलमरगयसामो   वियलियराओ उज्झियवामो[4]।
देहेणुण्णयणवकरमाणो   वइरिणि मित्ते णिच्चसमाणो।
सपसमपसरणुपसमियमारो[5]   वुड्ढिं[6] पत्तो पासकुमारो।
पायपोमपाडियसुरराओ   सोलहवारिसिओ संजाओ।
तिवसवरेहिं समउं[7] कीलंतो   एक्कसिंस दिवसे विहरंतो।

(19)

जिनके गृहशिखरों से आकाश स्पृष्ट है, जिनमें मानिनी स्त्रियों के सघन स्तनों से कामदेव विलसित हैं और जो निर्धन मनुष्यों के दुःखों को हरण करनेवाले धन से प्रचुर है, ऐसे उस नगर (वाराणसी) में आकर, इन्द्र ने उन निर्दोष देव पार्श्व को ब्रह्मादेवी के लिए दे दिया। सुरवरनाथ (इन्द्र) अभिनव नवरस और भाव से परिपूर्ण नृत्य कर और शान्त-दान्त भुवन में महान् पापों के लिए कृतान्त उन्हें पुनः नमस्कार कर, अपने ध्वजों और देवों के साथ जिसका मार्ग श्रुत के आश्रित है, ऐसे स्वर्ग के लिए स्वयं चला गया। नेमिनाथ के निर्वाण प्राप्त कर लेने पर, तेरासी हजार सात सौ पचास वर्षों के मान का समय बीतने पर पार्श्वनाथ हुए थे। इसी काल में सन्निहित उनकी आयु सौ साल की थी। वह अपनी रूप-ऋद्धि से कामदेव को जीतनेवाले थे। रंग में वह उज्ज्वल मरकत की तरह श्याम थे—विगलित राग और काम से शून्य। नौ हाथ ऊँचा उनका शरीर था। शत्रु और मित्र में नित्य समानभाव रखते थे। अपने प्रशमभाव के प्रसार से उन्होंने कामदेव को शान्त कर दिया था। पार्श्व कुमार वृद्धि को प्राप्त हुए। इन्द्र को अपने चरणों में झुकानेवाले वे सोलह वर्ष के हो गये। एक दिन वे देवों के साथ खेलते हुए विहार कर रहे थे।

5. AP पासु जि भणेवि।

(19) 1. AP °जणदुह°। 2. AP सुमरियमग्गं। 3. AP सुण्णु। 4. AP उज्झियकामो। 5. A उवसमपसरण। 6. AP वुड्ढिं। 7. AP समं।

घत्ता—पुव्विल्लउ वइरि[8] पुणरवि विहिसंजोइउ।
णियजणणीताउ तावसु तेण पलोइउ ॥19॥

(20)

महिपालपुरणाहु[1] महिपालु थिरबाहु।
महिपालु णामेण परिचत्तकामेण।
उप्पण्णसोएण किं तउ किउ एण।
दिव्वं[2] तवं चरइ गोरीपियं भरइ।
पंचाणलं सहइ वरगारवं[3] वहइ।
णाओ[4] कुमारेण तेल्लोक्कसारेण।
कयचारुकम्मेण[5] गयजम्मजम्मेण[6]।
सत्थेण[7] दारियउ हउं एण मारियउ।
इय सरिवि मज्झत्थु थिउ मुणिवि परमत्थु।
परमेट्ठि समचित्तु जिह सत्तु तिह मित्तु।
सिसु[8] णियइ तणु वित्तु पालंतु [9]सवसित्तु।
ता तवसि तहु कुद्धु ण[10] वि णवइ मइं मुद्धु।
कुलवुड्ढु[11] मयवंतु दोहिंति[12] मयवंतु।
घत्ता—इंधणहु[13] णिमित्तु तरु फोडंतु[14] कुढारें।
हियमियवयणेण तावसु भणिउ कुमारें ॥20॥

घत्ता—विधाता ने पहले के वैरी को फिर मिला दिया। अपनी माता के निकट तापस को उन्होंने देखा।

(20)

स्थिरभुज वह महीपाल नाम का राजा महीपालपुर का था। काम का त्याग करनेवाले, शोक से संतप्त (पत्नी मर जाने के कारण) इसने क्या तप किया ? यह दिव्य तप करता है, गौरीप्रिय (शिव) की याद करता है, पंचाग्नि सहता है, श्रेष्ठ गौरव को धारण करता है। त्रिलोक में श्रेष्ठ सुन्दरकर्म करनेवाले कुमार ने जान लिया कि गतजन्म में जनमे इसने शस्त्र से विदीर्ण कर मुझे मार दिया था। —यह स्मरण कर वह मध्यस्थ हो गये और परमार्थ जानकर, परमेष्ठी समचित्त, जिस प्रकार शत्रु, उसी प्रकार मित्र। बालक शरीर और धन को देखता है और स्ववशित्व का पालन करता है। तपस्वी उस पर क्रुद्ध होता है कि यह मूर्ख मुझे नमस्कार नहीं करता। मैं कुलवृद्ध और ऐश्वर्यसम्पन्न हूँ। इस प्रकार अहंकार से युक्त वह खेद करता है।

घत्ता—ईंधन के लिए कुठार से वृक्ष को फाड़ रहे तापस से हितमित वचनवाले कुमार ने कहा—

8. AP वइरि इह पुणरवि संजोइउ।

(20) 1. AP कंताविओएण। 2. AP तिव्वं। 3. A महुगारवं; P वयगारवं। 4. A णायो; P णाउ। 5. AP °कम्मेसु। 6. AP °जम्मेसु। 7. AP सत्थेहिं। 8. AP ससु। 9. A समचित्तु। 10. A तउ तवइ तउ मुद्धु; P णउ णवइ महमुद्धु। 11. A कुलवुड्ढु। 12. AP दोहिंति। 13. P इंधणहो सित्तु। 14. AP फाडंतु।

(21)

भो भो तावस तरु म हणु म हणु एत्थच्छइ कोडरि णायमिहुणु।
ता भणइ तवसि किं तुज्झ णाणु किं तुहुं हरि हरु चउवयणु भाणु।
इय भणिवि तेण तहिं दिण्णु घाउ संछिण्णउ सहुं णाइणिइ णाउ।
जिणवयणें बिहिं मि समाहि जाय को पावइ धम्महु तणिय छाय।
जायाइं बे वि भवणंतवासि माणिक्ककिरणकब्बुरदिसासि[1]।
धरणिंदु देउ पोमावइ त्ति देवय णामें[2] पच्चक्खकित्ति।
जाणियबहुसमयवियारसारु पभणइ सुभउमु[3] णामें कुमारु।
भो पासणाह सुरविहियसेव अण्णाणिय तावस होंति देव।
तुह पडिकूलहं णिप्फलु किलेसु तं णिसुणिवि गउ णरवइणिवासु।
अण्णाणभाउ गाढयरु धरिवि कुच्छियमुणि तेत्थु ससल्लु मरिवि।
जायउ जोइससुरु संवरक्खु[4] कमलाणणु वरणवकमलचक्खु।
कुंअरत्तें जायउ[5] हयमयासु वरिसाइं तीस विगयाइं तासु।
उज्झाणाहें भत्तिल्लएण जयसेणें गुणगणिल्लएण।
घत्ता—तहिं अवसरि तेत्थु सुरगुरुमंतिसरूवउ।
पाहुडइं [6]लहिवि पेसिउ देवहु दूवउ[7] ॥21॥

(21)

हे हे तापस ! वृक्ष को मत काटो, मत काटो। इसके कोटर में यहाँ नाग का जोड़ा है।" तब वह तापस कहता है—"तुम्हारा क्या ज्ञान ? क्या तू हरि, हर, ब्रह्मा या सूर्य है ?" यह कहकर उसने लकड़ी पर आघात किया। उसके साथ नाग और नागिन कट गये। जिनवर के वचनों से दोनों ने समाधिमरण किया। धर्म की छाया कौन पा सकता है ? वे दोनों, जिसमें माणिक्यों की किरणों से दिशामुख चित्रविचित्र हैं ऐसे, भवनवासी स्वर्ग में उत्पन्न हुए, धरणेन्द्र देव और पद्मावती देवी, जिनके नाम की कीर्ति प्रख्यात है। ज्ञात किया है बहुत से शास्त्रों के विचारसार को जिसने, ऐसा सुभौम नाम का कुमार कहता है—"देवों के द्वारा सेवित हे पार्श्वकुमार देव ! लोग अज्ञान से (बिना जाने-समझे) तापस हो जाते हैं। प्रतिकूल लोगों में तुम्हारा क्लेश व्यर्थ है।" यह सुनकर कुमार नरपति-निवास चले गये। अपने प्रगाढ़तर अज्ञान भाव को धारण करता हुआ वह (तापस) खोटा मुनि हुआ। वहाँ शल्यसहित मरकर, संवर नाम का ज्योतिषदेव हुआ, कमल के समान मुखवाला और श्रेष्ठ नवकमल के समान आँखोंवाला। अहंकार का नाश करनेवाले उन पार्श्वकुमार की कुमारावस्था के तीस वर्ष बीत गये। उस अवसर पर अयोध्या के राजा, गुणगण के घर जयसेन ने भक्तिभाव से—

घत्ता—बृहस्पति मन्त्री के स्वरूपवाला दूत, उपहार लेकर देव के पास भेजा।

(21) 1. A °कब्बुरदसासे। 2. AP णावइ। 3. AP सुभउ 4. A संवरुक्खु। 5. AP जइयहूं। 6. AP लएवि। 7. AP दूयउ।

(22)

दूएण भणिउं जय तित्थणाह जय सामिसाल [1]वयसलिलवाह।
तुह पय पणवइ जयसेणराउ पइं जेहउ होंतउ भरहताउ[2]।
चिरु एवहिं तुहुं[3] जय उग्गवंस धयवडभडवंदियरायहंस।
ता पुज्जिवि मंतिवि मुक्कु तुरिउ देवें णियहियवइ चरिउं सरिउं।
हउं आसि कालि गयवरु अणज्जु[4] एवहिं जायउ पुज्जहं मि पुज्जु।
जिणतवसामत्थें दूसहेण दुज्जयपंचिंदियणिम्महेण।
किज्जइ[5] तउ सिज्झइ जेण मोक्खु संसारे ण दीसइ किं पि सोक्खु।
इय चिंतवंतु कयभत्तिएहिं[6] पडिसंबोहिउ लोयंतिएहिं।
पुणु ण्हाणिउ[7] पुज्जिउ सयमहेण धरणें वरुणें ससिणा गहेण।
विमलहि सिवियहि आरूढु देउ आसंकिउ हियवइ मयरकेउ।
सियपक्खि[8] पूसि एयारसीहि पुव्वण्हइ पवरुत्तरदिसीहि[9]।
थाएप्पिणु णामें[10] संमुहेण छणयंदरुंदमंडलमुहेण।
आसत्थवणंतरि लइय दिक्ख अट्ठमउववासें परम सिक्ख।

घत्ता—ओलंबियपाणि जोयायारें तिक्खहि।
पइसइ परमेट्ठि गुम्मखेडु पुरु भिक्खहि ॥22॥

(22)

दूत ने कहा—"हे तीर्थनाथ ! आपकी जय हो, व्रतरूपी जल के प्रवाह हे स्वामिश्रेष्ठ ! आपकी जय हो। राजा जयसेन आपके चरणों में प्रणाम करता है। तुम्हारे जैसे पहले भरत चाचा थे। इस समय तुम हो। हे उग्रवंश ! ध्वजपटों और भटों के द्वारा वन्दित राजश्रेष्ठ आपकी जय हो।" सत्कार कर और मन्त्रणा कर, उन्होंने दूत को तुरन्त मुक्त कर दिया। देव को अपने मन में अपना पूर्वचरित्र स्मरण हो आया। मैं पूर्वभव में एक भयंकर हाथी था। इस समय पूज्यों में पूज्य हो गया हूँ। दुर्जय पाँच इन्द्रियों का नाश करनेवाली असह्य जिनतप की सामर्थ्य से तप किया जाए, जिससे मोक्ष सिद्ध हो। संसार में कोई सुख दिखाई नहीं देता। यह विचार करते हुए भक्ति करनेवाले लौकांतिक देवों ने आकर उन्हें प्रतिसम्बोधित किया। फिर इन्द्र, धरणेन्द्र, वरुण और चन्द्रग्रह ने उनका अभिषेक और पूजा की। देव पवित्र शिविका (पालकी) में बैठ गये। कामदेव अपने मन में आशंकित हो उठा। पूस माह के कृष्णपक्ष की एकादशी के पूर्वाद्ध में प्रवर उत्तरानक्षत्र में, पूर्णचन्द्र के समान सुन्दरमुखवाले उन्होंने सम्मुख स्थित होकर, अश्ववन के भीतर दीक्षा ग्रहण कर ली और आठ उपवासवाली परम शिक्षा ली।

घत्ता—योगाकार मुद्रा में हाथ ऊपर किये हुए तीव्र भूख के कारण परमेष्ठी गुल्मखेड़ नगर में प्रवेश करते हैं—भिक्षा के लिए।

(22) 1. AP दयसलिल°। 2. A भरहराउ। 3. P जय तुहुं। 4. A अपुज्जु। 5. A विज्जइ तउ सिज्जइ। 6. A कयसंतिएहिं। 7. P ण्हाइउ। 8. AP अंधारे पूसे। 9. A अवरुत्तर। 10. AP णाहें।

(23)

कयपंचचोज्जाइ सुद्धाइ [1]चज्जाइ तहिं बंभराएण[2] दिण्णाइ भिक्खाइ।
छम्मत्थकालेण चत्तारि मासाइं गलियाइं चित्तंतरुत्तिण्णदोसाइं[3]।
दिक्खावणे पावरासीविणासेण[4] जाइवि[5] थिओ सामि अट्ठोववासेण।
दित्तंगसत्तम्मि सत्ताहमेरम्मि णवदेवदारुयलि[6] गुरुयरवियारम्मि[7]।
जोईसरो सुक्कझाणासिओ जत्थ गयणंगणे संवरें[8] जोइयं तत्थ।
ता तस्स मरुमग्गमग्गम्मि दुरियल्लि संचलइ ण विमाणु जिणणाहउवरिल्लि।
ता तेण रूसेवि सहसा मयंधेण संभरिउ चिरजम्मु वइराणुबंधेण[9]।
तडिवडणरवफुडियमहिदसदिसासेहिं[10] आहंडलुद्दंडकोदंडभूसेहिं।
णीलेहिं हरगलतमालाहदेहेहिं[11] गज्जंतवरिसंतभीमेहिं मेहेहिं।
गयणयलु धरणियलु जलु थलु वि जलभरिउं
विहडिउ ण पासस्स पिसुणेण थिरु [12]चडिउं।
पुणरवि[13] रिसी रुद्ध मुहघित्तजालेहिं [14]भंगुरियभालेहिं दाढाकरालेहिं।
पिंगुद्धकेसेहिं मुक्कट्टहासेहिं[15] किलिकिलिकिलंतेहिं खयकालवेसेहिं।
हण हणु भणंतेहिं[16] बेयालसंघेहिं रिंछेहिं सरहेहिं सीहेहिं वग्घेहिं।
वावल्लभल्लेहिं झसभिंडिमालेहिं कणएहिं कुंतेहिं करवालसूलेहिं[17]।

(23)

वहाँ पर ब्रह्मराजा के द्वारा दी गयी भिक्षा से पाँच आश्चर्य प्रकट हुए। फिर, छद्मस्थकाल में उनके चार माह बीत गये और वे अपने मन के दोषों को पार कर गये। फिर, स्वामी दीक्षावन में जाकर पापों का नाश करनेवाले आठ उपवास ग्रहण कर स्थित हो गये। दीप्त अंगोंवाले प्राणियों से युक्त उस वन में सात दिन की मर्यादा लेकर नव देवदार वृक्ष के नीचे, जहाँ वह योगीश्वर गुरुतर विचारवाले शुक्लध्यान में लीन थे, आकाशमार्ग से संवरदेव ने वहीं देखा। तब कठिन आकाशमार्ग में जिननाथ के ऊपर उसका विमान नहीं चला। उस मदान्ध ने सहसा क्रुद्ध होकर वैर के अनुबन्ध से अपने पूर्वजन्म की याद की। उसने, बिजली के गिरने के शब्द से मही तथा दसों दिशाओं को विदीर्ण करनेवाले, इन्द्र के उद्दण्ड धनुषों से भूषित, काले हरकल और तमाल के समान शरीरवाले, गरजने और बरसने के कारण भयंकर मेघों से आकाशतल, धरतीतल सब-कुछ जल से भर दिया। लेकिन वह दुष्ट, पार्श्वनाथ का चढ़ा हुआ स्थिर ध्यान खण्डित नहीं कर सका। फिर भी, उसने मुँह से छोड़ी गयी ज्वालाओं तथा दृढ़ कराल भंगुरित भालों, पीले उड़ते हुए केशों, मुक्त अट्टहासों, किलकिल करते हुए क्षयकाल के रूपों, मारो-मारो कह रहे बेताल-समूहों, रीछों, शरभों, सिंहों, बाघों, वावल्ल भालों, झस, भिन्दिमालों, कनकों, कुन्तों, तलवारों, सूलों से मुनि का अवरोध किया। उस दीन-हीन

(23) 1. AP सत्थाए। 2. AP धण्णराएण। 3. A °तरुग्गिण्णदोसाइं। 4. A पावरासी°। 5. AP जोए थिओ। 6. A °देवदारुवणे। 7. AP गरुअयरथिरम्मि। 8. AP संवरो जाइ जा तत्थ। 9. P वइराणबंधेण। 10. AP °फुरिय°। 11. A °तमालालिदेहेहिं। 12. AP चरिउ। 13. AP पुणुरवि। 14. A भंगुरिय°। 15. P मक्कट्टहासेहिं। 16. P adds णिम्मंसजंघेहिं after भणंतेहिं। 17. AP add after this दिण्ण तस उवसग्गु किउ कूरकम्मेण (A कूरकम्मेहिं)।

हीणेण दीणेण विद्धत्थधम्मेण देवस्स किं कीरए पावयम्मेण।
सढकमढदढकढिणभुयदंडतुलिएण[18] पुणरवि सिलालेण सेलेण बलिएण[19]।
थरहरिय महि सयल धरणिंदु णीसरिउ फणिफणाकडप्पेण परमेट्ठि परिवरिउ।
घत्ता—पोमावइयाइ देविइ मणिविप्फुरियउं।
ससिबिंबसमाणु कुलिसछत्तु तहु धरियउं ॥23॥

(24)

आऊरिउ देवें सुक्कझाणु उप्पाइउ केवलु दिव्वणाणु।
संदरिसिउ रिउ सामत्थु भग्गु दुम्मोहें सहुं णिज्जिउ अणंगु।
पढमिल्लमासतमकसणपक्खि[1] पडिवयदिणि[2] पवरविसाहरिक्खि।
केवलि पुज्जिउ सुरपुंगमेहिं इच्छियमोक्खालयसंगमेहिं[3]।
सम्मत्तु लइउ खलसंवरेण उवसंतें ववगयमच्छरेण।
तव्वणवासिहिं संपत्त वत्त इसि जायइं तवसिहिं सयइं सत्त।
दह गणहर सवणसयंभुआइ तिसयइं पण्णास जि पुव्ववाइ[4]।
सिक्खुयहं [5]ससिक्खइं णवसयाइं सावहिहिं ताइं चउदह [6]गयाइं।
घत्ता—केवलिहिं सहासु तेत्तिय विक्किरियायर।
भयसय पण्णास मुणिवर मणपज्जवधर ॥24॥

विध्वस्तधर्म, पापकर्मी के द्वारा देव का क्या बिगाड़ किया जा सकता है ? फिर भी, धूर्त कमठ के दृढ़ और कठोर भुजदण्ड के द्वारा उठाये गये शिलातल और झुके हुए सैल (पर्वत) से सारी धरती काँप उठी। धरणेन्द्र बाहर निकल आया। उसने फनों के समूह से परमेष्ठी को आच्छादित कर लिया।

घत्ता—और पद्मावती देवी ने मणियों से चमकता हुआ चन्द्रबिम्ब के समान वज्रछत्र उनके ऊपर रख दिया।

(24)

देव ने शुक्ल ध्यान पूरा किया। उन्हें दिव्यज्ञान केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। शत्रु दिखाई दे गया, उसकी सामर्थ्य नष्ट हो गयी। दुर्मोह के साथ कामदेव जीत लिया गया। चैत्र माह के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा के दिन प्रवर विशाखा नक्षत्र में, मोक्षालय के संगम की इच्छा रखनेवाले सुरश्रेष्ठों ने केवली की पूजा की। दुष्ट संवर ने भी सम्यक्त्व ग्रहण किया—उपशान्त और ईर्ष्या से रहित होकर। उस वन में निवास करनेवाले सात सौ मुनियों तक यह वार्ता पहुँची। वे भी जैन मुनि हो गये। श्रमण स्वयम्भू आदि उनके दस गणधर थे। पूर्ववादी मुनि साढ़े तीन सौ थे। शशि आदि शिक्षक मुनि नौ सौ, अवधिज्ञानी चौदह सौ थे।

घत्ता—केवलज्ञानी एक हजार, और एक हजार ही विक्रिया-ऋद्धि के धारक तथा साढ़े सात सौ मनःपर्ययज्ञान के धारी मुनि थे।

18. P सढकमठ°। 19. AP चलिएण।

(24) 1. AP पढमिल्ले मासे। 2. AP चउत्थए दिणे। 3. A °सोक्खालय°। 4. P पुव्वधेह। 5. AP दससहसइं णवसयाइं। 6. A सयाइं।

(25)

वसुसयइं[1] विविहवाईसराहं छत्तीससहास[2] अज्जियवराहं[3]।
सावयहं एक्कु लक्खु जि भणंति सावइयहं[4] तिण्णि ति परिगणंति।
कयणिच्चमेवजिणरायसेव संखापरिवज्जिय विविह देव।
संखेज्ज तिरिक्ख ण का वि भंति परमेट्ठिहि अणुदिणु पय णवंति।
वयमासविमुक्कइं भूयथत्ति विहरिवि सत्तरि वरिसइं[5] धरित्ति।
संमेयसिहरि पडिमाइ थक्कु णं उवयइरिहि उग्गमिउ अक्कु।
पहु एक्कु[6] मासु विण्णायणेउ छत्तीसहिं जोईसहिं समेउ।
[7]सावणसत्तमिदिणिकालवक्खि[8] गउ मोक्खहु मासु विसाहरिक्खि।
अग्गिंदहिं वंदिउ वंदणिज्जु[9] देविंदहिं पुज्जिउ पुज्जणिज्जु।

घत्ता—महुं देउ समाहि भरहलोयसंबोहण।
जोइससुरणाहपुप्फयंतवंदिउ[10] जिणु ॥25॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे पासणाहणिव्वाणगमणं णाम
चउणउदिमो[11] परिच्छेउ समत्तो ॥94॥

---

(25)

विविध वागीश्वर आठ सौ, श्रेष्ठ आर्यिकाएँ छत्तीस हजार और श्रावक एक लाख कहे जाते हैं, श्राविकाएँ तीन लाख गिनी जाती हैं। जिन्होंने नित्य जिनराज की सेवा की है, ऐसे विविध देव संख्याविहीन हैं। तिर्यंच संख्यात हैं, इसमें कोई भ्रान्ति नहीं है, जो प्रतिदिन भगवान् के चरणों में प्रणाम करते हैं। वय और मास से रहित सत्तर वर्ष तक प्राणियों की स्थिरता से युक्त धरती पर विहार कर वह सम्मेद शिखर पर प्रतिमायोग में स्थित हो गये, मानो उदयाचल पर सूर्य उग आया हो। एक माह में जिन्होंने ज्ञेय ज्ञात कर लिया है, ऐसे प्रभु छत्तीस मुनियों के साथ, श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन विशाखा नक्षत्र में मोक्ष चले गये। अग्नीन्द्रों ने वन्दनीय की वन्दना की और देवेन्द्रों ने पूज्यनीय की पूजी की।

घत्ता—भरतलोक को सम्बोधन करनेवाले हे देव ! मुझे समाधि दो। ज्योतिषेन्द्रों और नक्षत्रों के द्वारा (महाकवि) पुष्पदन्त से वन्दित हैं—जिनदेव।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में महाभव्य भरत द्वारा अनुमत एवं
महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित महाकाव्य का पार्श्वनाथ निर्वाणगमन नाम का
चौरानवेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

(25) 1. A छसयइं। 2. AP सोलह सहास इय अयवराहं। 3. P add after this : छत्तीस सहासइं अज्जियाहं, वयसीलगुत्तजयपुज्जियाहं। 4. A साविवहं; P सावइहिं। 5. AP वरिसहं। 6. AP एक्कु जि मासु वि णायणेउ। 7. AP सावणे सत्तमदिणे। 8. A सेयपक्खि। 9. P adds after this : दक्कुउ मउडग्गहि कायपुंजु, मुणिणाहहं सुमरिउ सुमरणिज्जु। 10. AP "वंदिय"। 11. AP चउणवदिमो।

पंचणवदिमो संधि

विद्धंसियरइवइ सुरवइणरवइफणिवइपयडियसासणु[1] ।
पणवेप्पिणु सम्मइ णिंदियदुम्मइ[2] णिम्मलमग्गपयासणु ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

विणासो भवाणं मणे संभवाणं ।
दिणेसो तमाणं पहू उत्तमाणं ।
खयग्गीणिहाणं तवाणं णिहाणं ।
थिरो मुक्कमाणो वसी जो समाणो ।
अरीणं सुहीणं सुरीणं सुहीणं ।
समेणं वरायं पमत्तं[3] सरायं ।
चलं दुव्विणीयं जयं जेण णीयं ।
णियं णाणमग्गं कयं सासमग्गं ।
सया णिक्कसाओ सया णिव्विसाओ ।

पंचानवेवीं सन्धि

जिन्होंने कामदेव को ध्वस्त कर दिया है, सुरपतियों, नरपतियों और नागपतियों द्वारा जिनका शासन मान्य है, ऐसे दुर्मति की निन्दा करनेवाले और निर्मल मार्ग का प्रकाशन करनेवाले सन्मति (वर्द्धमान) स्वामी को प्रणाम कर,

(1)

जो जन्मों का नाश करनेवाले हैं, जो मन में उत्पन्न होनेवाले अन्धकार के लिए सूर्य हैं, जो उत्तम लोगों के स्वामी हैं, जो कालाग्नि के समान तपों की निधि हैं, जो स्थिर, मान से रहित, स्वाधीन और समदृष्टि हैं, जिन्होंने शत्रुओं, सुहृदों (मित्रों) तथा अत्यन्त सम्पन्नों और अत्यन्त हीनों के श्रम से दीन, प्रमत्त, सरागी, चंचल और उद्दण्ड जग का नेतृत्व किया है, जिन्होंने अपने ज्ञान-मार्ग को समृद्ध बनाया है, जो सदा कषाय

All Mss. have, at the beginning of this Samdhi, the following stanza :–

त्यागो यस्य करोति याचकजनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदनं
कीर्तिर्यस्य मनीषिणां वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।
सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेमोत्तरां निर्वृतिं
श्लाघ्योऽसौ भरतप्रभुर्न भवेत्कामिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

P reads °जनतृष्णाकुरच्छेदनं in the first line, A reads चर्यं for चर्चं in the second line; A reads प्रेम्णान्तरं in the third line; A reads कथाभिर्गिरां सूक्तिभिः, and P reads कासां गिरां सूक्तिभिः in the last line. K has a gloss on काभिः as अपि तु न काभिः श्लाघ्यः । For details see Introduction to Vol.

(1) 1. P पयडियसासणु । 2. AP णिंदियदुम्मइ । 3. A समत्तं ।

सया णिप्पसाओ[4] सया चत्तमाओ।
सया संपसण्णो सया जो विसण्णो।
पहाणो[5] गणाणं सुदिव्वंगणाणं।
ण पेम्मे णिसण्णो महीवीरसण्णो।
तमीसं जईणं जए संजईणं।
दमाणं जमाणं खमासंजमाणं।
उहाणं रमाणं पबुद्धत्थमाणं[6]।
दयावड्ढमाणं जिणं वड्ढमाणं।
सिरेणं णमामो चरित्तं भणामो।
पुणो तस्स दिव्वं णिसामेह कव्वं।
गणेसेहिं दिट्ठं मए किं पि सिट्ठं।

घत्ता—पायडरविदीवइ जंबूदीवइ पुव्वविदेहइ मणहरि।
सीयहि उत्तरयलि पविमलसरजलि[7] पुक्खलवइदेसंतरि ॥1॥

(2)

वियसियसरसकुसुमरयधूसरि [1]पविमलमुक्ककमलछाइयसरि।
णिज्झरजलवहपूरियकंदरि किंणरकरवीणारवसुंदरि।
केसरिकररुहदारियमयगलि गिरिगुहणिहिणिहित्तमुत्ताहलि[2]।
हिंडिरकत्थूरियमयपरिमलि[3] [4]कुररकीरकलयंठीकलयलि।

और सदा विषाद से रहित हैं, सदा प्रसाद से रहित हैं, सदा माया का त्याग करनेवाले हैं, सदा प्रसन्न हैं और संज्ञाओं से शून्य हैं; जो गणधरों के प्रधान हैं, जो दिव्यांगनाओं के प्रेम में अनासक्त हैं, जिनका नाम महावीर है, जो जग में सम्यक् विजेता, यति, दम संयम और क्षमाशील, अभ्युदय, निःश्रेयसरूपी लक्ष्मी के स्वामी हैं, जो जीवादि पदार्थों के ज्ञाता हैं, जिनमें दया बढ़ रही है, ऐसे वर्धमान जिनेन्द्र को मैं सिर से प्रणाम करता हूँ और फिर उनका दिव्य चरित कहता हूँ। इस काव्य को सुनो, जिसे गणधर ने देखा है और जिसका कुछ कथन मैंने किया है।

घत्ता—जिसमें सूर्यरूपी दीप प्रकट है, ऐसे जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह में सीता नदी के उत्तर तट पर स्वच्छ सरोवरों के जलवाले पुष्कलावती देश में—

(2)

जो विकसित सरसकुसुमों की रज से धूसरित है, जहाँ सरोवर विमल और विकसित कमलों से आच्छादित हैं, कन्दराएँ झरनों के जल-प्रवाह से भरी हुई हैं, जो किन्नरों के वीणारव से सुन्दर हैं, जिसमें सिंहों के नखों से गज फाड़ डाले गये हैं, जिनमें गिरिगुफा रूपी निधि में मोती रखे हुए हैं, जहाँ घूमते हुए कस्तूरीमृगों

4. A णिप्पमाओ। 5. A पहाणं। 6. P पुबुद्ध°। 7. A दरजलि।।

(2) 1. AP परिमुक्कमलकमल°। 2. AP °गुहमुहणिहिहित्त°। 3. A कत्थूरिमय°। 4. A कीरकुरर।

परिओसियविलसियवणयरगणि महुयरपियमणहरि महुयरवणि।
सबरु सुदूसिउ दुप्परिणामें होंतउ आसि पूरूरउ[5] णामें।
चंडकंडकोवंडपरिग्गहु[6] कालिसवरिआलिंगियविग्गहु।
अइपरिरक्खियथावरजंगमु सायरसेणु णामु जइपुंगमु।
विंधहुं तेण तेत्थु आढत्तउ जाव ण मग्गणु कह[7] व ण घित्तउ।
ताम तमालणीलमणिवण्णइ सिसुकरिदंतखंडकयकण्णइ[8]।

घत्ता—तणविरइयकीलइ[9] गयमयणीलइ[10] तरुपत्ताइं णियत्थइ।
वेल्लीकडिसुत्तइ पंकयणेत्तइ पलफलपिढरविहत्थइ[11] ॥2॥

(3)

भणिउ पुलिंदियाइ मा घायहि हा हे मूढ ण[1] किं पि विवेयहि।
मिगु ण होइ बुहु[2] देवु भडारउ इहु पणविज्जइ लोयपियारउ।
तं णिसुणिवि भुयदंडविहूसणु मुक्कु पुलिंदें महिहि सरासणु।
पणविउ मुणिवरिंदु सब्भावें तेणाभासिउं णासियपावें[3]।
भो भो धम्मबुद्धि तुह होज्जउ बोहि समाहि सुद्धि संपज्जउ।

का परिमल है, जिसमें क्रौंच पक्षी, तोतों और कोयलों का कलकल शब्द हो रहा है, जिसमें वनचर समूह परितोषित और विलसित है, जो भ्रमरों के लिए प्रिय और मनोहर है, ऐसे मधुकर वन में पुरुरवा नाम का दुष्परिणाम से दूषित एक भील था। उसके पास प्रचण्ड तीर और धनुष का परिग्रह था। उसका शरीर काली नाम की भीलनी से आलिंगित रहता था। स्थावर और जंगम जीवों की अत्यन्त सावधानी से रक्षा करनेवाले सागरसेन नाम के मुनिश्रेष्ठ को जैसे ही उसने वेधना शुरू किया, और जब तक उसने किसी प्रकार तीर छोड़ा भर नहीं था तब तक तमाल और नीलमणि के समान रंगवाली, शिशुगजों के दन्तखण्डों को अपने कानों में पहिने हुए,

घत्ता—तिनकों से खेलनेवाली, गजमद के समान श्यामदेह, तरुपत्रों को धारण किये हुए, लता के कटिसूत्रों वाली, कमलनयनी, मांस और फलों का पात्र हाथ में लिये हुए,

(3)

उस भीलनी ने कहा—"मत मारो, हाय हे मूर्ख ! तुझे कुछ भी विवेक नहीं है। यह मृग नहीं, आदरणीय विद्वान् मुनि हैं। लोक के लिए प्यारे इन्हें प्रणाम करना चाहिए।" यह सुनकर भील ने अपने भुजदण्ड का विभूषण वह धनुष धरती पर फेंक दिया। सद्भाव से मुनि को प्रणाम किया। नाश कर दिया है पाप को जिन्होंने, ऐसे उन मुनि ने कहा—"अरे अरे ! तुम्हारी धर्मबुद्धि हो। तुम्हें बोधि, समाधि और सिद्धि प्राप्त

5. A पुरु[illegible]। 6. AP [illegible]। 7. AP कह व [illegible]। 8. P [illegible]। 9. AP [illegible]। 10. AP [illegible]। 11. AP [illegible]।
(3) 1. AP कि पि ण। 2. AP [illegible]। 3. A णासिउ [illegible]

जीव म हिंसहि अलिउं म बोल्लहि करयलु परहणि कहिं मि म घल्लहि।
पररमणिहि मुहकमलु म जोयहि थणमंडलि करयलु म ढोयहि।
को वि म णिंदहि दूसिउ दोसें संगपमाणु करहि संतोसें।
पंचुंबरमहुपाणणिवायणु[1] रयणीभोयणु दुक्खहं भायणु।
वाह विवज्जहि मणि पडिवज्जहि णिच्चमेव जिणु भत्तिइ पुज्जहि।
तं णिसुणेवि मणुयगुणणासहं लइय णिवित्ति तेण महुमासहं।

घत्ता—हुउ जीवदयावरु सबरु णिरक्खरु लग्गउ जिणवरधम्मइ।
मुउ कालें जंतें गिलिउ कयंतें उप्पण्णउ सोहम्मइ ॥3॥

(4)

तेत्थु सु दिव्व भोय भुंजेप्पिणु एक्कु समुद्दोवमु जीवेप्पिणु।
एत्थु विउलि भारहवरिसंतरि कोसलविसइ सुसासणिरंतरि।
णंदणवणवरहीरवरम्महि[1] [2]परिहासलिलवलयअविगम्महि।
[3]कणयविणिम्मियमणिमयहम्महि णायरणरविरइयसुहकम्महि।
सुरतरुपल्लवतोरणदारहि वण्णविचित्तसत्तपायारहि।
धूवधूमकज्जलियगवक्खहि [4]भूमिभायरंजियसहसक्खहि।
उज्झाणयरिहि पढमसुरवइ होंतउ रिसहणाहु चिरु णरवइ।

हो। जीव की हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो, दूसरे के धन पर कभी भी अपनी हथेली मत लगाओ, परस्त्री का मुखकमल कभी मत देखो और न ही स्तनमण्डल पर हाथ ले जाओ। दोष से दूषित किसी की भी निन्दा मत करो। सन्तोष से संग्रह का परिमाण करो। पाँच उदुम्बर फल और मधुपान का त्याग करो। रात्रि-भोजन दुःख का भाजन है। हे व्याध ! उसे छोड़ो, मन में यह स्वीकार करो। तुम नित्य जिन (भगवान्) की भक्ति से पूजा करो।" यह सुनकर उस भील ने मनुष्य के गुणों का नाश करनेवाले मधु-मांस से निवृत्ति ले ली।

घत्ता—वह भील जीवदयावर हो गया। वह निरक्षर भील जिनधर्म में लग गया। समय आने पर यम के द्वारा निगला गया, मर गया और सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुआ।

(4)

वहाँ दिव्य भोग भोगकर, एक सागर प्रमाण जीवित रहकर, विशाल भारतवर्ष के भीतर निरन्तर सुशासनवाले कोशल देश में, अयोध्या नगरी में, जो नन्दनवन और कोयल के शब्दों से सुरम्य, परिखा के सलिलवलय से अगम्य, स्वर्णनिर्मित एवं मणिमय प्रासादों और शुभकर्म करनेवाले नागरनरों से युक्त, कल्पवृक्ष के पल्लव तोरण-द्वारों और रंगों से विचित्र सात प्राकारोंवाली, धूप के धुएँ से हुए काले गवाक्षों से युक्त और भूमिभागों से इन्द्र को रंजित करनेवाली है, प्रथम इन्द्र के द्वारा प्रवर्तित उस नगरी में ऋषभनाथ राजा हुए थे, जो प्रविमल

1. AP °पाणपलासणु।

(4) 1. AP °वरिहीरव°। 2. AP °वसयसलिल°। 3. AP घणय°। 4. AP भोइभोयरंजिय°।

पविमलणाणधारि [5]सुसंकरु पढमणरिंदु पढमतित्थंकरु।
आइबंभु महएवु महामहु भुवणत्तयगुरु पुण्णमणोरहु।
तहु पहिलारउ सुउ भरहेसरु जो छक्खंडधरणिपरमेसरु।
मागहु वरतणु जेण पहासु वि जित्तउ सुरु[6] वेयड्ढणिवासु वि।
विज्जाहरवइ भयकंपाविय णमि विणमीस[7] वि सेव कराविय।

घत्ता—जो सिसुहरिणच्छिइ सेविउ लच्छिइ गंगइ सिंधुइ सिंचिउ।
णवकमलदलक्खहिं उववणजक्खहिं णाणाकुसुमहिं अंचिउ ॥4॥

(5)

ता[1] कंकेल्लीदलकोमलकर वीणाहंसवंसकोइलसर।
तासु देवि उत्तुंगपयोहर णाम अणंतमइ त्ति मणोहर।
सो सुरसुंदरिचालियचामरु ताहि गब्भि जायउ सबरामरु।
सुउ णामें मरीइ विक्खायउ बहुलक्खणसमलंकियकायउ।
देवदेउ अच्चंतविवेइउ णीलंजसमरणें उव्वेइउ[2]।
चरणकमलजुयणमियाहंडलु दिक्खंकिउ मेल्लिवि महिमंडलु।
हरिकुरुकुलकच्छाइणरिंदहिं समउं णमंसिउ इंदपडिंदहिं।
झाणालीणु पियामहु जइयहुं णत्तिउ जइ[3] पावइयउ तइयहुं।

ज्ञानधारी, पुण्य और सुख के विधाता प्रथम नरेन्द्र, प्रथम तीर्थंकर, आदि ब्रह्मा, महादेव, महामह, भुवनत्रय के गुरु और पूर्ण मनोरथ थे। भरतेश्वर उनका पहला पुत्र था जो छहखण्ड धरती का परमेश्वर था, जिसने मागध, वरतनु और प्रभास को जीता था और विजयार्ध निवासी देव को भी। विद्याधर राजा नमि और विनमि भी जिसके भय से काँप उठे थे और जिसने उनसे सेवा करवायी थी।

घत्ता—जो मृगशावक की आँखोंवाली लक्ष्मी के द्वारा सेवित एवं गंगा और सिन्धु नदियों द्वारा सिंचित तथा नवकमल दल की आँखोंवाले उपवन-यक्षों और नाना कुसुमों से अंचित था।

(5)

अशोक वृक्ष के पत्तों के समान कोमल हाथों तथा वीणा, हंस, वंश और कोयल के समान स्वरवाली, उसकी तुंगपयोधरोंवाली अनन्तमती नाम की सुन्दर देवी थी। जिसे सुर-सुन्दरियों द्वारा चमर ढुराया जा रहा था, ऐसा वह शबरामर उसके गर्भ से मारीच नाम का विख्यात पुत्र हुआ। उसका शरीर अनेक लक्षणों से समलंकृत था। अत्यन्त विवेकशील देवदेव ऋषभ नीलंजसा की मृत्यु से विरक्त हो गये। जिनके दोनों चरणकमलों को इन्द्र प्रणाम करता है, उन्होंने महीमण्डल को छोड़कर दीक्षा ले ली। हरिकुल, कुरुकुल और कच्छ आदि प्रान्तों के नरेन्द्रों के साथ इन्द्र-प्रतीन्द्रों के द्वारा प्रणम्य पितामह (ऋषभ) जब ध्यानलीन थे, तब नाती मारीच

5. AP सुसुहंकरु। 6. A सुरवेयड्ढु। 7. AP विणमीस सेव कराविय।
(5) 1. AP थरकंकेल्ली°। 2. AP णिव्वेइउ। 3. AP जइ।

[4]उद्धरिसहतवसविलग्गउ भग्ग णराहिव एहु वि भग्गउ।
सरवरसलिलु[5] पिएव्वइ लग्गउ भुक्खइ भज्जइ लज्जइ णग्गउ।
वक्कलु पहिरइ तरुहल भक्खइ मिच्छाइट्ठि असच्चु णिरिक्खइ।
अण्णाणिउ णउ काइं मि जाणइ पंचवीस तच्चइं वक्खाणइ।
कव्वु संखसासणु तें दिट्ठउं[6] कविलाइहिं सीसहं[7] उवइट्ठउं।
परिवाइयतावसहं[8] पहिल्लउ मुउ तिदंडि[9] मिच्छामणसल्लउ।

घत्ता—कयतियसवियप्पइ पंचमकप्पइ कुडिलधम्मु णं पाउसु।
उप्पण्णउ बंभइ दुक्खणिसुंभइ दहसमुद्दीहाउसु[10] ॥5॥

(6)

कविलहु विप्पहु कोसलपुरवरि जण्णसेणबंभणिउयरंतरि।
बंभामरु णरजम्महु आयउ जडिलु णाम दियवरु संजायउ।
तिव्वें[1] पुव्वब्भासें भाविउ कम्में भयवदिक्ख पुणु पाविउ।
धरइ तिदंड तिदंड ण पहणइ परमागमविहि किं पि वि ण गणइ।
अंगइं धुयइ धुयइ[2] णउ दुग्गइ सोत्तइं छिवइ छिवइ णउ सुहमइ।
मिच्छारसचिक्खिल्लें[3] चिड्डइ[4] हरि हरि[5] घोसइ जड्ड जलि बुड्डइ।

यति के रूप में प्रव्रजित हो गया। ऋषभ के समान कठोर महातप में लगे हुए दूसरे राजा विचलित हो गये, यह भी विचलित हो गया। सरोवर का पानी पीने लगता है, भूख से भग्न होता है और नग्न रहने में लजाने लगता है। वह वल्कल पहिनता है, तरुफल खाता है। मिथ्यादृष्टि वह असत्य को देखता है। अज्ञानी वह कुछ भी नहीं जानता। फिर, पच्चीस तत्त्वों की व्याख्या करता है। कपिल आदि के द्वारा शिष्यों के लिए उपदिष्ट सांख्यदर्शन के शास्त्र को देख लेता है। परिव्राजक तपस्वियों में पहला, मन की मिथ्याशल्यवाला वह त्रिदण्डी मर गया।

घत्ता—किया गया है देव होने का विकल्प जिसमें, ऐसे पाँचवें स्वर्ग में वह उत्पन्न हुआ, मानो कुटिलधर्म (वक्रधर्म, वक्रधनुष) वर्षाकाल हो।

(6)

कोशलपुरवर में कपिल ब्राह्मण की यज्ञसेना ब्राह्मणी के उदर के भीतर ब्राह्मण-अमर मनुष्य जन्म के लिए आया और जटिल नाम का द्विजवर हुआ। अपने तीव्र पूर्वाभ्यास और कर्म से उसने भागवत दीक्षा पुनः ले ली। वह त्रिदण्ड धारण करता है, परन्तु तीन शल्यों (त्रिदण्ड) को नहीं मारता। परमागम विधि को वह कुछ भी नहीं गिनता। वह अंगों को धोता है, परन्तु दुर्गति को नहीं धोता। कानों को छूता है, परन्तु शुभमति को नहीं छूता। वह मिथ्यात्व के रस की कीचड़ मलता है, हरि-हरि घोषित करता है और मूर्ख वह पानी

4. A उद्धरिसह° । 5. AP सरवरे सलिलु । 6. AP सिट्ठउ । 7. A सीसउ; P सीसहिं । 8. AP परिवाअयतवयरहं । 9. P तिडंडि । 10. A दस° ।
(6) 1. तिव्व वि पुव्वाब्भासें; तिव्वें पुव्वाभासें । 2. P omits धुयइ । 3. AP °चिक्खल्लें । 4. A वुड्डइ । 5. A हरु ।

मुउ सोहम्मि देउ संभूयउ[6] किं वण्णिज्जइ णिरुवमरूवउ।
सायरसरिसु एक्कु तहिं अच्छिउ पुणरवि खयकालेण णियच्छिउ।
इह भारहवरिसंतरि णिद्धइ थूणायारइ[7] गामि पसिद्धइ।
भारद्दायदियाहियरत्तइ पुप्फदंतकंतइ पइभत्तइ।
पूसमित्तु णामें सुउ जणियउ बंभणु बंभसमाणउ भणियउ।
[8]मिलियालीयभसणवित्थरियहु लग्गउ पुणरवि चिरभवचरियहु[9]।
अक्खसुत्तुणा[10] णाणविहीणउ गणउ ण होइ सुतच्चविही[11] णउ।
घत्ता—जीवदयाहीणहं मक्खियमीणहं जइ सिहाइ सुज्झइ तणु।
तो[12] किं मंडियसर जुइजियससहर[13] बय पावंति ण कित्तणु ॥6॥

(7)

दब्भु देइ जइ गइ[1] परमत्थें तो सिउ पावेवउ पसुसत्थें।
कण्हाइणु हरिणेण वि धरियउं तं तहु किं ण हरइ दुच्चरियउं।
तंबयभायणु अंबें सुज्झइ अंबु पवित्तु ण भणइ समुज्झइ।
डज्झउ जणु[2] विणडिउ[3] अण्णाणें तउ चरंतु सो मुक्कउ पाणें।
पढमसग्गि सुरवरु होएप्पिणु एक्कु पओहिमाणु णिवसेप्पिणु।
पुणु पसरियससिसूरपहावहि णयरिहि सेइयाहि[4] इह भारहि।

में डूबता है। मरकर वह सौधर्म्य स्वर्ग में देव हुआ। उसके अनुपम रूप का क्या बर्णन किया जाये ? एक सागरपर्यन्त बराबर वह वहाँ रहा, फिर वह क्षयकाल के द्वारा देखा गया अर्थात् मर गया। इस भारतवर्ष में स्थूणागार नाम का सरस और प्रसिद्ध गाँव है। उसमें भारद्वाज ब्राह्मण में अत्यन्त अनुरक्त और पतिभक्त पुष्पदन्त कान्ता ने पुष्यमित्र नाम के पुत्र को जन्म दिया। उस ब्राह्मण को ब्रह्मा के समान कहा गया। जिसमें असत्य भाषणों का विस्तार है, ऐसे अपने पूर्वभव के चरित्रों में वह फिर से लग गया। वह ज्ञान से रहित है।

घत्ता—जीव दया से रहित, मछली खानेवालों का यदि जल से शरीर शुद्ध होता है, तो सरोवर की शोभा बढ़ानेवाले और अपनी कान्ति से चन्द्रमा को जीतनेवाले बगुले मुक्ति क्यों नहीं पाते ?

(7)

दूब यदि वास्तव में मुक्ति देती है, तो पशुसमूह को मुक्ति मिलनी चाहिए। कृष्णाजिन (मृगचर्म) मृग भी धारण करता है, वह उसके दुश्चरित को दूर क्यों नहीं करता ? अम्ल से ताम्रपात्र शुद्ध होता है, लेकिन अम्ल पवित्र नहीं होता, इसलिए उसे छोड़ देते हैं। अज्ञान से प्रतारित और दग्ध उसने तप करते हुए प्राण छोड़ दिये और प्रथम स्वर्ग में देव होकर एक सागरपर्यन्त वहाँ रहकर, फिर जिसमें चन्द्रमा और सूर्य के प्रभाव हैं, ऐसे भारत की श्वेताविका नगरी में अग्निभूत ब्राह्मण की भार्या गौतमी से, जो मध्यभाग में दुबली-पतली

6. AP सो डूबउ। 7. A थूणायरइ। 8. A मिलियालियसेण वित्थरियहो; P मिलियालियवसाणवित्थरियहो। 9. AP चिरु भव°। 10. A अक्खसुत्तकर णाणविहीणउ; P अक्खसुत्तु णाणेण विहीणउ। 11. A सुतच्चपवीणउ; P सुतच्चपयाणउ। 12. P ता। 13. A जइ जिय°।

(7) 1. AP सुहं। 2. AP जड़। 3. A विणडइ। 4. A सेरियाहि।

अग्गिभूइमहिदेवहु[5] रामहि गोत्तमणामहि मज्झे खामहि।
पुत्तु [6]अग्गिसहु देउ[7] विडंबिवि थिउ परिवायवित्ति अवलंबिवि।

घत्ता—हिमकंपियकायउ ण्हाउ वरायउ ण्हंतु[8] वि सासयठाणहु।
हिंसाविहि मण्णइ जिणु अवगण्णइ जाइ[9] केव णिव्वाणहु ॥7॥

(8)

मुउ भाभारजित्तससिमालइ हुयउ[1] सणक्कुमारसग्गालइ।
सत्तसमुद्दइं[2] तहिं णंदेप्पिणु मिच्छाइट्ठिउ हरि वंदेप्पिणु।
चुउ तेत्थाउ पुणु वि मंदरपुरि गयणंगणविलग्गपंडुरघरि[3]।
गोत्तमभट्टहु कोसिय गेहिणि मंथरगइ णं सुरजलवाहिणि।
अग्गिमित्तु मित्तु व तेइल्लउ तहि सुउ हुउ सो सोत्तिउ भल्लउ।
कुमइ कुबुद्धिवंत उप्पायइ जलु थलु सव्वु णिच्चु[4] णिज्झायइ।
अंबरु दइवणिओएं आइउ किं कासायउ हणइ कसायउ।
जीवहु भावरूढहु ढुक्कइ मणमलु[5] जलु किं धोयहुं सक्कइ।
झीणउ दूसहेण तवचरणें मुयउ बालु पुणु बालयमरणें।
सुरहरधरकीलियतियसिंदइ[6] उप्पण्णउ जाइवि माहिंदइ[7]।
पुणु वि पुव्वपुरवरि सुहभायणु[8] सुत्तकंठु सिरिसालंकायणु।

थी, अग्निसह नाम का पुत्र हुआ। वहाँ भी शरीर को मण्डित कर परिव्राजक वृत्ति धारण कर रहने लगा।

घत्ता—वह हिंसा विधि को मानता है, जिन (जिनेन्द्र देव) की अवगणना (निरादर) करता है। हिम से कम्पित-शरीर वह बेचारा नहाते हुए शाश्वत स्थान मोक्ष को कैसे पा सकता है ?

(8)

मरकर वह, जिसने अपनी प्रभा के भार से चन्द्रमाला को जीत लिया है, ऐसे सनत्कुमार स्वर्ग में देव उत्पन्न हुआ। वहाँ सात सागरपर्यन्त आनन्द कर, मिथ्यादृष्टि वह, हरि की वन्दना कर, वहाँ से च्युत होकर पुनः आकाश के आँगन को छूनेवाले धवल गृहों से युक्त मन्दरपुर में गौतम ब्राह्मण की कौशिकी ब्राह्मणी से, मन्थरगामिनी जो मानो गंगा नदी थी, अग्निमित्र नाम से पुत्र उत्पन्न हुआ—सूर्य के समान तेजस्वी और एक भले ब्राह्मण के रूप में। लेकिन कुबुद्धि कुपण्डितों को जन्म देती है। वह जल-थल सबको नित्य समझता है। वस्त्र कर्मविशेष से उत्पन्न होता है, क्या गेरुआ होने से वह (काषाय वस्त्र) कषाय नष्ट कर देता है ? भावों से युक्त जीव को मनोमल लगता है, क्या उसे जल धो सकता है ? दुस्सह तप से अत्यन्त क्षीण वह मूर्ख फिर मर गया। और बालमरण से जहाँ देवविमानों में देवेन्द्र क्रीड़ा करते हैं, ऐसे माहेन्द्र स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। फिर, अपने उसी पुराने मन्दर नगर में शालंकायन नामक ब्राह्मण की मन्दगामिनी पत्नी से,

---

5. A °भइएवहे। 6. AP अग्गिसिहु। 7. A देहु। 8. A णवरु वि सासय°। 9. AP केम जाइ।

(8) 1. A हूयउ। 2. AP °समुद्दसमइं णंदेप्पिणु। 3. AP °गणविलग्ग°। 4. AP थिरु। 5. A मणमलु किं जइ। 6. A °वरकीलय°। 7. P महिंदए। 8. P सहभायणु।

मंदर घरिणि मंदगइगामिणि रूवें णाइ पुरंदरकामिणि।
ताहि[9] तणउ हुउ भारद्दायउ णामें पुणु जायउ परिवायउ।
पुणु वि सग्गि पुणु णयरतिरिक्खहिं हुउ चउरासीजोणीलक्खहिं।
घत्ता—बहुदुरियमहल्लें मिच्छासल्लें विविहदेहसंधारइ।
मरहेसरणंदणु संसयहयमणु चिरु हिंडिवि संसारइ ॥8॥

(9)

मगहएसि रायालइ पुरवरि पुणु संडिल्ल विप्पहु घरि।
पारासरहि पुत्तु हुउ थावरु[1] परिसेसेप्पिणु णियसणु थावरु।
अमरणमंसियइंदपडिंदइ जाउ तिदंडि मरिवि माहिंदइ।
पुणु पुव्वुत्तदेसि तहिं पट्टणि णाणाविहववहारपवट्टणि।
विस्सविसाहभूइ सुसहोयर विण्णि वि णं हलहर दामोयर।
जइणीलक्खणमइउ घरघरिणिउ[2] दोहं मि णाइ करिंदहं करिणिउ।
दोहिं मि जाया णवपंकयमुह विस्सविसाहणंदि वर तणुरुह।
जो जेट्ठहु जायउ सो थावरु माहिंदहु आयउ पवरामरु।
ता सो विस्सभूइदिहि इच्छिवि सारयघणु णासंतउ पेच्छिवि।
सिरिहरगुरुहि पासि गइ सिक्खिउ रायहं तिहिं सएहिं सहुं दिक्खिउ।

जो मानो इन्द्र की इन्द्राणी थी, भारद्वाज नाम के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ। वह पुनः परिव्राजक हो गया। फिर स्वर्ग गया। इस प्रकार नरक, तिर्यंच आदि चौरासी लाख योनियों में उत्पन्न हुआ।

घत्ता—संशय से आहत-मन, भरतेश्वर का पुत्र मारीच, अनेक पापों से भारी मिथ्यात्व शल्य से, विविध रूपों को धारण करनेवाले संसार में भटकता रहता है।

(9)

फिर मगध देश की राजगृह नामक महानगरी में शाण्डिल्य नामक ब्राह्मण के घर में पाराशरी ब्राह्मणी का स्थावर नाम का पुत्र हुआ। वस्त्र और गृहादि का त्यागकर वह त्रिदण्डी मरकर, देवों के द्वारा प्रणम्य इन्द्र-प्रतीन्द्रों से युक्त माहेन्द्र स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। फिर, उसी मगध देश के नाना व्यवहारों के प्रवर्तनवाले राजगृह नगर में विश्वभूति और विशाखभूति दो सगे भाई हुए। दोनों ही मानो दामोदर और हलधर (नारायण और बलभद्र) थे। दोनों की गृहिणियाँ जैनी लक्षणों से युक्त थीं, जो मानो दो गजेन्द्रों की दो हथिनियाँ हों। दोनों से नवकमल के समान मुखवाले विशाखनन्दी और विशाखभूति पुत्र हुए। उनमें जो जेठा था, वह स्थावर था, जो माहेन्द्र स्वर्ग से आया हुआ देवप्रवर था। एक दिन विश्वभूति शरद्काल के मेघ को नष्ट होते हुए देखकर, अपने भाग्य को चाहकर श्रीधर गुरु के पास गति (मोक्ष, संन्यास गति) की शिक्षा लेकर उन सैकड़ों

9. AP तहे तणुरुहु।

(9) 1. A थावरु। 2. AP वरधरिणिउ।

थक्कु विसाहभूइ सुपहुत्तणि विस्सणंदि पुणु जुवरायत्तणि।
एक्कहिं दिणि सो णियणंदणवणि उवरि देंतु करु सघरिणिघणथणि।
जा कीलइ सरवरि[3] पइट्ठउ ता[4] विसाहणंदिं तहिं दिट्ठउ।

घत्ता—आवेप्पिणु मंदिरु णयणाणंदिरु अइभावें ओलग्गिउ।
अइकोइलकलयलु[5] चलकोमलदलु ताउ तेण वणु मग्गिउ ॥9॥

(10)

ताव[1] ताय जुवरायहु केरउं महु उज्जाणु देहि [2]सुहगारउं।
जइ ण देसि तो जामि विएसहु[3] ता णिग्गय मुहि वाय परेसहु।
दाइउ वंचिवि कुडिलें भावें देमि[4] पुत्त किं सुण्णपलावें।
अवरहिं दिणि वड्ढियउच्छाहें भाइतणउ बोल्लिउ महिणाहें।
पच्चंतइं बलवंतइं जायइं जामि ताइं णिहणमि कयघायइं[5]।
तुहुं णियरज्जु पुत्त पालेज्जसु ता पभणइ णंदणु पसरियजसु।
जइ तुम्हहिं करवालु धरिज्जइ तो मइं किंकरेण किं किज्जइ।
एव भणेप्पिणु गउ रिउसेण्णइं तेण णिहित्तइं छिण्णइं भिण्णइं।
पित्तिएण उज्जाणु सजायहु ढोइउ रइकीलाकयरायहु।

राजाओं के साथ दीक्षित हो गया। विशाखभूति राजगद्दी पर बैठा और विश्वनन्दी युवराज पद पर प्रतिष्ठित हुआ। एक दिन वह अपने नन्दनवन में जब अपनी पत्नी के सघन स्तन पर हाथ डालता हुआ सरोवर में प्रवेश कर क्रीड़ा कर रहा था, तो वहाँ उसे विशाखनन्द ने देख लिया।

घत्ता—वह अपने नेत्रों के लिए आनन्ददायक अपने घर आकर, अत्यन्त आग्रह से पिता की सेवा में लग गया। कोयलों के कलकल से युक्त, चलकोमल दलवाले उस नन्दनवन को उसने पिता से माँगा।

(10)

वह बोला—"हे पिता ! मुझ युवराज के लिए शुभकारक उपवन दो। यदि नहीं देते हो तो मैं विदेश चला जाऊँगा।" तब राजा के मुख से यह बात निकली—"हे पुत्र ! मैं दायी (भतीजा, विश्वनन्दी) को कपटभाव से धोखा देकर तुम्हें दूँगा। हे पुत्र ! शून्य प्रलाप से क्या ?" दूसरे दिन बढ़ रहा है उत्साह जिसे, ऐसे राजा विशाखभूति ने अपने भाई के पुत्र से कहा—"सीमान्त प्रदेश बहुत शक्तिशाली हो गये हैं, मैं जाता हूँ और आक्रमण करनेवाले उनको मारता हूँ। हे पुत्र ! तुम अपने राज्य का परिपालन करना।" यह सुनकर, प्रसरितयश पुत्र ने कहा—"यदि आपको तलवार उठानी पड़ी, तो फिर मैं आपका सेवक क्या करने के लिए हूँ।" यह कहकर वह गया और शत्रुसेना को उसने छिन्न-भिन्न कर नष्ट कर दिया। चाचा ने रतिक्रीड़ा का राग करनेवाले अपने पुत्र के लिए उद्यान दे दिया। आकर युवराज विश्वनन्दी ने यह सुना। उसने सोचा कि मेरी सेवा को

---

3. AP लयमवणि। 4. AP ताम। 5. AP अलिकोइल°।

(10) 1. AP ताय। 2. AP दिहिगारउ। 3. AP विदेसहो। 4. A देवि। 5. P कयकायइं।

सिसुपहुणा आएणावण्णिउं पेसणु मेरउ किं पि ण मण्णिउं।
उववणु ससुयहु दिण्णु पिउव्वें को णउ खद्धु पहुत्तणगव्वें।
गउ वणु रणसएहिं[6] णिव्वूढउ दिट्ठउ दुट्ठु कविट्ठारूढउ।
रिउणा सहुं धरणीरुहु पेल्लिउ तेण जाम उम्मूलिवि घल्लिउ।
पुणु खुद्देण माणवहु लंघिउ पत्थरखंभु[7] झत्ति आसंघिउ।
घत्ता—ता जइणीणंदणु रणजुज्झणमणु[8] तहिं मि पवणचलु[9] पत्तउ।
पहणेवि सदप्पइ पाणितलप्पइ खंभु वि फोडिवि घित्तउ ॥10॥

(11)

पुणु णासंतु जंतु रिउ जोइवि तेण पउत्तउं अप्पउं सोयवि।
हा हा महुं भुयबलु किं किज्जइ जेण बंधुसंतावउ दिज्जइ।
डज्झउ किं उववणु किं जोव्वणु अथिरु देहु गेहु धणु परियणु।
सहुं सयणहिं णीसल्लु करेप्पिणु संभूयहु कमजयलु णवेप्पिणु।
विस्सणंदि दिक्खाइ अलंकिउ गउ विसाहभूइ वि[1] भवसंकिउ।
भिक्खहि मुणिवरु महुर पइट्ठउ रज्जपहट्ठें[2] रिउणा दिट्ठउ।
वेसापासायत्थें जाणिउ आसि एण हउं वणि अवमाणिउ।

कुछ भी नहीं माना गया। चाचा ने नन्दनवन अपने पुत्र के लिए दे दिया ! प्रभुता के गर्व से कौन नहीं भ्रष्ट होता है ? सैकड़ों युद्धों का निर्वाह करनेवाला वह वन में गया। उसने उस दुष्ट (विशाखनन्दी) को कैथ के पेड़ पर चढ़ा हुआ देखा। उसने शत्रु के साथ वृक्ष को घात कर, जब तक उखाड़कर फेंका, तब तक वह क्षुद्र मानपथ का उल्लंघन कर शीघ्र ही पत्थर के खम्भे के पीछे छिप गया।

घत्ता—तब युद्ध में लड़ने की इच्छा रखनेवाला पवन के समान चंचल वह जैनी पुत्र वहाँ पहुँचा। दर्पसहित एक चाँटा मारकर उसने खम्भे को भी फोड़कर (तोड़कर) गिरा दिया।

(11)

फिर भागते हुए शत्रु को देखकर उसने शोक करते हुए स्वयं से कहा—हा हा ! मेरे बाहुबल ने यह क्या किया कि जिसने अपने भाई को सन्ताप दिया। आग लगे इस उपवन और यौवन से क्या ? अपना शरीर, घर, धन और परिजन अस्थिर हैं। स्वजनों के साथ, अपने को शल्यरहित कर, सम्भूत मुनि के चरणकमलों को प्रणाम कर विश्वनन्दी ने स्वयं को दीक्षा से अलंकृत कर लिया। संसार से आशंकित होकर विशाखभूति भी चला गया। भिक्षा के लिए मुनिवर विश्वनन्दी ने मथुरा नगरी में प्रवेश किया। राज्य से भ्रष्ट शत्रु (विशाखनन्दी) ने उन्हें देखा। एक वेश्या के प्रासाद पर बैठे हुए उसने जान लिया कि इसने (विश्वनन्दी ने) वन में मेरा अपमान किया था। उस अवसर पर एक सद्यःप्रसूता गाय से आहत होकर दैव से आक्रान्त वह मुनि गिर

---

6. P रणसएहिं। 7. AP थरसिलखंभु। 8. AP रणे जुज्झण°। 9. AP पवलबलु।
(11) 1. A वि ण वि संकिउ। 2. AP रज्जपब्भट्ठें।

तहिं अवसरि गाईइ [illegible] [illegible]थिवकिउ [illegible] हइयें पारंभिउ।
दुक्करकायकिलेसें दुब्बलु भणइ पिसुणु तं कहिं तुह भुयबलु।
जेण कविट्ठरुक्खु संचूरिउ जेण[3] बलेण खंभु मुसुमूरिउ।
सो एवहिं खलसमण विणट्ठउ पडियउ [4]दुट्ठगिट्ठिपरिहट्ठउ।
इय[5] णिसुणिवि मुणिवि अयाणउ रिउणा[6] णियमणि बद्धु णियाणउं।

घत्ता—जइ जिणवरतवहलु अत्थि सुणिम्मलु तो रणरंगि भिडेसमि।
इहु वइरि महारउ विप्पियगारउ हउं परभवि[7] मारेसमि ॥11॥

(12)

मुउ ससल्लु सो साहु गयासणु देउ महासुक्कम्मि सुभूसणु।
तेत्थु जि सो वि साहु भूमीसरु जायउ सुरवरु णं [1]रूवी सरु।
सोलहसायरसमय सहच्छिय मित्त सणेहवंत अदुगुंछिय।
पुणु तित्थाउ गलियसुहयम्मइ[2] कालें पुण्णें देसि सुरम्मइ।
पोयणपुरवरि राउ पयावइ रइ विव मयणहु[3] देवि जयावइ।
अवर मयच्छि पुरंधि मिगावइ[4] जाहि रूवु पउलोमि ण पावइ।
दोहिं मि ता[5] ते णंदण जाया विजय तिविट्ठ णाम विक्खाया।

पड़े। वह कठोर कायक्लेश से अत्यन्त दुर्बल हो चुके थे। वह दुष्ट (विशाखनन्दी) कहता है—वह तुम्हारा बाहुबल कहाँ गया जिससे तुमने कपित्थ वृक्ष को चूर-चूर किया था ? जिस बल से खम्भे को तोड़ डाला था, वह तुम्हारा बल, हे दुष्ट श्रमण, नष्ट हो गया है और एक दुष्ट सद्यःप्रसववाली गाय से भ्रष्ट होकर पड़े हुए हो।" शत्रु से यह सुनकर, और विचार कर, उन्होंने अपने मन में अज्ञानता से यह निदान किया कि—

घत्ता—यदि जिनवर के तप का कोई सुनिर्मल फल है, तो मैं युद्ध के रंगमंच पर इससे भिड़ूँगा। यह मेरा अशुभ करनेवाला शत्रु है। मैं अगले जन्म में इसका हनन करूँगा।

(12)

वह साधु बिना भोजन के ही सशल्य मर गया और महाशुक्र स्वर्ग में भूषणों से अलंकृत देव हुआ। वहीं पर वह राजा साधु (विशाखभूति) सुरवर हुआ, रूप में मानो जैसे कामदेव हो। वे दोनों सोलह सागर पर्यन्त साथ रहे, अत्यन्त स्नेहवाले मित्रों की तरह, एक-दूसरे की निन्दा से दूर। फिर, सुन्दर पुण्य कर्म तथा समय (आयुकर्म) पूर्ण होने पर। पोदनपुर में राजा प्रजापति और कामदेव की रति के समान उसकी पत्नी जयावती थी। एक और मृगनयनी पत्नी मृगावती थी, रूप में इन्द्राणी भी उसे नहीं पा सकती थी। वहाँ से च्युत होकर वे दोनों उनके पुत्र हुए—विजय और त्रिपृष्ठ के नाम से विख्यात। जो पहले का चाचा (विशाखभूति) था, वह बलभद्र हुआ। और विश्वनन्दी शत्रु के बल का अपहरण करनेवाला नारायण (केशव) हुआ। उसने,

---

3. AP जेण सिलाथंभु वि मुसुमूरिउ। 4. A दुट्ठगिट्ठिपरिभट्ठउ; P दुट्ठगिट्ठिए परिघट्टउ। 5. AP इय पिसुणउं णिसुणेवि अयाणउ। 6. AP रिउणा। 7. A परभवे।

(12) 1. P रूवें सरु। 2. AP सुहम्मए। 3. P मयणहे। 4. A मृगावइ।

चिरपिंत्तिउ जो सो हुउ हलहरु विस्सणंदि केसउ परबलहरु।
तेण गहीरवीरहक्कारणि जलणजडीतणयाकारणि रणि।
गिरिवइ[6] खगवइ भुत्तवसुंधरु सयडावत्ति णिहउ हयकंधरु[7]।
हरि तिखंडमंडिय महि भुंजिवि इंदिय रंजिवि दुक्किउ भुंजिवि[8]।
उप्पण्णउ तमतमपहि भीसणि णाणादुक्खलक्खदुद्धरिसणि।
पुणु इह भारहि गंगाणइतडि सीहवणंतरि तरुवरसंकडि।

घत्ता—ससहावें दारुणु [9]हरिरुहिरारुणु तिक्खणक्खभाभासुरु।
दाढाफुरियाणणु हुउ पंचाणणु कंधरघोलिरकेसरु ॥12॥

(13)

वणयरविंदहं[1] णं जमदूयउ मुउ पढमावणिबिलि संभूयउ।
एक्कु समुद्दु तेत्थु जीवेप्पिणु पंचपयारु दुक्खु वि सहेप्पिणु।
पुणु इह वरिसि जणिउ इह मायइ सिंधुकूडपुव्विल्लइ भायइ।
फारतुसारहारपंडुरतणु जलणफुलिंगपिंगचललोयणु।
कुंजररुहिरसित्तकेसरसडु तरुणमयंकवंकदाढुब्भडु।
कररुहरंधलग्गमुत्ताहलु पल्लवलोललंबजीहादलु।

जिसमें गम्भीर वीरों का हुंकार हो रहा है, ऐसे ज्वलनजटी (विद्याधर) की कन्या के कारण हुए युद्ध में विजयार्धपति, धरती का भोग करनेवाले विद्याधर राजा अश्वग्रीव को शकटावर्ती वन में मार डाला। तीन खण्ड धरती का उपभोग कर, इन्द्रियों का रंजन कर वह नारायण (विश्वनन्दी) पाप भोगने के लिए नाना दुःखों से दुर्धर्ष भीषण तमतमःप्रभा नामक नरकभूमि में उत्पन्न हुआ। फिर, इस भारत में गंगा नदी के तट पर तरुवरों से संकुल सिंहवन में—

घत्ता—अपने स्वभाव से भयंकर, गजरक्त से लाल तीखे नखों से भास्वर, दाढ़ों से स्फुरितमुख और कन्धों पर आन्दोलित अयालवाला सिंह हुआ।

(13)

वन्यपशु समूह के लिए जो मानो यमदूत था। वह मरकर प्रथम नरक में फिर उत्पन्न हुआ। वहाँ एक सागर-पर्यन्त जीवित रहकर और पाँच प्रकार के दुःखों को सहन कर वह फिर इस भारत वर्ष में, सिन्धुकूट के पूर्वभाग में गजों को मारनेवाली (सिंहनी) से उत्पन्न (सिंह) हुआ, जो स्फीत तुषार-हार के समान सफेद शरीर का था। अग्निकणों के समान उसके नेत्र चंचल और भास्वर थे। उसकी अयाल जटा गजरक्त से सिंचित थी। वह तरुणचन्द्र के समान दाढ़ों से उद्भट था। उसके नाखूनों के छेदों में मोती लगे हुए थे। उसकी जीभ पल्लवदल के समान चंचल और लम्बी थी। उसकी लम्बी पूँछ सिर तक मुड़ जाती थी। वह श्रेष्ठ

---

5. AP दो ते। 6. AP गिरिथरे। 7. AP हरिकंधरु। 8. AP पुंजिवि। 9. AP करि°।
(13) 1. A वणयरचंदहो; P वणयरवंदहुं।

सिरकाइकरिगुलयईहरु[2] वरकुंजरगणियारिरईहरु।
चारणमुणिजुयलें णहि जंतें णियमणम्मि[3] जिणभाउ भरंतें।
भणइ जेट्ठु जमदमसंजमधरु[4] भो अमियमइ[5] साहु महिमयरु।
जिणडिउ कइदुट्ठु अहे रउ एहु सु अच्छइ सीहकिसोरउ।
इय जंपतें उवसमधामें बोल्लाविउ अजियंजयणामें।
घत्ता—भो भो कंठीरव कयदारुणरव[6] महुवणि तुहुं खयकंदउ[7]।
कालीसवरीवरु बाणासणधरु[8] होंतउ आसि पुलिंदउ।।13।।

(14)

तुहुं होंतउ मरीइ जिणणत्तिउ भरहेसरसुउ[1] खत्तिउ सोत्तिउ।
तुहुं संभाविउ मिच्छावायउ बहुभवाइं होंतउ परिवायउ।
बहुभवाइं होंतउ कप्पामरु संसरंतु संसारि असूहरु।
बहुभवाइं होंतउ तसथावरु बहुभवाइं पत्तउ णरयंतरु।
तुहुं दुद्दतें दइवें दंडिउ हूलिउ पउलिउ तिलु तिलु खंडिउ।
अण्णण्णइं अंगाइं लएप्पिणु अण्णणाइं वण्ण[2] मेल्लेप्पिणु।
विस्सणंदि णामें जयराणउ[3] तुहुं होंतउं जइवरु सणियाणउ।
दहमइ सग्गि देउ णच्चियसुरि तुहुं होंतउ तिविट्ठु पोयणपुरि।

हाथी-हथिनियों की रति का हरण करनेवाला था। एक चारणमुनि युगल, आकाश से जाते हुए अपने मन में जिनदेव के भावों की याद करते हुए (जा रहा था)। उनमें से यम, दम और संयम को धारण करनेवाले ज्येष्ठ मुनि कहते हैं—"हे महिमाकर साधु अमितगति ! जिन भगवान् के द्वारा कहे गये अत्यन्त दुष्ट पाप में रत यह किशोरसिंह यहाँ पर है।" यह कहते हुए उपशमभाव के घर अजितंजय नामक मुनि उससे बोले—

घत्ता—"हे कठोर शब्द करनेवाले सिंह ! मधुवन में तुम कन्दमूल खोदनेवाले एवं काली भीलनी के पति, तीर-कमान को धारण करनेवाले भील थे।

(14)

तुम तीर्थंकर ऋषभ जिनेन्द्र के नाती, भरतेश्वर के पुत्र, क्षत्रिय और ब्राह्मण तुमने मिथ्यावाद स्वीकार किया; और अनेक जन्मों में परिव्राजक होते रहे। अनेक जन्मों में देव होते हुए, प्राणों को धारण कर संसार में घूमते रहे। अनेक जन्मों में त्रस स्थावर हुए, अनेक जन्मों में नरकों में जनमे। तुम दुर्दान्त दैव के द्वारा दण्डित हो, शूली पर शरीरों को धारण कर, अन्य-अन्य वर्णों को छोड़कर, तुम विश्वनन्दी नाम से जग के राजा हुए, तुम निदानवाले मुनि बने। फिर जिसमें देव नृत्य करते हैं, ऐसे दसवें स्वर्ग में उत्पन्न हुए। वहाँ

2. AP सिरिवलइय°। 3. AP णियमणे जिणभासिउ सुमरंतें। 4. AP °धर। 5. °मइ साहु मह सहयर; P °गइ साहु महिसायरु। 6. A कयसंजणरव। 7. AP खदकंदउ। 8. AP बाणासणकरु।

(14) 1. AP भरहेसहो सुउ। 2. AP वण्ण। 3. AP जुवराणउ।

विसहियघोरदुक्खपब्भारउ तुहुं होंतउ तमतमपहि णारउ।
तुहुं होंतउ खरणहरुक्केरउ सुरसरितीरि सिहरिसेहीरउ।
तुहुं होंतउ पढमावणिदुक्खिउ सिरिहरअरहंतें महुं अक्खिउं।
इह पुणरवि हूयउ पंचाणणु पीलुपेयपलदूसियकाणणु[4]।
भो भो मयवइ विद्धंसियमयगय लोहियजलधाराधुयपय।

घत्ता—परिहरि[5] दुच्चरियइं दुण्णयभरियइं संबोहियभरहेसरु।
पणवहि परमेसरु जियवम्मीसरु पुप्फदंतजोईसरु[6] ॥14॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे वीरसामिबोहिलाभो णाम
पंचणवदिमो[7] परिच्छेउ सम्मत्तो ॥95॥

से चय कर पोदनपुर में त्रिपृष्ठ हुए। तुम तमतमःप्रभा नरक में असह्य घोर दुःख प्रभार सहन करनेवाले नारकी हुए। तुम गंगा के तीर के निकट पर्वत पर तीव्रनख समूहवाले सिंह हुए। फिर तुम प्रथम नरक भूमि में अत्यन्त दुःखी हुए—श्री अरहन्त ने मुझसे यह कहा है। और अब यहाँ पुनः सिंह हुए हो। मत्तगजों के मांस से इस वन को दूषित करनेवाले ! हे हे मृग गजों को ध्वस्त करनेवाले ! रक्तरूपी जलधारा से पैर धोनेवाले हे सिंह !

घत्ता—तुम दुर्नयों से भरे हुए अपने दुश्चरितों को छोड़ो और जिन्होंने भरतेश्वर को सम्बोधित किया है, ऐसे कामदेव को जीतनेवाले पुष्पदन्त ज्योतीश्वर परमेश्वर को प्रणाम करो।"

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का वीर-स्वामी-बोधिलाभ नाम का
पंचानबेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

4. AP पोलुदंडपल°। 5. AP परिहरु। 6. AP पुप्फदंतरिसहेसरु। 7. AP पंचणउदिमो।

छण्णउदिमो संधि

गुरुवयणु सुणेवि [1]बहुदुहसोक्खणिरंतरु।
उवसंतु मयारि [2]सुमरिवि चिरु जम्मंतरु ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

दुवई—उट्ठिउ णीससंतु भवसंभरणुग्गयदुक्खहुयमणो[3]।
णिवडिउ मुणिवरिंदचरणोवरि[4] बाहभरंतलोयणो ॥छ॥

सो हरिवरु वंदइ रिसिपयाइं णीसेसजीवपयडियदयाइं।
परिघोलिरेण रत्तें णवेण णं पुज्जइ जीहापल्लवेण।
सिरकमलें मणहरकेसरेण णं विज्जइ पुंछें चामरेण।
णहरंधगलियमुत्ताहलेहिं णं अच्चण करइ समुज्जलेहिं।
सामीउ जासु आवेंति जोइ सावयवइ सावउ किं ण होइ।
कयसव्वजीवमारणणिवित्ति ण [5]खणइ [6]णहेण वि सो धरित्ति।
अहिलसइ गसइ दुग्घोट्टघट्टु[7] जो मासाहारें भरइ पेट्टु।
उवसामिउ सो वि महामुणीहिं हियमियसुमहुरमणहरझुणीहिं।
महियलणिहित्ततणु जित्तजीहु संणासि परिट्ठिउ साहु सीहु।

छियानवेवीं सन्धि

गुरु के वचन सुनकर अनेक सुख-दुःखों से निरन्तर भरपूर अपने पूर्व जन्मान्तरों का स्मरण कर वह सिंह शान्त हो गया।

(1)

पूर्वजन्मों के स्मरण से उत्पन्न दुःख से जिसका मन दग्ध हो गया है, ऐसा वह निःश्वास लेता हुआ उठा और बाष्पभरित लोचन से मुनिवर के चरणों में गिर पड़ा। वह महान् सिंह समस्त जीवों के प्रति दया प्रकट करनेवाले मुनिचरणों की वन्दना करता है, मानो आन्दोलित रक्त और नये जीभरूपी पल्लव एवं सिररूपी कमल और सुन्दर केशर (अयाल, केशर) से पूजा करता है, मानो पूँछरूपी चामर से पंखा हिलाता है, मानो नखरन्धों से गिरते हुए समुज्ज्वल मोतियों से अर्चन करता है; जिनके समीप योगी आते हैं वहाँ श्वापदपति वह श्रावक क्यों नहीं हो ? सब प्रकार के जीवों की हिंसा से निवृत्ति लेकर वह अपने नखों से धरती तक नहीं खोदता। जो बलवान् गजघटा की इच्छा करता है, उसे खाता है, मांसाहार से पेट भरता है, वही (सिंह) हितमित सुमधुर सुन्दर ध्वनिवाले महामुनियों से भी उपशान्त हो गया। वह साधु सिंह, धरतीतल पर अपना शरीर डालकर, जिह्वा को जीतकर संन्यास में प्रतिष्ठित हो गया। वह सोचता है—मुझे बोधि-समाधि हो, मेरा

(1) 1. AP बहुसुहदुक्खणिरंतरु। 2. AP सुमरिउ। 3. AP °दुक्खहयमणो। 4. A °चलणोवरि। 5. P णक्खणइ। 6. AP णक्खेण। 7. A दुग्घोट्टघट्टु।

चिंतइ महुं बोहि समाहि होउ महुं मिच्छादुक्किउ खयहु जाउ।
मइं आसि कुसिद्धंतइं कयाइं परिपालियाइं तावसवयाइं।
मइं[8] जीहोवत्थविलुद्धएण णिहणवि[9] णरिंद [10]रणकुद्धएण।
बहुवारउ[11] भुत्ती एह भूमि भो पसु[12] तित्तिं णउ तो वि जामि।
हउं मुउ उप्पण्णउ णरयविवरि बहुवारउ हुउ मिगु[13] सेलकुहरि।
जलयरु थलयरु णहयरु चिलाउ[14] हउं जायउ भवि भवि मंदभाउ।

घत्ता—जिणधम्मु मुएवि सयलु वि मइं अणुहुत्तउं।
संसारिउ दुक्खु भणु किर कवणु ण पत्तउ ॥1॥

(2)

दुवई--इय उवसंतु संतु मुउ केसरि थिउ रिसिसमवियप्पए।
णामें सीहकेउ हुउ सुरवरु पढमसुरिंदकप्पए ॥छ॥

सो दोसमुद्दथिरपरिमियाउ दिव्वंबरभूसणु दिव्वकाउ।
दीवंतरि जणसंपण्णकामि विक्खायइ धादइसंडणामि।
पुव्वासामंदरपुव्वभाइ[1] मणहरविदेहि वणदिण्णछाइ[2]।
मंगलवइदेसि सुमंगलालि उत्तसेढिहि वेयड्ढसेलि।
कणयप्पहपुरवरि विजयकंखु विज्जाहरु णामें कणयपुंखु।

मिथ्यापाप क्षय को प्राप्त हो। मैंने बहुत से कुसिद्धान्तों का आचरण किया है, मैंने तापसव्रतों का परिपालन किया है; जीभ और उपस्थ के लोभी और युद्ध में क्रुद्ध मैंने राजाओं को मारकर कई बार इस धरती का उपभोग किया है। हे प्रभु ! तब भी मैं तृप्ति को प्राप्त नहीं हुआ। मैं मरकर नरक में उत्पन्न हुआ, जड़भाव मूर्ख मैं कई बार पर्वत-गुफा में पशु हुआ, भव-भवान्तर में जलचर-थलचर-नभचर और भील हुआ।

घत्ता—जिनधर्म को छोड़कर, मैंने सब-कुछ का अनुभव कर लिया। बताओ मैं कौन-से सांसारिक दुःखों को प्राप्त नहीं हुआ ?

(2)

इस प्रकार उपशान्त होता हुआ, मुनि के समान परिणाम में स्थित, वह सिंह मर गया और प्रथम स्वर्ग में सिंहकेतु नाम का सुरवर हुआ। दिव्यवस्त्रों से भूषित दिव्यकाय उसकी दो सागर प्रमाण आयु थी। जनों की कामनाओं को परिपूर्ण करनेवाले विख्यात धातकीखण्ड द्वीप की पूर्वदिशा में सुमेर पर्वत के पूर्वभाग में वनों से छाया प्रदर्शन करनेवाले सुन्दर विदेह में, विजयार्ध पर्वत की उत्तरश्रेणि में सुमंगलों का घर मंगलावती देश है। उसके कनकप्रभ नामक श्रेष्ठ नगर में विषय का आकांक्षी कनकपुंख नाम का विद्याधर था। अपनी

---

8. A मइं 9. A णिहणिवि। 10. AP रणि कुद्धएण। 11. A बहुवार भुत्ती एह; P बहुवारउ भुत्तीए एइ। 12. AP भोपसु तित्ति। 13. A मिउ हुव सेलसिहरे; P हुउ मिग सेलकुहरे। 14. A चिलाउ; P चिलाउ।

(2) 1. AP °भंदरे। 2. A वणदिण्णछाए।

गइलीलाणिज्जियहंसलील तहु गेहिणि सुहव कणयमाल।
सो सीहकेउ सुरु ताहि पुत्तु संजायउ लक्खणलक्खजुत्तु।
कणउज्जलु णामें कणयवण्णु कंचणकुंडलचंचइयकण्णु।
णियघरिणिइ सहुं उग्गयणमेरु गउ वंदणहत्तिइ कहिं मि मेरु।
तेणावहिलोयणु गुणविसिट्ठु पियमित्तु महामुणि तेत्थु दिट्ठु।
वंदिउ वंदारयवंदवंदु[3] णिसुणेवि धम्मु हयमोहतंदु।
संजमधरु जायउ खयरु साहु मयरद्धयचंचलहरिणवाहु।
मुउ संणासें पुणु लंतवक्खि संभूयउ सुरवरु जणियसोक्खि।
अणुहुंजियपवरामररमाइं जीविउ तेरह सायरसमाइं।

घत्ता—पुणु कोसलदेसि पुरि साकेइ रवण्णइ।
दियणिववणिसुद्दचाउवण्णसंकिण्णइ[4] ॥2॥

(3)

दुवई—णामें[1] वज्जसेणु णरपुंगमु सीलवइ त्ति गेहिणी।
बालकुरंगणयण[2] पीणत्थणि सीलगुणंभवाहिणी ॥छ॥
सो सत्तमसग्गामरु मरेवि एयहि गब्भासइ अवयरेवि।
दालिद्ददमणु[3] जणकामधेणु हरिसेणु णामु उप्पण्णसेणु[4]।
महि भुंजिवि णिरु णिव्वेइएण सम्मत्तरयणसुविराइएण।

गतिलीला से हंस की लीला को जीतनेवाली कनकमाला उसकी सुन्दर गृहिणी थी। वह सिंहकेतु देव उसका लाखों लक्षणों से युक्त स्वर्ण के समान उज्ज्वल कनकवर्ण नाम से पुत्र उत्पन्न हुआ। स्वर्णकुण्डलों से जिसके कान अलंकृत हैं, ऐसा वह अपनी पत्नी के साथ, जिसमें कल्पवृक्ष उगे हुए हैं ऐसे सुमेरु पर्वत की वन्दना भक्ति करने के लिए गया। उसने वहाँ अवधिज्ञान रूपी लोचनवाले, गुणों से विशिष्ट प्रिय मित्र महामुनि को देखा। देवों के द्वारा वन्दनीय उनकी उसने वन्दना की, और मोहरूपी तन्द्रा को नष्ट करनेवाला धर्म सुनकर वह विद्याधर संयमधारी साधु बन गया जो कामदेवरूपी चंचल हरिण के लिए व्याध (शिकारी) के समान था। फिर संन्यास से मरकर, सुख को उत्पन्न करनेवाला लान्तव नाम का श्रेष्ठ देव उत्पन्न हुआ। जिनमें प्रवर अमरों की लक्ष्मी का अनुभव किया गया है, ऐसे तेरह सागर वर्षों तक जीवित रहकर—

घत्ता—कोशलदेश के द्विज, क्षत्रिय (नृप), वणिक् और शूद्र—चारों वर्णों से संकीर्ण सुन्दर साकेत नगर में

(3)

वज्रसेन नाम का राजा था। शीलवती उसकी गृहिणी थी। बालमृगनयनी पीनस्तनोंवाली वह शीलगुणों रूपी जल की वाहिनी (नदी) थी। सातवें स्वर्ग का वह अमर मरकर इसके गर्भ में अवतरित होकर, दारिद्र्य का दमन करनेवाला तथा लोगों के लिए कामधेनु, हरिषेण नाम का पुत्र हुआ। धरती का उपभोग कर, तथा

3. A °विंदविंदु; P °विंदवंदु। 4. A दियवणिणिवसुद्द°।

(3) 1. P omits णामें। 2. A °णयणि। 3. AP दालिद्ददलणु। 4. AP उप्पण्णु सुणु।

सुयसायरसूरिहि पासि दिक्ख अवलंबिय लहु परलोयसिक्ख।
मुउ सुरु संजाउ महंतसुक्कि बहुदुक्खवग्गदोहग्गमुक्कि।
तणुतेयविहिण्णदिवायराइं तहिं[5] जीविवि सोलह सायराइं।
पुणु धादइसंडइ भमियमेहि पुव्विल्लइ [6]सुरगिरिवरविदेहि।
पुक्खलवइविसइ मणोहिरामि पिच्चंतछेत्तउद्दामगामि[7]।
णंदंतणिउणणायर महत्थ पुरि[8] अत्थि [9]पुंडरिंगिणि पसत्थ।
तहिं णरवइ अरिवरतिमिरमित्तु णामें सुमित्तु [10]सुविसिट्ठमित्तु।
तहु दूरुज्झियदुद्दंतगाव सुव्वय महएवि महाणुभाव।
भव्वामरु[11] विहवो इव रमाइ सो ताहि गब्भि थिउ जणिउ ताइ।

घत्ता—णामें पियमित्तु चक्कवट्टि होएप्पिणु।
णव णिहि रयणाइं महि असेस भुंजेप्पिणु ॥3॥

(4)

दुवई—णिसुणिवि परमधम्मु खेमंकरजिणवरणाहभासिओ।
णंदणु सच्चमित्तु[1] अहिसिंचिवि अप्पणु तउ समासिओ ॥छ॥

राएं दूसहरिसिणिट्ठ सहिवि दप्पिट्ठ दुट्ठ[2] खल तिट्ठ महिवि।
किउ संणासणु हुउ सग्गलोइ सहसारणामि संपण्णभोइ।

विरक्त होकर सम्यक्त्वरूपी दर्शन से शोभित उसने श्रुतसागर सूरि के पास परलोक की शिक्षा देनेवाली जिनदीक्षा ले ली। वह मरकर अनेक दुःखवर्ग और दुर्भाग्यों से मुक्त महाशुक्र स्वर्ग में देव हुआ। शरीर के तेज से दिवाकर को पराजित करनेवाले सोलह सागर वर्ष पर्यन्त वहाँ जीवित रहकर, पुनः धातकीखण्ड द्वीप में, जिसमें मेघ भ्रमण करते हैं, ऐसे सुमेरु पर्वत के पूर्वविदेह में, सुन्दर पुष्कलावती देश है, जिसमें पके हुए खेतों से परिपूर्ण ग्राम हैं। उसमें पुण्डरीकिणी नाम की प्रशस्त पुरी है जो महार्थवती है और जिसके नागरिक प्रसन्न तथा चतुर हैं। उसमें सुमित्र नाम का राजा था जो अत्यन्त विशिष्ट मित्र तथा शत्रुवररूपी तिमिर के लिए सूर्य था। उसकी दुर्दान्त गर्व से दूर रहनेवाली, महान् आशयवाली सुव्रता नाम की महादेवी थी। लक्ष्मी के अमर वैभव के समान वह उसके गर्भ में अवतरित हुआ। उसने उसे जन्म दिया—

घत्ता—प्रियमित्र नाम से चक्रवर्ती होकर उसने नवनिधियों, रत्नों और अशेष धरती का उपभोग किया।

(4)

क्षेमंकर नामक तीर्थंकर प्रभु के द्वारा भाषित धर्म को सुनकर अपने पुत्र सत्यमित्र का राज्याभिषेक कर उसने अपने को तप के आश्रित कर दिया। दुःसह ऋषि-निष्ठा सहन कर, दर्पिष्ठ दुष्ट खल तृष्णा को मारकर राजा ने संन्यास ले लिया और सम्पूर्ण भोगवाले सहस्रार नामक स्वर्गलोक में वह उत्पन्न हुआ। अठारह सागर

5. AP णिवसेविणु। 6. AP सुरवरगिरिविदेहे। 7. AP °छेत्ते। 8. AP पुरे। 9. A पुंडरिकिणि। 10. AP सुविसुद्धचित्तु। 11. AP सुकामरु।
(4) 1. A सच्चमित्तु 2. AP धिट्ठ।

आउसु अट्ठारहजलहिमाणु माणेप्पिणु पुणु[3] चुउ भव्वभाणु।
घरसिहरारूढणडंतखयरु[4] इह [5]भारहि छत्तायारणयरु[6]।
सुपसिद्धु णंदिवद्धणु णरिंदु वीरवइ देवि तहि पुत्तु णंदु।
हुउ पत्तवंतु[7] पत्ताहिसेउ महि भुंजिवि णिंदिवि मयरकेउ।
पोट्ठिलहु[8] पासि पावइउ केव रिसहहु णवंतु बाहुबलि जेव।

घत्ता—हुउ रिसि समचित्तु अप्पउं खंतिइ भूसइ।
थुउ हरिसु ण लेइ णिंदिउ [9]णउ सो रूसइ ॥4॥

(5)

दुवई—इय[1] णीसंगु सल्लपरिवज्जिउ दूरविमुक्कण्हाणओ[2]।
लाहालाहहणणवहबंधणसुहदुक्खे समाणओ ॥छ॥

तवि[3] तेत्थु ताव तें मुणिवरेण जमसंजमभारधुरंधरेण।
अट्ठ वि अंगइं अवहेरियाइं एयारह अंगइं धारियाइं।
जिह चित्तसुद्धि तिह पिंडसुद्धि तहु पवियंभइ थिर धम्मबुद्धि।
णउ सोवइ जग्गइ दियहु रत्ति सो करइ सव्वभूएसु[4] मेत्ति।
णिज्जणि वणि गिरिवरकुहरि वसइ विकहाउ[5] ण जंपइ णेय हसइ।

पर्यन्त आयु मानकर, भव्यों के लिए सूर्य वह फिर च्युत हुआ। इस भारतवर्ष में, जहाँ गृहशिखरों पर आरूढ़ होकर विद्याधर नृत्य करते हैं, ऐसा छत्रपुर नगर है। उसका सुप्रसिद्ध राजा नन्दीवर्धन था और उसकी देवी वीरवती। वह उसका पुत्र नन्द हुआ। वाहनों से युक्त वह अभिषेक को प्राप्त हुआ। वह कामदेव धरती का भोग कर और उसकी निन्दा कर प्रोष्ठिल मुनि के पास उसी प्रकार प्रव्रजित हो गया, जिस प्रकार ऋषभ को प्रणाम करते हुए बाहुबली प्रव्रजित हो गये थे।

घत्ता—वह मुनि हो गया। समचित्त अपने को वह क्षमा से भूषित करते हैं। स्तुति करने पर वह हर्ष नहीं करते और निन्दा करने पर क्रोध नहीं करते।

(5)

इस प्रकार अनासक्त, शल्यों से रहित, स्नान को दूर से छोड़नेवाले वह लाभ-अलाभ, हनन-वध-बन्धन और सुख-दुःख में समान थे। वहाँ तप कर, यम और संयम के भार में धुरन्धर उन मुनिवर ने आठों अंगों का पालन कर ग्यारह अंगों को धारण किया। जैसे-जैसे चित्तशुद्धि होती है, वैसे-वैसे शरीरशुद्धि होती है, और वैसे-वैसे ही स्थिर धर्मबुद्धि बढ़ने लगती है। दिन-रात, वह नहीं सोते हैं, जागते रहते हैं। वे सब प्राणियों के प्रति मित्रता रखते हैं। निर्जन वन और गिरिवर की गुफा में निवास करते हैं। विकथाएँ न कहते हैं और

---

3. A पुणु चउभव्वभाणु। 4. AP °खयरे। 5. A भारहछेत्तायरणि°। 6. AP णयरे। 7. AP पुण्णवंतु पुण्णा°। 8. A पोट्ठिलहो। 9. AP सो णउ।
(5) 1. AP अइणीसंगु। 2. AP °विमुक्कमाणओ। 3. A तवु तिव्वु तवंतें; P तवु तिव्वु ताव तें। 4. A सयं भूएसु। 5. A विकहा णउ जंपई।

उवसग्ग[6] परीसह सयल सहइ परमत्थसत्थवयणाइं कहइ।
णिच्चं पि पउंजइ णाणजोउ सद्दंसणु पोसइ [7]सहइ सोउ।
रिसिसंघहु वेज्जावच्चु करइ मिच्छामूढहं मिच्छत्तु हरइ।
जे मग्गभट्ठ ते मग्गि ठवइ विणएण पंचपरमेट्ठि णवइ।
आहारु देहु मेल्लिवि मुणिंदु मुउ अंतरालि[8] सुमरिवि जिणिंदु।
णियकायकंतिणिज्जियछणिंदु अच्चुइ संजायउ सुरवरिंदु।
बावीससमुद्दोवमचिराउ पंडुरु रयणित्तयतुंगकाउ[9]।
घत्ता—अइसुहुमु मणेण[10] वोलीणहिं बावीसहिं।
भुंजइ आहारु सुरहिउ वरिससहासहिं ॥5॥

(6)

दुवई—धुवणीसासु[1] मुयइ सो तेत्तियपक्खहिं दुहविहंजणो[2]।
जाणइ ताम जाम छट्ठावणि वड्ढियओहिदंसणो[3] ॥छ॥
परमागमसाहियदिव्वमाणि णिवसंतहु पुप्फुत्तरविमाणि।
जइयहुं वट्टइ[4] छम्मासु तासु परमाउमाउ[5] परमेसरासु।
तइयहुं सोहम्मसुराहिवेण पभणिउ कुबेरु इच्छियसिवेण।
इह जंबुदीवि भरहंतरालि रयणीयविसइ[6] सोहाविसालि।

हँसते हैं। समस्त उपसर्ग और परीषह सहन करते हैं। परमार्थ और सत्य वचन कहते हैं। नित्य ज्ञानयोग का प्रयोग करते हैं। सद्दर्शन का पोषण करते हैं, शोक को सहते हैं। मुनिसंघ की वैयावृत्य करते हैं। मिथ्यात्व में मोहित मूढ़ों का मिथ्यात्व दूर करते हैं। जो मार्ग से भ्रष्ट हैं, उन्हें मार्ग पर लाते हैं। पंचपरमेष्ठी को विनय के साथ प्रणाम करते हैं। वह मुनीन्द्र आहार और देह को छोड़कर तथा मन में जिनेन्द्र का स्मरण कर मृत्यु को प्राप्त हुए और अच्युत स्वर्ग में अपने शरीर की कान्ति से पूर्ण चन्द्र को जीतनेवाले सुरेन्द्र हुए। उनकी आयु बाईस सागर प्रमाण थी। तीन हाथ ऊँची सफेद काया थी।

घत्ता—बाईस हजार वर्ष बीत जाने पर (एक बार) मन से अत्यन्त सूक्ष्म सुरभित आहार ग्रहण करते हैं।

(6)

दुःख का नाश करनेवाले वह, उतने ही पक्षों में अर्थात् बाईसपक्ष में साँस लेते हैं। अपनी बढ़ी हुई अवधिज्ञानरूपी आँख से वहाँ तक जानते है जहाँ तक छठे नरक की भूमि है। परमशास्त्रों में कहे गये दिव्यमानवाले पुष्पोत्तर विमान में रहते हुए जब उन परमेश्वर की परमआयु के मात्र छह माह शेष रहे, तब कल्याण चाहनेवाले सौधर्म स्वर्ग के इन्द्र ने कुबेर से कहा—"इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में धूल से रहित, शोभा से विशाल कुण्डपुर में कल्याणकारी राजा सिद्धार्थ है, जो श्रीधर (विष्णु) होते हुए, याचक के वामनरूप से रहित है (मग्गणवेसरहिउ);

6. A reads *a* as *b* and *b* as *a*. 7. AP समइ। 8. AP अंतयालि। 9. A रयणित्तिय°; K रयणत्तय°। 10. AP खणेण।
(6) 1. AP धुउ। 2. A °विहंसणो; P °विहसणे। 3. P °दंसणे। 4. P वड्डइ। 5. AP °माणु। 6. A रमणीय°।

कुंडउरि[7] राउ सिद्धत्थु सहिउ[8] जो सिरिहरु मग्गणवेसरहिउ।
अकवालचोज्जु[9] जो देउ रुद्दु अमहिउ सुरेहिं जो गुणसमुद्दु।
ण गिलिउ गहेण जो समरसूरु जो धम्माणंदु ण सघरदूरु।
जो णरु अविहंदलि दलियमल्लु जो[10] परणरणाहहु जणइ सल्लु।
[11]अणिवेसियणियमंडलकुरंगु जो भुवणइंदु[12] अविहंडियंगु।
जो कामधेणु पसुभावचुक्कु जो चिंतामणि चिंताविमुक्कु।
अणवरयचाइ चाएण धण्णु[13] असहोयररिउ सयमेव कण्णु।
दोबाहु वि जो रणि सहसबाहु सुहिदिण्णजीउ[14] जीमूयवाहु।
दालिद्दहारि रायाहिराउ जो कप्परुक्खु णउ[15] कट्ठभाउ।

घत्ता—पियकारिणि देवि तुंगकुंभिकुंभत्थणि।
तहु रायहु इट्ठ णारीयणचूडामणि ॥6॥

(7)

दुवई—एयहं बिहिं मि जक्ख कमलक्ख सलक्खणु रक्खियासवो।
चउवीसमु जिणिंदु सुउ होही पयजुयणवियवासवो ॥छ॥

जो रुद्र (प्रचण्ड, शिव) होते हुए भी 'अकपाल चोज्ज' (दुःखी व्यक्तियों के लिए आश्चर्यकर, कपाल रहित होने पर भी शिव, इस आश्चर्य से युक्त) है, गुणों के समुद्र होते हुए भी, जो देवों के द्वारा अमथित है (मथा नहीं गया); जो समरशूर होते हुए भी ग्रह (राहु, दुराग्रह) से कभी पीड़ित नहीं हुआ, जो धम्मनन्द (धनुष से आनन्द करनेवाला, युधिष्ठिर) होते हुए अपने घर से दूर नहीं था। जो मल्लों को दलित करनेवाला णरु (पार्थ अर्थात् अर्जुन) होकर भी विहन्दल (विहन्दल नाम का नर्तक) नहीं था। (पक्ष में) जिसकी सेना पाप से रहित थी। जो शत्रु-राजाओं के लिए शल्यकारक था; जो अपने मण्डल में निरन्तर बस्तियाँ स्थापित करनेवाल था, जो अविघटितांग भुवनेन्द्र था, जो पशुभाव से रहित कामधेनु था, जो चिन्ता से रहित चिन्तामणि था, जो अनवरत त्याग और चाप से धन्य था। दुष्टों के लिए शत्रु जो स्वयं कर्ण था। दो बाँहोंवाला होते हुए भी जो युद्ध में सहस्रबाहु था, जो सुधीजनों को जीवनदान देनेवाला सुबाहु था, जो दारिद्र्य का हरण करनेवाला राजाधिराज था, जो कल्पवृक्ष होते हुए भी काष्ठभाव से रहित था।

घत्ता—विशालगज के कुम्भस्थल की तरह स्तनोंवाली उसकी प्रियकारिणी देवी थी, जो नारीजनों में श्रेष्ठ और राजा के लिए अत्यन्त प्रिय थी।

(7)

हे कमलाक्ष यक्ष ! आश्रितों की रक्षा करनेवाले लक्षणों से युक्त चौबीसवें तीर्थंकर, इन दोनों के ही पुत्र

---

7. A कुंडलउरि। 8. A सहिउ। 9. AP अकवालभोज्जु। 10. AP रिउ भीसु वि ण पर महाणासिल्लु। 11. AP सुणिवेसिय; K records a p : सुणिवेशितेति वा पाठः। सुनिवेशितो निजमण्डले कु रं गु पृथ्वीरमणीयत्ता येन। 12. AP भुवणयंदु। 13. A घण्णु। 14. AP दिण्णु जीउ। 15. A हयकट्ठभाउ।

एयहं दोहिं मि [1]सुरसिरिविलासु करि धणय कणयभासुरु णिवासु।
ता कयउ कुंडपुरु तेण चारु सव्वत्थ रयणपायारभारु[2]।
सव्वत्थ रइयणाणादुवारु सव्वत्थ परिहपरिरुद्धचारु।
सव्वत्थ फलियणंदणवणालु सव्वत्थ तरुणिणच्चणवमालु।
सव्वत्थ धवलपासायवंतु सव्वत्थ सिहरचुंबियणहंतु।
सव्वत्थ फलिहबद्धावणिल्लु सव्वत्थ घुसिणरसछडयगिल्लु।
सव्वत्थ णिहित्तविचित्तफुल्लु सव्वत्थ [3]सुफुल्लंधयपियल्लु।
सव्वत्थ वि दिव्वपसंडिपिंगु सव्वत्थ वि मोत्तियरइयरंगु।
सव्वत्थ वि वेरुलिएहिं फुरइ सव्वत्थ वि ससिकंतेहिं झरइ।
सव्वत्थ वि रविकंतेहिं जलइ सव्वत्थ चलियचिंधेहिं चलइ।
सव्वत्थ पडहमद्दलरवालु[4] सव्वत्थ णडियणडणट्टसालु।
सव्वत्थ णारिणेउरणिघोसु सव्वत्थ सोम्मु[5] परिगलियदोसु।

घत्ता—पहुपंगणि तेत्थु वंदियचरमजिणिंदें[6]।
छम्मास विरइय रयणविट्ठि जक्खिदें ॥7॥

(8)

दुवई—ठियसउहयलणिहियसयणयलइ[1] सयलदुहोहहारिणी।
णिसि णिद्दंगयाइ सिविणावलि दीसइ सोक्खकारिणी ॥छ॥

होंगे। हे धनद ! तुम इन दोनों के लिए देवश्री के विलास से युक्त स्वर्ण की तरह चमकते हुए निवास की रचना करो।" तब उस यक्ष ने सुन्दर कुण्डपुर की रचना की। सर्वत्र रत्नमय प्राकारों का समूह था। सर्वत्र नाना द्वार रचित थे। सर्वत्र सुन्दर परिखाओं से वेष्ठित था। सर्वत्र नन्दनवन फलित थे। सर्वत्र युवतियों के नृत्य का कोलाहल था। सर्वत्र धवल-प्रासादोंवाला था। सर्वत्र शिखरों से आकाश को चूम रहा था। सर्वत्र स्फटिक मणियों से विजड़ित धरतीवाला था। सर्वत्र केशर के छिड़काव से गीला (आर्द्र) था। सर्वत्र विचित्र फूल लगे हुए थे। सर्वत्र भ्रमरों से प्रिय था। सर्वत्र दिव्य स्वर्ण से पीतिमा थी। सर्वत्र मोतियों से रचित रंगोली थी। सर्वत्र वैदूर्य मणियों की चमक थी। सर्वत्र चन्द्रकान्त मणियों से वह झर रहा था। सर्वत्र सूर्यकान्त मणियों से प्रज्वलित था। वहाँ सर्वत्र चंचल पताकाएँ फहरा रही थीं। वह सर्वत्र पटह और मृदंग के कोलाहल से पूर्ण था। सर्वत्र नाट्य शालाओं में नटों का नृत्य हो रहा था। सर्वत्र नारियों के नूपुरों की झंकार थी। सर्वत्र सौम्य तथा दोष से रहित था।

घत्ता—राजा के प्रांगण में, अन्तिम जिनेन्द्र की वन्दना करनेवाले कुबेर ने छह माह तक रत्नों की वर्षा की।

(8)

श्रीसौध-तल पर निहित शयनतल पर नींद में सोई हुई, सकल दुःख-समूह का हरण करनेवाली प्रियकारिणी

---

(7) 1. AP सुरसरि°। 2. A °पायारसाल। 3. A सुफुल्लिंलधुय°। 4. AP °मंदल°। 5. P सोमु। 6. AP °चरिम°।
(8) 1. AP सिय°।

सुरिंदच्छराथोत्तसंमाणियाए सुसिद्धत्थसिद्धत्थराणियाए।
सलीलं चरंतो चलो णं गिरिंदो जिणंबाइ दिट्ठो पमत्तो करिंदो।
विसेसो विलंबंतसण्हासमेओ हरी भीसणो दिव्वलच्छीअहिसेओ।
वरं दामजुम्मं विहू वीअधंतो[2] रवी रस्सिजालावलीविप्फुरंतो।
सरंते सरंतं[3] विसारीण दंदं घडाणं जुयं लोयकल्लाणवंदं।
पहुल्लंतराईवराइंणिवासो पवड्ढंतवेलाविसासो[4] सरीसो।
पहाउज्जलं हेमसेहीरपीढं[5] महाहिंदहम्मं[6] विलासेहिं रूढं।
मरुद्धूयचिंधं सुभित्तीविचित्तं घरं चारु [7]आहंडलीयं पवित्तं।
मणीणं[8] समूहं पहाविप्फुरंतं परं सोहमाणं तमोहं हरंतं।
जलंतो हुयासो धरायासधामे णियच्छेवि[9] दीहच्छि सामाविरामे।
विउद्धा गया जत्थ रायाहिराओ [10]धरित्तीसचूडामणीघिट्ठपाओ[11]।
पियाए सुहं दंसणाणं वरिट्ठं फलं पुच्छियं तेण सिट्ठं विसिट्ठं[12]।
सुओ तुज्झ होही महादेवदेवो महावीयराओ विमुक्कावलेवो।
महावीरवीरो महामोक्खगामी तिलोयडउ [13]वंदो तिलोयस्स सामी।

घत्ता—घरपंगणि[14] तासु रायहु सुहपब्भारहिं।
वुट्ठउ धणणाहु अविहंडियधणधारहिं ॥8॥

ने रात्रि में सुखद स्वप्नावलि देखी। सुरेन्द्र की अप्सराओं के स्तोत्रों से सम्मानित, परिपूर्णार्थ, सिद्धार्थ की रानी, जिनदेव की माता प्रियकारिणी ने देखा—लीलापूर्वक चलता हुआ चंचल एवं गिरीन्द्र की भाँति प्रमत्त गजेन्द्र, लटकते हुए गलकम्बलों वाला वृषभेन्द्र, भयंकर सिंह, दिव्य लक्ष्मी का अभिषेक, श्रेष्ठ मालायुग्म, अन्धकार को नष्ट करनेवाला चन्द्रमा, किरणावलि से चमकता हुआ सूर्य, सरोवर में चलता हुआ मत्स्यों का जोड़ा, लोककल्याण का समूह कलशों का युगल, खिले हुए कमलों की पंक्तियों का निवास सरोवर, अपनी मर्यादा का विस्तार करता हुआ समुद्र, प्रभा से उज्ज्वल स्वर्ण सिंहासन, विलासों से प्रसिद्ध नागलोक। हवा से उड़ते ध्वजों से युक्त, सुन्दर भित्तियों से विचित्र, सुन्दर और पवित्र इन्द्र का विमान। प्रभा से भास्वर, अत्यन्त शोभित और अन्धकार का हरण करता हुआ मणियों का समूह। आकाश और धरती के बीच प्रज्वलित अग्नि। रात्रि के अन्तिम प्रहर में इन स्वप्नों को देखकर, सबेरे जागकर वह वहाँ गयी जहाँ धरती के नरेशों के चूड़ामणियों से जिसके पैर घर्षित होते हैं, ऐसा राजाधिराज सिद्धार्थ का कक्ष था। प्रिया ने स्वप्नों का शुभ फल पूछा। उसने भी विशेषरूप से कहा कि महादेव- देव तुम्हारा पुत्र होगा—महावीतराग और अहंकार से शून्य। महावीर, वीर, मोक्षगामी, त्रिलोक के द्वारा वन्दनीय और त्रिलोक का स्वामी।

घत्ता—उस राजा के आँगन में सुख के प्रभारों से युक्त अखण्डित धन-धाराओं के द्वारा कुबेर स्वयं बरस गया।

---

2. A वीयवंतो। 3. A तरंत। 4. A °विसालो। 5. A °सेहीरवीढं। 6. A महाइंद°। 7. AP कुंभीणसीयं। 8. AP read this line as : महग्घो अलंघो फुरंतो जसोहो (A ससोहो), महाकंतिजुत्तो मणीणं समूहो। 9. A णियच्छेइ। 10. A सचूलामणी। 11. AP °घट्ट°। 12. A वसिट्ठं। 13. P विंदो। 14. B घरप्पंगणि।

(9)

दुवई—कयविब्भमविलास परमेसरि बालमरालचारिणी[1]।
कंकणहारदोरकडिसुत्तयकुंडलमउडधारिणी[2] ॥छ॥

चंदक्ककंति[3] संपण्णकित्ति[4]।
सिरि हिरि सलच्छि दिहि पंकयच्छि।
सइ[5] कित्ति बुद्धि कयगब्भसुद्धि।
आसाढमासि ससियरपयासि।
पक्खंतरालि हयतिमिरजालि।
दिसणिम्मलम्मि[6] छट्ठीदिणम्मि।
संसारसेउ थिउ गब्भि देउ।
संपण्णहिट्ठि[7] कय कणयविट्ठि।
जक्खेण ताम णवमास जाम।
मासम्मि पत्ति चित्ताणिउत्ति।
सियतेरसीइ जणिओ सईइ।
जिणु [8]भुवणणाहु भम्माहदेहु।
मुणिभासियाइ पण्णासियाइ।
सह दोसयाइं जइयहुं गयाइं।
णिव्वुइ जिणिंदि अहतिमिरयंदि[9]।
सिरिपासणाहि लच्छीसणाहि।
तणुकंतिकंतु तइयहुं तियंतु[10]।

(9)

किया है विभ्रम विलास जिन्होंने ऐसी, तथा बालहंस के समान चलनेवाली, कंकण, हार, डोर, कटिसूत्र, कुण्डल और मुकुट धारण करनेवाली परमेश्वरी, चन्द्र और सूर्य के समान कान्तिवाली, सम्पूर्ण कीर्ति से युक्त श्री, लक्ष्मीसहित ही, कमलनयनी धृति, शची, कीर्ति और बुद्धि देवियों ने गर्भशुद्धि की। असाढ़ माह की चन्द्रकिरणों से प्रकाशित तथा तिमिरजाल को नष्ट करनेवाले शुक्लपक्ष में दिशाओं से निर्मल छठी के दिन, संसारसेतु वह गर्भ में स्थित हुए। यक्ष ने हर्ष उत्पन्न करनेवाली कनकवृष्टि तब तक की, जब तक नौ मास नहीं हुए। नौवाँ मास पूर्ण होने पर, चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन, देवी ने स्वर्णप्रभ भुवनस्वामी जिन (जिनदेव) को जन्म दिया। पापरूपी अन्धकार के लिए चन्द्रमा और लक्ष्मी के स्वामी पार्श्वनाथ के निर्वाण प्राप्त कर लेने पर, मुनियों के द्वारा भाषित जब दो सौ पचास वर्ष बीत गये, तब शरीर की कान्ति से कान्त, जन्म-जरा-मृत्यु

(9) 1. A °गामिणी। 2. A °मउल°। 3. AP चंदक्कदित्ति। 4. AP संपत्तकित्ति। 5. P सई कंति। 6. K omits this line. 7. A संपत्तहिट्ठि; P संपण्णहिट्ठि। 8. A भवण°। 9. P तिमिरइंदे। 10. A तवंतु; P तयंतु।

वद्धाउमाणु सिरिवड्ढमाणु।
जइवहु[11] पहूउ जयतिलयभूउ।
घत्ता—पयणिहिखीरेहिं कलसहिं जियछणयंदहिं।
अहिसित्तु[12] जिणिंदु मंदरसिहरे सुरिंदहिं ॥9॥

(10)

दुवई—पुज्जिउ पुज्जणिज्जु मणिदामहिं भूसिउ भुवणभूसणो।
संथुउ चित्तवित्तवावारिहिं[1] कुसमयरइयदूसणो ॥छ॥
आघोसिउ णामें वड्ढमाणु जगि भणमि भडारउ कहु[2] समाणु।
जो[3] पेक्खिवि णउ गंभीरु उवहि जो पेक्खिवि ण थिरु गिरिंदु समहि।
जो पेक्खिवि चंदु ण कंतिकंतु[4] जो पेक्खिवि सूरु ण तेयवंतु।
मज्झत्थभाउ सुहसुक्कलेसु[5] णं धम्मु[6] परिट्ठिउ पुरिसवेसु।
बुज्झियपरमक्खरकारणेहिं जो संजयविजयहिं चारणेहिं।
अवलोइउ सेसवि देवदेउ णट्ठउ भीसणु संदेहहेउ।
सम्मइ कोक्किउ संजमधणेहिं विरइयगुरुविणयपयाहिणेहिं[7]।

का अन्त करनेवाले, निश्चित आयु प्रमाणवाले, यतियों के प्रभु, विश्व के विजयतिलकस्वरूप श्रीवर्धमान उत्पन्न हुए।

घत्ता—पूर्णचन्द्र को जीतनेवाले, सुरेन्द्रों द्वारा क्षीरसागर के जल से भरे कलशों से जिनेन्द्र का अभिषेक किया गया।

(10)

पूज्यनीय भी पूजित हुए। भुवनभूषण भी मणिमालाओं से भूषित हुए। खोटे शास्त्रों को दूषित करनेवाले उनकी नाना प्रकार के वृत्त-व्यापारों द्वारा संस्तुति की गयी। नाम से उन्हें वर्धमान घोषित किया गया। विश्व में आदरणीय को किसके समान बताऊँ ? उन्हें देखकर समुद्र गम्भीर नहीं रहता, उन्हें देखकर धरती सहित गिरीन्द्र स्थिर नहीं रहता, उन्हें देखकर चन्द्रमा कान्ति से कान्त नहीं रहता, उन्हें देखकर सूर्य तेजस्वी नहीं रहता। शुभ शुक्ल लेश्यावाले मध्यस्थभावी वह ऐसे लगते थे, मानो पुरुष वेश में धर्म प्रतिष्ठित हो। जान लिया है परमाक्षरों को तथा उनके कारण को जिन्होंने ऐसे संजय और विजय नाम के चारण मुनियों ने बचपन में देवदेव को देखा और उनके सन्देह का कारण दूर हो गया। जिन्होंने महान् विनयवाली प्रदक्षिणा की है, ऐसे उन संयमधन मुनियों ने उन्हें सन्मति कहकर पुकारा। अभिषेक जल से मन्दराचल को धोनेवाले इन्द्र

11. AP जइवइ। 12. A अहसित्तु।

(10) 1. AP °वित्तयरवाणिहिं। 2. A वहु समाणु। 3. AP read a as b and b as a. 4. AP कंतिवंतु। 5. AP सुहसुक°। 6. A धम्मि। 7. A °पयासणेहिं।

अहिसेयसलिलधुयमंदरेण जो[8] णिब्भउ भणिउ पुरंदरेण।
तं णिसुणिवि देवें संगमेण होइवि भीमें उरजंगमेण।
णंदणवणि कीलातरु णिरुद्धु गय सहयर सिसु थिउ तिजगबंधु।
तहु फणिमाणिक्कइं फंसमाणु अविउलु अचलु[9] वि सिरिवड्ढमाणु।
घत्ता—फणमुहदाढाउ[10] कर फुसंतु णउ संकिउ।
पुज्जिवि देवेण वीरणाहु तहिं[11] कोक्किउ ॥10॥

(11)

दुवई—जं सिसुदंसणेण[1] रिउणो वि हु होंति विमुक्कमच्छरा।
जस्स[2] कुमारकालपरिवट्टणववगय तीस वच्छरा। छ।।
जो सत्तहत्थ सुपमाणियंगु जें विद्धंसिउ दूसहु अणंगु।
णिव्वेइउ सो मउलियकरेहिं संबोहिउ लोयंतियसुरेहिं।
अहिसिंचिउ पुणु[3] सयलामरेहिं विज्जिज्जंतउ चामरवरेहिं[4]।
चंदप्पहसिवियहि पहु चडिण्णु[5] तहिं णाहु[6] संडवणि णवर[7] दिण्णु।
मग्गसिरकसणदसमीदिणंति संजायइ तियसुच्छवि महंति।
खीणइ चरियावरणपंकि हत्थुत्तरमज्झासिइ[8] ससंकि।

ने जो उन्हें निर्भय कहा, उसे सुनकर संगमदेव ने भीषण साँप बनकर नन्दनवन में क्रीड़ातरु को अवरुद्ध कर लिया। सब सहचर भाग गये, लेकिन त्रिजगबन्धु शिशु वहाँ रह गया। उसके फन के माणिक्यों को छूते हुए श्रीवर्धमान अक्षुब्ध और अचल थे।

घत्ता—साँप के मुख की दाढ़ों में हाथ डालते हुए भी वह शंकित नहीं हुए। देव ने पूजाकर उनका नाम वीरनाथ कहा।

(11)

जिस शिशु के दर्शन से शत्रु भी मत्सर से रहित हो जाते हैं, ऐसे उनके कुमार-काल के प्रवर्तन में तीस साल समाप्त हो गये। जो सात हाथ के प्रमाणित शरीरवाले थे, जिन्होंने असह्य कामदेव को ध्वस्त कर दिया था, ऐसे उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। लौकान्तिक देवों ने हाथ जोड़कर उन्हें सम्बोधित किया। श्रेष्ठ चामरों द्वारा हवा किये जाते हुए, उनका समस्त देवों द्वारा पुनः अभिषेक किया गया। चन्द्रप्रभ शिविका पर आरूढ़ होकर प्रभु ने खण्डवन में गमन किया। मार्गशीर्ष के कृष्णपक्ष में दशमी के दिन, देवों के द्वारा किये गये उत्सव में, चारित्रावरण कर्म के नष्ट होने पर, चन्द्रमा के हस्त और उत्तराफाल्गुन नक्षत्रों के मध्य में स्थित

8. P omits this foot. 9. AP अविचलु। 10. AP फणिमुह°। 11. A तहो।

(11) 1. A जस्स सुदंसणेण। 2. P तस्स। 3. AP सो। 5. A चामरधरेहिं; P चलचामरेहिं। 5. P चडिल्लु। 6. AP णाह। 7. A णायसंडु°। 8. A °मज्झासिय°।

छट्ठोववासु किउ मलहरेण तवचरणु लइउ परमेसरेण।
मणिमयपडलें लेप्पिणु ससेस इंदें खीरण्णवि घित्त केस।

घत्ता—परमेट्ठि रिसिंदु थिउ पडिवज्जिवि संजमु।
थुउ भरहणरेहिं पुप्फयंतवंदियकमु ॥11॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे वीरणाहणिक्खवणवण्णणो[9] णाम छण्णउदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥96॥

होने पर, मल का हरण करनेवाले परमेश्वर ने तीन दिन का उपवास (छह समय का भक्तप्रत्याख्यान कर तेला अर्थात् तीन दिन का उपवास) कर तपश्चरण ले लिया। इन्द्र ने उनके समस्त केश मणिमय पटल में रखकर क्षीरसमुद्र में विसर्जित कर दिये।

घत्ता—इस प्रकार परमेष्ठी मुनीन्द्र संयम लेकर स्थित हो गये। पुष्पदन्त के द्वारा वन्दितचरण उनकी भरत के जनों ने स्तुति की।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारोंवाले इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का तीर्थंकर महावीर का निष्क्रमण-वर्णन (दीक्षा-धारण) नाम का छियानवेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

9. AP °णिक्खवणं।

सत्तणउदिमो संधि

मणपज्जयसंजुत्तउ देवदेउ थिरचित्तउ।
तारहारपंडुरघरि कूलगामणामइ[1] पुरि ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

भिक्खहि परमेसरु पइसरइ घरि घरि सुसमंजसु संचरइ[2]।
मणपज्जयणयणें[3] परियरिउ कूलहु घरपंगणि[4] अवयरिउ।
रायहु पियंगुवण्णुज्जलहु पणवंतहु मउलियकरयलहु।
थिउ भुयणणाहु दिण्णउ असणु णवकोडिसुद्धु मुणि दिव्वसणु[5]।
तं लेप्पिणु किर जा णीसरिउ ता भूमिभाउ रयणहिं भरिउ।
देवहिं जयतूरइं ताडियइं गयणयलहु फुल्लइं पाडियइं।
भो चारु दाणु उग्घोसियउं अइसुरहिउं पाणिउं वरसियउं[6]।
मंदाणिलु वूढउ सीयलउ णिउ णरवंदिउ बहुगुणणिलउ।
एत्तहि दुक्कम्मइं णिट्ठवइ भीसणि णिज्जणि वणि दिणु गमइ।
जिणु जिणकप्पेण जि चक्कमइ[7] जो पाणहारि तासु[8] वि खमइ।

सत्तानवेवीं सन्धि

(1)

मनःपर्ययज्ञान से युक्त और स्थिरचित्त देवदेव परमेश्वर निर्मलहार के समान धवलगृहोंवाले कूलग्राम नगर में परमेश्वर भिक्षा के लिए प्रवेश करते हैं। न्यायवान् वह घर-घर जाते हैं। मनःपर्ययज्ञान से सहित वह कूल (राजा) के गृह-आँगन में आये। प्रियंगुलता के वर्ण के समान उज्ज्वल हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए राजा के यहाँ भुवननाथ ठहर गये। नौ प्रकार से शुद्ध दिये गये उस आहार को ग्रहण कर वह दिगम्बर मुनि जैसे ही बाहर निकले, वैसे ही भूमिभाग रत्नों से भर गया। देवों ने जयतूर्य बजाये। आकाशतल से फूलों की वर्षा हुई। 'अहो ! बहुत सुन्दर आहार' यह उद्घोष किया गया। अत्यन्त सुगन्धित जल की वर्षा हुई। शीतल मन्द पवन बहा। अनेक गुणों का घर राजा मनुष्यों के द्वारा वन्दित हुआ। यहाँ महावीर दुष्कर्मों का नाश करते हैं, भीषण निर्जन वन में दिन बिताते हैं। जिनवर जिन के आचरण से परिभ्रमण करते हैं। जो प्राणों का अपहरणकर्ता है उसे भी क्षमा कर देते हैं।

---

(1) 1. AP णामे। 2. AP संसरइ। 3. AP °पज्जयणाणें। 4. B °पंगणि। 5. P दिव्ववसणु। 6. AP वरिसियउं। 7. AP चिक्कमइ। 8. AP तासु जि।

घत्ता—सुणहसीहसीयालहं[9] ओरसियहं सदूलहं।
वणि अच्छइ उब्भुब्भउ रयणिहि णं थिरु[10] खंभउ ॥1॥

(2)

ण करइ सरीरसंठप्पविहि[1] सुपरीसह सहइ ण मुयइ दिहि।
वड्ढंतकेसजडमालियउ णं चंदणु फणिउलमालियउ[2]।
उज्जेणिहि पिउवणि भययरिहि तमकसणहि भीमविहावरिहि।
अण्णहिं दिणि सिद्धिपुरंधिपिउ पिउवणि पडिमाजोएण थिउ।
जोईसरु [3]जणजणणत्तिहरु अवलोइउ रुद्दें परमपरु।
मइं कयउवसग्गहु किं तसइ णियचरियगिरिंदहु किं ल्हसइ।
किं णउ णंदणु पियकारिणिहि जोयउ[4] जिणु सम्मइधारिणिहि[5]।
इय चिंतिवि जेट्ठातणुरुहिण पिंगच्छिभिउडिभीसणमुहिण।
बेयाल कालकंकालधर करवालसूलझसपरसुकर।
पिंगुद्धकेस दीहरणहर किलिकिलिरवबहिरियभुवणहर।
चोइय धाइय हरि दिण्णकम फुप्फुप्फुयंत[6] विसि विसविसम।

घत्ता—कयभुवणयलविमद्दें पुणु वि हरेण रउद्दें।
णियविज्जहिं दरिसाविउ गुरु पाउसु वरिसाविउ ॥2॥

घत्ता—कुत्तों, सिंहों, शृगालों और दहाड़ते हुए शार्दूलों के उस वन में रात्रि में दोनों हाथ ऊपर कर इस प्रकार रहते हैं, मानो स्थिर खम्भा हों।

(2)

वह शरीर की संस्कार-विधि नहीं करते। बड़े-बड़े परीषह सहन करते हैं, परन्तु धैर्य नहीं छोड़ते। बढ़े हुए केशों की जटाओं से घिरे हुए ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो नागकुल से घिरा हुआ चन्दन वृक्ष हो। वह उज्जयिनी के मरघट में, अन्धकार से काली भयंकर रात्रि में स्थित थे। दूसरे दिन, सिद्धि रूपी इन्द्राणी के प्रिय वह मरघट में प्रतिमायोग में स्थित हो गये। रुद्र ने लोगों की जन्मपीड़ा का हरण करनेवाले परमश्रेष्ठ योगीश्वर को देखा। 'क्या यह मेरे द्वारा किये गये उपसर्ग से त्रस्त होते हैं और अपने चर्यारूपी पर्वत से गिरते हैं ? सम्यक्त्व धारण करनेवाली प्रियकारिणी का यह पुत्र !' यह विचार कर, पीली आँखों और भौंहों से भीषण मुखवाले बड़े लड़के ने काल-कंकाल धारण करनेवाले, जिनके हाथों में तलवार, शूल, झस और फरसे हैं, ऐसे पीले और खड़े केशोंवाले, लम्बे नाखूनोंवाले, अपने किलि किलि शब्द से भुवनगृह को बहरा बना देनेवाले वेताल प्रेरित किये। पैर बढ़ाते हुए सिंह, तथा विष से विषम फुफकारते से हुए साँप दौड़े।

घत्ता—जिसने विश्वतत्त्व का विमर्दन किया है, ऐसे रौद्र हर ने अपनी विद्या से प्रदर्शन किया और भयंकर पावस की वर्षा की!

---

9. A सुणय°; P omits सीह। 10. P थिरखंभउ।

(2) 1. AP °सकप्पविहि, 2. AP फणिओमालियउ। 3. AP जिणु जणण°। 4. AP जोयहुं। 5. AP सुम्मइ°। 6. AP फणि पुप्फुयंत बहु विसि विसम।

(3)

पुणु वणयरगणु[1] कयपडिखलणु　　पुणु[2] धगधगंतु[3] जालिउ जलणु।
देविंदचंददप्पहरणइं[4]　　पुणु मुक्कइं णाणापहरणइं।
सव्वइं गयाइं[5] विहलाइं किह　　किविणहु मंदिरि दीणाइं जिह।
सच्चइतणएण पवुत्तु हलि　　गिरिवरसुइ वियसियमुहकमलि।
वीरहु वीरत्तु[6] ण संचलइ　　किं मेरुसिहरि कत्थइ ढलइ।
इय भणिवि बे वि वंदिवि गयइं　　वसहारूढइं [7]रइरसरयइं।
चेडयरायहु[8] लयललियभुय　　णियपुरवरि चंदण णाम सुय।
णंदणवणि कीलइ कमलमुहि　　जिह जणणिजणणु ण वि मुणइ सुहि।

घत्ता—तिह विलसियवम्मीसें णिय केण वि खयरीसें।
पुणु णियघरिणिहि भीएं वणि घल्लिय [9]सुविणीएं ॥3॥

(4)

णियबंधुविओयविसण्णमइ　　तहिं[1] दिट्ठी वाहें हंसगइ।
धणयत्तें वसहयत्तवणिहि　　तें दिण्णी वणिचूडामणिहि।
वणिणा णियमंदिरि णिहिय सइ　　रूवेण णाइं पच्चक्ख रइ।

(3)

फिर उसने प्रतिस्खलन करनेवाला वनचरगण भेजा। फिर धकधक कर जलती हुई आग। फिर देवेन्द्र चन्द्र के दर्प का हरण करनेवाले नाना प्रकार के अस्त्र छोड़े। वे सब वैसे ही विफल चले गये, जैसे कंजूस के घर से दीन लोग चले जाते हैं। फिर एक दिन, जिसका मुखरूपी कमल विकसित है, ऐसी गिरिवर-सुता शिवा ने कहा—"वीर अपनी वीरता से च्युत नहीं हो रहे हैं, क्या सुमेरु पर्वत कभी ढलता है ?" यह कहकर रतिरस में लीन, बैल पर सवार वे दोनों (शिव और पार्वती) उनकी वन्दना करके चले गये। चेटक राजा की लता के समान कोमल हाथोंवाली, चन्दना नाम की कन्या अपने नगर में श्रेष्ठ थी। वह कमलमुखी नन्दनवन में खेल रही थी। किसी प्रकार माता-पिता और सुधीजन नहीं जान सके।

घत्ता—कामदेव से विलसित विद्याधर उसे उठा ले गया और फिर अपनी पत्नी के डर से उस विनीत ने वन में डाल दिया।

(4)

अपने बन्धुजनों के वियोग से दुःखी मन से उसे वहाँ भील ने देखा। उसने उसे वणिकों में श्रेष्ठ सेठ वृषभदत्त को धन की आशा में दे दिया। सेठ ने उसे अपने घर रख लिया। रूप में वह साक्षात् रति थी।

(3) 1. A वणयरगण; P धणयरगुणु। 2. A omits पुणु। 3. A °धगंत। 4. A °चंद°। 5. AP विगयइं। 6. AP धीरत्तु। 7. AP रयरस°। 8. P चेडल°। 9. A दुविणीएं।

(4) 1. A तेहिं।

पडिवक्खगुणेहिं विमद्दियइ चिंतिउ तहु पियइ सुहद्दियइ।
एही कुमारि जइ रमइ वरु तो पुणु महुं दुक्करु होइ घरु।
एयहि[2] केरउं सहुं जोव्वणेण णासमि वररूउ कुभोयणेण।
इय भणिवि णियंबिणि रोसवस घल्लंति भीमदुव्वयणकस।
कोद्दवकूरहु सराउ भरिउ सहुं कंजिएण रसपरिहरिउ।
सा णिच्च देइ तहि णवणवउं एत्तहि परमेट्ठि सुभइरवउं।
गुरुपावभावभरववसियउं विसहेप्पिणु हरदुव्विलसियउं।
समसत्तुमित्तुजीवियमरणु अण्णहिं दिणि भव्वसमुद्धरणु।
पिंडत्थिउ जाणियजीवगइ कोसंबीपुरवरि पइसरइ।

घत्ता—णियलणिरुद्धपयाइं चेडयणिवदुहियाइ[3]।
आविवि संमुहियाइ पणवेप्पिणु दुहियाइ ॥4॥

(5)

कोद्दवसित्थइं सरावि कयइं सउवीरविमीसइं हयमयइं।
मुणिणाहहु करयलि ढोइयइं तेण वि णियदिट्ठिइ जोइयइं।
जायाइं भोज्जु रसदिण्णदिहि अट्ठारहखंडपयारविहि।
जिणदाणपहावें दुद्दमइं आयसघडियइं रोहियकमइं।
सज्जणमणणयणाणंदणहि परिगलियइं णियलइं चंदणहि।
अमरहिं महुयरमुहपेल्लियइं कुंदइं मंदारइं घल्लियइं।

उसकी सौतपक्ष के गुणों से विमर्दित प्रिया सुभद्रा ने सोचा कि यदि यह कुमारी वर से रमण करती है, तो मेरे लिए यह घर कठिन हो जाएगा। इसके यौवन के साथ सुन्दर रूप को खराब भोजन के द्वारा नष्ट करती हूँ—यह विचार कर तथा क्रोध से अभिभूत होकर वह भीषण दुर्वचन रूपी कोड़ों से मारने लगी। वह कोदों की चूरी से भरा हुआ तथा नीरस काँजी के साथ प्रतिदिन नया-नया सकोरा देने लगी। उसी समय परमेष्ठी, अत्यन्त भयंकर, भारी पाप-भाव के भार से व्यवसित, हर के दुर्विलास को सहकर, शत्रु-मित्र व जीवन-मरण में समचित्त, तथा भव्यों का उद्धार करनेवाले, जीवगति को जाननेवाले महावीर ने आहार के लिए कौशाम्बी नगरी में प्रवेश किया।

घत्ता—जिसके पैर बेड़ियों से जकड़े हुए हैं, ऐसी सामने आयी हुई, दुःखिनी, चेटक राजा की कन्या ने—

(5)

सकोरे में रखे हुए, काँजी से मिले हुए, मद का नाश करनेवाले कोंदों के कण मुनिनाथ महावीर के करतल पर रख दिये। उन्होंने भी, अपनी दृष्टि से उन्हें देखा। जिसमें रस की दृष्टि दी गयी है, ऐसा वह अठारह प्रकार का भोजन बन गया। जिनवर के दान के प्रभाव से, सज्जनों के मन एवं नेत्रों को आनन्द देनेवाली चन्दना की पैरों को जकड़नेवाली लोहे से निर्मित बेड़ियाँ टूट गयीं। देवों ने मधुकरों के मुखों से प्रेरित जुही

2. P एयहो। 3. AP दिहुउ। 4. A °सूय°।

रयणाइं वण्णकब्बुरियाइं [1]पसरंतकिरणविप्फुरियाइं।
हय[2] दुंदुहि साहुक्कारु कउ गुणिसंगें कासु ण जाउ जउ।
कण्णहि गुणोहु विउसेहिं थुउ सहुं बंधवेहिं संजोउ हुउ।
बारहसंवच्छरतवचरणु किउ सम्मइणा दुक्कियहरणु।
पोसंतु अहिंस खंति ससहि[3] भयवंतु संतु विहरंतु महि।
गउ जिम्भियगामहु[4] अइणियडि सुविउलि रिजुकूलाणइहि तडि।

घत्ता—मोरकीरसारससरि उज्जाणम्मि मणोहरि।
सालमूलि रिसिराणउ रयणसिलहि आसीणउ ॥5॥

(6)

छट्ठेणुववासें हयदुरिएं परिपालियतेरहविहचरिएं।
वइसाहमासि सियदसमिदिणि अवरण्हइ जायइ हिमकिरणि।
हत्थुत्तरमज्झसमासियइ[1] पहु पडिवण्णउ केवलसियइ।
घणघणइं घाइकम्मइं हयइं खुहियाइं झत्ति तिण्णि वि जयइं।
घंटारव हरिरव पडहरव आया असंख सुर संखरव।
वंदयिउ तेहिं वीराहिवइ सुत्तामउ चरणजुयलु णवइ।
किउ समवसरणु गयसरसरणु[2] उवइट्ठउ तिहुवणजणसरणु।

और मन्दार के पुष्प फेंके और रंगों से चित्र-विचित्र तथा फैलती हुई किरणों से चमकते हुए रत्न। दुन्दुभियाँ बज उठीं, साधुवाद दिया गया। गुणी व्यक्ति के साथ रहने से किसकी जय नहीं होती ? विद्वानों ने कन्या के गुणों की प्रशंसा की। बन्धुओं के साथ उसका संयोग हो गया। महावीर ने पापों का हरण करनेवाला बारह वर्ष का तपश्चरण किया। शान्तिपूर्वक क्षमा और अहिंसा का पोषण करते हुए भगवन्त सन्त धरती पर विहार करते हुए जिम्भिय गाँव के अत्यन्त निकट ऋजुकूला नदी के विशाल तट पर पहुँचे।

घत्ता—जिसमें मोर, तोते और सारसों का स्वर है, ऐसे मनोहर उद्यान में शालवृक्ष के नीचे रत्नशिला पर मुनिनाथ महावीर विराजमान हो गये।

(6)

तेरह प्रकार के चारित्र का पालन करनेवाले, पाप के नाशक, तेला उपवास द्वारा, वैशाख शुक्ला दशमी के दिन, सायंकाल में हस्त और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के बीच में चन्द्रमा के आने पर प्रभु केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी से सम्पन्न हो गये। उन्होंने लौहघन के समान घातिया कर्मों का नाश कर दिया। शीघ्र ही तीनों लोक विक्षुब्ध हो उठे। घण्टों, सिंघों, नगाड़ों और शंखों के शब्द करते हुए असंख्य देव आये और उन्होंने वीराधिपति की सेवा की। इन्द्र ने चरणों की वन्दना की। कामदेव की शरण से रहित एवं तीनों लोकों को शरण देनेवाले

---

(5) 1. P पसरंति किरण°। 2. AP हउ। 3. AP ससहि। 4. AP °जिंभिय°.

(6) 1. P °मज्झसमा°।

आहंडलेण पप्फुल्लमुहु सेणिय हउं आणिउ दियपमुहु।
महुं संसएण संभिण्ण मइ जिणु पुच्छिउ जीवहु तणिय गइ।
णाहें महुं संसउ णासियउ मइं अप्पउ दिक्खइ भूसियउ।
मइं समउं समणभावहु गयइं[3] पावइयइं दियहं पंचसयइं[4]।
घत्ता—पत्ते मासे[5] सावणि बहुले[6] पाडिवए दिणि।
उप्पण्णउ चउबुद्धिउ महु सत्त वि रिसिरिद्धिउ[7] ॥6॥

(7)

महंतो महाणाणवंतो सभूई गणी वाउभूई पुणो अग्गिभूई।
सुधम्मो मुणिंदो कुलायासचंदो अणिंदो णिवंदो[1] चरित्ते अमंदो।
इसी मोरि मुंडी सुओ चत्तगावो समुप्पण्णवीरंधिराईवभावो।
सया सोहमाणो तवेणं खगामो पवित्तो सचित्तेण मित्तेयणामो।
सयाकंपणो णिच्चलंघो[2] पहासी विमुक्कंगराओ रईणाहणासो।
इमे एवमाई गणेसा मुणिल्ला[3] जिणिंदस्स जाया असल्ला महल्ला।
सपुव्वंगधारीण[4] मुक्कावईणं पसिद्धाइं गुत्तीसयाइं जईणं।
दहेक्कूणयाइं तहिं सिक्खुयाणं समुम्मिल्लसव्वावहीचक्खुयाणं।
घत्ता—मोहें लोहें चत्तउ तिहिं सएहिं संजुत्तउ।
एक्कु सहसु संभयउ खमदमभूसियरूवउ ॥7॥

महावीर उस समवसरण (धर्म-सभा) में विराजमान हुए। "हे श्रेणिक ! द्विजप्रमुख मैं (इन्द्रभूति गौतम गणधर) इन्द्र के द्वारा यहाँ लाया गया। मेरी बुद्धि संशय से नष्ट हो चुकी थी। मैंने जिन भगवान से जीव की गति पूछी। उन्होंने मेरा संशय दूर कर दिया। मैंने स्वयं को दीक्षा से विभूषित कर लिया। मेरे साथ पाँच सौ ब्राह्मणों ने भी श्रमणधर्म स्वीकार कर लिया।

घत्ता—फिर श्रावण मास के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा के दिन मुझे चार ज्ञान और सात ऋद्धियाँ हुईं।"

(7)

महाज्ञानी सम्भूति (गौतम) गणधर, वायुभूति, अग्निभूति, मुनीन्द्र सुधर्मा कुलरूपी आकाश के चन्द्रमा, अनिन्द्य मनुष्यों के द्वारा वन्दनीय और चारित्र में अनिन्द्य थे। इनमें थे—श्रीजिनेन्द्र के चरणकमलों की भक्ति उत्पन्न हुई है जिन्हें, ऐसे मुनि मौर्या और मौन्द्रय (मुण्ड), सदैव शोभायमान, तप से शुक्ल ध्यान को धारण करनेवाले, अपने चित्त से पवित्र मैत्रेय नाम के गणधर, नित्य अलंघनीय अकम्पन, अंगराग से रहित और कामदेव का नाश करनेवाले प्रभास। इस प्रकार ये शल्य से रहित महान् गणधर हुए। इसी प्रकार ग्यारह अंगों और चौदह पूर्वों के धारी, आपत्ति से रहित तीन सौ मुनि उनके समवसरण में थे। नौ हजार नौ सौ शिक्षक थे।

घत्ता—मोह और लोभ से रहित तथा क्षमा और दम से जिनका शरीर भूषित है, जिन्हें सर्वावधिज्ञान उत्पन्न हो गया है, ऐसे एक हजार तीन सौ अवधिज्ञानी थे।

---

2. A गय सुर सरणु। 3. P गयाइं। 4. P °सयाइं। 5. P मासे पुणु सावणे। 6. AP बहुलपक्खे पडिवए दिणे। 7. P रिसिरिद्धिउ।

(7) 1. A नुवंदो। 2. A णिच्चलंको। 3. A गुणिल्ला। 4. P सुपुव्वंग°।

पंचेव चउत्थणाणधरहं सत्तेव सुकेवलिजइवरहं[1]।
चत्तारि सयइं वाईवरहं[2] दियसुगयकविलहरणयहरहं।
छत्तीस सहासइं संजईहिं भणु एक्कु लक्खु मंदिरजईहिं।
लक्खाइं तिण्णि जहिं सावइहिं सुरदेविहिं मुक्कसंखगइहिं।
संखेज्जएहिं तिरिएहिं सहुं परमेट्ठि देउ सोक्खाइं महुं।
णाणाविहोयरंजियसुरइं विहरेप्पिणु देउ[3] गामपुरइं।
सम्मत्तधोयमिच्छामलइं संबोहिवि भव्वजीवकुलइं।
विहरंतु वसुह विद्धत्थरइ विउलइरि पराइउ भुवणवइ[4]।
आवेप्पिणु दुहणिण्णासयरु सेणिय पइं वंदिउ तित्थयरु।
पुच्छियउ पुराणु महंतु पइं भासियउं असेसु वि तुज्झु मइं।

घत्ता—णिसुणिवि गोत्तमभासियं[5] भरहाणंदविहूसियं[6]।
संबुद्धा विसहरणरा पुप्फयंतजोईसरा[7] ॥8॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे वड्ढमाणसामिकेवलणाणुप्पत्ती णाम
सत्तणउदिमो[8] परिच्छेउ समत्तो ॥97॥

---

(8)

पाँच सौ मनःपर्यय ज्ञानी थे। केवलज्ञान को धारण करनेवाले सात सौ थे। द्विज सुगत कपिल के नय का हरण करनेवाले चार सौ वादीश्वर मुनि थे। आर्यिकाएँ छत्तीस हजार थीं। एक लाख मन्दिरगामी श्रावक थे। तीन लाख श्राविकाएँ थीं। देव और देवियाँ असंख्यात थे। संख्यात तिर्यंचों सहित जिनवरदेव मुझे सुख प्रदान करें। अनेक प्रकार के देवों का अनुरंजन करनेवाले ग्रामों व नगरों में विहार कर, जिन्होंने सम्यक्त्वरूपी जल से मिथ्यारूपी मल धो दिया है, ऐसे भव्य जीव-समूह को सम्बोधित कर धरती पर विहार करते हुए वीतराग भगवान् भुवनपति महावीर विपुलाचल पर पहुँचे। हे श्रेणिक ! तुमने आकर दुःख का नाश करनेवाले तीर्थंकर की वन्दना की। तुमने महापुराण पूछा और मैंने उसका पूरा-पूरा तुमसे कथन किया।

घत्ता—भरत के आनन्द से विभूषित गौतम गणधर के कथन को सुनकर विषधरों, मनुष्यों को तथा पुष्पदन्त और ज्योतीश्वरों को ज्ञान प्राप्त हुआ।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणलंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का वर्द्धमान-स्वामी-केवलज्ञान-उत्पत्ति नाम
सत्तानवेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

(8) 1. AP add after this वेउव्वणइड्ढिसंजुयहं, संतहं भयवंतहं णवसयहं। 2. AP वाईसरहं। 3. AP देसगामपुरइं। 4. AP सयणवई 5. AP °भासिउ। 6. AP °विहूसिउ। 7. P जोइसरा। 8. AP सत्ताणउदिमो।

अट्ठणउदिमो संधि

पभणइ मगहणरिंदु भो भो तिहुवणसारा।
अक्खहि मज्झु भवाइं गोत्तमसामि भडारा ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

भासइ इंदभूइ[1] भूईसरु भो भो णिसुणि भविस्सजिणेसर।
भो दसारकुलकाणणकेसरि अत्थि एत्थु वरविंझमहागिरि।
खयरसारु[2] णामें तहिं[3] वणयरु तुहुं होंतउ बाणासणसरकरु।
साहु समाहिगुत्तु पइं दिट्ठउ णिट्ठाणिट्ठिउ सुट्ठु[4] विसिट्ठउ।
वंदिउ करयल [5]मउलिवि भावें उज्झियपावें वज्जियगावें।
संजमभारु गरुउ[6] परियट्ठउ रिसिणा बोल्लिउ धम्मु पवट्ठउ।
भिल्लें भणिउ धम्मु किं वुच्चइ पुणरवि तासु भडारउ सुच्चइ।
धम्मु बप्प जं जीउ ण हम्मइ अलिउं ण भासिज्जइ णउ सुम्मइ।
जं अदिण्णु परदविणु ण घिप्पइ जं मणु परघरिणिहि णउ रप्पइ।
जं णउ रयणियालि भुंजिज्जइ मासु मज्जु जं महु वज्जिज्जइ[7]।
पंचुंबरपरिहारु रइज्जइ परपेसुण्णउं जं ण कहिज्जइ।
सो ज्जि धम्मु जं वयइं अहंगइं अण्णु किं धम्महु मत्थइ सिंगइं।

अट्ठानवेवीं सन्धि

मगधराज कहता है—हे भुवनश्रेष्ठ ! आदरणीय गौतम स्वामी ! आप मेरे पूर्वजन्मों को बताइये।

(1)

गौतम गणधर कहते हैं—"हे भावी जिनेश्वर ! हे हरिवंशरूपी कानन के सिंह श्रेणिक ! सुनिए। इस भारतवर्ष में श्रेष्ठ विन्ध्याचल है। तुम उसमें खदिरसार नाम के भील थे—अपने हाथों में धनुष-बाण धारण करनेवाले। तुमने निष्ठा (ध्यान) में लीन और अत्यन्त विशिष्ट समाधिगुप्त मुनि को देखा। तुमने भावपूर्वक हाथ जोड़कर उनकी वन्दना की। पाप से रहित और गर्व से दूर मुनिराज बोले—"तुम महान् संयमभार धारण करो, तुम्हारा धर्मभाव बढ़े।" भील ने कहा—"धर्म क्या कहा जाता है ?" तब फिर मुनिराज उसे समझाते हैं—"हे सुभट ! धर्म वह है जिसमें जीव का वध नहीं किया जाता; झूठ नहीं कहा जाता, झूठ नहीं सुना जाता; जो नहीं दिया हुआ परधन है—उसे नहीं लिया जाता और मन दूसरे की स्त्री में नहीं लगाया जाता; जिसमें रात्रि के समय भोजन नहीं किया जाता; मांस, मदिरा और मधु का त्याग किया जाता है; पाँच उदुम्बर फलों का परित्याग किया जाता है; दूसरों की चुगली नहीं की जाती; जो अभंगव्रत है, वही धर्म है; और क्या धर्म के मस्तक पर सींग होते हैं ?"

---

(1) 1. AP इंदभूमि भूमीसर। 2. A खइरसारु। 3. A तह। 4. A सुद्धु। 5. A मउलिय। 6. AP गरुय आयड्ढउ। 7. AP वंचिज्जइ।

घत्ता—तं णिसुणिवि सवरेण उच्चाइउ वयभारु।
मुक्कउ जीविउ जाव वायसमासाहारु ॥1॥

(2)

आयड्ढियबहुघडियामालें परिवड्ढंतें दीहें[1] कालें।
तहु सरीरु रोएं आसोसिउं भेसहु भिसयवरेहिं समासिउं।
कायमासु [2]भक्खिउं ण चिलाएं ता घरिणिइ सज्जणसंवाएं।
आहूयउ तहु केरउ सालउ सारसपुरवराउ वेयालउ।
सूरवीरणामें[3] आवंतें[4] णिसि वणि वियडइं पयइं धिवंतें।
णिसुय तेण कामिणि रोवंती हा हा णाह णाह पभणंती।
गउ पुच्छिय सा झत्ति विलासिणि धरिणिरोहणग्गोहणिवासिणि।
कहइ णियंबिणि इह हउं जक्खिणि लीलालोयणधवलकडक्खिणि[5]।
जासु [6]मुणिंदहिं संबोहिय मइ जो तुहुं जाणहि तुह बहिणीवइ।
रिट्ठयपलणिवित्तिफलसारें[7] तें होएव्वउ महु भत्तारें।
पइं जाइवि वयभंगु करेव्वउ सो महुं सामिउ होंतु धरेव्वउ।
तं णिसुणिवि गउ तुरिउ वणेयरु[8] खणि संपत्तउ ससहोयरिघरु।
पत्थिउ[9] मेहुणेण णिरु णेहें इयरें वाहिवि लुंचियदेहें।
केण वि गहियउं वउ ण वि भग्गउं ता तं सुहिहिययउल्लइ लग्गउं।

घत्ता—यह सुनकर उस भील ने व्रतभार ग्रहण कर लिया। उसने जीवन-भर के लिए कौए के मांस का आहार छोड़ दिया।

(2)

घूमते हुए रहट की तरह लम्बा समय बीतने पर उसका शरीर रोग से सूखकर काँटा हो गया। वैद्यवरों ने उसे संक्षेप में दवा बतायी। परन्तु भील ने कौए का मांस नहीं खाया। तब स्त्री ने सज्जनों के समूह के द्वारा उसके वेगवान साले को सारसपुर (सारसौख्य नगर) से बुलवाया। रात्रि के समय भयंकर वन में पैदल आते हुए उस शूरवीर साले ने सुना कि एक स्त्री 'हा स्वामी ! हा स्वामी !' कहकर रो रही है। वह गया और शीघ्र उसने धरती पर उगे हुए वटवृक्ष में निवास करनेवाली उस स्त्री से पूछा। अपनी चंचल आँखों के धवल कटाक्षोंवाली उसने कहा—"मैं एक यक्षिणी हूँ। जिसको मुनीन्द्रों ने सम्बोधित किया है, ऐसे अपने बहनोई को तुम जानते हो, कौए के मांस को छोड़ने के फल के प्रभाव से वह मेरा पति होगा। परन्तु तुम जाकर उसका व्रतभंग करोगे और उसे मेरा पति होने से रोक लोगे।" यह सुनकर वह भील तुरन्त गया और शीघ्र अपनी बहिन के घर पहुँचा। साले ने सम्बोधन करते हुए प्रेम से प्रार्थना की कि किसी लुंजपुंज शरीरवाले व्यक्ति ने ग्रहण किया हुआ व्रत नहीं तोड़ा। तब यह बात उस सुधी के मन को लग गयी।

(2) 1. AP दिग्घें। 2. AP भक्खिऊण। 3. P सूरवीरु णामें। 4. AP आवेंतें। 5. AP लीलालोइणि। 6. A मुणिंदें। 7. AP रिट्ठियपल°। 8. A वणायरु; P वणयरु। 9. A पत्थिउ; P पुच्छिउ।

घत्ता--ता तें जक्खिपवंचु तहु भासिउ णीसेसु।
तं णिसुणिवि णियचित्ते आणंदिउ सवरेसु ॥2॥

(3)

सव्वमासपरिचाउ करेप्पिणु मुउ मुणिवयणु सइत्ति[1] धरेप्पिणु।
हुउ सोहम्मि देउ [2]रुइणिम्मलु किं वण्णिज्जइ जिणधम्महु फलु।
दुक्खिउ सूरवीरु संजायउ भीसणु तं काणणु पडिआयउ।
पुच्छिय जक्खि तेण सयणुल्लउ सो अम्हारउ वयविहि भल्लउ।
मुउ तुह पिउ[3] किं हुयउ ण हूसउ भणु परमेसरि णिरुवमरूयउ।
अक्खइ [4]जक्खिणि किं अक्खिज्जइ मज्झु कलेवरु विरहें झिज्जइ[5]।
बुक्कणपलपरिहरणु सुहावउ किर होसइ महुं पीणियभावउ।
णवर मइं वि तुह मंतु पयासिउ अप्पणु अप्पउं झत्ति विणासिउ।
सव्वजीवजंगलपरिचाएं समलंकिउ गुरुपुण्णणिहाएं।
सो सोहम्मि वाहु[6] उप्पण्णउ अणिमाइहिं गुणेहिं संपण्णउ।
घत्ता—ता समाहिगुत्तस्स पासि गंपि भिल्लेण।
सयल[7] वि मासणिवित्ति गहिय सुणीसल्लेण ॥3॥

घत्ता—और तब उसने उस यक्षिणी के प्रपंच को उससे कहा। यह सुनकर भीलराज अपने मन में प्रसन्न हुआ।

(3)

सब प्रकार के मांस का परित्याग कर, वह अपने मन में मुनि के वचनों को धारण कर मर गया। सौधर्म स्वर्ग में कान्ति से निर्मल देव हुआ। जिनधर्म के फल का क्या कथन किया जाये, शूरवीर साला बहुत दुःखी हुआ। वह उस भीषण वन में लौटा। उसने यक्षिणी से पूछा—"व्रत करनेवाला हमारा वह भला सम्बन्धी मर गया है, सुन्दर रूपवाला वह तुम्हारा पति हुआ या नहीं, हे परमेश्वरी ! बताइए।" वह यक्षिणी कहती है—"क्या कहा जाए ? मेरा शरीर विरह में जल रहा है। कौए के मांस का त्याग करनेवाला, सुखदायक वह मेरा प्रीतिजनक कैसे होगा ? और उल्टे मैंने तुमसे यह रहस्य प्रकट कर स्वयं अपना शीघ्र नाश कर लिया। जिसमें समस्त जीवों के मांस का परित्याग कर दिया गया है, ऐसे महान् पुण्य के समूह से अलंकृत वह भील सौधर्म स्वर्ग में अणिमादि ऋद्धियों से सम्पन्न देव उत्पन्न हुआ है।"

घत्ता—तब वह भील समाधिगुप्त मुनि के पास गया और निःशल्य होकर उसने सब प्रकार से मांस-निवृत्ति का व्रत ग्रहण कर लिया।

(3) 1. AP सुइत्ति। 2. AP णिरु णिम्मलु। 3. A प्रिउ। 4. AP जक्खि काइं अक्खिज्जइ। 5. AP खिज्जइ। 6. P धउ। 7. A सयलमासणिव्वित्ति।

(4)

सूरवीरु सावउ संजायउ जाणवि[1] अरुहधम्मु णिम्मायउ[2]।
दोसायरइं भुत्तसुहसायउ खयरसारु[3] सो[4] सग्गहु आयउ[5]।
एव[6] बप्प सो पुण्णु चिरायउ इह[7] पुणु मगहदेसि संजायउ।
पुरि रायह[8] हरि लच्छिसहायहु सिरिमइदेविहि कूणियरायहु।
उप्पण्णउ सुउ[9] सेणिय णामें रूवें तुहुं जि कामु किं कामें।
ताएं कुलसिरिजोग्गउ जाणिउ मायाकलहें णिलयहु णीणिउ।
जिह पायडणरु[10] तिह अवगण्णिउ णंदिगामलोएं णउ मण्णिउ।
विप्पें सहुं गओ सि देसंतरु जाइदेवपासंडकहंतरु[11]।
णिसुणमाणु[12] मिच्छत्तमलीमसु तुहुं जाओ सि सकम्मपरव्वसु।
बंभणेण तुह बहुसुहभायण[13] णियसुय दिण्णी सिसुमिगलोयण[14]।
ताहि पुत्तु पइ जायउ केहउ बुद्धिइ सुंदरु सुरगुरु जेहउ।
पुणु णरणाहें णेहु वहंतें कोक्किउ तुहुं णियरज्जु मुयंतें।

घत्ता—पुरु सीहासणु छत्तु दिण्णइं[15] अइअणुराएं।
जयजयसद्दें तुज्झु पट्टु णिबद्धउ ताएं ॥4॥

---

(4)

वह शूरवीर अर्हन्तधर्म को माया रहित समझकर श्रावक हो गया। दो सागर पर्यन्त सुखों का आस्वादन कर वह खदिरसागर भील स्वर्ग से आ गया। हे सुभट ! वह पुण्यात्मा भील फिर यहाँ मगधदेश में उत्पन्न हुआ। राजगृह में जिसकी लक्ष्मी सहायक है, ऐसे राजा कुणिक और श्रीमती देवी से उत्पन्न श्रेणिक नाम के पुत्र तुम हो। रूप में तुम काम (देव जैसे) हो। कामदेव से क्या ? पिता ने तुम्हें कुललक्ष्मी के योग्य समझा, इसलिए झूठ-मूठ की लड़ाई करके तुम्हें घर से निकाल दिया। एक सामान्य मनुष्य की तरह तुम्हारा अपमान किया। नन्दीग्राम के लोगों ने तुम्हें नहीं माना। एक ब्राह्मण के साथ तुम देशान्तर चले गये। वहाँ जाति और देव सम्बन्धी पाखण्डपूर्ण कथाओं को सुनते हुए, अपने कर्म के वशीभूत तुम मिथ्यात्व से मलिन हो गये। ब्राह्मण ने तुम्हें, अनेक सुखों की भाजन शिशुमृगनयनी कन्या दे दी। हे पुत्र ! तुम उसके पति उस प्रकार हो गये, जिस प्रकार बुद्धि से बृहस्पति सुन्दर हो जाता है। फिर, स्नेह धारण करते हुए राजा ने राज्य का परित्याग करते हुए तुम्हें बुलाया।

घत्ता—फिर अत्यन्त अनुराग से सिंहासन और छत्र दिया। और पिता ने जय-जय शब्द के साथ तुम्हें राजपट्ट बाँध दिया।

---

(4) 1. AP जाणेवि। 2. P adds after this एत्तहि सुरु पुण्णवसु जायउ। 3. P खइरसारु। 4. AP सोहम्महो। 5. AP omits this foot. 7. A omits this foot. 8. AP रायहरे। 9. A सुरु। 10. A पाइयणरु। 11. P पासंडिकहंतरु। 12. AP णिसुणि माणु। 13. AP °भायणि। 14. AP सिसुमिगलोयणि। 15. AP दिण्णउं।

(5)

करभरसंदोहउ मिसु मंडिउ रोसें णंदिगाउं पइं दंडिउ।
तुह मुहदंसणसिरि मग्गंतें जणणिइ सहुं आवंतें संतें।
जणु कंदंतु कणंतु णिरिक्खिउ तुह पुत्तें सो अभएं रक्खिउ।
पुणु सुएण सहुं एत्थु पराइउ कहसंबंधु असेसु णिवेइउ।
गरुयारंभपरिग्गहजुत्तें[1] तिव्वकसाएं घणमिच्छत्तें।
पइं णरयाउसु बप्प णिउत्तउं एवहिं तं कहि जाइ अभुत्तउं।
ता उप्पण्णइ गुणिकहबुद्धिइ संजायइ णिरुवममणसुद्धिइ।
खाइउं सेणिएण उप्पाइउं दंसणु णिस्संदेहविराइउं।
पुणु वि भडारउ पुच्छिउ भावें हउं पाविट्ठु अलंकिउ पावें।
भणु आगामि जम्मि किं होसमि असुहसुहाइं केत्थु भुंजेसमि।
तं आयण्णिवि जइवइ घोसइ णिसुणहि मागहेस जं होसइ।
णरयावणिहि [2]दुकम्मविरम्माहि तुहुं[3] होसहि णिव णारउ घम्महि।
पंचविहाइं विहत्तसरीरइं अणुहुंजिवि तहु दुक्खइं घोरइं।
होसहि भरहि पढमतित्थंकरु सम्मइ जिह तिह परमसुहंकरु[4]।
तं णिसुणेवि णिसु कुंचियकाएं [illegible]विवि बोल्लिउ सेणियराएं।

(5)

तुमने क्रोध में आकर करभार के समूह का बहाना बनाया और नन्दीग्राम को दण्डित किया। तुम्हारे मुखदर्शन की शोभा की चाह करते हुए और अपनी माता के साथ आते हुए तुम्हारे पुत्र अभयकुमार ने लोगों को रोते और चिल्लाते हुए देखा। उसने उनकी रक्षा की। फिर, पुत्र के साथ तुम यहाँ आये और मैंने अशेष कथा-सम्बन्ध निवेदित किया। भारी आरम्भ और परिग्रह से युक्त घने मिथ्यात्व और तीव्रकषाय के कारण, हे सुभट ! तुमने नरक आयु का बन्ध कर लिया है। अब वह बिना भोगे हुए कैसे जा सकता है ?" उत्पन्न हुई गुणीजन की कथा बुद्धि और अत्यन्त निर्मल चित्तशुद्धि होने से राजा श्रेणिक ने असंशय से शोभित क्षायिक सम्यग्दर्शन अर्जित कर लिया। फिर भी श्रद्धापूर्वक उसने आदरणीय से पूछा—"पाप से अलंकृत मैं, आगामी जन्म में कहाँ होऊँगा ? यह बताइए । कहाँ मैं अशुभ सुखों का भोग करूँगा ?" यह सुनकर यतिवर कहते हैं—"हे मगधेश ! तुम जो होगे, वह सुनो। दुष्कर्मों की आश्रय धर्मा नाम की पहली नरकभूमि में, हे राजन् ! तुम नारकी होगे। पाँच प्रकार के खण्डित शरीरों और घोर दुःखों को भोगकर तुम भरतक्षेत्र में प्रथम तीर्थंकर होगे—सन्मतिनाथ के समान परम कल्याणकारक।" यह सुनकर, अपने शरीर को संकुचित करते हुए राजा श्रेणिक प्रणाम करके बोला—"इस नगर में ऐसा कोई दूसरा भी राजा है, जो

(5) 1. AP गुरुआरंभ॰। 2. AP दुक्कम्म॰। 3. AP तुहुं होएसहि णारउ घम्महि। 4. AP परहं सुहंकरु।

एत्थु णयरि णरयहु जाएसइ अवरु को वि किं णउ जइ भासइ।
चिरु णरु होंतउ पुणु णरु जायउ पावें अवरहि जोणिहि णायउ।
घत्ता–सो [5]सुमरिवि चिरजम्मु उज्झियणाणपईवहं।
चिंतामणि[6] पाविट्ठु पुण्णु पाउ कहिं जीवहं ॥5॥

(6)

सालि ण होइ कंगु महिववियउ किं जिणेण जणवउ संतवियउ।
गद्दहु गद्दहु माणुसु माणुसु होइ ण अवरु को[1] वि दुक्कियवसु।
एव [2]जाइवाएं सो पंडियउ अइदुद्दंतें कम्में घडियउ।
सत्तमयहु दूरीकयविरयहु जाएसइ तमतमपहणरयहु।
रायरोसदोसोहपवत्तणु[3] असुहावत्तु पत्तु महिलत्तणु।
पियइ मज्जु परजीविउ हिंसइ छट्ठी महि णिग्घिणु पइसेसइ।
सेणियणिवइकुलालंकारें[4] रिसि परिपुच्छिउ[5] अभयकुमारें।
हउं किं होंतउ चिरजम्मंतरि भणइ भडारउ इह वरिसंतरि।
होंतउ आसि विप्पु तुहुं सुंदरु अवरु वि लंघियगिरिदरिकंदरु।
सो सावउ बिण्णि वि[6] ते सहयर जरकंथाकरंककड्ढियकर।

नरक में जाएगा ?'' मुनि कहते हैं–''जो काल सौकरिक (दूसरा नाम चिन्तामणि) पहले मनुष्य था, वह फिर मनुष्य हुआ। पाप से भी वह दूसरी योनि में नहीं गया।

घत्ता–अपने चिरजन्म की याद कर वह पापिष्ठ (चिन्तामणि) (सोचता है)–ज्ञानरूपी प्रदीप से रहित जीवों के लिए पुण्य-पाप कैसा ? (अर्थात् पुण्य-पाप का विचार ज्ञानियों के लिए है)।

(6)

धरती में बोया गया उत्तम धान्य कंगु (कोंदों) नहीं हो सकता। फिर, जिन भगवान् के द्वारा जनपद के सन्तप्त होने का क्या प्रश्न है ? गधा गधा है, मनुष्य मनुष्य है। पाप के वश से जीव कुछ और नहीं होता। इस प्रकार जातिवाद से प्रतारित और अत्यन्त दुर्दान्त कर्म से घटित वह पुण्यों से अत्यन्त दूर तमतमःप्रभा नामक सातवें नरक में जाएगा। राग, क्रोध और दोषों के समूह का प्रवर्तन करनेवाली अशुभ पात्र स्त्रीत्व को वह प्राप्त हुआ। वह मद्य पीती है, दूसरे जीवों की हिंसा करती है, वह छठे नरक में प्रवेश करेगी।'' तब राजा श्रेणिक के कुलालंकार अभयकुमार ने मुनि से पूछा कि पूर्वजन्म में मैं क्या था ? आदरणीय बताते हैं कि तुम इस भारतवर्ष में सुन्दर ब्राह्मण थे; और एक और दूसरा, जिसने पहाड़ों की घाटियों और गुफाओं को पार किया वह श्रावक था। तुम दोनों मित्र थे। जीर्ण-वस्त्र और भिक्षापात्र हाथ में लिये हुए, दुःसह

---

5. AP सुअरेवि। 6. AP चिंताइ मणे पाविट्ठउ पुण्णु पाउ कहि जीवहं।
(6) 1. AP किं पि। 2. P जामुवाएं। 3. P °दोसाह°। 4. A °नृवइ°। 5. A परिउच्छिउ। 6. AP वि जण सहयर।

दूसहदीहपवासें मंथिय जंपमाण ससणेहा पंथिय।
वीसमंत काणणि सहलदलि[7] जा हिंडहिं बेण्णि वि धरणीयलि।

घत्ता—ता पइं पत्थरपुंजु दिट्ठउ चारु समुण्णउ।
अण्णु वि पक्खिबमालु[8] भूरुक्खु वि वित्थिण्णउ ॥6॥

(7)

सो पइं वंदिउ देवि पयाहिण पभणइ[1] तुम्हारइ संथुय जिण।
अम्हारइ पुणु पिप्पलफासें[2] मुच्चइ माणुसु गुरुदुरियंसें।
तं णिसुणिवि तें तरुवरपत्तइं पाय पुसेप्पिणु दसदिसि[3] घित्तइं।
भासिउ तरु ण देउ परमत्थें तुहुं वेयारिउ [4]सोत्तियसत्थें।
पुरउ[5] चरंतु जइणु सहुं मित्तें कइकच्छुहि पणमिउ धुत्तत्तें।
सा [6]तेणुप्पाडिवि मयवंतें बंभणेण उववासु करंतें।
घट्टइं अट्ठ वि अंगोवंगइं कइणीरोमइं[7] भग्गइं तुंगइं।
दिट्ठइं रुहिरगंठिचक्कलियइं अरुहदासु पभणइ लइ फलियइं।
दुक्कियाइं तुह अज्जु जि रुट्ठउ देउ महारउ किं पइं घट्टउ।
जोयहि सुरसाणिद्धु[8] विसिट्ठउ पइं अप्पणु णयणेहिं जि दिट्ठउं।
पुणु सच्चउं सच्चिल्लउ वुच्चइ पिंपलु[9] देउ ण [10]अग्गिउ वुच्चइ।

दीर्घ प्रवास से थके हुए वे दोनों पथिक आपस में स्नेहपूर्वक बातें करते हुए, पत्तों से सघन वन में विश्राम करते हुए धरणीतल पर जब घूम रहे थे,

घत्ता—तब तुमने समुन्नत सुन्दर पत्थरों का ढेर देखा। एक और पक्षियों के कोलाहल से युक्त तथा विशाल वृक्ष देखा।

(7)

तुमने प्रदक्षिणा देकर उसकी वन्दना की और कहा—"तुम्हारे यहाँ जिनवर की स्तुति की जाती है, हमारे यहाँ तो पीपल के स्पर्शमात्र से मनुष्य भारी दोषों से बच जाता है।" यह सुनकर उस श्रावक ने उस वृक्ष के पत्तों को तोड़कर दसों दिशाओं में बिखेर दिया और कहा कि वास्तव में वृक्ष देव नहीं होता। तुम ब्राह्मण-शास्त्रों के द्वारा ठगे गये हो। जैनी मित्र के साथ आगे जाते हुए उस धूर्त ने करेंचवृक्ष को प्रणाम किया। उपवास करते हुए उस घमण्डी ब्राह्मण ने उस लता को अंगोपांगों पर रगड़ लिया। रोम उखड़ जाने से वे नष्ट हो गये। उसके रोम की गाँठें और चकत्ते दिखाई दिये। अरुहदास (श्रावक) बोला—"लो, दुष्कृत का फल पा गये। तुम आज भी रुष्ट हो, तुमने हमारे देव को स्पर्श क्यों किया ? तुम विशिष्ट देवसान्निध्य देखो। तुमने खुद अपनी आँखों से देख लिया है। फिर सत्य को सत्य ही कहा जाता है। पीपल और अग्नि

---

7. P सदल°। 8. A °वमालु।

(7) 1. AP पभणिउ। 2. A पिंपलफंसें; P पिप्पलफंसें। 3. AP दहदिसि। 4. P सो तियसत्थें। 5. AP पुणु वि चरंतु। 6. AP सा पुणु उप्पाडेवि मयमत्तें। 7. AP °रोमहिं भिण्णइं तुंगइं। 8. AP सुरसामत्थु। 9. AP पिप्पलु। 10. P अग्गि सु वुच्चइ।

देउ ण हुयवहु ण जलु ण वणसइ[11] चच्चरि चच्चरि केसवु[12] णिवसइ।
मुइ मुइ मित्तदेव मूढत्तणु वंदहि जिणवरु तित्थपवत्तणु।
पुणु गय बिण्णि वि भमियतरंगहि [illegible] गंगहि।
पउं[13] पवित्तु पउं मलणिण्णासणु पइं[14] धरियउं ण वि दियवरसासणु।
ता[15] जिणभत्तएण तहिं लद्धउं पवरोयणु गंगाजलसिद्धउं।
उच्छिट्ठउं करेवि तहु ढोइउं लइ लइ लइ[16] पवित्तु पोमाइउं।
गंगाजलु दोसेण ण छिप्पइ भो भो भरहि गासु दिय जडमइ।
पुणु तावसु पंचग्गि [17]पजोइउ दियपहिएं मणु संसइ ढोइउं।
परजइणा[18] सो बोल्लिवि छिंदिउ कउलसुत्तु दरिसंतें मद्दिउ।
भक्खइ मासु पियइ महु गुलियउ तावसु भइरवणाहहु मिलियउ।

घत्ता—बंभणु वण्णहं सारु देउ भणंतु सणाणें।
सावएण सो वुत्तु हो किं कुलअहिमाणें ॥7॥

(8)

तं कुलु जहिं कम्मक्खउ किज्जइ तं कुलु जहिं जिणधम्मु मुणिज्जइ।
तं कुलु जहिं कुसीलु वज्जिज्जइ तं कुलु जहिं सुणाणु अज्जिज्जइ।

को देव नहीं कहा जाता। देव न तो अग्नि है, न जल है, न वनस्पति है, न चबूतरे-चबूतरे पर केशव रहता है। हे मित्रदेव ! तुम देवमूढ़ता छोड़ो। तीर्थ का प्रवर्तन करनेवाले जिनवर की तुम वन्दना करो।'' फिर, जिसमें लहरें घूम रही हैं, ऐसी गंगा नदी पर वे दोनों पहुँचे। ब्राह्मण ने गंगाजल की वन्दना की—हे गंगे ! तुम्हारा पानी पवित्र है, पापों का नाश करनेवाला है, तब भी तुमने द्विजवर आसन को धारण नहीं किया। जिनवर के भक्त ने गंगाजल से बने हुए अच्छे भात को लिया और जूठा करके उसके पास ले गया। उसकी प्रशंसा कर वह बोला, लीजिए, लीजिए, पवित्र है। गंगाजल को कोई दोष स्पर्श नहीं करता। हे जड़मति विप्र ! तुम कौर लो। फिर, उन्होंने पंचाग्नि तपते हुए साधु को देखा। द्विजपथिक के मन में सन्देह हो गया, परन्तु श्रेष्ठ जैनी ने बोलकर उसका खण्डन किया और चार्वाक-सूत्र दिखाते हुए उसका मर्दन कर दिया। कौलिकनाथ से मिलकर (उसके मत में दीक्षित होकर) तपस्वी मांस खाता है और गुड़ की शराब पीता है।

घत्ता—श्रावक ने उससे कहा—''ज्ञान के कारण, ब्राह्मण को वर्णों में श्रेष्ठ देव कहा जाता है। कुल के अभिमान से क्या ?''

(8)

कुल वह है जिसमें कर्मों का क्षय किया जाता है, कुल वह है जिसमें जिनधर्म का विचार किया जाता

---

11. A वणासइ; P पणासइ। 12. AP किंसिउ। 13. AP एउं। 14. AP एएं धरियउं दियवरसासणु। 15. P omits ता। 16. AP पइं। 17. AP पलोइउ। 18. A धरजइणा।

बंभु मोक्खु तवु[1] लोयपसिद्धउ बंभसद्दु मुणिवरपडिबद्धउ।
बंभें बंभु ण वुच्चइ सुत्तें आसि तिलोत्तमरमणासत्तें[2]।
बंभें बंभचेरु विद्धंसिउ णट्ठ भट्ठु कुलु काइं पसंसिउ।
मच्छंधिणिहि वासु[3] उप्पण्णउ तुहुं पुणु कुलवाएं अइण्णउ[4]।
मूलु असुद्धु वप्प किं साहहि मारिज्जइ पसु बंभणवाहहिं।
कुलु उत्तमु[5] पत्थिवकुलु भण्णइ जहिं तित्थयर जंति परमुण्णइ।
ता कुलगव्वु तेण परिहरियउ णिच्छएण जिणधम्मु जि धरियउ।
काणणि जंत जंत दुद्दंसणि वग्घसीहगयगंडयभीसणि।
पंथु अलहंतएण मद लेप्पिणु वि आसट्ठिवि मणसल्लइं तिण्णि वि।
संणासें गय ते सोहम्महु सग्गहु सुरवररमणीरम्महु।
जो बंभणु सो तुहुं संजायउ सेणियरायपुत्तु विक्खायउ।
अभयकुमारु णामु हयदुक्खहु चरमदेहु जाएसहि मोक्खहु।

घत्ता—पभणइ महियलणाहु[6] [7]गयमिच्छत्ततमंधहि।
भणु चंदणहि भवाइं सुरहियचंदणगंधहि ॥8॥

(9)

तं णिसुणेविणु[1] भासइ मुणिवरु सुणि[2] सेणिय अक्खमि[3] तुह वइयरु।
सिंधुविसइ वइसालीपुरवरि धरसिरिओहामियसुरवरघरि।

है, कुल वह है जहाँ सुज्ञान अर्जित किया जाता है। वह धर्म है, जहाँ कुशील से बचा जाता है। ब्रह्म मोक्ष और तप लोकप्रसिद्ध हैं। ब्रह्म शब्द मुनिवरों के लिए प्रतिबद्ध है। यज्ञोपवीत या ब्रह्म से ब्रह्म नहीं कहा जाता। तिलोत्तमा से रमण करने में आसक्त ब्रह्मा ने ब्रह्मचर्य को नष्ट कर दिया, ऐसे नष्ट और भ्रष्ट कुल की प्रशंसा करने से क्या ? मधुर की पत्नी से व्यास उत्पन्न हुए और तुम कुलवाद से पीड़ित हो। हे सुभट ! जिसका मूल अशुद्ध है, उसकी शाखा का क्या ? ब्राह्मण रूपी व्याधों से पशु मारे जाते हैं। उत्तमकुल तो राजकुल (क्षत्रियकुल) है जहाँ तीर्थंकर परम उन्नति को प्राप्त करते हैं। तब उसने कुलगर्व छोड़ दिया और निश्चित रूप से जिनधर्म धारण कर लिया। बाघ, सिंह, गज और गेंडों से भयंकर दुर्दर्शनीय जंगल में जाते-जाते रास्ता नहीं पाते हुए वे दोनों मन की शल्यों को नष्ट कर, संन्यास से मरकर देवांगनाओं से सुन्दर सौधर्म स्वर्ग में गये। जो ब्राह्मण था, वह तुम विख्यात श्रेणिकपुत्र अभयकुमार नाम से हुए। चरमदेही तुम दुःख को आहत करनेवाले मोक्ष जाओगे।''

घत्ता—तब राजा कहता है—''मिथ्यात्व के अन्धकार से रहित और सुरभित चन्दन के समान गन्धवाली चन्दना के जन्मान्तरों को बताइए।''

(9)

यह सुनकर मुनिवर ने कहा—''हे श्रेणिक ! सुनो। तुमसे पूर्वजन्म का वृत्तान्त कहता हूँ। सिन्धुदेश में

---

(8) 1. AP तइलोयपसिद्धउ। 2. AP तिलोत्तिम°। 3. B व्रासु। 4. A आदण्णउ। 5. AP उत्तिमु। 6. P महियलु णाहु। 7. AP राय मिच्छत्त°।
(9) 1. AP णिसुणेप्पिणु। 2. A सुणि। 3. AP तुह अक्खमि।

चेडउ णाम णरेसरु णिवसइ देवि [4]अखुद्द सुहद्द महासइ।
धणयत्तउ धणभद्दु[5] उविंदउ सुहयत्तउ हरियत्तु णियंगउ[6]।
कंभोयउ[6] कंपणउ पयंगउ[7] अवरु पहंजणु पुत्तु पहासउ।
धीयउ सत्त रूवविण्णासउ।
सेयंसिणि सूहव पियकारिणि अवर मिगावइ[8] जणमणहारिणि।
सुप्पह देवि पहावइ चेलिणि बालमरालतीलगइगामिणि।
जेट्ठ[9] विसिट्ठ भडारी चंदण रूवरिद्धिरंजियसंकंदण[10]।
पियकारिणि वरणाहकुलेसहु[10] सिद्धत्थहु कुंडउरणरेसहु।
दिण्ण सयाणीयस्स मिगावइ[11] सोम्मवंसरायहु मंथरगइ।
सूरवंसजायहु ससियरणह[12] दसरहरायहु दिण्णी सुप्पह।
उद्दायणहु पहावइ राणी दिण्णी उव्वसिरंभसमाणी[13]।
माहिउरि कामबाणपरिहट्ठउ अलहमाणु अवरु वि आरुट्ठउ।
जेट्ठहि कारणि सच्चइ णामें आयउ जुज्झहुं दुप्परिणामें।
णट्ठउ आहवि चेडयरायहु को सक्कइ करवालणिहायहु।
अइदूसहणिव्वेएं लइयउ दमयरमुणिहि[14] पासि पव्वइयउ[15]।
अण्णहिं दिणि चित्तयरें लिहियइं रूवइं [16]बहुपट्टंतरणिहियइं।

अपनी गृहश्री से इन्द्र के भवनों को पराजित करनेवाले वैशाली पुरवर में चेटक नाम का नरेश्वर निवास करता था। उसकी उदार सुभद्रा नाम की महासती देवी थी। उसके धनदत्त, धनभद्र, उपेन्द्र, शुभदत्त, हरिदत्त (सिंहभद्र), कामदेव, कम्भोज, कम्पन, पतंग, प्रभंजन और प्रभास पुत्र थे। रूप की रचना सात कन्याएँ थीं। कल्याण करनेवाली प्रियकारिणी, जन-मन का हरण करनेवाली एक अन्य मृगावती, सुप्रभा, प्रभावती और बाल मराल लीला की गति से चलनेवाली चेलना। ज्येष्ठा और अपनी रूपऋद्धि से इन्द्र को रंजित करनेवाली विशिष्ट आदरणीया चन्दना थी। इनमें प्रियकारिणी श्रेष्ठ नाथकुल के ईश कुण्डलपुर के राजा सिद्धार्थ को दी गयी थी। सोमवंश के राजा शतानीक को मन्थरगामिनी मृगावती दी गयी थी। चन्द्रमा के समान नखवाली सुप्रभा सूर्यवंश में उत्पन्न दशरथ राजा को दी गयी थी। उर्वशी और रम्भा के समान प्रभावती रानी उदयन को दी गयी थी। कामबाणों से भ्रष्ट होकर ज्येष्ठा को न पाकर एक और राजा क्रुद्ध हो उठा। ज्येष्ठा के लिए दुष्परिणामवाला सत्यक नाम का राजा युद्ध करने के लिए आया। युद्ध में वह चेटक राजा से नष्ट हो गया। तलवारों के आघात को कौन सहन कर सकता है ? उसे दुस्सह वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसने दमवर मुनि के पास जाकर वैराग्य ग्रहण कर लिया। एक दिन चित्रकार के द्वारा लिखित अनेक पट्टकों में निहित, जिनसे

---

4. A स खुद्द; P ब सुद्ध। 5. P धणहद्दु; AP णियंदउ। 6. AP कुंभयत्तु। 7. AP add after this : जायउ तहे कम्मेण (P कमेण) ललियंगउ। 8. A मृगाधइ। 9. P जिट्ठ। 10. AP °सक्कंदण। 10. AP वरणायकुलेसहो। 11. A मृगावइ। 12. A ससहरमुह; P ससहरणह। 13. AP °उव्वसि°। 14. AP दमवर°। 15. AP पावइयउ। 16. AP वरपट्टंतरे।

कामविलासविसेसुप्पात्तेहि जोइयाइं राएं णियपुत्तिहि।
पडिउ बिंदु चेलिणिऊरूयलि दिट्ठउ कयलीकंदलकोमलि।
ताएं तोंडु कयउं विवरेरउं चित्तयरें बोल्लिउ सुइसारउ।
एएं विणु पडिबिंबु ण सोहइ धाइ जाम ऊरुत्थलु चाहइ।
ता दिट्ठउ तहि लंछणु एयइ अक्खिउ रायहु जायविवेयइ।

घत्ता—ता संरुद्दु[17] णरिंदु गउ रायहरहु लीलइ।
जिणपडिबिंबहं पासि पडु संणिहिउ [18]वणालइ ॥9॥

(10)

दिट्ठउ पडु[1] पइं पुच्छिय किंकर तेहिं पवुत्तउं वइरिभयंकर।
एयइं लिहियइं विणयविणीयइं बिंबइं चेडयमहिवइधीयहं।
चउहं विवाहु हुयउ विहुरंतउ तीहिं मज्झि दो जोव्वणवंतउ[2]।
अज्ज वि णिय दिज्जंति ण कासु वि एक्क कण्ण लहुई अलतमरवि।
तें वयणेण मयणसरवणियउ तुहुं तुह मंतिहिं तुह सुउ भणियउ।
हा हा हे कुमार तुह तायहु वड्ढइ कामावत्थ सरायहु।
चेडयधीयहि अइआसत्तउ सूरु व दिट्ठिगम्मु अइरत्तउ।

कामविलास विशेष की उत्पत्ति है, ऐसी अपनी पुत्रियों के रूपों को राजा देखने लगा। केले के कंदल के समान कोमल चेलना के जाँघतल पर पड़ा हुआ बिन्दु उसे दिखाई दिया। पिता ने अपना मुँह टेढ़ा कर लिया। चित्रकार ने श्रुतिश्रेष्ठ यह बात कही कि इस (बिन्दु) के बिना प्रतिबिम्ब शोभा नहीं देता। जब धाय उस कन्या की जाँघ को देखती है, तो उसने वहाँ चिह्न देखा—विवेकशील उसने राजा से यह कहा।

घत्ता—तब राजा क्रुद्ध हो गया। चित्रकार राजगृह से चला गया। वनालय में उसने जिन-प्रतिबिम्बों के पास चित्रपट को रख दिया।

(10)

तुमने पट देखा और अनुचरों से पूछा। उन्होंने बताया कि वे शत्रुओं के लिए भयंकर, हे राजन् ! चेटक राजा की कन्याओं के विनयविनीत चित्र लिखे गये हैं। इनमें चार का दुःख का नाश करनेवाला विवाह हो गया। (शेष) तीन में दो यौवनवती हैं। हे राजन् ! जो आज भी किसी को नहीं दी गयीं। हे शत्रुरूपी अन्धकार के लिए सूर्य, एक कन्या छोटी है। इन शब्दों से तुम कामदेव के तीरों से घायल हो गये। तब तुम्हारे मन्त्रियों ने तुम्हारे पुत्र से कहा कि हे कुमार ! तुम्हारे सरागी पिता की कामावस्था बढ़ रही है। वह चेटक की कन्या में अत्यन्त आसक्त हैं। प्रभात के सूर्य के समान वे उसमें अत्यन्त अनुरक्त हैं, परन्तु वृद्धावस्था होने के

17. A संतुट्ठु। 18. P उववालए।
(10) 1. AP पई पडु। 2. जोवण°।

ससुरु ण देइ जुण्णवयवंतहु वट्टइ अवसरु मइदिहिवंतहु।
ता कुमारु तुह रूवें[3] किउ पडु तं णिवासु लेविणु गउ भडु पडु।
पंडिउ [4]वोहवणियकयवेसउ आयउ कण्णउ णववयवेसउ।
पुच्छिउ ताहिं[5] लिहिउं तें भाणिउ[6] किं ण [7]मुणह मगहाहिउ सेणिउ।
ता दोहं[8] मि कण्णहं[9] मयमत्तइं पेम्मकुसुंभइं[10] रत्तइं णेत्तइं।
कुडिलइ चेलिणीइ सररुद्धइ कवडें इट्ठ जेट्ठ [11]रइरुद्धइ।
भणिय जाहि आहरण लएप्पिणु आवहि लहुं वच्चहुं लिहक्केप्पिणु।
लग्गहुं [illegible] मगहेसहु अलिउलणीलणिद्धमउकेसहु[12]।

घत्ता—आहरणाइं लएवि जा पडिआवइ बाली।
ता तहिं ताएण दिट्ठ चेलिणि[13] [14]मयणमयाली ॥10॥

(11)

बहिणिविओयसोयसंतत्ती[1] खंतिहि जससईहि[2] उवसंती।
पायमूलि तवचरणु लएप्पिणु थक्क जेट्ठ इंदियइं जिणेप्पिणु।
चेलिणि[3] पुणु तुह पुत्तें ढोइय पइं ससणेहें णिरु अवलोइय।
परिणिय सुंदरि जयजयसद्दें घरु आणिय दइवेण सुहद्दें।
तहि महएवीपट्टु णिबद्धउ सा रइ तुहुं णावइ मयरद्धउ।

कारण ससुर उसे देना नहीं चाहता है। बुद्धि और भाग्यवाले आपके लिए यह अवसर है। तब अभयकुमार ने तुम्हारे रूप का चित्र बनाया। और वह सुभट उस पट को लेकर उसके निवास पर गया। वह पण्डित उत्तम वणिक् का रूप धारण कर वहाँ गया। वे नव वय और वेशवाली कन्याएँ आयीं। उन्होंने लिखित (चित्र) के बारे में पूछा। उसने कहा कि क्या आप लोग नहीं जानतीं कि यह मगध राजा श्रेणिक हैं ? तब मदमत्त दोनों कन्याओं के मतवाले नेत्र प्रेमरूपी कुसुम्भ रंग से लाल हो गये। रति से अवरुद्ध और काम से आहत कुटिल चेलना ने कपट से प्रिय ज्येष्ठा से कहा—"तुम शीघ्र आभरण लेकर आ जाओ, हम छिपकर भाग चलें और अलिकुल के समान नीले स्निग्ध कोमल केशवाले मगधेश के गले जा लगें।"

घत्ता—जब तक ज्येष्ठा बाला आभूषण लेकर आती है, तब तक काम से मत्त सखी उसे दिखाई नहीं दी।

(11)

अपनी बहिन के वियोग से सन्तप्त ज्येष्ठा उपशम भाव को धारण कर, आर्यिका यशोवती के चरणों में तपश्चरण लेकर, इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के लिए स्थित हो गयी। चेलना को फिर तुम्हारा पुत्र ले आया। तुमने अत्यन्त स्नेहभाव से उसे देखा। जय-जय शब्द के साथ तुमने उससे विवाह किया। इस प्रकार सुभद्र (अभयकुमार) दैव वश उसे घर ले आया। उसे तुमने महादेवी का पट्ट बाँध दिया। वह रति

3. P रूवंकिउ। 4. A वोट्टवणिय°, P वोहुवणिय°। 5. A तेहिं। 6. P भणिउ। 7. AP मुणहिं। 8. AP दोहिं। 9. A कण्णउ मयमत्तउ। 10. AP णेत्तइं पेम्मकुसुंभए रत्तइं (A रत्तउ)। 11. AP रइलुद्धए। 12. AP °णिद्धकेसहो। 13. AP चेल्लिणि। 14. मयणमयाली।

(11) 1. A विहिणि°। 2. AP जसमइहे। 3. A चेल्लिणि।

ताहि सुखंतिहि पासि[4] णिहालिउ चंदणाइ सावयवउ पालिउं।
सहुं सम्मत्तें चारु गुणड्ढइ दाहिणसेढिहि गिरिवेयड्ढइ।
सोवण्णाहइ[5] पुरि मणवेयउ विहरमाणु णहि घरिणिसमेयउ।
आयउ उववणि णिच्चवसंतइ दिट्ठी चंदण चंदणवंतइ।
णिययघरिणि णियदेह[6] थवेप्पिणु पडिआवेप्पिणु कण्ण लएप्पिणु।
सो जा गच्छइ पुणु[7] णियभवणहु आलोयणिय दिट्ठ ता गयणहु।
अवयरंति आहासइ वइयरु देविइ तुहुं जाणिउ मायायरु।
तुज्झु विज्ज कयरोसणिहाएं ताडिय देवय[8] वामें पाएं।
एवहिं किं कुमारि पइं चालिय अच्छइ कोवजलणपज्जालिय[9]।
णिच्चमेव हियवइ संकंतहि तं णिसुणिवि सो भीयउ[10] कंतहि।

घत्ता—भूयरमणवणमज्झि पवरइरावइतीरइ।
साहिय तेण खगेण विज्ज फणीसरकेरइ ॥11॥

(12)

पत्तलहुय[1] णामेण णिहित्ती ताइ पुत्ति संपत्त धरित्ती।
पंचक्खरइं चित्ति णिज्झायइ धम्मझाणु णिम्मलु उप्पायइ।
वियलिय णिसि उग्गमिउ पयंगउ वणयरु एक्कु पत्तु सामंगउ।
णामें कालु तासु जिणवयणइं साहियाइं मुद्धइ जगसयणइं।

है और तुम कामदेव हो। चन्दना ने भी, उन्हीं यशोवती आर्यिका के पास सम्यक्त्व के साथ सुन्दर श्रावक व्रत ग्रहण कर लिये। गुणाढ्य विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी के स्वर्णाभ नगर का विद्याधर राजा मदनवेग अपनी पत्नी सहित आकाश में भ्रमण करता हुआ नित्यवसन्त नाम के उपवन में आया। अपनी स्त्री को स्थापित कर तथा कन्या को लेकर और वापस आकर, जैसे ही अपने घर के लिए जाता है, तब आकाश से विद्याधरी ने उसे देख लिया। आकाश से नीचे उतरते हुए वह पति से कहती है कि विद्या से मैंने मायावी तुम्हें और तुम्हारी विद्या को जान लिया है। उसने क्रोध से आघात करनेवाले पैर से देवी को प्रताड़ित किया। इस समय कुमारी को तुमने क्यों चलाया ? वह क्रोधाग्नि से प्रज्वलित है।" यह सुनकर प्रतिदिन अपने मन में शंका करनेवाली पत्नी से वह विद्याधर डर गया।

घत्ता—विशाल ऐरावती नदी के किनारे, भूतरमण वन के भीतर, धरणेन्द्र की आज्ञा से उस विद्याधर ने—

(12)

पर्णलघ्वी विद्या के सहारे उसे फेंक दिया। उस विद्या से वह (चन्दना) धरती पर आ गयी। वह पंच-नमस्कार मन्त्र का ध्यान करती है और निर्मल धर्मध्यान को उत्पन्न करती है। रात बीतती है और सूर्य निकलता है। वहाँ एक श्यामशरीर भील आया। उसका नाम कालू था। उस मुग्धा ने उसे जग के स्वजन जिनवचन

4. AP पासु। 5. A सोवण्णए पुरि सुरमणवेयउ। 6. A णियगेहि। 7. AP किर। 8. P देविए। 9. P °पज्जलिय। 10. AP भीयउ सो।
(12) 1. AP पण्णलहुय; K पत्तलहुय and gloss साहिय विज्ज पर्णलघुनामेति पूर्वेण सम्बन्धः।

अण्णु[2] वि तहु दिण्णइं आहरणइं पहवंतइं णं दिणयरकिरणइं।
तें तुट्ठें णिय सुंदरि तेत्तहिं भीमसिहरगिरिणियडइ जेत्तहिं।
भिल्लु भयंकरिपल्लिहि राणउ णामें सीहु सीहुरसजाणउ[3]।
तासु बाल कालेण समप्पिय तेण वि कामालेण विलुंपिय।
काओसग्गें थिय परमेसरि जा लग्गइ वणयरु वणकेसरि।
ता सो रुक्खु जेंव उम्मूलिउ सासणदेवयाहिं पडिकूलिउ।
रे चिलाय करु सुयहि म ढोयहि अप्पउं कालवयणि म णिवायहि।
ता सो तसिउ थक्कु तुण्हिक्कउ पयजुयवडिउ[4] वियारविमुक्कउ।
कंदमूलफलदावियसायइ पोसिय देवि णिसायहु[5] मायइ।
थिय कइवय दिणाइं तहिं जइयहुं वच्छदेसि कोसंबिहि तइयहुं।
वसहसेणु वणिवइ धणइत्तउ मित्तवीरु तहु किंकरु भत्तउ।
मित्तु सो ज्जि सीहहु वणणाहहु घरु आयउ सुक्कियजलवाहहु।
अप्पिय तासु[6] तेण पत्थिवसुय बालमुणालवलयकोमलभुय।
ढोइय वणि कुलगयणससंकहु भिच्चें वसहसेणणामंकहु।
घत्ता—एक्कहि वासरि जांव जोइवि सेट्ठि तिसाइउ।
बंधिवि कोंतल ताइ जलभिंगारु च्चाइउ ॥12॥

बताये और उसे प्रभा से युक्त आभूषण दिये, मानो वे सूर्य की किरणें हों। सन्तुष्ट होकर वह सुन्दरी को वहाँ ले गया जहाँ भीमशिखर गिरि के निकट, भयंकरी नामक गाँव था, जहाँ मदिरा का स्वाद जाननेवाला, सिंह नाम का भील राजा रहता था। कालू ने उसे बाला सौंप दी। काम से व्याकुल उसने भी उसके साथ कुचेष्टा करनी चाही। वह परमेश्वरी कायोत्सर्ग में स्थित हो गयी। जब तक वनसिंह वह भीलराज उससे लगता है, तब तक शासन देवियों ने उसे प्रतिकूलित कर दिया और वृक्ष की तरह उखाड़ दिया (और कहा)— "हे भील ! तू कुमारी पर हाथ मत डाल। अपने को काल के मुख में मत फेंक।" तब वह डरकर चुप हो गया और विकारमुक्त होकर उन दोनों के पैरों में पड़ गया। कन्दमूल और फलों का स्वाद दिलाती उस भील की माँ ने उसका पालन-पोषण किया। वह कुछ दिन वहाँ रहती है कि इतने में वत्सदेश की (नगरी) कौशाम्बी का धनाढ्य सेठ वृषभसेन और उसका मित्रवीर एक भक्त अनुचर जो वनराज सिंह का भी मित्र था, उस भील के घर आया। उसने बालमृणालिनी की तरह कोमल बाहुवाली वह राजकन्या उसे सौंप दी। उस अनुचर ने वह कन्या अपने कुलरूपी आकाश के चन्द्र वृषभ नाम के सेठ को दे दी।

घत्ता—एक दिन जब सेठ को प्यासा देखकर, अपने बाल बाँधकर उसने जलभिंगार (जलपात्र) ऊँचा किया,

2. AP अयर। 3. A सीहरसजाणउ; सीहरसु जाणउ। 4. AP °जुयपडिउ। 5. AP चिलायहो। 6. AP तेण तासु।

(13)

धिट्ठदुट्ठकट्ठाइ रउद्दइ ता दिट्ठी सेट्ठिणिइ सुहद्दइ।
मुंडिउ सिरु पावइइ[1] पमेल्लहि आयसणियलु घित्तु णीसल्लहि।
कोद्दवकूरु सकंजिउ दिज्जइ णिच्चमेव जा एव दमिज्जइ।
ता परमेट्ठि छिण्णसंसारउ आयउ भिक्खहि वीरु भडारउ।
पडिलाहिवि[2] विहीइ किउ भोयणु दिण्णउं तं तहु सउवीरोयणु।
पत्तदाणतरु तक्खणि फलियउ गयणहु कुसुमणियरु परिघुलियउ।
गज्जिय दुंदुहि बहुमाणिक्कइं पडियइं भाभारें पइरिक्कइं।
रयणविचित्तदिण्णविविहंगय देवेहिं मि देविहि वंदिय पय।
तियसघोसकोलाहलसद्दें जयजयजयसंजायणिणद्दें।
णमिय मिगावइए[3] लहुयारी बहिणि[4] सपुत्तइ[5] गुणगरुयारी।
वणिसुयाइ पाविट्ठइ जं किउ तो वि ण साहइ विलसिउं विप्पिउ।
सेट्ठिणि सेट्ठि बे वि कमणमियइं अम्हइं पावइं पावें खवियइं।
परमेसरि तुह सरणु पइट्ठइं एवहिं परितायहि पाविट्ठइं।
ता[6] चंदणए भणिउ को दुज्जणु को संसारि एत्थु किर सज्जणु।
धम्में सव्वु होइ भल्लारउं पावें पुणु जणविप्पियगारउं।

(13)

ढीठ, दुष्ट, कठोर और भयंकर सेठानी सुभद्रा ने उसे देख लिया। उस दुष्टा ने, पाप से रहित और निःशल्य उसका सिर मुड़वा दिया तथा लोहे की बेड़ी डाल दी। काँजी से मिश्रित कोदों का भात उसे दिया जाता था। इस प्रकार नित्य उसका दमन किया जाता था। इसी बीच संसार का नाश करनेवाले आदरणीय वीर भगवान् आहार के लिए आये। उसने (चन्दना ने) पड़गाह कर विधिपूर्वक भोजन बनाया और उसने वह कोदों का भात उन्हें दिया। उसका पात्रदान रूपी वृक्ष तत्काल फल गया। आकाश से पुष्पवृष्टि होने लगी। दुन्दुभि बज उठी। प्रभा के भार से प्रचुर माणिक्य रत्न बरसे। देवों ने भी, रत्नों से विचित्र विविधतावाले उसके चरणों की वन्दना की। देवों के कोलाहल के शब्द, तथा जय-जय-जय से उत्पन्न निनाद के साथ मृगावती ने गुणों से महान् अपनी छोटी बहिन चन्दना को पुत्र के साथ नमस्कार किया। पापिन सेठानी ने जो कुछ बुरा किया वह उसे भी नहीं कहती। सेठ और सेठानी दोनों उसके पैरों पर गिर पड़े और बोले—"हे देवी ! हम पाप से नष्ट हो गये थे। हे परमेश्वरी ! हम तुम्हारी शरण में हैं। हम पापियों को सन्ताप दीजिए।" तब चन्दना बोली--"कौन इस जग में दुर्जन कहा जाता है और कौन सज्जन ? धर्म से सब कोई भले होते हैं और पाप से सब बुरा करनेवाले होते हैं। दसों दिशाओं में यह बात फैल गयी। विजयलक्ष्मी के पति, उसके भाई

(13) 1. A पावइए सभिल्लए; P पावइ पम्मिल्लहे। 2. AP पडिगाहेवि। 3. A मृगावइ। 4. A विहिणि। 5. A सपुण्णएण गरुयारी; P सपुत्तएण गरुयारी। 6. AP तो।

दसदिसु पत्त वत्त जयसिरिधव आइय परमाणंदें बंधव।
वंदिउ वीरसामि परमप्पउ एयाणेयवियप्पसमप्पउ।
घत्ता—जिणपयपंकयमूलि बारहविहु वित्थिण्णउं।
चंदणाइ तउ घोरु तहिं तक्खणि पडिवण्णउं ॥13॥

(14)

पुणु पुच्छिउ राएं परमेसरु कहइ भडारउ णवजलहरसरु।
चंदणगयभवाइं[1] हयदुरियइं जिणवरधम्ममग्गसंचरियइं।
मगहदेसि णयरिहि पिहुणामहि जणसंकिण्णहि णीलारामहि।
राउ [2]पयारपुव्वु तहिं सेणिउ अग्गिभूइ बंभणु परियाणिउ।
तासु इट्ठ वणिवरसुय बंभणि थणजुएण पियदेहणिसुंभणि
ताहि पुत्तु सिवभूइ मणोहर चित्तसेण सुय तुंगपयोहर।
सिवभूइहि पिय सोमिल हूई णं रइए संपेसिय दूई।
सोमसम्मतणयहु सा सुंदरि णं मयरद्धयवरमहिहरदरि।
दिण्णी देवसम्मणामंकहु दियवरकुलगयणयलससंकहु।
मयइ णाहि [3]सयदलदलणेत्ती चित्तसेण विहवत्तणु पत्ती।
पइमरणेण समउं सा डिंभहिं पोसिय भाएं थणयणिसुंभहिं।
सोमिल्लइ पेसुण्णउ बोल्लिउं हियवउं पइससाहि संसल्लिउं।

परम आनन्द के साथ आये। उन्होंने एकानेक विकल्पों को परिसमाप्त करनेवाले वीर स्वामी परमात्मा की वन्दना की।

घत्ता—तब जिनवर महावीर के चरणमूल में चन्दना ने बारह प्रकार का विस्तृत घोर तप तत्काल स्वीकार कर लिया।"

(14)

फिर राजा ने पूछा और नव जलधर के समान स्वरवाले आदरणीय जिन पापों को नष्ट करनेवाले और जिनवर के धर्ममार्ग में संचरण करनेवाले चन्दना के जन्मान्तरों का कथन करते हैं—मगधदेश में नीले उद्यानोंवाली जनसंकुल पृथु नाम ('वत्सा'—उ. प्र.) की नगरी में, प्रकार जिसके पूर्व में है ऐसा श्रेणिक (प्रश्रेणिक) नाम का राजा था। और अग्निभूति नाम का ब्राह्मण जानो। उसकी दो प्रिय पत्नियाँ थीं—एक ब्राह्मणी और दूसरी सेठ पुत्री। अपने स्तनयुगल से प्रिय की देह का मर्दन करनेवाली उनके क्रमशः सुन्दर शिवभूति पुत्र, और ऊँचे स्तनोंवाली चित्रसेना नाम की पुत्री थी। शिवभूति की पत्नी सोमिला थी, जो मानो रति के द्वारा भेजी गयी दूती हो। वह सोमशर्मा नामक ब्राह्मण की पुत्री थी, जो मानो कामदेव रूपी पहाड़ की घाटी थी। ऐसी

(14) 1. AP चंदणसयणयाइं। 2. पयावपुत्तु। 3. AP णवसयदलणेत्ती।

चित्तसेण भाएं सहुं अच्छइ रत्त रमणि किं काइं मि पेच्छइ।
एह खुद्द रोसेण महेसमि आगामिणि भवि दंडु करेसमि।
एयहि पिसुणहि पसरियमायहि वयणविणिग्गयसुयलियवायहि[4]।
एव णियाणु णिबद्धउ सेणइ अण्णहिं दिणि गुरुविणयपवीणइ।
घत्ता—विप्पामंतणि जाए मुणिवरु भावें भाविउ।
सोमिलाइ[5] सिवगुत्तु पढममेव भुंजाविउ ॥14॥

(15)

कुद्धउ पइ दइयइ संबोहिउ रिसिगुणगणसंकहणुम्मोहिउ।
मुउ सिवभूइ वंगदेसंतरि कंतणामि रमणीयइ पुरवरि।
तहिं सुवण्णवम्महु[1] तडिलेहहि तणउ महाबलु हुउ वरदेहहि।
अंगदेसि चंपापुरवासिहि[2] सिरिसेणहु पत्थिवगुणरासिहि।
धणसिरि गेहिणि तहि सोमिल्लय[3] सुय उप्पणी मालाभुयलय[4]।
कणयलया णामें सुहदाइणि सच्छसहाव णाइं मंदाइणि।
कंतउराउ सणेहपणामें भाइणेज्जु आवाहिउं[5] मामें।
दोहिं मि सहुं कीलइ गय वासर ता जंपंति भवणि णिवणरवर।

चित्रसेना द्विजवररूपी आकाश के चन्द्र देवशर्मा नाम के ब्राह्मण को दी गयी। पति के मरने पर कमलदल के समान नेत्रोंवाली वह वैधव्य को प्राप्त हुई। पति के मरने के कारण दूधपीते बच्चों के साथ, उसका पालन भाई ने किया। लेकिन सोमिला ने उससे दुष्ट बात कह दी कि चित्रसेना भाई के साथ रहती है। इससे पति की बहिन का (चित्रसेना का) हृदय छलनी हो गया। प्रेम की अन्धी स्त्री क्या कुछ भी देख पाती है ? 'इस क्षुद्र से मैं प्रतिशोध लूँगी, आगामी भव में कपट करनेवाली और अपने मुख से झूठे शब्द निकालनेवाली इस दुष्टा को दण्ड दूँगी।' चित्रसेना ने यह निदान बाँध लिया। दूसरे दिन गुरुओं की विनय में प्रवीण उसने,

घत्ता—ब्राह्मणी का आमन्त्रण होने पर, सोमिला ने भावपूर्वक मुनि शिवगुप्त की वन्दना की और उन्हें पहले ही आहार दे दिया।

(15)

इस पर पति शिवभूति क्रुद्ध हुआ। परन्तु पत्नी ने उसे समझा लिया। ऋषि के गुणसमूह के कथन से उसका मोह दूर कर दिया। शिवभूति मरकर, बंगदेश के अत्यन्त सुन्दर कान्त नामक नगर में उत्पन्न हुआ। वहाँ सुवर्णवर्मा एवं उत्तम देहवाली विद्युल्लेखा का महाबल नाम का पुत्र रहता था। अंगदेश की चम्पापुरी के राजा के गुणों के समूहवाले राजा श्रीषेण की धनश्री गृहिणी थी। सोमिला उसकी माला भुजलतावाली कन्या हुई। शुभ करनेवाली कनकलता के नाम से, स्वच्छ स्वभाववाली जैसे वह मन्दाकिनी नदी हो। अत्यन्त

---

4. AP "सुललिय"। 5. AP सोमिलए।

(15) 1. A सुवण्णधम्महो। 2. AP चंपयपुरवासिहि। 3. AP सोमिल सुय। 4. AP उप्पवणी मालइमालाभुय; K मालाभुयलय and gloss मालतीमालावत् भुजलता यस्याः। 5. A अप्पाहिउ।

एयहु एह कण्ण दिज्जेसइ तावण्णहिँ दिणि ससुरउ भासइ।
बेण्णि वि णवजोव्वणसंपुण्णइं[6] संजायाइं पउरलायण्णइं।
जाम विवाहु होइ णिक्खुत्तउ ता एयहुं सहवासु ण जुत्तउ।
असहियविरहहुयासझलक्कइं[7] बेण्णि वि विहडियाइं णं चक्कइं।
असहंतेण[8] दुक्खु कयसोएं कड्ढिय मामपुत्ति कयराएं।
गउ णियकुलहरु सवहु मयालउ मायापियरहिँ गरहिउ बालउ।
पइं सावज्जकज्जु किं रइयउं कण्णारयणु अदिण्णु जि लइयउं।
णायरणरपरिहासाणासइ[9] ता सो थिउ पच्चंतणिवासइ।
सहुं कंताइ तेत्थु णिवसंतें अज्जवसीलें अइउवसंतें।
मुणिपुंगमहु सुभोज्जु पयच्छिउं घरिणिइ हियउल्लइ सुसमिच्छिउं।
महुसमयागमि सुट्ठु सदप्पें खद्धउ सो कुमारु वणसप्पें।
कंतइ पइवउ[10] पडिउं पलोइउं असिधेणुयहि पाणि परिढोइउ।
उयरु वियारिवि मुय पियपेम्में सयलु वि जीउ णडिज्जइ कम्मे।
पवरामंतिविसइ[11] उज्जेणिहि णयरिहि सोक्खणिवासणिसेणिहि।
वणि धणएउ कंतु धणमित्तहि मरिवि महाबलु कुवलयणेत्तहि।

स्नेह करनेवाले मामा श्रीषेण ने कान्तपुर से अपने भानजे (महाबल) को बुलवा लिया। उन दोनों के खेलते हुए बहुत दिन बीत गये, तो राजा के श्रेष्ठ लोगों ने कहा कि इसके लिए यह कन्या दे देनी चाहिए। तब एक दिन मामा कहता है कि दोनों ही नवयौवन से परिपूर्ण और प्रचुर लावण्य से युक्त हो गये हैं। इसलिए जब तक निश्चित रूप से विवाह नहीं हो जाता, तब तक इनका साथ-साथ रहना उचित नहीं है। इस प्रकार विरहरूपी आग की ज्वालाओं को नहीं सह सकनेवाले दोनों को अलग-अलग कर दिया गया, मानो चक्रवाक हों। (वियोग) का दुःख नहीं सहते हुए शोकाकुल प्रेमी महाबल मामा की पुत्री को भगा ले गया। मदयुक्त वह अपनी वधू के साथ अपने कुलगृह गया। माता-पिता ने पुत्र की निन्दा की कि तुमने यह पापकर्म क्यों किया ? तुमने नहीं दी गयी कन्या को क्यों ग्रहण कर लिया ? तब वे नगर के मनुष्यों के परिहास के कारण प्रत्यन्तपुर नगर में रहने लगे। अपनी कान्ता के साथ रहते हुए अत्यन्त आर्जवशील एवं शान्त स्वभाववाले उसने मुनिश्रेष्ठ को सुन्दर आहार दिया। पत्नी को वह बहुत अच्छा लगा। वसन्त समय आने पर एक सदर्प वनसर्प ने उस कुमार को काट खाया। कान्ता ने पति के शरीर को पड़ा हुआ देखा। उसने छुरी पर अपना हाथ रखा और प्रिय-प्रेम के कारण उससे पेट फाड़कर मर गयी। कर्म के द्वारा सभी जीव नचाये जाते हैं। विशाल अवन्तिदेश की सुखनिवास की नसेनी उज्जयिनी नगरी में धनदेव वणिक् था। महाबल मरकर, कमल के समान नेत्रवाली (पत्नी) धनमित्रा का नागदत्त नाम का पुत्र हुआ। वह अपने सुकवित्व से अत्यन्त विख्यात

6. AP °संपण्णइं। 7. AP विसहियविरहहुयासझुलुक्कइं। 7. AP असहंतेण तेण जामाएं। 9. P °परिहासोणासए। 10. AP पइ मुओ। 11. AP अवरावंति।

णायदत्तु णामें सुउ जायउ सुकइत्तेण सुट्ठु[12] विक्खायउ।
कणयलया पोमलया णिवघरि[13] हूई अवर[14] कहिं मि दीवंतरि[15]।
घत्ता—वणिवइणा वणिकण्ण परिणिवि अवर पयासहु।
सहुं पुत्तें धणमित्त संपेसिय परदेसहु ॥15॥

(16)

सीलदत्तरिसि[1] बुद्धिइ मंडिउ तणुरुहु तहि संजायउ पंडिउ।
अवरु मित्तु संजायउ तलवरु थिउ पुरि सत्थदाणतोसियपरु।
अणुवय गुणवय चउसिक्खावय परिपालिय णिम्मल गलियावय।
माउलाणितणयहु धणधणियहु णंदिगामवासहु कुलवणियहु।
दिण्णी ससस[2] सुट्ठु साणंदें तेण गहिय णं रोहिणि चंदें।
उवसिलोउ[3] कउ कइरसजुत्तउ दिट्ठउ राउ[4] रिद्धिसंपत्तउ।
पडिआयउ कुद्धंतुज्जेणिहि[5] रयणसिलायलविरइयछोणिहि।
णउलें [6]सहएवें णोलग्गिउ दिट्ठउ[7] पिउ धणभाउ पमग्गिउ।
जणणें बोल्लिउं सोक्खजणेरउं णिहिउं पलासणयरि वसु मेरउं।
सहुं [8]णवलें सहएवें गच्छहि धणु लइ तुहुं एयहं मि पयच्छहि।

था। वधू भी कनकलता (कांचनलता) नामक रानी से पद्मलता के नाम से किसी द्वीपान्तर में राजा के घर उत्पन्न हुई।

घत्ता—सेठ धनदेव ने एक दूसरी सेठ-कन्या से विवाह कर पुत्र के साथ धनमित्रा को परदेश (पलाश नगर) भेज दिया।

(16)

वहाँ शीलदत्त मुनि की बुद्धि से मण्डित वह पुत्र पण्डित हो गया। उसका एक और तलवर मित्र हो गया। अपने शास्त्रदान से दूसरों को सन्तुष्ट करता हुआ वह वहाँ रहने लगा। उसने अणुव्रत, गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतों का विशुद्ध पालन किया। उसकी आपत्तियाँ नष्ट हो गयीं। नन्दीग्राम के रहनेवाले वणिक् कुल के धन से सम्पन्न मामी के पुत्र को उसने आनन्द के साथ अपनी बहिन दे दी। उसने भी उसे ग्रहण कर लिया मानो चन्द्रमा ने रोहिणी को ग्रहण किया हो। उसने एक कविरस से युक्त उपश्लोक (छोटा छन्द) बनाया जो राजा को दिखाया और ऋद्धि से सम्पन्न हो गया। वह क्रोध करता हुआ, रत्नशिलाओं से विजड़ित भूमिवाली उज्जयिनी नगरी वापस आया। तथा नकुल और सहदेव से सेवित पिता से भेंट की और अपना धन-भाग माँगा। पिता ने कहा—"सुख को उत्पन्न करनेवाला मेरा धन पलाशनगरी में रखा हुआ है। तुम नकुल, सहदेव के साथ जाओ। धन ले लो और तुम इनको भी देना।"

12. A सुद्धु; P सुट्ठ। 13. A नृयघरि। 14. AP कहिं मि अवर। 15. A दीवयंतरि।
(16) 1. A सीलदत्तरसबुद्धिए। 2. A सस सा सुट्ठु। 3. AP वसिकउ लोउ कईरस°। 4. A राणउ सिरिसंपत्तउ। 5. A सकुडुंबुज्जेणिहे। 6. AP सहदेवें°। 7. P omits दिट्ठउ। 8. AP णउलें।

घत्ता—ते तिण्णि वि दायज्ज[9] उल्लंघेप्पिणु सायरु।
गय बोहित्थि चडेवि अवलोइउ तं पुरवरु ॥16॥

(17)

बोहित्थु वि ण वहइ थोवंतरि रज्जु विलंबमाणु पइसिवि पुरि।
दिट्ठी एक्क कण्ण गुणवंतें पुच्छिय वणिवइतणयमहंतें[1]।
किं पुरु का तुहुं सुहइं जणेरी दीसहि भल्लि व कामहु केरी।
कहइ किसोयरि रोमंचिज्जइ दीवु पलासु एउ जाणिज्जइ।
णयरु पलासु[2] महाबलु राणउ कंचणलयवइ इंदसमाणउ।
हउं सुय तासु पोमलय वुच्चमि कं दिवसु वि विहवेण ण मुच्चमि।
केण वि खयरें मणुयपसंसिउ रक्खसविज्जइ पुरु विद्धंसिउ।
अम्हारइ संताणइ जाएं असिमंतेण पासहिउ राएं।
चिरु केण वि तहु णिसियरविज्जउ णिण्णट्ठाउ खगेसरपुज्जउ।
तं खंडउं अरिवरसिरखंडउ[3] ण धरिउ जणणें विरहतरंडउ[4]।
मारिउ रक्खसविज्जइ खयरें णावइ मच्छउ गिलियउ मयरें।
सुण्णउं पट्टणु हउं[5] थिय सुण्णी अच्छमि तायसोयदुहभिण्णी।
ता तं[6] खग्गु लेवि फणियत्तें हउ रयणीयरु झाइयमंतें।

घत्ता—वे तीनों भागीदार जहाज में चढ़कर गये और समुद्र पार कर उन्होंने उस नगरवर को देखा।

(17)

थोड़ी दूरी रह जाने पर उनका जहाज नहीं चला। तब रस्सी डालकर और नगर में प्रवेश कर उन्होंने एक गुणवती कन्या देखी। वणिक्पति के सबसे बड़े लड़के ने पूछा—"यह कौन-सा नगर है, और सुख को उत्पन्न करनेवाली तुम कौन हो ? तुम कामदेव की बरछी के समान दिखाई देती हो।" रोमांचित होती हुई वह कृशोदरी कहती है—"इसे आप पलाशद्वीप जानें। यह पलाशनगर है। इसका राजा महाबल है। कांचनलता का पति जो इन्द्र के समान है, मैं उसकी कन्या पद्मलता बोल रही हूँ। मैं किसी भी दिन वैभव से रिक्त नहीं रहती। किसी विद्याधर ने मनुष्यों के द्वारा प्रशंसित इस नगर को राक्षस विद्या से ध्वस्त कर दिया। फिर हमारी ही कुलपरम्परा में उत्पन्न हुए किसी राजा ने मन्त्र के द्वारा एक तलवार सिद्ध की। फिर किसी ने विद्याधरों के द्वारा पूज्य राक्षसी विद्या को (उस तलवार से) नष्ट कर दिया। शत्रु के सिर को काटनेवाली तथा विरह को तरने के लिए नौका के समान उस तलवार को पिता ने अपने पास नहीं रखा। विद्याधर ने राक्षस विद्या से उसे मार दिया मानो मगर ने मछली को निगल लिया हो। नगर सूना हो गया और मैं भी शून्य रह गयी। अब पिता के शोक से दुःखी मैं यहाँ रहती हूँ।" तब नागदत्त ने वह तलवार ले ली और मन्त्र का ध्यान करते हुए उसने राक्षस को मार दी। घायल शरीरवाला वह उसके वश में हो गया।

9. AP दाएज्ज।

(17) 1. A जेण व महंतें। 2. P पलासु। 3. P °सिरिखंडउ। 4. AP विहुरतरडउ। 5. AP थिय हउं। 6. A तें।

सो वणियंगु तासु वसु जायउ पयलियरोसु सुट्ठु सुच्छायउ[7]।
धम्मु[8] पवण्णउ भूसिउ खंतिइ वइरु मुएप्पिणु मुउ[9] उवसंतिइ।
कड्ढियकेयइ णयरि पइट्ठा दविणु ण देंत भाय ते णट्ठा।
कण्ण लएप्पिणु अवरु वि पिउधणु कासु होइ किर दाइउ सज्जणु।
उज्जेणिहि आउच्छिउ[10] राएं अण्णु वि आएं सुहिसंघाएं।
णायदत्तु तुम्हहिं सहुं णायउ अम्हहुं सो[11] णउ मिलइ वरायउ।
तेहिं उत्तु ता तहिं धणमित्तइ सीलदत्तु पुच्छिउ सुहवत्तइ[12]।
घत्ता—रिसिणा वुत्तु पिएण तुज्झु तणउ आवेसइ।
रोमंचियसव्वंगु पयपणिवाउ करेसइ ॥17॥

(18)

इयरु वि तहिं जिणभवणि पइट्ठउ वंदिवि जिणवरु थिउ परिउट्ठउ।
ता विज्जाहरु एक्कु पराइउ तेण कुमारु [1]सणेहें जोइउ।
पियहियमउवयणें संभासिउ उववणि लयभवणंति णिवेसिउ।
किउ[2] धम्में वच्छल्लु वणीसहु जिणपयपंकयपणमियसीसहु।
णियडगामि णियभवणणिवासिणि ता तहु बहिणि आय पियभासिणि।
पभणइ बंधव तुह दायज्जहु दविणसमज्जणणिम्मलविज्जहु।

उसका क्रोध चला गया और वह कान्ति से सम्पन्न हो गया। क्षमा से भूषित उसका धर्म पूरा हो गया। वह शत्रुता छोड़कर शान्तभाव से मृत्यु को प्राप्त हुआ। वे नगर में प्रविष्ट हुए। वे भाई रस्सी खींचकर, धन नहीं देते हुए कन्या और पिता का धन लेकर भाग गये। धन किसका होता है ? इसलिए सज्जन दान में उसे देते हैं। उज्जयिनी में राजा तथा दूसरे सुधीसमूह ने पूछा—नागदत्त तुम लोगों के साथ नहीं आया ? उन्होंने कहा—वह बेचारा हम लोगों से नहीं मिला। शुभवचनवाली धनमित्रा ने शीलगुप्त मुनि से पूछा—

घत्ता—ऋषि ने प्रिय शब्दों में कहा—तुम्हारा पुत्र आयेगा और जिसका सारा शरीर रोमांचित है, ऐसा वह चरणों में प्रणाम करेगा।"

(18)

वहाँ दूसरा (नागदत्त) जिनभवन में जिनवर की वन्दना कर सन्तुष्ट बैठ गया। इतने में एक विद्याधर वहाँ आया। उसने कुमार को स्नेहभाव से देखा। प्रिय, हितकारी और कोमल शब्दों में उससे सम्भाषण किया। वह उसे उपवन में एक लताभवन के भीतर ले गया। जिनवर के चरणकमलों में सिर झुकानेवाले उस वनीश नागदत्त के साथ उसने धर्म से वात्सल्यभाव किया। पास ही गाँव में अपने भवन में रहनेवाली प्रियभाषिणी उसकी बहिन आयी। वह बोली—धन कमाने की निर्मल विद्या में कुशल तुम्हारे भागीदार नकुल के लिए कोई

7. AP संजायउ। 8. AP धम्म। 9. AP थिउ। 10. AP आउच्छिय। 11. णउ सो। 12. AP सुहवंतइ।
(18) 1. AP सिणेहें। 2. P कियधम्में।

णउलहु कण्ण का वि जयसुंदरि दिज्जइ लग्गी [3]खलमिगकेसरि।
ताएं महु हक्कारउं पेसिउ महुं मि देहु दालिद्दें सोसिउ।
ता तें दिण्णु ताहि चामीयरु छिंदिवि[4] घल्लिउ दालिद्दंकुरु।
मुद्द[5] सससहि हत्थें पट्ठाविय दिण्णी करि कुमरिइ मणि भाविय।
अप्पणु पुणु गउ तं पुरु सुहयरु जहिं गुरु जहिं सो तलवरसहयरु।
सहुं जणणिइ णरवरसुहखाणिहि आया झ[6]त्ति वे वि उज्जेणिहि।
घत्ता—दिट्ठउ तेण णरिंदु भासिउ देव पयावइ।
महुं पिउदविणु ण देइ अवरु[7] कण्ण पाडलगइ ॥18॥

(19)

मइं अहिलसिय कण्ण हयमग्गउ ससुयहु करयलि लावइ लग्गउ।
ता आरुट्ठु राउ कोक्किउ वणि देवाविउ धणु [1]तियचूडामणि।
णिम्मुक्की[2] णिवकुमरि[3] वणिदें कउ विवाहु रिद्धीइ णरिंदें।
जणणहु केरउं तहु सेट्ठित्तणु दिण्णउं [4]पायडपवरपहुत्तणु।
रायरोसु पेच्छवि दुविणीएं ताएं तणउ खमाविउ भीएं।
तासु विरुज्झमाणु सुहियत्तें महिवइ तोसिउ विसहरदत्तें[5]।
सिरिअरहंतहु कलिमलहारी विरइय पुज्ज मणोरहगारी[6]।

जयसुन्दरी नाम की कन्या प्रदान की जा रही है। हे खलमृगों के लिए सिंह ! पिता ने मेरे लिए बुलावा भेजा है। मेरा शरीर दारिद्र्य से सूख रहा है। तब उसने उसे सोना देकर उल्टे दारिद्र्य को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। अपनी बहिन के हाथ से भेजी गयी उस अँगूठी को कुमारी ने अपने हाथ में पहिन ली। उसे वह मन में अच्छी लगी। शुभ करनेवाला कुमार (नागदत्त) स्वयं उस नगर के लिए गया जहाँ उसके गुरु और मित्र तलवर थे। अपनी माँ के साथ, शीघ्र ही वे दोनों मनुष्यों के सुख की खान उज्जयिनी में आये।

घत्ता—उसने राजा से भेंट की और कहा—"हे देव प्रजापति ! वह मेरा प्रिय धन नहीं देता, और हंसगामिनी मेरी पत्नी भी।

(19)

मेरे द्वारा चाही गयी, मार्ग में अपहृत कन्या यह अपने पुत्र के हाथ में देने लगा है।" इस पर राजा क्रुद्ध हो उठा। उसने सेठ को बुलाया और उससे धन और उस स्त्रीश्रेष्ठ को दिलवाया। सेठ ने राजकुमारी को मुक्त कर दिया। राजा ने ऋद्धि के साथ उसका विवाह कर दिया। पिता का श्रेष्ठीपद और जो प्रकट विशाल प्रभुता थी, वह भी उसे दे दी। राजा का प्रकोप देखकर डरे हुए दुर्विनीत पिता ने पुत्र से क्षमा माँगी। उससे (पिता से) विरुद्ध होते हुए, राजा को सुधी नागदत्त ने सन्तुष्ट किया। उसने श्री अरहन्त भगवान

---

3. B "मृग"। 4. AP छिंदिणवि। 5. AP मुद्द ससाहे हत्थे पठाविय। 6. A वे वि झत्ति। 7. AP अवरु वि कलत्तु।

(19) 1. B तृय°। 2. P णिमुक्क। 3. B नृव°। 4. AP पायडु पवर°। 5. AP विसहरयत्तें। 6. AP मणोहरगारी।

सुइरु कालु सो तहिं णिवसेप्पिणु[7] अंतयालि संणासु करेप्पिणु।
मुउ सोहम्मसग्गि संभूयउ पुणु तेत्थाउ पडिउ पयणूयउ।
जंबूदीवि भरहि विजयड्ढहि णयरि सिवंकरि उववणचंचलि।
पवणवेयखयरहु हुउ णंदणु सइहि [8]सुवेयहि णयणाणंदणु।
चंदण तेण हरिय[9] णियणेहें सो सिज्झेसइ एण जि देहें।

घत्ता—गय सग्गहु धम्मेण वयहलेण[10] ससितेया।
णागदत्तसस जा सि सा हूई मणवेया ॥19॥

(20)

जो तेण जि मारिउं खयरेसरु सो सुरसुहुं भुंजिवि पुहईसरु।
जायउ चेडयणरवइ जाणहि फणिदत्तहु जणणि वि अहिणाणहि।
जाय सुहद्द विमाणहु चुक्की चित्तसेण णरजम्मु पढुक्की।
वणि धणदेउ हववि गय सग्गहु धणमित्तावरु भुंजियभोग्गहु।
वणिसुय वसहसेणु पुणु हूई सररुहलय चंदण संभूई।
सा णिग्गहिय तेण सणियाणें को णउ दुहुं पाविउ अण्णाणें।
भवि भवि संसरंतु[1] भवु[2] आयउ णउलु सीहु सवरुल्लउ जायउ।
इय संसारियाइं संसारइ परिभमंति चुयगहियसरीरइं।

की, कलिमल का हरण करनेवाली सुन्दर पूजा की। वहाँ बहुत समय तक निवास कर, अन्त समय संन्यास धारण कर और मरकर, सौधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। प्रजा के द्वारा संस्तुत वह वहाँ से च्युत होकर जम्बूद्वीप में विजयार्ध पर्वत के उपवनों से चंचल शिवशंकर नगर में पवनवेग विद्याधर के पुत्र एवं सती सुवेगा के नेत्रों के लिए आनन्ददायक हुआ। अपने स्नेह के कारण उसने चन्दना का अपहरण किया। वह इसी शरीर से मुक्ति को प्राप्त होगा।

घत्ता—चन्द्रमा के समान तेजवाली, जो नागदत्त की बहिन थी, वह धर्म और व्रतों के फलों के कारण स्वर्ग गयी एवं वहीं मनोवेगा हुई।

(20)

और जो उसने विद्याधर का बध किया था, वह पृथ्वीश्वर स्वर्ग-सुख भोगकर चेटक राजा हुआ है, यह जानो। तुम नागदत्त की माँ को भी पहिचान लो। विमान से चूकी, जो सुभद्रा थी, वही इस मनुष्य-जन्म में चित्रसेना हुई। धनदेव बणिक् भी, और दूसरा धनमित्र भी, जिसमें भोग भोगे जाते हैं ऐसे स्वर्ग में गया। वणिक्पुत्री वृषभसेना भी कमललता के समान चन्दना हुई। उसने अपने ही निदान से स्वयं को दण्डित किया। अज्ञान से कौन नहीं दुःख पाता ? जन्म-जन्म में संसरण करता हुआ नकुल सिंह नाम का भील हुआ। इस प्रकार संसार में शरीरों को छोड़ने और ग्रहण करनेवाले संसारी जीव परिभ्रमण करते रहते हैं।

7. AP णिवसेप्पिणु। 8. AP मणवेयहि। 9. AP हरिवि। 10. B व्रयहलेण।
(20) 1. AP संचरंतु। 2. AP भउ।

घत्ता—इय आयण्णिवि धम्मु भव्वलोउ आणंदिउ।
भरहतेउ भयवंतु पुप्फदंतु जिणवंदिउ[3] ॥20॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे चंदणभवावण्णणं णाम
अट्ठणउदिमो परिच्छेउ समत्तो ॥९८॥

घत्ता—इस प्रकार धर्म सुनकर भव्यलोक आनन्दित हुआ। नक्षत्रों को आच्छादित करनेवाले तेज से युक्त पुष्पदन्त ने जिनवर की वन्दना की।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का चन्दनाभव-वर्णन
नाम का अट्ठानवेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

3. AP जिणु वंदिउ।

णवणवदिमो संधि

उववणि कयरायहिं सहुं ससहायहिं लीलाइ जि पउ ढोयइ।
अण्णहिं दिणि सेणिउ णरसंमाणिउ समवसरणि जइ जोयइ ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

पिंडीतरुवरतलि देहझीणु जीवंधरु णामें झाणलीणु।
अवलोयवि पुच्छिउ तें सुधम्मु को एहु भडारा खवइ कम्मु।
पभणइ मुणिवरु इह जंबुदीवि सुणि सेणिय चंदाइच्चदीवि।
हेमंगह विसइ मणोहिरामि तहिं रायणयरि संपत्तकामि।
सच्चंधरु णरवइ विजय घरिणि लीलागइ णं वरविंझकरिणि।
कट्ठंगारउ णामेण मंति मंतेहिं विहियउवसग्गसंति।
सुपुरोहिउ सुविमलु रुद्दयत्तु तं णारिरयणु[1] सुहुं सयणि सुत्तु।
पेच्छइ मणिमउडु परिप्फुरंतु वसुसमचलघंटारणझणंतु[2]।
अहिणवअसोयतरु छिज्जमाणु अण्णेक्कु णवल्लु वि णिग्गमाणु।
विजयाइ णिहालिउ सिविणु एव सुविहाणइ पुच्छिउ दइउ देव।

निन्यानवेवीं सन्धि

एक दिन राग करनेवाले अपने सहायकों के साथ राजा श्रेणिक लीलापूर्वक जब अपने उपवन में पैर रख रहा था, तो उसने समवसरण में मनुष्यों से सम्मानित एक मुनि को देखा।

(1)

अशोकवृक्ष के नीचे देह से क्षीण जीवन्धर नाम के (मुनि) ध्यान में लीन थे। उन्हें देखकर उसने सुधर्माचार्य से पूछा कि हे आदरणीय ! यह कौन कर्म का क्षय कर रहे हैं ? मुनिवर कहते हैं—हे श्रेणिक ! सुनो, बताता हूँ। चन्द्रमा और सूर्य से आलोकित जम्बूद्वीप के सुन्दर हेमांगद देश में मनारथों को प्राप्त करनेवाला राजनगर है। उसमें सत्यन्धर राजा था और उसकी गृहिणी विजया थी, लीलापूर्वक चलनेवाली जो मानो विन्ध्याचल की हथिनी है। उसका काष्ठांगारिक नाम का मन्त्री था, जो मन्त्रों से उपसर्गों की शान्ति कर देता था। रुद्रदत्त नाम का पवित्र पुरोहित था। किसी दिन विजया रानी बिस्तर पर सुख से सो रही थी। वह मणियों से भास्वर मुकुट देखती है, जो आठ स्वर्ण घण्टों से रुनझुन ध्वनि कर रहा था। जिस अशोक वृक्ष के नीचे वह बैठी हुई है, वह क्षीण हो रहा है और एक दूसरा अशोक वृक्ष निकल रहा है। विजया ने इस प्रकार का स्वप्न देखा और दूसरे दिन उसने अपने पति से पूछा—"हे देव !

---

(1) 1. P णारिरयासु। 2. A °समदलघंटा; P °समचलघंटा।

घत्ता—सयणयलि पसुत्तइ मउलियणेत्तइ सिविणइ तेयविराइउ।
मइं दिट्ठउ घंटउ रावविसट्टउ अवरु मउडु अवलोइउ ॥1॥

(2)

दिट्ठें[1] एएं सिविणयफलेण किं होही भणु महुं णिम्मलेण।
पइ[2] भणइ णिसुणि हलि कमलणयणि महुं मरणु तुज्झु सुउ चंदवयणि।
पुत्तइउ [3]पाविवि अट्ठलंभु भुंजेसइ महि परबलणिसुंभु।
तं णिसुणिवि[4] देवि वि भायरेण काइय[5] दूरहि ण विसायएण।
अण्णहिं दिणि मणहरवणि वसंतु रिसि सीलगुत्तु वरणाणवंतु।
पणवेप्पिणु कुलसिरिलंपडेण पुच्छिउ वणिणा गंधुक्कडेण।
महुं तणुरुह होंति मरंति सव्व दीहाउ पुत्तु होही विगव्व।
किं णउ भणु भणइ मुणिंदु तासु तुह होही सुउ तिहुयणपयासु।
ससियरसियकित्ति धरित्तिसामि दढचरमदेहु[6] थिरु[7] मोक्खगामि।
अहिणाणु णिसुणि मयतणयचाइ पिउवणि णच्चियडाइणिणिहाइ।
तुहुं पुत्तु लहेसहि बलपयंडु दीहाउसु पडिभडसमरसोंडु।
तं वयणु सुणेप्पिणु जक्खिणीइ सिसुससहरधवलकडक्खिणीइ।
भवियव्वरायरक्खणणिमित्तु रायालउं जाइवि गरुडजंतु।

घत्ता—शयनतल पर सोते हुए और आँखें बन्द किये हुए मैंने स्वप्न में तेज से शोभित घण्टा देखा और शब्द से विशिष्ट मुकुट देखा।

(2)

इस निर्मल स्वप्न के देखने से क्या होगा ? मुझे बताइए। राजा कहता है—"हे कमलनयने ! सुनो, हे चन्द्रमुखी, मेरी मृत्यु होगी और तुम्हारा पुत्र होगा। वह राजा (पुत्र) आठ लाभ प्राप्त करेगा और शत्रुबल का नाश करनेवाला धरती का भोग करेगा।" यह सुनकर देवी कान्ति या विषाद से अधिक प्रभावित नहीं हुई। एक दूसरे दिन, मनोहर उद्यान में उत्तम ज्ञानवान शीलगुप्त नाम के मुनि रह रहे थे। उन्हें प्रणाम कर कुलश्री के लम्पट गन्धोत्कट नामक सेठ ने मुनि से पूछा—"मेरे पुत्र होते हैं और मर जाते हैं। हे गर्वरहित, क्या मुझे दीर्घायु पुत्र होगा या नहीं, बताइए।" तब मुनि कहते हैं कि "तुम्हारा त्रिभुवन को प्रकाशित करनेवाला पुत्र होगा—चन्द्रमा के समान श्वेत कीर्तिवाला, धरती का स्वामी, दृढ़ चरमशरीरी, स्थिर और मोक्षगामी। उसकी पहचान सुनो। जिसमें मृतपुत्रों को छोड़ा जाता है और जिसमें डायनों का समूह नृत्य करता है, ऐसे मरघट में तू प्रचण्ड बल-दीर्घायुवाला प्रतियोद्धाओं से युद्ध में समर्थ पुत्र प्राप्त करेगा।" यह वचन सुनकर, शिशुचन्द्र के समान धवल कटाक्षोंवाली यक्षिणी ने होनेवाले राजा की रक्षा करने के बहाने, राज्यालय में जाकर और

---

(2) 1. AP have before this line : गरुयउ असोउ णिज्झंतु दिट्ठु, अण्णेक्कु लहुउ वड्ढंतु इट्ठु। 2. AP पिउ। 3. AP पाविय अट्ठलंभु। 4. AP तं सुणेवि देवि भावायएण। 5. AP छाइय हरिसेण विसायएण। 6. AP दिढ°। 7. A थिरमोक्ख°।

सुपसाहिउ सोहिउ ताइ केम गयणयलु चंदरेहाइ जेम।
अण्णहिं दिणि पच्चूसागएण विप्पेण रुद्ददत्तेण तेण।
णिरलंकारी कयसुहविरोह महएवि णिरिक्खिवि विगयसोह।
णावइ विहवत्तणु पत्त देवि जाणियउ दइउ णाणेण भावि।
कहिं पुहइणाहु सहस त्ति वुत्तु देवीइ पबोल्लिउं राउ सुत्तु।
घत्ता--अइपसरियगत्तउ मउलियणेत्तउ हियवइ असुह[8] वियक्किउं।
महुं पाणहं वल्लहु परवहुदुल्लहु पहु जोयहुं जि ण सक्किउ ॥2॥

(3)

तं जाणिवि दुट्ठु अरिट्ठु विप्पु गउ मंतिणिहेलणु दुव्वियप्पु।
अक्खिउ मंतिहिं लइ[1] तुहुं जि रज्जु पहु होसइ कालकयंतभोज्जु।
पहुदोहउ[2] जाणिवि दीहदोसि तहु पुत्तें तुहुं मारेव्वओ सि।
इय भासिवि गउ णरयहु दुचित्तु तिज्जइ वासरि पुणु रुद्ददत्तु[3]।
मंतिं मेलाविवि भडणिहाउ उप्परि जाइवि[4] रणि वहिउ[5] राउ।
संणिहियगरुडजंतंतरंगि जक्खिइ रक्खिय तहिं विहुरसंगि
तं वइणतेयरूवंकु[6] ठाणु गरुहार देवि पुणु णिय मसाणु।
तहिं पुत्तु पसूई सुद्धसील उरयलु हणंति परिमुक्कलील।

एक गरुड़ यन्त्र के रूप में सजधज कर स्थित हो गयी। सुप्रसाधित वह ऐसी शोभित है, मानो आकाशतल में चन्द्रमा शोभित हो। एक दिन सवेरे आए हुए उस रुद्रदत्त ब्राह्मण ने रानी को अलंकरणों से रहित, शोभाहीन और सुख का विरोध करनेवाली देखकर, जैसे कि वह वैधव्य को प्राप्त हो गयी हो, ज्ञान से होनहार को जानकर सहसा पूछा कि पृथ्वीनाथ कहाँ है ? देवी ने कहा कि वह सोए हुए हैं।

घत्ता--जिन का शरीर अत्यन्त फैला हुआ है, नेत्र बन्द हैं, हृदय में अशुभ सोच रहे हैं, ऐसे परस्त्रियों के लिए दुर्लभ, मेरे प्राणों के प्रिय राजा को तुम देख नहीं सकते।

(2)

समय का ज्ञान कर, वह पुष्ट खोट विकल्पवाला विप्र मन्त्री के घर गया और उससे बोला कि तुम राज्य ले लो। अब तो राजा कालरूपी यम का भोज्य हो जाएगा। प्रभुद्रोह को बड़ा दोष जानते हुए तुम उसके पुत्र के द्वारा मार दिये जाओगे। यह कहकर, कठोरचित्त रुद्रदत्त तीसरे दिन मरकर नरक चला गया। मन्त्री ने योद्धा समूह को इकट्ठा कर और राजा पर आक्रमण कर उसे मार डाला। उस संकट के समय, यक्षिणी ने उसे गरुड़ यन्त्र के भीतर रखा और वहाँ उसकी रक्षा की। फिर उस वैनतेय रूप नामक स्थानवाले मरघट में गर्भवती रानी को ले गयी। वहाँ उसने पुत्र को जन्म दिया। छोड़ दी है लीला जिसने, ऐसी वह शुद्ध आचरणवाली देवी अपना उरतल पीटती है। प्रिय के शोक में अपने जीवन का त्याग करती और रोती हुई

---

8. AP असुहं।

(3) 1. AP तुहं लइ जे रज्जु। 2. AP पहुदोहउ। 3. AP रुद्दयत्तु। 4. A जाएप्पिणु वहिउ। 5. AP वहिउ। 6. A तेयरूवें कुढाणु।

पियसोएं[7] णियजीविउ मुयंति — आसासिय सइ जक्खिइ रुयंति।
तहिं आणिउ दइवें पायडेण — मुउ पुत्तु घित्तु गंधुक्कडेण।
देविइ बोल्लिउं लइ एहु बालु — होसइ परमेसरु पुहइपालु।
ता गहिउ तेण णियपियहि दिण्णु — वणिणाहें कहिं मि ण मंतु भिण्णु।
गारुडजंतें सहुं धीमहंत — दंडववणि[8] णिहिय णरिंदकंत।

घत्ता—सच्चंधरदेवहु[9] रइरयभावहु[10] महुरु णाम सुउ जायउ।
अइकोमलवायहि मयणपडायहि अवरु वउलु विक्खायउ।।3।।

(4)

णामेण विजउ सेणाहिणाहु — सायरु वि [1]पुरोहिउ दीहबाहु।
धणपालु सेट्ठि मइसायरक्खु — णियमंति[2] मंतविण्णाणचक्खु।
पढमहु तणुरुहु हुउ देवसेणु — बीयहु संजायउ [3]बुद्धिसेणु।
तइयहु वरयत्तु[4] महुमुहक्खु — उप्पण्णु चउत्थहु कमलचक्खु।
सहुं रायसुएण मणोहरेण — एएं परिपालिय वणिवरेण।
जीवंधरु कोक्किउ रायउत्तु — गंभीरघोसु गंभीरसुत्तु[5]।
वणि दिट्ठउ मायातावसेण — भोयणु मग्गिउ भुक्खावसेण।
आणिउ[6] तावसु भवणहु समीवि — भुंजाविउ घरि कयरयणदीवि[7]।
पुणु घोसइ सो सिववेसधारि — हे वणिवइ तुह सुउ चित्तहारि।

उसे स्वयं यक्षिणी ने समझाया। वहाँ पर मूर्तरूप पुण्य गन्धोत्कट ने अपना मरा हुआ पुत्र लाकर फेंका। तब देवी ने कहा—"यह बालक लो, वह पृथ्वीपाल परमेश्वर होगा।" उसने उसे ग्रहण कर लिया और ले जाकर अपनी पत्नी को दिया। सेठ ने इस रहस्य को कहीं भी प्रकट नहीं किया। गारुडयन्त्र के साथ बुद्धि से महान् उस नरेन्द्रकान्ता (रानी) को उसने दण्डकवन में रख दिया।

घत्ता—इधर राजा सत्यन्धरदेव की पत्नी भामारति ने मधुर नाम के पुत्र को जन्म दिया और दूसरी अत्यन्त कोमल वाणीवाली मदनपताका के विख्यात बकुल नाम का पुत्र हुआ।

(4)

विजयमति नाम का सेनापति, दीर्घबाहुवाला सागर नाम का पुरोहित, धनपाल सेठ, मतिसागर नाम का मन्त्रविज्ञानरूपी आँख से युक्त राजमन्त्री था। पहले का पुत्र देवसेन, दूसरे का पुत्र हुआ बुद्धिसेन, तीसरे का वरदत्त, और चौथे का कमलनयन मधुमुख नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। उस सेठ (गन्धोत्कट) ने इस मनोहर राजपुत्र के साथ ही इनका पालन किया। राजपुत्र को जीवन्धर कहा गया। वह गम्भीर घोष और गम्भीर उक्तिवाला था। वन में एक मायावी तपस्वी ने कुमार को देखा और भूख के कारण उससे भोजन माँगा। वह तपस्वी को अपने घर ले आया, और रत्नद्वीपों से आलोकित घर में उसे भोजन कराया। शिव के रूप को धारण करनेवाले उस तपस्वी ने कहा कि "हे सेठ ! तुम्हारा पुत्र चित्त का हरण करनेवाला है। अत्यन्त

7. A पिउसोएं। 8. P तो दंडयवणि। 9. A °देविहे। 10. A रइरसभाविहे; P रइरसभावहो।

(4) 1. AP परोहिउ। 2. A मुत्त। 3. AP बुद्धसेणु। 4. AP वरइत्तउ। 5. AP गंभीरसत्तु। 6. A आणिउ भवणहु तावहु समीवे। 7. P कयरमण°।

बहुबुद्धिवंतु महुं होउ चट्टु पावेसइ एहु णरिंदपट्टु।
ता चवइ सेट्ठि तुहुं कुमइवंतु ण उ होसि बप्प [8]पणिवायहंतु।
णंदणु ण समप्पमि तुज्झु तेण तं आयण्णिवि पडिलविउं तेण।
सीहउरि राउ हउं अज्जवम्मु सिरिवीरणंदिपयमूलि धम्मु।
णिसुणिवि जायउ मुणिदूसहाहं णउ सक्किउ घेरपरीसहाहं।
सम्माइट्ठिउ मिच्छत्तहारि ओहच्छमि तावसवेसधारि।
ता ताएं अप्पिउ तासु बालु सिक्खिउ सत्थत्थइं गुणगणालु।
उज्झाएं किउ तत्थेय कालु सुहजोएं छिंदिवि मोहजालु।

घत्ता—आरूढउ जोव्वणि पप्फुल्लियवणि सहइ वसंतु व सुंदरु।
ता णयरब्भंतरि अक्खइ घरि घरि पडहु महुरमंथरसरु[9] ॥4॥

(5)

णं पावहु केरउ परमकूडु सवराहिउ णामें कालकूडु।
तें गोउलु लइयउं वेंकरंतु जो [1]आणइ भडथडमहिमहंतु।
तहु देज्जइ गोविंदधीय सुललियतणु रूवें बीय सीय।
तं तेव कयउं जीवंधरेण संगरि हय भिल्ल धणुद्धरेण।
आणिउ गोउलु जयकारएण[2] लहुं ढोइय कट्ठंगारएण।

बुद्धिवान वह मेरा शिष्य हो जाए। यह राजपट्ट प्राप्त करेगा।" तब सेठ कहता है कि "तुम खोटी बुद्धिवाले हो, हे सुभट ! तुम प्रणाम करने योग्य नहीं हो। इसलिए मैं अपना पुत्र तुम्हें नहीं सौंप सकता।" यह सुनकर उस साधु ने प्रत्युत्तर दिया—"मैं सिंहपुर का राजा अजयवर्मा हूँ। श्री वीरनन्दी के चरणमूल में धर्म सुनकर मैं मुनि हो गया, परन्तु मैं असह्य घोर परीषह सहन नहीं कर सका। इसलिए तापसवेश धारण करनेवाला मिथ्यात्व का हरण करनेवाला सम्यक्दृष्टि हूँ।" तब पिता ने उसके लिए बालक सौंप दिया। शास्त्रार्थ से उसने गुणगणालय उसे सिखा दिया। उपाध्याय ने भी शुभ योग से मोहजाल को नष्ट कर वहीं पर अपना काल किया (निर्वाण किया)।

घत्ता—यौवन पर आरूढ़ कुमार खिले हुए वन में वसन्त के समान सुन्दर लगता था। इतने में नगर के भीतर घर-घर में मधुर मन्थर स्वरवाला नगाड़ा यह कहता है—

(5)

कि कालकूट नाम का जो भील राजा है वह मानो पाप का ही परमकूट है। उसने चिंघाड़ते हुए गोकुल का अपहरण कर लिया है। सैनिकसमूह और धरती से महान् जो उसे ला देगा, उसे सुन्दर देहवाली गोविन्द की कन्या दी जाएगी, जो रूप में मानो दूसरी सीता है। कुमार जीवन्धर ने वैसा ही किया। उस धनुर्धारी ने युद्ध में भीलराज को मार दिया और गोकुल को लाकर दे दिया। जयकार करते हुए काष्ठांगार ने शीघ्र

8. P परमारुहंतु। 9. AP महुरु मंथर°।

(5) 1. AP आणइ भडु भडथडमहंतु। 2. AP जयगारएण।

गोवालपुत्ति बालें वियड्ढु परिणाविउ वणिसुउ णंदियड्ढु।
इह भरहखेत्ति खयरायलिंदि णहवल्लहपुरि फुल्लारविंदि।
णयराहिउ णामें गरुलवेउ[3] सो दाइज्जेहिं[4] णिरत्थतेउ।
थिउ रयणदीवि रमणीयणयरु अप्पउ[5] करेवि संपण्णखयरु।
पिय[6] धारिणि तहु संपुण्णगत्त सुय णवजोव्वण गंधव्वदत्त।
एक्कहिं दिणि पोसहखीणदेह पडिवयदियहे णं चंदरेह।
दिट्ठी ताएं जिणसेस देंति थणभारें णं भज्जिवि णवंति।
भासइ पिउ सुंदरि देमि कासु ता भणइ मंति लद्धावयासु।
मइं मंदरि दिट्ठउ अरुहगेहि चारणमुणि णिण्णेहउ सदेहि।
सो पुच्छिउ पुत्तिहि वरु[7] वि कवणु जइ भासइ जो मायंगगमणु।
जीवंधरु सच्चंधरहु सूणु रायउरणाहु बुद्धिइ अणूणु।
सो होसइ वरु धारिणिसुयाहि वेल्लहलवेल्लिसुललियभुयाहि।
ता पुच्छइ पहु संजोउ केव वज्जरइ मंति भो णिसुणि देव।
रायउरइ वणिवइ वसहदत्तु पोमावइ णामें तहु कलत्तु।
णंदणु जिणदत्तु महाणुभाउ सो कज्जु करेसइ तुह सराउ।

घत्ता—उज्जाणसमिद्धइ[8] महिरुहरिद्धइ णियतणएण विराइउ।
उप्पाइयणाणहु सायरसेणहु वंदणहत्तिइ आइउ[9] ॥5॥

गोपालपुत्री उसे दे दी। उस बालक ने वणिक्पुत्र विदग्ध नन्दाढ्य का उससे विवाह करवा दिया। इस भरतक्षेत्र के विजयार्ध पर्वत में खिले हुए कमलों से युक्त नववल्लभपुरी है। उसमें राजा गरुड़-वेग नाम का विद्याधर था। उसके भागीदारों ने उसके तेज को व्यर्थ कर दिया था। रत्नद्वीप में खुद सुन्दर नगर बनाकर वह सम्पन्न विद्याधर वहाँ रहने लगा। उसकी पत्नी प्रियधारिणी थी। उसकी सम्पूर्ण शरीरवाली नवयुवती गन्धर्वदत्ता नाम की कन्या थी। एक दिन उपवास से क्षीणदेह उसे जिनपूजा की शेषमाला देते हुए पिता ने देखा मानो प्रतिपदा की चन्द्ररेखा हो। स्तनभार से मानो वह भग्न होकर झुक गयी थी। पिता कहता है कि मैं यह सुन्दरी किसे दूँ ? तब अवसर पाकर मन्त्री कहता है कि मैंने भगवान अर्हन्त के मन्दिर में एक चारण मुनि को देखा था जो मूर्तमान वीतराग थे। उनसे मैंने पूछा था कि कुमारी के लिए कौन वर होगा ? यति ने बताया कि गजगामी सत्यन्धर का पुत्र राजनगर का स्वामी, अन्यून (बहुत) बुद्धिवाला जो जीवन्धर स्वामी है, वह बेल फल की लता के समान सुन्दर भुजावाली धारिणी की पुत्री का वर होगा। राजा पूछता है कि संयोग किस प्रकार होगा ? मन्त्री कहता है—"हे देव ! सुनिए। राजपुर में वृषभदत्त नाम का सेठ है। उसकी पद्मावती नाम की पत्नी है। उसका महानुभाव पुत्र जिनदत्त है। स्नेही वह तुम्हारा काम करेगा।"

घत्ता—उद्यान की समृद्धि, वृक्षों की ऋद्धि एवं अपने पुत्र से शोभित वह (वृषभदत्त) जिन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया है, ऐसे सागरसेन महामुनि की वन्दनाभक्ति करने के लिए आया।

---

3. AP गरुडवेउ। 4. AP दायज्जेहिं। 5. AP अप्पणु। 6. A पिय। 7. AP कमणु रमणु। 8. AP उज्जाणि। 9. AP आयउ।

(6)

पइं दिट्ठउ सेट्ठि [1]सकंतु संतु पडिवण्णु णेहु गुणगणमहंतु।
जिणदिक्ख लइय वणिणा सधामि णंदणु णिहियउ संपण्णकामि।
आगमणु पहोसइ तासु एत्थु तुहुं किं पि विसूरहि मा णिरत्थु।
णउ लज्जइ सो तुह पेसणेण णियगोत्तसणेहविहूसणेण।
तावायउ वणिसुउ तहिं तुरंतु अब्भागयविहि किउ पाहुणत्तु।
पत्थिउ णरणाहें सो सराहु तुम्हारइ पुरि कीरउ[2] विवाहु।
महुं तणयहि मित्त सयंवरेण ता तं पडिवण्णउं वणिवरेण।
गउ णियपुरु[3] णंदणवणि विचित्तु विरइउ मंडउ माणिक्कदित्तु।
उच्छलिय वत्त मयणग्गिजलिय णाणाविह तहिं मंडलिय मिलिय।
आइउ खगवइ लेविणु[4] कुमारि बहुमणुयजुवाणहुं णाइं मारि।
वीणावज्जें लायण्णपुण्ण जीवंधरेण णिज्जिणिवि कण्ण।
परिणिय जयजयदुंदुहिरवेण सज्जणविरइयपउरुच्छवेण।
घत्ता—ता रइरसलुद्धें सुट्ठु विरुद्धें कट्ठंगारयपुत्तें।
मायंगतुरंगहिं रहहिं रहंगहिं आढत्तउं रणु धुत्तें ॥6॥

(6)

तुमने कान्ता सहित सेठ को देखा। तुम्हारा गुणगण से महान् प्रेम उत्पन्न हो गया। सेठ ने जिनदीक्षा ले अपने घर में सम्पूर्ण मनोरथों हेतु पुत्र (जिनदत्त) को स्थापित कर दिया। उसका यहाँ आगमन होगा, तुम व्यर्थ चिन्ता मत करो। अपने गोत्र के स्नेह से विभूषित तुम्हारी आज्ञा से वह संकोच नहीं करेगा। इतने में शीघ्र ही वणिक्पुत्र वहाँ आ गया। उसके आने की विधि और पहुनायी की गयी। शोभावान उससे राजा ने प्रार्थना की—"तुम्हारे नगर में मेरी कन्या का स्वयंवर से विवाह किया जाये।" सेठपुत्र ने इस बात को स्वीकार कर लिया। वह अपने नगर गया और नन्दनवन में माणिक्यों से आलोकित एक विचित्र मण्डप बनवाया। कामदेव की आग से प्रज्वलित यह बात दूर-दूर तक फैल गयी और अनेक माण्डलीक राजा वहाँ आकर मिले। विद्याधर राजा अपनी कन्या लेकर आया जो कि बहुत से युवकजनों के लिए रति (के समान) थी। कुमार जीवन्धर ने वीणावादन द्वारा लावण्य से परिपूर्ण उस कुमारी को जीतकर, जय-जय तथा नगाड़ों की ध्वनि एवं सज्जनों के द्वारा किये गये विशाल उत्सव के साथ उससे विवाह कर लिया।

घत्ता—तब रतिरस के लोभी काष्ठांगारिक के धूर्त पुत्र ने विरुद्ध होकर हाथियों, घोड़ों, रथों और चक्रों से युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

(6) 1. AP सुकम्मु। 2. A कीरइ। 3. AP णियपुरे। 4. AP लेप्पिणु।

(7)

णरवइहिं णारिरयणाइं होंति किं कहिँ[1] मि किराडइं भवणि जंति।
उवसामिउ सो विज्जाहरेण विज्जासामत्थें सुंदरेण।
अण्णहिं दिणि पउरें सहुं अणिंदु थिउ उववणि वणकीलइ णरिंदु।
वइसवणदत्तु तहिं वणि सुकंत साहारमंजरी णाम कंत।
सुरमंजरि णामें कायजाय को पावइ किर तहि तणिय छाय।
चंदोयउ णामें चुण्णवासु सामलियइ तहिं किउ जणपयासु।
हिंडेप्पिणु मंदिरु चेडियाइ अहिमाणभमेण भमाडियाइ।
अण्णेक्कु वि वणिउ कुमारदत्तु विमला णामें तहु घरि [2]कलत्तु।
गुणमालइ बालइ रइउ चुण्णु सूरोयउ णाम मयालिछण्णु[3]।
विज्जुलियइ वण्णिउं लज्जियाइं घरि घरि सुयंधगुणरंजियाइ[4]।
जायउ विवाउ दोहिं मि जणीहिं वणिधीयहं घणपीणत्थणीहिं।
दिण्णी परिक्ख जीवंधरेण परियाणियणिच्चलमहुयरेण।
चंदोयउ भल्लउ दिव्ववासु पायडिउं तेण तक्खणि जणासु।
जायउ तरुणिउ णिम्मच्छराउ अण्णहिं वासरि [5]वणिवरु णवाउ।
गउ णंदणवणु तहिं एक्कु कविलु ताडिउ डिंभहिं रइरमणचवलु।

(7)

और बोला—"स्त्रीरत्न राजाओं के लिए होते हैं। क्या कहीं भी वे भीलों के घर जाते हैं ?" लेकिन उस सुन्दर नामक विद्याधर ने अपनी विद्या के सामर्थ्य से उसे शान्त कर दिया। दूसरे दिन पौरजनों के साथ वनक्रीड़ा के लिए वह अनिन्द्य राजा उपवन में ठहर गया। उस नगर में वैश्रवणदत्त एक सुन्दर सेठ था। आम्रमंजरी उसकी पत्नी थी। सुरमंजरी नाम की उसकी कन्या थी। उसकी कान्ति को कौन पा सकता था ? उसकी दासी श्यामलता ने उसके चन्द्रोदय नामक चूर्ण की गन्ध का प्रचार अभिमान के भ्रम से भ्रमित होकर घर-घर जाकर लोगों में किया। उसी नगर में एक और सेठ कुमारदत्त था। उसके घर में विमला नाम की पत्नी थी। उसकी कन्या गुणमाला ने भी चूर्ण बनाया। भ्रमरों से आच्छादित उसका नाम सूर्योदय था। उसके सुगन्धगुण से मुग्ध होकर दासी विद्युल्लता ने घर-घर जाकर उसकी प्रशंसा की। सघन स्तनोंवाली उन दोनों सेठ-कन्याओं में विवाद हो गया। परीक्षा में निश्चल भ्रमरों से जिसने ज्ञात कर लिया है, ऐसे उस जीवन्धर ने उसी समय लोगों में यह प्रकट किया कि चन्द्रोदय चूर्ण अच्छा और दिव्यगन्धवाला है। दोनों युवतियों की ईर्ष्या समाप्त हो गयी। दूसरे दिन एक नया आया हुआ सेठ नन्दनवन में वहाँ गया, जहाँ रतिक्रीड़ा करने में चंचल गम्भीर धीर एक कुत्ता लड़कों के द्वारा प्रताड़ित होकर नदी के भँवर में पड़ गया था। भय से

(7) 1. A कहिं। 2. A कलत्तु। 3. A मयालिछण्णु। 4. AP सुगंध°। 5. A वणि णवगउ; P वणवरु णवाउ।

गंभीरु[6] धीरु सरिदिहि णिमण्णु कड्ढाविउ कुमरें भयविसण्णु[7]।
दिण्णाइं पंचवरगुरुपयाइं प्राणाइं[8] दह वि मलुहहु[9] गयाइं।
घत्ता—णियभवु अहिणाणिवि मणि परियाणिवि कलिमलदोसविवज्जिउ।
आवेप्पिणु जक्खें कमलदलक्खें जीवंधरु गुरु पुज्जिउ ॥7॥

(8)

अविसहियभीमदिणयरगभत्थि[1] अण्णहिं वासरि णिवगंधहत्थि।
णरविंदें णयणाणंदणासु धाइउ सुरमंजरिसंदणासु।
विजयासुएण अलिकालकंति रक्खिय सुंदरि पडिखलिउ दंति।
सा दिण्णी तहु अवियारएण भाविउ मच्छरु अंगारएण।
णरवइकीलइ कीलइ[2] किराडु लइ एयहु किज्जइ दप्पसाडु।
इय भणिवि चंडु पुरदंडवासि तें तहु पेसिउ करयलकयासि।
सच्चंधरतणयहु सो पणट्ठु रणि णं तवचरणहु कुमुणि भट्ठु।
उप्पण्णगरुयकरुणारसेण मणि चिंतिउं किं किर[3] परवसेण।
पहएण भिच्चणियरें णिराउ खुद्दहु किज्जइ उवसमउवाउ।
इय भणिवि तेण संभरिउ जक्खु सो आयउ परबलदुण्णिरिक्खु।

दुःखी उसे कुमार ने बाहर निकलवाया। उसे पंच नमस्कार मन्त्र दिया। उस कुत्ते के प्राण निकल गये। मरकर वह धातुओं से लाल चन्द्रोदय पहाड़ के तट पर यक्षदेव हुआ।

घत्ता—मन में अपने पूर्वभव को जानकर कमलदल के समान आँखोंवाले उस यक्ष ने आकर कलिमल के दोषों से दूर, अपने गुरु जीवन्धर की पूजा की।

(8)

एक दिन, सूर्य की गम्भीर किरणों को सहन नहीं करता हुआ राजा का गन्धहस्ती मनुष्यों के कोलाहल से नेत्रों के लिए आनन्ददायक, सुरमंजरी के रथ की ओर दौड़ा। विजयादेवी के पुत्र जीवन्धर ने भ्रमर और काल की कान्ति के समान उस गज को वश में कर लिया और सुरमंजरी की रक्षा की। वह उसे दे दी गयी। अविवेकशील अंगारक ईर्ष्या से भर गया कि एक भील राजा की क्रीड़ा से खेलता है। लो, इसका दर्पनाश किया जाये। यह कहकर उसने हाथ में तलवार लिये नगर-कोतवाल को उसके पास भेजा। लेकिन सत्यन्धर के पुत्र से युद्ध में वह उसी प्रकार नष्ट हो गया, जिस प्रकार खोटा मुनि तपश्चरण से नष्ट हो जाता है। जिन्हें भारी करुणारस उत्पन्न हुआ है, ऐसे कुमार ने सोचा कि पराधीन अनुचर समूह को मारने से क्या ? क्षुद्र के प्रति उपशमभाव धारण करना चाहिए। यह विचार कर उसने यक्ष को याद किया। शत्रुबल के लिए दुर्दर्शनीय वह आया। उसने उसे काष्टांगारिक के पास भेजा, मानो स्फुरित अंगारोंवाली आग के पास नवमेघ

---

6. A गंभीरधीर सरिदरिणिसण्णु। 7. P भयणिसण्णु। 8. AP पाणाइं। 9. P कविलहो।

(8) 1. A °गहत्थि। 2. AP कीडइ। 3. AP किंकरपरवसेण।

तें[4] पेसिउ कइंगारयासु णवमेहु व फुरियंगारयासु।
उवसामिउ देवें रिउ ण भंति पियवयणें[5] के के णउ समंति।
घत्ता—रणविजयमहाकरिं[6] चडियउ णरहरि पुरवरणारिहिं दिट्ठउ।
जयमंगलसद्दें तूरणिणाएं जणणणिवासि पइट्ठउ ॥8॥

(9)

वसु जायउ सयलु वि मणुयसत्थु सो णत्थि जो[1] ण तहु तसिउ तेत्थु।
णिउ जक्खें णिययमहीहरासु बहुरूविणि अंगुत्थलिय तासु।
तहिं अच्छिउ सो कइवयदिणाइं माणंतु चारु सुरतरुवणाइं।
पुणु आयउ पहु चंदाहणयरु तहिं धणवइ णामें राउ पवरु।
तहु अत्थि तिलोत्तिम तिलणिबद्ध महएवि रूवसोहग्गणिद्ध[2]।
तारावलिणिहकरकमणहाहि पोमावइ णामें धीय ताहि।
सा दट्ठी दुट्ठें विसहरेण डिंडिमु[3] देवाविउ णिववरेण।
जीवावइ जो णरणाहपुत्ति तहु दिज्जइ सा अण्णु वि [4]धरत्ति।
सो पडहु धरिउ जीवंधरेण जीवाविय सा मंतक्खरेण।
धणवइणा दिण्णउं अद्धरज्जु अण्णु वि तं कण्णारयणु पुज्जु।
बहुभायर वर अच्चंतसमुह जाया किंकर धणवालपमुह।

भेजा हो। यक्ष ने शत्रु को शान्त कर दिया। इसमें सन्देह नहीं कि प्रियवचन से कौन-कौन शान्ति को प्राप्त नहीं होते ?

घत्ता—युद्ध-विजय के महागज पर आरूढ़ उस नरश्रेष्ठ को नगरनारियों ने देखा। जयमंगल शब्द और तूर्य के निनाद के साथ उसने अपने पिता के घर प्रवेश किया।

(9)

समस्त नरसमूह उसके अधीन हो गया। वहाँ ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं था, जो उससे तुष्ट न हुआ हो। यक्ष उसे अपने पर्वत पर ले गया और उसे बहुरूपिणी अँगूठी प्रदान की। वह वहाँ पर सुन्दर वनवृक्षों का आनन्द उठाता हुआ कुछ दिनों तक रहा। फिर वह चन्द्राभ नगर में आया। उसमें धनपति नाम का एक महान् राजा था। उसकी तिलोत्तमा नाम की स्नेहमयी महादेवी थी, जो रूप और सौभाग्य से समृद्ध थी। उसकी तारावली के समान हाथों और पैरों के नखवाली पद्मावती नाम की कन्या थी। उसे एक दुष्ट विषधर ने काट खाया। राजा ने नगर में यह मुनादी करवा दी कि जो राजा की पुत्री को जीवित कर देगा, उसे वह और साथ ही धरती दी जाएगी। जीवन्धर ने यह मुनादी सुनी। उसने मन्त्राक्षरों से उसे जीवित कर दिया। राजा धनपति ने उसे आधा राज्य दे दिया और साथ ही पूज्य कन्यारत्न। कन्या के अत्यन्त सुन्दर

4. AP तं पेसिउ। 5. A °वयणें के णउ उवसमंति। 6. AP रणे विजय°।
(9) 1. AP ण तहु जो। 2. AP रूवसोहग्ग°। 3. A डिंडिमु; P दंडिमु। 4. AP धरित्ति।

गउ रयणिहि पट्टणु खेमदेसि खेमउरु णाम बाहिरपवेसि।
दिट्ठउ जिणभवणु मणोहिरामु जिणु वंदिउ तेण विमुक्ककामु।
सुंदरपवेसि बहुमहमहंतु[6] फुल्लिउ चंपउ अलिगुमुगुमंतु।
विहडियइं कवाडइं दढइं केम अइधम्मिट्ठहु पावाइं जेम।
खकिरणकलावुग्घाडियाइं सरवरणवणलिणइं[7] तोडियाइं।
पुज्जिउ परमप्पउ णिव्वियारु दूरुज्झियरइसिंगारभारु।
णियणाहहु परिमउलियकरेहिं वियसिउ चंपउ अक्खिउ णरेहिं।
आएसपुरिसु जाणिवि पयासु वणिवइणा दिण्णी कण्ण तासु।
णामेण खेमसुंदरि ससोह धणुमग्गणअरिणरणियररोह।
दिण्णउ विणएं अहिणववरासु चिरु होंतउ तं विणयंधरासु।

घत्ता—णाहहु सुअरेप्पिणु तणु विहुणेप्पिणु णियभिच्चयणविराइय।
णियविज्जापाणें[8] रयणविमाणें खेवरधीय पराइय ॥9॥

(10)

पियदंसणवियसियकमलणेत्त[1] सहुं मिलिय पियहि[2] गंधव्वदत्त।
गय[3] रायउरहु पुणु चावधारि एक्कु जि णिग्गउ बलणिज्जियारि।

धनपाल प्रमुख बहुतेरे श्रेष्ठ भाई उसके सेवक हो गये। एक रात वह क्षेमदेश के क्षेमपुर नगर चला गया। बाहर प्रदेश में उसने एक सुन्दर जिनमन्दिर देखा। उसने काम से मुक्त (वीतराग) जिन-भगवान की वन्दना की। उसके सुन्दर प्रवेश से महकता हुआ और भौंरों से गूँजता हुआ चम्पक वृक्ष खिल उठा। मन्दिर के दृढ़ किवाड़ उसी प्रकार खुल गये, जिस प्रकार अत्यन्त धर्मात्मा व्यक्ति के पाप नष्ट हो जाते हैं। सूर्य की प्रखर-किरण-समूह से खिले हुए कमलों को उसने तोड़ा और रति के शृंगारभार को दूर से छोड़नेवाले निर्विकार परमात्मा की पूजा की। दोनों हाथ जोड़े हुए अनुचर-नरों ने जाकर अपने स्वामी से चम्पा के खिलने की बात कही। उसे आदेश-पुरुष जानकर सेठ ने उसके चरणों में क्षेमसुन्दरी नाम की कन्या दे दी और साथ ही शत्रुजनों के समूह का निरोध करनेवाले शोभायुक्त धनुषबाण, विनयपूर्वक नये वर को दे दिये जो पहले विनयन्धर के थे।

घत्ता—तब अपने स्वामी की याद कर, अपने शरीर को पीटती हुई, अपने भृत्यजन से विरक्त, विद्याधरी (गन्धर्व-दत्ता) अपनी विद्या के सामर्थ्य से रत्नविमान से वहाँ पहुँची।

(10)

प्रिय के दर्शन से जिसके कमलरूपी नेत्र खिल गये हैं, ऐसी गन्धर्वदत्ता प्रिय से मिली। वह पुनः राजपुर

---

5. AP °सुपुह। 6. A महमहमहंतु; P महुमहमहंतु। 7. AP सरवरे णय°। 8. B °प्राणें।
(10) 1. AP पियदंसणे। 2. AP पियहो। 3. AP गउ।

पुणु विजयविसइ भुयबलविसट्टु हेमाहउ पट्टणु बद्धपट्टु।
निरुखाउ राउ दढमित्तु णाम णलिणा महएवि विइण्णकाम।
हेमाह पुत्ति जणदिण्णमयणु इय बोल्लिउं जोइसिएहिं[4] वयणु।
मुक्कउ धाणुक्कें चवलु बाणु जा पावइ झत्ति ण लक्खठाणु।
ता पावइ गंपिणु जो तुरंतु सो एयहि कुमरिहि होइ[5] कंतु।
ता तेत्थु मिलिय णर णरहं सामि बाणासणविज्जापारगामि।
गउ जीवंधरु जा सरु ण जाइ ता लक्खु छिवेप्पिणु चलु विहाइ।
पडियागउ णं णरवेसपवणु[6] भूवइ भाणु व भाभारभवणु।
दढमित्तें तहु दिण्णी कुमारि चउभायरकिंकरचित्तहारि।
णंदड्ढें पुच्छिय भाउजाय कहिं जासि णिच्चु तुहुं लद्धछाय।
ता विहसिवि अक्खइ चारुगत्त णियदेवरासु[7] गंधव्वदत्त[8]।
हउं जामि बप्प तुह भायपासु ता सो पभणइ पप्फुल्लियासु।
मइं णेहि माइ जहिं वसइ बंधु पेच्छमि परमेसरु सच्चसंधु।
तं णिसुणिवि परणरदुल्लहाइ बोल्लिउं[9] जीवंधरवल्लहाइ।
पुज्जाविहि गुरुभत्तिइ करेवि णियभायरु णियहियइ धरेवि।

वापस चली गयी। अपने बल से शत्रुओं को जीतनेवाला वह धनुर्धारी अकेला ही वहाँ से निकल पड़ा। फिर, विजयदेश में हेमाभ नाम का नगर है। उसमें बाहुबल से विशिष्ट और राजपट्ट बाँधे हुए दृढ़मित्र नाम का विख्यात राजा था। पूर्ण काम को वितीर्ण करनेवाली, उसकी नलिना नाम की महादेवी थी। उसकी हेमाभा नाम की पुत्री थी। ज्योतिषियों ने उसके सम्बन्ध में लोगों में काम की उत्सुकता उत्पन्न करनेवाले ये शब्द कहे थे कि धनुष से छोड़ा गया बाण जब तक अपने लक्ष्यस्थान को शीघ्र नहीं पाता, तब तक जो तुरन्त जाकर उसको पा लेगा, वह इस कुमारी का पति होगा। तब धनुर्बाणविद्या के पारगामी विद्याधरों और मनुष्यों के स्वामी वहाँ आये। जब तक तीर नहीं पहुँचा, तब तक लक्ष्य छूने के लिए कुमार जीवन्धर चंचल दिखाई देता है मानो मनुष्य के रूप में पवन ही लौटकर आ गया हो। भूपति (जीवन्धर) भा (कान्ति) के भार का भवन भानु के समान था। राजा दृढ़रथ ने चारों भाइयों और अनुचरों में सुन्दर लगनेवाली कन्या उसे दे दी। नन्दाढ्य ने अपनी भ्रातृजाया (भौजाई गन्धर्वदत्ता) से पूछा—"छायारूप में तुम प्रतिदिन कहाँ जाती हो ?" तब सुन्दरदेहवाली वह अपने देवर से कहती है—"हे सुभट ! मैं तुम्हारे भाई के पास जाती हूँ।" खिले हुए मुखवाला वह कहता है—"हे आदरणीया ! मुझे भी वहाँ ले चलो जहाँ भाई रहता है। मैं सत्यसिन्धु परमेश्वर के दर्शन करूँगा।" वह सुनकर, दूसरे मनुष्यों के लिए दुर्लभ जीवन्धर की प्रियतमा ने कहा—"भारी भक्ति से पूजाविधि कर अपने भाई को अपने हृदय में धारण कर, रात्रि का समय आने पर जनसुन्दर तरंगिणी

4. AP जोइसिएण। 5. A होउ। 6. AP णरवेसु पवणु। 7. P णियदेवराउ। 8. A adds after this line : छण्णछुडहीरमंडल सुवत्त, सा अणुदिणु सेवइ विसय भुत्त। 9. P वोल्लिउ।

आरुहहि तरंगिणि णाम सेज्ज जामिणिसमयागमि जणमणोज्ज।
तं तेंव करिवि गउ सो वि तेत्थु साहसरयणायरु वसइ जेत्थु।
घत्ता—ता दोहिं मि भायहिं कयपियवायहिं मुहुं[10] महुं मुहुं जि पलोइउं।
अवऊढु परोप्परु[11] णेहें णिब्भरु रोमंचुयपविराइउं[12] ॥10॥

(11)

पुणु सोहापुरि णवकमलवत्तु[1] दढमित्तभाइ णामें सुमित्तु।
तहु घरिणि वसुंधरि चंदमुहिय कलहंसगमणि सिरिचंद दुहिय।
पारावयजुवलु[2] पलोयमाण पंगणि[3] मुच्छिय णं मुक्कपाण[4]।
सिंचिय सीयलचंदणजलेण आसासिय चलचमराणिलेण।
आयालयसुंदरि कामकुहिणि तहि तिलयचंदिया[5] णाम बहिणि।
सा पुच्छिय दोहिं मि भणु [6]णयंगि किं णिवडिय णं सरहय कुरंगि।
तं वयणु सुणिवि कुंअरीउ[7] ताइ संबोहियाउ भवसंकहाइ।
आयण्णिवि तं दोण्णि वि गयाउ पियरहं कहंति पणमियसिराउ।
हेमंगइ पुरि वणि रयणतेउ पिय रयणमाल तहु सोक्खहेउ।
अणुवम सुय अणुवम कइ कहंति तत्थेव णयरि अवर[7] वि वसंति।

नाम की सेज पर सो जाओ।" वैसा करके वह भी वहाँ गया, जहाँ साहसों के समुद्र कुमार जीवन्धर थे।

घत्ता—प्रिय बातें करते हुए दोनों भाइयों ने बार-बार एक-दूसरे को देखा। परस्पर एक-दूसरे का आलिंगन किया, स्नेह से पूर्ण रोमांच हो आया।

(11)

फिर, शोभापुरी (शोभानगर) में नवकमल के समान मुखवाला दृढ़मित्र का भाई सुमित्र था। उसकी वसुन्धरा नाम की चन्द्रमुखी गृहिणी और कलहंसगामिनी श्रीचन्द्रा नाम की कन्या थी। एक कबूतर के जोड़े को देखकर वह घर के आँगन में मूर्छित हो गयी, मानो प्राण ही निकल गये हों। ठण्डे चन्दनजल से सींचने तथा चल-चामरों की हवा से वह आश्वस्त हुई। काम की गली, सखी अलकासुन्दरी एवं उसकी बहिन तिलकचन्द्रिका आयीं। उन दोनों ने उससे पूछा—"हे नतांगी बताओ, बाणों से आहत हिरणी की तरह तुम क्यों गिर पड़ीं ?" यह वचन सुनकर उसने उन दोनों को अपनी पूर्वजन्म की कथा से सम्बोधित किया। उसे सुनकर वे दोनों भी वहाँ से चली गयीं और प्रणाम कर पिता से कहा—"हेमांगद नगर में रत्नतेज नाम का सेठ था। रत्नमाला उसकी सुखदेनेवाली प्रिया थी। ये (चन्द्रिका) उन दोनों की अनुपमा नाम की कन्या थीं। कवि भी उसे अनुपम कहते थे। उसी नगर में एक और कनकतेज सेठ रहता था। उसकी पत्नी चन्द्रमाला थी, मानो अभिनव सुगन्धवाली

---

10. A मुहु मुहु मुहुं जि पलोइयउ; P मुहुं मुहुं जि। 11. AP परोप्परु°। 12. AP रोमंचिय°।

(11) 1. AP °कमलणेत्तु। 2. P पारावइजुयलु। 3. B पंगणि। 4. B मुक्कप्राण। 5. A °चंदिमा। 6. A लयंगि। 7. AP कुअरीए। 7. A अवरइ।

वणि कणयतेउ पिय चंदमाल अहिणवसुयंध णं कुसुममाल।
सुउ जायउ ताहं सुवण्णतेउ दुस्सीलु दुट्ठु कुलधूमकेउ।
पुव्वुत्त तासु अणुवम [8]सुहीहिं दिण्णी ण मुणियवरपुव्विणीहिं[9]।
गुणमित्तहु [illegible] हरिणणयण गय वासर सोक्खें [10]तुट्ठमयण[10]।
जलजत्तहिं[11] जाइवि जलहितीरि सरिमुहि मुउ वरु गंभीरणीरि।
वहुयइ तहिं गंपि विमुक्कु जीउ पारावयजुयलुल्लउं विणीउं।
रायउरि दो वि जायइं सणेहि गंधुक्कडवणियहु तणइ गेहि।

घत्ता—तहिं बिहिं मि णिवसंतहिं समउ [12]रमंतहिं सिसुसंसग्गें गुणियइं।
अक्खराइं मत्तालइं मलपक्खालइं मुणिवरवयणइं सुणियइं ॥11॥

(12)

वरु पवणवेउ[1] णामेण [2]पक्खि रइवेय णाम पक्खिणि चलक्खि।
बेण्णि वि पालियसावयवयाइं उज्झियरयाइं पालियदयाइं।
पाविट्ठु मरिवि कुच्छियविवेउ पुरुदंसउ हुयउ सुवण्णतेउ।
तें पक्खिणि कणभोयणविलुद्ध खरकरचवेडदंतेहिं रुद्ध।
पक्खि मुहघल्लिय घणघणाइ मेल्लाविय पक्खझडप्पणाइ।
अण्णहिं दिणि पुरवरणियडसेलि कीलंतइं[3] णवतरुवेल्लिजालि।

कुसुममाला हो। उसका स्वर्णतेज नाम का पुत्र हुआ जो दुःशील, दुष्ट और अपने कुल के लिए पुच्छलतारा था। पूर्वोक्त अनुपमा कन्या, भवितव्य जाननेवाले सुधीजनों ने उसे (कनकतेज को) नहीं दी। मृगनयनी वह गुणमित्र के लिए दी गयी। उनके काम को सन्तुष्ट करनेवाले दिन सुख से बीते। एक बार जलयात्रा के लिए जाकर, समुद्र के किनारे नदी के मुहाने पर गम्भीर जल में बह मर गया। वधू ने भी वहीं जाकर अपने प्राणों का त्याग कर दिया। वे दोनों राजपुर में सेठ गन्धोत्कट के स्नेहपूर्ण घर में विनीत कबूतर-कबूतरी का जोड़ा हुए।

घत्ता—वहाँ रहते हुए और समय बिताते हुए उन दोनों बच्चों के संसर्ग से उन्होंने मात्रायुक्त अक्षर सीख लिये। और पाप का प्रक्षालन करनेवाले मुनिवरों के वचनों को सुना।

(12)

वर पवनवेग नाम का कबूतर हुआ और चंचल आँखोंवाली वधू रतिवेगा नाम की पक्षिणी। दोनों ही श्रावक व्रतों का पालन करते थे। वे रति से रहित दया का पालन करनेवाले थे। कुत्सित विवेकवाला वह (कनकतेज) बिलाव हुआ। उसने कणों के भोजन की लोभिन कबूतरी को तीव्र हाथों की चपेट और दाँतों से अवरुद्ध कर लिया। कबूतर ने मुँह में पड़ी हुई उसे अपने पंखों की सघन झड़पों से छुड़ाया। एक दूसरे दिन, नगर के निकट के पर्वत के नववृक्षों के लताजाल में क्रीड़ा करते हुए, पापियों के द्वारा पहले से बिछाए गये जाल

---

8. A सुहीहिं। 9. AP वरदुव्विणीहिं। 10. AP तुट्ठ सयण। 11. AP जलजंतहे। 12. A रवंतहिं।
(12) 1. A पवणवेगु। 2. A पंखि। 3. P कीडंतइं।

पाविट्ठहिं पासइ [4]घल्लियगिग मय[5] पक्खिणि दइयहु[6] विविहभंगि।
आवेप्पिणु मंदिरु अक्खरेहिं चंचूलिहिएहिं मणोहरेहिं।
अक्खिउ पक्खि रइवेय मुइय सा एह ताय तुह दुहिय हुइय।
सिरिचंद णाम सुय[7] सुंदरीहिं भासिउ पियरहं बिंबाहरीहिं।
पारावयमिहुणालोयणेण मुच्छिय णियजम्मणजाणणेण।

घत्ता—तं णिसुणिवि वइयरु पक्खिभवंतरु लिहियउ तेहिं[8] [9]पडंतरि।
अप्पिउं ससुहेल्लिहि वम्महवेल्लिहि रंगतेयणडणडिकरि[10] ॥12॥

(13)

पडु उववणि णिहियउ रसविसट्टु दोहिं मि णडेहिं पारद्धु णट्टु।
जणणु वि गउ तेत्थु[1] जि णिहियचित्तु रिसि दिट्ठउ तेण समाहिगुत्तु।
वंदेप्पिणु पुच्छिउ सुयहि कंतु को होसइ जइवर गुणमहंतु।
मुणि पभणइ वरु हेमाहणयरि[2] ता जायवि ताएं सोक्खसयरि।
पडु पसरिउ णंदड्ढेण दिट्टु भवु[3] सुमरिवि सो मुच्छइ णिविट्ठु।
उम्मुच्छिउ साहइ णिययजम्मु किर तहु परद्धु विवाहकम्मु।
जा संजायउ रोमंचु[4] उंचु ता अण्णु जि संपण्णउ पवंचु।

में दैव की विचित्रता के कारण वह कबूतरी मर गयी। घर आकर अपनी चोंच के द्वारा लिखित सुन्दर अक्षरों से कबूतर ने बता दिया कि रतिवेगा मर गयी। हे तात ! इस समय वही तुम्हारी चोंच के द्वारा लिखित सुन्दर अक्षरों से कबूतर ने बता दिया कि रतिवेगा मर गयी। हे तात ! इस समय वही तुम्हारी पुत्री हुई है—श्रीचन्द्रा नाम से। ऐसा माता-पिता से बिम्बफल के समान अधरोंवाली उन सुन्दरियों ने कहा। इस कबूतर के जोड़े को देखकर अपने पूर्वजन्म के ज्ञान से वह मूर्छित हो गयी।''

घत्ता—यह सुनकर, उन लोगों ने पक्षी के जन्मान्तर का वृत्तान्त पट पर अंकित किया और उसे सुखद क्रीड़ावाली मदनलता नटी और रंगतेज नामक नट के हाथ में सौंप दिया।

(13)

उन्होंने रस से विशिष्ट पट को उपवन में रख दिया और दोनों ने नाचना प्रारम्भ कर दिया। गम्भीर चित्त पिता भी वहाँ से गया और उसने समाधिगुप्त मुनि के दर्शन किये। वन्दना करके उसने पूछा—''हे मुनिवर ! गुणों से महान् कन्या का पिता कौन है ?'' मुनि कहते हैं—वे उत्तम सैकड़ों सुख देनेवाली हेमाभनगरी में उत्पन्न हैं। पिता ने जाकर वह चित्रपट फैलाया। नन्दाढ्य ने उसे देखा। पूर्वजन्मों को याद कर वह बैठा-बैठा मूर्छित हो गया। मूर्छा दूर होने पर वह अपने पूर्व भव का कथन करता है। फिर उसका विवाह-कर्म प्रारम्भ

1. AP धल्लियगि। 5. AP मय। 6. दइवहो। 7. AP इय। 8. AP तहिं। 9. A पडंतरु। 10. A °णाडणडियकरे। P °णडणारिकरे।

(13) 1. A तेत्थु वि। 2. A हेमाहे णयरि। 3. AP भउ। 4. AP रोमंचुअंचु।

[illegible] सुवरिट्ठकविट्ठवणंतरालि[5]।
दिसिगिरि पुरि हरिविक्कमु चिलाउ वणगिरि सुंदरि[6] सवरीसहाउ।
तहिं संभूयउ वणराउ पुत्तु सहयरकिंकरभडबलणिउत्तु।
अवरु वि तहु सहयरु लोहजंघु सिरिसेणहु पुरि हिंडइ दुलंघु।
ता दिट्ठ कण्ण तें उववणंति सिरिचंद मंदमायंदवंति।
अवरु वि तुरंगु णइ गच्छमाणु किंकरणरेहिं रक्खिज्जमाणु।
हित्तउ चोरेहिं पुलिंदएहिं भडलोहजंघपमुहेहिं तेहिं।

घत्ता—सु तुरंगु मणोहरु कलहिलिहिलिसरु आणिवि दिण्णु णिरिक्खिउ।
वणलच्छिसहायहु तहु वणरायहु कण्णारयणु वि अक्खिउं ॥13॥

(14)

ता तेण तेत्थु णिरु बद्धगाहु पेसिय किंकर थिरथोरबाहु।
कुंयरीमंदिरि[1] पाडिउ[2] सुरंगु चउहत्थरुंद[3] चउहत्थतुंगु[4]।
णीसारिय सुय तहिं घित्तु पत्तु आलिहियउं विविहक्खरविचित्तु।
जिह णिय गब्भेसरि वणयरेहिं [5]कोवंडकंडमंडियकरेहिं।
ढोइय हरिविक्कमणंदणासु करकमलंगुलिलालियथणासु।
उत्तरु दिण्णउं कण्णाइ तासु किं दावहिं दुज्जण थोरु मासु।

किया जाता है। जब यहाँ हर्षपुलक हो रहा था, तभी एक दूसरा प्रपंच हुआ। जिसमें तमाल और ताल के वृक्ष आकाश को छू रहे हैं, जो अच्छे कैंथ के वनों से आच्छन्न है, ऐसे दिशागिरि पर्वत के वनगिरि नगर में सुन्दरी शबरी के साथ हरिविक्रम नाम का भील रहता था। उसका सहचर किंकर और भटबल से परिपूर्ण वनराज नाम का पुत्र हुआ। और भी उसके लोहजंघ तथा श्रीषेण मित्र थे। दुर्लंघ वह नगर में घूमता रहा। उसने उपवन में मन्दमन्द गजगतिवाली श्रीचन्द्रा की कन्या देखी। और भी अनुचरों से रक्षित, नदी की ओर जाता हुआ घोड़ा देखा। उन चोर, भीलों ने उसका (घोड़े का) हरण कर लिया। भट लोहजंघप्रमुख ने—

घत्ता—हिनहिनाते हुए स्वरवाला वह सुन्दर घोड़ा लाकर उसे (हरिविक्रम को) दिया। उसने उसका निरीक्षण किया। वनलक्ष्मी से युक्त उस वनराज से उन्होंने कन्यारत्न के विषय में भी कहा।

(14)

तब उसने वहाँ अत्यन्त मजबूत पकड़वाले और स्थिरस्थूल बाहुवाले अनुचर भेजे। उन्होंने कुमारी चन्द्रा के कमरे में सुरंग लगायी, चार हाथ की चौड़ी और चार हाथ की ऊँची। सुन्दरी को उन्होंने निकाल लिया, और अनेक अक्षरों से विचित्र एक पत्र लिखकर रख दिया कि किस प्रकार धनुषतीरों से मण्डित हाथवाले भीलों के द्वारा गर्वेश्वरी ले जायी गयी है। कररूपी कमलों की अंगुलियों से स्तनों को सहलानेवाले हरिविक्रमपुत्र

5. AP भवरिट्ठ। 6. A सुंदर सवरी°।

(14) 1. AP कुमरी°। 2. P पाडिय सुरंग। 3. A °हत्थतुंगु। 4. A °हत्थरुंदु। 5. AP कोयंड°।

तुहुं महुं सिरिसेणसमाणु बप्पु मा वहहि बप्प सोहग्गदप्पु।
तं आयण्णिवि हरिविक्कमेण आगयसमेण पालियकमेण।
णिब्भच्छिवि तणुरुहु सामवण्ण णियपुत्तिहिं सहुं[6] संणिहिय कण्ण।
वणराएं दिण्णउ दूइयाउ बोल्लंति विलासविहूइयाउ।
केव वि णउ इच्छइ सा रुयंति अच्छइ पारावयपिउ[7] सरंति।
ता तेत्थु चिलाय विइण्णघाय दढमित्ताइय संपत्त राय।
संपेसिय सयल सबंधु[8] पक्खु जीवंधरेण संभरिउ जक्खु।
णिज्जिणिवि भीमवेसेण सवर तें हित्त कण्ण महस त्ति अवर[9]।
पुणु भीसणभिल्लविहंडणेण धरियउ वणराउ सुदंसणेण।
अप्पिउ देवें जीवंधरासु [10]विण्णाणणायपालियधरासु।
तें सो कारागारइ णिहित्तु दप्पंधु णिबंधणु झत्ति पत्तु।
घत्ता—अण्णहिं दिणि सरवरि रंजियमहुयरि[11] पंकयाइं जिणि[12] ढोयइ।
कंपवियवसुंधरु मत्तउ सिंधुरु जीवंधरु अवलोयइ ॥14॥

(15)

सरतीरु धरिवि णिव्वूढगव्वु आवासिउ खंधावारु सव्वु।
तहिं णिवसंतें णरपुंगमेण [1]परियाणियमुणिपरमागमेण[2]।

के लिए वह कन्या दे दी गयी। उस कन्या ने उसे उत्तर दिया—"हे दुष्ट ! तू मुझे अपना स्थूल मांस क्या दिखाता है ? तू मेरे लिए श्रीषेण के समान मेरा पिता है। हे सुभट ! तू मेरा सौभाग्यदर्प नष्ट मत कर।" यह सुनकर जिसे उपशम भाव प्राप्त है और परम्परा का जो पालक है, ऐसे हरिविक्रम भीलराजा ने श्यामवर्ण अपने पुत्र को डाँटा और कन्या को अपनी पुत्रियों के साथ रख दिया। वनराज ने उसके पास विलासविभूति दूती भेजी। लेकिन वह किसी भी प्रकार नहीं चाहती हुई, रोती हुई अपने पारावतप्रिय (नन्दाढ्य) की याद करती हुई स्थित है। उसी समय वहाँ भीलों पर आघात करनेवाले दृढ़मित्र आदि राजा इकट्ठे हुए। भील ने भी अपने बन्धुओं और पक्ष को भेजा। जीवन्धर ने यक्ष को याद किया। उसने भी भीम के वेश में भीलों को जीतकर शीघ्र ही एक और कन्या का अपहरण कर लिया। फिर भीषण भील-संहार के बाद सुदर्शन यक्ष ने वनराज को पकड़ लिया। और उसे विज्ञान तथा न्याय से धरती का पालन करनेवाले कुमार जीवन्धर को सौंप दिया। उसने उसे कारागार में डाल दिया। वह दर्पान्ध शीघ्र ही बन्धन में पड़ गया।

घत्ता—एक दूसरे दिन, मधुकरों से रंजित सरोवर से जिन के लिए जीवन्धर कमल ले जाते हैं, और धरती को कँपानेवाले एक मतवाले हाथी को देखते हैं।

(15)

उसे सरोवर के किनारे पकड़कर, गर्व का निर्वाह करनेवाले समस्त सैन्य को ठहरा दिया। वहाँ निवास

6. AP सहुं सुहुं णिहिय कण्ण। 7. AP °पिउ। 8. A सुबंधु। 9. AP सवर। 10. AP विण्णाय°। 11. AP रुंजिय°। 12. A जिणढोयइ।
(15) 1. A परियाणिउ। 2. AP °मुणिचरियागमेण।

दिण्णउं भोयणु परमेसरासु रिसिणाहहु विद्धंसियसरासु।
अच्छेरयाइं जायाइं पंच को पावइ पुण्णपवंचसंच।
तं चोज्जु णिएवि पलंबबाहु वणवइणा[3] पुच्छिउ दिव्वु साहु।
जोईसरदाणें अत्थि भोउ सुक्कियफलु भुंजइ सव्वु लोउ।
किह दइवें जुंजिउ मेच्छकम्मि हउं[4] किर को होंतउ आसि जम्मि।
जइ भासइ तुहुं बालक्कतेउ वणिसुउ होंतउ सिसुवण्णतेउ।
मुउ तहिं पुणु[5] हुउ मंजारु[6] घोरु[7] सद्देण पणासियकीरमोरु।
एह वि णिवसुय[8] होंती कवोइ संसारसरणु जाणंति जोइ।
पइं लुक्की पविरइयावएण[9] रक्खिय णाहें पारावएण।
पुणरवि तुहुं जायउ विंझराउ एयहि उप्परि अइबद्धराउ।
णेवाविय[10] णेहें णउ मएण भणु को णउ जूरिय [11]भवकएण।
घत्ता—एत्तहि [12]सपरक्कमु पिउ हरिविक्कमु वणयरु[13] दरिसियघायउ।
णियसज्जणणिग्गहि सुयबंदिग्गहि आहवि जुज्झहुं आयउ ॥15॥

(16)

जक्खेण सो वि भडमद्दणासु रणि बंधिवि णंदाणंदणासु।
ढोइउ बहुदुग्गइकारणाइं णिसुणिवि चिरजम्मवियारणाइं।

करते हुए, मुनियों के परमागम को जाननेवाले उस नरश्रेष्ठ ने कामदेव को ध्वस्त करनेवाले परमेश्वर मुनीश्वर को आहर-दान दिया। वहाँ पाँच आश्चर्य उत्पन्न हुए। पुण्य-विस्तार की शोभा को कौन पा सकता है ? वह आश्चर्य देखकर, वनराज ने प्रलम्ब बाहुवाले दिव्य महामुनि से पूछा—"मुनीश्वर को दान से ही सुख-भोग की प्राप्ति होती है। सब लोग अपने सुकृत का फल भोगते हैं। मैं किस दैव से म्लेच्छ कर्म से युक्त हुआ, पूर्वजन्म में मैं क्या था ?" मुनि कहते हैं—"तू सूर्य के समान तेजवाला स्वर्णतेज नाम का वैश्यपुत्र था। वहाँ से मरकर वह एक भीषण विलाव हुआ जो अपने शब्द से कीट और मयूर को नष्ट कर देता था। वह राजकन्या भी कबूतरी हुई। योगी संसार की गति को जानते हैं। आपत्ति की रचना करनेवाले तुमने उसे पकड़ लिया, परन्तु स्वामी कबूतर ने उसे बचा लिया। तुम फिर वनराज हुए और इसीलिए इसके ऊपर तुम्हारा इतना दृढ़ राग है। तुम इसे अहंकार के कारण नहीं, स्नेह के कारण उड़ा ले गये। बताओ, संसार के कर्म से कौन नहीं पीड़ित होता है ?

घत्ता—यहाँ सबल, आघात करनेवाला पिता हरिविक्रम भील, सज्जनों का निग्रह करनेवाले अपने पुत्र के जेल में होने के कारण युद्ध में लड़ने के लिए आया।

(16)

योद्धाओं का नाश करनेवाले जीवन्धर कुमार का यक्ष उसे भी युद्ध में बन्दी बनाकर ले आया। अनेक दुःखों के कारण अपने पूर्वजन्मों का कथन सुनकर सब शान्त और निःशल्य हो गये। दूर भवों का संचित

3. A घणवइणा। 4. AP हउं किं कहिं होंतउ। 5. AP हुउ पुणु। 6. AP मज्जारु। 7. P omits घोरु। 8. B नृवसुय। 9. A पयिरइय°। 10. AP णेव्वाविय पइं णेहें मएण। 11. AP भवकमेण। 12. A सपरिक्कमु। 13. A वणियरु।

उवसंतसव्वणीसल्लु कयउं भवसंचिउं दूरहु वइरु गयउं।
गुंजाहलभूसियकसणकाय[1] णिम्मुक्क बे वि राएं चिलाय।
सोहाउरि बहुलायण्णपुण्ण णंदड्ढहु सा सिरिचंद दिण्ण।
दिण्णउं पयाणु पुणु हिमसमीरि थिउ सेण्णु अवरसरवरहु तीरि।
परिवारु सव्वु चउदिसिहिं[2] रुद्धु तहिं तिव्वगंधमक्खियहिं खद्धु।
झाइउ वणसुरवरु सुंदरेण सो आयउ तें पसरियकरेण।
कय रणविहि पडु परिरक्खणेण विज्जाहरु धरियउ तक्खणेण।
आणिउ पुच्छिउ राएं खगिंदु किं पइं सरु रक्खिउ सारविंदु।
भिंगारघडहत्थकिंकराहं किं जलु ण देहि महु किंकराहं।
किं दंसमसय रइयप्पमेय[3] ता भणइ खयरु सुणि सुहविवेय।
रायउरि सुहासियघरपवित्ति विक्खायइ मालायारगोत्ति।
जाईभडकुसुमसिरीहिं[4] पुत्तु तुहुं होंतउ णामें पुप्फदंतु।
तेत्थु जि पुरि गुणसंजणियराउ धणयत्तणंदिणीदेहजाउ।
चंदाहु णाम हउं[5] मज्झु मित्तु अवरेक्कु कहिउ तें धम्मचित्तु[6]।
दोहं[7] मि अम्हहं दोहिं मि जणेहिं गहियइं वयाइं णिच्चलमणेहिं।

घत्ता—सो चंदाहु मरेप्पिणु सग्गि वसेप्पिणु मुणिवरेहिं विण्णायउ।
एत्थु विदेहधरायलि वरखयरावलि[8] विज्जाहरु हउं जायउ ॥16॥

बैर चला गया। गुंजाफलों से भूषित काले शरीरवाले उन दोनों भीलों (पिता-पुत्र) को मुक्त कर दिया गया। इधर शोभापुरी में प्रचुर लावण्य से परिपूर्ण श्रीचन्द्रा नन्दाढ्य के लिए दे दी गयी। फिर उन्होंने प्रस्थान किया और सेना एक दूसरे सरोवर के हिम के समान शीतल किनारे पर ठहरी। वहाँ चारों ओर से परिवार को घेर लिया गया और तीव्रगन्धवाली मक्खियों ने उसे नष्ट करना शुरू कर दिया। सुन्दर जीवन्धर ने यक्ष का ध्यान किया। वह आया। अपने हाथ फैलाकर रक्षा करनेवाले उसने शीघ्र युद्ध किया और तत्काल उस विद्याधर को पकड़ लिया। पास में लाये जाने पर राजा ने उस विद्याधर राजा से पूछा—"लक्ष्मीपद से युक्त इस सरोवर की तुम रक्षा क्यों कर रहे हो ? भिंगारक और घड़ों को हाथों में थामे हुए हमारे अनुचरों को तुम पानी क्यों नहीं देते ? तुमने अनगिनत डाँस-मच्छरों की रचना क्यों की ?" तब वह विद्याधर कहता है—"हे शुभ विवेकशाली ! सुनो, चूने से सफेद गृहवाले राजपुर के विख्यात मालाकार गोत्र में तू जातिभट और कुसुमश्री का पुष्पदन्त नाम का पुत्र हुआ था। उसी नगरी में धनदत्त और नन्दिनी से उत्पन्न तथा अपने गुणों से स्नेह पैदा करनेवाला चन्द्राभ नाम का मैं पुत्र था। एक और मित्र था, उसने विचित्रधर्म का कथन हम दोनों के लिये किया था। हम दोनों ने निश्चलमन होकर श्रावकव्रत ग्रहण कर लिये।

घत्ता—वह चन्द्राभ मरकर स्वर्ग में निवास कर, मुनिवरों के द्वारा ज्ञात मैं इस विदेह क्षेत्र के विद्याधर लोक में विद्याधर उत्पन्न हुआ हूँ।

---

(16) 1. A गुंजाहलभूसणकसणकाय; P गुंजाहलभूसणकाय। 2. AP चउदिसि णिरुद्धु। 3. A रय अप्पमेय; P रइयप्पमेय। 4. A जोइउ भडु कुसुम°। 5. A हुउ। 6. AP धम्मयित्तु। 7. P ता तहिं अम्हहं। 8. AP खयरधरायलि।

(17)

सुरगिरिसुरदिसिवहि णिसुणि भाय जावच्छमि सुहुं भुंजंतु राय।
ता दिट्ठउ मइं मुणि दिव्वणाणि सो पुच्छिउ इच्छियसोक्खखाणि।
तें कहिउ सव्वु[1] महुं भवविहारु तेरउ णिसुणहि अच्चंतसारु।
सो पुप्फदंतु मुउ जंति[2] कालि हुउ पुक्खलवइदेसंतरालि।
धरपंडुपुंडरिंकिणिपुरंति विजयंधरु पहु जयलच्छिवंति।
विजयावइदेविहि दिहिअणूणु जयरहु णामें तुहुं पढमसूणु।
अण्णहिं दिणि वणकीलइ गओ सि सकमलसरवरतडि संठिओ सि।
तहिं बालहंसु दिट्ठउ चरंतु आणाविउ भयरसथरहरंतु।
पियराइं तासु णहयलि ममंति णियभासइ हा हा सुय[3] भणंति।
दीहरसंसारभमाडएण तावेक्कें रूसिवि चेडएण।
विंधिवि[4] मारिउ सो हंसताउ तुह जणणिहि हुउ कारुण्णभाउ।
सा भणइ पुत्त हम्मइ ण जीउ दुग्गइ पइसइ जणु दुव्विणीउ।
तं जणणिवयणु णिसुणेवि तेण पडिवण्णउ धम्मु महायरेण।
सोलहमइ दिणि मुक्कउ मरालु जाइवि णियमायहि मिलिउ बालु।
चिरु णिवसिरि भुंजिवि जयरहेण तवचरणु लइउं दिणयरमहेण।

(17)

हे भाई ! सुनो, सुमेरु पर्वत की पूर्वदिशा में जब मैं सुख का उपभोग करते हुए रह रहा था, तो मैंने सुख की खान चाहनेवाले किसी दिव्यज्ञानी मुनि से पूछा और उन्होंने मुझे समस्त जन्मान्तरों का भ्रमण बता दिया। तुम अपना (तुम्हारा) वृत्तान्त अत्यन्त संक्षेप में सुनो। समय बीतने पर वह पुष्पदन्त मर गया और पुष्कलावती देश के धवल-गृहों और जयलक्ष्मी से युक्त पुण्डरीकिणी नगरी में राजा विजयन्धर (उत्पन्न) हुआ। उसकी विजयावती देवी से, भाग्य में अन्यून (महान्) तू जयरथ नाम का पहला पुत्र हुआ। एक दिन तू वनक्रीड़ा के लिए गया हुआ था और एक कमलसरोवर के तट पर बैठा हुआ था। वहाँ तूने एक बाल हंस को विचरण करते हुए देखा। भयरस से थर-थर काँपते हुए उसे तुम पकड़कर ले आये। उसके माता-पिता आकाश में मँडराते हुए अपनी भाषा में 'हा सुत, हा सुत !' कह रहे थे। तब संसार की दीर्घ परम्परा में घूमनेवाले तुम्हारे एक सेवक ने क्रोध में आकर तीर से वेधकर हंस के उस पिता को मार दिया। इससे तुम्हारी माँ को करुणा हुई। वह बोली, "हे पुत्र ! जीवों को नहीं मारना चाहिए, दुर्विनीत जन दुर्गति में जाते हैं।" अपनी माँ के इन शब्दों को सुनकर महादरणीय उसने धर्म स्वीकार कर लिया। सोलहवें दिन उसने हंस को छोड़ दिया। वह बालहंस जाकर अपनी माता से मिला। चिरकाल तक राजलक्ष्मी का भोग कर, दिनकर के

(17) 1. A सच्चु। 2. AP जंता कालि। 3. AP सुय लवंति। 4. बंधेवि मारायिउ हंसताउ; P बंधेवि मारिउ सो हंसताउ।

मुउ संभूयउ सहसारसग्गि अट्ठारहसायरभुत्तभोग्गि।
तेत्थाउ एत्थ आओ सि पधर सिरिविजयादेविहि पुरिसपवर।
जो मारिउ तुह भिच्चेण हंसु संसारि भमिवि सो विमलवंसु।
संजायउ कट्ठंगारमंति तुह जणणु णिहउ तें चंदकंति।
पाडलपिल्लयहु महंतसोउ जं सोलहवासरकयविओउ।
सोलह वरिसाइं ण जोइओ सि तं तुहुं[5] बुधुहुं विच्छोइओ सि।
ता राएं विज्जाहरु पवुत्तु तुहुं मज्झु बप्प कल्लाणमित्तु।
इय भासिवि जियरविमंडलेहिं पुज्जिउ मणिकंचणकुंडलेहिं।
कडिसुत्तमउडहाराइएहिं माणिक्कमऊहविराइएहिं[6]।
पट्ठविउ गयणगइ पत्थिवेण हेमाहणयरि भुंजियसिवेण।
कउ वासु जाम परियलइ कालु ता[7] अण्णु जि होइ कहंतरालु।

घत्ता—पुच्छिय महुराइहिं सयलहिं भाइहिं कहिं सो केसरिकंधरु।
णंदड्ढु णिसुंदरु सुहलक्खणधरु कहिं कुमारु जीवंधरु ॥17॥

(18)

भणु भणु सामिणि गंधव्वदत्ति णवकयलीकंदलसरिसगत्ति।
सा भासइ सुयण मणोज्जदेसि हेमाहणयरि मणहरपवेसि।
णिवसंति संत[1] दोण्णि वि कुमार कामावयार संसारसार।

समान तेजस्वी जयरथ ने तपश्चरण ग्रहण कर लिया। मरकर वह सहस्रार स्वर्ग में उत्पन्न हुआ और अठारह सागर पर्यन्त सुखों को भोग कर, वहाँ से आकर, हे पुरुषश्रेष्ठ ! तुम श्रीमती विजयादेवी से उत्पन्न हुए हो। तुम्हारे भृत्य ने जिस हंस को मारा था, वह संसार में परिभ्रमण करता हुआ विमलवंश का काष्ठांगार मन्त्री हुआ। हे चन्द्रकान्तिवाले ! उसने तुम्हारे पिता का वध किया। तुमने सोलह दिन के वियोग का जो भारी शोक हंस के शिशु को दिया, उसी से सोलह वर्षों तक तुम भी नहीं देखे गये, और तुम भी अपने भाइयों से वियुक्त रहे।" यह सुनकर राजा जीवन्धर ने विद्याधर से कहा—"हे सुभट ! तुम मेरे कल्याण मित्र हो।" यह कहकर उसने सूर्यमण्डल को पराजित करनेवाले मणिस्वर्ण कुण्डलों और माणिक्य की किरणों से विराजित कटिसूत्र तथा मुकुटहारों से उसका सत्कार किया। राजा ने विद्याधर को विदा दी। सुख का भोग करनेवाले उसने हेमाभनगर में निवास किया, तो एक और कथान्तर घटित हो गया।

घत्ता—मधुर, बकुल आदि भाइयों ने पूछा कि सिंह के समान कन्धोंवाला नन्दाढ्य और मनुष्यों में सुन्दर तथा शुभ लक्षणों को धारण करनेवाला कुमार जीवन्धर दोनों कहाँ गये ?

(18)

हे नवकदली के सार के समान देहवाली स्वामिनी गन्धर्वदत्ते ! बताओ, बताओ। वह स्वजनों से कहती है कि काम के अवतार, संसार में श्रेष्ठ दोनों कुमार मनोज्ञ देश के हेमाभनगर के मनोहर प्रदेश में निवास

---

5. AP तें तुहुं मि बप्प विच्छो°। 6. AP वत्थहिं सुहगंधविराइएहिं। 7. A तावण्णु वि; P ता अण्णु वि।

(18) 1. AP संति।

तं णिसुणिवि गय भायर तुरंत दंडयवणु तुंगतमालु पत्त।
तहिं दिट्ठ देवि तावसणिवासि जीवंधरजणणि महापयासि।
आलाव जाय जाणिय समाय को पावइ जणणिहि तणिय छाय।
बोल्लिउ देविइ भो करह तेम सुउ जीवंधरु महुं मिलइ जेम।
सइ वंदिवि गय ते णं गइंद आलग्गा ताहं महापुलिंद।
ते जित्त जंति जा पुरसमीउ पुणु सवरणिवहु[2] हरिहरिणजीउ[3]।
अब्भिडुउ तहिं संपाइएण जीवंधरेण अवराइएण[4]।
रक्खिय ओलक्खिय गलियगव्व सज्जणवच्छल महुराइ सव्व।
गय हेमाहहु थिय को वि कालु पुणु तेहिं पबोल्लिउ सामिसालु।
रायउरहु चल्लिउ सो तुरंतु दंडयवणु पत्तउ[5] गुणमहंतु।

घत्ता—तहिं जोइवि मायरि विजयासुंदरि बंधुवग्गु रोमंचिउ।
घणपणयपवण्णें चुयथणथण्णें णंदणु मायइ सिंचिउ ॥18॥

(19)

जीवंधरेण जीवंति दिट्ठ पणमिय परमेसरि सुट्ठु इट्ठ।
पभणइ दीहाउसु होहि पुत्त आयण्णहि संगरभारजुत्त।
दुविणीएं दुज्जसगारएण तुह पिउ हउ कट्ठंगारएण।
मंतें होइवि सइं गहिउं रज्जु तुहुं सउलपराहवु[1] हरहि अज्जु।

करते हैं। यह सुनकर भाई तुरन्त गये और ऊँचे तमाल वृक्षोंवाले दण्डकवन में पहुँचे। वहाँ महापयास तापसनिवास (आश्रम) में जीवन्धर की माँ विजयादेवी को उन्होंने देखा। देवी ने कहा—"अरे ! तुम लोग ऐसा करो जिससे जीवन्धर मुझे मिल जाये।" उस सती की वन्दना कर, वे लोग गये मानो गजेन्द्र गये हों। उनके पीछे बड़े-बड़े भील लग गये। कुमारों ने उन्हें जीत लिया। तब नगर के समीप तक जाते हुए उन्हें पशुओं के जीव का अपहरण करनेवाला शबरसमूह फिर से मिला और भिड़ गया। वहाँ आये हुए अपराजित जीवन्धर कुमार ने उनकी रक्षा की और सज्जनों से वात्सल्य रखनेवाले, गर्वरहित मधुर आदि सभी भाइयों को पहचान लिया। वे लोग हेमाभनगर गये और वहाँ कुछ समय तक रहे। फिर उन्होंने स्वामीश्रेष्ठ से कहा। गुणों से महान् वह तुरन्त राजपुर के लिए चल पड़ा और दण्डकवन पहुँचा।

घत्ता—वहाँ अपनी माँ विजयासुन्दरी को देखकर बन्धुवर्ग रोमांचित हो गया। सघन स्नेह से परिपूर्ण झरते स्तन-स्तन्य (दूध) से माँ ने पुत्र को सींच दिया।

(19)

कुमार जीवन्धर ने अपनी माँ को जीवित देखा। अत्यन्त इष्ट उस परमेश्वरी को प्रणाम किया। माता बोली—"हे संग्रामभार से युक्त पुत्र ! तुम दीर्घायु होओ। तुम सुनो, दुर्विनीत अपयश करनेवाले काष्ठांगार ने तुम्हारे पिता को मार डाला है। मन्त्री होकर भी उसने सारा राज्य हड़प लिया है। तुम अपने कुल के

2. AP सवरविंदु। 3. A हयहरिण°। 4. A अइराइएण। 5. A पत्तउ सो महंतु।

(19) 1. A सव्वलु पराभउ; P सउलु पराहउ।

तं णिसुणिवि रोसहुयासु जलिउ परिवाययवेसें कुंवरु[2] चलिउ।
पच्छइ णहयलपरिघुलियकेउ णंदड्ढु णिहिउ साहणसमेउ।
णिवइरिभवणि दियवेसधारि अवयरिवि पयंपइ चित्तहारि।
भोयणु भुंजिवि अग्गासणत्थु पुणु वक्खाणिउं वसियरणसत्थु।
गुणमालहि [3]बालहि गेहु ढुक्कु हियउल्लउं तहि वसि करिवि मुक्कु।
जाणिउ जीवंधरु दिण्ण तासु गुणमालिणि[4] णं रइ वम्महासु।
वणिवेसें रइरसरमणधुत्ति[5] पुणु परिणिय सायरदत्तपुत्ति।
तं कण्णाजुवलु करेण धरिवि विजयइरिकरिंदारुहणु करिवि।
पइसइ पहु गंधुक्कडणिवासि कुद्धउ णरवइ पडिवक्खतोसि[6]।
जणवइ विदेहि पुरवरि विदेहि गोविंदु राउ पडिवण्णदेहि[7]।
पुहईसुंदरि पिय बीय सीय तहि रयणवइ त्ति सुरूव[8] धीय।
सा चंदयवेहि सयंवरेण परिणिय णियपुरि जीवंधरेण।
आढत्ती हरहुं णरेसरेहिं खलकट्ठंगारयकिंकरेहिं।
भड भिडिय दिण्णदढपहरविहुर[9] जायउ रणु भीसणु गलियरुहिरु।

घत्ता—तहिं तेण कुमारें विक्कमसारें करिवरु [10]पाएं पेल्लिउ।
सो कट्ठंगारउ भडु भल्लारउ चक्कें छिंदिवि घल्लिउ ॥19॥

पराभव को दूर करो।" यह सुनकर कुमार की क्रोधाग्नि भड़क उठी। कुमार परिव्राजक का रूप बनाकर चला। जिसकी पताकाएँ आकाश में व्याप्त हैं, ऐसे नन्दाढ्य को सेना के साथ पीछे रख लिया। सुन्दर ब्राह्मण वेशधारी वह शत्रु के घर में प्रवेश करके बोला तथा सबसे आगे बैठकर उसके साथ भोजन किया और वशीकरण शास्त्र का व्याख्यान किया। फिर गुणमाला के घर पहुँचा और उसके हृदय को वश में करके छोड़ दिया। जब यह पता चला कि वह जीवन्धर कुमार है तो उसे गुणमाला दी गयी, मानो कामदेव को रति दे दी गयी हो। वणिक् के रूप में उसने रतिरस के रमण में कुशल सागरदत्त की पुत्री विमला से विवाह कर लिया। उन दोनों कन्याओं का हाथ पकड़कर, विजयगिरि महागज पर बैठकर वह गन्धोत्कट के निवास पर पहुँचा। शत्रु के हर्ष (प्रगति) से राजा क्रुद्ध हो उठा। विदेह जनपद में विदेह नगर है। उसमें प्रजा के द्वारा मान्य गोपेन्द्र नाम का राजा था। उसकी पृथ्वीसुन्दरी नाम की पत्नी थी। उसकी रत्नावली नाम की स्वरूपवती कन्या थी, जो मानो दूसरी सीता थी। जीवन्धर चन्द्रकवेध के द्वारा उसका वरण कर उसे अपने नगर ले आये। दुष्ट काष्ठांगार के अनुचर राजाओं ने उसके अपहरण का प्रयास किया। योद्धा भिड़ गये। जो दिये गये दृढ़ प्रहारों से विधुर हैं तथा जिसमें रक्त की धारा बह रही है, ऐसा भीषण युद्ध हुआ।

घत्ता—तब उस युद्ध में विक्रमश्रेष्ठ कुमार जीवन्धर ने अपने हाथी को पैरों से चलाया और उस काष्ठांगार शत्रु को चक्र से काटकर फेंक दिया।

---

2. AP कुमरु। 3. A बालहे ससुहु। 4. P पुण मालिणि। 5. AP °रमणपुत्ति। 6. AP पडिवक्खु तासि। 7. AP पडिवण्णणेहि। 8. A सुरूव सीय। 9. P विहुरु। 10. AP पायहिं।

(20)

अप्पुणु[1] पुणु जणणासणि णिविट्ठु दारावइपुरवरि णाइ विट्ठु।
णं पोयणपट्टणि[2] चिरु तिविट्ठु थिउ सिरि रमंतु णं सइं दुविट्ठु।
अट्ठहिं महएविहिं सहुं जणिट्ठु णं संकरिसणु परिउट्ठसिट्ठु[3]।
पुणु कालें जंतें कोवणिट्ठु वणि [4]कइजुवलउं जुज्झंतु दिट्ठु।
संसारु घोरु बुज्झिवि अणिंदु वंदेवि वंकचारणु[5] मुणिंदु।
ढोएवि वसुह हरिकंधरासु णियतणयहु अप्पि वसुंधरासु।
पावइउ णमंसिवि वड्ढमाणु जीवंधरमुणि भवतरुकिसाणु।
विजयाएविइ[6] सुललियभुयाइ चंदणहि पासि सुरवरथुयाइ।
अट्ठ वि तहु घरिणिउ दिक्खियाउ सत्थंगोवंगइं सिक्खियाउ।
सच्चंधरसुउ सुयकेवलित्तु पत्तउ पुणु राय तिदेहचत्तु।
जाही णिव्वाणहु मागहेस पइं पुच्छिय मइं अक्खिय असेस।
कह[7] जासु परमजोईसरासु सो कुणउ मज्झु मिच्छत्तणासु।
जीवंधरु देउ समाहि बोहि विद्धंसउ पणइणिपेम्मवाहि।

(20)

वह स्वयं पिता के सिंहासन पर बैठा जैसे द्वारावती में स्वयं कृष्ण बैठे हों, मानो पहले पोदनपुर में त्रिपृष्ठ बैठा हो। मानो श्री का रमण करता हुआ स्वयं द्विपृष्ठ हो। लोगों के लिए प्रिय, आठों महादेवियों के साथ वह ऐसा लगता था मानो प्रजा को सन्तुष्ट करनेवाला संकर्षण हो। फिर समय बीतने पर, उसने वन में क्रोध सहित लड़ते हुए दो वानरों को देखा। संसार को भयंकर समझकर तथा अनिन्द्य प्रशस्त चारण ऋद्धिधारी मुनीन्द्र की वन्दना कर, सिंह के समान हैं कन्धे जिसके ऐसे वसुन्धर नाम के अपने पुत्र को धरती सौंपकर, संसाररूपी वृक्ष के लिए आग के समान मुनि जीवन्धर कुमार ने वर्धमान को प्रणाम कर दीक्षा ग्रहण कर ली। सुन्दर बाँहोंवाली देवों के द्वारा संस्तुत विजयादेवी आदि उनकी आठों पत्नियों ने आर्यिका चन्दना के पास दीक्षा ग्रहण कर ली एवं अंग-उपांग सहित शास्त्रों की शिक्षा ग्रहण की। हे राजन् (श्रेणिक) ! इस समय शरीरों का त्याग करनेवाले तीनों (सत्यन्धर के पुत्र) श्रुतकेवली हो चुके हैं। वे निर्वाण को प्राप्त होंगे। हे मागधेश ! तुमने पूछा और मैंने समस्त कथन कर दिया। जिस परम ज्योतीश्वर की कथा (गणधर ने की) वह जीवन्धर स्वामी, मेरे मिथ्यात्व का नाश करें। वे मुझे समाधि और ज्ञान दें तथा स्त्रियों में होनेवाली प्रेमव्याधि दूर करें।

(20) 1. AP अप्पणु। 2. A पोयणे पट्टणे। 3. A परितुट्ठ° 4. A कविजुयलउं; P कयजुयलउं। 5. P वंक°। 6. A विजयादेविहे। 7. P कइ जासु।

घत्ता—जिह भरहु अणिंदहु रिसहजिणिंदहु पणविउ भडपंचाणणु।
तिह अइगंभीरहु सेणिउ वीरहु पुप्फदंतधवलाणणु ॥20॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे जीवंधरभवावण्णणं[8]
णाम णवणउदिमो परिच्छेओ समत्तो ॥99॥

घत्ता—जिस प्रकार भटश्रेष्ठ भरत ऋषभ जिनेन्द्र के लिए प्रणत था, उसी प्रकार पुष्पदन्त के समान धवल मुखवाला राजा श्रेणिक अत्यन्त गम्भीर महावीर स्वामी के लिए है।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त
द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का जीवन्धर-भव-वर्णन
नाम का निन्यानवेवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

8. A भववण्णणं।

सयमो संधि

आहिंडिवि मंडिवि सयल महि धम्में रिसि परमेसरु।
ससिरिहि[1] विउलइरिहि[2] आइयउ कालें वीरजिणेसरु ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

सेणिउ गउ[3] पुणु वंदणहत्तिइ समवसरणु संजायंतें[4] भत्तिइ।
सुरतरुतलि सिलवीढि णिविट्ठउ धम्मरुइ त्ति णाम रिसि दिट्ठउ।
झाणारूढउ भिउडियलोयणु राएं तेण स[5] णाणविलोयणु।
पुच्छिउ गोत्तमु सिवरामाणणु[6] किं दीसइ भो[7] मुणि भीमाणणु।
भणइ गणेसरु अंगइ मंडलि चंपापुरवरि ण वि आहंडलि।
होंतउ एहु साहु धणरिद्धउ[8] राउ सेयवाहणु सुपसिद्धउ।
वीरहु पासि धम्मु आयण्णिवि तणसमाणु[9] मेइणियलु मण्णिवि।
णियतणयहु कुलगयणससंकहु दिण्णउ विमलवाहणामंकहु।
अप्पुणु तवु लइयउं परमत्थें वड्ढमाणपयमउलियहत्थें।
दहविहधम्मरुईइ पयासिउ[10] धम्मरुइ त्ति मुणिहिं उब्भासिउ।
तुम्हारइ पुरवरि णिरवज्जें अज्जु पइट्ठउ भोयणकज्जें।

सौवीं सन्धि

समस्त धरती का परिभ्रमण कर और उसे धर्म से अलंकृत कर, परम ऋषि वीर जिनेश्वर, समय के साथ शिखरों से युक्त विपुलगिरि पर्वत पर आये।

(1)

राजा श्रेणिक फिर से वन्दना भक्ति के लिए गया। भक्ति के साथ समवसरण को देखते हुए अशोक वृक्ष के नीचे शिलापीठ पर बैठे हुए उसने ध्यान में लीन, जुड़ी हुई भौंहोंवाले धर्मरुचि नाम के मुनि को देखा। उस राजा ने ज्ञाननेत्रवाले और मुक्तिरूपी रमा को प्राप्त करनेवाले गौतम मुनि से पूछा—"ये मुनि भीषण मुखवाले क्यों दिखाई देते हैं ?" गौतम गणधर कहते हैं—"अंगदेश की चम्पानगरी के समान दूसरी नगरी इस पृथ्वीमण्डल पर नहीं है। यह मुनि वहाँ के धनसम्पन्न श्वेतवाहन नाम के प्रसिद्ध राजा थे। भगवान महावीर के पास धर्म का श्रवण कर, पृथ्वी को तिनके के समान समझकर, कुलरूपी आकाश के चन्द्रमा विमलवाहन नाम के अपने पुत्र को राज्य देकर, वर्धमान भगवान के चरणों में हाथ जोड़े हुए परमार्थ भाव से स्वयं इन्होंने तप ग्रहण कर लिया। मुनियों ने दसधर्म की कान्ति से प्रकाशित उन्हें धर्मरुचि नाम से उद्घोषित किया।

---

(1) 1. A सिहरिहि। 2. P वि विउलएरिहे। 3. AP पुणु गउ। 4. AP जोयंते। 5. AP सुणाण°। 6. AP सिवसिरिमाणणु। 7. AP सो। 8. A धणिणिद्धउ। 9. AP °तिण°। 10. A पसंसिउ।

तहिं तिहिं पुरसहिं सो अवलोइउ   लक्खणधरु भणेवि पोमाइउ[11]।
एएं सामुद्दें पुहईसरु   किं णउ जायउ एहु जईसरु।
अवरेक्कें बोल्लिउ भो जेहउं   पइं वुत्तउ बहुमहिवइ[12] तेहउं।
डिंभु[13] एण परभवि अवयारिउ   मंतिहिं हित्तु[14] रज्जु तं मारिउ[15]।
पावयम्मु इहु भिक्खु ण वुच्चइ   एयहु केरी तत्ति विमुच्चइ।
घत्ता—आयण्णिवि तं मण्णिवि अवि भुंजंतु णियत्तउ।
परमेट्ठिहि सुहदिट्ठिहि समवसरणु संपत्तउ ॥1॥

(2)

सेणिय अइरोसें पज्जालिउ   पइं रउद्दझाणत्थु णिहालिउ।
पसरमाणु दुक्कम्मु णिरोहहि   रिसि जाइवि तुहुं लहुं संबोहहि।
तं णिसुणिवि [1]जाइवि अणुराएं   धम्मवयणु तहु[2] भासिउं राएं।
तेण वि तं णियचित्ति णिहित्तउं   अट्टरउद्दझाणु परिचत्तउं।
उप्पाइउं केवलु सयलामलु   इसि[3] इसिणाहु पहूयउ णिम्मलु।
तं अवलोइवि धम्मुच्छाहें   सेणिउ सइं पुज्जिउ सुरणाहें।

तुम्हारे नगर में आज निरवद्य भोजन के लिए उन्होंने प्रवेश किया। वहाँ तीन व्यक्तियों ने उन्हें देखा और 'वे शुभ लक्षणों से युक्त हैं' यह कहकर प्रशंसा की। उनमें से एक ने कहा कि सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार यह पृथ्वीश्वर हैं। फिर योगीश्वर क्यों हो गये ? एक और ने कहा—"तुमने जैसा कहा है, वह उसी तरह प्रचुर धरती के स्वामी हैं, परन्तु दूसरे कारण (राज्य कारण) से पुत्र को अवतरित कर दिया। मन्त्रियों ने राज्य का अपहरण कर पुत्र को मार डाला। यह पापकर्मा है, इसे भिक्षु नहीं कहा जा सकता, इसका सन्तोष दूर करना चाहिए ?

घत्ता—यह सुनकर क्रोध कर भोजन नहीं करते हुए (वे) लौट गये और शुभदृष्टि परमेष्ठि महावीर के समवसरण में आये।

(2)

हे श्रेणिक ! अत्यन्त क्रोध से प्रज्वलित इन्हें तुमने रौद्र में स्थित देखा है। इनके फैलते हुए दुष्कर्म को तुम रोको। मुनि को जाकर तुम शीघ्र समझाओ" यह सुनकर और प्रेम से जाकर राजा ने उनसे धर्मवचन कहे। उन्होंने भी उन वचनों को अपने मन में धारण कर अत्यन्त आर्तध्यान का त्याग कर दिया। सम्पूर्ण पवित्र केवलज्ञान उन्हें उत्पन्न हो गया और ऋषि पवित्र ऋषिनाथ हो गये। यह देखकर हे श्रेणिक ! स्वयं

---

11. A पोमाइवइउ। 12. AP एहु महिवइ। 13. A डिंभएण परभवि अवयारिवि। 14. A हियउ। 15. A मारिवि।
(2) 1. A जायअणुराएं। 2. A तसु। 3. A इसि इहि णाणु।

पुणु णरणाहें पुच्छें घोसइ देव चरमकेवलि को होसइ।
भारहवरिसि गणेसरु भासइ एहु सु[4] विज्जुमालि सुरु दीसइ।
भूसिउ अच्छराहिं गुणवंतहिं विज्जुवेयविज्जुलियाकंतहिं।
पिक्कउं सालिछेत्तु [5]जलिओ सिहि मयमत्तउ करिंदु बहुमयणिहि।
देवदिण्णजंबूहलदायइ इय सिविणयदंसणि संजायइ।
अरुहयासवणियहु[6] घणथणियहि सुरवरु जिणदासिहि सेट्ठिणियहि।
सत्तमदिवहि गब्भि थएसइ जंबूसुरहु पुज्ज पावेसइ।
जंबूसामि णाम इहु[7] होसइ तक्कालइ णिव्वुइ जाएसइ।
वड्ढमाणु[8] पावापुरसरवणि णिद्धणीलणवचउरंगुलतणि[9]।
तइयहुं जाएसइ णिव्वाणहु अचलहु केवलणाणपहाणहु।

घत्ता—हउं केवलु अइणिम्मलु पाविवि समउं सुहम्में।
एउं जि पुरु तोसियसुरु आवेसमि हयकम्में ॥2॥

(3)

सुणि सेणिय कूणिउ तुह[1] णंदणु संबोहेसमि[2] सुयणाणंदणु।
जंबूसामि वि तहिं आवेसइ अरुहदिक्ख भत्तिइ मग्गेसइ।

देवेन्द्र ने उनकी पूजा की।" मगधनरेश राजा श्रेणिक फिर उनसे पूछता है—"हे देव ! भारतवर्ष में अन्तिम केवली कौन होगा ?" गौतम गणधर कहते हैं—"यह जो विद्युन्माली देव दिखाई देता है जो गुणवती विद्युद्वेगा, विद्युल्लता, विद्युत्कान्ता आदि अप्सराओं से भूषित है। पका हुआ धान्य क्षेत्र, प्रज्वलित आग, मतवाला प्रचुरमद का निधि गजराज और जिसमें देवों द्वारा दिये गये जम्बूफल हैं, ऐसे स्वप्नदर्शन+ के होने पर अर्हद्दास सेठ की सघन स्तनोंवाली सेठानी जिनदासी के गर्भ में, आज से सात दिन बाद यह सुरवर स्थित होगा और जम्बूकुमार देवों द्वारा पूजा जाएगा।" इसका नाम जम्बूस्वामी होगा और महावीर के काल में मोक्ष प्राप्त करेगा। स्निग्ध, नीले, और नौ-चार अंगुल के विस्तारवाले पावापुर के सरोवरवन में जब महावीर केवलज्ञान-प्रधान अचल निर्वाण को प्राप्त होंगे, (तब)

घत्ता—सुधर्मा के साथ अतिनिर्मल केवलज्ञान प्राप्त कर कर्मों का नाश करनेवाला मैं देवों को सन्तुष्ट करनेवाले इस नगर में आऊँगा।

(3)

हे श्रेणिक सुनो ! स्वजनों को आनन्द देनेवाले तुम्हारे पुत्र कुणिक (चेलना के पुत्र) को सम्बोधित करूँगा।

---

4. AP जि। 5. AP जलियउ। 6. AP अरुहदास°। 7. A यहु। 8. A वड्ढमाणुफ 9. P omits °णव°।

(3) 1. A णियणंदणु। 2. A संबोहेसइ। 3. AP थेंडइ। 4. AP सलक्खण।

* वस्तुतः प्रियदर्शना, सुदर्शना, विद्युद्वेगा और प्रभावेगा। ये चार देवियाँ थीं।

\+ हाथी, सरोवर, चावलों का खेत, ऊपर शिखावाली धूमरहित अग्नि से पाँचों शुभ स्वप्न हैं।

सयणहिं सो णिज्जेसइ मड्डइ[3] णियपुरि सत्तभूमिथियमंडइ।
तहु विवाहु तहिं पारंभेव्वउ तेण वि णियमणि अवहेरिव्वउ।
सायरदत्ततणय पोमावइ अवर सुलक्खण[4] सुरगयवरगइ।
पोमसिरि त्ति कणयसिरि सुंदरि विणयसिरि त्ति अवर वर[5] धणसिरि।
भवणमज्झि माणिक्कपईवइ रयणचुण्णरंगावलिभावइ।
एयहिं [6]सहुं तहिं अच्छइ मणहरु उण्णाविय[7] इय णवकंकणकरु।
वरु[8] वहुयहुं करयलु[9] करि ढोयइ जणणि तासु पच्छण्णु पलोयइ।
तहिं अवसरि सुरम्मदेसंतरि विज्जुरायसुउ पोयणपुरवरि।
विज्जुप्पहु णामें सुहडग्गिणि कुद्धउ सो अरिगिरिसोदामणि।
केण वि कारणेण णं दिग्गउ णियपुरु मेल्लिवि सहसा णिग्गउ।
अद्दंसणु कवाडउग्घाडणु सिक्खिवि लोयबुद्धिणिद्धाडणु।
विज्जुचोरु णियणाउं[10] कहेप्पिणु पंचसायइं सहायहं लेप्पिणु।
घत्ता—बलवंतहिं मंतहिं तं [11]तहिं गाविउ ढुक्कउ तक्करु।
अंधारइ घोरइ पसरियइ रयणिहि दूसियभक्खरु ॥3॥

उस अवसर पर जम्बूस्वामी आएगा और भक्तिभाव से अरहन्त दीक्षा माँगेगा। स्वजनों के द्वारा वह बलपूर्वक ले जाया जाएगा, और उसके अपने नगर में सातभूमियोंवाले मण्डप में उसका विवाह प्रारम्भ किया जाएगा। वह भी अपने मन में इसकी उपेक्षा करेगा। सागरदत्त और पद्मावती की सुलक्षणोंवाली ऐरावत गज के समान गतिवाली पद्मश्री, कनकश्री, सुन्दरी, विनयश्री तथा एक और धनश्री ये सुन्दर पुत्रियाँ होंगी। रत्नचूर्ण की रँगोली से सम्पन्न तथा माणिक्यों से आलोकित भवन में वह सुन्दर इनके साथ बैठा होगा; वर नवकंकणों से युक्त हाथ उठाएगा और वधुओं के करतल में हाथ देगा। उसकी माँ छिपकर देखेगी। उसी अवसर पर, सुरम्यदेश के पोदनपुर नगर के विद्युद्राज का विद्युत्प्रभ नामक सुभटों में अग्रणी पुत्र पहाड़ी बिजली के समान किसी कारण से क्रुद्ध हो गया। दिग्गज के समान वह सहसा अपना घर छोड़कर नगर से बाहर निकल पड़ा। अदर्शन (छिप जाना, दिखाई नहीं देना), किवाड़ों को खोल लेना, लोगों की बुद्धि का उच्चाटन कर देना, आदि बातें सीखकर अपना नाम विद्युत्चोर बताकर, अपने पाँच सौ सहायक लेकर,

घत्ता—वहाँ बलवान मन्त्रियों से छिपकर तथा सूर्य को दूषित करनेवाला वह रात्रि में सघन अन्धकार फैलने पर वहाँ पहुँचा।

---

5. A तह यण°। 6. AP सहुं अच्छेसइ मणहरु। 7. AP उण्णाविर इय। 8. A वरवहुयहं। 9. AP करयलि करु। 10. AP णियणामु। 11. AP तहिं पि।
12. A गोविउ।

(4)

माणवेण णउ केण वि दिट्ठउ अरुहदासवणिभवणि पइट्ठउ।
दिट्ठी तेण[1] तेत्थु पसरियजस जिणवरदासि णट्ठणिद्दालस।
पुच्छिय कुसुमालें किं चेयसि[2] भणु भणु माइरि[3] किं णउ सोवसि[4]।
ताइ पबोल्लिउं महुं सुय सुहमणु परइ बप्प पइसरइ तवोवणु।
पुत्तविओयदुक्खु तणु तावइ तेण णिद्द महुं किं पि वि णावइ[5]।
बुद्धिमंतु तुहुं बुहविण्णायहिं एहु णिवारहि सुहडोवायहिं।
पइं हउं बंधवु परमु वियप्पमि जं मग्गहि तं दविणु समप्पमि।
तं णिसुणिवि णिरुक्कु[6] गउ तेत्तहे अच्छइ सहुं वहुयहिं वरु जेत्तहि।
जंपइ भो कुमार णउ जुज्जइ जणु परलोयगहेण जि खिज्जइ।
णियडु ण माणइ दूरु जि पेच्छइ पल्लउ[7] तणु मुएवि महुं वंछइ।
णिवडिउ कक्करि सेलि[8] सिलायलि जिह सो तिह तुहुं मरहि म णिप्फलि।
तवि किं लग्गहि माणहि कण्णउ ता पभणइ वरु [9]तुहुं वि जि सुण्णउ।
जीवहु तित्ति भोए णउ विज्जइ इंदियसोक्खें तिट्ठ ण छिज्जइ।

घत्ता—ता घोरें चोरें बोल्लियउं सबरें विद्धउ कुंजरु।
सो भिल्लु ससल्लु दुमासिएण फणिणा दट्ठउ दुद्धरु ॥4॥

(4)

उसे कोई मनुष्य नहीं देख सका। वह अर्हद्दास के भवन में घुस गया। वहाँ उस चोर ने प्रसरित यशवाली, नष्ट है नींद और आलस्य जिसका ऐसी अर्हद्दास की पत्नी से पूछा—"हे माँ ! तुम क्यों जाग रही हो ? हे माँ ! बताओ, बताओ, तुम क्यों जाग रही हो ?" उसने उत्तर दिया, "मेरा शुभमन के समान पुत्र कल तपोवन में प्रवेश करेगा। पुत्र के वियोग के दुःख से मेरा शरीर जल रहा है। इसी कारण मुझे जरा भी नींद नहीं आ रही है। तुम बुद्धिमान हो, तरह-तरह के विज्ञानों और सुभट वचनों से इसको रोको। मैं तुम्हें अपना भाई मानूँगी और जितना धन माँगोगे, उतना धन दूँगी।" यह सुनकर वह चोर वहाँ गया जहाँ वधुओं के साथ वह बैठा हुआ था। वह कहता है—"हे कुमार ! यह ठीक नहीं है। लोग परलोकरूपी ग्रह से ही नष्ट होते हैं। अपने निकट की चीज को नहीं मानते, दूर की चीज देखते हैं। पत्ते और तिनकों को छोड़कर, मधु चाहते हैं। इस तरह जिस प्रकार कठोर पहाड़ी चट्टान पर गिरकर ऊँट मर जाता है, उसी प्रकार तुम भी निष्फल मर जाओगे। इसलिए तुम तप में क्यों लगते हो ? इन कन्याओं को मानो; (यह आनन्द लो)।" इस पर वर उत्तर देता है—"तुम भी कोरे हो। जीवों की तृप्ति भोग से नहीं होती। इन्द्रियसुख से तृष्णा शान्त नहीं होती।"

घत्ता—तब उस भयंकर चोर ने उत्तर दिया कि भील से हाथी घायल हुआ तथा पेड़ पर बैठे हुए नाग के द्वारा दुर्धर भील डस लिया गया।

(4) 1. P तेत्थु तेण। 2. A चेयहिं। 3. AP मायरि। 4. A सोवहि। 5. A ण आवइ। 6. AP णिरिक्खु। 7. A पल्लउ तरु मुएवि; P पल्लउ तणु मुएवि। 8. A सेलसिलायले। 9. AP वरइत्तु जि सुण्णउ। 15. गा वि ड गर्वितः। 16. °भक्ख रु भास्करप्रतापः।

(5)

तेण वि सो तं[1] मारिउ विसहरु मुउ करि मुउ सवरुल्लु धणुद्धरु।
तेत्थु [2]समीहिवि मासाहारउ तहिं अवसरि आयउ कोड्डारउ।
लुद्धउ णियतणु[3] लोहें रंजइ चावसिंथणाऊ[4] किर भुंजइ।
तुट्टणिबंधणि मुहरुह मोडिइ तालु विहिण्णु सरासणकोडिइ।
मुउ जंबुउ अइतिट्ठइ भग्गउ जिह तिह[5] सो परलोयहु भग्गउ।
म मरु म मरु रइसुहुं अणुहुंजहि भणइ तरुणु तक्कर पडिवज्जहि।
सुलहइं पेच्छिवि विविहइं रयणइं गउ पंथिउ ढंकिवि णियणयणइं।
जिणवरवयणु जीउ णउ भावइ संसरंतु विविहावइ पावइ।
कोहें लोहें मोहें मुज्झइ अट्ठपयारें कम्में बज्झइ।
कहइ थेणु एक्केण सियालें मासखंडु [6]छंडिवि तिट्ठालें।
तणु घल्लिय उप्परि परिहच्छहु तीरिणिसलिलुच्छलियहु मच्छहु।
आमिसु [7]गहियउं पक्खिणिणाहें सो कड्ढिवि णिउ सलिलपवाहें।
मुउ गोमाउ मच्छु[8] जलि अच्छिउ ता[9] लंपेक्खु वरें णिब्भच्छिउ।
वणिवरु पंथि को वि सुहुं सुत्तउ रयणकरंडउ तहु[10] तहिं हित्तउ।
वणि तुम्हारिसेहिं अण्णाणहिं सो कुसीलु[11] कउ हिंसियपाणहिं।

---

(5)

उस भील ने भी उस साँप को मार डाला। इस प्रकार हाथी भी मर गया और धनुर्धारी भील भी मारा गया। उसी अवसर पर एक सियार आया। वह लोभी अपने शरीर को लोभ से रंजित करता है और प्रत्यंचा की ताँत को खाना प्रारम्भ करता है। बन्धन टूट जाने से दाँतों द्वारा मोड़ी गयी धनुष की प्रत्यंचा से उसका तालू नष्ट हो गया। सियार मारा गया। इस प्रकार अतितृष्णा से जैसे वह नष्ट हुआ, उसी प्रकार परलोक को जीव नष्ट करता है। इसलिए तुम मरो मत, मरो मत। तुम रतिसुख का अनुभव करो।" तब युवा जम्बू तस्कर को मना करता हुआ कहता है—"एक पापिष्ठ अपने सुलभ रत्नों को देखकर, अपनी आँखें बन्द करके सो जाता है, इसी प्रकार इस जीव को जिनवर के वचन सुनकर अच्छे नहीं लगते, वह संसार में घूमता हुआ अनेक प्रकार की आपत्तियाँ उठाता है; वह क्रोध, लोभ और मोह से मुग्ध होता है और आठ प्रकार के कर्मों से बँधता है।" इस पर चोर कहता है—"तृष्णा से व्याकुल एक सियार ने मांस-खण्ड छोड़कर, नदी के जल में उछलती हुई चंचल मछली पर अपना शरीर गिरा दिया। गीध ने मांसखण्ड खा लिया, सियार जल के प्रवाह में बहकर मर गया, मछली जल में रह गयी।" वह चोर कुमार की भर्त्सना करता है। तब कुमार कहता है—"कोई सेठ पथ में सोया हुआ था। उसके रत्नों के पिटारे का चोरों ने अपहरण कर लिया। वन में तुम जैसे अज्ञानी, प्राणों की हिंसा करनेवालों ने उसे निर्धन बना दिया।

---

(5) 1. AP तहिं। 2. AP समीहिय°। 3. A लद्धउ णियमणि लोहें; P णियमणु लोहें। 4. A चावसित्थणाओ; P चावसिय ता किर जा भुंजइ। 5. AP सो तिह। 6. AP छड्डिवि। 7. AP गहिउ। 8. A मच्छि। 9. A तक्कालें खयरें णिब्भच्छिउ। 10. AP तहिं तहो। 11. A कुसील कउ।

घत्ता—दुप्पेक्खें दुक्खें पीडियउ वणिवइ आवइ पत्तउ।
जिणवयणें रयणें वज्जियउ जीउ वि णरइ णिहित्तउ ॥5॥

(6)

गउ पाविट्ठु दुट्ठु[1] उम्मग्गें विसयकसायचोरसंसग्गें।
तं आयण्णिवि परधणहारें उत्तरु दिण्णु बुद्धिवित्थारें।
सासुय कुद्ध सुण्ह गहणालइ मरणकाम दिट्ठी तरुमूलइ।
णिसुणि सुवण्णदारु पाडहिएं आहरणहु लोहें मइरहिएं।
मरणोवाउ सिट्ठु धवलच्छिहि गयमयणहि[2] घरपंकयलच्छिहि।
मद्दलि पाय दिण्णु गलि पासउ तण्णिवाइ मुउ दुट्ठु दुरासउ।
सो मुउ जोइवि णीसासुण्हइ गेहगमणु पडिवण्णउं सुण्हइ।
जिह सो मुउ घणकंकणमोहें[3] तिह तुहुं म मरु मोक्खसुहलोहें।
भणइ कुमारु वुत्तु[4] ललियंगउ एक्कहिं णयरि अत्थि रइरंगउ[5]।
तं[6] जोयंति का वि मणिमेहल कय[7] मयणें महएवि विसंठुल।
आणिउ धाइ पच्छिमदारें देविइ रमिउ मुणिउं परिवारें।
राएं जाणिउ सो लिहक्काविउ असुइपवण्णि विवरि घल्लाविउ।

घत्ता—दुदर्शनीय दुःख से पीड़ित होकर वह सेठ वन में आपत्ति को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार जिनवचनरूपी रत्नों से रहित यह जीव नरक में जाता है।

(6)

विषय और कषायरूपी चोरों के संसर्ग से वह दुष्ट पापात्मा उन्मार्ग पर जाता है।" यह सुनकर दूसरे के धन का अपहरण करनेवाले तथा बुद्धिविस्तारवाले चोर ने उत्तर दिया—"एक बहू अपनी सास से क्रुद्ध होकर जंगल में मरने की इच्छा से वृक्ष के नीचे देखी गयी। सुनो, स्वर्णदारु नाम के एक मूर्ख मृदंग बजानेवाले ने सोने के लोभ से धवल आँखोंवाली, विरक्त, गृहरूपी कमल की लक्ष्मी उस वधू को मरने का उपाय बताया। उसने मृदंग पर पैर रखा और गले में फाँसी लगा ली। इस प्रकार खोटे आशयवाला वह दुष्ट मृदंग-बजानेवाला मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसे मरा हुआ देखकर, गर्म-गर्म उच्छ्वास लेनेवाली उस वधू ने अपने घर जाना स्वीकार कर लिया। जिस प्रकार वह कंगनों के सघन मोह में मर गया, उसी प्रकार तुम भी मोक्ष-सुख के लोभ में मत मरो।" तब कुमार कहता है—"एक नगर में रति-रस का लम्पट ललितांग नाम का एक धूर्त रहता था। उसे कोई मणिमेखलावाली रानी देख लेती है और कामदेव से पीड़ित हो जाती है। धाय उस धूर्त को पश्चिम के द्वार से ले आयी। देवी ने उससे रमण किया। परिवार ने यह बात जान ली। राजा को भी यह मालूम हो गया। उसने (ललितांग को) छिपा दिया और अत्यन्त अपवित्रता से परिपूर्ण छेद में घुसा दिया।

(6) 1. AP पिट्ठु। 2. AP गयगमणहि। 3. °कंकणलोहें। 4. AP धुत्तु। 5. A रइचंगउ। 6. A तें। 7. P omits this line;

किमिखज्जंतु दुक्खु पावेप्पिणु गउ[8] सो णरयहु पाण[9] मुएप्पिणु।
जिह सो तिह जणु भोयासत्तउ मरइ बप्प णारियणहु रत्तउ।
घत्ता—णियइच्छइ पच्छइ भीरुयहु जीवहु वेयसमग्गउ[10]।
णासंतहु जंतहु भवगहणि मच्चुणाम करि लग्गउ ॥6॥

(7)

णिवडिउ जम्मकूइ विहिविहियइ कुलतरुमूलजालसंपिहियइ।
लंबमाणु परमाउसुवेल्लिहि [1]पंचिंदियमहुबिंदुसुहेल्लिहि।
कालें कसणसिएहिं विहिण्णी सा दियहुंदुरेहिं[2] विच्छिण्णी।
णिवडिउ णरयभीमविसहरमुहि पंचपयारघोरदावियदुहि।
इय आयण्णिवि तहु आहासिउं सव्वहिं धम्मि सहियउं णिवेसिउं।
जणणिइ [3]तक्करेण वरकण्णहिं मरगयमणहरकंचणवण्णहिं।
ता[4] अंबरि उग्गमिउ दिवायरु जंबूदेउ पराइउ सायरु।
कूणिएण राएं गयगामिहि णिक्खवणाहिसेउ किउ सामिहि।
सिवियहि रयणकिरणविप्फुरियहि आरूढउ [5]वरमंगलभरियहि।
णाणासुरतरुकुसुमपसत्थइ विउलि विउलधरणीहरमत्थइ।
बंभणवणियहिं पत्थिवपुत्तहिं पुत्तकलत्तमोहपरिचत्तहिं।

कीड़ों से खाया गया, दुःख उठाकर वह प्राण छोड़कर नरक में गया। जिस प्रकार वह मरा, उसी प्रकार बेचारे दूसरे भी नारीजन में आसक्त होकर मरते हैं।

घत्ता—भीरु जीव के पीछे, वेग से परिपूर्ण मृत्यु नाम का महागज देखता है और संसाररूपी वन में नष्ट होते हुए जीव के पीछे लग जाता है।

(7)

वह विधाता के द्वारा रचित कुलतरुमूल और जाल से आच्छादित जन्मरूपी कुए में गिरता है। पाँचों इन्द्रियरूपी मधुबिन्दुओं से सुखद परम आयुरूपी लता से लटका हुआ है। काल के द्वारा, काले और सफेद रात-दिनरूपी चूहों के द्वारा खण्डित वह आयुरूपी लता नष्ट हो जाती है। जीव पाँच प्रकार के घोर दुःखों को दिखानेवाले, नरकों के भीम विषधर मुखों में गिरता है।" उसका यह कहा सुनकर माता, विद्युन्माली चोर और मरकत के समान सुन्दर एवं स्वर्णवर्ण उन श्रेष्ठ कन्याओं (इस प्रकार सब) ने धर्म में अपना हृदय लगा लिया। इसी बीच आकाश में सूर्योदय हो गया। जम्बूदेव भी सादर पहुँच गये। राजा कुणिक ने अपने गजगामी स्वामी का दीक्षाभिषेक किया। उत्तम मंगलों से युक्त रत्नकिरणों से विस्फुरित शिविका पर वह आरूढ़ हुए। नाना प्रकार के कल्पवृक्ष के फूलों से प्रशस्त एवं विशाल पर्वतों में श्रेष्ठ विपुलाचल पर्वत पर, पुत्र-कलत्र

8. P मउ। 9. AP पाण। 10. A तेय°।

(7) 1. A पचेंदिय°। 2. AP दियहुंदिरेहिं। 3. AP तक्करेहिं। 4. AP तावंतरि। 5. AP बहुमंगल°।

विज्जूचोर[6] समउ सुतेयउ चोरहं पंचसएहिं समेयउ।
णिच्चाराहियवीरजिणिंदहु पासि सुधम्महु धम्माणंदहु।
घत्ता—तउ लेसइ होसइ परजइ[7] होएप्पिणु सुयकेवलि।
हयकम्मि सुधम्मि सुणिव्वुयइ जिणपयविरइयपंजलि ॥7॥

(8)

पत्तइ बारहमइ संवच्छरि चित्तपरिट्ठिइ वियलियमच्छरि।
पंचमु णाणु एहु पावेसइ भवु णामेण महारिसि होसइ।
तेण समउं महियलि[1] विहरेसइ दहगुणियइं चत्तारि कहेसइ।
वरिसइं धम्मु सव्वभव्वोहहं[2] विद्धंसियबहुमिच्छामोहहं।
अंतिमकेवलि उप्पज्जेसइ महु पहुवंसहु उण्णइ होसइ।
इय मणि मण्णिवि णच्चिउ सुरवरु परमाणंदें दिसिपसरियकरु।
पुच्छइ सेणिउ सुरु किं णच्चइ बुधु केउ[3] ता गणहरु सुच्चइ।
आसि कालि ससहरकरणिम्मलि जंबूसामिवंसि वणिवरकुलि।
धम्मइट्ठु वणि गुणदेवीवइ अरुहदासु तहु सुउ णिरु दुम्मइ।
वसणवसंगउ दुक्खें खंडिउ चिंतइ हउं णियदप्पें दंडिउ।

और मोह से परित्यक्त राजपुत्र ब्राह्मण, वणिक् एवं पाँच सौ चोरों के साथ विद्युत्-चोर वीर जिनेन्द्र की निरन्तर आराधना करनेवाले धर्मानन्द सुधर्मा आचार्य के पास,

घत्ता—तप ग्रहण करेगा और श्रुतकेवली परम तपस्वी होकर सुधर्माचार्य के कर्मों का नाश कर निर्वाण प्राप्त कर लेने पर जिनचरणों में अंजली बाँधनेवाला यह,

(8)

बारहवाँ वर्ष प्राप्त होने पर, ईर्ष्या से रहित चित्त के होने पर पाँचवाँ ज्ञान (केवलज्ञान) प्राप्त करेगा और 'भव' नाम का महामुनि होगा। उनके (जम्बूस्वामी के) साथ धरती पर विहार करेगा। चालीस वर्षों तक, अत्यन्त मिथ्या मोह का नाश करनेवाले भव्यों के समूह के लिए धर्म का कथन करेगा। वह अन्तिमश्रुत केवली होगा। मेरे और वीरस्वामी के वंश की उससे उन्नति होगी।' अपने मन में यह मानकर वह सुरवर दिशाओं में अपने हाथ फैलाकर परम आनन्द से नाचने लगा। श्रेणिक पूछता है—यह देव क्यों नाच रहा है ? यह आपका बन्धु कैसे ? गणधर सूचित करते हैं—चन्द्रमा की किरणों के समान निर्मल, जम्बूस्वामी के वंश के श्रेष्ठी-कुल में गुणदेवी का पति धर्मप्रिय नामक सेठ था। उसका अर्हद्दास नाम का अत्यन्त खोटी बुद्धिवाला पुत्र था। व्यसनों के अधीन होकर वह दुःख से खण्डित हो गया। वह अपने मन में सोचता है कि मैं अपने ही दर्प के कारण दण्डित हुआ हूँ। मुझ मूर्ख ने पिता की एक भी सीख नहीं मानी। इस समय

---

6. A विज्जचोरें। 7. AP परमजइ।

(8) 1. AP महियलु। 2. AP सव्वु। 3. AP केम।

पिउसिक्खिविउ ण किउ मई मुक्खें एवहिं काइं जियंतें दुक्खें।
इय चिंतइ चित्तेण पसण्णें विंतरसुरकुलि जायउ पुण्णें।
तहिं सम्मत्तु एण पडिवण्णउं कह णिसुणिवि हियउल्लउं भिण्णउं।
णच्चिउ जिणवरधम्मुच्छाहें ता पडिजंपिउं मागहणाहें।
घत्ता—भो णित्तम गोत्तम कहहि महुं पहपच्छइयससंकें[4]।
गयगारवि चिरभवि किं कयउं [5]विज्जमालिणामंकें[6] ॥8॥

(9)

भणइ भडारउ पुव्वविदेहइ वीयसोयपुरि इह सुहगेहइ[1]।
पुक्खलवइदेसंतरि राणउ पउमु णामु पउमाइ पहाणउ।
तहु वणमाल देवि खलमद्दणु सिवकुमारु णामें पियणंदणु।
सो एक्कहिं दिणि गउ णंदणवणु आवंतेण दिट्ठु णायरजणु।
णाणामंगलदव्वविहत्थउ पुच्छिउ मंति तेण [2]सुयसत्थउ।
कहिं संचलिउ लोउ अइसायरु ता सो तहु भासइ मइसायरु।
रिसि परमेसरु इंदियबलबलि सायरदत्तु णाम सुयकेवलि।
कयमासोववासु खीणंगउ दित्तितवेण[3] दित्तिभावं गउ।
पिंडणिमित्तें मणि संतुट्ठउ कामसमुद्दइ[4] णयरि पइट्ठउ।

दुःख उठाकर जीवित रहने से क्या ? इस प्रकार सोचता हुआ, चित्त में प्रसन्न वह पुण्य के कारण व्यन्तरदेव के कुल में उत्पन्न हुआ। वहाँ सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया। यह कथा सुनकर उसका हृदय प्रसन्नता से भर उठा और जिनवर के धर्म-उत्साह से नाच पड़ा।'' तब मागधनाथ ने प्रश्न किया—

घत्ता—''हे अज्ञान-तम से रहित गौतम ! बताइए कि अपनी प्रभा से चन्द्रमा को तिरस्कृत करनेवाले एवं गतगर्व विद्युन्माली ने पूर्वजन्म में क्या किया था ?''

(9)

आदरणीय गणधर कहते हैं—''पूर्वविदेह में पुष्कलावती देश के अन्तर्गत शुभ गृहों से युक्त वीतशोक नगर में पद्मों में प्रधान महापद्म नाम का राजा था। उसकी वनमाला नाम की देवी थी और दुष्टों का दलन करनेवाला शिवकुमार नाम का प्रियपुत्र था। एक दिन वह नन्दनवन के लिए गया। जाते हुए उसने नागर-समूह को देखा जो अपने हाथ में नाना मंगल द्रव्य लिये हुए था। उसने शास्त्रों को सुननेवाले अपने मन्त्री से पूछा—''ये लोग अत्यन्त आदर के साथ कहाँ जा रहे हैं ?'' तब वह मतिसागर मन्त्री बताता है—''इन्द्रियों के बल को नष्ट करनेवाले बलवान सागरदत्त नामक श्रुतकेवली, जो एक माह के उपवास के कारण क्षीण हैं, दीप्त नामक तप के कारण दीप्त भाव को प्राप्त हुए हैं। अपने मन में सन्तुष्ट (वह) आहार के लिए कामसमुद्र

---

4. AP °ससंकए। 5. P विज्जुमालि°। 6. AP °णामंकए।

(9) 1. AP सिवगेहए। 2. A सुपसत्थउ। 3. AP दित्ततवेण। 4. AP कामसमिद्धए

वणिणा दिण्णु दाणु संभत्तिइ[5] जायइ पंचच्छेरयवित्तिइ।
रयणवुट्ठि[6] णिरु[7] हूई तहु घरि मुणिवरु उववणि थक्कु मणोहरि।
घत्ता—इहु[8] गच्छइ पेच्छइ तासु पय फुल्लहत्थु णायरजणु।
तं णिसुणिवि पिसुणइ पुणु वि सिसु उवसमभेण णिम्मलमणु ॥9॥

(10)

किह संजुत्तउ इच्छियसिद्धिहिं सायरदत्तु भडारउ रिद्धिहिं।
तं आयण्णिवि घोसइ मइवरु पुक्खलवइ णामें देसंतरु।
तेत्थु [1]पुंडरिंगिणि णामें पुरि वज्जदंतु चक्केसरु णरहरि।
देवि जसोहर गब्भभरालस गय णियमणमग्गियकीलारस[2]।
सीयाणइसायरवरसंगमि कय जलकेलि ताइ दुहणिग्गमि।
सहुं सहीहिं पडिआगय गेहहु णवमासहिं णीसरियउ देहहु।
चरमदेहु दइवें अवयारिउ सायरदत्तु पुत्तु हक्कारिउ।
णवजोव्वणि णाडउं अवलोइउं तेण तासु भिच्चें मुहुं जोइउं।
पेच्छु कुमार मेहु णं सुरगिरि धवलत्तें णिज्जियससहरसिरि।
तं णिसुणिवि सो उग्गीवाणणु जोयइ जाम पुरिसपंचाणणु।
ताम मेहु सहस त्ति पणट्ठउ भणइ तरुणु हउं मोहें मुट्ठउ।

नगर में प्रविष्ट हुए। सेठ ने भक्तिपूर्वक उन्हें दान दिया, जिससे पाँच आश्चर्य-वृत्तियाँ उत्पन्न हुईं। उसके घर में निरन्तर रत्नों की वर्षा हुई। मुनिवर मनोहर उद्यान में विराजमान हैं।

घत्ता—यह नागरसमूह जाता है और हाथ में फूल लेकर उनके चरणों के दर्शन करता है।" यह सुनकर उपशम भाव को प्राप्त बालक पूछता है—

(10)

आदरणीय सागरदत्त इच्छित सिद्धियोंवाली ऋद्धियों से युक्त किस प्रकार हैं ? यह सुनकर मतिसागर मन्त्री कहते हैं—"पुष्कलावती नाम का देशान्तर है। उसकी पुण्डरीकिणी नाम की नगरी में वज्रदन्त नाम का श्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा है। उसकी पत्नी यशोधरा गर्भभार से आलस्यवती थी। अपने मन की क्रीड़ारति (दोहद रूप) चाहती हुई वह सीतानदी और समुद्र के संगम पर गयी। वहाँ पर उसने दुःखों से रहित जलक्रीड़ा की। अपनी सखियों के साथ वह घर वापस आ गयी। नौ माह के बाद उसके शरीर से देव द्वारा अवतारित चरमशरीरी सागरदत्त नाम का पुत्र हुआ। नवयौवन में उसने नाटक देखा। उसके अनुचर ने उसका मुख देखा और कहा—हे कुमार ! देखिए, यह मेघ मानो सुमेरु पर्वत है। उसने अपनी धवलिमा से चन्द्रमा को पराजित कर दिया है। यह सुनकर जैसे ही वह पुरुषसिंह अपना मुँह और गर्दन ऊँची करके देखता है, तब तक वह मेघ अचानक नष्ट हो जाता है। वह युवक सोचता है कि मोह के द्वारा प्रवंचित हूँ, इस मेघ के समान

---

5. AP सहुं भत्तिए। 6. AP रयणविट्ठि। 7. AP णिरु तहु। 8. A एहु।
(10) 1. AP पुंडरिंकिणि। 2. AP °कीलावस।

जिह विहडिउ घणु तिह घरु परियणु जाएसइ महु केरउं जोव्वणु।
णिव्वेइउ संसारविराएं गउ णंदणवणु सहुं णियताएं।
घत्ता—णिउ णिंदिवि वंदिवि दुरियहरु तित्थु[3] अमियसायरजिणु।
णियवित्तिइ दित्तिइ परियरिउ पुप्फदंतभारहतणु ॥10॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे [4]जंबूसामिदिक्खवण्णणं
णाम [5]परिच्छेयसयं समत्तं ॥100॥

घर, परिजन और मेरा यौवन चला जाएगा। इस प्रकार वह संसार से विरक्त अपने पिता के साथ विरक्त होकर नन्दनवन चला गया।

घत्ता—अपनी निन्दा कर, और पापों का हरण करनेवाले अमृतसागर जिनवर की वन्दना कर, सूर्य और चन्द्रमा की कान्ति से आच्छादित वह अपनी वृत्तियों और कान्तियों से परिवेष्ठित हो गया।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का जम्बूस्वामी-दीक्षा-वर्णन
नाम का सौवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

3. A तेत्थु; P तत्थु। 4. A जंबुसामिदीक्षावर्णनं। 5. AP सयमो परिच्छेओ सम्मत्तो।

एकोत्तरसयमो संधि

तहु णियडइ धम्मु आयण्णिवि गुणवंतें।
तउ लइयउ तेण खंतिदयावहुकंतें ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

जायउ मणपज्जयणाणवंतु भासंतु धम्मु महियलि भमंतु।
एत्थायउ जइवरु जसविसाल भो णियकुलकमलायरमराल।
इय मंतिवयणु णिसुणिवि कुमारु गउ मुणिहि 'पासि संसारसारु।
वंदिवि आयण्णिवि परमधम्मु पुणु पुच्छिउ तेण विमुक्कछम्मु।
तुह दंसणि जायउ मज्झु णेहु पुलएण सव्वु कंटइउ देहु।
किं कारणु पभणहि वीयराय सुरसिरमणिमउडणिहिट्ठपाय।
तं णिसुणिवि पभणइ[2] रिसि पवित्ति इह जंबुदीवि[3] इह भरहखेत्ति।
सिरिवुड्ढगामि जयलच्छिठाणु णरवइ[4] वि रट्ठकूडाहिहाणु।
रेवइघरिणिहि भयदत्तु पुत्तु भवदेउ अवरु तहु मुणिणिउत्तु।
तहु जेट्ठें सुट्ठियगुरुहि पासि तउ लइयउ[5] णिव धम्माहिलासि।
महि विहरिवि कालें दिव्वधामु[6] आयउ पुणु सो णियजम्मगामु।

एक सौ पहली सन्धि

शान्ति और दयारूपी वधू के स्वामी उस गुणवान ने उनके निकट धर्म सुनकर तप ग्रहण कर लिया।

(1)

वह मनःपर्ययज्ञानी हो गये और धर्म का व्याख्यान करते हुए धरती पर विहार करनेवाले हैं। यश से विशाल और अपने कुलरूपी सरोवर के हंस हे कुमार ! वह यतिवर यहाँ आये हुए हैं''—मन्त्री के इन शब्दों को सुनकर कुमार मुनिवर के पास गया। संसार में श्रेष्ठ मुनि की वन्दना कर एवं परमधर्म को सुनकर, फिर उसने क्रोध से रहित उनसे पूछा कि आपके दर्शन से मुझे स्नेह उत्पन्न हो गया है। पुलक से समस्त शरीर रोमांचित है। देवों के शिरोमणियों से घर्षितचरण, हे वीतराग ! बताइए, क्या कारण है ?'' यह सुनकर उन पवित्र मुनि ने कहा—''इस जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र के श्रीवृद्ध गाँव में विजयरूपी लक्ष्मी का घर राष्ट्रकूट नाम का राजा था। उसकी रेवती नाम की पत्नी से भगदत्त नाम का पुत्र हुआ। मुनि के द्वारा उक्त दूसरा भवदेव है। हे राजा श्रेणिक ! धर्म की अभिलाषा होने पर उसके बड़े भाई ने सुस्थित गुरु के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। धरती पर विहार करते हुए वह समय के साथ दिव्यधाम, अपने जन्मगाँव में आये। उस गाँव में गृहस्वामी दुर्मर्षण था जो गुणों से महान् था। उसकी सुमित्रा नाम की प्रसिद्ध पत्नी थी। उसने अपनी वागुश्री

---

(1) 1. AP पासु। 2. A °णिसुणइ। 3. AP जंबूदीवए भरह°। 4. AP णरवइ रट्ठ°। 5. AP लइउ जणियधम्मा°। 6. AP दिव्व°।

गहवइ[7] दुम्मरिसणु गुणमहंत　तहु णाम[8] पसिद्ध सुमित्त कंत।
णायसिरि धीय [9]हालियवरेण　दिण्णी भवदेवहु आयरेण।
भयदत्तु भडारउ बंधवेहिं　वंदिउ मुहणिग्गयजयरवेहिं[10]।
भवदेवेण वि भवणासणेण　ओहुल्लियमणु[11] तहु सासणेण।
तें भणिउ भाइ तवचरणु करहि　मा धणधणियासागुत्तु मरहि।
घत्ता—तें भणिउ[12] मुणिंद आगच्छमि घरु गच्छिवि।
वउ[13] लेवि णिरुत्तु णियगेहिणि आउच्छिवि ॥1॥

(2)

मुणि भणइ सभज्जापासलग्गु　जणु मरइ सव्वु कामेण भग्गु।
ता णियभायरउवरोहएण　[1]अविसज्जियकामिणिमोहएण।
तेणेव होउ होउ त्ति भणिउं　भयदत्तें[2] सो[3] सच्चउं जि गणिउं।
णियगुरुसामीवइ दिण्ण दिक्ख　विणु मणसुद्धिइ कहिं धम्मसिक्ख।
बारह संवच्छर दिव्वभिक्खु[4]　हिंडइ[5] घरिणि पभरंतु मुक्खु।
अण्णहिं दिणि मेल्लिवि सगुरुधामु　एक्कु जि तं आयउ वुड्ढगामु।
आउच्छिय तहिं सुव्वय सुखंति　णयसिरि का वि जियचंदकंति।

नाम कन्या भवदेव को आदरपूर्वक दे दी। जिनके मुख से जय-जय शब्द निकल रहा है, ऐसे बन्धुजनों के द्वारा आदरणीय भवदत्त की वन्दना की गयी। संसार का नाश करनेवाले भवदेव ने भी वन्दना की। उसके उपदेश से भवदेव का मन पसीज उठा। भवदत्त ने कहा—"हे भाई ! तपश्चरण कर धन और स्त्री की आशा में मत मर।"

घत्ता—उसने (भवदेव ने) कहा—"हे मुनीन्द्र ! घर जाकर आता हूँ। अपनी पत्नी से पूछकर निश्चित रूप से व्रत लेता हूँ।"

(2)

मुनि ने कहा कि अपनी पत्नी के पाश में बँधे हुए सभी जन काम से नाश को प्राप्त होते हैं। तब अपने भाई के हठ के कारण स्त्री-मोह को अपने वश में नहीं करनेवाले उसने भी 'हाँ-हाँ' कह दिया। भवदत्त ने उसे सच मान लिया और अपने गुरु के निकट उसे दीक्षा दिलवा दी। परन्तु मन की शुद्धि के बिना धर्म की शिक्षा नहीं होती है। वह मूर्ख भिक्षु बारह वर्ष तक अपनी पत्नी की याद कर घूमता रहा। एक दिन अपने गुरु का स्थान छोड़कर वह अकेला अपने वृद्ध ग्राम आया। वहाँ उसने सुव्रता आर्यिका से पूछा कि चन्द्रमा की कान्ति को जीतनेवाली कोई नागश्री थी, वह कहाँ है ? उसने चित्त में विचार कर उसससे पूछा।

---

7. P गिहवइ। 8. A णाउं पसिद्धलं मेतकंत; P णाम पसिद्धु मित्तकंत। 9. AP हालिणिवरेण। 10. A णिग्गयजमरवेहिं। 11. A लोउल्लियमणु। 12. AP वुत्तु। 13. AP वउ लेमि।

(2) 1. A आसासिय कामिणि°। 2. A भयवंतें। 3. AP दव्वभिक्खु।

सा कहिं ता ताइ मुणिवि चित्तु पुच्छिउ तेण वि संबंधु वुत्तु।
जाणिवि तं तहु कंदप्पमूलु णिउ गुणवइखंतिहि पायमूलु।
ठिदिकरणक्खाणउ ताइ सिट्ठु वणि सव्वसमिद्धु महाविसिट्ठु[6]।
तहु दासीणंदणु दारुयंकु अइसइं भुक्खिउ णिव्वूढसंकु।
तहु मायइ दिण्णउं सरसु भत्तु[7] उच्चिट्ठउं सेट्ठिणितणउं भुत्तु।
तं वंतउं तें जणणीइ गहिउ ढंकेवि कंसवत्तम्मि णिहिउ।
पुणु छुहियहु तं तहु दिण्णु ताई णण्णुण महुलइं होउ नाईं।
किह भुंजिज्जइ[9] तं वंतगासु कंटइउ मज्झु देहावयासु।
घत्ता—इय दीसइ लोए रिसि संसारहु बीहइ।
जे मुक्का भोय ते किं को वि समीहइ ॥2॥

(3)

अवरु वि णिसुणहि णरपालु राउ तें पोसिउ कोड्डें सारमेउ।
णेवाविउ तेण अयाणएण मणिकंचणसिवियाजाणएण।
तें कुक्कुरेण णियरसणइट्ठु अण्णहिं दिणि डिंभामेज्झु दिट्ठु।
ओयरियउ सिवियइ जंतु जंतु सो सुणहु असुइ जीहइ लिहंतु।
दंडग्गें ताडिउ पत्थिवेण मुणि पुज्जणिज्जु सव्वें जणेण।

उसने अपना सम्बन्ध बता दिया। आर्यिका भी उसके कामदेव के मूल कारण को जानकर उसे गुणवती आर्यिका के चरणमूल में ले गयी। उसने स्थितिकरण (मुनि पद में स्थिति की दृढ़ता) के लिए एक आख्यान कहा—एक महाविशिष्ट सर्वसमृद्ध नाम का सेठ था। दारुक नाम का उसका दासीपुत्र था। शंकाओं का निर्वहन करनेवाला वह अत्यन्त भूखा हो उठा। उसकी माता के द्वारा दिया गया सेठानी का जूठा सरस भात उसने खाया और उसे उगल दिया। माता ने उसे ले लिया और उसे काँसे के पात्र में रख दिया। पुनः उस भूखे बालक को उसने वह भात दिया। पुत्र ने कहा—हे माँ ! इस भात को रहने दो। वह उगला हुआ अन्न कैसे खाया जा सकता है ? मेरे सारे शरीर के रोंगटे खड़े हो गये हैं।

घत्ता—लोक में ऐसा दिखाई देता है कि जो मुनि संसार से डरता है, जो भोगों को छोड़ चुका है, क्या वह उन्हें दुबारा चाहता है ?

(3)

और भी सुनो। एक राजा नरपाल था। उसने कौतुक से एक कुत्ता पाला। वह अज्ञानी उसे मणि-कांचन शिविकायान में ले गया। एक दिन उस कुत्ते ने बच्चे का विष्टा देखा जो कि उसकी जीभ के लिए बहुत प्यारा था। शिविका (पालकी) से जाते-जाते वह उतरा। वह कुत्ता उस अपवित्र पदार्थ को जीभ से चाटने लगा। राजा ने उसे डण्डे के अगले भाग से मारा। मुनि सब लोगों के द्वारा पूज्य होता है। यदि वह सुभट

5. AP मो लिंडइ घरिणि भरंतु। 6. A महावसिट्ठु। 7. A भोज्जु। 8. P छुहियहो तहो दिण्णम्मि ताए। 9. AP भुंजिज्जइ वंतण्णगासु।

जइ मुक्ककामरइ[1] करइ बप्प   तो णिंदणिज्जु सो णिव्वियप्प।
आयण्णहि सुंदर कहिं मि कालि   सुहुं पंथिउ जंतु वणंतरालि।
दलकुसुमफलावलिरससलग्घि   णिवडिउ उम्मग्गि महादुलंघि।
सो घोरें वग्घें खज्जमाणु   जरकूवइ पडिउ पधावमाणु।
तहिं णयणचरणपसरेण मुक्कु   फणिविच्छियकीडयसयविलुक्कु।
[2]णिग्गमणोवायविवज्जियंगु   कड्ढिउ वेज्जें भेसज्जपउंगु।
किउ तासु सरीरु समिद्धकरणु   होंतउ विणिवारिउ झत्ति मरणु।
संठविउ सव्वरमणीयमग्गि   जिह पुणु वि पडइ णरु कूवदुग्गि।
तिह रिसि वि परमजिणमग्गभट्ठु   भणु तमतमपहि [3]को णउ पइट्ठु।
णायसिरि वण्णलायण्णरहिय   दक्खालिय गुरुदालिद्दमहिय।
तं पेच्छिवि मुणि संजमु धरेवि   भाएं सहुं सुहझाणें मरेवि।
उप्पण्णउ कयकंदप्पदप्पि   बलहद्दविमाणि चउत्थकप्पि।
अच्छिय सत्तोवहि जीवमाण   तेत्थाउ मुएप्पिणु दह वि पाण।
हउं जायउ सायरदत्तु तेत्थु   तुहुं रायकुमार कुमारु एत्थु।
ता दिक्खंकिउ [4]सुउ वीरराउ   वारिउ पियरेहिं महाणुभाउ।
पुरवरि पइट्ठु गुणगणविसालु   सावज्जु भोज्जु इच्छइ ण बालु।

(मुनि) मुक्त कामरति करता है, तो वह बिना किसी विकल्प के निन्दनीय है। हे सुन्दर ! सुनो किसी समय एक पथिक वन के भीतर सुख से जा रहा था। वह पत्तों, फूलों और फलों के रस से श्लाघ्य, महादुर्लघ्य खोटे मार्ग में पड़ गया। एक भयंकर बाघ के द्वारा खाया जाता हुआ और दौड़ता हुआ वह पुराने कुएँ में गिर पड़ा। वहाँ वह नेत्रों और चरणों के प्रसार से मुक्त हो गया। सैकड़ों साँपों, बिच्छुओं और कीड़ों ने उसे काट खाया। उसका शरीर निकलने के उपाय से रहित था। एक वैद्य ने उसे निकाला और दवाइयों के प्रयोग से उसके शरीर को पुष्ट कर दिया, उसकी होनेवाली मौत को टाल दिया और उसे सबके लिए रमणीय मार्ग पर स्थापित कर दिया। जिस प्रकार वह आदमी पुनः कुएँ के दुर्गम स्थान में गिरता है, उसी प्रकार परम जिनमार्ग से भ्रष्ट कौन-सा ऋषि तमतमःप्रभा नरक में नहीं जाता ? फिर उसने उसे (भवदेव मुनि को) अत्यन्त गरीबी से मण्डित एवं रंग-रूप से रहित नागश्री बतायी। उसे देखकर, वह मुनि संयम धारण कर और शुभ भाव के साथ शुभध्यान से मरकर, कामदेव के दर्प को धारण करनेवाले चौथे स्वर्ग के बलभद्र विमान में जन्मा। वहाँ सात सागर पर्यन्त जीवित रहकर, वहाँ से भी दसों प्राणों को छोड़कर मैं वहाँ सागरदत्त हुआ और तुम यहाँ राजकुमार हुए। दीक्षा के लिए कृतसंकल्प महानुभाव वीरराज पुत्र को माता-पिता ने मना कर दिया। गुणगण से विशाल वह नगर में आया। बालक सावद्य (जो प्राशुक नहीं है) भोजन नहीं खाता।

---

(3) 1. AP मुक्कासु रइ। 2. A णिग्गय मणि याय। 3. AP णउ को। 4. A सउवीयराउ; P सुउ वीयराउ।

घत्ता—ता पडहु णिवेण देवाविउ धणु देसमि।
भुंजावइ पुत्तु[5] जो तहु दुक्खु हरेसमि ॥3॥

(4)

परिचत्तकारियणुमोयणेण दढधम्में पासुयभोयणेण।
भुंजाविउ सुंदरु उवणिएण णिच्चं पि जीवजीवियहिएण।
सो वड्ढइ णिव्वियडिल्लएण बारहवरिसइं णिस्सल्लएण[1]।
दुब्बलु हूयउ तिव्वें तवेण मुउ संणासें सोसियभवेण।
संभूयउ सो बंभिंदसग्गि सुरु विज्जमालि[2] मणिदित्तमग्गि।
चत्तारि वि तहु पवरच्छराउ जंबूणामहु रइकोच्छराउ।
जायउ भज्जाउ मणोहराउ देविउ उत्तुंगपयोहराउ।
जाएसइ सो संपण्णणाणु मेल्लेवि असंजमु चरमठाणु[3]।
जिह सो तिह भुंजिवि सग्गसोक्खु[4] जाएसइ सायरदत्तु मोक्खु।
इय भासिउ सयलु वि गोत्तमेण मगहेसहु संतें सत्तमेण।
अण्णहिं दिणि सम्मइसमवसरणि पभणइ सेणिउ तेलोक्कसरणि।
गुणपुंगम बहुकलिमलहरेण किं कयउं आसि पीइंकरेण।
जेणेहउं दीसइ चारु गत्तु ता सच्चउ भासइ मारसत्तु।

घत्ता—तब राजा ने यह मुनादी करायी—"जो मेरे पुत्र को भोजन करा देगा उसे मैं धन दूँगा और उसका दुःख दूर कर दूँगा।"

(4)

दृढ़वर्मा ने कृत, कारित और अनुमोदना से रहित, जीव के जीवन के लिए हितकारी प्राशुक भोजन ले जाकर प्रतिदिन उस सुन्दर को कराया। वह बारह वर्ष तक विकाररहित निःशल्यभाव से रहा। तीव्रतप से वह दुर्बल हो गया और संसार को नष्ट करनेवाले संन्यास से मरण को प्राप्त हुआ और मणियों से प्रदीप्त मार्गवाले ब्रह्मेन्द्र स्वर्ग में विद्युन्माली देव हुआ। उसकी चार प्रमुख अप्सराएँ जम्बूस्वामी को कामकुतूहल उत्पन्न करनेवाली, ऊँचे स्तनोंवाली, सुन्दर पत्नियाँ होंगी। असंयम को छोड़कर, सम्पूर्णज्ञान को उपलब्ध कर वह चरम स्थान (मोक्ष स्थान) को प्राप्त होगा। जिस प्रकार वह, उसी प्रकार सागरदत्त भी स्वर्गसुख को भोगकर मोक्ष जाएगा।" इस प्रकार शान्त और उत्तम गौतम गणधर ने मागधेश श्रेणिक के लिए यह सब कथन किया। एक अन्य दिन, त्रिलोक के शरणरूप महावीर के समवसरण में राजा श्रेणिक कहता है—"हे गुणश्रेष्ठ ! कलि के अनेक पापों का हरण करनेवाले प्रीतिंकर मुनि ने ऐसा (पूर्वजन्म में) क्या किया कि जिससे वह सुन्दरशरीर हुआ है ?" इस पर कामशत्रु गणधर उससे सच-सच कहते हैं—

5. P जो पुत्तु।

(4) 1. AP णीसल्लएण। 2. P विज्जुमालि। 3. A परमठाणु। 4. P सग्गु सोक्खु।

घत्ता—इह देसि पसण्णि सेणिय राय तुहारइ।
मणितोरणदारु[5] सुप्पइट्ठु[6] पुरु सारइ ॥4॥

(5)

तहिं णिवसइ सिरिजयसेणु राउ वणि सायरक्खु पहयरिसहाउ।
सुउ ताहं पहूयउ णायदत्तु अण्णेक्कु वि बालु कुबेरदत्तु।
गहियइं सव्वहिं सावयवयाइं णवियाइं पंचदेवहं पयाइं।
दप्पेण पमाएण व[1] पमत्तु पर धम्मु ण गिण्हइ णायदत्तु।
कालें जंतें सुरहियदियंति सहलि धरणीभूसणवणंति।
मुणि सायरसेणु पराइएहिं जयकारिउ जयसेणाइएहिं।
पुच्छिउ स[2] धम्मु तेणुत्तु एव जिणधम्में होंति महड्ढि देव।
तित्थंकर चारण चक्कवट्टि पडिवासुदेव खलमइयवट्टि।
जिणधम्में मोक्खहु जंति जीव मिच्छत्तें णरइ पडंति पाव।
आयण्णिवि एहउं लइउ धम्मु लोएहिं चत्तु हिंसाइकम्मु।

घत्ता—मुणिवरु वंदेवि मिच्छामलपरिचत्तें।
णियआउपमाणु पुच्छिउ सायरदत्तें ॥5॥

घत्ता—हे श्रेणिक ! तुम्हारे इस प्रसन्न (खुशहाल) श्रेष्ठ देश में मणि के तोरणद्वारवाला सुप्रतिष्ठ नगर है।

(5)

उसमें श्री जयसेन नाम का राजा निवास करता था। सागरदत्त नाम का सेठ था और प्रभाकरी सेठानी, उसकी सहायिका (सहधर्मिणी) थी। उन दोनों का पुत्र नागदत्त था। एक और दूसरा बालक कुबेरदत्त था। उन सबने श्रावकव्रत ग्रहण कर लिये और पाँचों देवों के चरणों को प्रणाम किया। घमण्ड से या प्रमाद से प्रमत्त नागदत्त ने धर्म ग्रहण नहीं किया। समय बीतने पर, जिसमें दिशाएँ सुरभित हैं ऐसे सुन्दर पत्तोंवाले धरणीभूषण वन में पहुँचकर सागरदत्तादि ने मुनि सागरसेन का जय-जयकार किया। उनसे धर्म पूछा। उन्होंने इस प्रकार कहा—"जिनधर्म से महाऋद्धि-सम्पन्न देव होते हैं, तीर्थंकर, चारण मुनि, चक्रवर्ती, क्षेत्र की मिट्टी का मर्दन करनेवाले काष्ठ के समान प्रतिवासुदेव होते हैं। जिनधर्म से जीव मोक्ष जाता है। पापी मिथ्यात्व से नरक में पड़ते हैं।" सुनकर उन्होंने यह धर्म स्वीकार कर लिया और लोगों ने हिंसादि कर्मों का परित्याग कर दिया।

घत्ता—मिथ्यात्व-मल से रहित सागरदत्त ने मुनिवर की वन्दना कर अपनी आयु का प्रमाण पूछा।

---

5. AP °दारे। 6. AP सुपइट्ठपुरे।
(5) 1. AP वि। 2. AP सुधम्मु।

(6)

तेणक्खिउं जीविउं मासमेत्तु तुह दीसइ भो वणिवइ[1] णिरुत्तु।
आयण्णिवि तं[2] पइसरिवि णयरि मणु[3] फेडिवि धयसंणिहियमयरि[4]।
अहिसित्तइं कलिमलवज्जियाइं जिणबिंबइं वणिणा पुज्जियाइं।
संताणि णिहिउ सुउ णायदत्तु अप्पुणु आहरु सरीरु चत्तु।
मुउ वीसदिवससंणासणेण हुउ सुरवरु भूसिउ भूसणेण।
भाएं[5] पुच्छियउ कुबेरदत्तु भणु पिउणा किं तुह सारवित्तु।
संदरिसिउं णेहपरव्वसेण ता तेण वुत्तु णित्तामसेण।
तुहुं पढमलोहभावेण गत्थु[6] किं णिंदहि जणणु जए कयत्थु।
धणु दाणें देहु वि णिरसणेण णिट्ठविउ जेण जिणगयमणेण।
तहु [7]तुहुं किं दूसणु करहि भाय जसु वंदणिज्ज जगि जाय पाय।
अण्णहिं दिणि सरस सुमिट्ठ तिक्ख सायरसेणहु तें दिण्ण भिक्ख।
दढभत्तिइ लहुएं भायरेण धणमित्तइ सहुं मउलिकरेण।
पुणु पुच्छिउ जइवइ मज्झु पुत्तु किं होइ ण होइ गुणोहजुत्तु।

घत्ता—जइ डिंभु ण होइ तो सरीरु तवतावें।
आसोसमि देव ता गुरु कहइ अगावें ॥6॥

(6)

उन्होंने कहा—"हे सेठ ! तुम्हारा जीवन (निश्चयपूर्वक) एक माह का और दिखाई देता है।" यह सुनकर और नगर में प्रवेश कर, काम से अपने मन को दूर कर सेठ ने कलिमल से रहित जिनबिम्बों का अभिषेक और पूजन किया। कुलपरम्परा में नागदत्त को स्थापित किया और खुद ने आहार एवं शरीर का त्याग कर दिया। बीस दिन के संन्यासमरण के बाद वह मृत्यु को प्राप्त हो गया और अलंकारों से अलंकृत देव हुआ। भाई (नागदत्त) ने कुबेरदत्त से पूछा—"बताओ तुम्हें पिता ने कितना श्रेष्ठ धन दिया ?" तामसभाव से रहित स्नेहभाव से अभिभूत होकर उसने कहा—"तुम पहले से ही लोभभाव से ग्रस्त हो, विश्व में कृतार्थ अपने पिता की निन्दा क्यों करते हो ? जिनदेव भगवान में लीन मन होकर जिन्होंने दान से धन और अनशन से शरीर त्याग दिया, जिनके चरण पूज्य हो गये हैं, हे भाई ! तुम उनके लिए दोष क्यों लगाते हो ?" एक दूसरे दिन, दृढ़भक्त छोटे भाई ने धनमित्रा के साथ हाथ जोड़कर सागरसेन मुनि के लिए सरस, मीठा और तीखा आहार दिया। फिर उसने यतिवर से पूछा—"मेरा गुणसमूह से युक्त पुत्र होगा या नहीं ?"

घत्ता—यदि पुत्र नहीं होना है, तो हे देव ! मैं शरीर को तप के ताप से सुखा डालूँगा।" तब गुरु बिना किसी अहंकार के कहते हैं—

(6) 1. A वणियर। 2. A तहिं। 3. AP मलु। 4. P धयसंणिहयसिहरि। 5. P णाएं। 6. A घत्थु। 7. AP किं दूसणु तुहुं।

(7)

लक्खणलक्खिउ जयलच्छिगेहु तव[1] होसइ तणुरुहु चरमदेहु।
तं णिसुणिवि मायापियरयाइं संतुट्ठइं णियमंदिरु गयाइं।
ता बिहिं मि तेहिं बहुपुण्णवंतु णवमासहिं सुउ संजणिउ कंतु।
किं वण्णिज्जइ पीइंकरक्खु[2] विहवेण इंदु रूवेण जक्खु।
संपुण्णहिं पंचहिं वच्छरेहिं जणणीजणणेहिं सुहिच्छिरेहिं।
अप्पिउ पयपुज्जहु मुणिवरासु उवइट्ठउ चिरु आएसु तासु।
इहु होसइ सुंदरु तुज्झु सीसु कम्मक्खयगारउ जयविहीसु।
धण्णउरि परिट्ठिउ सयलु सत्थु उवइट्ठउ तहु मुणिणा महत्थु।
आसण्णु भव्वु सो महइ दिक्ख मेल्लिवि घरु चरमि[3] मुणिंद भिक्ख[4]।
गुरु भासइ वयहु ण एहु कालु अज्ज वि तुहुं कामेलदेहु बालु।

घत्ता—तं वयणु सुणेवि गुरु वंदिवि गउ तेत्तहिं।
णियपियरइं बे वि णाणासयणइं जेत्तहिं ॥7॥

(8)

णिसुणंतहं लोयहं कहइ अत्थु सो चट्टवेसधरु दिसइ सत्थु।
संमाणिउ राएं गुणणिहाणु धणु अज्जवि सुंदरु मण्णमाणु।
णउ परिणइ कण्णारयणु जाम अण्णहिं वासरि सुहिपुरिस ताम।

---

(7)

"तुम्हारा लक्षणों से युक्त एवं विजयलक्ष्मी का घर पुत्र होगा।" यह सुनकर माता-पिता सन्तुष्ट होकर अपने घर चले गये। उसके बाद उन दोनों का नौवें माह में प्रचुर पुण्यवाला सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। उस प्रीतिंकर का क्या वर्णन किया जाए ! वह वैभव में इन्द्र और रूप में यक्ष था। पाँच वर्ष का होने पर शुभ चाहनेवाले माता-पिता ने उसे पूज्यपाद मुनिवर को सौंप दिया और इस प्रकार उनके पुराने आदेश को उन्होंने बताया कि यह तुम्हारा सुन्दर शिष्य होगा, कर्म का क्षय करनेवाला और जय से हँसनेवाला शिष्य। धान्यपुर में रहकर उन मुनि ने उसे महार्थ वाले शास्त्रों का उपदेश दिया। वह आसन्न भव्य था। वह दीक्षा की अभिलाषा करता है और कहता है—"हे मुनीन्द्र ! घर छोड़कर भिक्षा का आचरण करूँगा।" गुरु कहते हैं—"यह व्रत का समय नहीं है। तुम आज भी कोमल-शरीर बालक हो।"

घत्ता—यह वचन सुनकर और गुरु की वन्दना कर वह वहाँ गया जहाँ उसके माता-पिता और स्वजन थे।

(8)

शिष्य का रूप धारण किये हुए वह श्रोताओं को अर्थ बताता है और शास्त्र का उपदेश करता है। उस गुणनिधान का राजा ने सम्मान किया। धन कमाने को ही सुन्दर मानते हुए उसने कन्यारत्न से विवाह नहीं

---

(7) 1. A तुहु; P तउ। 2. A पिंयंकरक्खु। 3. AP चरंमि। 4. A °सिक्ख।

आउच्छिवि गउ बोहित्थएण[1]।
सहुं णायरेहिं रंजियजएहिं[2] पहसंतहिं जलकीलारएहिं।
गुरुलिहिउं पत्तु णियकण्णि करिवि करिमयररउद्दु समुद्दु तरिवि।
भूतिलउ णामु बहुधरविसिट्ठु गिरिविरवेढिउं पट्टणु पइट्ठु।
तूरहिं वज्जंतहिं पय णवंतु जणु सउहुं पराइउ जय भणंतु।
आसंकिय वणिवर काइं एत्थु उत्तरु दिज्जेसइ को महत्थु।
पीइंकरु पभणइ हउं समत्थु मा [3]करह किं पि संदेहु एत्थु।
ता दिट्ठउं जिणहरु गिरि व तुंगु वंदिउ जिणु तवसिहिहुयणिरंगु।
तहिं णिग्गउ पेच्छइ जुज्झरंगु भडरुंडखंडचुयरुहिररंगु[4]।
अवरेक्क कण्ण रोवंति जंति तहि पच्छइ गउ सो चंदकंति।

घत्ता—भवणंगणु गंपि णवचामीयरवण्णइ।
आसणु कण्णाए दिण्णउं तासु पसण्णइ ॥8॥

(9)

तें पुच्छिय सुंदरि कहहि गुज्झु किं णट्ठउ पुरवरु तेण[1] तुज्झु।
भणु[2] भणु मा[3] भी भीवसंगि णियणयणपरज्जियवणकुरंगि।

किया। दूसरे दिन सुधी पुरुष वह पूछकर जहाज के साथ गया। विश्व को रंजित करनेवाले, जलक्रीड़ा में रत हँसते हुए नागरिकों के साथ, गुरु के द्वारा लिखित पत्र को अपने कानों में कर (सुनकर), जलगजों और मगरों से भयंकर समुद्र को पारकर वह बहुत से घरों से विशिष्ट और गिरिवर से घिरे हुए भूतिलक नामक नगर में पहुँचा। बजते हुए नगाड़ों के साथ पैर पड़ता हुआ और जयकार करता हुआ जनसमूह सामने आया। वणिक्लोग आशंकित हो उठे कि यह क्या है ? कौन महार्थ इसका उत्तर देगा ? प्रीतिंकर कहता है—मैं समर्थ हूँ, आप लोग इसमें कुछ भी सन्देह न करें। उसने जाकर पहाड़ की तरह ऊँचा जिनमन्दिर देखा और तप की ज्वाला में कामदेव को नष्ट कर देनेवाले जिनदेव की वन्दना की। वहाँ से निकलकर वह युद्ध का दृश्य देखता है, जो योद्धाओं के धड़ों के खण्डों से गिरते हुए रक्त से रंजित था। एक और कन्या रोती हुई जा रही थी। चन्द्रमा के समान कान्तिवाला वह उसके पीछे-पीछे गया।

घत्ता—भवन के आँगन में जाकर नवस्वर्ण के समान रंगवाली उस प्रसन्न कन्या ने उसके लिए आसन दिया।

(9)

उसने पूछा—"हे सुन्दरी ! अपना रहस्य समझाओ, कैसे तुम्हारा पुरवर नष्ट हो गया है ? अपने नेत्रों

(8) 1. AP add after this : उब्भियसीहजडपसत्थएण। 2. AP रंजियपरेहिं। 3. P करहो। 4. A °खंडचुय°।
(9) 1. AP केण गुज्झु। 2. AP किं भणु भणु। 3. A मा भीही वरंगि; P मा बीहहि वरंगि।

कण्णाइ पबोल्लिउं सुणि कुमार लीलावलोय पच्चक्खमार।
खगरायहु अलयाईसरासु णियतेययपरज्जियणेसरासु।
हरिबलु महसेणु वि मुक्कसंकु भूतिलउ पुत्तु णियकुलससंकु।
तहु पणइणीहि आबद्धपणउ धारणियहि जायउ भीमु तणउ।
तहु सिरिमइसइहि हिरण्णवम्मु सुउ संभूयउ सोहग्गरम्मु।
दुत्थियसज्जणु कइकामधेणु सुंदरिमहसेणहं[4] उग्गसेणु।
वरसेणु अवरु हउं सुय ण भंति णामेण वसुंधरि णर कहंति।
विंतरदेवय णिज्जिणिवि पवरु महु ताएं णिम्मिउं पउरु[5] णयरु।
महु[6] भायहु दिण्णी भीमकाय विज्जा खेयरसंदिण्णराय।
अलयाउरिराएं हरिबलेण तवचरणु लइउं मणि णिम्मलेण।
विउलमइणामचारणहु पासि गउ मोक्खहु थिउ भुवणग्गवासि।

घत्ता—भीमु वि रज्जु करंतु विज्जाकारणि[7] कुद्धउ।
रणि हिरण्णवम्मस्स लग्गउ सिहि व समिद्धउ ॥9॥

(10)

णासिवि हिरण्णवम्मउ[1] असंकु संमेयमहीहरि मज्झि थक्कु।
णियणयरि परिट्ठिउ भीमराउ वइरि वि सपिउव्वहु पासि आउ।

से वन-हिरनी को पराजित करनेवाली हे भयशीले ! तुम कहो, कहो, डरो मत।" कन्या बोली—हे लीलापूर्वक देखनेवाले प्रत्यक्ष कामकुमार ! सुनो। अपने तेज से सूर्य को पराजित करनेवाले अलकापुरी के स्वामी विद्याधर राजा के हरिबल और महासेन शंकाओं से मुक्त एवं अपने कुल का चन्द्रमा भूतिलक पुत्र थे। हरिबल की प्रणयिनी धारिणी से प्रणतों (नतमस्तकों) को आबद्ध करनेवाला भीम नाम का पुत्र हुआ। उसकी दूसरी रानी श्रीमती सती से सौभाग्य से रमणीय हिरण्यवर्मा नाम का पुत्र हुआ। वह विस्थापितों के लिए सज्जन और कवियों के लिए कामधेनु था। महासेन और सुन्दरी से उग्रसेन, वरसेन पुत्र और मैं पुत्री उत्पन्न हुए, इसमें भ्रान्ति नहीं है। नाम से लोग मुझे वसुन्धरा कहते हैं। प्रवर व्यन्तरदेव को जीतकर मेरे पिता ने इस विशाल नगर की रचना की थी। छोटे भाई के लिए भीमकाय विद्याधर संदिग्नराग की विद्या देकर मन से निर्मल, अलकापुरी के राजा, हरिबल ने विमलमति नामक चारणमुनि के पास तपश्चरण ग्रहण कर लिया। वह मोक्ष गये और लोक के अग्रभाग में स्थित हो गये।

घत्ता—भीम भी राज्य करता हुआ विद्या के कारण क्रुद्ध हो गया। आग की तरह जलता हुआ वह हिरण्यवर्मा से युद्ध में भिड़ गया।

(10)

अशंक हिरण्यवर्मा को नष्ट कर वह सम्मेदशिखर पर्वत पर जाकर रुका। भीम राजा अपनी नगरी में

4. 4. K सहसेणहु। 5. AP एउं। 6. A महु तायहो; P जहुभायहो। 7. P विज्जाकरणे।

(10) 1. AP हिरण्णवम्मु वि असक्कु।

तं णिसुणिवि तंणिहणेक्कणिट्ठु[2] दट्ठोट्ठु दुट्ठु आरुट्ठु सुट्ठु।
महसेणहु पेसिउ तेण पत्तु किं धरियउं पइं महुं तणउ सत्तु।
तं णिसुणिवि महुं ताएण समरि जुज्झेप्पिणु चालियचारुचमरि।
सो भीमु धरिवि संखलहिं बद्धु बलवंतु वि कुलकलहेण खद्धु।
पुणु मित्तु करेवि हिरण्णवम्मु सो मुक्कउ दिण्णउं रज्जु रम्मु।
णउ खमइ तो वि आबद्धरोसु इच्छइ हिरण्णवम्महु विणासु।
संसाहिय रक्खसविज्ज तेण मारिउ हिरण्णवम्मउ खणेण।
विद्धंसिउ पुरु महु जणणु बद्धु आवेसइ जोयहुं मइं मयंधु।
तं णिसुणिवि सिरिपीइंकरेण सयणत्थु खग्गु लइयउं करेण।
ज जासु हत्थि सो जिणइ जुज्झु इंदहु वि ण संगरि होइ वज्झु।
थिउ गोउरि सुंदरु छण्णदेहु एत्थंतरि भडु संपत्तु एहु।
णियविज्ज भीम आइट्ठ तासु रणि वग्गंतहु असिवरकरासु।

घत्ता—विज्जाइ पवुत्तु चरमदेहु किह मारमि।
भणु भणु णरणाह अवरु को वि संघारमि ॥10॥

प्रतिष्ठित हो गया। शत्रु (हिरण्यवर्मा) अपने चाचा के पास आया। यह सुनकर कि हिरण्यवर्मा का निधन हो गया है, उसका एकमात्र निष्ठावान दुष्ट भीम ओठ चबाता हुआ, एकदम क्रुद्ध हो उठा। उसने महासेन के लिए पत्र भेजा कि तुमने मेरे शत्रु को अपने यहाँ क्यों रखा ? यह पढ़कर मेरे पिता ने, जिसमें सुन्दर चमर चल रहे हैं, ऐसे युद्ध में लड़कर उस भीम को शृंखलाओं से बाँध लिया। बलवान व्यक्ति भी कुलकलह से नष्ट हो जाता है। फिर उसने हिरण्यवर्मा को मित्र बनाकर उसे मुक्त कर उसका (भीम का) सुन्दर राज्य दे दिया। लेकिन आबद्ध-क्रोध भीम तब भी क्षमा नहीं करता है और हिरण्यवर्मा का विनाश चाहता है। उसने राक्षस विद्या सिद्ध कर ली और एक क्षण में हिरण्यवर्मा को मार डाला। उसने नगर को ध्वस्त कर दिया और मेरे पिता को मार डाला। वह मदान्ध अब मुझे देखने के लिए आएगा। यह सुनकर श्री प्रीतिंकर ने सेज पर पड़ी हुई तलवार अपने हाथ में ले ली। वह तलवार जिसके हाथ में होती है, वह युद्ध में इन्द्र से भी वध्य नहीं होता। वह सुन्दर छिपकर गोपुर में खड़ा हो गया। इसी बीच यहाँ वह सुभट आया। युद्ध में असिवर हाथ में लेकर गरजते हुए उस पर (प्रीतिंकर पर) भीम ने अपनी विद्या को आदेश दिया।

घत्ता—विद्या ने कहा—वह चरमशरीरी है। उसे कैसे मारूँ ? हे स्वामी ! कहिए कहिए, किसी और का मैं संहार कर सकती हूँ।

---

2. AP तण्णेक्कणिट्ठु।

(11)

ता मुक्क विज्ज गय कहिं मि जाम अप्पुणु[1] ढुक्कउ सो भीमु ताम।
रे रे कुमार हणु हणु भणंतु असि भामिउ भीसणु धगधगंतु।
तं वंचिवि[2] सुहडें दिण्णु घाउ घाएण जि णिवडिउ खयरराउ।
कण्णइ पोमाइउ गव्वविलेव तुहुं साहसरयणणिहाणु देव।
पइं होंतें हउं हूई सलग्घ णिण्णाह वि लइ वट्टमि महग्घ।
इय भणिवि ताइ भद्दासणत्थु अहिसिंचिउ सिरिकलसहिं पसत्थु।
परिहाविउ दिव्वइं अंबराइं [3]मणिकणयमउडकुंडलवराइं[4]।
पुच्छंतहु तरुणहु हारिणीहिं अक्खिउं वरचामरधारिणीहिं।
घत्ता—सहुं रज्जेण कुमारि[5] पणयंगइं णिरु पोसइ।
अम्हारी पहु धूय तुम्हहं पणइणि होसइ ॥11॥

(12)

ता भणइ कुमारि[1] सुवण्णवण्ण ताएण दिण्ण जगि होइ कण्ण।
इयरह[2] कह परिणिज्जइ अजुत्तु ता संकमियउ तहिं णायदत्तु।
ते सहसा णिग्गय पुरवराउ णं बंधुर सिंधुर [3]सरवराउ।
अवियाणियदूसहपिसुणचारु पुणु पुरपहि पल्लट्टउ कुमारु।

---

(11)

तब उसने विद्या छोड़ी। वह जब तक कहीं जाये, तब तक भीम स्वयं वहाँ आ गया। 'हे कुमार ! मार मार' कहते हुए, उसने धकधक करती हुई अपनी भीषण तलवार घुमायी। उसे बचाकर सुभट कुमार ने आघात पहुँचाया, और विद्याधर राजा उस आघात से धरती पर गिर पड़ा। कन्या ने उसकी प्रशंसा की कि हे गर्वरहित देव ! तुम साहस रूपी रत्न के खजाने हो। तुम्हारे होने से मैं श्लाघनीय हो उठी। बिना स्वामी के होते हुए भी मैं इस समय महार्घ हूँ (मूल्यवान हूँ)। यह कहकर, भद्रासन पर बैठे हुए प्रशस्त उसका उसने श्रीकलशों से अभिषेक किया। उसे दिव्य वस्त्र, मणि, कनक-मुकुट और श्रेष्ठ कुण्डल पहिनाये। कुमार के पूछने पर, उत्तम चामर धारण करनेवाली दासियों ने कहा—

घत्ता—कुमारी राज्य के साथ स्नेहांगों का पोषण करेगी। हे राजन् ! हमारी यह कन्या तुम्हारी प्रणयिनी होगी।

(12)

तब स्वर्णवर्णवाली वह कुमारी कहती है कि पिता के द्वारा दी गयी कन्या से विवाह किया जाता है। दूसरे ढंग से विवाह करना अयुक्त है। इतने में नागदत्त वहाँ आ गया। वे शीघ्र ही उस श्रेष्ठ नगर से निकले,

---

(11) 1. AP अप्पणु। 2. A वंचिउ। 3. AP मणिकडय°। 4. A कुंडलधराइं। 5. AP कुमार।

(12) 1. AP कुमारु। 2 P इयरह परिणिज्जइ णिरुत्तु। 3. AP सुरसराउ।

वीसरियउ कण्णाहरणु लेवि जामावइ ता वंचणु करेवि।
गउ णायदत्तु धणु[4] वहू हरेवि णउ जाणहुं होसइ किं मरेवि।
मोणव्वउ[5] लइयउ सुंदरीइ इय चिंतिउं [6]बहुगुणजलसरीइ।
किं जंपमि विणु पीइंकरेण मणभवणणिवासें मणहरेण[7]।
सा मूई तें मण्णिय जडेण ओहारियपरकंचणघडेण[8]।
संणिहियदव्वरक्खणणिओइ पत्तउ पुरु पुच्छिउ कहइ लोइ।
विब्भुल्लउ अम्हहं कमलचक्खु णवि जाणहुं कहिं[9] पीइंकरक्खु।
एत्तहि पेच्छिवि सायरहु तीरु गउ पुणु भूतिलयहु मेरुधीरु।
जिणभवणु णिहालिउं थुउ जिणिंदु मज्झत्थु समुक्खयदुक्खकंदु।
पुणु सुत्तउ सुंदरु सालसंगु आणंदु महाणंदु वि सुसंगु।
संपत्तु जक्खजुवलउं सुवंतु[10] तहु तेहिं[11] णिहालिउ कण्णवत्तु[12]।
तं वाइवि सुंअरिवि पुव्वजम्मु देवेहिं वियाणिउं सुकिउ कम्मु।

घत्ता—गुरुयणआएसु अम्हहं[13] करहुं णिरुत्तउ।
भो माणुसु एउं गरुयउं गुणसंजुत्तउं ॥12॥

मानो सुन्दर गज सरोवर से निकले हों। उस दुष्ट के असह्य आचरण को नहीं जानता हुआ कुमार नगरपथ की ओर मुड़ा। और जब तक वह कन्या के भूले हुए गहने लेकर आता है, तब तक धोखा देकर नागदत्त, बहू और धन लेकर चला गया। मैं नहीं जानता कि मरने के बाद उसका क्या होगा। उस सुन्दरी ने मौन ले लिया। अनेक गुणरूपी जल की नदी उस ने अपने मन में विचार किया कि अपने मनरूपी भवन में निवास करनेवाले सुन्दर प्रीतिंकर के बिना, मैं क्या बोलूँ ? दूसरे के सोने के घड़े का अपहरण करनेवाले उस मूर्ख ने यह समझ लिया कि वह गूँगी है। वह नगर पहुँचता है। जिसका द्रव्य के रक्षण का नियोग है, ऐसे लोक से पूछने पर वह कहता है कि कमलनयन प्रीतिंकर हमसे भटक गया है, तुम नहीं जानते कि वह कहाँ है। यहाँ पर समुद्र का किनारा देखकर मेरु के समान धीर वह प्रीतिंकर पुनः भूतिलक चला गया। उसने जिनभवन को देखा और जिनेन्द्र की स्तुति की जो मध्यस्थ और दुःखसमूह का नाश करनेवाले हैं। फिर अलसाए शरीरवाला वह सो गया। इतने में वहाँ आनन्द और महानन्द नामक सुन्दरमुखवाले यक्ष का जोड़ा आया। उन्होंने उसके कान में बँधा हुआ पत्र देखा। उसे पढ़कर और पूर्वजन्म का स्मरण कर देवों ने अपना पुण्य कर्म जान लिया।

घत्ता—हम लोग निश्चित रूप से गुरुजनों के आदेश का पालन करें। अरे, यह मनुष्य महान् और गुणों से संयुक्त है।

4. A वहुधणु। 5. A मोणेल्लउ; P मोणुव्वउ। 6. A बहुगुणजलसिरीए; P बहुगुणजलसरीए। 7. AP णवथरेण। 8. AP परकंचणघडेण। 9. A किं पीईकरक्खु; P किं पीएंकरक्खु। 10. AP सुवत्तु। 11. A कण्णे वत्तु; P कण्णपत्तु। 13. AP अम्हहं।

(13)

पाविज्जइ इच्छिउ णयरु तेम्व   अम्हहं तूसइ परमेट्ठि जेम्व।
वाणारसिपुरवरि सच्चदिट्ठि   जिणयत्त घरिणि धणयत्तु सेट्ठि।
अम्हइं बेण्णि वि जण पुत्त ताहं   संसिक्खिय सत्थइं [1]तक्खराहं।
परदव्वहरणरय पावबुद्धि   णउ सक्किउ गुरु विरयहुं णिसिद्धि।
णिव्वेएं छड्डिवि[2] सव्वसंगु   अम्हारउ पिउ तवचरणि लग्गु।
सिहिगिरिवरि सीलपसत्थएण   सायरसेणहु सामत्थएण।
आसण्णु वि सिग्घु[3] पराइएहिं   जणु खज्जइ णउ वग्घाइएहिं।
तें वयणें अम्हहं जणिउ चोज्जु   गय वंदिउ रिसि किउं[4] धम्मकज्जु।
जगपुज्जें भयवंतें अवज्जु   छंडाविउ तें महु मंसु मज्जु।
गउ गुरु[5] पुरु भिक्खहि कहिं मि जाम   सद्दूलें विणिहय बे वि ताम।
सुरजायारूवें जित्तमयणु   लइ एव्वहिं कीरइ ताहं वयणु।
इय जाणिवि विरएप्पिणु विमाणु   आरोहिउ सो तहिं सुहडभाणु।
बहुदव्वें सहुं [6]कुलणहमयंकु   अकलंकु अवंकु विमुक्कसंकु।
सुपइट्ठणयरिणियडइ सुठाणु   गिरि धरणीभूसणु विउलसाणु।
तहिं णिहिउ तेहिं जक्खामरेहिं   अहिमुहुं जाइवि णायरणरेहिं।

(13)

हम इसे इच्छित नगर उसी प्रकार प्राप्त करा दें, जिससे हमारे गुरु सन्तुष्ट हों। वाराणसी नगरी में सत्यदृष्टि सेठ था। जिनदत्ता उसकी गृहिणी थी। हम दोनों उनके पुत्र थे। दोनों ने चौर्यविद्या के शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। दूसरों के धन का अपहरण करने में रत हम पापबुद्धि थे। पिता मना करने में समर्थ नहीं हो सके। निर्वेद के कारण सब परिग्रह छोड़कर हमारे पिता तपश्चरण में लग गये। शिखि पर्वत पर सागरसेन मुनि के शील से प्रशस्त सामर्थ्य से निकट रहने पर भी, लोगों को आये हुए व्याघ्रादि वन्यपशु नहीं खाते थे। इस वचन से हमें आश्चर्य हुआ। हम वन्दना करने गये। ऋषि ने धर्मकार्य किया। विश्वपूज्य ज्ञानवान उन्होंने निन्दनीय कर्म, मधु, मांस और मद्य छुड़वा दिया। जब गुरु सुप्रतिष्ठ नगर में भिक्षा के लिए गये, तब एक सिंह ने हम दोनों को मार डाला। हम लोग देवरूप में उत्पन्न हुए। तो इस समय हमें उनका काम को जीतनेवाला वचन करना चाहिए। यह जानकर और विमान बनाकर, उन लोगों ने उस सुभटसूर्य को उस पर बैठाया और प्रचुर धन के साथ कुलरूपी आकाश के उस अकलंक, अवक्र और विमुक्त-शंक चन्द्र (चन्द्र कलंकवाला और टेढ़ा होता है) को सुप्रतिष्ठ नगर के निकट जहाँ अच्छे स्थान तथा विपुल शिखरोंवाला धरणीभूषण पर्वत था, वहाँ यक्ष देवों ने उसे रख दिया। तब नागर जन राजा और सादर स्वजन सामने जाकर बजते

(13) 1. P तक्कराहं। 2. AP छंडेवि। 3. AP सुहडु। 4. AP कय धम्म°। 5. A पुरवरु; P पुरु गुरु। 6. AP णियकुलणहंकु।

णरणाहें सयणहिं सायरेहिं ताडियतूरहिं मंगलसरेहिं।
आणिउ पुरु पइसारिउ णिवासि हिमकुंदचंदगोखीरभासि।
घत्ता—ढोएवि कुमारु सयणहुं सूरपयासें।
गय बेण्णि वि जक्ख सहसा विमलायासें ॥13॥

(14)

पीइंकरु[1] जयमंगलरवेण गंभीरभेरिसद्दुच्छलेण।
पइसारिउ पुरवरु राणएण पुज्जिउ रयणहिं बहुजाणएण।
णवरण्णहिं दियहि कुमारमाय रहवरि आरूढी दिण्णछाय।
णियसुण्हहि भूसणु देहुं चलिय पियमित्त[2] पंथि मूईइ खलिय।
णियभूसासंदोहउ[3] जणासु दावइ सण्णइ विंभियमणासु।
महुं भूसणाइं इय वज्जरेवि थिय सुंदरि पहि रहधुर धरेवि।
विउसेहिं पलक्खिय[4] णउ पिसाइ अंगुलियइं दावइ [5]सच्चमूइ।
सुहलक्खणलक्खियदिव्वदेह आहरणु महारउं भणइ एह।
को लंघइ विहिबद्धउ सणेहु अप्पाहिय कुमरें रायगेहु।
ताइ वि तहु पेसिउ गूढलेहु जं णायदत्तविलसिउ दुमेहु।

हुए नगाड़ों और मंगल स्वरों के साथ उसे नगर में ले आये तथा हिम चन्द्रकिरण और दूध के समान कान्तिवाले निवास में उसे प्रवेश कराया।

घत्ता—कुमार को स्वजनों के पास पहुँचाकर, वे दोनों यक्ष सूर्य से प्रकाशित आकाश-मार्ग से सहसा चले गये।

(14)

जयमंगल ध्वनि और गम्भीर भेरी के उछलते हुए शब्द के साथ राजा के द्वारा प्रीतिंकर को नगर में प्रवेश कराया गया। अनेक रत्नों और यानों से उसकी पूजा की गयी। दूसरे दिन आभा से दीप्त कुमार की माँ (बड़ी माँ) श्रेष्ठ रथ पर आरूढ़ हो गयी और अपनी बहू के लिए आभूषण देने के लिए चली। लेकिन रास्ते में गूँगी ने उसे रोक लिया। विस्मितमन लोगों के लिए उसने संकेत से अपने आभूषणों का पिटारा बताया। 'ये मेरे आभूषण हैं'—यह संकेत कर और रथ की धुरा पकड़कर वह सुन्दरी रास्ते में खड़ी हो गयी। विद्वानों ने लक्षित किया कि यह पिशाची नहीं है, यह सचमुच गूँगी है और अँगुलियाँ दिखाती है। शुभ लक्षणों से लक्षित शरीरवाली यह कहती है कि आभूषण हमारे हैं। विधाता के द्वारा बद्ध स्नेह का कौन उल्लंघन कर सकता है ? कुमार ने राजगृह को सिखा दिया। उसने भी—उसके लिए गूढ़ लेख भेजा, जिसमें नागमणि की दुष्ट मति का उल्लेख था। वह कुमारी राजभवन ले जाई गयी। अत्यन्त विलक्षण न्यायकर्ता

(14) 1. P पीयंकरु। 2. AP धणमित्त। 3. A °भूसण°। 4. A उवलक्खिय; P लक्खिय। 5. AP सच्चु मूइ।

णिय[6] णरवइभवणहु सा कुमारि कोक्किय सुवियक्खण [7]णायकारि।
वइवरु आउच्छिउ धम्मजुत्तु महिणाहें सो धणमित्तपुत्तु।
तें णियपरियाणिउ सिट्ठु[8] सव्वु पुणु भणिउ वयणु परिगलियगव्वु[9]।
पुच्छिज्जइ देवय किं परेण वंदिवि पुज्जिवि भत्तीभरेण।
परियाणइ एह ण का वि भंति ता राएं पुज्जिवि सा सुयंति।
पुच्छिय जवणीइ[10] तिरोहियंगि को पावइ देविहि तणिय भंगि।
तहु णायदत्तदुव्विलसियाइं कहियाइं महायणणिरसियाइं।
कयदोसहु पाविट्ठहु अणिट्ठु तं णिसुणिवि णरवइ तासु रुट्ठु।
किर हरइ दव्वु दंडइ अणेउ ता वारिउ कुंअरें तरणितेउ।
तं पेच्छिवि तहु सुयणत्तसारु महिवइणा जाणिवि णिव्वियारु।

घत्ता—तहु णियसुय दिण्ण पिहिवीसुंदरि णामें।
परिणिय पसयच्छि णं मिलंति रइ कामें ॥14॥

(15)

बहुरइसुहसासवसुंधराइ कण्णाइ समेउ वसुंधराइ।
अण्णु वि दिण्णउ सुललियभुयाउ बावीस तासु वणिवरसुयाउ।
अवरु वि तहु दिण्णउं अद्धरज्जु पुण्णेण कासु सिज्झइ ण कज्जु।
अण्णहिं दिणि सायरसेणसूरि मुउ संणासेण अणंगवेरि।
अण्णहिं दिणि चारणभुयणचंद रिउ विउलमइ त्ति महामुणिंद

बुलवाया गया। राजा ने धनमित्र के पुत्र प्रीतिंकर से धर्मयुक्त वृत्तान्त पूछा। उसने अपना जाना सारा वृत्तान्त बता दिया। और फिर उसने गर्व से रहित ये शब्द कहे—दूसरों से क्या, भक्तिभाव से पूजा और वन्दना कर देवी से ही पूछा जाए; क्योंकि यह जानती है, इसमें जरा भी भ्रान्ति नहीं है। तब राजा ने सुकान्ता की पूजा कर परदे में प्रच्छन्न शरीरवाली उससे पूछा। उस देवी की भंगिमा को कौन पा सकता है ? उसने महाजनों द्वारा निन्दनीय नागदत्त की चेष्टाओं का वर्णन किया। दोष करनेवाले उस पापी के उस अनिष्ट को सुनकर राजा उस पर अत्यधिक कुपित हो गया। राजा (उसके) धन का अपहरण करता है और उस अन्यायी को दण्ड देता है। तब कुमार ने (सूर्य) के समान तेजवाले उसे (राजा को) मना किया। उसकी इस सुजन श्रेष्ठता को देखकर और उसे निर्दोष जानकर,

घत्ता—उसे अपनी पृथ्वीसुन्दरी नाम की कन्या दे दी। विशाल आँखोंवाली वह ब्याह दी गयी, मानो रति काम से मिली हो।

(15)

प्रचुर रतिसुखरूपी धान्य की भूमि वसुन्धरा कन्या के साथ उसे और भी बाईस सुन्दर भुजाओंवाली वणिक्वर कन्याएँ दी गयीं। और भी, उसे आधा राज्य दिया गया। पुण्य से किसका काम सिद्ध नहीं होता ? दूसरे दिन कामदेव के शत्रु सागरसेन मुनि संन्यास से मृत्यु को प्राप्त हुए। एक दिन चारणऋद्धिधारी मुनियों में

6. AP णय। 7. AP णायधारि। 8. A सिद्धु; 9. AP परिगलिउ गव्वु। 10. AP जवणीपणिरोहियंगि।

मणहरवणि आया वणिवरेण जाइवि वंदिवि मउलियकरेण।
परिपुच्छिय धम्मु विसुद्धभाव रिजुमइ भासइ भो गलियगाव।
घरि[1] धम्मु होइ एयारहंगु दंसणवयसामाइयपसंगु।
किं वण्णमि विद्धंसियअणंगु जइधम्मु वि वज्जियसव्वसंगु।
खममद्दवाइगुणगणणिहाणु ता पभणइ वणिवइ भावभाणु।
भणु भणु भयवंत भवंतराइं महुं चरियइं [2]परितोसियणराइं।
ता भासइ रिउमइ मुणि विरोइ गुरु सायरसेणु तवंतु जोइ।
वंदिउ पुज्जिउ राएं जणेण पडुपडहसंखकयणीसणेण।
इहु को वि मुयउ घल्लिउ णरेहिं पुरवरबाहिरि भेरीसरेहिं।
वंफामि[3] अज्जु ता गयइ लोइ णिरु[4] णिच्चलु मुणि वि समंतजोइ।
ढुक्कउ गोमाउ तुरंतु जाम[5] मुणिणा मुयजोएं[6] वुत्तु ताम[7]।
चिरदुक्किएण जायउ सियालु तुहुं अज्जु वि दुण्णयभावणालु।
मुइ मुइ एवहिं पाविट्ठ पावु मा पावें पावहि तिव्वतावु।
तं णिसुणिवि जंबुउ उवसमेण थिउ परियाणियणाणक्कमेण।
इसिणाहें चिंतिउं भव्वु एहु सिज्झेसइ होसइ लहु अदेहु।
इय चिंतिवि भासिउ तेण तासु तुहुं मुइवि ण सक्कहि किं पि मासु।

श्रेष्ठ ऋजुमति और विपुलमति नामक महामुनि मनोहर उद्यान में आये। सेठ ने जाकर हाथ जोड़कर वन्दना की और धर्म पूछा। गलितगर्व और विशुद्धभाव ऋजुमति मुनि कहते हैं—"दर्शन, व्रत और सामायिक से सहित गृहस्थ-धर्म ग्यारह प्रकार का होता है। कामदेव को ध्वस्त करनेवाले और सब प्रकार के परिग्रह से रहित यतिधर्म का क्या वर्णन करूँ जो क्षमा, मार्दव आदि गुणसमूह का निधान है।" तब सेठ पूछता है कि हे पदार्थ-प्रकाशक ज्ञानवान ! मेरे जन्मान्तरों और लोगों को सन्तुष्ट करनेवाले मेरे चरित्रों का कथन करिए। इस पर रागरहित ऋजुमति मुनि कहते हैं—"गुरु सागरसेन योगतप कर रहे थे। राजा और जनों ने उनकी पटुपटह और शंखों के शब्दों के साथ पूजा-वन्दना की। (सियार सोचता है) मनुष्यों ने भेरी के शब्दों के साथ किसी मरे हुए व्यक्ति को नगरवर के बाहिर फेंक दिया है। लोगों के चले जाने पर आज मैं स्वाद से इसे खाऊँगा। उसे निश्चल समझकर सियार तुरन्त वहाँ जैसे ही पहुँचा मुनि ने मन के योग से कहा—"तुम पुराने पाप से सियार हुए हो, आज भी तुम दुर्भावनावाले हो। हे पापात्मा ! तुम इस समय पाप छोड़ो, छोड़ो। पाप से तुम तीव्र ताप को प्राप्त मत होओ।" यह सुनकर सियार उपशमभाव से स्थित हो गया। ज्ञानक्रम से जाननेवाले मुनिनाथ ने यह जान लिया कि यह भव्य है। यह सिद्धि को प्राप्त होगा और शीघ्र ही अशरीरी होगा। यह सोचकर उन्होंने उससे कहा—क्या तुम मांस भी नहीं छोड़ सकते ?

(15) 1. A घरधम्मु। 2. AP परिओसिय°। 3. A फंफाविम अज्जु। 4. AP थिउ णिच्चलु मुणि सम्मत्तजोइ। 5. A ताम; A adds after this : मुय मणुयसरीरि आलग्गु जाम। 6. A मयजोएं। 7. A adds after this : मा णासहि जम्मु पलासणेण।

घत्ता—लइ लइ वउ मइं दिण्णु होहि धम्मसद्धालुउ।
रत्तिहि किं पि म खाइ जइ वि तुहुं भुक्खालुउ ॥15॥

(16)

तं णिसुणिवि कय मासहु णिवित्ति पडिवण्ण तेण तवचरणवित्ति।
वंदिउ गुरु दिण्णपयाहिणेण संखीणु वणासइभोयणेण।
णिउ कालु तेण तिव्वें तवेण परिणामें सुद्धें णवणवेण।
एक्कहिं दिणि सुक्खाहारु[1] भुत्तु तहु तण्हइ सोसिउ सव्वु गत्तु।
अत्थवणकालि[2] कूवंतरालु[3] किर पइसइ जा तिसियउ सियालु।
ता पेच्छइ णउ रविकिरणभारु अवलोइउ तेण घणंधयारु।
णिग्गउ पुणु पेच्छिवि[4] सूरदित्ति कूवइ पइट्ठु पुणु णियइ रत्ति।
कूवइ पइसइ णीसरइ जाम दो तिण्णि पंच वाराउ ताम।
अत्थमिउ भाणु संजाय कालि[5] णिज्जियतमालि[6] पसरियतमालि।
मुउ तण्हइ सुद्धइ भावणाइ संचियसुहाइ खंचियमणाइ।
एवं कुबेरदत्तहु[7] सुचक्खु धणमित्तहि सुउ पीइंकरक्खु।
तं णिसुणिवि रइणिव्विण्णदेहु वयहलु मण्णिवि आयउ सगेहु।
णियसिरि णियणयणाणंदणासु संदिण्ण वसुंधरणंदणासु।

घत्ता—मेरा दिया हुआ व्रत ले लो, धर्म में श्रद्धालु बनो। रात्रि में तुम कुछ भी मत खाना, चाहे तुम्हें खूब भूख भी लगी हो।''

(16)

यह सुनकर उसने मांस से निवृत्ति ले ली। उसने तप के आचरण की वृत्ति स्वीकार कर ली। प्रदक्षिणा करते हुए उसने गुरु की वन्दना की। वनस्पति के भोजन से वह अत्यन्त दुबला-पतला हो गया। उसने तीव्रतप और नये-नये शुद्धभावों से अपना समय बिताया। एक दिन उसने सूखा आहार लिया। प्यास से उसका सारा शरीर सूख गया। सूर्यास्त के समय प्यासा शृगाल जैसे ही कुँए के भीतर प्रवेश करता है, वैसे ही उसे सूर्य का किरणभार दिखाई नहीं दिया। उसने घना अन्धकार देखा। वह बाहर निकला और वहाँ सूर्य का प्रकाश देखकर वह फिर कुएँ में घुस गया। फिर, वहाँ रात्रि देखता है। इस प्रकार वह दो-तीन, पाँच बार जब तक कुँए में घुसता है और उससे निकलता है, तब तक सूर्य डूब जाता है और तमाल को जीतनेवाली और तम की पंक्ति को फैलाती हुई रात हो गयी। प्यास से सुख का संचय करनेवाली, मन का नियन्त्रण करनेवाली भावना से वह मर गया। इस प्रकार वह कुबेरदत्त और धनमित्रा का प्रीतिंकर नाम का सुनयन पुत्र हुआ।'' यह सुनकर रति से निवृत्त है देह जिसकी, ऐसा वह सेठ व्रत के फल को मानकर अपने घर आया। उसने अपने नेत्रों के लिए आनन्ददायक अपनी लक्ष्मी वसुन्धरा के पुत्र को दे दी। वह मगधेश्वर के श्रेष्ठ नगर

---

(16) 1. AP सुक्काहारु। 2. AP अत्थवणयालि। 3. AP कूवंतरालु। 4. AP पेच्छिवि। 5. AP रत्ति। 6. A पसरियउ महारयतिमिरयत्ति; P पसरिय तमालणिह तिमिरयत्ति। 7. A कुबेरदेवहो।

मगहेसरपुरुवरु एउं आउ सहुं बंधुहुं वंदिउ वीयराउ।
संजमभरउड्डियकंधरेण वउ लइयउं सिरिपीइंकरेण।
घत्ता—भरहु व चरमंगु वयहलेण अइसोहिउ।
जंबुउ[8] संजाउ पुप्फदंततेयाहिउ ॥16॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे पीइंकरक्खाणं णाम सयमेकोत्तरं[9] परिच्छेयाणं समत्तं ॥101॥

में आया और भाइयों सहित वीतराग की वन्दना की। संयम के भार को अपने कन्धों से उठानेवाले उनसे प्रीतिंकर ने व्रत ग्रहण कर लिया।

घत्ता—चरमशरीरी वह भरत के समान व्रतफल से अत्यन्त शोभित था। वह सियार सूर्य-चन्द्र के तेज से भी अधिक तेजवाला हो गया।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का प्रीतिंकर-आख्यान नाम का एक सौ पहला परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

8. A जंदुउ, P उवं। 9. AP एक्कोत्तरसइमो परिच्छेओ समत्तो।

दुत्तरसयमो संधि

बहुजाणउ राणउ पुणु भणइ सेणिउ गोत्तम अम्हहं।।
अवसप्पिणि [1]वयणहु सप्पिणि व दरिसणि भावइ[2] तुम्हहं ॥ ध्रुवकं ॥

(1)

ओसप्पिणि [3]एवहि भणु मुणिवर गणिय[4] भणइ हो णिसुणि महाणर।
भो दसारकेसरि तुइच्छर[5] जइयहुं थंति तिण्णि संवच्छर।
तइयहुं आसोयंतइ ससिमुह सिद्धु होइ सिद्धत्थहु[6] तणुरुहु।
एक्कवीससहसइं[7] सम्मत्तइं दुस्समु[8] कालु पहोसइ दुम्मइ।
तहिं होहिंति णरिंद सतामस सयवरिसाउस सयल वि माणुस।
सत्तरयणितणु[9] छायावज्जिय पेम्मपरव्वस इंदियणिज्जिय।
ताहं भुक्ख रसु लोहिउं सोसइ तित्ति[10] तिकालाहारें होसइ।
पावकम्मु[11] बहुदोसभयंकर दीसिहिंति चउवण्ण ससंकर।
सुद्ध[12] ण राय ण वणिय ण दियवर खल होहिंति सयल णिग्घिणयर।
वरिससहसमाणइ गइ दुस्समि पाडलिउत्तणयरि णरसंगमि।
सिसुपालें पुहईमहएविहि होसइ पुत्तु[13] खुद्दु सियसेविहि।

एक सौ दूसरी सन्धि

बहुज्ञानी राजा श्रेणिक फिर कहता है—हे गौतम ! हम लोगों का अवसर्पिणी काल आपके शब्दों और आपके दर्शन से उत्सर्पिणी के समान जान पड़ता है।

(1)

हे मुनिवर ! इस समय अवसर्पिणी बताइए। गौतम गणधर कहते हैं—हे महामानव ! सुनो। हे कुलसिंह और अप्सराओं को सन्तुष्ट करनेवाले (श्रेणिक) ! जब चतुर्थकाल के तीन साल बाकी बचते हैं, तब दक्षिणापथ की अपेक्षा कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के दिन (आसोयंतइ) सिद्धार्थ के पुत्र महावीर सिद्ध होते हैं। इसके बाद इक्कीस हजार वर्ष में समाप्त होनेवाला दुर्मति दुःखमा काल होगा। उसमें राजा लोग तामसी स्वभाव के होंगे। सभी मनुष्य सौ वर्ष की आयुवाले होंगे। सात हाथ शरीरवाले और कान्ति से रहित। प्रेम के वशीभूत और इन्द्रियों के अधीन। भूख उनके रक्त और रस का शोषण करेगी। तीन बार भोजन करने से तृप्ति होगी। चारों वर्ण पापकर्मा बहुदोषों से भयंकर और वर्णसंकर से सहित दिखाई देंगे। न राजा शुद्ध होगा और न वणिक् और न ब्राह्मण। सभी दुष्ट और निर्घृणतर (क्रूर) होंगे। दुःखमा काल के एक हजार वर्ष बीत जाने पर मनुष्यों के संगम पाटलिपुत्र नगर में राजा शिशुपाल और श्री से सेवित पृथ्वी महादेवी से एक क्षुद्र पुत्र होगा।

---

(1) 1. A णयणगहे। 2. AP दीसइ। 3. A भणु एवहिं। 4. A गणि पभणइ। 5. A दुइच्छर। 6. AP सिद्धत्थयतणुरुहु। 7. AP °सहसइं तिणु धसइ। 8. AP वरिसहो दुस्समु कालु पहोसइ। 9. A धम्महीण सुहझाणविवज्जिय। 10. AP तित्ति वि कवलाहारें। 11. AP पावयम्म। 12. A सुद्दु।

घत्ता—अइदुम्मुहु चउमुहु णाम सुउ सयल पुहइ भुंजेसइ।
सामरिसहं वरिसइं पीणभुउ[15] सो सत्तरि जीवेसइ ॥1॥

(2)

सो चालीस वरिस रज्जेसरु तीस वरिस कुमरत्तें सुंदरु।
वसि णेसइ सयलइं पासंडइं मासगासमइरारससोंडइं।
दरिसियमोक्खमहापुरपंथहं पडिकूलउ होसइ णिग्गंथहं।
वसि ण होंति किं मज्झु दियंबर मंति भणंति देव कयसंवर।
करभोयण[1] गिरिकंदरमंदिर पभणइ णइं णवंतु महुं मुणिवर।
एयहं पाणिपत्तदिण्णोयणु हिप्पइ [2]परघरलद्धउं भोयणु।
तं णिसुणेवि सरिच्छ जमवेसें भड[3] जाहिंति सरायाएसें।
ते हरिहिंति गासु भयवंतहं णिब्भयाहं परघरि भुंजंतहं।
तं पेच्छिवि अधम्मु णिच्छयगुणि भुंजिहिंति णउ भोज्जु महामुणि।
जाइवि गावपावसंघायहु[4] किंकरेहिं अक्खिउ णियरायहु।
देव दुट्ठ णिग्गंथ तुहाणइ णउ जीवंति सगुरुसंताणइ।
तं णिसुणिवि दंडहुं [5]जइणरवइ तिक्खदंडु जाएसइ णरवइ।
मुक्कधम्मु खग्गें दारेव्वउ सो केण वि असुरें मारेव्वउ।

घत्ता—अत्यन्त दुर्मुख चतुर्मुख नाम का वह पुत्र समस्त धरती का उपभोग करेगा। स्थूलबाहु वह (कल्कि) अमर्ष, अक्षमादि से भरा हुआ सत्तर वर्ष जीवित रहेगा।

(2)

चालीस वर्ष राज्येश्वर के रूप में और तीस वर्ष कौमार्य के रूप में। वह सुन्दर मांसाहार और मदिरारस से उन्मत्त सभी सम्प्रदायों को अपने वश में कर लेगा। लेकिन मोक्षरूपी महानगर का पथ प्रदर्शन करनेवाले निर्ग्रन्थ (दिगम्बर) साधुओं के विरुद्ध हो जाएगा। (वह पूछेगा) कि क्या दिगम्बर मेरे वश में नहीं होंगे ? मन्त्री कहेंगे—हे देव ! ये संवर करनेवाले, हाथ में भोजन करनेवाले और गिरिगुफाओं में निवास करनेवाले हैं। राजा कहेगा—ये मुनिवर मुझे नमस्कार नहीं करते। इनका हाथ रूपी पात्र का भात और दूसरे के घर से प्राप्त भोजन छीन लिया जाये। यह सुनकर, यमरूप के समान योद्धा अपने राजा के आदेश से जाएँगे और ज्ञानवान, निर्भय, दूसरे घर भोजन कर रहे उनका आहार छीन लेंगे। यह अधर्म देखकर, निश्चयगुणी महामुनि आहार ग्रहण नहीं करेंगे। अनुचर गर्वरूपी पाप के समूह अपने राजा से जाकर कहेंगे—हे देव दुष्ट निर्ग्रन्थ मुनि आपकी आज्ञा से नहीं, परन्तु अपने गुरु की परम्परा से जीवित रहते हैं। यह सुनकर वह राजा जैनमुनियों को दण्डित करने के लिए तीव्र दण्डवाला हो जाएगा। मुक्तधर्म वह तलवार से नष्ट होगा। समय (शास्त्र सिद्धान्त, जिनसिद्धान्त) की प्रभावना के गुण का स्मरण करते हुए जिनशासन के भक्तों द्वारा सहन

13. AP खुद्दु पुत्तु। 14. AP दुद्दमइ।

(2) 1. A कयभोयण। 2. AP परघरे दिण्णउ। 3. AP जड। 4. AP पावगावे। 5. AP जइवरवइ।

समयपहावण गुण सुंअरंतें जिणसासणभत्तें असहंतें।
पढमणरयगुरुविवरि पडेसइ एक्कु समुद्दोवमु जीवेसइ।
खद्धउ पावें सो किं किज्जइ किह जिणसासणु णउ पणविज्जइ।
तहु पुत्तें अजियंजयणामें वड्ढियसुद्धबुद्धिपरिणामें।
जिणसम्मत्तु तच्चु पडिवज्जउं अभयदाणु बहुजीवहं देज्जउं।
रक्खिउ देवें लक्खिउ भल्लउ थिउ महि भुंजमाणु णीसल्लउ।

घत्ता—पुणु होसइ घोसइ गणपवरु[6] मइ चउमुहि कयहरिसहं।
जलमंथणु दुज्जणु अवरु पहु वीसहं सहसहं वरिसहं ॥2॥

(3)

पच्छिमसूरि णाम वीरंगउ होसइ तवसिहि [1]हुणिवि अणंगउ।
संजइ सव्वसिरि त्ति मुणेज्जसु अग्गिलु सावउ हियइ धरेज्जसु।
फग्गुसेण सावइ अइसुव्वय कोसलणयरिणिवासि णिरावय[2]।
दुस्समंति होहिंति णिरुत्तउ एवं[3] सम्मइणाहें वुत्तउ।
जइयहुं थक्कइ पंचमकालउ चउयालीसमाससंखालउ।
अण्णु वि तहिं पण्णारह वासर तइयहुं भो[4] सेणिय माणियधर।
कत्तियमासपढमपक्खंतइ साइरिक्खि दिणयरि [5]उवसंतइ।

नहीं होने पर वह किसी असुर के द्वारा मारा जाएगा। वह प्रथम नरक के महाविवर में पड़ेगा और एक सागर प्रमाण जीवित रहेगा। वह पाप से क्षय को प्राप्त होगा। सो क्या किया जाय ? जिनशासन को क्यों नहीं प्रणाम किया जाये ? जिसका शुद्ध बुद्धि का परिणाम बढ़ गया है, ऐसे अजितंजय नाम का उसका पुत्र जिनेन्द्र द्वारा सम्मत तत्त्व ग्रहण करेगा और बहुत से जीवों को अभयदान देगा। देव से रक्षित वह भला लगेगा और निःशल्य होकर धरती का भोग करेगा।

घत्ता—गणप्रवर (गौतम) घोषित करते हैं कि चतुर्मुख की मृत्यु के बाद हर्ष से भरे बीस हजार वर्ष बीतने पर एक और दुर्जन जलमन्थन (अन्तिम कल्कि) राजा होगा।

(3)

अन्तिम मुनि वीरांगद होंगे जो तप की ज्वाला में कामदेव को नष्ट करेंगे। तुम सर्वश्री आर्यिका को मानोगे और अग्निल श्रावक (अन्तिम) को हृदय में धारण करोगे। फल्गुसेना अन्तिम श्राविका होगी। सुव्रतों को धारण करनेवाले निरापद ये अयोध्यानगरी के निवासी होंगे। ये दुःखमा काल के अन्त में होंगे, ऐसा निश्चय रूप से सन्मतिनाथ ने कहा है। और जब पंचमकाल के चवालीस माह और पन्द्रह दिन शेष रह जाएँगे, तब धरती को माननेवाले हे श्रेणिक ! कार्तिक माह के प्रथम पक्ष (कृष्णपक्ष) में स्वातिनक्षत्र में सूर्य के अस्त होने पर, संन्यासपूर्वक अपने शरीरों को छोड़कर, सद्भाव से जिनवर का ध्यान कर, वे चारों धर्मनिष्ठ

6. A गुणपवरु।

(3) 1. AP °हुणियाणंगउ। 2. AP अगव्वय। 3. AP एमउं। 4. AP हो। 5. A उवयंतए; P उवयंतए।

संणासणेण मुएवि कलेवरु　　समभावें णिज्झाइवि जिणवरु।
चत्तारि वि जणाइं धम्मिट्ठइं　　पढमसग्गु जाहिंति वरिट्ठइं।
मज्झण्हइ पत्थिउ णासेसइ　　बंभणधम्मु खयहु जाएसइ।
चाउवण्णु[6] कुलधम्मु गलेसइ　　देसधम्मु[7] णिम्मूलु हवेसइ।

घत्ता—पासंडि तिदंडि ण तवसि तहिं णउ तहिं खत्तियसासणु।
अवरण्हइ उण्हइ मंदिरहु णासइ झत्ति हुयासणु ॥3॥

(4)

तइयहुं अइदुस्समु पइसेसइ　　माणुसु वीसवरिस जीवेसइ।
भणिउ तिअद्धहत्थमाणंगउ　　बहुवेलासणु पावपसंगउ[1]।
णरयतिरिक्खहं होंतउ आवइ　　मुउ तहिं जि पुणु संभउ पावइ।
कालें जंतें माणवसत्थें　　विणु कप्पासविणिम्मियवत्थें।
परिहेव्वउं तरुपल्लवणिवसणु　　फलभोयणु अवरु वि णग्गत्तणु।
भो भूवइ भविस्सपरमेसर　　अइदुस्समकालंति णरेसर।
वीरिउ बलु आउ वि ओहट्टइ　　सोलहवरिसइं जीविउं वट्टइ।
असुहहं दुब्भगदुस्सररुक्खहं[2]　　कसणसरीरहं दीणहं मुक्खहं।
खंचियभोयहं पसरियरोयहं　　हत्थमेत्तु तणु होसइ लोयहं।
जइयहुं छट्ठकालपरमावहि　　तइयहुं फरुसत्तें फुट्टइ महि।

और वरिष्ठ प्रथम स्वर्ग में जाएँगे। मध्याह्न में राजा का नाश हो जाएगा। ब्राह्मणधर्म क्षय को प्राप्त होगा। चातुर्वर्ण्य व्यवस्था और कुलधर्म नष्ट हो जाएगा। देशधर्म भी निर्मूल हो जाएगा।

घत्ता—पाखण्डी, त्रिदण्डी होंगे, तपस्वी नहीं होंगे और न वहाँ क्षत्रिय-शासन होगा। उष्ण अपराह्न में घर से आग नष्ट (विलीन) हो जाएगी।

(4)

तब से अतिदुःखमा काल प्रारम्भ होगा। मनुष्य बीस वर्ष जीवित रहेगा। वह साढ़े तीन हाथ के बराबर शरीरवाला कहा गया है, अनेक बार भोजन करनेवाला और पापों से लिप्त। नरक और तिर्यंच गतियों से होकर आएगा और मरकर, फिर वहीं जन्म प्राप्त करेगा। समय बीतने पर मानवसमूह, कपास से निर्मित वस्त्रों के बिना, तरुपल्लवों के वस्त्र पहिनेगा, फलों का भोजन करेगा, और नग्न रहेगा। हे भावी परमेश्वर राजन् ! अतिदुःखमा काल में वीर्य, बल और आयु भी घट जाती है। केवल सोलह वर्ष का जीवन रहता है। अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, रूखे, कृष्णशरीर, दीन, मूर्ख, भोगों से युक्त, रोगों से व्याप्त लोगों का एक हाथ का शरीर होगा। जब छठे काल की अन्तिम अवधि समाप्त होगी, तब कठोरता से धरती फट जाएगी। वृक्षों

6. A वेउ धम्मु; P एउ धम्मु 7. K records a p : अथवा हेउधम्मु युक्तिस्वरूपम्।
(4) 1. K पावसपसंगउ। 2. AP °दुस्सरदुक्खहं।

महिरुहवेल्लिजालु उच्छिज्जइ[3] जीवहु पलयकालु संपज्जइ।
सुरसिंधुहि सिंधुहि खयरद्दहु आसंघिवि वेइय वेयड्ढहु।
जीविहिंति णर पावसरीरें सरिजलसंभवजीवाहारें।
णट्ठायार हीण जड माणव दुत्थिय बाहत्तरिकुलसंभव।
के वि खुद्दविवरइं पइसेप्पिणु अच्छिहिंति अप्पाणु भरेप्पिणु।
विससमाणु जलहरु वरसेसइ[4] खारु तिक्खु पाणिउ वरिसेसइ।
सत्त सत्त दियहइं जइ भासइ चित्ता णाम भूमि सम दीसइ।
अवसप्पिणि किर एत्थु समप्पइ पुणु वि भडारउ भणइ वियप्पइ।
घत्ता—अइदुस्समु दुग्गमु पइसरइ ओसप्पिणिहि पवेसइ।
मणुयाउ वि काउ वि मइं भणिउं चिरसंखाइ समासइ ॥4॥

(5)

वरिसिहिंति पुणु खीरपओहर[1] तेत्तिय दियहइं जणवयदुहहर।
अमयमेह सिंचंति धरायलु होसइ सयलु सयलु संचियफलु।
रसवरिसें रसु धरणि धरेसइ णीरणियरु[2] विवरहु णिग्गेसइ।
कमपवुड्ढि[3] पुणु दुस्समि पावइ वरिसइं वीस जाम ता जीवइ।
तिरयणियद्धरयणिदेहुल्लउ कालें जंतें होसइ भल्लउ।
पहिलउ चउहत्थुण्णइ[4] काएं कुलयरु भासिउ वियलियराएं।

और लताओं का जाल उच्छिन्न हो जाएगा। जीव के लिए प्रलयकाल होगा। गंगा और सिन्धु नदियों के तटों पर और विजयार्ध पर्वत की वेदी पर आश्रय लेकर कुछ मनुष्य अपने पापशरीर से तथा नदीजल में उत्पन्न जीवों के आहार से जीवित रहेंगे। नष्टाचार, हीन और मूर्ख मनुष्य दुःस्थित एवं बहत्तर कुलों में जन्म लेनेवाले होंगे। कोई क्षुद्र बिलों में प्रवेश कर अपना भरण-पोषण करते रहेंगे। मेघ विष के समान बरसेंगे। खारा और कड़वा पानी गिरेगा, सात-सात दिन तक—ऐसा यतिवर कहते हैं। यहाँ आकर अवसर्पिणी काल समाप्त होगा। आदरणीय गणधर फिर कहते हैं और उसका विस्तार करते हैं—

घत्ता—फिर उत्सर्पिणीकाल में दुर्गम अतिदुःखमा काल प्रवेश करेगा। मनुष्य की आयु और शरीर भी वही होगा जो पुरानी संख्या में संक्षेप से कहा है।

(5)

फिर, उतने ही दिन जनपदों का दुःख दूर करनेवाले दूध के मेघ बरसेंगे। अमृत-मेघ धरती का सिंचन करेंगे। समस्त कलायुक्त संचित फल होगा। जल की वर्षा से धरती रस को धारण करेगी। विवरों से जलसमूह निकलेगा। दुःखमा काल में क्रमशः इसकी वृद्धि होगी और मनुष्य बीस वर्ष तक जीवित रहेगा। साढ़े तीन

---

3. P उच्छज्जइ। 4. AP विरसेसइ।

(5) 1. AP छीर°। 2. AP णरणियरउं 3. P कमे पवुड्ढि। 4. A °हत्थेणें काएं; P °हत्थूणें काएं।

अंतिमु सत्तहत्थपरिमाणें दिट्ठु ण चुक्कइ केवलणाणें।
पढमु कणउ बीयउ कणयप्पहु कणयराउ कणयद्धउ णरपहु।
अवरु कणयपुंगमु णलिणंकउ णलिणप्पहु कुलगयणससंकउ।
णलिणराउ अवरु वि णलिणद्धउ रूवें णावइ सइं मयरद्धउ।
राउ णलिणपुंगमु पउमक्खउ पउमप्पहु [5]वसंतु पच्चक्खउ।
पउमराय पउमद्धउ राणउ णिवइ पउमपुंगमु बहुजाणउ।
अवरु महापउमु वि सोलहमउ कहइ महामुणि दूरुज्झियमउ।
एयहुं कालि कालि णंदइ पय णरणाहहं परिवड्ढइ संपय।
जणवउ होसइ सव्वु सुसीलउ सिहिसिद्धण्णें भोयणयालउ।

घत्ता—सुहमेलइ कालइ[6] तइयइ संपत्तइ सउ अद्दहं।
णउ[7] जीउ धरंति मरंति ण वि वयणुण्णइइ[8] जिणिंदहं[9] ॥5॥

(6)

जे होहिंति तेत्थु तित्थंकर वूढदप्प कंदप्पखयंकर।
बद्धउं जेहिं कम्मु जगखोहणु अरहंतत्तणु मोक्खारोहणु।
ताहं महापुरिसहं मणि मण्णह णामइं चउवीसहं आयण्णह।

हाथ का उसका शरीर होगा। समय बीतने पर उसका भला होगा। पहला कुलकर शरीर से चार हाथ उन्नत होगा, ऐसा वीतराग और अन्तिम कुलकर सात हाथ प्रमाण का भगवान ने कहा है। केवलज्ञान द्वारा देखा गया कभी गलत नहीं होता। पहला कनक, दूसरा कनकप्रभ, फिर कनकराज, कनकध्वज कुलकर, फिर एक और (पाँचवाँ) कनकपुंगम, फिर नलिन, फिर कुलरूपी गगन का चन्द्र नलिनप्रभ, नलिनराज, एक और नलिनध्वज जो रूप में मानो स्वयं कामदेव होगा, राजा (दसवाँ) नलिनपुंगम, पद्म, पद्मप्रभ जो मानो प्रत्यक्ष वसन्त था, राजा (तेरहवाँ) पद्मराज और राजा पद्मध्वज, और राजा बहुज्ञानी पद्मपुंगम। और एक दूसरा सोलहवाँ महापद्म—जिन्होंने मद को दूर से छोड़ दिया है, ऐसे महामुनि कहते हैं। इनके समय में प्रजा प्रसन्न होगी, राजाओं की सम्पत्ति बढ़ेगी। समस्त जनपद सुशील होगा। आग से पका हुआ अनाज उनका भोजन होगा।

घत्ता—सुख की योजना करनेवाले तीसरे काल के प्रारम्भ होने पर जब सौ वर्ष पूरे होंगे, तो जीव न तो दूसरों को मारेंगे और न आत्मघात करेंगे। जिनेन्द्र भगवान के वचनों की उन्नति होगी।

(6)

उसमें जो दर्प काम का क्षय करनेवाले तीर्थंकर होंगे; जिन्होंने जग को क्षुब्ध करनेवाली और मोक्ष का आरोहण करानेवाली अर्हन्त प्रकृति का बन्ध किया है, उन महापुरुषों को तुम मन में मानो। उन चौबीस के नाम सुनो—1. श्रेणिक प्रभु, 2. सुपार्श्व, 3. उदंक, 4. प्रोष्ठिल, 5. शंका को आहत करनेवाले कटप्रू,

5. AP पसण्णपंचक्खउ। 6. AP तइयए कालए। 7. AP णर। 8. AP वयणु ण ढलइ। 9. AP रिसिंदहं।

सेणिउ पहु सुपासु उययंकउ पोट्ठिलु कडचंचु[1] वि हयसंकउ।
खत्तिउ सट्ठु[2] [3]णाम संखालउ णंदणु पुणु सुणंदु सुगुणालउ।
पुणु ससंकु केसउ धम्मंकिउ पेम्मकम्मु तोरणसण्णंकिउ।
रेवउ वासुएउ बलु अवरु वि भगलि[4] विगलि दीवायणु णररवि।
कणयक्खउ पायंतउ णारउ चारुपाउ सच्चइसुउ सारउ।
आइजिणेसरु तहिं महु भावइ सउ वरिसहं सोलत्तरु जीवइ।
जाणमि सत्तरयणिमाणंगउ छेइल्लउ दूरुज्झियसंगउ।
पंचसयाइं तुंगु धणुदंडहं दिहि हरंतु मयरद्धयकंडहं।
पुव्वहं कोडि देउ जीवेसइ णामावलिय ताहं जइ घोसइ।

घत्ता—धुउ पउमु महापउमु जि पढमु पुणु सुरदेउ सुसासणु।
हयपासु सुपासु सयंपहु वि सव्व[5] भूइ मलणासणु ॥6॥

(7)

देवउत्तु कुलउत्तु उअंकउ पोट्ठिलु जयकित्ति वि गयपंकउ।
मुणिसुव्वउ पावारि विरायउ[1] णिक्कसाउ सुविउलु हयमायउ।
चित्तगुत्तु जिणु विरइयसंवरु अरुहु समाहिगुत्तु ससयंवरु।
अणियत्ति वि णामें रिसिसारउ[2] विमलु वि जउ सुरपाउ[3] भडारउ।

---

6. क्षत्रिय, 7. श्रेष्ठी, 8. शंख, 9. नन्दन, 10. सद्गुणालय सुनन्द, फिर, 11. शशांक, धर्म से युक्त, 12. केशव, 13. प्रेमकर्म, 14. तोरण नाम से अंकित, 15. रैवत, 16. बलवान वासुदेव, एक और, 17. भगलि, 18. विगलि, 19. द्वैपायन, 20. कनकपाद, 21. नारद, 22. चारुपाद, 23. श्रेष्ठ और 24. सत्यकिपुत्र। उनमें आदि तीर्थंकर सोलहवें कुलकर (महापद्म) मुझे अच्छे लगते हैं, वह सोलह अधिक सौ (116) वर्ष जीवित रहेंगे। मैं जानता हूँ उनका शरीर सात हाथ ऊँचा होगा। वे चतुर होंगे और परिग्रह से दूर होंगे। उनमें अन्तिम तीर्थंकर (अनन्तवीर्य) का शरीर पाँच सौ धनुष ऊँचा होगा और वह कामदेव के तीरों के धैर्य का हरण करनेवाले होंगे। देव एक करोड़ वर्ष पूर्व जीवित रहेंगे। यति उनकी नामावलि की घोषणा इस प्रकार करते हैं—

घत्ता—1. शाश्वत श्रीवाले पहले महापद्म, फिर 2. सुशासनवाले सुरदेव, 3. बन्धन को नष्ट करनेवाले सुपार्श्व, 4. स्वयंप्रभ, और 5. मल का नाश करनेवाले सर्वात्मभूत।

(7)

6. देवपुत्र, 7. कुलपुत्र, 8. उदंक, 9. प्रौष्ठिल, 10. गतपंक जयकीर्ति, 11. विशेषरूप से शोभित पापारि मुनिसुव्रत, 12. अरनाथ, 13. अपाप, 14. निष्कषाय, 15. सुविपुल, 16. निर्मल, 17. संवर की रचना करनेवाले चित्रगुप्त, 18. स्वयं का वरण करनेवाले—समाधिगुप्त, 19. स्वयम्भू, 20. ऋषिश्रेष्ठ अनिवर्ति, 21. विमल,

---

(6) 1. A कइयवु; P कवडचंचु। 2. AP सेट्ठु K सट्ठु And gloss षष्ठः। 3. AP संखणामालउ। 4. AP भगिलि विगिलि। 5. AP सव्व।
(7) 1. A विचारउ; P वियराउ। 2. P रिसिसायरु। 3. A सुरयाउ।

चरमु अणंतवीरु वंदिज्जइ चक्कवट्टिणामावलि[4] गिज्जइ।
भरहु दीहदंतु वि पुणु बीयउ लंबदंतु पहु भणिउ तईयउ।
गूढु चउत्थउ पुणु सिरिसेणउ सिरिभूइ वि सिरिकंतु अदीणउ।
पउमु महापउमंकु [5]ससंतणु अवरु वि चित्तपुव्वु भणु वाहणु।
विमलबाहु णरणाहं [6]सुखंतिउ णिवइ[7] अरिट्ठसेणु सव्वंतिउ।
णिव[8] भविस्ससीरि वि णव भासमि चंदु महाचंदु वि विण्णासमि।

घत्ता—चक्कहरु मिहरु[9] णं उग्गमिउ हउं अक्खमि मइमंदु वि।
हरिचंदु सीहचंदु वि अवरु पुण्णिमचंदु सुचंदु वि ॥7॥

(8)

सिरिचंदु वि ए भासिय हलहर णव होहिंति मणोहर सिरिहर।
णंदि णंदिमित्तु[1] वि जाणिज्जइ णंदसिएणु तिज्जउ [2]भाणिज्जइ।
णंदिभूइ हरि होइ चउत्थउ पंचमु बलु संगामसमत्थउ।
छट्ठु महाबलु सत्तमु अइबलु अट्ठमु भू तिविट्ठु पालियछलु।
णवमु दुविट्ठु विट्ठु णरकेसरि ताहं वइरि तेत्तिय से पडिहरि।
कालसमइ तइयम्मि समत्तइ सुसमदुसमकालइ संपत्तइ।

---

22. जय, 23. देवपाल और अन्तिम 24. अनन्तवीर्य। इनकी वन्दना की जाएगी। अब चक्रवर्तियों की नामावलि कही जाती है—पहला भरत, दूसरा दीर्घदन्त, तीसरा फिर लम्बदन्त कहा जाता है। चौथा गूढ़दन्त और पाँचवाँ श्रीषेण, छठा श्रीभूति, सातवाँ अदीन श्रीकान्त, आठवाँ पद्म, नौवाँ शान्त महापद्म, दसवाँ विचित्रवाहन, ग्यारहवाँ क्षमावान राजा विमलवाहन और सबसे अन्तिम (अर्थात् बारहवाँ) राजा अरिष्टसेन है। हे राजन् ! मैं भावी बलभद्रों का भी कथन करता हूँ—1. चन्द्र और 2. महाचन्द्र का भी वर्णन करता हूँ।

घत्ता—3. चक्रधर चक्रवर्ती सूर्य की तरह उदित होता है, मन्दमति होते हुए भी मैं उनका वर्णन करता हूँ। 4. हरिश्चन्द्र, 5. सिंहचन्द्र, 6. वरचन्द, 7. पूर्णचन्द्र तथा 8. सुचन्द्र—

(8)

और 9. श्रीचन्द्र भी हैं, जो हलधर (बलभद्र) कहे जाते हैं ये नौ ही मनोहर एवं श्री को धारण करनेवाले होते हैं। पहला नन्दी, दूसरा नन्दीमित्र को जानिए। तीसरा नन्दीसेन कहा जाता है, नन्दीभूति नारायण चौथा है, संग्राम में सुप्रसिद्धबल पाँचवाँ नारायण है, छठा महाबल और सातवाँ अतिबल। आठवाँ छल का पालन करनेवाला त्रिपृष्ठ, और नरसिंह द्विपृष्ठ नौवाँ नारायण होगा। इतने ही उनके शत्रु प्रतिनारायण होंगे। तीसरा

---

4. A °णामालि वि; P °णामालि वि। 5. AP सुसंतणु। 6. AP सुखत्तिउ। 7. A णुवइ। 8. A णुव। 9. AP मिहिरु।

(8) 1. A णंदुमित्तु। 2. A पभणिज्जइ।

चावहं पंचसयइं देहुण्णइ एम्व भडारउ भासइ सम्मइ।
पंचहं धणुसयाहं[3] वड्ढेसइ साहिय पुव्वकोडि जीवेसइ।
घत्ता—असरालइ कालइ आइयइ जीवेसइ पल्लोवमु।
फडु होसइ दीसइ एत्थु जणु अहमभोयसुहसंगमु ॥8॥

(9)

पंचमि मज्झिम छट्ठइ उत्तिम भोयभूमि धुउ होसइ णित्तम।
इह जिह तिह णिव णवहिं मि खेत्तहिं भरहेरावयणामविहत्तहिं।
कालु विदेहहिं एक्कु जि दीसइ धणुसयपंचु ण[1] उण्णइ णासइ।
जिणवर चक्कवट्टि हरि हलहर छिण्णछिण्णजयसिरिपसरियकर।
होंति सट्ठु सउ तेत्थु बहुत्तें वीस वियाणहि अइतुच्छत्तें।
उक्किट्ठें सउ सत्तरिजुत्तउ सव्वभूइभवजिणहं[2] पवुत्तउ।
चउगइ [3]अणुहवंति तहिं थिरकर होंति पंचमगइगामिय णरवर।
कम्मभूमिजाया मिगमाणुस होंति भोयभूमिसु[4] णियकयवस।

काल समाप्त होने पर और सुखमा-दुःखमा काल जाने पर मनुष्यों की ऊँचाई पाँच सौ धनुष बढ़ जाएगी। एक करोड़ वर्ष पूर्व की आयु होगी।

घत्ता—बहुत समय बीत जाने पर मनुष्य एक पल्य के बराबर जीवित रहेगा। फिर, शीघ्र ही मनुष्य स्पष्ट रूप से जघन्य भोगभूमि हो युक्त होगा।

(9)

पाँचवें काल में मध्यम भोगभूमि और छठे काल में निश्चय से उत्तम भोगभूमि होगी। हे राजन् ! जिस प्रकार यहाँ, उसी प्रकार, भरत ऐरावत आदि नामों से विभक्त नौ क्षेत्रों में ये ही प्रवृत्तियाँ दिखाई देंगी। विदेह-क्षेत्र में एक ही काल दिखाई देता है। वहाँ शरीर की पाँच सौ धनुष ऊँचाई नष्ट नहीं होती। जिनवर, चक्रवर्ती, नारायण, प्रतिनारायण, विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार विजयश्री के लिए अपने हाथों का प्रसार करते हैं। वहाँ (विदेह क्षेत्रों में) तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलभद्र और नारायण अधिक से अधिक एक सौ साठ होते हैं, और कम से कम बीस जानो[1]। उत्कृष्ट रूप से कर्मभूमियों में समस्त ऐश्वर्य और संसार को जीतनेवाले तीर्थंकर आदि महापुरुष एक सौ सत्तर होते हैं। इनमें चारों गतियों के जीव उत्पन्न होते हैं। स्थिरकर मनुष्य पाँचों गतियों में जन्म ले सकते हैं। पशु और मनुष्य अपने द्वारा किये गये पुण्य के वश से भोगभूमि में उत्पन्न हो सकते हैं। भोगभूमि के मनुष्य मरकर पहले दो स्वर्गों में, अथवा भवनवासी, व्यंतरवासी,

3. A धणुसयाइं।

(9) 1. A सउण्णइ; P णिउण्णइ। 2. AP सव्वभूमिभव। 3. AP मुअ हवंति। 4. AP भोय भूमिहि।

[1]टिप्पण—अढ़ाई द्वीप में पाँच विदेह क्षेत्र हैं और एक-एक विदेह क्षेत्र के 32-32 भेद हैं। सब मिलाकर 160 क्षेत्र होते हैं। यदि तीर्थंकर आदि (चक्रवर्ती बलभद्र, नारायण) शलाका पुरुष प्रत्येक विदेह क्षेत्र में 1-1 होवें तो 160 होते हैं और कम-से-कम महाविदेह की 4-4 नगरियों में अवश्यमेव होने के कारण बीस ही होते हैं। सभी कर्मभूमियों में मिलाकर अधिक-से-अधिक एक सौ सत्तर हो सकते हैं। (उत्तरपुराण, 76, 496-98)

आइकप्पजुयलइ जणमणहरि   भावणवाणामरजोइसघरि।
भोयभूमिणर होंति मरेप्पिणु   कम्मभूमिरुह कहमि गणेप्पिणु।
पवर सलायपुरिस मयरद्धय   विज्जाहरसुरवरपुज्जियपय[5]।
छट्ठइ कालि दुट्ठ सुकणिट्ठा   माणव वीरजिणिंदें दिट्ठा।
घत्ता—एक्कोरुय णीरुय मूय णर सक्कुलिकण्णा अण्ण वि।
कण्णाचिय[6] भाविय जिणवरिण लंबकण्ण ससकण्ण वि ॥9॥

(10)

आससीहमहिसयकोलाणण   वग्घउलूयवयण सुहमाणण।
मक्कडमुह[1] थहमुह मसिणिहमुह   गयमुह गोमुह घणमुह तडिमुह।
आदंसणमुह लंगूलंकिय   वेसाणिय कुमणुय जिणपुक्किय[2]।
एए अंतरदीवणिवासिय   गोत्तमेण मगहेसहु भासिय।
अंततित्थणाहु[3] वि महि विहरिवि   जणदुरियाइं दुलंघइं पहरिवि।
पावापुरवरु[4] पत्तउ मणहरि   णवतरुपल्लवि वणि बहुसरवरि।
संठिउ पविमलरयणसिलायलि   रायहंसु णावइ पंकयदलि।
दोण्णि दियहं पविहारु मुएप्पिणु   सुक्कझाणु[5] तिज्जउ झाएप्पिणु।
घत्ता—णिव्वत्तिइ कत्तिइ[6] तमकसणि पक्खि चउद्दसिवासरि।
थिइ ससहरि दुहहरि[7] साइवइ पच्छिमरयणिहि अवसरि ॥10॥

ज्योतिषवासी—इन तीन निकायों में उत्पन्न होते हैं। अब मैं कर्मभूमि में उत्पन्न होनेवाले मनुष्यों की गणना करके बताता हूँ। श्रेष्ठ शलाकापुरुष कामदेव, और देवों तथा विद्याधरों से पूजितपद मनुष्य, तथा छठे काल में दुष्ट और नीच मनुष्य वीर जिनेन्द्र ने देखे हैं।

घत्ता—एक पैरवाले, बिना पैरवाले, मूक, शत्कुली (कीली, शंकु) के समान कानवाले, और भी कानों के आवरणवाले लम्बकर्ण, शशकर्ण (खरगोश के समान कानवाले) मनुष्यों को जिन भगवान ने देखा है।

(10)

अश्व, सिंह, भैंस और सुअर के मुखवाले, बाघ, उल्लू के मुखवाले, शुभ मुखवाले, वानर मुख, मेषमुख, गजमुख, गोमुख, घनमुख, तडिन्मुख, दर्पणमुख, पूँछ से युक्त, सींग से सहित और ऊँचा बोलनेवाले कुमनुष्य जो अन्तर्द्वीप के निवासी हैं। गौतम ने मागधेश से कहा कि अन्तिम तीर्थंकर महावीर धरती पर विहार कर और लोगों के दुर्लंघ्य पापों को नष्ट कर पावापुर पहुँचे और सुन्दर, अनेक और नववृक्ष पल्लवों से युक्त वन में एक विमल रत्नशिलातल पर इस प्रकार बैठ गये, मानो कमलदल पर राजहंस हो। विहार छोड़कर, दो दिन तक तीसरे शुक्लध्यान का ध्यान कर—

घत्ता—कार्तिक माह के कृष्णपक्ष की चौदस को चन्द्रमा के दुःखहर स्वातिनक्षत्र में स्थित रहने पर रात्रि के अन्तिम प्रहर में—

---

5. AP °सुरवर°। 6. P एए भासिय णिव जिणवरेण।

(10) 1. A मक्कडमुह चलमुह मसिणिहमुह; P मक्कडपच्छयमुह मसिणिहमुह। 2. A जिणचुक्किय। 3. A अंतिमु तित्थणाहु महि। 4. AP °पुरवरि। 5. AP सुक्कझाणु तइयउ।

(11)

कयतिजोयसुणिरोहु[1] अणिट्ठउ किरियाछिण्णइ[2] झाणि परिट्ठिउ।
णिहयाघाइचउक्कु[3] अदेहउ वसुसमगुणसरीरु णिण्णेहउ।
रिसिसहसेण समउं रयछिंदणु[4] सिद्धउ जिणु सिद्धत्थहु णंदणु।
तियसविलासिणि[5] णच्चिउ तालहिं अमरिंदहिं णवकुवलयमालहिं।
णिव्वुइ वीरि गलियमयरायउ इंदभूइ गणि केवलि जायउ।
सो विउलइरिहि गउ णिव्वाणहु कम्मविमुक्कउ सासयठाणहु।
तहिं वासरि उप्पण्णउं केवलु मुणिहि सुधम्महु पक्खालियमलु।
तण्णिव्वाणइ जंबूणामहु पंचमु दिव्वणाणु हयकामहु।
णंदि सु णंदिमित्तु अवरु वि मुणि गोवद्धणु चउत्थु जलहरझुणि।
ए पच्छइ समत्थ सुयपारय णिरसियमिच्छायम[6] णिरु णीरय।
पुणु[7] वि विसहजइ पोट्ठिलु खत्तिउ जउ णाउ वि सिद्धत्थु हयत्तिउ।
दिहिसेणंकु विजउ बुद्धिल्लउ गंगु धम्मसेणु वि णीसल्लउ।
पुणु णक्खत्तउ पुणु जसवालउ पंडु णाम धुवसेणु गुणालउ।
घत्ता—अणुकंसउ[8] अप्पउ जिणिवि थिउ पुणु सुहद्दु[9] जणसुहयरु।
जसभद्दु अखुद्दु[10] अमंदमइ णाणें णावइ गणहरु ॥11॥

(11)

तीनों योगों का निरोध कर अमुक्तरूप वह समुच्छिन्न क्रियापाती नामक चौथे शुक्ल ध्यान में स्थित हुए। चार धातिया कर्मों का नाश कर वह अदेह आठ गुणों के शरीरवाले एवं रागरहित हो गये। एक हजार मुनियों के साथ पापबल का छेदन कर सिद्धार्थनन्दन सिद्ध हो गये। नवकुवलयमाला के समान इन्द्रों और तालों के साथ देवांगना ने नृत्य किया। भगवान महावीर के निर्वाण प्राप्त कर लेने पर मद और राग से रहित गौतम गणधर केवली हो गये। कर्मों से विमुक्त वह भी विपुलाचल पर्वत पर शाश्वत स्थानवाले निर्वाण गये। उसी दिन सुधर्मा मुनि को पापों को प्रक्षालित करनेवाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। उनके निर्वाण प्राप्त कर लेने पर काम को नष्ट करनेवाले, जम्बूस्वामी को पाँचवाँ ज्ञान (केवलज्ञान) प्राप्त हुआ। नन्दी, नन्दीमित्र, मुनि अपराजित और मेघ के सामन ध्वनिवाले चौथे गोवर्धन मुनि हुए। बाद में ये श्रुतज्ञान में पारंगत, मिथ्यात्वतम का नाश करनेवाले अत्यन्त निष्पाप और समर्थ हुए। फिर विशाखाचार्य, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जय, नागसेन, पीड़ा का हरण करनेवाले सिद्धार्थ, धृतिसेन, विजय, बुद्धिल्ल, गंगदेव, निःशल्य धर्मसेन, ये द्वादशांग का अर्थ कहने में कुशल हुए, फिर नक्षत्र, जयपाल, पाण्डु और गुणालय ध्रुवसेन,

घत्ता—बाद में कंसार्य (ग्यारह अंगों के जानकार) आत्मा को जीतकर स्थित थे। फिर, जनों का कल्याण करनेवाले महान् सुभद्र और यशोभद्र हुए, अमन्द बुद्धिवाले जो ज्ञान में गणधर के समान थे।

6. A कलियलमाणिसिहि। 7. A दुहलरि।

(11) 1. A °सुणिरोहु अणिट्ठिउ; P °सुणिरोहेंअणिट्ठिउ। 2. AP किरियाछण्णए। 3. AP णिहयअघाइ°। 4. A अरिछिंदणु। 5. AP अग्गिदहिं अंधिउ सिहिजालहिं। 6. A °मिच्छामयभय णीरय; P °मिच्छामय भव णीरय। 7. A पुणु विसाहु जयपोट्ठिलु खत्तिउ। 8. A अणुकंपउ। 9. A सुहद्दजिणु सुअहरु। 10. A अखुद्दु मंदगइ णाणें।

(12)

भद्दबाहु लोहंकु भडारउ आयारंगधारि[1] [2]जगसारउ।
एयहिं सव्वु सत्थु मणि माणिउ सेसहिं एक्कु देसु परियाणिउ।
जिणसेणेण वीरसेणेण वि जिणसासणु [3]सेविवि मय ते ण वि।
[4]पुव्वयालि सुइ णिसुणिय भरहें राएं रिउवहुदावियविरहें[5]।
पुणु सयरेण सच्चवीरंकें[6] पुहईसेण[7] सगोत्तससंकें।
भावमित्तमित्तइयवीरें[8] जमजुइणा वि सुट्ठु गंभीरें।
धम्मदाणवीरहिं मघवंतें जुज्झवीरणरणाह[9] हसंतें।
सीमंधरराएण तिविट्ठें अरुहवयणु आयण्णिउं इट्ठें।
पुणु सयंभु पुरिसुत्तमु णामें पुरिसपुंडरीएं जयणामें[10]।।
पुरिदत्तपत्थिवेण[11] कुणालें गोविंदेण णंदगोवालें।
णिवसुभोमणामें[12] विक्खाएं अजियंजएण वि जएं वि महाएं।
उग्गसेण [13]महसेणें इच्छइ आजिएं[14] सेणिएण पइं पच्छइ।
एम्व रायपरिवाडिइ णिसुणिउ धम्मु महामुणिणाहहिं पिसुणिउ।
सेणियराउ धम्मसोयारहं पच्छिल्लउ वज्जियभयभारहं[15]।
ताहं वि पच्छइ बहुरसणडियइ भरहें काराविउ पद्धडियइ।
पढिवि सुणिवि आयण्णिवि णिम्मलि[16] पयडिउं [17]मामइएं इय महियलि।

(12)

भद्रबाहु और आदरणीय लोहाचार्य विश्व में श्रेष्ठ आचारांग धारण करनेवाले थे। इन आचार्यों ने शास्त्रों को अपने मन में धारण कर लिया था। शेष लोग, उनके एक भाग को जानते थे। जिनसेन और वीरसेन भी जिनशासन की सेवा करके संसार से विदा हो चुके हैं। पूर्वकाल में शत्रुओं की पत्नियों को विरह दिखानेवाले भरत ने शास्त्र सुना था। फिर, सागर, सत्यवीर, अपने गोत्र का चन्द्र पृथ्वीसेन, मित्रभाव, सूर्य के समान कान्तिवाले और गम्भीर मित्रवीर्य, धर्मवीर्य, दानवीर्य, मघवा, युद्धवीर्य, राजा सीमन्धर और त्रिपृष्ठ ने इष्ट अरहन्त के वचन सुने। फिर, स्वयम्भू, पुरुषोत्तम, प्रसिद्ध पुरुष पुण्डरीक, राजा सत्यदत्त, राजा कुणाल, नारायण, विख्यात राजा सुभौम, अजितंजय, विजय, उग्रसेन, महासेन और बाद में स्वेच्छा से अजित (प्रश्न करनेवालों में श्रेष्ठ) हैं। इस प्रकार क्रमबद्ध परिपाटी से महामुनियों द्वारा कथित धर्म को सुना। धर्म के भयभार से रहित, श्रोताओं के साथ बाद में राजा श्रेणिक हुआ। उसके भी बहुत बाद में नवरस से संकुल, पद्धडिया शैली में इसकी रचना मन्त्री भरत ने करवायी। उसे पढ़-सुन कर, मामइया द्वारा धरती पर प्रगट किया गया।

(12) 1. A एयारंगधारि। 2. A जयसारउ; P जससारउ। 3. AP सेविउ मयगिरिपवि। 4. A पुव्वयालि णिसुणिउं सुइभरहें; P पुव्वयालि णिसुणिउं सुइं भरहें। 5. A बहुरिउ°। 6. A सच्चवीरकें। 7. A पुहइं सेस°। 8. K मित्ताइविवीरें and gloss मित्रवीर्यः। 9. AP °णरणाहें संतें। 10. AP जयकामें। 11. A पुरिसदत्तणामेण; P पुरिसदत्तपत्थिवेण। 12. A omits this line. 13. A महसेण डियत्थें। 14. A णिच्चलमाणसेहिं पुणु पत्थें। 15. A °भवभारहं। 16. A भवकलि; P रयकले। 17. A धम्मगइए; P मम्मइएं।

कम्मक्खयकारणु गणिदिट्ठउं एम्व महापुराणु मइं सिट्ठउं।
एत्थु जिणिंदमग्गि ऊणाहिउं बुद्धिविहीणें जं मइं साहिउं।
तं महु खमहु तिलोयहु सारी अरुहुग्गय[18] सुयएवि भडारी।
चउवीस वि महुं कलुसखयंकर देंतु समाहि बोहि तित्थंकर।
घत्ता—दुहुं छिंदउ णंदउ भुयणयलि णिरुवमु कण्णरसायणु।
आयण्णउ मण्णउ ताम जणु जाम चंदु तारायणु।।12।।

(13)

वरिसउ मेहजाल वसुहारहिं महि पिच्चउ[1] बहुधण्णपयारहिं।
णंदउ सासणु वीरजिणेसहु सेणिउ णिग्गउ णरयणिवासहु।
लग्गउ ण्हवणारंभहु सुरवइ णंदउ पय सुहुं[2] णंदउ णरवइ।
णंदउ देसु सुहिक्खु वियंभउ जणमिच्छत्तु[3] दुचित्तु णिसुंभउ।
पडिवण्णियपरिपालणसूरहु[4] होउ संति भरहहु [5]वरवीरहु।
होउ[6] संति बहुगुणगणवंतहं संतहं दयवंतहं भयवंतहं[7]।

कर्मक्षय का कारण, गणधरों के द्वारा उपदिष्ट, इस महापुराण की मैंने रचना की है। यहाँ जिनेन्द्रमार्ग में, मुझ बुद्धिविहीन ने हीनाधिक जो कुछ कहा है, उसे अरहन्त भगवान से उत्पन्न आदरणीय सरस्वती क्षमा करें। कलुष का नाश करनेवाले चौबीसों तीर्थंकर मुझे समाधि और ज्ञान प्रदान करें।

घत्ता—यह महापुराण दुःख दूर करे, भुवनतल पर प्रसन्नता का प्रसार हो, अनुपम कर्ण-रसायन को लोग तब तक सुनें और मानें, जब तक चन्द्रमा और तारागण हैं।

(13)

अनेक धाराओं से मेघ की वर्षा हो, बहुत प्रकार के धान्य से यह धरती पकती रहे। वीरजिनेन्द्र का शासन नन्दित हो। राजा श्रेणिक नरक-निवास से निकलें, जलाभिषेक के प्रारम्भ में इन्द्र लगें। प्रजा सुख से प्रसन्न रहे, राजा प्रसन्न रहे। देश प्रसन्न रहे, सुभिक्ष बढ़ता रहे, लोगों का मिथ्यात्व और हृदय की दुष्टता नष्ट हो। अपनी स्वीकृतियों का प्रतिपालन करते हुए वह वीर भरत (मन्त्री) को शान्ति हो। अनेक गुणसमूह से युक्त, दया से सहित और भय का नाश करनेवाले सन्तों को शान्ति प्राप्त हो। सज्जनों को शान्ति प्राप्त

---

18. A अरुहंगय।

(13) 1. A पच्चउ। बहुधणकणभारहिं। 2. A सुहि। 3. A जणु मिच्छत्तदुचित्तु णिसुंभउ; P omits जण°। 4. AP पडिवण्णए। 5. AP णिरिधीरहो।
6. A omits this line. 7. AP add after this :

होउ संति बहुगुणहिं महल्लहो तासु जि पुत्तहो सिरिदेविल्लहो।
एउं महापुराणु रयणुज्जले जें पयडेव्वउ सयले धरायले।
चउविहदाणुज्जयकयथिल्लहो भरह परमसब्भावसुमित्तहो।
भोगल्लहो जयजसवित्थरियहो होउ संति णिरु णिरुवमचरियहो।
होउ संति णण्णहो गुणवंतहो कुलबलवच्छल (A कुलवच्छल्ल) सामत्थमहंतहो।
णिच्चमेव पालियजिणधम्महं (A धम्महो) होउ संति लोहणगुणवम्महं (A धम्महो)।

होउ[8] संति संतहु[9] दंगइयहु होउ संति सुयणहु[10] संतइयहु।
जिणपयपणमणवियलियगव्वहं होउ संति णीसेसहं भव्वहं।

घत्ता—इय दिव्वहु कव्वहु तणउं फलु लहुं जिणणाहु पयच्छउ।
सिरिभरहहु अरुहहु जहिं गमणु पुप्फयंतु तहिं गच्छउ ॥13॥

(14)

सिद्धिविलासिणिमणहरदूएं मुद्धाएवीतणुसंभूएं।
णिद्धणसधणलोयसमचित्तें[1] सव्वजीवणिक्कारणमित्तें।
सद्दसलिलपरिवड्ढियसोत्तें केसवपुत्तें कासवगोत्तें।
विमलसरासयजणियविलासें[2] सुण्णभवणदेवलयणिवासें[3]।
कलिमलपबलपडलपरिचत्तें णिग्घरेण णिप्पुत्तकलत्तें।
णइवावीतलायकयण्हाणें[4] जरचीवरवक्कलपरिहाणें।
धीरें[5] धूलीधूसरियंगें दूरयरुज्झियदुज्जणसंगें[6]।
महिसयणयलें करपंगुरणें मग्गियपंडियपंडियमरणें।
मण्णखेडपुरवरि णिवसंतें मणि अरहंतधम्मु[7] झायंतें।
भरहसण्णणिज्जें[8] णयणिलएं कव्वपबंधजणियजणपुलएं[9]।
पुप्फयंतकइणा[10] धुयपंकें[11] जइ अहिमाणमेरुणामंकें।

हो। जिनका गर्व नष्ट हो गया है और जो जिनवर के चरणकमलों में नमन करनेवाले हैं, ऐसे सभी भव्यजीवों को शान्ति प्राप्त हो।

घत्ता—इस दिव्य काव्य का फल शीघ्र जिन भगवान् को अर्पित हो। श्री भरत और अर्हन्त का जहाँ गमन है, पुष्पदन्त वहाँ जावे।

(14)

सिद्धिरूपी विलासिनी के सुन्दर दूत, मुग्धादेवी के शरीर से उत्पन्न, निर्धन और धनवान में समान चित्त धारण करनेवाले, समस्त जीवों के अकारण मित्र, शब्दरूपी जल के बढ़ते हुए स्रोत से युक्त, केशव के पुत्र, कश्यपगोत्रवाले, विमल सरस्वती से विलास करनेवाले, शून्यभवन और देवमन्दिरों में निवास करनेवाले, कलिमल के प्रबल पटल से दूर, पुत्रकलत्र से रहित, नदी, बावड़ी और तालाब के जल में स्नान करनेवाले, पुराने वस्त्र और वल्कलों के परिधानों को धारण करनेवाले, धीर, धूलधूसरित शरीर, दुर्जन के संग को दूर से छोड़नेवाले, धरतीरूपी शय्या और हाथ के प्रावरणवाले पण्डितों से पण्डितमरण माँगनेवाले, मान्यखेट नगरी में निवास करनेवाले, अपने मन में अर्हन्त का ध्यान करनेवाले, भरत के अपने गृह में निवास करनेवाले, नय के घर

8. A reads a as b and b as a. 9. AP सुयणहो। 10. A संतहो।

(14) 1. P °सद्धण°। 2. P °सरासइ°। 3. AP °देवउल°। 4. P °सरण्हाणें। 5. A वीरें। 6. A दूरुज्झिय° 7. P अरहंतु देउ। 8. AP °मण्णणिज्जें णियणिलए। 9. A कव्वबंधपयणिव°। 10. AP °कयणा। 11. AP सुयपंकें।

कयउं कव्वु [12]भत्तिहें परमत्थें जिणपयपंकयमउलियहत्थें[13]।
कोहणसंवच्छरि आसाढइ दहमइ दियहे चंदरुइरूढइ।
घत्ता—णिरु णिरहहु[14] भरहहु बहुगुणहु कइकुलतिलएं भणियउं[15]।
सुपहाणु पुराणु तिसट्ठिहिं मि पुरिसहं चरिउं [16]समाणियउं ॥14॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणिंदणिव्वाणगमणं[17] णाम
[18]दुत्तरसयपरिच्छेयाणं महापुराणं समत्तं ॥102॥

काव्य रचना से लोगों को पुलक उत्पन्न करनेवाले, पाप से रहित, लोक में अभिमानमेरु नाम से विख्यात, जिनवर के चरणकमलों में हाथ जोड़े हुए परमार्थ और भक्ति में स्थित पुष्पदन्त ने क्रोधन संवत्सर के असाढ़ माह की चन्द्रमा की कान्ति से युक्त दसवीं के दिन इस काव्य की रचना की।

घत्ता—अत्यन्त निष्पाप बहुगुणी भरत के लिए कविकुलतिलक ने कहा और त्रेसठ महापुरुषों के प्रधान पुराणचरित की रचना की।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषों के गुणों और अलंकारों से युक्त इस महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित
और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य में जिनेन्द्रनिर्वाण-गमन नामक
एक सौ दूसरा परिच्छेदवाला महापुराण समाप्त हुआ।

---

12. AP भत्तिए। 13. P छसय छडोत्तर कयसामत्थें। 14. A सिरिणिरहहो; A सिरिअरुहहो। 15. AP भासिउं। 16. AP समासिउं। 17. AP omit जिणिंदणिव्वाणगमणं णामं। 18. AP दुउत्तरसइमो परिच्छेओ समत्तो।

NOTES

LXXXI

1. 2 भंडणु मुरारिजरसंधहं—The narrative of Nemi, the twenty-second तीर्थंकर of the Jainas, contains an important episode, viz., the fight of कृष्ण and जरासंध। According to the भागवतपुराण the fight of कंस and कृष्ण is regarded as the most important feature of the life of कृष्ण, while जरासन्ध is killed by भीम। कृष्ण is mentioned as having run away from the battlefield and founded द्वारका in order to escape the attacks by जरासन्ध। In MP the word जरासन्ध appears in three different forms, जरासन्ध, जरासिन्ध and जरसेन्ध। Of these the first two are promiscuously used in my text and the third almost ignored as there is no consistency in Mss.

2. The poet states, as in MP I, that he does not possess necessary qualifications to undertake the composition of हरिवंश। 1 *b* देसिलेसु, fragmentary or elementary knowledge of देशी words or lexicons. 6. *a* सुवंतु तिवंतु (सुबन्त, तिङन्त) noun inflexion and verbal inflexion. 11-12 The poet feels confident that his fame as poet will place her feet on the necks of the wicked and wander beyond the three worlds.

3. सीहउरि णराहिउ अरुहदासु—It will be better if the reader remembers that the poet is giving here the narrative of the previous births of नेमि, not in their chronological order but in the order of strikinguess. These previous births chronologically are :- भिल्ल, इभ्यकेतु, सौधर्मदेव, चिन्तागति, चतुर्थ-स्वर्गदेव, अपराजित, अच्युतेन्द्र, सुप्रतिष्ठ and जयन्तदेव। The poet starts with the life of अपराजित here. He then takes up the story of चिन्तागति and his two brothers. Then he proceeds to हरिवंश proper to give the parentage of नेमि।

4. 11 केसरिपुरि, i.e., सिंहपुर। 13 तुह जणणु means अर्हद्दास.

5. 7 चसणाणंगहं, च + अशनाङ्गानाम्; अशनाङ्ग means articles of food. 10 अपुण्णइ कालि, before his destined time of death, premature death.

6. 5 णहयलि मुणिंद—The चारणमुनिs are those who are able to travel through space as a result of their spiritual powers. They are his brothers of the previous birth.

8. 2 *a-b* णीसेस वि णियपयमूलि थित्त विज्जाहर—She, i.e., प्रीतिमती, trampled under her foot or humbled down the pride of all विद्याधरs as they came to woe her, but were unable to complete the three प्रदक्षिणाs of मेरु।

9. 1 *b* तुह here stands for तुहुं. 10 णीवइ दुक्खसिहि, etc. The fire of sufferings of the poor etc. is extinguished if they cling to the lotus-like feet of the revered Jinas.

10. 3 *a* सिरीवियप्पि goes with माहिंदकप्पि and means heaven as T says. 13 दूरिहइं, stationed at a distance; this word is to be construed with णयणइं।

12. 5 *b* अण्णु, food.

14. 12 इयरु, the merchant सुमुह।

18. 14 पिय, i.e., father.

19. 4 वहुवरु, the couple सिंहकेतु or मार्कण्ड and विद्युन्माला। 12 Note how the narrative runs over to the next Samdhi.

LXXXII

1. 4 *b* सुउ ताइ, the children of सुभद्रा and अन्धकवृष्णि are enumerated here. They had ten sons and two daughters. 9 *b*-13b These lines enumerate the lives of the first nine sons of अन्धकवृष्णि. वसुदेव is the youngest and his narrative is continued later.

2. 8-*a* मच्छउलरायसुय सच्चवइ–According to the Jain version, सत्यवती, the wife of पाराशर, is a princess of the मत्स्य country and not a fisherman's daughter. Note the difference in the accounts of births of the पाण्डवs and कौरवs as given here and in the महाभारत.

3. 8 *a* पुण्डरिय, white or bright like a blooming lotus.

5. 1 *a* कुंडलजुयलउं etc. Note how the first born son of कुन्ती was disposed off. He had a pair of ear-rings, a gold armour and a letter containing information about his parentage. He became the adopted son of king आदित्य and queen राधा of चम्पा and seems to have succeeded his father to the throne of अङ्गदेश.

6. 5 *b* सुयजमलहु, to अन्धकवृष्णि and नरपतिवृष्णि।

9. 8 *a* रुद्दत्त, the name of a Brahmin priest of the family.

16. 1 *a* वसुदेवायरणु, the previous births of वसुदेव. 4 *a* णियमाउलउ, his maternal uncle. 8 *a* गुरुसिहरारूढउ, ascending the lofty peak of the mountain from which he wanted to throw himself down. 9 *b* संखणाम णिण्णाम मुणि–These are destined to be कृष्ण and बलराम in the subsequent birth. 11 *a* कायछाय णरहु, the shadow of a human being.

17. 11 *b* दुरिउं दिसावलि दिज्जइ–If you practise penance according to Jain principles, you can scatter your miseries in different directions. दिसाबलि, offering to or scattering in दिशाs, i.e., quarters or cardinal points.

LXXXIII

1. 5 *a* अखारु सलवणु रयणायरु, ocean not saltish, yet beautiful. Note the double meaning of सलवणु।

3. 1-2 Note how a lady, looking at वसुदेव, put under her arms a cat instead of her own child, and thus supplied to the people a comic situation.

4. 6 *b* अजुत्तउं, his improper conduct.

6. 1 *b* बालें, by young वसुदेव।

7. 10 *b* पइं आपेक्खिवि मयणु वि दूहउ–Compared with you, even god of love looked ugly (दूहउ, दुर्भगः). 14 *b* मीणवलिमाणिउं, water respected or used by a mass of fish, i.e., fresh running water or a stream.

8. 13 पहियपुण्णसामत्थें etc.—Fresh and young leaves came out or appeared on old and withered trees as if on account of the prowess of the merit of the visitor (पथिक), viz., वसुदेव।

11. 6 *b* बहिबहिसद्दें, by shouting "get out."

12. 4 *b* दुहियायरु, the husband of your daughter. 13 समरसएहिं अभग्गी, सामरि who never knew defeat in hundred battles.

15. 8 वासुपुज्जहिं जम्मपसिद्धी--The town of चम्पा became famous as the birthplace of वासुपूज्य, the 12th तीर्थंकर।

16. 14 सवणहं सीसग्गि जणउच्छिट्ठउं वित्तउं–He threw on the heads of monks the leavings of food of people who were fed at the sacrifice. The story of बलि and his conquest by the monk विष्णु by asking him to give him earth measured by three steps will remind the reader of the corresponding story as found in Hindu mythology.

21. 14 *b* देसिउ, a traveller or foreigner.

22. 3 *b* अवियारिय (अवि ग्रसिताः), without being killed.

LXXXIV

1. 8 *b* महिणीडय, resting or living in soil. 17 हउं जि करेसमि भोयणु, I myself shall feed this monk by giving him alms. Although the king said so, he did not give him alms and the monk had to go without food.

2. 1 *b* हुयासु लग्गु, fire broke out in the city in the first month, a maddened elephant teased the people in the second month, and a threatening letter from king जरासंध was received by king उग्रसेन in the third month. 6 a परु वारइ सदं णाहारु देइ–He prevents others giving alms to the monk but he himself does not give food to the monk.

3. 8 *b* कल्लालयबालियाइ, by a young lady of a wine-shopkeeper (कल्लाल). I 12 *a*

वसुएवसीसु–कंस became a pupil of वसुदेव who is frequently referred to as प्रहरणसूरि, उज्झाय, चावसूरि etc. 19 मेरी सुय सो माणइ, he will win (the hand of) my daughter.

5. 1 *a* सउहदेएं, by वसुदेव who was the son of सुभद्रा.

6. 5 *b* रणि णियगुरुअंतरि पइसरेवि–When वसुदेव and सिंहरथ were fighting, कंस stood between them and captured सिंहरथ.

12. 7 a पिउबंधणि थिरु पावइउ वीरु–अतिमुक्तक, brother of कंस, renounced the world when their father उग्रसेन was imprisoned by कंस.

14. 1 *b* वरु दिण्णउ–वसुदेव was pleased with the exploit of his pupil कंस when the latter caught सिंहरथ and gave him a boon which कंस kept in reserve. अवसरु तासु अज्जु, to-day is the time to get the boon fulfilled.

17. 11 *a* णिण्णामणामु जो आसि कालि, the god from महाशुक्र heaven, who, in his previous birth, was a monk named. निर्नामि.

18. 10 *a* भद्दिउ, one of the frequently used names of कृष्ण or विष्णु.

LXXXV

1. 5 *a* कण्हु मासि सत्तमि संजायउ–कृष्ण was born in the seventh month after conception, he had a premature birth, and hence कंस was not watchful to put him to death as soon as born.

2. Note the poetic beauty of this कडवक, nay, of the whole संधि, which is one of the finest compositions of the poet.

3. 3 *a* महु कंतइ etc.—नन्द says that his wife यशोदा begged a son of a deity, but she gave her a girl. He wanted to return the girl to the deity; if the deity would give him a son, the desire of his wife would be fulfilled.

4. 5 चंप्पिवि णासिय दिल्लिदिल्लियहि, having crushed the nose of the girl and thus deformed her, कंस pur her into a cellar.

5. 10 *b* ता तहिं देवयाउ संपत्तउ–The deities which now came to कंस were the same, as, when in his previous brith as a monk, had appeared before him. For reference see LXXXIV. 2. 9-14. It is these deities which assumed different forms such as पूतना and made attempts to kill कृष्ण at कंस's bidding.

12. 15-16 ओहामियधवलु etc.—कृष्ण who had just vanquished the bull (i. e., demon अरिष्ट), was glorified in the cowherds' colony in songs styled धवल. Who will not praise the most glorfied member of the house, the bright among the brightests ? धवल is a kind of fold-songs composed in a metre which is named धवल. The theme of these songs is usually the glorification of कृष्ण and they are sung by गोपीs. हेमचन्द्र in this छन्दोनुशासन V. 46, mentions some four types of धवल and names them as यशोधवल, कीर्तिधवल, गुणधवल etc. Some of these are अर्धसम, with first

and third line and 2nd & fourth agreeing, while there is one more type in which first and second are similar and third and fourth are again similar. Among the महानुभाव poets these धवल्स, or ढवळे as they are called, seem to be well-known, and those of महदंबा. are now edited and published by Y. K. Deshpande under the title 'आद्य मराठी कवयित्री'. They type of her ढवळे agrees with the last named scheme, viz.,

Ist and 3rd line : 6+4+4+4=18, + 2 or 3

3rd and 4th. : 4+4+4+4+4=20, + 2 or 3

13. 10–15 9. These lines describes a secret visit of वसुदेव and देवकी to कृष्ण.

16. A find description of the rainfall.

17. 11-12 णायामिज्जइ etc. Astrologer वरुण says to कंस that he who is not frightened by sleeping on the bed of a snake, blows a conch with his own breath and strings the bow, will show to कंस the city of the god of death; and that he will release उग्रसेन and kill जरासंध.

20. 8-9 हउं मि जामि etc. कृष्ण says he would also go to मथुरा and do all the three things; whether he will marry कंस's daughter, he could not say; for a cowherd-boy (हालिक) may not care for the princess.

22. 3 *a* अग्गि व अंबरेण ढंकेप्पिणु, having covered fire in clothes. भानु and सुभानु, the sons of जरासन्ध, brothers-in-law and allies of कंस, took कृष्ण with them to मथुरा.

23. 10 *b* अपसिद्धेण सुभाणुहि भिच्चें, by कृष्ण, who was taken to be some unknown servant of सुभानु.

LXXXVI

1. 23 *a* उविंदु, i. e., कृष्ण. The name of कृष्ण is expressed here by all synonyms of विष्णु. Compare पुरिसोत्तम and महुसूयण below.

3. 4 *b* णउ बीहइ सप्पहु गरुडकेउ—कृष्ण, with his emblem of गरुड, is not frightened by सर्प. The enmity between गरुड and सर्प is well-known.

5. 10 उव्वग्गणसंचालियधरु, the crowd of cowherd boys caused the earth to tremble on account of mutual clashing.

7. 19 *a* सो वि सो वि, both कृष्ण and चाणूर.

10. 3 *a* भंजिवि णियलइं, having broken or removed the fetters which कंस had put on उग्रसेन and पद्मावती.

11. 2 *b* इहजम्महु महुं तुहुं ताय ताउ—Addressing नन्द, कृष्ण says to him that नन्द is his father in this birth because he fostered him.

LXXXVII

1. 9 *a* कंचिविवज्जिय उत्तरमहि विव–Like Northern India, where there is no town bearing the name of काञ्ची (Canjeevaram of South India), जीवंजसा, having lost her husband कंस, did not put on काञ्ची, girdle, which is used only by those ladies whose husband is alive.

2. 1-12 जीवंजसा describes to her father जरासंध the various exploits of कृष्ण.

4. 14 छायालीसइं तिण्णि सयइं–अपराजित, a son of जरासंध, made three hundred and fortysix attacks or attempts on कृष्ण, but was defeated.

5. 14 *b* देसगमणु, leaving the country or going to another country. कालयवन being very powerful, the advisers of कृष्ण proposed to him not to give a straight fight to कालयवन, but to withdraw from मथुरा and go towards the western ocean.

6. 13 *a* हरिकुलदेवविसेसहिं रइयइं–Certain guardian deities of हरिवंश palyed a trick on कालयवन. They set fire to a region where dead bodies were seen burning, and the deities cried bewailing the loss of यादवs. कालयवन then thought that कृष्ण and other यादवs were dead and returned to his father.

7. 15 आहवि सउहुं भिडेवि मइं जसु जिणिवि ण लद्धउं–कालयवन regrets that यादवs died of fire and that he lost the opportunity of obtaining fame by vanquishing them in a face-to-face fight.

10. 6 थियउं सेण्णु etc–This was the site on which द्वारावती was built by कुबेर as it was to be the birth-place of नेमि, the twenty-second तीर्थंकर.

13. 4 पउरंदरियइ आणइ, at the command of पुरंदर, i. e., इन्द्र.

17. 2 णेमि सद्दिओ–The would-be तीर्थंकर was named नेमि, because he was the नेमि, the rim, that protects the great chariot of Law.

LXXXVIII

1. This कडवक summarizes events since कृष्ण left मथुरा down to his founding द्वारावती.

2. 10 *a* दुव्वाएं जलजाणु ण भग्गउं, fortunately my ship did not wreck although it met a stormy wind (दुर्वात).

3. *a* णवरज्ज = णवर + अज्ज.

4. 10 *b* दे आएसु–कृष्ण asks the permission of his elder brother बलराम before he starts.

5. 16 *a-b* जो सुहडहं etc.–The poet says that the dust raised in the sky was the smoke of the fire of rivalry of warriors. Note a fine set of fancies on the dust raised on the battle-field in the next कडवक as well.

9. 11 *a* गोवाल—जरासंध addresses कृष्ण as गोपाल. See the spirited answer of कृष्ण below in lines 15 and 16, पइं मारिवि etc. गोमंडलु पालमि, गोउ हउं, I protect the earth (गोमण्डल), and so I am a गोप.

16. 13-14 These lines give the list of seven gems which a वासुदेव possesses.

17. 3 *b* तेत्तियइं सहासइं विलयहं—कृष्ण had sixteen thousand wives. 8 This line metions the four gems which a बलदेव possesses. 13 a कंसमहुवइरिउ—कृष्ण is called here the enemy of कंस and महु, i. e., जरासंध.

19. 15 होसि होसि etc.—सत्यभामा says to नेमि "I know you are my husband's brother, but are you दामोदर ?"

22. 10 *a* णिव्वेयहु कारणु—If नेमि sees some cause which would create in him disgust for संसार, he would practise penance, and become a तीर्थंकर. 12-13 रायमइ or राजीमती is said to be the daughter of उग्रसेन and जयवती. Elsewhere she is said to be the daughter of भोगराज or भोजराज. Compare अहं च भोगरायस्स in the उत्तराध्ययन, 24. 43 कंस is mentioned as her brother, but this कंस and his father उग्रसेन seem to be different from कंस, the enemy कृष्ण, as T suggests.

LXXXIX

1. 3-4 एक्कहु तित्ति णिविसु etc.—I do not like to eat flesh because, one (the eater) gets only a momentary satisfaction by eating flesh, while the other (animal killed) loses its life. भवविहुरकारि, Eating flesh causes the loss of spititual life in one, while the other actually loses its present life. 9 *a* णिव्वेयहु कारणि दरिसियाइं, these creatures were placed on the way of नेमि in order to cause in him disgust for life.

6. 15 णेमी सीरिणा is to be construed with पुच्छिउ in the second line of the next कडवक.

8. 7 *a* एत्थंतरि etc.—The portion beginning with this line and ending with this samdhi deals with the previous lives of देवकी, बलदेव and कृष्ण. 7 *b* वरदत्तु, the first गणधर of नेमि.

9. 15 मंगिया—The narrative of मंगिया, the wife of वज्रमुष्टि, is interesting. She was very badly treated by her mother-in-law. Her husband loved her dearly, but she ultimately proved to be faithless.

18. 9 *a* सो संखु वि सहुं णिण्णामएण—These two monks were born later as बलदेव and कृष्ण.

XC

1. 5 to **3.** 9 This portion narrates the previous lives of सत्यभामा, the most

proud and impetuous wife of कृष्ण. The narrative contains a small episode of मुण्डसालायण, a Brahmin, who abused the Jain doctrine and recommended to people the Brahmanic practices such as gifts of earth, cows etc.

3. 10 *b* डोड्डु is definitely a Kannada word which the poet has used. Those who want to argue that the poet lived in South, say, at काञ्ची, should note that this word does not occur in Tamil or in any other South Indian languages except Kannada. It is natural that the poet who lived under a mixed influence of महाराष्ट्र and कर्णाटक, should use occasionally a word or two from either language, and words from a weaker language would be those that are most commonly known words. I stick to my view that the poet came from Northern India, probably from Berar, as suggested by Pandit Nathuram Premi.

3. 10 to 7. 14. Past lives of रुक्मिणी.

4. 4 *b* उंबरकुट्ठइ, with leprosy. उंबरकुष्ठ is one of the 18 types of कुष्ठ in which the body gets the colour of the ripe fruit of उदुम्बर, fig. 18 संधारेंगें, with spiced waters.

7. 15 to 10. 12. Previous births of जाम्बवती.

10. 13 to 12. 10. Past lives of सुसीमा.

12. 11 to 14. 2 Past lives of लक्ष्मणा.

14. 3 to 15. 9. The same of गान्धारी.

15. 10 to 16. 11. The same of गौरी.

16. 11 to 19. 9. The same of पद्मावती. 10 *b* अविघणियतरुहलहु आवग्गहु, a vow not to eat a fruit the name of which is not known. See how the lady died as she could not get fruits of known names in a famine.

19. 10 *a* जहिं संसारहु आइ ण दीसइ etc.—How can I narrate to you the series of births when the संसार is beginningless. The soul dances like an actor on the stage, taking different roles.

XCI

2. 10 *a* तो सूणागारहु पढमु सग्गु—If persons who kill animals would go to heaven, then, the butcher should be the first man to go to heaven.

6. 6 *b* तियसोएं, on account of grief at the loss of his wife. 12 *a* महु संभूयउ पज्जुण्णु णामु--मधु, in his previous births, was अग्निभूति, पुण्यभद्र or पूर्णभद्र, and bacame प्रद्युम्न, the son of रुक्मिणी. He was taken away by कनकरथ whose wife had been abducted by मधु. प्रद्युम्न was handed over to his queen काञ्चनमाला by कनकरथ. The काञ्चनमाला later fell in love with प्रद्युम्न, who rejected her love. The queen thereupon raised a false alarm that she was insulted by her so-called son.

16. 7 *a* हरिपुत्तहु, to प्रद्युम्न the son of कृष्ण. 8 *a-b* These are the names of

the five arrows of god of love whose incarnation प्रद्युम्न was.

21. 9 *a* भाणुमायदेवीणिकेउ, to the house of सत्यभामा, the mother of prince भानु. 12 *b* बंभणु होइवि रक्खसु पइट्ठु–The Brahmin who has visited our house is in reality, a demon; that is why he eats so much and is not still satiated.

XCII

1. 12-13 जइयहुं etc.–Both रुक्मिणी and सत्यभामा gave birth to sons at one and the same time. The maids of both went to कृष्ण to announce the birth, but as कृष्ण was sleeping, one maid sat on the side of his head and the other on the side of his feet. कृष्ण got up and saw the maid who was sitting at his feet; the maid (of रुक्मिणी) then announced the birth of a son to रुक्मिणी, and कृष्ण said that that son would be the heir-apparent.

6. 1 नेमि informs बलदेव how द्वारावती would be burnt and how कृष्ण would meet his death.

8-10. The story of the पाण्डवs in outline, and of the द्रौपदीस्वयंवर.

14-15. Previous births of the पाण्डवs.

18. 6 Previous births of नेमि, beginning with that of a भिल्ल.

21. 7 *a* The story of ब्रह्मदत्त, the twelfth and last चक्रवर्तिन्.

XCIII

1. 8 *a* असुरो अही–The wicked demon is no other than कमठ, who caused several उपसर्गs to मरुभूति, destined to be पार्श्व. The chronological order through which the souls of मरुभूति, and कमठ passed must be noted, and it is मरुभूति, वज्रघोषहस्ती, सहस्रारदेव, रश्मिवेग or अग्निवेग, अच्युतदेव, वज्रनाभि, ग्रैवेयकदेव, आनन्द, आनतेन्द्र, and पार्श्व; कमठ, कुक्कुटसर्प, पञ्चमनारक, अजगर, भिल्ल, षष्ठनारक, सिंह, नारक and महीपाल. Of these only first two births of each are treated in this संधि.

XCIV

1. 12 अण्णेक्कु, the other, i. e., the elephant वज्रघोष.

4. 2 *b* अवरुल्लूरिउ, plucked by another, or fallen from tree; as the elephant had taken the vows, he does not do injury even to trees.

12. 12-13 The narrative of पार्श्वनाथ begins with this line.

XCV

1. 15 *a* ण पेम्मे णिसण्णो–According to the Digambaras, महावीर did not marry

and hence the poet says that he did not fall in love with beautiful ladies.

2. 6 *b* होंतउ आसि पुरूरउ णामें—महावीर in his earliest known birth, was a forester named पुरूरवस्.

5. 3 *b* सवरामरु—पुरूरवस् was first a शबर and after death became a god. 12 *b* पंचवीस तच्चइं, the twenty-five principles of the सांख्य system.

8. 16 भरहेसरणंदणु i. e., मरीचि.

14. This कडवक recapitulates some of the previous births of the lion who was to be तीर्थंकर महावीर.

XCVI

1. 13 *a* जितजीहु, lion who controlled his tongue.

10. 9 *a* सम्मइ कोक्किकउ—महावीर was named सन्मति by gods. 15 वीरणाहु—संगमदेव gave to वर्धमान another name, viz., वीर, because he was found to be fearless in the presence of a huge snake.

11. 1 सिसुदंसणेण, on seeing a young boy, i. e., वर्धमान महावीर.

XCVII

3. 7 The poet gives here the story of चन्दना, the daughter of king चेटक.

4. 4 *a* पडिवक्खगुणेहिं विमद्दियइ—सुभद्रा, the wife of the merchant, became jealous of चन्दना as she possessed all the qualities such as beauty, youth etc. of a rival. She suspected that चन्दना would soon be her rival.

XCVIII

1. 14 *b* अण्णु किं धम्महु मत्थइ सिंगइं—The monk gave to the forester all rules of conduct and told him that there were no other rules of conduct than those mentioned by him. Horns on the head is regarded as most prominent characteristic of an object. Compare the शृङ्गग्राहिकान्याय.

2. 10 *a* रिट्ठपलणिविित्तिफलसारें—The forester took a vow that he would not eat the flesh of a crow.

8. 6 *a* मच्छंधिणिहि व्रासु उप्पण्णउ—According to Hindu mythology व्यास is the son of पराशर from a fisherwoman; but according to Jain view he is the son of a princess of the मत्स्यदेश.

9. According to this कडवक, king चेटक of वैशाली had several sons and seven daughters. Of these daughters, चन्दना was the eldest and most beautiful. Her sisters were married to famous kings, e. g., प्रियकारिणी was married to सिद्धार्थ of

कुण्डपुर and was the mother of महावीर; मृगावती was given to शतानीक; सुप्रभा was married to दशरथ; and प्रभावती was married to उदायण of सिंधुसौवीर country; and चेल्लणा was married to king श्रेणिक.

10. 10 *a* बोद्द is probably the other South Indian word used by the poet. It means a bull.

IC

The whole Samdhi is devoted to the life-story of जीवंधर.

3. 3 *a* पहुदोहउ, प्रभुद्रोहकः, hating the king. 5 *b* व्रहिउ, an instance of insertion of रेफ, where it is not to be found in the original Sk. word. Compare हेम. अभूतोपि क्वचित् IV. 399.

C

The whole Samdhi is devoted to the story of जम्बू, the pupil of सुधर्मस्वामिन्.

8. 3 *b* दहगुणियइं चत्तारि, four hundred years.

CI

The life-story of प्रीतिंकर forms the subject of this Samdhi.

CII

The dark future to be followed by a golden age is the subject-matter of this Samdhi.

13. The text of the last कडवक, particularly after 5 *b*, is somewhat confused. I think पुष्पदन्त's first version is as given in the printed text, and is supported by my best ms. K. The portion in A and P is clearly a later addition, of course by the poet himself, but the order of lines in not quite loigcal. I propose the following version of the amplified text from line 5—

पडिवण्णियपरिपालणसूरहु होउ संति भरहहु वरवीरहु।
होउ संति बहुगुणहिं महल्लहो तासु जि पुत्तहो सिरिदेविल्लहो।
एउ महापुराणु रयणुज्जलि जें पयडेव्वउं सयलि धरायलि।
चउविहदाणुज्जयकयचित्तहो भरह परमसब्भावसुमित्तहो।
भोगल्लहो जयसिवित्थरियहो होउ संति णिरु णिरुवमचरियहो।
होउ संति णण्णहो गुणवंतहो कुलवच्छलसामत्थमहंतहो।
णिच्चमेव पालियजिणधम्महं होउ संति सोहणगुणकम्महं।
होउ संति संतहु दंगइयहु होउ संति सुयणहु संतइयहु।
होउ संति बहुगुणगणवंतइं संतहं दयवंतहं भयवंतहं।
जिणपयपणमणवियलियगव्वहं होउ संति णीसेसहं भव्वहं।

This passage now conveys to us the following information—देविल्ल was the son of भरत and was charged by his father to publish the महापुराणु. भोगल्ल, the second son of भरत, looked to the charitable establishment of the king or of भरत, and was a sincere friend of the poet. णण्ण is the son of भरत who held the responsibilities of the family and so naturally succeeded his father. शोभन and गुणवर्मन् are णण्ण's sons and had pious tendencies. दंगइय and संतइय are probably the poet's assistants. Lastly comes a general mention of the noble and pious men.

14. 12 *b* My Ms. P reads छसय छडोत्तर कयसामत्थें, but is not supported by K, nor by A, which latter, in my opinion, is the youngest of the three versions known to me. It is likely that there may be still younger Mss. of the work as metioned by Pandit Premi in his article : महाकवि पुष्पदन्त.

— 0 —